
स्व. पुण्यछोका ज्ञाना मूर्तिदेवीकी पवित्र स्मृतिके

स्व. साहू शान्तिप्रसाद जैन द्वारा संस्थापित

एवं

उनकी धर्मपत्नी स्वर्गीया श्रीमती रमा जैन द्वारा संपोषित

भारतीय ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमालाके अन्तर्गत प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड़, तमिल आदि प्राचीन भाषाओंमें

उपलब्ध आगमिक, दार्शनिक, पौराणिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि विविध-विषयक

जैन-साहित्यका अनुसन्धानपूर्ण सम्पादन तथा उसका मूल और यथासम्भव

अनुवाद आदिके साथ प्रकाशन हो रहा है। जैन-मण्डारोंकी

सूचियाँ, शिलालेख-संग्रह, कला एवं स्थापत्य, विशिष्ट

विद्वानोंके अध्ययन-ग्रन्थ और लोकहितकारी जैन

साहित्य-ग्रन्थ भी इसी ग्रन्थमालामें

प्रकाशित हो रहे हैं।

29445

PUS-11-5

V 2

30951

ग्रन्थमाला सम्पादक

सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री

डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

प्रधान कार्यालय : बी/४५-४७, कॅनॉट प्लेस, नयी दिल्ली-११०००१

मुद्रक : सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-२२१०१०

स्थापना : फाल्गुन कृष्ण ९, वीर नि० २४७०, विक्रम सं० २०००, १८ फरवरी १९४४

सर्वाधिकार सुरक्षित

MAHĀKAVI PUṢPADANTA'S

MAHĀPURĀNA

Vol. III

[From Tīrthaṅkara Ajitanātha to Mallinātha]

(Saṁdhi 37 to 67)

With

Introduction, Hindi Translation and Index of the verses etc.

Text Edited by

DR. P. L. VAIDYA

Translated by

DR. DEVENDRA KUMAR JAIN, M. A., PH. D.

Professor, Department of Hindi, Govt. Arts
and Commerce College,

INDORE



BHARATIYA JNANPITH PUBLICATION

VĪRA NIRVĀNA SAMVAT 2507 : V. SAMVAT 2038 : A. D. 1981

First Edition : Price Rs. 55/-

57

BHĀRĀTĪYA JÑĀNAPĪTHA
MŪRTIDEVĪ JAINA GRANTHAMĀLĀ

FOUNDED BY

LATE SAHU SHANTI PRASAD JAIN
IN MEMORY OF HIS LATE MOTHER SHRIMATI MURTIDEVI

AND

PROMOTED BY HIS BENEVOLENT WIFE
LATE SHRIMATI RAMA JAIN

IN THIS GRANTHAMĀLĀ CRITICALLY EDITED JAINA ĀGAMIC, PHILOSOPHICAL,
PURĀNIC, LITERARY, HISTORICAL AND OTHER ORIGINAL TEXTS
AVAILABLE IN PRAKRIT, SANSKRIT, APABHRĪṢĀ, HINDI,
KANNAḌA, TAMIL, ETC, ARE BEING PUBLISHED
IN THEIR RESPECTIVE LANGUAGES WITH THEIR
TRANSLATIONS IN MODERN LANGUAGES.

ALSO

BEING PUBLISHED ARE
CATALOGUES OF JAINA-BHANDĀRAS, INSCRIPTIONS, STUDIES
ON ART AND ARCHITECTURE BY COMPETENT SCHOLARS
AND ALSO POPULAR JAINA LITERATURE.



General Editors

Siddhantacharya Pt. Kailash Chandra Shastri
Dr. Jyoti Prasad Jain



Published by

Bharatiya Jnanpith

Head Office : B/45-47, Connaught Place, New Delhi-110001



एलाचार्य श्रद्धेय मुनिश्री विद्यानन्दजीको समर्पित

जो परम्परामें रहकर भी उसे नये सन्दर्भ दे रहे हैं ।

जो जैन-धर्मको उस विश्व-धर्ममें देखते हैं, जो मानव-धर्मकी कसीटी पर खरा उतरे ।

जिनकी वीतरागता विद्यानुरागमें रूपायित है, विद्याका हर आयाम जिन्हे आन्दोलित करता है ।

जिनकी आत्म-साधना विश्वकल्याण-भावनासे अनुप्रेरित है ।

मूलतः कन्नडभाषी होकर जो ऐसी प्रांजल हिन्दी बोलते है कि जिसे सुनकर कोई कह नही सकता कि वे उत्तर भारतीय नही है; हालांकि साधुका अपना कोई देश नही होता, जाति नही होती ।

प्राकृत अपभ्रंशमें जिनकी गहरी और सक्रिय दिलचस्पी है, जो चाहते हैं कि उक्त समूचा साहित्य आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिसे सम्पादित होकर प्रकाशमें आये जिससे भारतीय सांस्कृतिक धाराके धनछुए तत्त्वों और अध्यायोको उजागर किया जा सके । उनको यह चाह मूर्त हो ।

—देवेन्द्रकुमार जैन

अनुवादक का निवेदन

महाकवि पुष्पदन्तके महापुराणके पहले खण्डका अनुवाद 'नाभेयचरित'के नामसे दो खण्डोंमें प्रकाशित हो चुका है, उसी प्रकाशन शृंखलाकी यह दूसरी कड़ी है—जिसमें ३८वीं सन्धिसे लेकर ६७वीं सन्धि तकका अंश है। इस अंशकी महत्ता इस तथ्यमें है कि इसमें अधिकतर तीर्थकरों, चक्रवर्तियों, बलदेवों, वासुदेवों और प्रतिवासुदेवोंके चरित आ गये हैं। यह महापुराण—श्रमण संस्कृतिके ऐतिहासिक विकास और मूल प्रवृत्तियों को समझनेके लिए एक काव्यात्मक दस्तावेज है। समकालीन बृहत्तर भारतीय संस्कृतिकी दूसरी धाराओंके आलोचनात्मक अध्ययनके लिए इसका महत्त्व निर्विवाद है। अपभ्रंश भाषा और पदद्विधाबन्धमें होनेके कारण, इसका महत्त्व अकूत है। महापुराणकी भाषा और शैली नयी है। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं और उनके साहित्यके वैज्ञानिक अध्ययनकी दृष्टिसे इसकी उपादेयताका जब सम्पूर्ण मूल्यांकन होगा, तब अब तककी अध्ययन दृष्टि और उसके परिणामोंमें आमूल क्रांति होगी। लेकिन इस समय अध्ययनकी जो स्थितियाँ हैं, अबसरवाद ज्ञानके क्षेत्रमें जैसी कलाबाजियाँ दिखा रहा है उन्हें देखते हुए निकट भविष्यमें यह मूल्यांकन हो सकेगा, इसकी न तो आशा है और न सम्भावना, फिर भी निराश इसलिए नहीं हूँ कि संसार क्षणभंगुर है, उसमें एक सी स्थिति कभी नहीं रहती, कभी न कभी स्थिति बदलेगी और अन्धेता सही सन्दर्भमें इस काममें लगे। मैं इसे दुहराना आवश्यक समझता हूँ कि संस्कृत प्राकृत—अपभ्रंशसे आधुनिक भारतीय आर्य और आर्यतर भाषा तक पहुँचनेके लिए हमें भारतीय भाषा (भारती) को एक प्रवाहके रूपमें देखना होगा, जो बोलचालके स्तरपर निरन्तर गतिशील रहा है। विभिन्न भाषाओंमें जो साहित्य उपलब्ध है, वे धाराके बाँध हैं, बाँध और धारा में फँक है, बाँधसे धाराकी गति नहीं रुकती। अपने समय और क्षेत्रकी दृष्टिसे ये बाँध अलग-अलग हो सकते हैं, परन्तु उनको धारा जोड़े रहती है। अतः वैज्ञानिक अध्ययनकी प्रक्रिया ही भाषा प्रवाहके स्थायी और गतिशील तत्त्वोंका सही मूल्यांकन कर सकती है।

२०वीं सदीका आठवाँ दशक (१९७०-८०) अपभ्रंशभाषा और साहित्यके विचारसे सचमुच दुर्भाग्यपूर्ण दशक है क्योंकि उसमें इसके अधिकांश प्रेरक, आशयदाता, शोधकर्ता और विद्वान् इस दुनियासे उठ गये। महापुराणके अंश 'नाभेयचरित' के अनुवादके समय अपभ्रंश साहित्यके मनीषी डॉ. पी. एल. वैद्य भी अब हमारे बीच नहीं हैं। पहले खण्डकी भूमिकामें, १९७४ में, मृत्युसेअपर पढ़े-पढ़े उन्होंने लिखा था "महाकवि पुष्पदन्तकी तीसरी रचना 'महापुराण' विशाल ग्रन्थ है, जिसके तीन खण्डोंके सम्पादनमें मुझे दस सालसे भी अधिक (१९३२-४१) का समय लगा। यह उसका डॉ. देवेन्द्रकुमार जैनके हिन्दी अनुवादका दूसरा संस्करण है, जो भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित है। मैं विशेष रूपसे खुशका अनुभव करता हूँ कि उक्त संस्थाने इसका प्रकाशन किया, और विद्वानों को इसे उपलब्ध कराया। अपभ्रंश साहित्यके प्रेमी भारतीय ज्ञानपीठके प्रति अत्यन्त अनुगृहीत हूँ। मैंने आशा की थी कि इस युगनिर्माता प्रकाशनका युवा शोध-विद्वान् अध्ययन करेंगे।"

सन्तोष भी है कि उनके जीवनकालमें ही महापुराणका पहला खण्ड हिन्दी अनुवाद और उनकी भूमिकाके साथ प्रकाशित हो गया था। चूँकि यह प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ ने अपने हाथमें लिया है, इसलिए जीवनकी आखिरी घाँस तक उन्हें विश्वास रहा होगा कि शेष खण्ड भी उसी आनन्दानुभवे प्रकाशित होंगे। विश्वास है कि मृत्युसे जूझते हुए स्व. डॉ. वैद्यने जो अपील की थी अपभ्रंशके अन्धेता उसपर ध्यान देंगे।

इस अवसरपर, मैं भारतीय ज्ञानपीठके न्यासधारियों, निदेशक भाई लक्ष्मीचन्द्रजी और डॉ. गुलाबचन्द का हृदयसे अनुगृहीत हूँ कि उन्होंने विभिन्न स्तरोपर इस कार्यको गति दी। मूर्तिदेवी ग्रन्थमालाके वर्तमान सम्पादक श्रद्धेय पण्डित कैलाशचन्द्र शास्त्री और डॉ. ज्योतिप्रसाद जैनके प्रति कृतज्ञ होना मेरा कर्तव्य है कि जिनके सम्पादनमें इसका प्रकाशन हो रहा है। अपभ्रंशकाव्य कृतियोंके अनुवादकी प्रेरणा देनेवाले श्रद्धेय प. फूलचन्द्रजी शास्त्रीका कृतज्ञस्मरण कर मैं सुखका अनुभव कर रहा हूँ। अनुवादको मूलगामी और शुद्ध बनानेका पूरा प्रयास किया गया है परन्तु अपभ्रंश-जैसी लचीली विकल्प प्रिय भाषा और उसके चरितकाव्योकी सक्षिप्त और विस्तृत शैलीके कारण कभी-कभी सन्दर्भोंको जोड़ना मायापच्चीका काम है, शब्दकी पहचान भी टेढ़ी खीर बन जाती है। इसके अलावा पिछले दशकमें जिन्दगीमें आनेवाले व्यवधानों तथा पुष्पदन्तके इस कथनको दुहरानेवाले—

कलिमलमलणु कालु विवरैर
 पिनिघणु णिगणु दुण्णययारउ
 जो जो दीसइ सो सो दुण्जणु
 णिप्फलु नीरसु ण सुक्कउ वणु
 राउ राउ णं संझहि केरउ” ४।३८

कलियुगके पापोसे मैला, यह समय अत्यन्त चिपरीत है, निर्दय निर्गुण और दुर्नयोको करनेवाला जो-जो दिखाई देता है। (मिलता है) वह-वह दुर्जन, फलहीन और नीरस, मानो यह दुनिया आदमियोंकी दुनिया नहीं, सुखे पेड़ोंका जगल है। लोगोका राग, सन्ध्याके रागके समान है, पल-भरमें, या काम होते ही गायब ! मनहूस क्षणोके कारण भी कुछ भूलें रह जाना या हो जाना सम्भव है। सहृदय पाठकोसे निवेदन है कि यदि ऐसी भूलें उनके ध्यानमें आयें तो निस्संकोच उन्हें सूचित करनेका कष्ट करें, जिससे भविष्यमें उन्हें ठीक किया जा सके।

शान्तिनिवास
 114 खयानगर, इन्दौर
 452009
 20-5-1981

—देवेन्द्रकुमार जैन

PREFACE

The first Volume of the Mahāpurāṇa of Puspadanta containing the first thirtyseven samdhis out of a total of one hundred and two was issued in 1937 as No 37 of the Manikchand Digambara Jaina Granthamālā, Bombay, under the kind patronage of the Trustees of that Series. I am now issuing the second Volume of the work containing the next forty-three samdhis (xxxviii-Ixxx) in the same Series as No 41 and under the patronage of the same Trustees as also of the University of Bombay. I hope to issue the third and the last Volume of the work within a year from now.

It is my pleasant duty to thank all those who have assisted me in the production of this second Volume. In the first place I should like to thank most heartily the Managing Trustee of the Manikchand Digambara Jaina Granthamālā, Mr Thakordas Bhagwandas Javeri, who, in spite of low funds of the Mālā, agreed to finance the publication. To Pandit Nathuram Premi and Professor Hiralal Jain of King Edward College, Amraoti, the Secretaries of the Mālā, I owe a special debt of gratitude. The funds of the Mālā, after the publication of the first Volume of the work, were completely exhausted, and I feared that I would be forced to abandon the work unfinished, but these learned scholars moved heaven and earth to find out the required amount for publication. I am to thank Professor Hiralal Jain specially for his having secured for my use the Ms. of the Uttarapurāṇa designated A in the Critical Apparatus and also of the Ṭippaṇa of Prabhācandra from Master Motilal Sanghi Jain, Sanmati Pustakālaya, Jaipur, who very kindly placed them at my disposal as long as I wanted them for collation work. My thanks go to Master Motilal for this kindness. Mr. R. G. Marathe, M. A., formerly my pupil and now Professor of Ardha-Māgadhī at the Willingdon College, Sanghi, helped me for the collation of this Volume also. My thanks go to him for the help he rendered me. Nor should I forget to mention thankfully the work of Mr. R. D. Desai of the New Bharat Printing Press, Bombay, and his willing staff of Proof-readers and Pressmen who are responsible for the excellent get-up and faultless execution of this Volume.

Lastly, the Editor and the Publishers acknowledge their indebtedness to the University of Bombay for the substantial financial help (Rs. 650/-) it has granted towards the cost of publication of this Volume.

Nowrojee Wadia College,
Poona
August 1940

F. L. Vaidya

INTRODUCTION

CRITICAL APPARATUS

The Text of Mahāpurāṇa or Tisatṭhimahāpurisagunālamkāra of Puṣpadanta in this Volume is based upon three Mss. designated K, A and P which are fully collated. Occasional help for the purpose of settling the text was also derived from the Tipṭhāṇa of Prabhācandra. I give below the full description of this material :—

(1) K. This Ms. is fully described in my Introduction to Vol. I on pages xi and xii. The Uttarapurāṇa portion begins on leaf No 289 of this Ms. As this Ms was found to contain the older of the two recensions of the Ādipurāṇa with corrections to accord with the other recension, I have relied upon it for the constitution of the text in this Volume. It is to be regretted that no Ms. corresponding to Ms. G of the Ādipurāṇa Mss. could be discovered for this Volume. I may say here that the No. of the Uttarapurāṇa Mss known to me is much smaller than those of the Ādipurāṇa.

(2) A. This Ms was obtained for me by Professor Hiralal Jain of the King Edward College, Amraoti, from Master Motilal Sanghi Jain, Sanmati Pustakalaya, Jaipur. It consists of 423 leaves measuring 13 inches by 5 inches with 11 lines to a page and about 40 letters to a line. This Ms presents in its original form a recension as in P, but seems to have been corrected to another recension no longer available to me with the result that the variants recorded are those of the corrected recension. The Ms further seems to have been made up of (a) leaves of the original Ms of which a few were lost, and (b) of leaves newly added to make up the lost portion and written in a different hand. This hypothesis of mine is supported by reference to Folio No 383-384 which leaves half the page blank in order that the matter should run on with the first syllable on Folio No 385 of the original part. The pages so substituted have nine lines to a page and about 38 letters to a line. That this Ms. presents a recension different from those of K and P is clear from the fact that it contains Praśasti Stanzas 46, 47 and 48 (See Introduction to Vol I, page xxvii) which are not common to any other Ms of the Uttarapurāṇa. The Ms begins :
ॐ नमो वीतरागाय । वमहो वमालयसामिबहो and ends : स्य महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसयुगालकारे महाकुरुपुस्तक-
विरह्य महामन्त्रमहागुणमणिण्य महाकव्ये दुस्तरसयमो परिच्छेदो सप्तो ॥ सधि ॥ १०२ ॥ इति उत्तरपुराण समाप्ता ॥
शुभंमस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ सवत् १६१५ वर्षे माघदि ६ शुक्रवासे उत्तरपुराणं समाप्तं ॥ वाईहोमठनाई शालावर्षाकर्मवर्षार्थ
अथसंख्या ॥ १२००० ॥

This last page however is not the original page of the Ms but is newly written. According to this colophon the Ms is dated Friday, the 6th day of the month of Māgha (Feb.-March) of the Samvat year 1615, corresponding to 1558 A. D.

(3) P. This is Ms No 1106 of 1884-87 of the Deccan College Collection, now deposited in the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. It has 681 leaves measuring 11 inches by 4½ inches with 8 lines to a page and 33 letters to a line. It is dated the full moon day of the month of Bhādrapada (Aug.-Sept.) of the samvat year 1630 corresponding to 1573 A. D. The last page of the Ms. is damaged and hence it

was rewritten on the 6th day of the bright half of Āṣāḍha (July) of the saṃvat year 1934 corresponding to 1877 A. D. It has a brief marginal gloss. It begins, ॐ नमो वीतरागाय ॥ वंमहो वमालयसामियहो . The original page ends . इय महापुराणे..... इत्तरसप्तमो परिच्छेदो समतो. In second hand we have further : संवत् १९३० वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पूर्णिमातिथौ क (विवासरे उक्त) रामाद्रपदानक्षत्रे नेमिनायचैत्यालये श्रीमूलसवे वलत्कार...छे श्रीकृदकुदान्वये ... The replaced page ends : वलदेवदास दौग्याकाकारज मीती अलाहसुदी ६ समत १९३४ का सालम श्रीवीथामडीका मदर पचाशतीमदरने चढायो ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

This Baladevaśāstra had before him the damaged page of the Ms in two parts, the first part of which is still preserved alongwith the Ms at the Institute. The year 1630 put on the original page and the Paṭṭāvali portion on the original page seems to have been written in a different hand.

In addition to these three Mss fully collated, I have made full use of the Tippana of Prabhācandra, a Ms of which was procured for my use by Professor Hiralal Jain from Master Motilal Sanghi Jain of Jaipur. This Ms of the Tippana has 57 leaves measuring 12 inches by 5 inches with 13 lines to a page and 31 letters to a line. It begins : ॐ नम. सिद्धेश्व. ॥ वमहा परमात्मनः and ends . श्रीविक्रमादित्यसंवत्सरे वर्षाणामशौत्य-षिकृतहस्ते महापुराणवचनपदविवरण सागरसनसेद्धातान् पारशाय मूलादप्यणका चारुण्य कृतमिदं सप्तोच्चर्यादप्यण ॥ अष्टपत-मीतेन श्रीमद्वलत्कारणश्रीसहाचार्यसंस्कारांशुष्येण आचरमुनिना जनदोर्द्धामिमूर्तारपुराण्यविवर्जिन. श्रीमोजदेवस्य ॥१०२॥ इतिउत्तरपुराणद्विप्यणकं श्रीभाचन्द्राचार्यावराचत समाप्त ॥ छ॥ अथ संवत्सरेस्मन् आ नृपावक्रमादित्यगवाच. संवत् १५७५ वर्षे भाद्रवा सुदि । इन्द्रदिने । कुर्वनांगलक्षे । सुअंतान् सिकदरपुत्रु सुलितान्ब्राह्ममुराज्यप्रवर्तमाने आकाशसवे माशुरान्वये पुष्कराण्ये । मद्भारकथापुण्यमद्भारदत्वा । तदात्मनायं जैसवालु ची. टाडमरल्लु । इदं उत्तरपुराणका लिखापत । सुम भवतु । मागल्य ददाति लेखकपाठकयोः ॥ छ ॥

The colophon of this Ms raises some interesting problems which have been fully discussed in my Introduction to Vol I, page xv, and hence it is not necessary to restate and reexamine them here. I need only say that I have made full use of this T as also of the marginal gloss in K and P in constituting my text and in preparing my Foot-Notes.

There is one more Ms of the Uttarapurāṇa known to me. It is deposited in the Balātkāra Gaṇa Jain Mandir at Karanja, Berar, and bears No 7029 in the Catalogue of Sanskrit & Prakrit Mss in the C. P. and Berar, by the late Rai Bahadur Hiralal. This Ms is dated Thursday the 8th day of the dark half of Mārgaśīrṣa of the saṃvat year 1606, i. e., 1549 A. D. I have personally examined this Ms at Karanja during my visits to that place in 1927 & 1929, have had some trial collations, was promised the loan of it by the trustees of the temple, but could not get it when I actually required it owing to some strange attitude which the trustees then took. From my trial collations however, it appears that this Ms agrees very closely with P which is fully collated for this edition.

I have constituted my text in this Volume on the material described above. In doing so I have mostly relied upon the text as preserved in K which was found to represent the earliest of three recensions of the Uttarapurāṇa.

SUMMARY OF CONTENTS

This Second Volume of the Mahāpurāṇa contains saṃdhis XXXVIII-LXXX of the great epic, and describes the lives of twenty Tirthapkaras beginning with Ajita the second and ending with Nami the twenty-first, eight each of the nine

Baladevas, Vāsudevas and Prati-Vāsudevas, and ten out of twelve Cakravartins from Sagara to Jayasena. In narrating these lives the poet has followed the information handed down by tradition and seems to have been greatly influenced by Guṇabhadra's Uttarapurāṇa in Sanskrit. It appears that the details of the lives of these Great Men were codified by old monks, but individual poets handling the theme were free to use their poetic genius in detailed description. Vimalasūri in his Paumacariya, for instance, says :—

नामान्छिवनिबद्ध आत्यरियपरंपरागतं सङ्घं ।

बोच्छामि पञ्चचरियं ब्रह्माण्डविं समस्येण ॥ १-८.

Although most of the information seems to have been codified and tabulated and handed down by tradition of each of the two schools of the Jains, there is considerable uniformity in the subject matter. I have myself prepared some Tables and given them in the form of Appendices to this Volume. I now proceed to give the summary of contents by saṃdhis where such summary cannot be given in a tabular form.

XXXVIII. The Poet at the beginning offers salutations to the five Paramesṭhis and assures the reader to continue his work by narrating the life of Ajita the second prophet of the Jains. But before he proceeds he says that for some reason he was uneasy at heart and so stopped his literary activity for some time. One day the goddess of Learning appeared before him in dream and asked him to offer his salutations to the Arhats. The poet woke up but saw nobody before him. At this juncture Bharata, his patron, came to his house and asked him whether he (Bharata) offended him any way as a result of which he did not continue his work. Bharata reminded the Poet further that the life was fickle and that he should make full use of the gift of his poetic powers. The Poet then said to his patron that he was uneasy at heart because he found the world to be full of wicked people, and that, for that reason, he was not inclined to continue his composition, but that he would resume it at his request which he could not refuse. The Poet then resumes the work and narrates the life of Ajita. For details see Notes and the Tables in Appendices I, II, and III.

XXXIX. There lived a king named Jayasena at Pṛthvipura, the capital of Vatsāvati in the eastern Videha. He had two sons, Ratiṣeṇa and Dhṛtiseṇa by name, possessing great beauty. Of these Ratiṣeṇa died early. His father, overcome by grief, and disgusted with the worldly life, gave his kingdom to his son, Dhṛtiseṇa, and alongwith his minister Mahāruta, became a monk. Both Jayasena and Mahāruta practised penance, and after death became gods named Mahābala and Maṇiketu. These two gods made an agreement between themselves that whoever would be born on the earth earlier should be taught by the other the highest Dharma. Of these Mahābala was born first on the earth as king Sagara of Śāketa, and in course of time became a Cakravartin. Once a monk named Caturmukha attained Kevalajñāna, on which occasion gods arrived on the earth Sagara went there to pay his respects to the monk. Maṇiketu saw king Sagara there and was reminded of his promise to god Mahābala. Maṇiketu thereupon took the opportunity to tell Sagara how fickle the earthly prosperity was, but Sagara paid no heed to him. Once again Maṇiketu came to Sagara's palace to enlighten him, but this time also

he failed. Now just about this time, sixty thousand sons of Sagara approached their father and asked him to give some work of command as they were tired of being idle. Sagara at first told them that there was nothing that was left for them to do as his cakra had already achieved everything for them. His sons however insisted and then Sagara asked them to go to Mandara mountain and make some arrangement for the protection of the temples of the twenty-four Jinas built by Bharata the first Cakravartin. The sixty thousand sons of Sagara then started on their mission, dug up a huge ditch round Mandara and filled it with waters of the Ganges which flowed into the Nāgaloka. This time Maṇiketu thought of enlightening Sagara by a new method. He became a big snake, looked at the sons of Sagara with anger, and burned them to ashes. Only two, Bhīma and Bhagīrathī, escaped alive. Sagara was informed of this disaster, was advised by a Brahmin on the fickleness of saṃsāra. Following his advice, Sagara placed his son Bhagīrathī on the throne, and with his son Bhīma, became a monk. Maṇiketu was delighted to see this and showed to Sagara how he wrought about by his magic the death of his sons. All the sons were then brought to life, but they also followed their father by becoming monks. Bhagīrathī also, in due course, became a monk and attained emancipation.

.XL, XLI, XLII, XLIII, and XLIV. For the lives of Saṃbhava, Abhinandana, Sumati, Padmaprabha and Supārśva, see the Tables.

XLV. This saṃdhi describes the six previous births of Candraprabha the eighth Tīrthaṅkara. In the earliest of these births, the soul of Candraprabha was born Śrīśarman or Śrīvarman, son of king Śrīseṇa and queen Śrīkāntā of Śrīpura in the Sugandha country of Western Videha. Leading a pious life he was next born as a god named Śrīdhara. In the next life he was born as a son named Ajitasena to king Ajitamjaya and queen Ajitasenā of Ayodhyā in the Alakā country. This Ajitasena became a cakravartin, led a pious life, and was next born as the lord of the Acyuta heaven. After this he was born as Padmanābha or Padmaprabha, son of Kanakaprabha and Kanakamālā of the town Vastusaṃcaya in the Mangalāvati region. In his next birth he was born as Ahamundra in the Vanjayanta heaven.

XLVI. For the life of Candraprabha as a Tīrthaṅkara see the Tables.

XLVII. For the life of Suvidhi or Puṣpadanta see the Tables.

XLVIII. Śītala the tenth Tīrthaṅkara was in his previous life king Pṛthvipāla of Susīmā. His wife, Vasantalakṣmī by name, died in the prime of youth, and the king, reflecting on her death, renounced the worldly life. In his next birth he was born as a god in the Āruṇa heaven. In his next birth he was born as a son named Śītala to king Dr̥gharatha and queen Sunandā of the town of Rājabhadrā or Bhadrīlapura. On seeing a bee dead in the lotus flower, he formed a disgust for the worldly life, renounced it, and going through the usual course of a Tīrthaṅkara, attained emancipation. After his nīrvāṇa Jainism fell on bad days for want of persons preaching and practising it. There was at this time a king called Megharatha at Bhadrīlapura. He wanted to spend his wealth in making gifts to suitable persons and asked the advice of his minister what type of gift was the best gift. His minister mentioned Śāstradāna to be the best form. The king however, did not like this advice, and asked a Brahmin named Muṇḍaśālayana who told the king that he

should make the gifts to Brahmins of girls, elephants, cows etc. The king followed his advice which only went to enrich the Brahmins but did the king no good.

II. For the life of Śreyāṃsa see the Tables.

L, LI and LII. These three śaṁdhis describe the narrative of the first set of Baladevas, Vāsudevas and Prati-Vāsudevas. During the regime of Śreyāṃsa there lived at Rājagṛha a king named Viśvabhūti and queen Jāmī. The king had a younger brother named Viśākhabhūti and his queen was called Lakṣmaṇā. Jainī gave birth to a son called Viśvanandī and Lakṣmaṇā to Viśākhanandī. One day Viśvabhūti saw an autumnal cloud disappearing in the sky. From this the king realised impermanence of saṁsāra, and giving his kingdom to his younger brother Viśākhabhūti, renounced the worldly life. When Viśākhabhūti became king, Viśvanandī became the Yuvarāja.

Now Viśvanandī once went to his pleasure-garden called Nandana, and while he enjoyed life there in the company of women, Viśākhanandī saw him. A desire to possess that very garden arose in his mind. He went to his father and pressed him to give it to him. The king agreed to do this, called Viśvanandī and asked him to take charge of his father's kingdom, and told him further that he (Viśākhabhūti) would go to the frontier to overcome the rebelling tribes. Viśvanandī did not like the idea that his uncle should go to fight, but told him that he would rather himself go for that purpose. Viśākhabhūti agreed and Viśvanandī went away. During his absence Viśākhabhūti gave the Nandana garden to his son Viśākhanandī. When Viśvanandī returned, he found that his garden was taken possession of by Viśākhanandī. Viśvanandī got angry with his uncle and cousin. He wanted to attack his cousin who climbed up the tree. Viśvanandī uprooted the tree with Viśākhanandī on, and wanted to smash them both. Viśākhanandī however escaped but climbed a stone pillar which Viśvanandī smashed into pieces. Viśākhanandī then ran away for life. At this time Viśvanandī was filled with pity that he attacked his cousin, and made up his mind to be a Jain monk. Viśākhabhūti also made up his mind to follow Viśvanandī, placed Viśākhanandī on the throne, went to the forest and practised penance. After his death he was born in the Mahāśukra heaven.

Now Viśākhanandī was overcome by a powerful enemy, and ran away from his capital. He went to Mathurā and became the minister of the king. Once his cousin, the monk Viśvanandī, was going along the road on his begging tour when he was hit by a young cow that had recently delivered a calf, and Viśvanandī fell on the ground. Viśākhanandī saw this from the terrace of the house of his courtesan, and insulted him. Unable to bear the insult Viśvanandī formed a hankering that he should in his next life have a revenge on Viśākhanandī. After his death Viśvanandī was born in the Mahāśukra heaven where his uncle Viśākhabhūti was born. Viśākhanandī also was later overcome with disgust for his conduct, practised penance, and after death was born in the same heaven.

Now there lived in Alakā a king named Mayūragṛiva and queen Nrlāñjana-prabhā. Viśākhanandī in his next life became their son and was named Aśvagrīva, a Prati-Vāsudeva. He defeated his enemies and became the lord of the three continents of the earth, i. e., an Ardha-cakravartin.

There lived in Podanapura a king named Prajāpati. He had two queens, Jayāvati and Mrgāvati. Jayāvati gave birth to a son called Vijaya, who was Viśakhabhūti in his previous birth. This Vijaya is the first Baladeva of the Jain Mythology and had a white complexion. Mrgāvati gave birth to a son called Triprsthā, who in his previous birth was Viśvanandī. This Triprsthā is the first Vāsudeva and had a dark complexion. These two step-brothers were greatly attached to each other.

LI. Once a report was brought to king Prajāpati that a terrific lion had been working a havoc on the subjects. His subjects requested him to remove this scourge. Thereupon the king himself prepared to go to kill the lion when his son Vijaya requested his father to allow him to go on that mission. The king allowed Vijaya to go, his younger brother Triprsthā followed him. Both of them approached the cave of the lion, which, on being roused by the din and cry of warriors, came out, and was about to attack Vijaya, when Triprsthā with his arms caught both the claws of the lion and struck it on the face. The lion fell dead.

One day the door-keeper approached the king and told him that there was at the door a Vidyādhara who wanted to see him. He was admitted to the king's presence. The Vidyādhara told king Prajāpati that he was Indra by name and had come there as a messenger of king Jvalanajaṭi. He came there to invite the king and his two sons to the region of the Vidyādharas in order that Triprsthā should lift up the huge slab of stone known as the Koṭisilā, to kill Aśvagrīva and marry his daughter Svayamprabhā, and thereafter to rule over the three continents of the earth and to make Jvalanajaṭi the lord of both the sides of the Vairāḍhya mountain. King Prajāpati accepted the invitation and went to the region of the Vidyādharas. King Jvalanajaṭi received them well and introduced them to his son Arkakīrti. In the course of their talk it was arranged that Triprsthā should first lift up the Koṭisilā which would convince them that he was capable of killing Aśvagrīva. Thereupon they all went to the forest where the Koṭisilā stood and asked Triprsthā to lift it up. He did so with ease. Jvalanajaṭi and others praised Triprsthā for his great strength. Thereafter they all returned to Podanapura and celebrated the marriage of Triprsthā with Svayamprabhā. The news of this marriage reached the ears of Aśvagrīva who resented the action of Jvalanajaṭi in marrying his daughter outside his clan, i. e., in giving her to Triprsthā, a human being, in stead of to Aśvagrīva, a Vidyādhara. Aśvagrīva thereupon marched against Jvalanajaṭi and king Prajāpati even against the advice of his ministers.

LII Spies brought the news of the arrival of the army Aśvagrīva to the gates of Podanapura. Thereupon king Prajāpati consulted with Jvalanajaṭi as to how they should meet the situation when Vijaya told them that he was sure in his mind that Triprsthā would kill Aśvagrīva. King Jvalanajaṭi then taught Triprsthā several magic lores, after which order was given to the army to march against Aśvagrīva. Before however the fight began Aśvagrīva sent a messenger to Triprsthā to see if Triprsthā was prepared to make peace with Aśvagrīva by handing over Svayamprabhā. Triprsthā rejected the proposal. The fight began. The goddesses gave to Triprsthā a bow called Śārngā, a conch called pāñcajanya, Kaustubha gem, a gadā called kaumudī, and to Vijaya a plough, a pestle and a gadā. The armies met and

there was a terrible fight between them. In the course of the fight, Aśvagrīva threw his discus at Triprsthā, but instead of doing any harm to him, it remained on his arm. He then used this very discus against Aśvagrīva who was killed. Immediately on his death Triprsthā became the Ardha-cakravartin. Jvalanayaṅgī thereafter returned to his capital Rathanūpura, and enjoying the sovereignty of both the sides of the Vaitāḍhya mountain for a considerable time, became a monk. King Prajāpati also did the same.

Now Triprsthā remained ever unsatiated with pleasures, died and went to the seventh hell. After his death Vijaya handed over his kingdom to Śrīvijaya, practised penance and attained emancipation Svayamprabhā also did the same.

LIII. For the life of Vāsupūjya see the Tables.

LIV. This saṁdhi gives the narrative of the second set of Baladevas and Vāsudevas. There lived in Vindhya-pura a king named Vindhyaśakti. King Suseṇa of Kanakapura was his contemporary. Both of them were great friends. Now king Suseṇa had at his court a beautiful courtesan named Guṇamañjarī. King Vindhyaśakti hearing about the beauty of Guṇamañjarī sent a messenger to Suseṇa and asked him to send the courtesan to him. This request was, of course, rejected and the two friends met in a battle in which Suseṇa was defeated. On hearing the defeat of Suseṇa, his friend, king Vāyuratha of Mahāpura, got disgusted with the worldly life and became a monk. King Suseṇa also became a monk, but formed a hankering to avenge his defeat in one of his next births. Both Vāyuratha and Suseṇa were born in the Prāṇata heaven. King Vindhyaśakti also was born in one of the heavens.

In the next birth Vindhyaśakti was born as son to king Śrīdhara and queen Śrīmatī of Bhogavardhana, and was named Tāraka, who, in course of time became an Ardha-cakravartin. Vāyuratha and Suseṇa were born sons to king Brahmā and queens Subhadrā and Uvavādevī or Usādevī and were named Acala and Dvīprsthā who were the Baladeva and Vāsudeva. They had an excellent elephant. Now Tāraka had a desire to have that elephant and sent a messenger to Acala to hand it over. As Acala refused to do so, there was a fight between Tāraka and Dvīprsthā in which Tāraka was killed. Dvīprsthā then became the Ardha-cakravartin. After death both Tāraka and Dvīprsthā went to hell, and Acala, seeing the death of his brother, became a monk and secured emancipation from saṁsāra.

LV. For the life of Vimala the thirteenth Tīrthamkara see the Tables.

LVI. There was a king called Nandimitra in Śrīpura in the western Videha. One day he reflected on the impermanence of the world, renounced the pleasures, became a monk, and after death was born in the Anuttaravimāna heaven.

There lived in Śrāvastī a king named Suketu. There lived in the same town another king named Bali. They once indulged in the play of dice in which Suketu lost everything. Out of disgust he became a monk, but while practising penance he formed a hankering that he should take revenge on Bali in the next birth. Suketu, after death, was born in the Lāntava heaven. Bali also was born as a god in heaven.

In their subsequent births Bali was born as a son of king Samarakesari and queen Sundarī of Ratnapura, and was called Madhu. He was a Prati-Vāsudeva and

an Ardha-cakravartin Nandimitra and Suketu were born as sons to king Rudra of Dvāravatī by his wives Subhadrā and Prthivī, and were named Dharma (Baladeva) and Svayambhū (Vāsudeva). One day Svayambhū, while seated on the terrace of his palace, saw an army encamped outside the city and asked his minister whose army it was. His minister told him that a feudatory named Śāśisomya sent his tribute to king Madhu and that it consisted of elephants, horses etc., which was being taken to him. Svayambhū would not allow that, defeated Śāśisomya and carried off the tribute. The news reached the ears of Madhu who thereupon marched against Svayambhū. In the fight that followed Svayambhū killed Madhu, and became an Ardha-cakravartin. After enjoying the kingdom Svayambhū died and went to hell. Dharma became a monk and attained emancipation.

LVII. This samdhi narrates an episode of Samjayanta, Meru and Mandara, out of which the two latter were the Gaṇadhara of Vimala, the thirteenth Tirthakara. There are two more persons connected with the story, viz, Śrībhūti the minister and Bhadramitra the merchant. Of these the name of Śrībhūti is confounded with Satyaghosa. The poet describes the seven previous of the first three and only a few of the last two. A glance at the lists given in Notes on this Samdhi will facilitate the understanding of the reader.

In the city of Vitasoka there lived a king named Vajrayanta. His queen was called Sarvasrī. She gave birth to two sons, Samjayanta and Jayanta. One day on hearing the discourse of a Jain monk they all renounced the world. In course of time Vajrayanta secured emancipation. Gods arrived on this occasion to show their reverence to Vajrayanta. Among them was the lord of snakes who was very beautiful. Jayanta formed a hankering to have a beautiful body like that of the lord of snakes in the next birth. He was then born in the nether world as lord of snakes.

One day, when Samjayanta was practising the pratimās, a Vidyadhara, Vidyuddanṣṭra by name, saw him, picked him up and threw him into the waters of the confluence of five rivers, and told the people that the monk was a demon. The people thereupon beat him, but the monk remained undisturbed, and bearing the hardships, died and attained emancipation. On the occasion of his nirvāṇa gods arrived including Jayanta who was then the lord of snakes. Finding the plight of his brother Samjayanta, the lord of snakes began to attack people. They however said that they beat the monk on the report of Vidyuddanṣṭra. The lord of snakes then caught Vidyuddanṣṭra, and while the former was about to throw the latter into the sea, god Ādityaprabha intervened and narrated the story of the former lives of them all.

There was a king named Sīmhasena in the city of Sīmhapura. His queen was named Rāmadattā. He had two ministers, Śrībhūti and Satyaghosa. There was a merchant named Bhadramitra, the son of Sudatta and Sumitrā of Padmasaṇḍapura. Now this Bhadramitra, while wandering, obtained precious gems in Ratnadvīpa, which, during his halt at Sīmhapura, he deposited with Satyaghosa (There is later a confusion between Śrībhūti and Satyaghosa). After some time Bhadramitra asked for the return of his gems, but Satyaghosa denied all knowledge of gems even though

he was questioned by the king. Bhadramitra then went mad and ascending a tree in the neighbourhood of the king's palace, used to decry the minister. Queen Rāmadattā got angry with the minister, but arranged to play a trick on him. She arranged a game of dice with Satyaghosa, in which he lost his signet ring and the sacred thread to the queen, who then sent the ring to the treasurer of the minister through her maid, and obtained from him the gems of Bhadramitra. In order to ascertain that Bhadramitra has told the truth, the king got a few gems of his mixed with those of Bhadramitra, to whom they were shown. Bhadramitra picked only his gems saying that others were not his. The king was then pleased with him, punished the minister, treating him as a thief would be treated. The minister bore ill-will towards the king for this. In his next birth he became an agandhana snake, stood at the treasury of the king and bit him.

In his next birth Bhadramitra became the son of Rāmadattā, and was named Suphacandra. He had a younger brother called Pūrṇacandra.

It is in this strain that the previous of all the three persons mentioned at the beginning of the saṃdhi are narrated.

LVIII. For the life of Ananta the fourteenth Tīrthamkara, see Tables.

During his regime were born the fourth set of Baladeva, Vāsudeva, and Prati-Vāsudeva. Their names were Suprabha, Purusottama and Madhusūdana.

There was a king named Mahābala in Nandapura. He became a monk and after death was born in Sahasrāra heaven. There lived at this time at Podanapura a king named Vasuseṇa. His queen Nandā was very beautiful. Once his friend Caṇḍaśāsana came to stay with him, saw Nandā, fell in love with her, and asked Vasuseṇa to give her to him. He refused to do so, but Caṇḍaśāsana carried her by force. Vasuseṇa thereafter became a monk, and after death was born in the same heaven where Mahābala was born.

Caṇḍaśāsana in his next birth became the son of king Vilāsa and queen Guṇavati of Vārāṇasī. Mahābala and Vasuseṇa became sons of king Somaprabha by his queens Jayavati and Sita, and were named Suprabha and Purusottama. Madhusūdana made a demand of tribute from them, and as they refused to pay it, there was a fight between Madhusūdana and Puruṣottama in which Madhusūdana was killed. After him Purusottama became the Ardha-cakravartin.

LIX. For the life of Dharma the fifteenth Tīrthamkara see Tables.

During his regime there appeared the fifth set of Baladeva and Vāsudeva. There was a king called Naravṛṣabha in the city of Vitasoka. He practised penance and was born in the Sahasrāra heaven. At this time there was at Rājagṛha a king named Sumitra. He was defeated in battle by Rājasimha. Sumitra thereupon practised penance, formed a hankering to defeat Rājasimha in the next birth, and after death was born in the Mahendra heaven. Now Rājasimha in his next birth became king Madhukṛīḍa of Hastināpura. King Naravṛṣabha and king Sumitra were born as sons to king Simhasena and queens Vijayā and Ambikā, were called Sudarśana and Puruṣasimha and were the fifth of the Baladevas and Vāsudevas.

King Madhukrīḍa sent his messengers to Sudarśana and demanded tribute from him which he refused. They fought. Puruṣasīṃha killed Madhukrīḍa and became an Ardha-cakravartin.

In the same regime there lived a king named Sumitra at Sāketa. He had a queen called Bhadrā. She gave birth to a son, Maghavan by name, who, having conquered the six continents of the earth, became the third sovereign of the Jain Mythology. After having enjoyed the kingdom for a long time, he renounced the world and attained emancipation.

After some time in the same regime there came the fourth cakravartin, Sanatkumāra by name. He was the son of king Anantavīrya and queen Mahādevī of Vīṇitapura. He was said to be extremely beautiful. Two gods sent by Indra came to see his beauty and said to the king that his beauty would have been everlasting if there had been no oldage and death. On hearing the mention of oldage and death Sanatkumāra renounced the world and attained emancipation.

LX A Brahmin named Amoghajihva once predicted that within a week lightning would fall on the head of king Śrīvijaya, the son of Triprsthā Vāsudeva, and that he would receive a shower of gems on his head. When the Brahmin was asked how he could predict such a thing, he said he studied the science under a famous teacher. One day, when he asked his wife for his meals, she served him only cowries in a plate, as, owing to extreme poverty, she had nothing else in her house. His wife then rebuked him that he did not work and earn money. Just at this time a spark of fire fell on his plate and his wife disbursed a pot of water over his head. It is from this incident that he predicted the fall of lightning on the head of king Śrīvijaya and a shower of gems over his head. The ministers thereupon advised the king to abdicate the throne for a while in order to escape the calamity and to place some one on throne for the time being. The śaṃdhi then narrates the enmity and fight between Śrīvijaya and Amītejas, a Vidyādhara. A monk intervenes, preaches them the doctrines of Jainism as a result of which they both become monks.

LXI In their next birth Śrīvijaya and Amītejas were born in heaven as gods Maṃcūla and Ravicūla. In their next birth they were born as sons of Stīmtasāgara of the city of Prabhāvatī by his queens Vasundharā and Anumati, and were called Anantavīrya and Aparājita. They had two beautiful dancing girls in their court which were demanded by a Vidyādhara king named Damitāri.

LX-LXIII. These four śaṃdhis narrate the life of Śānti together with his previous births as also of Cakrāyudha, as detailed in LXIII. 11 and explained in the Notes.

LXIV. For the life of Kunthu see the Tables.

LXV For the life of Ara see the Tables.

During the regime of Ara, there appeared the eighth cakravartin, Subhauṃa*

* The story of Jamadagni, Paraśurāma and Subhauṃa here is a mixture of two stories on the side of the Hindu mythology, viz, the story of the carrying away of Vasiṣṭha's cow, Nandini, by Gādhī, and of Kārtavīrya Sahasrārjuna and Paraśurāma.

by name. There was a king named Sahasrabāhu. His queen Vicitrāmātī gave birth to a son, Kṛtavīra by name. Vicitrāmātī's sister Śrīmātī was married to king Śatabhīṣu. A son was born to them and was named Jamadagni. Owing to the death of his mother in early childhood, Jamadagni became a tāpasa ascetic Śatabhīṣu and his minister Hariśarma also became ascetics under Jainism and Hinduism respectively. After death Śatabhīṣu was born in the Saudharma heaven and Hariśarma was born in the Jyotiṣka heaven. They both wanted to test the piety of Jamadagni, assumed the form of a couple of sparrows, built their nest in the beard of Jamadagni, and talk'd something insulting to him. He then got angry with the birds and threatened to kill them. One of the birds thereupon said to the sage that he did not know that he could not obtain heaven as he did not beget a son. Jamadagni was then set to thinking, went to his maternal uncle, and sought a girl for marriage. Owing to his oldage however, no girl was prepared to marry him. He thereupon cursed all the girls of the town to be dwarfish or hump-backed, which town thereafter became known as Kānyakubja (Modern Kanauj). He however found his uncle's daughter, all dusty, called her Reṇukā (Dusty), attracted her by showing her a plantain, made her sit on his lap, and married her, as, he said, she liked him. In course of time she gave birth to two sons, Indrarāma and Śvetarāma. Her brother gave to her a gift of a cow that would yield everything desired, as also a charm (mantra) of axe (Paraśu). Reṇukā and her husband Jamadagni thereafter lived happily.

One day king Sahasrabāhu with his son Kṛtavīra came to her hermitage. They were both treated to a royal feast by Reṇukā. The king and his son were struck with the excellence of the food and asked Reṇukā how she, the wife of an ascetic, could treat them so sumptuously. She said that her brother had given her a cow that yielded desired things. Kṛtavīra wanted that cow, and, in spite of Reṇukā's protests, carried her off. In the fight that ensued between Kṛtavīra and Jamadagni, Sahasrabāhu killed Jamadagni. His sons Indrarāma and Śvetarāma were away, but when they returned and learnt from their mother that their father was killed by Sahasrabāhu and his son Kṛtavīra, and that their cow was carried off by them, they got angry. Reṇukā taught them the Paraśumantra. They then went to Śaketa, killed Sahasrabāhu and Kṛtavīra, and all other members of the Kṣatriya race twentyone times. After the extermination of all living Kṣatriyas they gave the earth to Brahmīns who thereafter ruled over it. Vicitrāmātī, the queen of Sahasrabāhu, was pregnant at this time, and bore in her womb the soul of a former king Bhūpala by name, who was destined to be a cakravartin. She ran for life into the forest, and was offered shelter by a sage named Śaṅḍilya. There in his hermitage she gave birth to a son who was named Subhāuma.

LXVI. Subhāuma passed his childhood in the hermitage of the sage Śaṅḍilya in the forest, and grew to be a strong and powerful youth. One day he asked his mother how it was that he did not see his father and pressed her to tell him his whereabouts. Thereupon Vicitrāmātī narrated to him how his father Sahasrabāhu was killed by Paraśurāma.

In the meanwhile an astrologer came to the house of Paraśurāma who asked the astrologer how he would meet his death. The astrologer told him that he at whose glance the plate filled with the teeth of his enemies (Sahasrabāhu and Krtavīra) would turn into a plate of rice, would be his killer. Thereupon Paraśurāma established a dānaśālā in the city where Brahmīns were served meals free and were shown the plate of teeth. Subhauma was asked to visit the dānaśālā to see if he was the person at whose hands Paraśurāma was to meet his death. Subhauma thereupon went to the dānaśālā, saw the plate when it turned into a plate of cooked rice. Immediately the keepers attacked young Subhauma who was unarmed. But the plate itself turned into a discus with which he killed them and also Paraśurāma. He thereafter became a cakravartin.

King Subhauma was once served a cūcā fruit by his cook. He got angry with the cook and killed him for this offence. The cook was born as a Jyotiska god and assuming the form of a merchant offered the king some nice fruits. The king liked them very much and pressed the merchant to have more of them. The merchant said that gods gave him the fruits which were exhausted. As the king persisted in his demand, the merchant told him that the king would obtain them if he would accompany him to an island. The king agreed, went with merchant who placed him on a rock and killed him. Subhauma after death went to hell.

In the regime of Ara, there appeared the sixth set of Baladeva etc., whose names were Nandiṣeṇa, Puṇḍarīka and Niśumbha. For details see Tables.

LXVII. For the life of Malli, see Tables.

During his regime there appeared the ninth cakravartin, Padma by name. For details of his life see Tables.

It is in the regime of Malli that there appeared the seventh set of Baladeva etc., whose names were Nandiṃitra, Datta and Bali. For details see Tables.

-THE APPENDICES

The monotony with which the traditional details of the lives of Sixty-three Great Men of Jain Mythology are given and a hint by Vimalasūri in his Paumacanya quoted on page xi above suggested to me the idea of tabulating the information under suitable heads. I have therefore appended to this Volume Five Tables. Appendix I gives the iconographical information about the images of the Tīrthāṅkaras according to the school of the Dīgambaras. I have taken this Appendix from Mr. G. H. Khare's Mūrtivijñāna, a very valuable book in Marathi on Iconography. I have made slight modifications in Mr. Khare's Table so that the information in my Table should agree with the same as supplied in the works of Puspādanta and Gaṇābhadrā. Appendix II gives details about the Tīrthāṅkaras such as their previous lives, place of birth, parents etc. Appendix III supplies the number of Gaṇādharas of different Tīrthāṅkaras. Appendix IV supplies some information about the Twelve Cakravartins or sovereign rulers of the Jain Mythology. Appendix V gives information about the eight out of nine sets of Baladevas,

Vāsudevas and Prati-Vāsudevas. The sources of my information are of course the Ādipurāṇa of Jinasena, the Uttarapurāṇa Guṇabhadra and the Mahāpurāṇa of Puṣpadanta, which works, I hope, represent one of the best, if not the best, of the Dīgāmbara tradition. At one or two places I used Śvetāmbara sources as my texts failed to give, or I failed to trace therein the material. I shall be greatly obliged to scholars if they bring to my notice inaccuracies or deficiencies in them which I shall most thankfully consider.

Nowrosjee Wadia College, Poona
August 1940

}
P. L. Vaidya

भूमिका

पुष्पदन्तके महापुराणकी पहली जिल्दमें, कुल एक सौ दो सन्धियोंमें-से सैतीस सन्धियाँ हैं, जो १९३७ में, ग्रन्थमालाके न्यासधारियोंके सद्य संरक्षणमें, माणिकचन्द ग्रन्थमाला बम्बईके ३७वें क्रमांकके रूपमें प्रकाशित हुई थी। अब मैं दूसरी जिल्द, जिसमें अगली सैतालीस सन्धियाँ हैं उसी ग्रन्थमालाके ग्रन्थ क्रमांक इकतालीसवेंके रूपमें प्रकाशित कर रहा हूँ, वह भी, एक न्यासधारियों और बम्बई विश्वविद्यालयके संरक्षणमें। मैं सोचता हूँ कि अबसे एक सालके भीतर महापुराणकी तीसरी और अन्तिम जिल्द प्रकाशित कर दी जाये।

यह मेरा सुखद कर्तव्य है कि मैं उन सबके बारेमें सोचूँ कि जिन्होंने इस दूसरी जिल्दके प्रकाशनमें मेरी सहायता की। सबसे पहले मैं माणिकचन्द दिगम्बर ग्रन्थमालाके कार्यकारी न्यासधारी श्री ठाकुरदास भगवानदास जवेरीको धन्यवाद देना चाहूँगा कि जिन्होंने ग्रन्थमालाकी घनराशि कम होते हुए भी, इसके प्रकाशनमें आर्थिक सहायता दी। ग्रन्थमालाके मन्त्री, पण्डित नाथूराम प्रेमी और हीरालाल जैन, प्रोफेसर किंग एडवर्ड कॉलेज अमरावतीके प्रति मैं अपनी विशेष आर्त्तिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, पहली जिल्दके प्रकाशनके समय 'माला'की घनराशि लगभग समाप्त हो चुकी थी, और डर था कि शायद मुझे तीसरी जिल्दका, जो अचूरी है, काम छोड़ना पड़ेगा, परन्तु इन विद्वानोंने धन प्राप्त करनेके लिए आकाश-पाताल एक कर दिया, कि जो इसके प्रकाशनमें लगता। विशेषरूपसे मैं प्रोफेसर हीरालाल जैनको धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने मेरे उपयोगके लिए उत्तरपुराणकी पाण्डुलिपि (जिसे आलोचनात्मक सामग्रीमें 'ए' प्रति कहा गया है।) और मास्टर मोतीलाल संघवी जैनके सम्पत्ति पुस्तकालयसे, प्रभावचन्द्रके टिप्पण उपलब्ध कराये, उन्होंने कुपाकर तबतकके लिए मेरे अधिकारमें उसे दे दिया कि जबतक मैं मिलानके लिए उनका उपयोग करना चाहूँ। मैं मास्टर मोतीलालको धन्यवाद देता हूँ उनकी इस उदारताके लिए। श्री आर. जी. मराठे, एम. ए. ने जो मेरे भूतपूर्व शिष्य और इस समय विलिंगडन कॉलेज सांगलीमें अर्द्धमागचीके प्रोफेसर हैं, इस जिल्दके मिलानकार्यमें मेरी मदद की। उन्होंने जो सहायता की, उसके लिए वे धन्यवादके पात्र हैं। न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस बम्बईके श्री देसाई और उनके प्रूफरीडरोंके, इच्छासे काम करनेवाले स्टाफको मैं नहीं भूल सकता, कि जो इसकी शानदार साज-सज्जा और इसके निर्दोष प्रकाशनके लिए उत्तरदायी हैं। मुझे इस बातका उल्लेख विशेष रूपसे करना है कि इस जिल्दके अन्तमें जो गलतियोंकी सूची है वह उनकी उपेक्षाका परिणाम नहीं है, बल्कि वह उनका मेरी दृष्टिसे ओझल हो जानेका परिणाम है।

अन्तमें सम्पादक और प्रकाशक, विश्वविद्यालय बम्बईके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिसने प्रतीक रूपमें ६५७) रु. मूलभूत सहायता की।

नार्वस नाडिम कॉलेज
अगस्त '१९४०

—पी. एल. वैद्य

परिचयात्मिका भूमिका

आलोचनात्मक सामग्री

पुष्पदन्तका 'महापुराण' अथवा त्रिषष्टिपुरुषगुणालंकार, जो इस जिल्दमें है, के., ए. और पी. पाण्डुलिपियोंपर आधारित है। इनका पूर्णरूपसे मिलान किया गया है। कमी-कमी पाठोंको निश्चित करनेके लिए, प्रभावचन्द्रके टिप्पणसे सहायता ली गयी है, मैं नीचे इस सामग्रीका सम्पूर्ण विवरण दे रहा हूँ।

१. 'के' इस पाण्डुलिपिका मेरी पहली जिल्दके ७-८ पृष्ठपर पूरा विवरण है। उत्तरपुराणका हिस्सा पत्र क्रमांक २८९ से प्रारम्भ होता है, चूंकि आदिपुराणके दो पाठोंकी तुलनामें यह पाण्डुलिपि निश्चित रूपसे पुरानी है, अतः इस जिल्दके पाठोंकी रचनामें मैं इसपर 'निर्भर' रहा हूँ। यह खेदकी बात है कि आदिपुराणकी 'जी' पाण्डुलिपिसे मिलती-जुलती पाण्डुलिपि इस जिल्दके लिए प्राप्त नहीं की जा सकी। मैं यहाँ यह कह सकता हूँ कि उत्तरपुराणकी जो पाण्डुलिपियाँ मुझे ज्ञात हैं, बहुत थोड़ी हैं, आदिपुराणकी पाण्डुलिपियोंकी तुलनामें।

२. 'ए' यह पाण्डुलिपि मुझे प्रोफेसर हीरालाल जैन, किंग एडवर्ड कॉलेज अमरावतीने, मास्टर मोतीलाल संघवी जैन सन्मतिपुस्तकालय जयपुरसे उपलब्ध करायी। इसमें ४२३ पन्ने हैं, जो १३ इंच लम्बे और ५ इंच चौड़े हैं। प्रत्येक पृष्ठपर ११ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग ३६ अक्षर हैं। इस पाण्डुलिपिमें अपने मूलरूपमें वही पाठ हैं, जो 'पी' में हैं, परन्तु फिर भी किसी दूसरी पाण्डुलिपिके आधारपर पाठोंमें सुधार किया गया है, परन्तु वह मुझे उपलब्ध नहीं, इसका परिणाम यह है कि जो विभिन्न पाठ अंकित किये गये हैं वे संशोधित पाठोंके आधारपर हैं। आगे यह पाण्डुलिपि, (a) मूल पाण्डुलिपिके पन्नोंसे बनी है कि जिसके कुछ पन्ने खो गये हैं, और (b) कुछ उन पन्नोंसे बनी है, जो विभन्न-भिन्न हाथोंसे लिखित नये पन्नोंसे बनी हैं, जो खोये हुए पन्नोंके स्थानपर जोड़े गये हैं। मेरा यह अनुमान, ३८३-३८४ के पन्नाके सम्बन्धसे समाप्त है जिसमें आधा पृष्ठ खाली है कि जिससे मैटर मूलभागके अगले पृष्ठ ३८५ के अक्षरसे प्रारम्भ किया जा सके। इस प्रकार जोड़े गये पृष्ठोंमें प्रति पृष्ठपर नौ पंक्तियाँ हैं, प्रत्येक पंक्तिमें लगभग ३८ अक्षर हैं। इस पाण्डुलिपिके पाठ, 'के और पी' प्रतियोंके पाठोंसे भिन्न है, यह इस तथ्यसे स्पष्ट है कि हममें ४६,४७,४८ (पहली जिल्दकी भूमिका पृ. २७ देखिए) प्रशस्तितछेद है, जो उत्तरपुराणकी किसी भी पाण्डुलिपिसे नहीं मिलते। यह पाण्डुलिपि इस प्रकार प्रारम्भ होती है. ओ नमः वीतरागाय, वभहो बंभालयसामिहो; और अन्त इस प्रकार है. 'इय महापुराणे तिसष्टिमहापुरुषगुणालंकारे महाकश्यपुष्पदन्त-विरह्य महाभम्बरहाणुमण्णिए, महाकञ्जे दुजत्तरसयमो परिच्छेओ समत्तो। संवि १०२। इति उत्तरपुराण समाप्ता। शुभमस्तु। कल्याणमस्तु। संवत् १६१५ वर्षे, माघादि ६ सुक्रवासर उत्तरपुराणं समाप्तं। बाईहठो पठनार्थं ज्ञानावरणी कम्म खयापं ग्रंथ संस्था ॥१२०००॥

यद्यपि, यह अन्तिम पृष्ठ मूल पाण्डुलिपिका मूल पृष्ठ नहीं है, बल्कि नया लिखा गया है। इस पुष्पिकाके अनुसार पाण्डुलिपिकी तिथि माघकी छठ है, वि. संवत् १६१५ की, जो १५५८, ईसवीके लगभग है।

(पी) वक्सन कालेजके संग्रहकी इस पाण्डुलिपिका क्रमांक ११०६-१८८४-८७ है, जो अब भाण्डारकर संस्थान पुनामें जमा है। इसमें ६८१ पन्ने हैं, जो ११ + ४३ इंच हैं, प्रत्येकमें आठ पंक्तियाँ

और प्रत्येक पत्तिके ३३ अक्षर हैं। इसकी तिथि भाद्रपदकी पूर्णिमा है (अगस्त-सितम्बर); वि. स. १६३०, ई. १५७३ के लगभग। इस पाण्डुलिपिका अन्तिम पृष्ठ क्षतिग्रस्त है और इसलिए फिरसे लिखा गया, अपाङ्ग शुक्ल छठीको (जुलाई) वि. सं. १९३४, ई. स. १८७७ के लगभग। इसमें पार्श्वभागमें संक्षिप्त टीका है। यह इस प्रकार प्रारम्भ होता है; ओ नम-वीतरागाय। बभहो। वंभालयसमियहो। मूल पृष्ठका अन्त इस प्रकार है इय महापुराणे—दुस्तरसमो परिच्छेओ समतो। दूसरे रूपमें पाठ इस प्रकार है : संवत् १६३० वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पूर्णिमातिथी, के (वि वासरे उत्त), २१ भाद्रपदा नक्षत्रे, नेमिनाथ चैत्यालये, श्रीमूलसधे—बलात्कार छे कुन्दकुदान्वये—स्थापन पृष्ठका अन्त इस प्रकार होता है। बलदेवदास टोंग्याका कारण, भीती अपाङ्ग सुदी ६ समत १९३४ का सालम, श्री धीया भंडीका मंदिर पंचाहत्तो मदरने छडायो ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ इन बलदेवदासके पास क्षतिग्रस्त पन्ना दो हिस्सोंमें था, जिसका पहला हिस्सा, अभी भी, मूल पाण्डुलिपिके साथ संस्थानमें सुरक्षित है, मूल पृष्ठपर १६३० अंकित है, और मूल पृष्ठपर पट्टावलीवाला हिस्सा, किसी दूसरे हाथसे लिखा हुआ प्रतीत होता है।

उक्त तीन पाण्डुलिपियोंके सम्पूर्ण मिलानके अतिरिक्त प्रभाचन्द्रके टिप्पणका पूरा उपयोग किया गया है। इसकी पाण्डुलिपि, प्रोफेसर हीरालाल जैन ने, श्री भीतीलाल संधी जैन, जयपुरसे प्राप्त करायी। टिप्पणकी इस पाण्डुलिपिमें ५७ पृष्ठ हैं। जो लम्बाई-चौड़ाईमें १२×५ इंच हैं; प्रत्येक पृष्ठमें १३ पत्तियाँ और प्रत्येक पत्तिके ३१ अक्षर हैं। यह प्रारम्भ होता है—ओ नमः सिद्धेभ्यः, वंभहो परमात्मनो। अन्त इस प्रकार होता है—श्रीविक्रमादित्य संवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिक सहस्रे, महापुराण-विषम-पद विवरणं सागरसेन सैद्धान्तान् परिज्ञाय, मूल टिप्पणका चालोक्य कृतमिदं-समुच्चयटिप्पणं। अज्ञपातभीतेन श्रीमद्वलात्कार गण श्रीसघाचार्य सत्कवि शिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निजदोर्दण्डाभिभूतपुराण्यविनयिनः श्रीभोजदेवस्य ॥१०२॥ इति उत्तर पुराण टिप्पणक प्रभाचन्द्राचार्यविरचितं समाप्त छे ॥ 'अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दा सवत् १५७५ वर्षे भाद्रवा सुदि । बुद्धि दिने । कुरुजांगल देशे । सुलतान सिकन्दर पुत्र सुलतानाना-ब्राह्मीम सुरताज 'प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासधे मायुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीगुणभद्र-सूरीदेवाः । तदाम्नाये जैसवाल्ल चौ. टोडरमल्ल । इदं उत्तर पुराण टीका लिखापितं । शुभ भवतु । मांगल्य ददाति, लेखक-पाठकयोः ।

ओम् सिद्धोको नमस्कार, ब्रह्म और परमात्माको नमस्कार। श्री विक्रम संवत्के एक हजार अस्सी अधिक होने पर, महापुराणके विषम पदोंका विवरण, सागरसेन-सैद्धान्तसे (?) को ज्ञातकर और मूल-टिप्पणियाँ देखकर, यह समूचा टिप्पण किया गया। अज्ञपात भीत श्रीमत् बलात्कार गणके श्रीसघाचार्य सत्कवि शिष्य चन्द्रमुनिने, अपने ब्राह्मणदशे-अभिभूत शत्रुके राज्यको जीतनेवाले श्रीभोजदेवके। प्रभा-चन्द्राचार्य द्वारा विरचित उत्तरपुराण टिप्पण समाप्त हुआ। अथ इस संवत्सर नृप विक्रमादित्य गत १५७५ वर्ष भादो सुदी, बुधवार। कुरुजांगल देशमें सुलतान सिकन्दरके पुत्र सुलतान इब्राहीमके द्वारा सुराज्य स्थापित होने पर, श्रीकाष्ठासध, मायुरान्वय, पुष्करगण। भट्टारक श्रीगुणभद्र-सूरीदेव, उनके आम्नायमें जैसवाल चौ. टोडरमल। यह उत्तरपुराण टीका लिखवाई। शुभ हो। मांगल्य देता है—लेखक और पाठकको।

इस पाण्डुलिपिकी पुष्पिका कुछ दिलचस्प समस्याएँ खड़ी करती हैं ? जिनका मैंने प्रथम जिल्दके पृ. ६६ पर विस्तारसे विचार किया है। इसलिए यहाँ उनका फिरसे कथन-और परीक्षण जरूरी नहीं है। मुझे यहाँ केवल यह कहना जरूरी है कि मैंने 'टी' का पूरा उपयोग किया है, और के. और पी. के हाशियों पर अंकित टीकाओंका भी, पाद-टिप्पणियोंकी रचनामें।

उत्तर पुराणकी एक-और पाण्डुलिपि मुझे ज्ञात है। यह कारंजा (बरार)के बलात्कार गण जैन-मन्दिरमें सुरक्षित है। सी. पी. एण्ड-बरारके संस्कृत-प्राकृत कैटलोगमें इसका क्रमांक ७०२९ है। यह क्रमांक

स्व. रायबहादुर हीरालालने दिया है। इस पाण्डुलिपिकी तिथि, संवत् १६०६, मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष अष्टमी, जो १५४९ ई. है। १९२७-१९२९ में मैंने व्यक्तिगत रूपसे कारजा जाकर इस पाण्डुलिपिका परीक्षण किया है, और जाँचके तौर पर कुछ मिलान किया है। मुझे मन्दिरके न्यासधारियोंने यह वचन दिया था पाण्डुलिपि मुझे उधार दे दी जायेगी। लेकिन जब मुझे वास्तविक रूपसे इसकी ज़रूरत पड़ी, तो मैं न्यासधारियोंकी विचित्र मनोवृत्तिके कारण उसे प्राप्त नहीं कर सका। अपने जाँच मिलानसे, लगता है कि यह पाण्डुलिपि 'पी' पाण्डुलिपिके बहुत निकट है, जिसका कि इस संस्करणमें पूरा मिलान किया गया है।

इस जिल्दमें, मैंने अपने मूल पाठकी रचना ऊपर लिखित सामग्रीके आधारपर की है। ऐसे करते हुए मैं 'के' में सुरक्षित पाठोपर अधिकतर निर्भर रहा हूँ जो उत्तरपुराणकी तीनों पाण्डुलिपियोंमें सबसे पुरानी है।

विषयसामग्रीकी संक्षेपिका

२. महापुराणकी इस दूसरी जिल्दमें महापुराण महाकाव्यकी ३७ से ८०—कुल चवालीस सन्धियाँ हैं, और बीस तीर्थकरोकी जीवनियोका वर्णन करती है। अजितनाथसे प्रारम्भ होकर नमिनाथ तक, जो २१वें तीर्थकर है। नीर्म-से आठ बलदेवो, वासुदेवो और प्रतिवासुदेवोका वर्णन है। और बारह चक्रवर्तियोंमें-से दस चक्रवर्तियोंका, सगरसे लेकर जयसेन तक। इन जीवनियोंके वर्णनमें कविने परम्परासे प्राप्त सूचनाओं-से काम लिया है, वह अधिकतर गुणमन्त्रके सस्कृत उत्तरपुराणसे प्रभावित है, ऐसा प्रतीत होता है कि इन महापुरुषोंकी जीवनियोका विस्तार, पुराने साधुओंने वर्गीकृत कर दिया था। परन्तु विषयवस्तुका उपयोग करते हुए व्यक्तिगत रूपसे कवि, विस्तृत वर्णनमें अपनी काव्य-प्रतिभाके उपयोगमें स्वतन्त्र थे। विमलसूरिने 'पञ्चमचरित' में कहा है—

‘नाभावलिय निबद्धं आयरियपरम्परायं सर्वम् ।

वोच्छामि पञ्चमचरियं अहाणुपुक्वि समासेण ॥

ऐसा लगता है कि यद्यपि, जैनोंके दोनो सम्प्रदायोंमें जानकारी अधिकतर वर्गीकृत और तालिकाबद्ध रूपमें परम्परासे प्राप्त है, और विषयवस्तुमें काफी समानता है। मैंने स्वयं कुछ तालिकाएँ बनायी हैं और उन्हें इस जिल्दके परिशिष्टमें दिया गया है। अब मैं सन्धियोंका संक्षेप देना शुरू करता हूँ कि जहाँ सन्धियोंका संक्षेप तालिकाके रूपमें देना सम्भव नहीं है।

XXXVIII—कवि प्रारम्भमें पाँच परमेष्ठियोंकी वन्दना करता है और दूसरे तीर्थकर, अजितनाथ की जीवनीका वर्णन करते हुए, पाठकोंको काव्यरचना जारी रखनेका आश्वासन देता है। प्रारम्भ करनेके पहले, वह कहता है कि कुछ कारणोंसे उसका मन उदास था और इसलिए उसने कुछ समयके लिए काव्य रचना बन्द कर दी थी। एक दिन विद्याकी देवी सरस्वती उसके सामने स्वप्नमें प्रकट हुईं और बोली, 'तुम धर्तृको नमस्कार करो। कवि जाग पड़ा पर उसे कोई भी दिखाई नहीं दिया। सकटके इस क्षणमें आश्रय-दाता भरत उसके घर आया और बोला कि क्या मैंने उसके प्रति कोई अपराध किया है कि जिसके कारण वह काव्यरचना जारी नहीं रख सका। भरतने उसे स्मरण दिलाया कि जीवन क्षणमंगुर है, और उसे अपनी काव्यप्रतिभाका पूरा-पूरा उपयोग करना चाहिए। तब कवि ने आश्रयदाता भरतसे कहा कि मैं अपने मनमें दुःखी हूँ, क्योंकि यह दुनिया दुष्टोंसे भरी है। और इसलिए काव्यरचना जारी रखनेकी रवि उसमें नहीं है। लेकिन अब वह उसकी प्रार्थनापर फिर काव्यरचना शुरू करेगा क्योंकि वह उसे इतकार नहीं कर सकता। कवि काव्यरचना प्रारम्भ करता है और अजितके जीवनका वर्णन करता है, विस्तारके लिए देखिए टिप्पण और तालिका। परिशिष्ट I, II, III में देखिए।

XXXIX—पृथ्वीपुरमें राजा जयसेन था, पूर्व विदेहमें वत्सानवी उसकी राजधानी थी। उसके रतिसेन और घृतिसेन—दो सुन्दर पुत्र थे। रतिसेन जल्दी मर गया। उसके पिता बहुत दुःखी हुए। वह सासारिक जीवनसे विरक्त हो गये। पुत्रको राज्य देकर, मन्त्री महाज्जके साथ मुनि बन गये। जयसेन और महास्त दोनोंने तपस्या की। मृत्युके बाद वे स्वर्गमें महाबल और मणिकेतु नामक देव हुए। इन दो देवोंने आपसमें यह प्रतिज्ञा की कि जो पहले धरतीपर उत्पन्न होगा, उसे दूसरा उच्चधर्मकी शिक्षा देगा। इनमेंसे महाबल पहले धरतीपर सगर नामका राजा हुआ साकेतमें। और समयके दौरान चक्रवर्ती राजा बन गया। एक बार चतुर्मुख मुनिको केवलज्ञान प्राप्त हुआ, उस अवसरपर देव वहाँ आये। सगर भी वहाँ मुनिके प्रति अपनी श्रद्धा समर्पित करनेके लिए गया। मणिकेतुने राजा सगरको देखा। उस देव महाबलको दिया गया अपना वचन याद आया। इसपर मणिकेतुने सगरको संसारकी क्षणभंगुरता बतानेका प्रयास किया परन्तु उसने उसकी बातपर ध्यान नहीं दिया। मणिकेतु एक बार, सगरके प्रासादपर उसे समझाने आया, परन्तु इस-बार भी वह असफल रहा। ठीक इसी समय, सगरके साठ हजार पुत्र, अपने पिताके पास आये, और उनसे कुछ काम बतानेके लिए कहा—क्योंकि वे आलस्यमें रहतेसे थक चुके हैं। सगरने पहले तो यह कहा कि ऐसा कोई काम करनेके लिए नहीं है। क्योंकि धर्म ने प्रत्येक चीज उनके लिये उपलब्ध कर दी है। लेकिन तब भी पुत्रोंने आप्रह्व किया—तो सगरने उनसे मन्दराचल जाने और प्रथम चक्रवर्ती भरत द्वारा निर्मित चौबीस तीर्थंकरोंके मन्दिरोंकी सुरक्षाका प्रबन्ध करनेके लिए कहा। तब सगरके साठ हजार पुत्र अपने लक्ष्यपर गये। उन्होंने बहुत बड़ी खाई खोदी मन्दराचलके चारों ओर, और उसे गंगाके पानीसे भर दिया, जो नागलोकमें पहुँच गया। इस अवसरपर मणिकेतुने नई शैलीसे सगरको समझानेकी बात सोची। वह बहुत बड़ा नाग बन गया। उसने सगरके हजारों पुत्रोंकी क्रुद्ध दृष्टिसे देखा, और उन्हें भस्मीभूत कर दिया; केवल भीम और भगीरथ जीवित बच सके। सगरको विनाशकी सूचना दी गयी, ब्राह्मणने उसे संसारकी क्षणभंगुरताके बारेमें बताया। सगरने भगीरथको गद्दी दी, और वह अपने पुत्र भीमके साथ मुनि हो गया। यह देखकर मणिकेतु बहुत प्रसन्न हुआ और उसने सगरको बताया कि किस प्रकार उसने विद्याके बलसे उसके पुत्रोंको भूत कर दिया था, तब सब पुत्र जीवित कर दिये गये परन्तु उन्होंने भी अपने पिताका अनुगमन किया—और मुनि बन गये। काफी समय बोटनेपर भगीरथ भी मुनि बन गया, और मुक्त हुआ।

XL, XLI, XLII, XLIII, और XLIV—सम्भव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ और सुपादर्वकी जीवितियोंके लिये, तालिका देखिए।

XLV—यह सन्धि, आठवे तीर्थंकर चन्द्रप्रभके पूर्वभवोका वर्णन करती है। अपने इन पूर्वभवोंमें चन्द्रप्रभुकी आत्मा, पवित्रमी विदेहके सुगन्धदेशमें श्रीपेणराजा और रानी श्रीकान्ताके दम्पतिको पुत्र हुई। पवित्र जीवन बिताते हुए, वह अगले जन्ममें श्रीधरदेव, फिर अजितसेन नामसे, अलकादेशकी अयोध्यानगरीमें राजा अजितजय और रानी अजितसेना दम्पति की सन्तान (पुत्र) हुई। यह अजितसेन चक्रवर्ती बना। उसका जीवन पवित्र था। अगले जन्ममें अच्युत स्वर्गमें अहमेन्द्र हुई। अगले जन्ममें वह पद्मानाभ, यह पद्मप्रभके रूपमें उत्पन्न हुई, कनकप्रभ और कनकमालाके पुत्रके रूपमें, मंगलावती क्षेत्रके वस्तुसंचय नगरमें। अगले जन्ममें उसका जन्म वैजयन्त स्वर्गमें अहमेन्द्रके रूपमें हुआ।

XLVI—चन्द्रप्रभके जीवनके लिए तालिका देखिए।

XLVII—सुविधि तीर्थंकरके जीवनके लिए तालिका देखिए।

XLVIII—दसवें तीर्थंकर शीतल, अपने पूर्व जीवनमें, सुसीमाके राजा पृथ्वीपाल थे। उसकी पत्नीका नाम वसन्तलक्ष्मी था, जो यौवनकी प्राथमिकतामें ही मर गयी। उसकी मृत्युसे प्रभावित हुए राजाने संन्यास ग्रहण कर लिया। अगले जन्ममें वह अरुण स्वर्गमें देव हुआ। अगले जन्ममें वह शीतलके नामसे राजा

दुहरय और रानी सुतन्दाका पुत्र हुआ राजभद्र नगरमें। कमलमें मरे हुए भीरेको देखकर, उसके मनमें सासारिक जीवनके प्रति घृणा हो गयी, उसने संच्यास ग्रहण कर लिया। तीर्थंकरकी सामान्य जीवन प्रक्रियामें गुजरते हुए उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया। उनके निर्वाणके बाद, उपदेश देने और आचरण करने-वालोंके अभावमें जैनधर्मकी बुरे दिन देखने पड़े। इस अवसरपर भद्रिलपुण्णमें वेधरय नामका राजा था। वह उपयुक्त आदमियोंके लिए अपने धनका दान करना चाहता था, उसने मन्त्रियोंसे सलाह मांगी कि सबसे अच्छा दान क्या होगा। मन्त्रीने शास्त्रदानको दानका सर्वश्रेष्ठ रूप बताया। परन्तु राजाको यह सलाह पसन्द नहीं आयी। उसने मुण्डशालावन मन्त्रीसे पूछा, उसने राजासे कहा कि उसे ब्राह्मणोंको हाथी, गाय आदि दानमें देने चाहिए। राजाने सलाह मान ली जिसने केवल ब्राह्मणोंको सम्पन्न बनाया परन्तु उससे अच्छा नहीं हुआ।

II.—श्रेयांसकी जीवनीके लिए तालिका देखिए।

L, LI, LII—ये तीन सन्धियाँ प्रथम बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेवका वर्णन करती हैं। श्रेयांसके तीर्थकालमें राजगृहमें राजा वसुभूति और रानी जैनी थे। राजाका विशाखभूति नामका छोटा भाई था, उसकी पत्नीका नाम लक्ष्मणा था। जैनीने वसुनन्दी पुत्रको जन्म दिया और लक्ष्मणाने विशाखनन्दीको। एक दिन राजाने शरदूके बादल आकाशमें विलीन होते हुए देखे, इससे राजाको ससारसे विरक्ति हो गयी। अपने छोटे भाई विशाखभूतिको राज्य देकर उसने दीक्षा ग्रहण कर ली। जब विशाखभूति राजा हुआ, तो विश्वनन्दी युवराज बन गया। एक दिन वह अपने प्रमद-उद्यान नन्दनवनमें गया। वह वहाँ स्त्रियोंके साथ आनन्द कर रहा था, विशाखनन्दीने उसे देख लिया। उसके मनमें उस उद्यानपर अधिकार करनेकी कल्पना आयी। वह अपने पिताके पास गया और उसने वह उद्यान उसे देनेके लिए उनपर दबाव डाला। राजाने ऐसा करना स्वीकार कर लिया। उसने विश्वनन्दीको बुलाया और उससे राज्यका भार लेनेके लिए कहा, उसने आगे बताया कि वह विद्रोह करनेवाली जातियोंके दमनके लिए सीमान्त प्रदेशपर जाना चाहता है। विश्वनन्दीको यह विचार अच्छा नहीं लगा कि उसके चाचा लड़ने जायें, उसने उनसे कहा कि वह खुद इस कार्यके लिए जाना पसन्द करेगा। विशाखभूतिने विश्वनन्दीकी यह बात मान ली। विश्वनन्दी चला गया। विश्वनन्दीकी अनुपस्थितिमें विशाखभूतिने नन्दनवन अपने पुत्र विशाखनन्दीके लिए दे दिया। जब विश्वनन्दी लौटा तो उसने पाया कि उद्यान विशाखनन्दीके अधिकारमें है। विश्वनन्दी अपने चाचा और चचेरे भाईपर क्रुद्ध हो उठा। उसने भाई पर आक्रमण करना चाहा, परन्तु वह वृक्षपर चढ़ गया, विश्वनन्दीने उसे विशाखनन्दी सहित उखाड़ दिया। उसने दोनोंको नष्ट करना चाहा, परन्तु विशाखनन्दी पत्थरके खम्भेपर चढ़ गया, विश्वनन्दीने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। तब विशाखनन्दी अपना जीवन बचानेके लिए भागा। इस बीष विश्वनन्दीको तरस आया कि उसने अपने भाईपर आक्रमण किया, उसने जैनमूनि बननेका निश्चय कर लिया। विशाखभूतिने भी विश्वनन्दीका अनुकरण करकेका निश्चय कर लिया। विशाखनन्दीको गद्दीपर स्थापित कर दिया। वनमें जाकर उसने तप किया। मरनेके बाद महाशुक्र स्वर्गमें चलाया हुआ। अब विशाखनन्दी एक शक्तिशाली शत्रुसे पराजित होकर राजधानीसे भागकर मधुश गया और वहाँके राजाका मन्त्री बन गया। एक दिन, मुनि विश्वनन्दी (चचेरे भाई) चयनके लिए सङ्कपर जा रहे थे। हाल ही में ब्यानेवाली जवान गायने उन्हें मार दिया जिससे वह गिर पड़े। महुलकी छतसे विशाखनन्दीने यह देखा और उसने मुनिका अपमान किया। मुनि इसे सहन नहीं कर सके, उन्होंने संकल्प किया कि अगले जन्ममें मैं इस अपमानका बदला लूँगा। मरकर वह महाशुक्र स्वर्गमें देव हुए जहाँ उसके चाचा विशाखभूति थे। कुछ समय बाद विशाखनन्दी घृणासे अभिभूत हो उठा। उसने तप किया और वह भी महाशुक्र स्वर्गमें देव हुआ। अलका नगरीमें राजा मयूरधर और उसकी पत्नी नीलांजनप्रभा रहती थी। अगले जन्ममें विशाखनन्दी उसका पुत्र हुआ—अश्वघ्रीवके नाम से। अपने दुश्मनोका सफाया कर, वह प्रतिवासुदेव तीन खण्ड धरतीका सम्राट्

अर्धचक्रवर्ती बन बैठा। पौदनपुरके राजाकी दो रानियाँ थीं—जयावती और मृगावती। जयावतीने जिस पुत्रको जन्म दिया, उसका नाम विजय था जो कि पूर्वजन्ममें विशाखमूति था। यह विजय, जैन पुराणविद्याके प्रथम बलदेव थे, उनका रंग गोरा था। मृगावतीने जिस बालकको जन्म दिया, उसका नाम त्रिपुष्ठ था जो कि अपने पूर्वजन्ममें विशाखानन्दी था। यह पहले बासुदेव थे, और इनका वर्ण काला था। ये दोनों सौतेले भाई एक दूसरेके प्रति प्रगाढ़ प्रेम रखते थे।

LI एक बार राजा प्रजापतिके पास यह समाचार आया कि एक भयंकर सिंह प्रजामें आतंक मचा रहा है। प्रजाने उससे इस अनर्थको हटानेकी प्रार्थना की। तत्पश्चात् राजा स्वयं जाकर सिंहको मारनेके लिए तैयार हो गया, जब कि विजयने उससे प्रार्थना की कि उसे इस कार्यके लिए जाने दिया जाये। पिताने उसे जानेकी अनुमति दे दी, उसका छोटा भाई भी उसके पीछे गया। दोनों सिंहकी गुफामें पहुँचे, थोड़ाओके शोरगुल और चिल्लाहटसे भडककर सिंह बाहर आया। वह विजयपर क्षपटनेवाला था कि त्रिपुष्ठने अपने दोनों बाहुओंमें सिंहके पंजे पकड़ लिये और उसके मुँहपर आघात किया। सिंह मरकर गिर गया।

एक दिन द्वारपाल पहुँचा और राजासे निवेदन करने लगा—कि द्वारपर एक विद्याधर है जो आपसे मिलना चाहता है। उसे राजाके सम्मुख उपस्थित किया गया। विद्याधरने राजा प्रजापतिसे कहा कि उसका नाम इन्द्र है और वह राजा ज्वलनजटीका दूत बनकर आया है। वह राजा और विजय तथा त्रिपुष्ठको विद्याधर-क्षेत्रके लिए निमन्त्रित करने आया है ताकि त्रिपुष्ठ पत्थरकी शिला उठाये, जिसका नाम कोटिशिला है; तथा अश्वघ्रीव को मारे और उसकी कन्या स्वयंप्रभासे शादी करे, वह तीनखण्ड धरतीका राजा बने और राजा ज्वलनजटीको विजयार्ध पर्वतकी दोनों श्रेणियोंका राजा बनाये। प्रजापतिने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। वह विद्याधर क्षेत्रमें गया। ज्वलनजटीने उनका अच्छी तरह स्वागत किया। उससे अपने पुत्र अर्क-कीर्तिसे परिचय कराया। बातचीतके दौरान यह तय किया गया कि सबसे पहले त्रिपुष्ठ शिला उठाये जिससे उन्हें विश्वास हो सके कि वह अश्वघ्रीवको मार सकता है। तत्पश्चात् वे सब उस जगलमें गये, जहाँ कोटिशिला रखी हुई थी। उन्होंने त्रिपुष्ठसे शिला उठानेके लिए कहा। उसने आसानीसे उसे उठा दिया। ज्वलनजटी और दूसरोंने इतनी शक्तिके लिए उसको प्रशंसा की। उसके बाद वे सब पौदनपुर लौट आये और उन्होंने त्रिपुष्ठ और स्वयंप्रभाके विवाहका उत्सव मनाया। विवाहका समाचार अश्वघ्रीवके कानोंमें पड़ा, वह ज्वलनजटीके कार्यसे क्रुद्ध गया, कि उसने अपनी कन्याका विवाह जातिके बाहर किया—अर्थात् उसने एक मनुष्य त्रिपुष्ठको अपनी कन्या विवाह दी, बजाय विद्याधर अश्वघ्रीवके। उसने मन्त्रियोंकी रायके विरुद्ध ज्वलनजटी और प्रजापतिपर चढ़ाई करनेके लिए कूच किया।

LI—चरोने राजाको सेना और अश्वघ्रीवके पौदनपुरके प्रवेशद्वार तक पहुँचनेकी सूचना दी। इसपर प्रजापतिने ज्वलनजटीसे परामर्श किया कि उन्हें किस प्रकार स्थितिका सामना करना चाहिए, जबकि विजयने कहा—मुझे विश्वास है कि त्रिपुष्ठ निश्चित रूपसे अश्वघ्रीवको मार डालेगा। लड़ाई शुरू होनेके पहले अश्वघ्रीवने दूत भेजा, त्रिपुष्ठके पास यह जाननेके लिए कि क्या वह अश्वघ्रीवके साथ सन्धि करने और स्वयंप्रभा वापस करनेके लिए तैयार है। त्रिपुष्ठने प्रस्ताव ठुकरा दिया। युद्ध शुरू हो गया। देवीने त्रिपुष्ठकी सारंग नामका धनुष, पांचजन्य नामका शस्त्र, कौस्तुभ मणि और कुमुदनी गदा और विजयके लिए हल, मूसल और गदा दिया। सेनाएँ भिड़ो और उनमें भयंकर युद्ध हुआ। युद्धके दौरान अश्वघ्रीवने अपना चक्र त्रिपुष्ठपर फेंका, पर वह उनकी हानि नहीं कर सका, वह उसके हाथ में स्थित हो गया। उसने तब इसी चक्रका उपयोग अश्वघ्रीवके विरुद्ध किया जिससे वह मारा गया। उसकी मृत्युके बाद त्रिपुष्ठ अर्धचक्रवर्ती बन गया। उसके शीघ्र बाद ज्वलनजटी अपनी राजधानी रथनूपुर नगर आ गया और लम्बे अरसे तक विजयार्ध पर्वतकी दोनों श्रेणियोंके ऊपर प्रभुसत्ताका भोग करता रहा, फिर साधु हो गया। राजा प्रजापतिने भी ऐसा ही किया। अब त्रिपुष्ठ-सदैव आनन्दसे अतृप्त रहा। वह मरकर सातवें नरकमें गया। उसकी मृत्युके

बाद विजयने अपनी राजधानी श्रीविजय को साँप दी और तपस्या कर मुक्ति प्राप्त की। स्वयंप्रभाने भी यही किया।

LIII—वासुपूज्यकी जीवनीके लिए तालिका देखिए।

LIV—यह सन्धि बलदेव, वासुदेव और प्रतिवापुदेवके दूसरे समूहका वर्णन करती है। विन्ध्यपुरमें विन्ध्यशक्ति राज्य करता था। कनकपुरका राजा सुषेण उसका मित्र था। सुषेणके पास गुणमंजरी नामकी सुन्दर वेश्या थी। विन्ध्यशक्तिने उसके पास दूत भेजा कि वेश्या उसे दे दी जाये। सुषेणने प्रार्थना ठुकरा दी। दोनों मित्रोंमें युद्ध छिड़ गया। सुषेण पराजित हुआ। मित्रकी पराजय सुनकर महापुरके वायुरथ सांसारिक जीवनसे विरक्त हो गया। वह मुनि बन गया। सुषेणने भी मुनिव्रतकी दंशा ले ली। उसने मरते समय अपने बैरका बदला लेनेका निदान बाँधा। वायुरथ और सुषेण दोनों प्राणत स्वर्गमें देव हुए। राजा विन्ध्यशक्ति भी किसी एक स्वर्गमें उत्पन्न हुआ। अगले जन्ममें विन्ध्यशक्ति भोगवर्धनपुरके राजा श्रीधर और रानी श्रीमतीका पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम तारक था। समयकी अवधिमें वह अर्धचक्रवर्ती बन गया। वायुरथ और सुषेण राजा ब्रह्मा एवं रानी शुभद्रा और उषादेवीके पुत्र हुए। अचल और द्विपृष्ठ उनके नाम थे जो बलदेव और वासुदेव थे। उनके पास श्रेष्ठ हाथी था। तारक उस हाथीकी अपने पास रखना चाहता था और उसने द्विपृष्ठके पास हाथी देनेके लिए दूत भेजा। अचलने मना कर दिया। तारक और द्विपृष्ठमें संघर्ष हुआ, जिसमें तारक मारा गया। द्विपृष्ठ अर्धचक्रवर्ती बन गया। मृत्युके बाद तारक और द्विपृष्ठ नरक गये। अपने भाईकी मृत्यु देखकर अचलने जैन-दीक्षा ग्रहण कर ली और उसने सत्सारासे मुक्ति प्राप्त कर ली।

LV—तेरहवें तीर्थंकर विमलकी जीवनीके लिए तालिका देखिए।

LVI—परिचयी विशेहके श्रीपुरमें राजा नन्दिमित्र था। एक दिन उसे संसारकी क्षण-भंगुरताका ज्ञान हो गया, सुखभोग छोड़कर उसने दीक्षा ग्रहण कर ली। मृत्युके अनन्तर वह अनुत्तर विमानमें देव हुआ। श्रावस्तीमें सुकेतु नामका राजा था। उसी नगरमें दूसरा राजा बली था। वे एक दिन जुवा खेले जिसमें सुकेतु सब कुछ हार गया। निराशामें वह मुनि बन गया। परन्तु तपस्या करते हुए उसने यह निदान बाँधा कि उसे बलीसे अगले जन्ममें बदला लेना चाहिए। मृत्युके बाद सुकेतु लान्तव स्वर्गमें उत्पन्न हुआ। बली भी स्वर्गमें देव उत्पन्न हुआ। अपने अगले जन्मोंमें बली रत्नपुरके राजा समरकेसरी और रानी सुन्दरीका पुत्र हुआ। उसको मधु कहा गया। वह प्रतिवापुदेव और अर्धचक्रवर्ती था। नन्दिमित्र और सुकेतु द्वारावतीके राजा रुद्रकी पत्निमो सुमद्रा और पृथ्वीसे उत्पन्न हुए। उनके नाम थे घर्म (बलदेव) और स्वयम्भू (वासुदेव)। एक दिन स्वयम्भूने जब अपने महलकी छतपर बैठा हुआ था, शहरके बाहर सैनिक-शिविरको ठहरा हुआ देखा। उसने मन्त्रीमे पूछा कि यह सेना किसकी है। मन्त्रीने उससे कहा कि सामन्त शशिसोमने राजा मधुको उपहार भेजा है जिसमें हाथी-घोडा आदि हैं। स्वयम्भूने इसकी अनुमति नहीं दी। उसने शशिसोमको हरा दिया और उपहार छीन लिया। यह खबर मधुके कानो तक पहुँची। उसके बाद उसने स्वयम्भूपर हमला बोल दिया। बादमें जो लड़ाई हुई उसमें स्वयम्भू ने मधुका काम तमाम कर दिया। वह अर्धचक्रवर्ती हो गया। राज्यका उपभोग करते हुए स्वयम्भू भी मरकर नरकमें गया। धर्मने मुनिघर्मकी दीक्षा ली और निर्वाण प्राप्त किया।

LVII—यह सन्धि संजयन्त, मेघ और मन्दरकी कहानीका वर्णन करती है। इनमेंसे दो बादमें विमलवाहनके गणवर हुए, जो तेरहवें तीर्थंकर थे। दो और आदमी थे जो इस कहानीसे सम्बन्धित हैं—मन्वी श्रीभूति और व्यापारी भद्रमित्र। इनमेंसे श्रीभूति सत्यघोषसे संलन् है। पहले तीन व्यक्तियोंके सात भवोंका कवि वर्णन करता है जब कि अन्तिम दोके कुछ ही भवोंका वर्णन करता है। इस सन्धिके टिप्पणमें इनकी सूचीपर दृष्टिपात किया गया है जिससे पाठकोंको समझनेमें सुविधा होगी।

वीतशोकनगरमें वैजयन्त नामका राजा था। उनकी रानीका नाम सर्वश्री था। उसने दो पुत्रोंको जन्म दिया—संजयन्त और जयन्त। एक दिन जैन मुनिका प्रवचन सुनकर उन सबने संसारका परित्याग कर दिया। समयके दौरान वैजयन्तने निर्वाण प्राप्त किया। इस अवसरपर जो देव उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रदर्शित करने आये, उनमें नागोका देव भी था जो अत्यन्त सुन्दर था। जयन्तने यह निदान बाँधा कि अगले जन्ममें उसका वंश ही सुन्दर शरीर हो जैसा कि नागोके स्वामीका है। वह नागलोकमें नागोका देवता हुआ। एक दिन जब संजयन्त प्रतिमाओंको साधना कर रहा था, विद्युद्दंष्ट्र विद्याधरने उसे देखा, उसे उठाया और पाँच नदियोंके संगमक्षेत्रमें फेंक दिया तथा लोगोसे कह दिया कि मुनि शैतान है। इसपर लोगोंने मुनिको पीटा, परन्तु वह अविचलित रहे। वह यातनाओंको सहते हुए निर्वाणको प्राप्त हुए। इम अवसरपर जयन्त सहित, जो नागोंका देवता था, सब देव आये। अपने भाईकी स्थिति देखकर नागने लोगोपर हमला शुरू कर दिया। वे बोले कि हमने इसलिए साधुको विद्याधर विद्युद्दंष्ट्रकी सूचनापर पीटा। तब नागदेवताने विद्याधर विद्युद्दंष्ट्रको पकड़ा, और जब कि पहला दूमरेको समुद्रमें फेंकनेवाला था, आदित्य-प्रभ देवने बीच-बचाव किया और उसने उन सबके पूर्वमवका वर्णन किया। सिंहपुरमें वहाँ सिंहसेन नामका राजा था। रामदत्ता उसकी रानी थी। श्रीभूति और सत्यघोष उसके मन्त्री थे। नगरमें भद्रमित्र नामक व्यापारी था, जो पद्मखण्डपुरके सुदत्त और सुमित्राका पुत्र था। यात्रा करते हुए भद्रमित्रको कीमती मणि मिले जिन्हें उसने अश्वघोषके पास धरोहरके रूपमें रख दिया। (बादमें सत्यघोष और श्रीभूतिमें भ्रम है) कुछ समय बाद भद्रमित्रने अश्वघोषके रत्न लौटानेको कहा, परन्तु उसने रत्नोंकी जानकारीके बारेमें साफ मना कर दिया, यहाँ तक राजाके पूछनेपर भी। भद्रमित्र पागल हो गया और राजमहलके पड़ोसमें एक पेड़पर चढ़कर चिल्लाकर मन्त्रीकी इज्जत घटाने लगा। रानी रामदत्ता मन्त्रीसे चिढ़ गयी और उसने उसके साथ एक बाल चली। उसने सत्यघोषके साथ जुएका खेल खेला जिसमें वह पहचानवाली अँगूठी और पवित्र जनेऊ रानीसे हार गया। उसने अपनी दासीके माध्यमसे मन्त्रीके खजाचीके पास अँगूठी भेजी और उससे रत्न प्राप्त कर लिये। इस बातकी परीक्षाके लिए कि भद्रमित्रने जो कुछ कहा है, वह सत्य है, राजाने उन रत्नोंमें मिला दिये जो भद्रमित्रके थे। वे रत्न भद्रमित्रको दिखाये गये। उसने केवल अपने रत्न उठाये यह कहते हुए कि वे उसके नहीं हैं। तब राजा उसपर प्रसन्न हो गया। राजाने मन्त्रीको सजा दी और वही बर्ताव किया जो एक चोरके साथ किया जाता है। मन्त्रीने इसके लिए राजाके प्रति अपने मनमें गाँठ बाँध ली। अगले जन्ममें वह अगन्वन नाम बना और राजाके खजानेमें खटे होकर राजाको काट खाय। अगले जन्ममें भद्रमित्र रामदत्ताके पुत्रके रूपमें जन्मा उसका नाम सिंहचन्द्र रखा गया। उसका छोटा भाई पूर्णचन्द्र था। और यह इस विस्तारमें है कि तीनो व्यक्तियोंकी पूर्वजन्म ही जीवनियाँ इस सन्धिके प्रारम्भमें बणिता की गयी हैं।

LVIII—अनन्तकी जीवनीके लिए (१४वें तीर्थंकर) तालिका देखिए। उनके तीर्थकालमें बलदेव, व्रासुदेव और प्रतिवासुदेवका चौथा समूह उत्पन्न हुआ। नन्दपुरमें राजा महाबल था। वह मुनि हो गये और भरकर सहस्रार स्वर्गमें उत्पन्न हुए। उस समय पीवनपुरमें राजा वसुसेन राज्य करता था। उसकी रानी नन्दा बहुत सुन्दर थी। उसका मित्र चन्द्रशासन उसके पास रहने आया। उसने नन्दाको देखा, वह उसके प्रेममें पड़ गया और वसुसेनसे कहा कि वह उसे दे दे। उसने ऐसा करनेसे मना कर दिया। परन्तु चन्द्रशासन उसे जबरदस्ती ले गया। इसके बाद वसुसेन मुनि बन गया और मृत्युके बाद उसी स्वर्गमें उत्पन्न हुआ, जिसमें महाबल उत्पन्न हुआ था। चन्द्रशासन अगले जन्ममें चारापत्तीके राजा विलास और रानी गुणवतीका पुत्र हुआ। महाबल और वसुसेन, राजा सोमप्रभकी रानियो (जयावती और सीता) से क्रमशः उत्पन्ने हुए और क्रमशः उनके नाम सुप्रभ और पुरुषोत्तम रखे गये। मधुसूदनने उनसे उपहारकी माँग की, और बुँकि उन्होंने ऐसा करनेसे मना कर दिया, इसलिए मधुसूदन और पुरुषोत्तममें संघर्ष हुआ जिसमें मधुसूदन मारा गया। पुरुषोत्तम अर्धचक्रवर्ती बन गया।

LIX—पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथकी जीवनीके लिए तालिका देखिए। इनके तीर्थकालमें बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेवका पाँचवाँ सपूह हुआ। वीतशोकनगरमें नरवृषभ राजा हुआ। उसने तपस्या की और मरकर बह सहस्रार स्वर्गमें उत्पन्न हुआ। राजगृहमें राजा सुमित्र था। वह राजसिंहसे लड़ाईमें मारा गया। सुमित्रने तपस्या की और मरते समय यह निदान बाँचा कि मैं अगले जन्ममें राजसिंहको पराजित करूँ। मृत्युके बाद वह महेन्द्र स्वर्गमें, उत्पन्न हुआ। राजसिंह अगले जन्ममें हस्तिनापुरका राजा मधुक्रोड हुआ। राजा नरवृषभ और सुमित्र राजा सिंहसेनकी रानियों विजया और अम्बिकासे उसके पुत्र हुए, उनके नाम सुदर्शन और पुरुषोत्तम थे, जो पाँचवें बलदेव और वासुदेव थे। राजा मधुक्रोडने दूत भेजकर सुदर्शनसे कर माँगा जिसे उसने अस्वीकार कर दिया। उनमें युद्ध हुआ। पुरुषोत्तमने मधुक्रोडको मार डाला और अर्धचक्रवर्ती सम्राट् बन गया। उसी राज्यमें साकेतमें राजा सुमित्र था। उसकी रानी भद्रा थी। उसने एक पुत्रको जन्म दिया, उसका नाम भववन था। उसने समस्त छह खण्ड धरती जीत ली और जैनपुराण-विद्याके अनुसार तीसरा सार्वभौम चक्रवर्ती सम्राट् बन गया। बहुत समय तक धरतीका उपभोग करनेके बाद उसने संसारका परित्याग कर मोक्ष प्राप्त किया। षोडशे समयके बाद उसी शासनकालमें चौथा चक्रवर्ती हुआ, उसका नाम सनत्कुमार था। वह विनीतपुरके राजा अनन्तवीर्य और रानी महादेवीका पुत्र था। वह अत्यन्त सुन्दर था। इन्द्रके द्वारा प्रेषित दो देव उसका सौन्दर्य देखने आये। उन्होंने राजासे कहा कि कुमारका सौन्दर्य शाश्वत रहेगा यदि उसे बुढ़ापे और मीतने नहीं घेरा। बुढ़ापे और मृत्युका नाम सुनकर सनत्कुमारने संसारका परित्याग कर दिया और निर्वाणलाभ किया।

LX—अमोघजीह्व नामके ब्राह्मणने भविष्यवाणी की कि छह महीने बाद राजा धीजीवके सिरपर बिजली गिरेगी, जो वासुदेव त्रिपुष्ठाका पुत्र है और उसके सिरपर रत्नोकी वर्षा होगी। जब ब्राह्मणसे यह पूछा गया कि वह इस प्रकारका भविष्यकथन कैसे कर सकता है तो उसने कहा कि मैंने प्रसिद्ध शिष्यकसे यह विद्या पढ़ी है। एक दिन जब उसने अपनी पत्नीसे भोजनके लिए कहा तो उसने थालीमें खाली कौडियाँ परोस दी, क्योंकि गरीबीके कारण उसके घरमें कुछ और था ही नहीं। पत्नीने उसे झिड़का कि तुम कुछ काम करके वन नहीं कमाते। ठीक इसी समय आगकी चिनगारी उसकी थालीमें गिरी, ठीक इसी समय पानीका घडा उसकी पत्नीने उसके सिरपर डाल दिया। यह इस घटनाके कारण था कि ब्राह्मणने यह भविष्यवाणी की थी कि राजाके सिरपर बिजली गिरेगी और उसके सिरपर रत्नोकी वर्षा होगी। तत्पश्चात् मन्त्रियोंने राजाको सलाह दी कि दैवी विपत्तिको टालनेके लिए कुछ समयके लिए राज्य छोड़ दिया जाये और तबतक के लिए किसी दूसरेको गद्दीपर बैठा दिया जाये। इसके बादको सन्धि श्रीविजय और अमिततेज विद्याधरके बीच हुई शत्रुता और संघर्षका वर्णन करती है। एक मुनि हस्तक्षेप करते हैं और उन्हें जैनसिद्धान्तोका उपदेश देते हैं; इसके परिणामस्वरूप वे दोनों दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं।

LXI—अगले जन्ममें श्रीविजय और अमिततेज स्वर्गमें देव हुए, मणिचूल और रविचूलके नामसे। अगले जन्ममें प्रभावती नगरके राजा स्मितसागरके रानी वसुन्धरा और अपरावितासे पुत्र हुए। उनके दरबारमें दो सुन्दर नृत्यागनाएँ थी, जिनकी विद्याधर राजा दमितारिने माँग की।

LX-LXIII—ये चार सन्धियाँ तीर्थंकर शान्तिनाथ और उनके पूर्वभक्तोका, विशेषरूप और खासकर चक्रायुवकी, जीवनी विस्तारसे (LXIII) जिसका टिप्पणमें विस्तार है।

LXIV—कुम्भुकी जीवनीके लिए तालिका देखिए।

LXV—अर्हके जीवनके लिए तालिका देखिए। अर्हके शासनकालमें आठवें चक्रवर्ती सुभौम हुए। सहस्रबाहु नामका राजा था। उसकी पत्नी विचित्रमतीने कृतवीर पुत्रको जन्म दिया। विचित्रमतीकी वहन श्रोमतीका विवाह शतबिन्दुसे हुआ था। उनसे जो पुत्र हुआ उसका नाम जमदग्नि रखा गया। बचपनमें माताकी मृत्युके कारण जमदग्नि तापसमुनि बन गया। शतबिन्दु और उसका मन्त्री हरिधर्मा भी क्रमशः जैन

और हिन्दू मुनि बन गये। कुछ समयके बाद शतविन्दु मरकर सौवर्ग स्वर्गमें देवता हुआ तथा हरिश्चमि ज्योतिष देव हुआ। वे दोनों जमदग्निकी पवित्रताकी परीक्षा करना चाहते थे। उन्होने चिडी-चिडाका रूप धारण कर जमदग्निके बालोमें धोसला बना लिया। और कुछ उसके प्रति अपमानजनक बातें करने लगे। वह पक्षियोंपर नाराज हो गये और उन्हें मारनेकी वमकी दी। उन पक्षियोंमेंसे एकने कहा कि उसे नहीं मालूम कि वह (जमदग्नि) इसलिए स्वर्ग न पा सका क्योंकि उसके पुत्र नहीं हैं। जमदग्निने इसपर विचार किया और मामाके पास जाकर उसने उसकी कन्यासे विवाह करनेका प्रस्ताव किया। बुढापा होनेसे कन्या उससे विवाह नहीं करना चाहती थी। इसपर क्रुद्ध होकर उसने नगरकी सब कन्याओंको बीना होनेका धाप दे दिया। तबसे उस नगरका नाम कान्यकुब्ज पड़ गया (आधुनिक कन्नौज)। उसे किसी प्रकार मामाकी लड़की मिल गयी, उसका नाम रेणुका (घूलमरी) मिल गयी। उसे केला दिखाकर आर्कषित किया और अपनी गोदमें बैठा लिया। उससे विवाह कर लिया। चूँकि उसने कहा कि वह उसे चाहती थी। समय बीतनेपर उसने दो पुत्रोंको जन्म दिया—इन्द्रराम और श्वेतराम। उसके भाइयोंने उसे दानमें एक गाय दी थी जो सत्र मनोकामनाएँ पूरी करती थी, और मन्त्र फरशा दिया। रेणुका और जमदग्नि सुखपूर्वक रहते थे। एक दिन राजा सहस्रबाहु अपने पुत्र कृतवीरके साथ मुनिकी कुटियारर आया। रेणुकाने उन्हें राजकीय भोज दिया। पिता-पुत्र भोजनकी श्रेष्ठतासे प्रभावित हुए और उन्होने पूछा कि मुनिकी पत्नी होते हुए रेणुकाने उनको इतना व्ययसाध्य भोजन कैसे दिया। रेणुका बोली कि उसके भाइयोंने गाय दी है वह मनचाही चीजें देती है। कृतवीरने वह गाय चाही और रेणुकाक विरोधके बावजूद वह उसे ले गया। कृतवीर और जमदग्नि-की जो लड़ाई हुई उसमें सहस्रबाहुने जमदग्निको मार डाला। उसके पुत्र इन्द्रराम और श्वेतराम बाहर थे। जब वे लौटे तो उन्हें अपनी माँसे पता चला कि उनके पिताको सहस्रबाहु और उसके पुत्रने मार डाला है और वे उनकी गाय ले गये हैं। वे क्रुद्ध हुए। रेणुकाने उन्हें परशुमन्त्र पढाया। तब वे सन्तुष्ट गये और सहस्रबाहु तथा कृतवीर तथा घरके दूसरे सदस्योंको तथा क्षत्रियजातिकी इक्कीस वार हत्या की। समस्त क्षत्रियोंके विनाशके बाद उन्होने सारी घरती ब्राह्मणोंको दे दी जिसपर उन्होने वादमें शासन किया। सहस्रबाहुकी रानी विचित्रवति उस समय गर्भवती थी, उसके गर्भसे पूर्वजन्मकी आत्मा भूपालके नामसे पैदा हुई, जिसकी नियति आगे चक्रवर्ती होनेकी थी। वह जीवनकी सुरक्षाके लिए जगलमें भाग गयी। शाण्डिल्य मुनिने उसे सरक्षण दिया। उसकी कुटियामें उसने बच्चेको जन्म दिया, जिसका नाम सुभौम रखा गया।

LXVI—सुभौमने अपना बचपन जगलमें शाण्डिल्य मुनिकी कुटियामें बिताया। वह एक शक्ति-शाली बृद्ध युवक बन गया। एक दिन उसने अपनी माँसे पूछा कि उसने अपने पिताको नहीं देखा और उनके बारेमें बतानेके लिए आग्रह किया। तब माँने सारी कहानी सुनायी कि किस प्रकार सहस्रबाहु परशुरामके द्वारा मारे गये। इसी बीच एक ज्योतिषी परशुरामके घर आया और उसने बताया कि उसकी मृत्यु किस प्रकार होगी। उसने कहा कि उसके शत्रुओ (सहस्रबाहु और कृतवीर) के दाँतोसे भरी थाली, जिसके दृष्टिगतसे चाबलोक्री थालमें बदल जायेगी, वह उसका वध करनेवाला होगा। इसपर परशुरामने नगरके मध्य एक दानशाला खुलवायी जहाँ ब्राह्मणोंको मुफ्त भोजन दिया जाता और उन्हें दाँतोंकी थाली दिखाई जाती। सुभौमसे भी दानशालेकी भेंट करनेके लिए कहा गया, यह जाननेके लिए कि क्या यही वह व्यक्ति है जिसके हाथो परशुरामकी मौत होगी। तब सुभौम दानशालामें गया, उसने थाली देखी जो पके हुए चाबलके रूपमें बदल गयी। रत्नकोने पौरज हथला कर दिया जब कि वह निहत्था था। परन्तु वह थाली ही तत्काल चक्रमें बदल गयी जिससे उसने उनका और परशुरामका अन्त कर दिया। उसके बाद वह चक्रवर्ती हो गया। एक बार सुभौमको उसके रसोइएने किंका फल परोसा। वह क्रुद्ध हो उठा और उसने इस अपराधके लिए रसोइएको मार डाला। रसोइया ज्योतिष देव उत्पन्न हुआ। वह व्यापारीका रूप धारण करके आया और राजाको कुछ सुन्दर फल दिये। राजाने उन फलोंको खूब पसन्द किया और व्यापारीसे और फल लानेका आग्रह

क्रिया । व्यापारोने कहा कि देवने जो फल दिये थे वे समाप्त हो गये हैं । चूंकि राजा अपनी मांगके लिए आग्रह करता रहा, तो ज्योतिषीने कहा कि राजा उन फलोको पा सकता है यदि वह उसके साथ एक द्वीपके लिए चलता है । राजाने मजूर कर लिया । वह व्यापारीके साथ गया, उसने उसे चट्टानपर रखा और मार डाला । मृत्युके बाद सुनौम नरक गया । भरके शासनकालमें वलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेवका छठा दल उत्पन्न हुआ । उनके नाम थे नन्दीसेन, पुण्डरीक और निशुम्भ । विस्तारके लिए तालिका देखिए ।

LXVII—मल्लिकी जीवनीके लिए तालिका देखिए । इनके शासनकालमें नौवें चक्रवर्ती पद्य हुए । विस्तृत जीवनीके लिए तालिका देखिए । यह मल्लिनाथके शासनकालमें हुआ कि वलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेवका सातवाँ दल उत्पन्न हुआ । जिनके नाम हैं नन्दिमित्र, दत्त और बलि । विस्तारके लिए तालिका देखिए ।

परिशिष्ट

जैनपुराणोंमें त्रेसठ शलाका पुरुषोकी जीवनीयोंके परम्परागत विस्तारमें जो एकरूपता दे दी गयी है, और विमलसूरिने अपने 'पञ्चमखरिस'में जो सकेत दिया है (पृ. ११ पर उद्धृत है) ने मुझे यह विचार दिया कि मैं सुविषयजनक शीर्षकोके रूपमें सभीकी मुख्य बातोंको अंकित कर दूँ । इसलिए मैं इस जिल्दमें पाँच तालिकाएँ दे रहा हूँ । तालिका एकमें, दिगम्बरोकी परम्पराके अनुसार तीर्थंकरोंकी प्रतिमाओंके चिह्नोंको दिया गया है । मैंने यह तालिका, श्री जी. एच. खरेकी मराठी पुस्तकसे जो बहुत मूल्यवान् है, ली है, इसलिए कि मेरी तालिकामें जानकारी है, वह गुणमद्र और पुष्पदन्तके उस जानकारीसे मिलनी चाहिए, जो उन्होंने अपने पुराणोंमें दी है, इसके लिए मैंने श्री खरेकी तालिकामें थोड़ा फेर-बदल किया है । दूसरी तालिका, तीर्थंकरोंके पूर्वजन्म, जन्मस्थान आदिका विवरण देती है । तीसरी तालिकामें विभिन्न तीर्थंकरोंके गणघरोकी सूची है । चौथीमें चक्रवर्तियोंके बारेमें सूचनाएँ हैं । पाँचवी तालिकामें बलदेवों, वासुदेवों, प्रतिवासुदेवोंके बारेमें जानकारी है । दरअसल मेरी जानकारीका स्रोत जिनसेनका आदिपुराण, गुणमद्रका उत्तरपुराण और पुष्पदन्तका महापुराण है । ये रचनाएँ, मैं आशा करता हूँ कि दिगम्बर परम्पराका प्रतिनिधित्व करनेवाले सर्वोत्तम स्रोतोंमेंसे एक है, यदि वे सर्वोत्तम नहीं हैं तो एक या दो स्थानोपर मैंने श्वेताम्बर परम्पराका उपयोग किया है, क्योंकि उनकी जानकारी देनेमें महापुराण समर्थ नहीं था या फिर मैं उसमें सामग्री ढूँढनेमें समर्थ नहीं हो सका । मैं पाठकोंके प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूँ और यदि वे अनुपयुक्तताओं और कमियोंको ध्यानमें ला सकें, मैं अन्यवादके साथ उनपर विचार करूँगा ।

नोरोजी बाबिया कालेज

बुना

अगस्त १९४०

—पी. एल. वैद्य

विषयानुक्रमणिका

अङ्गीसर्वी सन्धि :

...

१-२३

अजितनाथकी वन्दना (१-२), कविकी सृजनसे उदासी (२-३), सरस्वती और भरत-कविकी सम्झाना, (३), कविका उत्तर, समयकी विपरीतताका उल्लेख, सृजनकी स्वीकृति (४-५), रचनाका सद्देश्य जिनमन्त्रित (५-६), वत्सदेश और सुसीमा नगरीका वर्णन (६-७), विमलवाहन राजाको विरचित और तपस्या, विजयका अनुत्तर विमानमें जन्म (८), इन्द्रके आदेशसे कुबेर द्वारा अयोध्याकी रचना, स्वर्णवृष्टि (९), विजयादेवीका सोलह स्वप्न देखना (१०), स्वप्नफल कथन (११-१२), अजितनाथका जन्म (१२), अजित जिनका जन्मामिपेक (१३), देवी द्वारा जिनकी वन्दना (१४), विवाहका प्रस्ताव (१५), उत्कापात देखकर विरचित (१६), लौकान्तिक देवी द्वारा सम्बोधन और स्तुति (१७), दीक्षा ग्रहण करना (१८), देवैन्द्र द्वारा जिनैन्द्रकी स्तुति; समवसरणकी रचना (२०), जिनवर द्वारा तत्त्वकथन (२१), संघका वर्णन (२२) ।

उनतालीसवीं सन्धि :

...

२४-४०

वत्सावती देशके राजा पुण्डरीकका वर्णन (२४), राजा जयसेनका वर्णन, उसके रतिसेन और धृतसेन पुत्र, रतिसेनकी मृत्यु, पिताका शोक (२५), जितसेन दीक्षा ग्रहण करता है, जयसेन मरकर स्वर्गमें महाबलदेव हुआ, उसके साथ तप करनेवाला सामन्त महारत भी मरकर सोलहवें स्वर्गमें मणिकेतु हुआ (२६), उनमें तय हुआ कि जो स्वर्गमें रहेगा, वह दूसरेको मर्त्यलोकमें जाकर उपदेश देगा, महाबलकी मृत्यु (२७), महाबलका सगरके रूपमें जन्म, उसका चक्रवर्ती बनना, मणिकेतुदेवका आकर सम्झाना (२८), देवका अपना परिचय देना, सगरकी अनसुनी करना, मणिकेतुका मुनिके रूपमें जाना (२९), सगरका उनसे विरक्तिका कारण पुछना, मणिकेतुका उपदेश; सगरपर कोई प्रतिक्रिया नहीं, देवकी वापसी, सगरके साठ हजार पुत्र (३०-३२), सगरका भरत द्वारा निर्मित मन्दिरोकी सुरक्षाका आदेश, पुत्रोंका वञ्चरत्नसे कैलासके चारो ओर खार्ई खोदना, पानीका निकलना, खार्ईके रूपमें गयाका कैलास पर्वतको घेरना (३३-३४), नागभवनका प्रताडित होना, मणिकेतु देवका नागराज बनकर पुत्रोंको भस्म कर देना, भीम और भगीरथका जाकर सारा वृत्तान्त राजा सगरको बताना, दण्डी साधुका अवतरण, साधुका उपदेश, उसका वस्तुस्थिति बताना, सगरकी विरक्ति और भगीरथको राजगद्दी मिलना (३४-३७), मणिकेतुका मृत पुत्रोंको जीवित करना, उनका दीक्षा ग्रहण करना, तपस्याका वर्णन, सगरकी निर्वाण-प्राप्ति (३९-४०) ।

चालीसवीं सन्धि :

...

४१-५७

सम्भवनाथकी स्तुति (४१-४२), कच्छ देशके क्षेम नगरका वर्णन (४३), राजा विमलवाहनका तप ग्रहण करना, सुदर्शन विमानमें जन्म (४४), ध्रावस्तीमें इस्वाकुर्वंशका शासन, राजा

द्वारथ, रामी सुषेणा, स्वप्न दर्शन (४५), इन्द्रका कुबेरको आदेश, सम्भवनाथका जन्म, रत्न वर्षा (४६), जितेन्द्र सम्भवनाथका अभिषेक और अलकरण (४७-५१), सम्भवनाथका तपश्चरण, केवलज्ञानकी प्राप्ति, देवताओं द्वारा स्तुति और समवसरण (५२-५४) गणधरो-की संख्या और मोक्ष (५५-५७)।

इकतालीसवीं सन्धि :

...

५८-७५

अभिनन्दनकी स्तुति (५८-५९), मगलावती देश, रत्नसंचय नगर, राजा महाबल, रामी लक्ष्मीकान्ता, राजाकी विरक्ति और तपश्चरण, अनूत्तरविमानमें जन्म (६०-६१), इन्द्रके आदेशसे कुबेर द्वारा कौशलपुरीकी रचना, स्वप्नकथन, राजा स्वयंवरका भविष्यकथन; अहमेन्द्रका अभिनन्दनके रूपमें जन्म, इन्द्रके द्वारा अभिषेक (६२-६४), अभिषेकमें विशेष देवताओका आह्वान (६६-६७), अभिनन्दनके यौवनका वर्णन, राज्याभिषेक (६८-६९), विरक्ति, लौकान्तिक देवोका सम्बोधन, पारणा, केवलज्ञान, देवेन्द्र द्वारा स्तुति, निर्वाण (७०-७५)।

बयालीसवीं सन्धि :

...

७६-८८

सुमतिनाथकी वन्दना (७६-७७), पुण्डरीकिणी नगरीका वर्णन (७७), राजा रतितेन अपने पुत्र अर्हचन्दनको राज्य देकर दीक्षा ग्रहण करता है (७८), अहमेन्द्र स्वर्गमें उत्पन्न होना, इन्द्रका कुबेरको आदेश कि वह जाकर अयोध्यामें भावी तीर्थकरके जन्मकी व्यवस्था करे, मेघरथकी पत्नी मगलाका स्वप्न देखना (७९), राजा द्वारा तीर्थकरके जन्मका भविष्यकथन, कुबेर द्वारा स्वर्णवृष्टि (८०), जिनके जन्मपर देवेन्द्र द्वारा वन्दना (८१), जितेन्द्रका अभिषेक (८२), सुमतिनाथकी बालक्रीडा, राज्याभिषेक, राज्य करते हुए जितेन्द्रका आत्मचिन्तन (८३), लौकान्तिक देवोका आगमन और उद्बोधन, दीक्षाग्रहण (८४), केवलज्ञानकी प्राप्ति, देवेन्द्र द्वारा स्तुति (८५), स्तुति जारी (८६), समवसरणकी रचना, उसका वर्णन, गणधरोका उल्लेख (८७), गणधरोका उल्लेख, निर्वाण (८८)।

तीतालीसवीं सन्धि :

...

८९-१०२

पद्मप्रभुकी वन्दना (८९), वत्स देशका वर्णन, सुसीमा नगरी, अपराजित राजा (९०), राजाका आत्मचिन्तन, दीक्षा ग्रहण करना (९१), तपस्याका वर्णन, मृत्युके बाद प्रीतकर विमानमें जन्म, छह माह शेष रहनेपर इन्द्रके आदेशसे कौशाम्बी नगरीकी रचना और स्वर्णप्रासादकी रचना (९२), रानीका स्वप्नदर्शन (९३), स्वप्नफल कथन, जितेन्द्रकी उत्पत्तिकी भविष्यवाणी, जिनका गर्भमें आना (९४), जिनका जन्म अभिषेक, बालक्रीडा (९५), महागजकी मृत्यु, पद्मप्रभुकी विरक्ति (९६), दीक्षाभिषेक और तपश्चरण (९७), सोमवत्स द्वारा आहारदान, तपश्चरण, केवलज्ञानकी उत्पत्ति, देवों द्वारा स्तुति (९८), स्तुति (९९), समवसरणकी रचना (१००), निर्वाणलाभ (१०१)।

चौवालीसवीं सन्धि :

...

१०३-१११

सुपावर्चनाथकी वन्दना (१०३), कच्छ देशका वर्णन, क्षेमपुरी राजाकी विरक्ति, तपश्चरण, शरीर त्यागकर भद्राभर विमानमें अहमेन्द्र (१०४), छह माह शेष रहनेपर इन्द्रके आदेशसे कुबेर द्वारा काशीकी वाराणसीकी पुनर्रचना, पृथ्वीसेनाका स्वप्नदर्शन (१०५-१०६),

स्वप्नफल कथन, सुपाश्वका गर्भमें अवतरण (१०७), बालक्रीडा, भोगमय जीवन, उल्कापात
देखकर विरक्ति (१०८), दीक्षाकल्याण (१०९), देवेन्द्र द्वारा स्तुति (१०९), केवलज्ञानकी
उत्पत्ति, जिनका उपदेश (११०), निर्वाणलाम (१११) ।

पैतालीसर्वी सन्धि	११२-१२४
पद्यनाम तीर्थंकरका वर्णन (११२-१२४) ।		
छियालीसर्वी सन्धि	१२५-१३७
चन्द्रप्रभ स्वामीका वर्णन (१२५-१३७) तक ।		
सैंतालीसर्वी सन्धि :	१३८-१५२
पुण्यदन्तका वर्णन (१३८-१५२) ।		
अड़तालीसर्वी सन्धि :	...	१५३-१७२
शीतलनाथका वर्णन (१५३-१७२) ।		
उनचासर्वी सन्धि :	...	१७३-१८४
श्रेयांसनाथका वर्णन (१७३-१८४) ।		
पचासर्वी सन्धि :	...	१८५-१९५
अश्वघोष और त्रिपुष्ट वासुदेव और बलदेवकी उत्पत्ति (१८५-१९५) ।		
इक्यानवी सन्धि :	...	१९६-२११
त्रिपुष्ट द्वारा सिंहमारण और कोटिशिलाका उद्धार (१९५-२११) ।		
बावनवी सन्धि :	...	२१२-२४१
त्रिपुष्टकी अश्वघोषसे भिडन्त (२१२-२४१) ।		
त्रेपनवी सन्धि :	२४२-२५३
वासुपूज्यका वर्णन (२४२-२५३) ।		
चौवनवी सन्धि :	...	२५४-२७१
द्विपुष्ट और तारकके चरितका वर्णन (२५४-२७१) ।		
पचपनवी सन्धि :	...	२७२-२८१
विमलनाथका वर्णन (२७२-२८१) ।		
छप्पनवी सन्धि :	२८२-२९१
भीम और स्वयम्भूकी भिडन्तका वर्णन (२८२-२९१) ।		

सत्तावनवीं सन्धि :	...	२९३-३१७
मन्दर और मेरुकी कथा (२९३-३१७) ।		
अट्ठावनवीं सन्धि :	...	३१८-३३६
अनन्तनाथके तीर्थकालमें सुप्रभ पुरुषोत्तम और मधुसूदन की कथा (३१८-३३६) ।		
उनसठवीं सन्धि :	...	३३७-३५७
घर्मनाथका वर्णन, सुदर्शन, पुरुषसिंह, मधुक्रीड, मधवा, सनत्कुमार (३३७-३५७) ।		
साठवीं सन्धि :	...	३५८-३८४
शान्तिनाथ भवावलि (३५८-३८४) ।		
इकसठवीं सन्धि :	३८५-४०५
वज्रायुध चक्रवर्ती (३८५-४०५) ।		
बासठवीं सन्धि :	...	४०६-४२४
मेघरथका तीर्थकर गोत्रवन्ध (४०६-४२४) ।		
त्रेसठवीं सन्धि :	४२५-४३४
शान्तिनाथ निर्वाणगमन (४२५-४३४) ।		
चौंसठवीं सन्धि :	...	४३५-४४४
कुन्धु चक्रवर्ती और तीर्थकर (४३५-४४४) ।		
पैंसठवीं सन्धि :	४४५-४६४
अर तीर्थकर और परशुराम विभवका वर्णन (४४५-४६४) ।		
छियासठवीं सन्धि :	...	४६५-४७४
सुभीम चक्रवर्ती-वासुदेव-प्रतिवासुदेव कथान्तर (४६५-४७४) ।		
सड़सठवीं सन्धि :	...	४७६-४८९
मल्लिनाथ-पद्म चक्रवर्ती-नन्दिमित्र-दत्तवलि-पुराण (४७५-४८९) ।		

महापुराण

भाग ३

महाकवि पुष्पदन्त विरचित

महापुराण

संधि ३८

वंभहु वंभालयसामियहु ईसहु ईसरवंदहु ॥
अजियहु जियकामहु कामयहु पणविवि परमजिणिदहु ॥ ध्रुवकं ॥

१

सुहयरोहं	सुहयरोहं ।	
वीरमघोरं	वयविहिघोरं ।	
उवसमणिलयं	पसमियणिलयं ।	५
कंदरवालं	कंदरणीलं ।	
मंदरसित्तं	मंदरसित्तं ।	
रामारमणे	रामारमणे ।	
विणयज्जणाणं	विणयज्जणाणं ।	
जेण कयं तं	जे ण कयंतं ।	१०
आलोयंते	आलोयंते ।	
भमइ जसोहो	भवइजसोहो ।	
णाहो ताणं	जो भत्ताणं ।	

सन्धि ३८

ब्रह्मा (परमात्मा) मोक्षालयके स्वामी, ईश्वरोके द्वारा वन्दनीय, ईश, जिन्होंने कामको जीत लिया है, जो कामनाओको पूरा करनेवाले हैं, ऐसे परम जिनेन्द्र अजितनाथको मैं प्रणाम कर ।

१

जिन्होंने रोगो (काम-क्रोधादि) के समूहका नाश कर दिया है, जो पुण्यरूपी वृक्षके लिए मेघके समान हैं, जो वीर और सौम्य हैं, जो ब्रतोंके आचरणमे कठोर हैं, जो उपशम (शान्तभाव) के घर हैं, जिन्होंने मनुष्योंके विनाशको शान्त कर दिया है, जिनकी ध्वनि (दिव्य ध्वनि) मेघकी ध्वनिके समान है, गुफा ही जिनका घर है, जिनका सुमेर पर्वतपर अभिषेक हुआ है, जिसमें धन और कामका मन्थन है ऐसे स्त्रीरमणमें जिनकी मन्दरसता है, जिन्होंने विनत जनोंके लिए विनयज्जान (श्रुतज्ञान) दिया है, जो यमको नहीं देखते, जिनका यश-समूह चन्द्रमाकी किरणोंके समान शोभावाला है, तथा लोकपर्यन्त परिभ्रमण करता है, जो भक्तोंका त्राण करने-

	जो भयवंतो	जो भयवंतो ।
१५	जमकरणवहं	जमकरणवहं ।
	अण्णाणमहं	सण्णाणमहं ।
	णिहारहियं	णिहारहियं ।
	अवसावसणं	आसावसणं ।
	आसासमणं	आसासमणं ।
२०	वररमणीसं	वररमणीसं ।
	णीसंसाळं	णीसंसाळं ।
	परसमयंतं	परसमयंतं ।
	अहिवंदिययं	सुहमिंदिययं ।
	जेणं ण कहियं	तेल्लोक्कहियं ।
२५	गिरुवमदेहं	तं वंदे हं ।

घत्ता—पुणु पणविवि पंच वि परमगुरु णियजसु विजगि पयासैवि ॥
घणट्टुरियपडलणिण्णासयरु अजियहु चरिउ समासैवि ॥१॥

२

मणि जाएण किं पि अमणोज्जे कइवयदियहइं केण वि कज्जे ।
णिन्विण्णोउ थिउ जाम महाकइ ता सिविणंतरि पत्त सरासइ ।
मणइ भडारी सुहयरुओहं पणमहं अरुहं सुहयंरुमेहं ।

वाले स्वामी हैं, जो ज्ञानवान् और सात भयोंका नाश करनेवाले हैं, जो रोगादिका विनाश करनेवाले यमों और ब्रतोंका अनुष्ठान करनेवाले हैं, जो अज्ञानका नाश करनेवाले ज्ञानको धारण करते हैं, जो निद्रा और कलत्रसे रहित हैं, जो शापसे शून्य और दिशाखूपी वस्त्रोंको धारण करते हैं, जो सब ओर त्रंलोक्यरूपी लक्ष्मीसे विलसित है, जो आशाके शामक और मुक्तिरूपी रमणीके ईश हैं, जिनकी बुद्धि घर देनेवाली है, जो मनुष्योंको प्रशंसासे युक्त है, जो संसारका परिस्थाग कर चुके हैं, जो पर सिद्धान्तोका अन्त करनेवाले हैं, जो श्रेष्ठ शान्तिसे रमणीय, और नागराजके द्वारा अभिनन्दनीय है, जिन्होंने इन्द्रियजन्य सुखको सुख नहीं माना, तथा जो अनुपम और अशरीरी हैं, ऐसे अजितनाथकी मैं वन्दना करता हूँ ।

घत्ता—पाँचों परमगुरुओं (पाँच परमेष्ठियों) को प्रणाम कर तथा अपने यशको तीनों लोकोंमें प्रकाशित कर घन पाप पटल के नाशक श्री अजितनाथके चरितका संक्षेपमे कथन करता हूँ ।

२

कई दिनों तक किसी कारण, मन मे कुछ असुन्दर बात हो जानेसे जब कवि उदासीन था तो उसे सपनेमे सरस्वती प्राप्त हुई । आदरणीया वह कहती हैं—“संसारके रोगसमूहका नाश करनेवाले तथा पुण्यरूपी वृक्षके मेघ श्री अरहन्तको तुम नमस्कार करो ।”

३. A णिहारहियं । ४. P जेण णं । ५. AP पयासमि । ६. AP समासमि ।

२. १. A कइवयदियहं, P कइवयद दियहं । २. K णिन्विण्णोउ थिउ but gloss निविण्णः; P णिन्विणु उट्टिउ । ३. A पणमह; P पणवह । ४. A सुहयरुमेह but gloss in K शुभतरमेघम् ।

इय गिसुणेवि विचद्वैच कइवरु	सयलकलायरु णं छणससहरु ।	
दिसरु गिहालइ किं पि ण पेच्छइ	जा विन्दिहयमैइ गियघरि अच्छइ ।	५
ताम पराइण णयवत्ते	मवलिथकरयलेण पणवत्ते ।	
दसँदिसिपसरियजसतरुकंदे	वरमहमत्तवंसणहँयँदे ।	
छणससिमंडलसंगिहचयणे	णवकुचलयदलदीहरणयणे ।	
घत्ता—खलसंकुलि कालि कुशीलमइ विणरु करेपिणु संवरिय ॥		
वच्चंति वि ^{१०} सुण्णसुसुण्णवहि जेण सरासइ ^{११} उद्धरिय ॥२॥		

१०

३

अइयणदेवियव्वतणुजापं	जयदुंदुहिसरगहिरिणापं ।	
जिणवरससयगिहेलणखंभे	दुत्थियमित्तं ववगय्यंभं ।	
मैइं चवयारमौतु णिव्वहणं	विचसविदुरसयभयंणिम्महणं ।	
तेओहासियपवरकरहँ	तेण विगव्वं भव्वं भरहँ ।	
बोलाविच कइ कव्वपिसल्लव	किं तुहुं सच्च वप्प गदिल्लव ।	५
किं दीसहि विच्छायव दुम्मणु	गंथकरणि किं ण करहि गियमणु ।	

यह सुनकर महाकवि जाग उठा मानो समस्त कलाओंको धारण करनेवाला पूर्णिमाका चन्द्र हो । वह दिशाओंको देखता है, परन्तु वहाँ कुछ भी नहीं देखता, विस्मित बुद्धि जब वह अपने घरमें स्थित था, तब जो न्यायशौल है, जिसने दोनो करतल जोड़ रखे हैं, जो प्रणाम कर रहा है, जिसके यशस्वी वृक्षकी जड़ें दसो दिशाओमें फैल रही हैं, जो अष्ट माहामात्यके वंशस्वी आकाशका चन्द्रमा है, जिसका मुख पूर्णिमाके चन्द्रमाके समान है, जिनके नेत्र दीर्घ कुवलयदलके समान हैं, ऐसे आये हुए भरतने—

घत्ता—खलोसे व्याप्त समयमे विनय करके कुशीलमतिको रोका । जिसके द्वारा आकाशके सुने पथमे जाती हुई सरस्वतीका उद्धार किया गया ॥२॥

३

जो अइयण (एयण या देवीयव्वा) देवीका पुत्र है, जिसका स्वर विजयकी दुंदुभिके स्वरकी तरह गम्भीर है, जो जिनवरके सिद्धांतरूपी भवनका आधार स्तम्भ है, जो दुःस्थित लोकोका मित्र है, दम्भसे रहित है, मुझमे उपकार भावका निर्वाह करनेवाला है, जो चिद्धानोंके संकटों और सैकड़ों भयोंका नाश करनेवाला है, जिसने अपने तेजसे सूर्यके रथको निष्प्रभ कर दिया है, ऐसे उस गर्वरहित भव्य भरतने कहा—“हे काव्य-पण्डित कवि, क्या तुम वेचारे ग्रहगृहीत हो (तुम्हें भूत लग गया है), तुम कान्तिहीन और उदासीन क्यों दिखाई देते हो, ग्रन्थरचनाने

५. A विवुद्धव । ६. AP विभियमह । ७. P दसदिस । ८. AP णहवदं । ९. P संवरिह । १०. A विसणु सुसुण्ण । ११. P उद्धरिह ।

३. १. A अइयणदेविअंभं; P इयणुदेवियव्व । २. A ववगय्यंभं । ३. AP परवयार । ४. A भार; P हार । ५. A वं ।

किं किञ्च काइं वि मइं अवराहृ च अवरु को वि किं विरसुम्माहृ ।
भणु भणु भणियचं सयलु पडिच्छं वि हृं कयपंजलियरु ओहृच्छं वि ।

घत्ता—अधिरेण असारे जीविएण किं अप्पच संमोहहि ॥

१० तुहं सिद्धहि वाणीधेणुयहि गवरसखीर ण दोहहि ॥३॥

४

तं गिसुणेप्पिणु दरविहसंतं	मित्तमुहारविदु जोयंते ।
कसणसरीरे सुदुक्खुव	मुद्धाएविगम्भसंभूवें ।
कासवगोत्तं केसवपुंत्ते	कैङ्कुलतिलएं सरंसइणिल्लं ।
पुप्फयंतकइणा पडिचत्त	भो भो भरह गिसुणि णिक्खुत्त ।
५ कलिमलमलिणु कालु विवरेरउ	णिग्घिणु णिग्गुणु ढुणयगारउ ।
जो जो दीसइ सो सो दुज्जणु	णिप्फलु णीरसु णं सुक्कउ वणु ।
राउ राउ णं संझहि कैरउ	अत्थि पयट्टइ मणु ण महारउ ।
उव्वेउ जि वित्थरइ णिरारिउ	एक्कु वि पउ वि रएवउ भारिउ ।

घत्ता—दोसेण होउ तं णंउ भणमि चोञ्जु अवरु मणि थक्कउ ॥

१० जगु एउ चडाविउं चाउं जिह तिह गुणेण सह वंकउं ॥४॥

अपना मन क्यों नहीं लगाते ? क्या मुझसे कोई अपराध हो गया है, या कोई दूसरी, च्दासीनता उत्पन्न करनेवाली बात हो गयी है । कही कही, मैं कहा हुआ सबको स्वीकार करता हूँ । जो, यह हाथ जोड़कर तुम्हारी बात सुननेके लिए मैं बैठा हूँ ।

घत्ता—अस्थिर और असार जीवनसे तुम अपनेको सम्मोहित क्यों करते हो, तुम सिद्ध वाणीरूपी धेनुसे नव (नी / नया) रस रूपी दूध क्यों नहीं दुहते ॥३॥

४

यह सुनकर थोड़ा हँसते हुए मित्रका मुखकमल देखते हुए, कृश शरीर और अत्यन्त कुरूप मृगधादेवीके गर्भसे उत्पन्न कश्यपगोत्री केशवपुत्र, कविकुल तिलक और सरस्वतीके पुत्र पुष्पदन्त कविने प्रत्युत्तर दिया—हे भरत, तुम निश्चितरूपसे सुनो । कालिके मलसे मैला यह समय विपरीत निर्घृण निर्गुण और दुर्नयकारक है, जो-जो दीखता है, वह दुर्जन है, वह निष्फल नीरस है, मानो शुष्कवन हो । (लोकोका) राग सन्ध्याके रागकी तरह है, मेरा मन किसी अर्थमें प्रवृत्त नहीं होता, अत्यन्त उद्वेग बढ़ रहा है, एक भी पदको रचना करना भारी जान पड़ रहा है ।

घत्ता—दोष होगा इसलिए नहीं कहता, मेरे मनमें दूसरा कुतूहल यह है कि यह विश्व गुणके साथ उसी प्रकार टेढ़ा है जिस तरह खोरी पर चढ़ा हुआ धनुष टेढ़ा होता है ॥४॥

६. AP पडिच्छमि । ७. A कयपंजलि अरहहं अच्छमि । ८. PT ओहृच्छमि । ९. AP तुह ।

४. १. A सुदुक्खुवें; P सुदुक्खुवें । २. P कयकुल । ३. A omits सरसइणिल्लं and reads उत्तमसत्तं in its place; P सरसयं । ४. P adds after this : उत्तमसत्तं जिणपयभत्तं । ५. A रएवउ ।

६. A णव ।

जइ वि तो वि जिणगुणगणु वण्णवि किह पइ अउमत्थिउ अवगण्णवि ।
 चायभोयभोउग्गमसत्तिइ पइ अणवरयरइयकइमेत्तिइ ।
 राउ सौलवाहणु वि विसेसिउ पइ गियजसु भुवणयलि पयासिउ ।
 कालिदामु जे खंवे णीयउ तहु सिरिहरिसहु तुहु अगि वीयउ ।
 तुहु कइकामघेणु कइवच्छलु तुहु कइकप्परुक्खु ढोइयफलु ।
 तुहु कइसुरवरकीलागिरिवरु तुहु कइरायहंसमाणससरु ।
 मंडु मयालसु मयणुम्मत्तउ लोउ असेसु वि तिट्ठइ भुत्तउ ।
 केण वि कण्वपिसल्लउ मण्णउ केण वि थैद्ध भणिवि अवगण्णिउ ।
 णिच्चमेव सब्भाउ पंजिउ पइ पुणु विणउ करिवि हउ रंजिउ ।

घत्ता—घणु र्णु समु मब्बु ण तं गहणु णेहु णिकारिसु इच्छेवि ॥ १०
 देवीसुय सुहणिहि तेण हं णिलइ तुहारइ अच्छवि^{१०} ॥५॥

महुसमथागमि जायहि ललियहि बोल्लइ कोइल अंबयकलियहि ।
 काणणि चंचरीउ रुणुउंटइ कीरु किं ण हरिसेण विसट्टइ ।
 मब्बु कइत्तणु जिणपयभत्तिहि पसरइ णउ गियजीवियवित्तिहि ।

यद्यपि, तब भी जिनवरके गुणोंका वर्णन करता हूँ। तुमने अभ्यर्थना की है किस प्रकार उपेक्षा कहे? तुमने त्याग भोगकी उद्दाम (उद्दाम) शक्ति, और निरन्तर की गयी कविकी मित्रता द्वारा, राजा शालिवाहनसे भी विशेषता प्राप्त की है। तुमने अपना यश भुवनतल पर प्रकाशित किया है, जिसने कालिदासको अपने कन्धे पर बैठाया है उस श्रीहर्षसे तुम जगमे द्वितीय हो, तुम कवियोंके लिए कामधेनु और कवि वत्सल हो, तुम कवियोंके लिए फल उपहारमे देनेवाले कल्पवृक्ष हो। तुम कवियोंके लिए (कवियोंके लिए), देवोके क्रोडा पर्वत (सुमेरु पर्वत) हो। तुम कविराज रूभी हंसके लिए मानसरोवर हो। लोग, मन्द मदालस, कामसे उन्मत्त और तृष्णासे भुक्त हैं। किसीके द्वारा कामपण्डित माना गया, और किसीके द्वारा मूर्ख कहकर मेरी अवहेलना की गयी। लेकिन तुमने हमेशा सद्भावका प्रयोग किया और विनय करके मुझे प्रसन्न रखा।

घत्ता—घन मेरे लिए तिनकेके समान है, मैं उसे नहीं लेता। मैं अकारण स्नेहका भूखा हूँ। हे देवीपुत्र शुभनिधि भरत, इसीलिए मैं तुम्हारे घरमे रहता हूँ ॥५॥

वसन्तका समय आने पर सुन्दर हुई आन्रमञ्जरी पर कोयल बोलती है, काननमे भ्रमर-वनञ्जुन करता है, फिर तोता हर्षसे विशिष्ट क्यो नहीं होता, मेरा कवित्व जिनवरके चरणोंकी भक्तिसे प्रसरित होता है अपनी आजीविकाकी वृत्तिसे नहीं।

५. १. P जय वि । २. A वणम्मि; P वण्णमि । ३. AP अवगण्णमि । ४. AP शालिवाहणु । ५. APT मण्णिउ । ६. A मंडु; P यद्धु; T वंठ जडः । ७. AP सब्भाव । ८. A तिणु । ९. AP इच्छमि । १०. AP अच्छमि ।

- विमलगुणाहरणीकियदेहृ
 ५ कमलगंधु धेप्यैइ सारंगं
 गमणलील जा कय सारंगं
 सज्जणदूसियदूसणवसणं
 कहमि कब्बु चम्महसंधारणु
 एउं भरह णिसुणइ पइं जेहउ ।
 णउ सालूरं णीसारंगं ।
 सा किं णासिज्जइ सारंगं ।
 सुकंइकित्ति किं इम्मइ पिसुणं ।
 अजियपुराणु भवणवतारणु ।
 घत्ता—जिणगुणरयणावलिबेयडिउ सहसुवण्णंसमुज्जु ॥
 १० आहासइ गणहरु सेणियहु करहु कणिण कहंकोडलु ॥६॥

७

- सरपंकयरयरत्तविदेहइ
 सीयहिं दाहिणैकूलि रवणणउ
 सहलारामहिं गामहिं घोसहिं
 पविउलपक्कैकल्लवकेयारहिं
 ५ घणकणगुरुभरणवियहिं घण्णंहिं
 चंपयदेवदारुंसाहारहिं
 णच्चिरमुक्कमोरकेकार्हिं
 महिसंमैसज्जुच्छवमिलियहिं
 जंबूदीवट्ट पुठवविदेहइ ।
 वच्छउ णाम देसु वित्थिणणउ ।
 दहियविरोलणमंथणिघोसहिं ।
 कणिसु चुणंतहिं जंपिरकीरहिं ।
 हंसहिं णववंभहरणिसण्णहिं ।
 कुसुमालीणभमरञ्जंकाहिं ।
 पवलवलालवसहट्टेकारहिं ।
 जो^{१०} सोहइ^{११} णंदंतहिं हलियहिं ।

हे भरत, जिसने शरीर पर विमल गुणरूपी आभरण धारण किये हैं ऐसा तुम जैसा व्यक्ति उसे सुनता है, कमलकी गन्ध भ्रमरके द्वारा ग्रहण की जाती है सारहीन मेढकके द्वारा नहीं। हरिणके द्वारा जो गमनलीला की जाती है, क्या वह धनुषके द्वारा नष्ट की जा सकती है। जिनका स्वभाव सज्जनोको दूषित करना है ऐसे दुष्टके द्वारा क्या सुकविकी कीर्ति नष्ट की जा सकती है। मैं कामदेवका संहार करनेवाले और संसार रूपी समुद्रसे सन्तरण करनेवाले अजित पुराण काव्यको कहता हूँ।

घत्ता—गौतम गणधर कहते हैं, “हे गौतम, तुम जिनवरके गुणोकी रत्नावलीसे विजडित शब्दरूपी स्वर्णसे समुज्ज्वल यह कथा रूपी कुण्डल अपने कानोमे धारण करो” ॥६॥

७

जहाँ सरोवरोंके कमलरजसे पक्षियोंके शरीर घूसरित हैं जम्बूद्वीपके ऐसे पूर्व विदेहमे, सीता नदीके दक्षिण तट पर, सुन्दर वत्स नामका विशाल देश है, जो फल सहित उद्यानो, ग्रामों, दही विलोनेकी मथानियोंके घोषवाले गोकुलो, पके हुए प्रचुर धान्यके खेतों, कण चुगते बोलते हुए शुकों, सघन दानोंसे भरे हुए नये धान्यों, नवकमलों पर बैठे हुए हंसों, चम्पक देवदारु और आम्र वृक्षों, पुष्पोमे लीन भ्रमरोंकी झकारों, नृत्य करते हुए मुवत्त मयूरीकी ध्वनियों, प्रवल बलयुवत्त बैलोकै देवकार शब्दों तथा भैंसाओ और मेढोंके युद्धोत्सवमे इकट्ठे हुए प्रसन्न हलवाहोसे शोभित है।

६. १. P पइ । २. AP विप्यइ । ३. AP वद्धिद्वयसज्जणहूसण^० । ४. P सुकय । ५. AP^०सुवण्णु ।

६. AP कहकुडलु ।

७. १. उत्तर^०; K उत्तर but corrects it to दाहिण^० । २. A^० पिक्क^० । ३. AP^० कलम^० । ४. AP अण्णहिं; K घण्णहिं and gloss घान्णै. । ५. A^० देवदार^० । ६. AP कुसुमालीण^० । ७. AP णच्चिरमोरमुक्क^० । ८. P केक्कारहिं । ९. AP महिसहिं मेसहिं जुज्जिवि मिलियहिं । १०. P omits जो । ११. B adds णिइ after णंदंतहिं ।

घत्ता—तर्हि अत्थि सुसोमा णाम पुरि सररुहल्लणमहासर^{१२} ॥
^{१३}णंदणवणसंठियदेवसिरमउडरयणकर^{१४} सियघर^{१५} ॥७॥

१०

८

परिहाजलपरिघोलिररसणहिं
 विविहदुवारंतरवरवयणहिं
 धूवधूमधम्मेल्लयकसणहिं
 लंबियचलच्चिधावलिवत्थहिं
 मंदिरकंचणकलसयथणियहिं
 जं वणणहुं भेसइ वि ण सकइ
 अत्थि विमलवाहणु तर्हि राणउ
 जसु सोहग्गे वम्महु भज्जइ
 जसु वड्वसुवसु दंडहु संकइ
 पडिगयभट्ठथड भड भंजंतहु
 जाणियसारासारविवेयउ

हिमपंडुरपायारणिवसणहिं ।
 गेहगवक्खुग्घाडियणयणहिं ।
 तोरणमोत्तियमालादसणहिं ।
 ठाणमाणलक्खणहिं पसत्थहिं ।
 किं वण्णिज्जइ सीमंतिणियहिं ।
 सुरवइ फणिवइ अवरु वि सकइ ।
 जसुं विहवेण ण सक्कु समाणउ ।
 तेण अणंगत्तणु पडिवज्जइ ।
 तेयहु तरणि तवंतु चवकइ ।
 तासु णरिंदलच्छि भुंजंतहु ।
 एक्कहिं दिणि जायउ णिवेयउ ।

५

१०

घत्ता—पुर परिणणु ह्य गय रह सधय अंतेउरु अवगणिवि ॥
 सीहासणछत्तइ चामरइ गउ सयैलइ तणु भणिवि ॥८॥

घत्ता—उसमे सुसोमा नामकी नगरी है जिसके सरोवर कमलोसे आच्छन्त है, तथा लक्ष्मीगृह नन्दनवनीमें बैठे हुए देवोके सिरोंके मुकुटोंकी किरणोंसे युक्त है ॥७॥

८

परिखाके जलोंकी शब्द करनेवाली करधनियों, हिमकी तरह स्वच्छ प्राकार रूपी वस्त्रों, विविध द्वारोंके अन्तररूपी मुखों, धरोंके झरोखो रूपो चढे हुए नेत्रों, धूपके धुओं रूपी केशपाशोंसे काले तोरणोंकी मुक्तामालाओंके दाँतों, लम्बे चंचल ध्वजोंकी आवलियोंके वस्त्रों, स्थान और मानके प्रशस्त लक्षणों, मन्दिरोंके स्वर्णकलशोंके स्तनों वाली उस नगरी रूपी सीमतिनी (नारी)का क्या वर्णन किया जाये, जिसका वर्णन वृहस्पति भी नहीं कर सकता, देवेन्द्र नागराज और दूसरा कोई भी वर्णन नहीं कर सकता । उस नगरीमें विमलवाहन नामका राजा है, इन्द्र भी उसके वैभवके समान नहीं है, जिसके सीभाग्यसे कामदेव भग्न हो जाता है इसीलिए उसके द्वारा अंगहीनत्व धारण किया जाता है, जिसके दण्डसे यमकी-सेना डर जाती है, जिसके तेजसे सूर्य चमकता रहता है, शत्रुओंके हाथियों और योद्धाओंके समूहको नष्ट करते हुए तथा राजलक्ष्मीका भोग करते हुए उसे जिसमे सार और असारका विवेक जान लिया गया है, ऐसा वैराग्य एक दिन हो गया ।

घत्ता—पुर परिजन अद्व गज ध्वज सहित रथ और अन्तःपुरकी उपेक्षाकर, तथा समस्त सिंहासनों छत्रों चामरोंको तिनकेके बराबर समझकर चला गया ॥८॥

१२. P महासरि । १३. P^० वणमडियं कसणहिं । १४. AP^० देवसिरि मउड^० । १५. P सियघरि ।
 ८. १. P घृप^० । २. AP^० धम्मेल्लहिं । ३. P रायमाण^० । ४. A जसु विह्वे सक्कु वि ण समाणउ ।
 ५. PT वड्वसुवसु । ६. A चमवकइ, P चमुवकइ । ७. P^० घडयड^० । ८. A सिंहासण^०; P सिंहासण ।
 ९. AP समकु वि विणु ।

- ५ गुरुचरणारविन्दु सेवेऽपिणु
वीथरायवचणेण विणायक
अप्पाणञं तिहिं गुत्तिहिं भावैइ
वेळ्ळावच्च करइ मुणिणाहहं
५ धम्म अहिंसालकखणु अक्खइ
आगच्छंतुवसग्गु समिच्छइ
दंसमसय सुद्धसंत ण साहइ
दंसणसुद्धिविणञ आराहइ
विकहइ ण कहइ ण रुसइ ण हसइ
१० णाणु णिरंतरु तेणवभसियञ
एम घोरु तवचरणु चरेऽपिणु
घत्ता—तेल्लोकचक्रसंखोहणइं सुहकम्माइं समज्जिवि ॥
मुञ्ज मुणिवरु णिरसणविहिं करिवि चित्तु समत्ति णिंज्जिवि ॥९॥

१०

तेतीसंवुहिआउपमाणइ
किं वण्णमिं पुण्णेणुपण्णञ

पंचाणुंतरविजयविमाणइ ।
हृत्थमेत्तैतणु ससहरवण्णञ ।

९

गुरुके चरण-कमलोंको सेवा कर वह तप ग्रहण कर परम भिक्षु हो गया । वह वीतरागके वचनोसे ज्ञात, पांच महाव्रतोंकी पांच-पांच भावनाओंका पालन करता है, वह स्वयंको तीन गुणियोसे भावित करता है, नीरस भोजन करता है, रातमे नही सोता है । रोगसे जिनका शरीर आहत है ऐसे बाल और वृद्ध मुनिस्वामियोकी वैयावृत्य (सेवा) करता है, अहिंसा लक्षणवाले घर्मकी व्याख्या करता है, जो मित्र और शत्रुको समानरूपसे देखता है, आते हुए उपसर्गकी सहन करता है, हाथ ऊपर कर खड़ासनमे स्थित रहता है । काटते हुए डांस और मच्छरोको नही भगाता, शरीर पर लगे हुए सर्पको भी नही हटाता, दर्शनविशुद्धि और विनयकी आराधना करता है, परीषहोको सहन करता है, और इन्द्रियोको सिद्ध करता है, विकथा नही कहता, न क्रोध करता है और न हँसता है, भीषण और निर्जन काननमे निवास करता है । इस प्रकार उसने निरन्तर ज्ञानका अभ्यास किया, और अधर्म करने वाले कर्मको नाश कर दिया इस प्रकार घोर तपस्चरण कर तीर्थंकर प्रकृतिका बंधकर ।

घत्ता—त्रिलोकचक्रको क्षुब्ध करनेवाले शुभ कर्मोंका अर्जनकर, अनवान विधिकर और चित्तको सम्यक्त्वमे नियोजित कर वह मृत्युको प्राप्त हुए ॥९॥

१०

तेतीस सागर आयु प्रमाणवाले पांचवें विजयनामक अनुत्तर विमानमे वह उत्पन्न हुए । पुण्यसे उत्पन्न उनका क्या वर्णन करूँ, उनका एक हाथ प्रमाण शरीर चन्द्रमाके रंगका प्रतिकार-

९. १. P विणायक । २. A गोवइ । ३. AP जेमइ । ४. AP विज्जावच्चु । ५. AP समु । ६. P उव्वमभउ । ७. AP झाइइ । ८. A विकहइ कहइ ण हसइ ण रुसइ । ९. AP अणत्णं ।
१०. १. A तेतीसंवुहिं । २. AP पंचाणुतरि । ३. AP वण्णमि । ४. A पुण्णेण पण्णञ, P पुण्णेणु पण्णञ । ५. AP हृत्थमेत्तु तणु ।

णिप्पडियारुड गिरहंकारुड
णियवासहु वासंतुर ण सरइ
सीहासणि सुणिसण्णउ अञ्छइ
लेइ मणेण भक्खुं छुइ णासहि
णिग्गयदइयंघवणणिहदुक्खहिं
छम्मासाउसु वट्टेइ जइयहु
सो अहंममराहिउ आवेसैइ
इम चित्तेवि भणिउ जक्खाहिउ
जंबूदीवभरहंउञ्जाउरि

भूसणहरु अहंमिदंभडारुड ।
उत्तरवेउण्विउ वउ ण करइ ।
ओहिइ तिजगणाडि संपेच्छइ ।
सो तेत्तीसहिं वरिससहासहिं ।
णीसं सेइ तेत्तियहिं जि पक्खहिं ।
सोहंमिदं जाणिउ तइयहु ।
जियसत्तहि घरि जिणवरु होसइ ।
धरणीगयणिहाणलक्खहाहिउ ।
धणय कणयमयणिलयैणं लहु करि ।

घत्ता—ता णयरि कुबेरें णिम्मविय कंचणभवणविसेसहिं ॥
सरिसरवरवेववणजिणहरहिं १० पहचच्चरविण्णासहिं ॥१०॥

११

आयंउ देविउ इंदाएसें
सिरिहिरिदिहिमइकंतीकित्तिउ
तणुसंसोहणगुणसंजोयैहिं
गन्धि ण थंतेहु अमरवरिउउ

पुरवरु माणवमाणिणिवेसें ।
विजयादेविहि सेव करंतिउ ।
थक्कउ णाणविहिहिं विणोयहिं ।
वसुधारहिं चइसवणु वरिउउ ।

से रहित और निरहंकार, भूषण धारण करनेवाला आदरणीय अहमेन्द्र । वह अपने निवासविमानसे दूसरे विमानमें नहीं जाता । उसका शरीर प्रतिशरीर उत्पन्न नहीं करता । वह अपने सिंहासन-पर स्थित रहता । अवधिज्ञानसे वह तीनों लोकोंकी नाड़ीको देखता, वह भूख नष्ट करनेके लिए तैतीस हजार वर्षमें मनसे आहार ग्रहण करता और धमनीके समान दुःखसे रहित तैतीस पक्षमें एक बार श्वास लेता । जब उसकी छह माह आयु शेष रह जाती है तब सौधर्म स्वर्गके इन्द्रके द्वारा जान ली गयी । वह अहमेन्द्रराज आयेगा और जितशत्रुके घर जिनवर होगा । यह विचार-कर (इन्द्रने) धरतीपर स्थित लाखों निधानोंके स्वामी कुबेरसे कहा, 'हे धनद, जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रकी अयोध्यानगरीमें स्वर्णमय प्रासादका निर्माण करो ।'

घत्ता—तब कुबेरने नगरीका विशेष कंचन भवनो, नदियों, सरोवरों, उपवनों, जिनघरों, पथों और चत्वरोंकी रचनाओसे निर्माण कर दिया ॥१०॥

११

इन्द्रके आदेशसे मानवोंकी मानवियोंके वेश देवियां नगरस्वरमें आयीं । श्री, ह्री, धृति, कान्ति, कीर्ति और विजयदेवी सेवा करने लगी । शरीरके संशोधनों और गुणोंके उत्पादनों और नाना प्रकारके विनोदोंके साथ वे स्थित हो गयीं । उनके गर्भमें स्थित नहीं होते हुए भी अमर श्रेष्ठ

६. AP अहंमिदु । ७. P भिक्खु । ८. A तेत्तीसहिं । ९. P °दयिषवणं । १०. P adds वि after णोससेह । ११. A P वड्डइ । १२ A P सो लहु अमराहिउ । १३. A P आएसइ । १४. A जंबूदीवे भरहे उज्जां ; P जंबूभरहदीउ उज्जां । १५. P °णिलयहु लहु । १६. P °जिणहरउववणेहिं । १७. A अइरमणीयपएसहिं ।

११. १. P आइउ । २. P °संजोवहिं । ३. P णाणविहिंहिं । ४. A गम्भेच्छंतहु ; P गन्धि ण छंतउ ।

- ५ सुदृढंसणि गियमणि संतुष्ट
पलहत्थंतु णिहाणइं दिट्ठउ ।
परवइंप्रंगणि दविणु ण माइउं
पवरिकखाचवंससंभूयहु
विजयदेवि णं चंदहु रोहिणि
१० अहिणवसयदलकोमलगत्ती

जा छम्मासहिं ता परित्ठुव ।

सयलहं दीणाणाहहं ढोइउं ।

बम्भहरुवपरजियरुवहु ।

जियसत्तुहि णरणाहहु रोहिणि ।

हंसवणि पल्लंकि पसुत्ती ।

घत्ता—परमेसरि णिसि पच्छिमपहरि एककेक्कच जि समिच्छइ ॥

णिहालसवस मउलियणयण सोलह सिविर्णय पेच्छइ ॥११॥

१२

- मउल्लगंगंडं
गिरिंदप्पमाणं
धरिन्ती खणंतं
हयारिंदपवखं
५ करिंदाहिसिचं
सयामोयधामं
सुहं सेयमाणुं
सिणिद्धं समाणं
रईलीलयाणं
१० वरं वारिपुणं

पमत्तं पर्यंडं ।

गयं गज्जमाणं ।

चिसं ढेक्करंतं ।

हरिं तिवखणवखं ।

सिरिं पोमवत्तं ।

णवं पुप्फदामं ।

दिसुम्भासिमाणुं ।

दुहे कीलमाणं ।

जुयं मीणयाणं ।

सियंभोयल्लणं ।

कुबेर धनकी धाराओंमें बरस गया। शुभदर्शनसे अपने मनमें सन्तुष्ट जब छह माह हो गये, तब वह परितुष्ट हो गया। निधान फैलता हुआ दिखाई दिया। राजाके आँगनमें धन नहीं समाया, समस्त धन दीनों और अनाथोंके लिए दे दिया गया। महान् इक्ष्वाकु कुलमें उत्पन्न कामदेवके रूपको अपने रूपसे पराजित करनेवाले राजा जितशत्रुकी गृहिणी विजयादेवी उसी प्रकार थी जिस प्रकार चन्द्रमाकी रोहिणी, जो अभिनव शतदलके समान कोमल शरीरवाली थी। हंसके रंगकी वह पलंगपर सो रही थी।

घत्ता—रातके अन्तिम प्रहरमें नीदसे अलसायी आँखें बन्द किये हुए वह परमेश्वरी सोलह सपने देखती है और एक-एककी समीक्षा करती है ॥११॥

१२

मदसे गीले गण्डस्थलवाला प्रमत्त प्रचण्ड पहाड़ जैसा गरजता हुआ महागज, धरती खोदता हुआ, तथा फेनकार करता हुआ वृषभ, शत्रुपक्षको नष्ट करनेवाला, तीखे नखोंवाला सिंह, गजैन्द्रोंके द्वारा अभिषिक्त कमलपत्रोंवाली लक्ष्मी, सदैव आमोद प्रदान करनेवाली नव पुष्पमाला, शुभ्र चन्द्र, दिशाओंको उद्भासित करनेवाला सूर्य, सरोवरमें क्रीड़ा करता हुआ रति-क्रीड़ासे युक्त मत्स्योंका स्निग्ध जोड़ा, जलसे भरित और श्वेत कमलोंसे आच्छादित घड़ोंकी शोभा

५. A परिवृट्ठउ but corrects it to परितुट्ठउ; P परिवृट्ठउ; T परिवट्ठउ । ६. A P add after this : घणु जिह पुणु वरिस्तु अणिदठउ । ७. A P^०पगणि । ८. A सविणय; P सिविणह ।

१२. १. P पोमवत्तं ।

रमारामरम्भं	घडाणं च जुम्भं ।	
लयापत्तणीलं	विर्द्धारणालं ।	
मरालालिरोलं	सरं सारसालं ।	
जलुल्लोलमालं	महामच्छवालं ।	
गहीरं रवालं	समुद्दं विसालं ।	१५
पहारिद्धिरुढं	मद्दूढपीढं ।	
णहे धावमाणं	सुराणं विमाणं ।	
धरारं धणित्तं	पसत्थं पवित्तं ।	
जसेणुणवाणं	घरं पणयाणं ।	
गयासामळहं	मणीणं समूहं ।	२०
सिहालीचल्लंतं	हुयासं जल्लंतं ।	

घत्ता—इय सिविणयपंति मणोहरिय जोइवि सीलविसुद्धइ ॥
सुविहाणइ रायहु पजरिय सुत्तविर्द्धइ सुद्धइ ॥१२॥

१३

पहुणा विहसिचि गुणगणबंतहि	सिविणयफलु विण्णासिच कंतहि ।	
होही तुह सुच जियवम्मीसर	तिहुयणगुरु तिणाणजोईसरु ।	
तासु विमलवाहणअहर्मिदहु	आउ पत्तणउ बुहयणत्तंदहु ।	
कुंजरवेसें नृवरामाणि	झत्ति पट्टुव णं दिणयर घणि ।	
गढिभ परिद्धिच जिणु जगमंगलु	उद्धिच घरि सुरसंथुइकलयलु ।	५

समूहसे युक्त जोड़ा, लतापत्रोंसे हरा, खिले हुए कमलोंसे युक्त, सारसोंका घर सरोवर, उल्लती हुई, जलतरंगोंसे सहित महामत्स्योका पालक शब्दमय विमल घरीर समुद्र, प्रभाके वैभवसे भरपूर सिंहासनपीठ, आकाशमे दोड़ता हुआ देवताओंका विमान, घरतीके बिलसे निकलता हुआ पवित्र प्रशस्त तथा यशसे उन्नत नागोंका समूह, दिशाओंमे फैली हुई किरणोवाला मणिसमूह, तथा ज्वालाओंमे जलती हुई आग ।

घत्ता—इस प्रकार स्वप्नावली देखकर, शीलसे विशुद्ध सुन्दर भुग्धा विजयादेवी सबेरे सोकर उठी । उसने राजासे कहा । ॥१२॥

१३

राजाने हंसकर गुणगणसे युक्त कान्ताको स्वप्नोंका फल बताया—“तुम्हारा कामदेवको जीतनेवाला त्रिभुवनका गुरु तीन जानोंका धारक योगीश्वर पुत्र होगा ।” बुधजनोंके चन्द्र उस विमलवाहन अहमेन्द्रकी आयु पूर्ण हो गयी । वह शीघ्र गजरूपमे रानीके मुखमे इस प्रकार प्रवेश कर गया मानो सूर्यने बादलोमे प्रवेश किया हो । विश्वका कल्याण करनेवाले जिन गर्भमे आये

२. A P विवुद्धा । ३. P ० जेत्तं । ४. A सिहालीपलित्तं; P सिहालीवल्लंतं, but T सिहालीचल्लंतं ।
५. P ० विवट्टुव ।

१३. १. A P add after this : जेट्टुहु मासहु पक्खि अचंदिणि (P पक्खियचंदिणि), भावसदिणि ससहरि यियरोहिणि । २. A P णिव ।

णञ्चिउ णवरसालु तियसेसरु
तासु धरंगणि वण्णविचिचिउ
धणयाएसे जक्खकुमरिहिं
कामकोहमयमोहविहंजणि
१० जलणिहिसमहं कालपरिवाडिहिं
घत्ता—ता माहमासंसियदसमिदिणि
तित्थंकरुं णाणत्तयसहिउ उप्पण्णउ जगसामिउ ॥१३॥

उप्पण्णइ जिणि आऊरियं घर
कहिं वि मइंदणिणाय सुभइरव
आसणकंपं विम्होविचयमइ
दसणकमलसरणच्चियसुरवरि
५ सयमहु सुणिमहसयणिवुडउ
भंभाभूरिभेरिसंधायहिं
जिणकमकमलजुयलसंगायमणु
सोमभीमभूसाभाभासुर
कोसलणयरि झड त्ति पराइय

अहिणंदिउ जियसत्तु णरसरु ।
रयणइं पुणु णवमास णिहित्तइं ।
घोसियसुमहुरसाहुंकारिहिं ।
णिवुइ रिसहजिणिदिं णिरंजणि ।
जा पण्णासलक्खुं गय कोडिहिं ।

१४

कहिं वि समुगय जयघंटावरव ।
कहिं वि समुगय जयघंटावरव ।
कंपिउ अहिवइ भहिवइ सुरवइ ।
मयजलमिलियधुलियवहुमहुयरि ।
अइरावणि वारणि आरुडउ ।
वज्जंतहिं वाइत्तणिणायहिं ।
सवहु सवाहणु सघउ सपहरणु ।
चलिय हरि सरसरसिर सुरासुर ।
परियंचेवि तिवार घरु आइय ।

और धरमे देवताओकी स्तुतिका कल-कल शब्द होने लगा। इन्द्रने अत्यन्त मधुर नृत्य किया, उसने राजा जितशत्रुका अभिनन्दन किया। नौ माह तक उसके धरमे रत्नोंकी वर्षा होती रही। जिन्होंने साधुकारकी घोषणा की है ऐसी यक्ष-कुमारियोने रगविरंगे रत्नोंकी वर्षा कुबेरके आदेशसे की। काम, क्रोध, मद और मोहका नाश करनेवाले ऋषभ जिनेन्द्रके निर्वाणको प्राप्त होनेके बाद, पाँच लाख करोड़ वर्ष बीत जाने पर—

घत्ता—माघ माहके शुक्लपक्षकी दसमीके दिन शिवपदगामी तीन ज्ञानके धारी विश्वके स्वामी द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथका जन्म हुआ ॥१३॥

१४

अजितनाथ जिनके उत्पन्न होनेपर धरती आपूरित हो उठी। कहीपर जय-जय और घण्टों-के शब्द होने लगे, कही भयंकर सिंहनाद शब्द हो रहा था, कही जयघण्टारव उठा, आसनके कम्पायमान होनेसे जिसकी बुद्धि विस्मित है ऐसे नागराज, पृथ्वीराज और देवराज कांप उठे, जिसके दाँतोपर स्थित सरोवरके कमलपर देववर नृत्य कर रहे हैं, जिसके मदजलसे बाकूट होकर अनेक भ्रमर गुनगुना रहे हैं, ऐसे ऐरावत महागजपर, तीर्थंकरके अभिषेकका निर्वाह करनेवाला इन्द्र आरूढ़ हो गया। भस्मा और प्रचुर भेरियोके समूहो, वज्रते हुए धाद्योके निनादों-के साथ, जिनवरके चरणकमल युगलमें संगतमन अपनी वधु, वाहन, ध्वज और अस्त्रोंके साथ, सौम्य विशाल भूषाकी आभासे भास्वर, प्रेमसे शब्द करते हुए इन्द्र, सुर और असुर चले। वे धीम्र ही अयोध्या नगरी पहुँचे, तीन परिवर्चनाएँ कर वे धरमे आये।

३. A °कुमारहिं । ४. A °साह्वकारहिं । ५. A °लक्ख । ६. A °मासि । ७. A सिवपुरं ।

८. A तित्थंकर ।

१४. १. A P कहिं मि । २. A विभावियं । ३. P भंभाभेरिपवहं । ४. P वायत्तं ।

घत्ता—पणवेप्पिणु पियरइं आयरिण सहसा चित्ति विर्येप्पिच ॥
जिणमायहि मायइ सुरवरहिं मायाबालु समप्पिच ॥१४॥

१०

१५

जगगुरु लेवि देव गय तेत्तहि
तहिं सीहोसणि णिहिच भडारउ
इंदज्जलणजमणेरियवरुणहं
आवाहणु करेवि पोमाइवि
अमरपंति अवितुट्टे करेप्पिणु
किसलयलण कलस उच्चाइवि
देविदहिं जिणिण्डु अहिंसिचिच
देवंगइं वत्थइं परिहाविच
भूसिच भूसणेहिं साणंदं

सुरगिरिपंडुसिलायलु जेत्तहि ।
मयणवाणसताणैणिवारउ ।
पवणघणयभवससिखरकिरणहं ।
जणभाउ सव्भावें ढोइवि ।
गोरु खीरंमयरहरि भरेप्पिणु ।
मंतु पणवसाहा संजोइवि ।
कुवलयकमलकयंबाहिं अंचिउ ।
देवें दिव्वगंधेहिं विलेविउ ।
णामकरणु विरइउं देविदं ।

५

घत्ता—जाएण जेण जसु बंधुयणु कीलासु वि अचिसकिच ॥

१०

वहिरंतरंगवइरिहिं ण जिउ अजिउ तेण सो कोकिउ ॥१५॥

१६

णमो जिणा कयंतपासणासणा
णमो कसायसोचरोयवज्जिया

णमो विसुद्ध बुद्ध सिद्धसासणा ।
णमो फणिदं चंदविदपुज्जिया ।

घत्ता—माता-पिताको आदरसे प्रणाम कर सहसा देवेन्द्रने अपने मनमें विचार किया और मायासे निर्मित कृत्रिम बालक जिनवरकी माताको दे दिया ॥१४॥

१५

विश्वगुरुको लेकर देवता वहाँ गये, जहाँ सुमेरु पर्वतपर पाण्डुक शिला थी, वहाँ कामदेव-के वाणोका सन्ताप दूर करनेवाले भट्टारक जिनवरको रख दिया । इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत्य, वरुण, पवन, धनद, शंकर, चन्द्र और सूर्यका आह्वान कर संस्तुति की और सद्भावसे यज्ञ पूरा कर अविच्छिन्न देवर्षिकि निर्मित कर, क्षीरसागरसे जल भरकर, किसलयसे आच्छादित कलशोको ऊपर कर, 'ओम् स्वाहा' कहकर, नीलकमलोंसे युक्त जलसे देवेन्द्रोने जिनेन्द्रदेवका अभिषेक किया तथा उन्हे दिव्य वस्त्र पहनाये । दिव्य गन्धोसे लेप किया, देवेन्द्रने आनन्दपूर्वक अलंकारोसे उन्हे भूषित किया, तथा उनका नामकरण संस्कार किया ।

घत्ता—जिसके उत्पन्न होनेसे जिसके बन्धुजन क्रीड़ाओंमें शंकाविहीन हो उठे, और जो वहिरंग तथा अन्तरंग शत्रुओंसे नहीं जीते जा सके इसलिए उन्हे 'अजित' कहकर पुकारा गया ॥१५॥

१६

यमके पाशको काटनेवाले हे जिन आपको नमस्कार हो, हे सिद्धबुद्ध और सिद्धशासन आप-को नमस्कार हो, कषाय समूह और रोगासे रहित आपको नमस्कार हो; नागेशों चन्द्रोंके समूहसे

५. P वियप्पियउ । ६. P समप्पियउ ।

१५. १. A P सिंहासणि । २. A संताव । ३. P अचिरुद्ध । ४. P खोर । ५. A देव ।

१६. १. A P विसुद्धबुद्धिसिद्धसासणा । २. A P फणिदं चंदविदपुज्जिया ।

	णमो अदीणकामबाणवारणा	णमो महाभवंबुरासितारणा ।
	णमो विसालमोहजालछिंदणा	णमो जिथारिरायरायणंदणा ।
५	णमो णिहिचसुण्णवाइवासणा	णमो अणेष्यभेयभावभासणा ।
	णमो गयालसालसीलभूसणा	णमो पसण्ण दिण्णरोसँदूसणा ।
	णमो विमुक्कदिण्वघोसणीसणा	णमो रिंसी तवोविहीपथासणा ।
	णमो अणंतसंतसम्मभावणा	णमोरँहंत मोक्खमग्गादावणा ।

घत्ता—इय वंदिवि अमराणंदियहि णंदणवणसुच्छायहि ॥

१० आणेपिणु उज्झहि परमजिणु इंदं अपिण्ण मावहि ॥१६॥

१७

	कालें जंतें जायउ पोढउ	जयवइ णवजोव्वणि आरूढउ ।
	का वि णारि आळिगणु मग्गइ	क वि कामाउर पायहि लग्गइ ।
	का वि कुमारी भणइ सइं परिणहि	विरहु भडारा किं तुहुं ण मुणहि ।
	एक्कसु देहि दिट्ठि सुहगारी	जा जीवमि ता दासि तुहारी ।
५	इय णारीयणु हँतु रसिल्लउ	कामासत्तउ कामगहिल्लउ ।
	रक्खहि देवदेव णियसंगे	मारिज्जंतु वराउ अणंगें ।
	पिण्ण सुखइणा घरु गंपिणु	पस्थिउ जिणकुमार पणवेपिणु ।

पूज्य आपको नमस्कार हो, अदीन काम बाणोंका ध्वंस करनेवाले आपको नमस्कार हो, है निर्भय आपको इनमस्कार, महासंसाररूपी समुद्रसे तरनेवाले आपको नमस्कार, विशाल मोहरूपी जालका छेदन करनेवाले आपको नमस्कार, जितशत्रुके पुत्र आपको नमस्कार; शून्यवादी विचार-धाराको समाप्त करनेवाले आपको नमस्कार, अनेक भेदी और भावोंका कथन करनेवाले आपको नमस्कार, आलस्यसे रहित, और शीलसे भूषित आपको नमस्कार, प्रसन्न और क्रोधरूपी दूषणको दूर करनेवाले आपको नमस्कार, दिव्यध्वनिका शब्द करनेवाले आपको नमस्कार, तपकी विधिके प्रकाशक आपको नमस्कार, अनन्त शान्त और समभाववाले आपको नमस्कार; मोक्षमार्गके अर्हन्त आपको नमस्कार ।

घत्ता—इस प्रकार वन्दनाकर, इन्द्रने, नन्दनवनके समान शोभा धारण करनेवाली अयोध्यामे आकर जिनेन्द्रदेवको उनकी माताके लिए अर्पित कर दिया ॥१६॥

१७

समय बीतनेपर वे प्रौढ़ हो गये । विश्वपति अजितनाथ नवयौवनमें स्थित हो गये । कोई नारी आळिगन मांगती है, कोई कामातुर होकर पैरोसे लगती है, कोई कुमारी कहती है कि “मुझसे विवाह करो । हे आदरणीय क्या आप विरहको नहीं समझते । एक सौभाग्यशाली दृष्टि दीजिए, मैं जीवित नहीं रहूँगी, तुम्हारी दासी हूँ । इस प्रकार रसमय कामसे आसक्त और कामसे शूहीत होते हुए, कामदेवसे मारे जाते हुए नारीजनकी हे देवदेव अपने संगसे रक्षा कीजिए” इस प्रकार पिता और इन्द्रने घर जाकर जिनकुमार अजितको प्रमाणकर निवेदन किया । किसी

३. A P^०दिण्णदोस^० । ४. A P^०संतसोमभावणा । ५. A णमो अरहंत ।

१७ १. A एक सुविट्ठि देहि सुहगारी; P एक सविट्ठि देहि सुहगारी । २. A P add after this; कुमरत्तं (P कुमरत्ति) पुणु कालु सुहासिउ, पुव्व अट्ठहलक्ख पणासिउ ।

कह व कह व मड्डई इच्छाविच
सुसिरु तंति घणु पुक्खरु वज्जइ
जहिं उवसिरंमहि णञ्चिज्जइ

कण्णासहसहिं पँहु परिणाविच ।
जहिं तुंत्तुरुणा सुसरउ गिज्जइ ।
अणवसरसविसेसु संचिज्जइ ।

१०

घत्ता—जहिं मंगलदव्वविहत्थियहिं सरधोलिरहारमणिहिं ॥
आवंतिहिं जंतिहिं सुल्लियहिं छेउ णत्थि सुररमणिहिं ॥१७॥

१८

जहिं उवमाणउ किं पि ण दिज्जइ
सव्वतित्थपरिपुण्णहिं कलसहिं
खीरतुसारतारणित्तारहिं
कोमलकिसलयछाइयवत्तहिं
मंगलघोसविलासविसेसहिं
किउ रज्जाहिसेउ सूर्येसेवहु
महिं भुंजंतहु पीणियभव्वहुं
एक्कहिं द्विणि णरणियरणिरंतरी
वसुवइवसुमइक्काकंतं

तं उच्छउ मइं किं वणिणज्जइ ।
मुणिवयणहिं णं वियलियकलुसहिं ।
जित्तविलासिणिमोत्तिचहारहिं ।
विसहरसुरणरखयरुक्खित्तहिं ।
तियसिंदहिं मिलेचि पुहईसहिं ।
बद्धु णिलाडि पट्टु तहु देवहु ।
एक्कुणवीसं लक्ख गय पुव्वहं ।
अच्छंतं अत्थाणव्वंत्तरि ।
रयणिहिं गयणभाउ जोयंतं ।

५

प्रकार बलपूर्वक इच्छा उत्पन्न करके प्रभुका एक हजार कन्याओंसे विवाह कर दिया गया जहाँ सुषिर, तन्त्री, घन और पुष्कर बाध बजाये जाते हैं और तुम्बिरके द्वारा सुसरस गान किया जाता है, जहाँ उर्वशी और रम्भाके द्वारा नृत्य किया जाता है। इस प्रकार बिना नौवें रस (शान्त) के बिना रस विशेष संचित किया जाता है।

घत्ता—जहाँ, जिनके हाथमें मंगल द्रव्य हैं और वक्षपर हारमणि हिलडुल रहे हैं ऐसी आती जाती हुई सुन्दर सुर रमणियोंका अन्त नहीं है ॥१७॥

१८

जिसका कोई भी उपमान नहीं दिया जा सकता, ऐसे उस उत्सवका मेरे द्वारा क्या वर्णन किया जा सकता है? मुनि वचनोके समान कालुष्य (पाप—कलुषता) से रहित, क्षीरकी तरह हिमकणोसे निरन्तर भरपूर, विलासिनियोंके मोतियोंके हारको जीतनेवाले, कोमल किसलयवाले, पत्तोसे आच्छादित, नागो, देवों और मनुष्यों एवं विद्याधरोके द्वारा उठाये गये, सब तीर्थोंसे परिपूर्ण कलशोंसे, मंगलघोषो और विलासोंसे विशिष्ट, देवो देवेन्द्रो और पृथ्वीशोंने, लक्ष्मीके द्वारा सेवित देवका राक्ष्याभिषेक किया और उनके ललाटपर पट्ट बांध दिया। भव्योको प्रसन्न करनेवाले और धरतीका भोग करनेवाले उन्नीस लाख पूर्वं समय बीत गया। एक दिन मनुष्य-समूहसे भरपूर दरवारके मध्य बैठे हुए धरती और लक्ष्मीके स्वामी रात्रिमे आकाश मार्गमे,

३. A मंडइ; P मडइ । ४. P सहु । ५. A P अणुवमं; T अणुवमं but the meaning given is शान्तरसरहितः ।

१८. १. A P जं मुणिं । २. P जिणिवि विलां । ३. A कमलकिसलयच्छाइयं; P कमलहिं किसलय-छाइयं । ४. A सुरसेवहु; P सियसेवहु । ५. A एक्कुणलक्खवीस गय; P तयपंचास लक्ख गय । ६. P अच्छइ जा अत्थाण ।

१० घत्ता—तां तेण वीह ससहरधवल उक्क पडंती दिट्ठिय ॥
णं णहसिरिकंठहु परियलिय चलमुत्ताहलकंठिय ॥१८॥

१९

पेच्छंतहु सा तहिं जि विलीणी ईसमणीस समासमलीणी ।
गयणुम्मुक्क उक्क गय जेही अथिर णरेसरसंपय तेही ।
लग्गमि णिरवज्जहि मुणिविज्जहि पभणइ सामि जामि पावैज्जहि ।
छणि छणि जडयणु किं हरिसिज्जहि आठ वरिसवरिसेणं जि खिज्जइ ।
५ जीय भणंतहं विहसइ तूसइ भैर पभणंतहं रुंजइ रूसइ ।
ण सहइ मरणइ केरठ णाळं वि; पहरणु धरइ फुरइ गित्थाव वि ।
कालि महाकालिहिं घरु लुक्कइ मब्जु मासु ढोवंतु ण थक्कइ ।
जोइणीहिं को किरं रक्खिज्जइ पीडिचि मोडिचि काले खव्जइ ।
खयकालहु रक्खंति ण किंकर मय मायंग तुरंगम रहवर ।
१० खयकालहु रक्खंति ण केसव चक्कवट्ठि विज्जाहर वासव ।
होइ विसूइ संपे धेप्पइ दाडिचिसाणिमूंगहिं दारिज्जइ ।
जलि जलयर थलि थलयर चहरिय ण्हि णहयर भक्खंति अवारिय ।
तो वि जीठ जीवेवइ वंछइ लोहें मोहें मोहिउ अच्छइ ।

घत्ता—चन्द्रमाके समान धवल लम्बी उल्का गिरते हुए देखी मानो आकाशरूपी लक्ष्मीकी मोतियोंको चंचल कण्ठी गिर गयी हो ॥१८॥

१९.

देखते-देखते वह उल्का वही विलीन हो गयी। भगवान् की बुद्धि उपशमको प्राप्त हुई। वह विचार करने लगे कि जिस प्रकार आकाशसे ज्युत उल्का चली गयी, उसी प्रकार नरेश्वरकी सम्पत्ति अस्थिर है। मैं निरवद्य मुनिविद्यामें लगूंगा। स्वामीने कहा कि मैं प्रब्रज्याके लिए जाता हूँ। मूर्खजन क्षण-क्षणमें क्यों प्रसन्न होता है? आयु साल-सालमें क्षीण-क्षीण होती है। 'जियो' कहने वालों पर (जीव) हंसता है और सन्तुष्ट होता है, मरौ कहने वालों पर गर्जता है और रष्ट होता है? वह मरणका नाम भी सहन नहीं करता। दुर्बल होते हुए भी प्रहरण धारण करता है, स्फुरित होता है। काली और महाकालीके घर पहुँचता है। और मद्य मांस ले जाते हुए नहीं थकता। योगिनियोंके द्वारा किसकी रक्षा की जाती है, कालके द्वारा पीडित कर और तोड़कर खा लिया जाता है। अनुचर क्षयकालसे नहीं बचा सकते। मत्तमातंग तुरंग और रथवर भी। क्षयकालसे केशव चक्रवर्ती विद्याधर इन्द्र भी रक्षा नहीं करते। विशूचिका होता है और साँपके द्वारा ग्रहण किया जाता है। दाढ़ी और सीगवाले पशुओंके द्वारा विदीर्ण कर दिया जाता है। जलमें जलचर और थलमें थलचर उसके दुश्मन हैं, आकाशमें आकाशचर जीव खा लेते हैं बिना किसी देरके। तब भी जीव जीनेकी इच्छा रखता है, और लोभ तथा मोहसे मोहित रहता है।

७. A तो ।

१९. १. P पव्वज्जहि । २. A P वरिसु वरिसेण । ३. A मरणु भणतहं; P मरु पभणतहं । ४. A किर को रक्खिज्जइ; P किं किर । ५. A संपेसिज्जइ । ६. A P add after this : दहि बुहुइ जलणेण पलिप्पइ । ७. A P मिंगहि । ८. A P add after this : विसविवक्खसत्थहिं मारिज्जइ । ९. A जीवेवउ; P जीवेवउ ।

धत्ता—सुहृं वंछइ परं^{१०} तं णठ लहइ मरणह तसइ ण चुक्कइ ॥
इच्छामयपरवसु पहु जणु जमसुहकुहरहु दुक्कइ ॥१९॥

२०

तांवाइय लोयंतिय सुरवर
चंगड चित्तंदिंसु संथवियड
छंडैहि पणइणि कंचर्णेगोरी
गइहु चरित्तकम्मसंताणइ
पभणित्त पुत्त चरंसेसु संताणइ
तहि अवसरि णहु छण्णु विसाणहिं
किड दिक्खाहिसेड तियसेसहिं
गय खग सुर णियंसिवियाजाणं
णार्वइ णविड सहेउवणामें
णिच्च करंति पणयकलहं सइ
^{१०}तडगंधव्वगीयकलहंसइ
तहि सत्तच्छयतलि सुणिसण्णड

ते भणंति जय जगगुरु सुरवर ।
णाणणिहेलणि पइं संथवियड ।
धरंहि सुवणसंबोहणगोरी ।
अजियसेणु णिहियड संताणइ ।
सयलभहीयलकयसंताणइ ।
पत्तहिं गिन्वाणेहिं विमाणिहिं ।
अंचिड पहु पसत्थतियसेसहिं ।
फलतरुणचिपं पवरुज्जाणं ।
सो सोहंतु सुद्धपरिणामें ।
जहिं सरि सरु मुयंति कलहंसइ ।
ताहं चळणि रसियइं कलहंसइ ।
जिणु जिणंतु चत्तारि वि सण्णड ।

५

१०

धत्ता—मुखकी इच्छा करता है परन्तु उसे नहीं पाता, मोतसे डरता है (त्रस्त होता है)
परन्तु चूकता नहीं, इस प्रकार इच्छा और भयके अधीन यह जीव उन यमके मुख रूपी कुहरमें
प्रवेश करता है ॥१९॥

२०

इतनेमे लौकन्तिक देववर आये । वे देववर कहते हैं कि हे विश्वगुरु आपकी जय हो,
आपने चित्तरूपी बालकको धैर्य बंधाया, और उसे ज्ञानरूपी धरमें स्थापित किया । स्वर्गकी
तरह गोरी कामिनीको आप छोड़ते हैं, और भुवनको सम्बोधित करनेवाली गोरी (सरस्वती)
को धारण करते हैं । दुश्चरित कर्मकी सन्तान परम्परा चले जाने पर उन्होंने अजितसेनको कुल-
परम्परामे स्थापित किया और कहा—हे पुत्र, तुम कुल-परम्परामे चलना, और समस्त विश्वको
निज सन्तान समान मानना । उस अवसरपर आकाश विमानोसे आच्छादित हो गया । आये
हुए असंख्य देवेन्द्रोके द्वारा दीक्षाभिषेक किया गया । प्रशस्त स्त्रियोके द्वारा अर्चा की गयी ।
विद्याधर और देव अपने-अपने शिविकायानसे चले गये । वह अपने शूद्र धारणाओंसे इस प्रकार
शोभित है, जिस प्रकार, फलसे यौवनको प्राप्त, सहेतुक नामका विशाल उद्यान जैसे झुक गया हो ।
जहाँ कलहंस स्वयं नित्य प्रणयकलह करते हैं और जहाँ नदीमे वे सुन्दर स्वर करते हैं । जहाँ नट
गन्धर्वोके गीतोंकी सुन्दरताको नष्ट करनेवाले उनके पैरोमे सुन्दर नूपुर वज रहे थे, ऐसे उद्यानमें
सप्तपर्णी वृक्षके नीचे बैठे हुए, चार संज्ञाओं (आहार, निद्रा, भय और मैथुन) को जीतते हुए,
आशा रहित परमेश जिनवर ने ।

१०. P तं पर णठ । ११. A इच्छाहय परवसु; P भिच्छामयपरवसु ।

२०. १. A P तावाइय । २. चित्तंदिंसु but gloss बालकः । ३. A छंडिहि; P छंडहि । ४. A P चंपयं ।
५. P वरहि । ६. P धरसु । ७. A णर; P णिव । ८. A तावह णमिड । ९. A P सहेउवणामें;
K सहेउवणामें but gloss and T सहेउवणामें सहेतुकनाम्नोद्यानम् । १०. A णडगंधव्वं ।
P तहि गंधव्वं ।

घत्ता—^१साहे मासे सियणवमिदिणे रोहिणिरिक्खि गयासें ॥
अवरण्हइ केसलोउ करिवि लइय दिक्ख परमेसें ॥२०॥

२१

जे धम्मेल्ल विमुक्क सुवत्ते
लेवि चित्त खीरणवणीरइ
विसयेपरीसहरिउहु ण संकिउ
णाणु चउत्थउ खणि उप्पण्णउं
५ उच्चणायरिहि वीयइ वासरि
कुसुमवरिसु सुरवड्हणिणायइ
गेहणेहबंघणु विच्छिण्णउं
पूसहु मुक्कपक्खि संपत्तइ
भावाभावालोयविर्आइउ
१० ह्य दुंदुहि णं गब्बिउ सग्गे
ते सुरणाहे मणिमयपत्ते ।
को णउ करइ भत्ति जइ णीरइ ।
नृवसहासु ते सहुं दिक्खंकिउ ।
छट्टुववासं उँउ पड्डिवण्णउं ।
किउं पारणउं वंभरायहु धरि ।
पंचच्छरियइ तहिं संजायइ ।
बारहवरिसइं तउ संचिण्णउं ।
एयारसि रोहिणिणक्खत्तइ ।
केवलणाणु तेण उप्पाइउ ।
आय देव दिसिविदिसहुं मग्गे ।

घत्ता—चत्तारि सयाइं सरासणहं सड्डइं देहु जिण्णिदहो ॥
अमरिंदे दूरासंकिएण मण्णिउ सरिसु गिरिंदहो ॥२१॥

घत्ता—माघ, माहके शुक्लपक्षकी नवमीके दिन रोहिणीनक्षत्रके अपराह्णके समय कैश
लोचकर दीक्षा ग्रहण कर ली ॥२०॥

२१

सुन्दर मुखवाले उन्होंने जो बाल छोड़े उन्हें देवेन्द्रने मणिमय पात्रमे लेकर क्षीर समुद्रके
पानीमे डाल दिया, नीरज (रजरहित निष्पाप) मुनिको भक्ति कौन नहीं करता । विषयरूपी
परीसहके शत्रुसे शंका नहीं करते हुए, एक हजार राजाओंने उनके साथ दीक्षा ग्रहण कर ली ।
एक क्षणमे चौथा ज्ञान उन्हें उत्पन्न हो गया, छठे उजवाससे उनका व्रत सम्पन्न हुआ, दूसरे दिन,
अयोध्यानगरीमे उन्होंने ब्रह्मराजाके यहाँ पारणा की । कुसुम वर्षा, देवनगाड़ोंका निनाद और
पाँच महाश्चर्य वहाँ-हुए, घरके स्नेहका बन्धन छिन्न-भिन्न हो गया, बारह वर्ष तक उन्होंने
तपश्चरण किया । पूष माहका शुक्लपक्ष आनेपर ग्यारस रोहिणी नक्षत्रमे विश्वके समस्त पदार्थों-
को प्रकाशित करनेवाला केवलज्ञान उन्हे उत्पन्न हो गया । देव दुन्दुभिर्गयां आहत हो उठी, मानो
स्वर्ग गरज उठा हो, देवता दिशा और विदिशाके रास्ते आये ।

घत्ता—जिनेन्द्रके साढे चार सौ धनुष ऊँचे शरीरको देखकर दूरसे आशांकाको प्राप्त इन्द्रने
उन्हे सुमेरु पर्वतके समान समझा ॥२१॥

११. A P माहहो मासहो ।

२१. १. A P °वत्ते । २. A P विसहपरीसह । ३. A P णिव । ४. A P वउ । ५. A तीयइ । ६. A P
°पहं । ७. P गेहि णेह । ८. A P भावाभावलोएं पविरायउ । ९. A °विसिसहं मग्गे; P °विविसि
णग्गे ।

२२

णवकणयवणु	खमभावु पुणु ।	
संशुड अणेण	अमराहिणेण ।	
जय भव भवंत	जय दाणवंत ।	
जय भयणाह	विरइयविवाह ।	
जय गौरिरमण	जय सुविसगमण ।	५
जय तिचरडहण	जय मयणमहण ।	
जय मोक्खमग्ग	णिग्गंथ णग्ग ।	
जय सोमसीस	जय तिहुवणीस ।	
जय णायहार-	भूसियसरीर ।	
सुतिलोयणास-	हर हरविलास ।	१०
सुरयंतवित्त-	पन्भाररत्त ।	
णीसरियविमल	चलवयणकमल ।	
जय वेयभासि	पसुवहपयासि ।	
णिह्दंभ	जय परमवंभ ।	
कंपावियक्क	कयधम्मचक्क ।	१५

२२

इन्द्रने उनकी स्तुति शुरू की—“आप नवस्वर्णवर्णके समान हैं, आपका क्षमाभाव पूर्ण हो चुका है, भवका अन्त करनेवाले हे शंकर आपकी जय हो। दानशील आपकी जय हो। हे भूतनाथ (सकल प्राणियोंके स्वामी), आपकी जय हो। विवाहसे विरक्त आपकी जय हो। गौरिरमण (पार्वती सरस्वतीसे रमण करनेवाले) आपकी जय हो, सुवृषगमन (धर्मका प्रवर्तन करनेवाले, बेलपर गमन करनेवाले) आपकी जय हो। त्रिपुर दहन (त्रिपुरराक्षसका दहन करनेवाले और जन्म जरा और मरणका नाश करनेवाले) आपकी जय हो, मोक्षमार्ग (मोक्षमार्ग स्वरूप, वाण छोड़नेवाले) आपकी जय हो, हे निर्ग्रन्थनग्न आपकी जय हो। हे सोमशिष्य (शान्तशिष्य, चन्द्रमस्तक) आपकी जय हो। त्रिभुवनस्वामी (त्रिलोकस्वामी, त्रिपथगा स्वामी) आपकी जय हो। हे नायधार (सन्मार्ग धारण करनेवाले और नागोंको धारण करनेवाले) आपकी जय हो। भूषित शरीर (अलंकृत शरीर, भभूतसे अलंकृत शरीर) आपकी जय हो। हे सुतिलोयनाश (त्रिलोकका नाश करनेवाले, तीन नेत्रोंको धारण करनेवाले) हे हर (शिव, धर्मधर) आपकी जय हो, हरविलास (झोड़ा रहित विशिष्ट झोड़ावाले) आपकी जय हो। सुरयंतवित्त प्राग्भाररत्त (सुरतिका अन्त करनेवाले, चरितके व्रतमे लीन रहनेवाले, सुरतिमे अन्ततक प्रयत्नशील रहनेवाले) णीसरियविमल (जिससे विशिष्ट मल अलग हो चुके हैं, ऐसे जो चार मुख रूपी कमलवाले हैं।

वेदभाषी (ज्ञानको प्रकाशित करनेवाले, वेदको प्रकाशित करनेवाले) आपकी जय हो। पसुवह पयासी (पशुवध करनेवाले, पशुओंके लिए भी पय प्रकाशक) आपकी जय हो। निर्दग्धदम्भ (दम्भको जलानेवाले, निच्छिष्ट दम्भवाले) आपकी जय हो। हे परम ब्रह्म (परमात्म-स्वरूप, ब्रह्मा, विष्णु, और महेश स्वरूप) आपकी जय हो, अर्कको कम्पित करनेवाले हे धर्मचक्र

जय चक्रपाणि
बहुसोक्खहेउ

जय दिव्वाणि ।
जय गरुलकेउ ।

घत्ता—तुह गम्भणिवासि हिरण्णमयविट्ठिइ सुट्टु पसिद्धउ ॥
सुट्टुं तेण हिरण्णगरुभं भणिउ अण्णहु एउं णिसिद्धउ ॥२२॥

२३

वंदिवि एम सुरिदें सत्तिइ	विरइउ समवसरणु जिणभत्तिइ ।
माणखंससरवरसरपरिहहिं	सैकुसुमवेळ्ळिहिं मरगयफलिहहिं ।
णिम्मियपाथारेहिं विचित्तिहिं	थूहहिं सुरयंतमणिदित्तिहिं ।
कप्पदुदुमचेईहरचिंधहिं	धूवहडेहिं सुधूर्वसुगंधहिं ।
५ णडसालाहिं णैट्टंतंडवियहिं	धामि थामि मणिमयमंडवियहिं ।
तोरणेरयणालंक्रियदौमहिं	कणयदंडवैरफणिपडिहारहिं ।
जं एहउं तहिं मोक्खहु पंथिउ	अजियणाहु सीहासणि संठिउ ।
पुर्वासासंमुट्टुं आसीणउ	किं वण्णमि तेळ्ळोक्कपाहाणउ ।

(धर्मचक्र, चक्राकार घनुषवाले) आपकी जय हो । हे चक्रपाणि (हायमे चक्रका लांछनवाले, चक्रवाले) आपकी जय हो । हे दिव्यज्ञान आपकी जय हो । बहुसोक्खहेउ (बहुत लोगोके सुखके कारण, बहुओके सुखके कारण) हे गरुडध्वज आपकी जय हो ।

घत्ता—गरुभं स्थित रहनेपर हिरण्यमय वृष्टिसे आप बहुत प्रसिद्ध हुए इसी कारण आप हिरण्यगरुभं कहे गये, दूसरेके लिए, यह नाम निषिद्ध है ॥२२॥

२३

इस प्रकार देवेन्द्रने वन्दना कर, मानस्तम्भों, सरोवरो, सरों और परिखाओं, पुष्प सहित लताओं, मरकत और स्फटिक मणियों, बनाये गये विचित्र परकोटों, सूर्यकान्तमणियोंसे दौस शूनियो, कल्पवृक्षों, चैत्यगृहों और चिह्नों, सुन्दर धूप से सुगन्धित धूपघटों, जिनमें ताण्डव नाट्य किया जा रहा है, ऐसी नाट्यशालाओं, स्थान-स्थानपर मणिमय मण्डपों तोरणों, रत्नों से अलंकृत मालाओं, स्वर्णदण्ड धारण करनेवाले श्रेष्ठ? प्रतिहारोंसे, उसने (देवेन्द्रने) शक्ति और भक्तिके साथ जब ऐसे समवशरणकी रचना की, तो मोक्षके पथिक अजितनाथ सिंहासनपर स्थित हो गये । पूर्व दिशा के सम्मुख बैठे हुए उन त्रिलोक श्रेष्ठ का मैं क्या वर्णन करूँ ?

३. A P दिव्वाणि । ४. A P गम्भु । ५. A एउ ण सिद्धउ ।

२३. १. P सुकुसुमं । २. P सुयंघसुयंघहिं । ३. A णट्टमंडवियहिं । ४. A P रयणतोरणालं । ५. A P दारहिं । ६. A P दंडवरं । ७. P जं एहउ तं सक्के पंथिउ, जगकारुणें आवेण्णु थिउ । ८. P पुर्वासासंमुट्टुं तेण आसीणउ ।

घत्ता—चउतीसातिसयविसेसधरु जिणु हरिबीढि बइठ्ठउ ॥
उययहिसिहरि उययंतु रवि छुड्डु णं लोएं दिठ्ठउ ॥२३॥

१०

२४

सन्वभद्दु तं तहु सीहासणु
णवककेलिरुक्खु कोमलदल्लु
छत्तई तिण्णि चंदसंकासई
वज्जइ हुंहुहि सुवणाणंदणु
णिग्गय दिव्वेभास सच्चुण्णय
अक्खइ जिणु सत्त वि पायालइं
अक्खइ जिणु भावणसंपत्तिव
अक्खइ जिणु अहमिद्वि चि सुरवर
अक्खइ जीवकम्मभेयंतरु
सीहसेणरायाइय गणहर

कुसुमवासु भसलावलिपोसणु ।
भामंडलु णं दिणयरभंडलु ।
चमरई हिमगोखीराभासई ।
चिरइयरिद्धिच सई सक्कंदणु ।
तं गिसुणंति अमर णर पण्णय ।
णरयलक्खदुक्खरिगविसालइं ।
वेतरजोइससग्गुप्पत्तिव ।
बहुविह णर तिरिक्ख तस थावर ।
अक्खइ पेक्खइ तिजग्गे णिरंतरु ।
जाया णउंइ तासु सम्मयधर ।

५

१०

घत्ता—सहसाई तिण्णि पण्णासियइं सयई सत्त भयवंतहं ॥
पुव्वंगधरहं तहिं सुणिवरहं जायइं संतहं दंतहं ॥२४॥

घत्ता—चौतीस अतिशय विशेषोको धारण करनेवाले जिनेन्द्र भगवान् सिंहासनपर बैठ गये मानो लोगोने उदयाचलके शिरपर उगता हुआ सूर्य शीघ्र देखा हो ॥२३॥

२४

उनका वह सर्वभद्र सिंहासन था, जिसमें कुसुमोंकी गन्ध है, और जो भ्रमरावलीका पोषण करनेवाला है, ऐसा कोमलदलवाला नव अशोकवृक्ष, भामण्डल, (मानो दिनकरका मण्डल हो) चन्द्रमाके समान तीन छत्र, चन्द्रमा और दूधकी आभाके समान चमर, भुवनको आनन्द देनेवाली दुन्दुभि वज्रती है। ऋद्धियोंको उत्पन्न करनेवाला इन्द्र स्वयं (कहता है); भगवान्की सत्यसे उन्नत दिव्यभाषा निकलती है उसे अमर नर और नाग सुनते हैं। जिन भगवान् नरककी लाखों दुःखरूपी अग्निघोंसे विशाल सात पातालों (सातों नरकों) का कथन करते हैं। जिनवर, भवनवासी देवोंकी सम्पत्तिका कथन करते हैं। व्यन्तर ज्योतिष स्वर्गोंकी उत्पत्तिका कथन करते हैं। जिन, अहमेन्द्र सुरवर बहुविध मनुष्य तिर्यंच त्रस और स्थावरका कथन करते हैं। जीव और कर्मके भेदोका कथन करते हैं। त्रिजगको निरन्तर देखते हैं और उसका कथन करते हैं। सम्यग्दर्शन धारण करनेवाले सिंहेनादि उनके नब्बे गणधर थे।

घत्ता—तीन हजार सात सौ पचास ज्ञानवान् पूर्वांगके धारी शान्त और दांत मुनिवर हुए ॥२४॥

१. A णं तहलोएं दिठ्ठउ ।

२४. १. P दिव्ववाणि । २. A सच्चुण्णय; P सच्चुण्णय; but K सच्चुण्णय and gloss सत्थोन्नता ।

३. P कम्महो यंतह । ४. A तिजयवन्तरु । ५. A P णवह; K णरवि and gloss नवतिः ।

६. A सम्मयधर ।

२५

५ षडुसयाइं इगिवीससहासइं
चउसयाइं णवसहसइं सिद्धइं
केवलणाणिहिं वीससहासइं
ताइं जि पुणु चउसयाहिं समेयइं
५ तवसमसहसइं पुणरवि उत्तइं
सग्गारोहणंसुहयणिसेणिहिं
तेत्तियइं जि पण्णासइ र्हियइं
एवं गणंतगणंतहुं आयउ
अज्जहं लक्खइं तिण्णि समासविं
१० तेत्तिय हउं सावय आहासवि
संखारहिय देव णिद्देसवि^{११}

सिक्खुयरिसिहिं विमुक्कघणासइं ।
णाणत्तयसंजुत्तइं दिट्ठइं ।
जाइं अणंगसंगणिण्णासइं ।
चिक्किरियारिद्धिहरहं णेयइं ।
चउसयाइं पण्णासइ जुत्तइं ।
संभूयइं मणपज्जवणाणिहिं ।
दिण्णुत्तरहं विवाइहिं विहियइं ।
एक्कु लक्खु भिक्खुहुं संजायउ ।
उप्परि सहसइं वीस णिवेसविं ।
पंचलक्ख अणुवइयहिं घोसविं^{१०} ।
देविहिं किहं परिमाणुं^{११} गवेसवि ।

घत्ता—इय एत्तियसंधे परियरिउ पुण्वहं विरइयपरंर्हिय ॥

^{१५}तेपण्णलक्खु महियलि भमिवि चारहवरिसहिं विरहिय ॥२५॥

२६

सिहरिहिं दरिसियदरिमयवेयहु
मासमेत्तु थिउ पडिमाजोए

पुणु अवसाणि गंपि समेयहु ।
जाणंमि णाहु विमुक्कउ जोए ।

२५

घनकी आशासे रहित इक्कीस हजार सातसौ शिक्षक मुनि थे । नौ हजार चार सौ, तीन जानोसे युक्त (अवधिज्ञानी) कहे गये हैं । कामके संगका नाश करनेवाले बीस हजार केवलज्ञानी । इतने ही अर्थात् बीस हजार और चार सौ विक्रिया ऋद्धिवालोंको जानना चाहिए । स्वर्गारोहणकी सुखद नसेनी मनःपर्यय ज्ञानी बारह हजार चार सौ पचास । पचास रहित इतने ही अर्थात् बारह हजार चारसौ उत्तर देनेवाले अनुत्तरवादी । इस प्रकार गिनते-गिनते एक लाख भिक्षु ही जाते हैं, संक्षेपमें तीन लाख बीस हजार आर्थिकाएँ और इतने ही में श्रावक कहता हूँ । मैं पाँच लाख अणुव्रतियों (श्राविकाओं) की घोषणा करता हूँ । मैं देवोका संख्यारहित निर्देश करता हूँ । देवियोंके परिमाणकी मैं क्या खोज करूँ ?

घत्ता—इस प्रकार इतने संघसे घिरे हुए, बारह वर्ष कम त्रेपन लाख पूर्वतक, दूसरोंका हित करते हुए उन्होने धरतीपर परिभ्रमण किया ॥२५॥

२६

जिसको घाटियोंमें हरिणोंका वेग दिखाई देता है, ऐसे सम्मेदशिखरपर वह अन्तमे गये । एक-माह तक प्रतिमाद्योगमे स्थित रहे । मैं जानता हूँ फिर स्वामी योगसे विमुक्त हो गये । इस

२५. १. A P^० संजुत्तइं । २. P^० उत्तइं । ३. A P सुहणित्सेणिहिं, but T सुहयं सुखदं । ४. P संभूयहिं ।

५. P व्हियइं । ६. A P एम । ७. A P समासमि । ८. A P णिवेसमि । ९. A P सावइ आहासमि ।

१०. A P घोसमि । ११. A P णिद्देसमि । १२. A P कहिं । १३. A P गवेसमि । १४. A P

विहरइ परहिय । १५. A तेवण्ण लक्ख; P सो एक्कु लक्खु ।

२६. १. A दावियदरिसरिवेयहु; P दरिसियदरिसरिवेयहु ।

एकपिंड बाहत्तरिलखइ	जीवेपिणु पुन्वहं कथैसोक्खइ ।	
भासि चइत्ति पक्खि ससिजोणइ	पंचमिदिवसि जाइ पुन्वणइ ।	
रोहिणिरिक्खि कम्मसंधारणु	दंडेकवाडुरुजगजगपूरणु ।	५
अंतिमहाणु क्षत्ति विरएपिणु	तिणिण वि तणुबंधणइ सुएपिणु ।	
भुवणैत्तयसिहरहु सुहठाणहु	अजिउ भडारउ गउ णिन्वाणहु ।	
कय णिन्वाणपुज्ज सुरसारहिं	तणु संपूइउ अग्गिकुमारहिं ।	
गउ सुरवइ जिणगुणरंजियमणु	अवरु वि जहिं आयउ तहिं गउ जणु ।	

घत्ता—जिह् रिसहै भरहहु वज्जरिउं तिह् हउं तुह् सृयभाणण ॥ १०
आहासमि सयररायचरिउ कुंदपुष्पदंताणण ॥२६॥

इय महापुराणे तिसहिसहापुरिसगुणाळंकारे महाकइपुष्पक्यंठविरहए महामन्वभरहाणु-
मणिणए महाकव्वे अजियणिन्वाणगमणं णाम अट्ठीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥३८॥

॥ अजियचरियं समत्तं ॥

प्रकार बहत्तर लाख पूर्व वर्ष सुख पूर्वक जोकर चरमशरीरी, चैत्रशुक्ल पंचमीके दिन पूर्वाह्णमें (जब कि रोहिणी नक्षत्र था) कर्मका संहारक दण्डप्रतर आदि लोकपूरण-समुद्घात क्रिया कर तथा अन्तिम ध्यान कर तीन शरीर वन्धनो (औदारिक तैत्रस और कामंण) को छोड़कर, आदरणीय अजितनाथ भुवनत्रयके शिखर शुभस्थान निर्वाणके लिए चले गये। सुरश्रेष्ठोंने उनकी निर्वाण-पूजा की। अग्निकुमार देवोंने उनके शरीरका संस्कार किया। इन गुणोंसे रंजित मन होनेवाला इन्द्र चला गया। और भी लोग जहाँसे आये थे वहाँ चले गये।

घत्ता—कुन्द पुष्पके समान मुखवाले हे श्रेणिक, सगर राजाका जैसा चरित ऋषभ नाथने भरतसे कहा था वैसा मैं तुमसे कहता हूँ ॥२६॥

इस प्रकार त्रैसठ महापुरुषोंके गुणाळंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित पूर्व महामन्व भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका अट्ठीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥३८॥

२. AP जाणिवि । ३. A P कयसंखइ । ४. A दंडु कवाड पयरजयपूरणु; P दंडु कवाडु पयइ जयपूरणु । ५. A भुवणत्तय; P भुवणत्तइ । ६. A P संकारिउ । ७. A P T सियभाणण । ८. A P omit अजियचरियं समत्तं ।

संधि ३९

गुणगणहरु भासइ गणहरु बहुरसमावणिरंतरु ॥
मगहाहिव गिसुणि महाहिव सयरणरिदकहंतरु ॥ ध्रु वकं ॥

१

इह जंबुदीवि खरयरकराहि
सीयहि दाहिणैयलि संणिसण्णु
णं धरणिइ दाविउ सुहपएसु
मार्यदणवदलुककंठियाउ
कमलायर धरियसुपुंडरीय
उववणइं विविहवच्छंकियाइं

भंदरगिरिपुण्विल्लइ विदेहि ।
उहामगामसीमापण्णु ।
वच्छावइ णामे अत्थि देसु ।
जहिं कलयलंति कलैयंठियाउ ।
णं णरवइ धरियसुपुंडरीय ।
गोउलइं धवलवच्छंकियाइं ।

५

सन्धि ३९

गुणोंके समूहको धारण करनेवाले गौतम गणधर कहते हैं—“हे महाधिप मगधराज, अनेक रसभावोंसे परिपूर्ण राजा सगरका कथान्तर सुनो ।”

१

सूर्यके तेजसे युक्त इस जम्बूद्वीपमे मन्दराचलके पूर्व विदेहमें सीता नदीके दक्षिण तटपर स्थित वत्सावती नामका देश है । उत्कट ग्रामों और सीमाओंसे परिपूर्ण जो मानो धरतीके द्वारा सुप्रदेशके रूपमें दिखाया गया हो । जहाँ आम्रवृक्षोंके नवदलोंके लिए उत्कण्ठित कोयलें कलकल ध्वनि करती हैं, कमलोंको धारण करनेवाले सरोवर ऐसे हैं मानो राजाने सुपुण्डरीक (छत्र और कमल) धारण कर रखा हो । जहाँ विविध वृक्षोंसे अंकित उपवन हैं, और धवल बछड़ोंसे अंकित

Mss. A and P have the following stanza at the beginning of this Sandhi :—

शशधरविम्बालकान्ति (त्वि ?) स्तेजस्तपनाङ्गमीरतामुदवेः ।
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥१॥

This stanza is also found at the beginning of Sandhi XVIII of this Work in certain Mss. of the Mahāpurāna. For details see Introduction to Vol. I, pp. xvi-xxvii and also foot-note on page 295 of the same Vol K does not give it there or here.

१. १. A P महाधिप । २. A उत्तरयलि; K उत्तरयलि but corrects it to दाहिणयलि । ३. A कलियंठियाउ ।

जहि मंडव दक्खोहल वहंति घरि घरि करिसंगियहं हल वहंति ।

जहि गिच्चु जि सुहं सुहिक्खु खेवं कामिणिउ दंति कामुयहं खेवं । १०

घत्ता—विन्ध्यसुर तर्हि पुहईपुरु पविमलमणिमयमहियैल ॥

सरयामलु चंदयरुज्जलु 'घरचूलाहयणहयल' ॥१॥

२

तर्हि गिवसइ सिरिजयसेणु राउ

रइसेणु पुत्तु पररमणिअवरु

ते विण्णि वि जण पञ्चक्खकाम

ते विण्णि वि जण ससिसूरधाम

ते विण्णि वि जण परहियविचेर्ये

गुरुदेवमित्तचंधवविणीउ

करपल्लवग्गताडियउराइं

अप्पल ण मुणंति ण घंरु दुवारु

जिणसेणापणइणिजगियराउ ।

उप्पण्णु ताहं दिहिसेणु अवरु ।

ते विण्णि वि जण संपेणकाम ।

ते विण्णि वि जण जयलच्छिधाम ।

ते विण्णि वि जण जणणहु विहेय । ५

रइसेणु णवर काडेण णीउ ।

पडियइं पियरइं सोयाउराइं ।

सिसुमोहणीउ मुणिहिं वि दुवारु ।

घत्ता—गिवलंतहं विहिं वि रडंतहं उवसमभाउप्पायणु ॥

कयसंतिहिं दिण्णंसं मंतिहिं जिणवरचर्येणु रसायणु ॥२॥ १०

गोकुल हैं। जहाँ मण्डप द्राक्षाफलों (अंगूरों) को धारण करते हैं, जहाँ घर-घरमे किसानोंके हल चलते हैं। जहाँ क्षेत्र नित्य सुन्दर और सुसंरक्ष्य रहते हैं, जहाँ कामिनियाँ कामुकोंको आलिंगन देती हैं।

घत्ता—उसमे देवोंको विस्मित करनेवाला और स्वच्छ मणिमय महीतलवाला पृथ्वीपुर नामका नगर है, जो शरदकी तरह निर्मल, चन्द्रकिरणोंकी तरह उज्ज्वल और अपने गृहशिखरोसे आकाशकी आहूत करनेवाला है ॥१॥

२

उसमे श्री जितसेन नामका, अपनी प्रणयिनी जितसेनाके लिए राग उत्पन्न करनेवाला राजा निवास करता था। उसका परस्त्रियोसे दूर रहनेवाला रतिसेन नामका पुत्र हुआ, एक और दूसरा घृतिसेन नामका। वे दोनों ही जन जैसे साक्षात् कामदेव थे। वे दोनों ही पूर्ण कामनावाले थे। वे दोनों ही सूर्य और चन्द्रमाके आश्रय थे। वे दोनों ही विजयलक्ष्मीके घर थे। वे दोनों ही दूसरोंके कल्याणका विवेक रखते थे, वे दोनों ही लोगोंके प्रति विनयशील थे। गुरुदेव, मित्रों और बन्धुजनोंके लिए विनीत रतिसेनको कालने उठा लिया। माता-पिता, करपल्लवोंके अग्रभागसे (हथेलियोंसे) अपने उर पीटते हुए शोकसे व्याकुल होकर मूर्च्छित हो गये। वे स्वयंको, घर और द्वारको कुछ भी नहीं समझते। पुत्रका स्नेह मुनियोंके लिए भी दुर्निवार होता है।

घत्ता—शान्ति करनेवाले मन्त्रियोंने मूर्च्छित और पड़े हुए तथा रोते हुए उन दोनोंको जिनवर-वचनरूपी रसायन दिया ॥२॥

४. A P दक्खारसु । ५ A करसणियहं । ६. A P सुत्य । ७. A P सुमिवसु । ८. A P विमियं ।

९. A P महियलु । १०. चूडाहयं । ११. A P णहुयलु ।

२. १. A संपुणकाम । २. A विहेय but gloss विवेकः । ३. AP घर दुवारु । ४. A P कुलमंतिहिं ।

५. A वयणरसायणु ।

	कुलकंचुईर्हि संबोहियाइं	कहं कह व ताइं उम्मोहियाइं ।
	जणमयंगलमूलालाणरब्जु	तक्खणि दिहिसेणहु देवि रब्जु ।
	जयसेणं णासियरइरुएण	सामंतं समचं महारुएण ।
	णियदेविइ सहं रयंविहुणएहिं	अण्णेहिं मि बहुणरमिहुणएहिं ।
५	दुल्लयदुण्णयदुज्जसहरासु	अत्रे लइयच पणविवि जसहरासु ।
	परिसेसेप्पिणु णीसेसु संगु	तउ चिण्णं तेहिं दुवालसंगु ।
	बोलीणइ गुरुसेवाइ कालि	पच्छा संपत्तइ मरणकालि ।
	मणि तिहुयणलच्छीवइ सरेवि	वरपरंगणचरियइं पइसरेवि ।
	मुणिवरहिं मयणघणमारुएहिं	दोहिं मि जयसेणमहारुएहिं ।

१० घत्ता—दुरियल्लइं तिण्णि वि सल्लइं हिययहु कड्ढिवि घित्तइं ।
किउ अणसणु दूसहु भीसणु पंच वि करणइं जिउत्तइं ॥३॥

	जयसेणु मरेवि महाबलक्खु	संजायउ सुरवरु जसवलक्खु ।
	वेउव्विउ जहिं णीरोउ काउ	बावीसजलहिसमपरिमियाउ ।
	इयरु वि सुहकम्मं तहिं जि धामि	सोलहमइ अच्चुयकप्पणामि ।
	तणु सुइवि महारुंउ पवरतेउ	संभूयउ सिरिमणिकेउ देउ ।

३

कुलके प्रतिहारियों द्वारा सम्बोधित होनेपर किसी प्रकार बड़ी कठिनाईसे उनका मोह दूर हुआ। उसने शोच घृतिषेणकी जनरूपी मदगजोको बांधनेके लिए रस्तीके समान राज्य देकर रतिके आकर्षणको नष्ट करनेवाले जयसेन नामक सामन्त महास्त और अपनी देवीके साथ, तथा रागकी नष्ट करनेवाले, दूसरे नर जोड़ोंके साथ दुर्जय, दुर्नय और अपयशका हरण करनेवाले यशोधर मुनिको प्रणाम कर व्रत ग्रहण कर लिये। समस्त परिग्रहको छोड़कर उन दोनोने दुष्कालका साथी तप ग्रहण कर लिया। गुरुकी सेवा आदिमे समय बीतनेपर और बादमें मरणकाल आने पर अपने मनमे त्रिभुवन-लक्ष्मीपति जिनेन्द्रकी याद कर, उत्तम और श्रेष्ठ चर्यामे प्रवेश करते हुए, कामरूपी मेघके लिए पवनके समान उन दोनों—जयसेन और महास्त मुनिवरोने—

घत्ता—अपने हृदयसे पापमयी तीनों शक्तियोंको उखाड़कर फेंक दिया। उन्होंने दुःसह और भीषण अनशन किया और पांचों इन्द्रियोंको जीत लिया ॥३॥

४

जयसेन मरकर महाबल नामका यशसे उज्ज्वल देववर हुआ। जहाँ उसका नीरोग वैक्रियिक शरीर था और बाईस सागर प्रमाण आयु थी। दूसरा भी (महास्त) शरीर छोड़कर अच्युतकल्प नामक सोलहवें स्वर्गमे प्रवर तेजस्वी श्री मणिकेतु नामका देव हुआ। सज्जन लोग अपने स्नेहका बन्ध नहीं छोड़ते। उन दोनोंने एक दूसरेको प्रतिबोधित करनेका यह वचन दिया

३. १. P कह व कहव । २. A णं मयगलयूणां ; P णं मयगलाधूलां । ३. A P रइविहुणएहिं । ४. A दुक्कियदुण्णयदुज्जसहरासु ; P दुक्कियदुण्णयदुज्जयहरासु । ५. A P वउ । ६. A P परपरणं ।

४. १. A P धामि । २. A महावइ ।

ण भुयति सयणं ससणेह्वंशु
जो पावइ अग्गइ भणुयजन्मु
विण्णि वि ते दिवि गिवसंति जांव
कोसलपुरि राड समुहविजड
विजया णामें तहु अत्थि धरिणि
सो तियसु सग्गसिहराड ल्हंसिड

किड दोहिं मि पडिबोहणणिंशु ।
तहु असरु समासइ परमंघम्मु ।
कालेण महाबलु डल्लिच तां ।
जसु धरि धोसिजइ णिच्चविजड ।
परमेसरि णाई अणंगधरणि ।
तहिं केरइ गम्भणिवासि वसिड ।

५

१०

घत्ता—हरिकंधर बहुलकखणधर लणससहरमंडलमुहु ॥

कणयच्छवि णावइ णवरवि जाणियच जणणिइ तणुरुहु ॥४॥

५

संगामसमुहरउदमयरु
णं केसरि दरदोसंतदाहु
कालेण गलंतं जाड पोहु
तणु तासु जोहकरभूसणाहं
मंदरभित्ति व उत्तगिमाइ
तहु णिवकुमारकीलीइ ललियं
तेसिथ जि महामंडलवइत्तु
गय जइयहुं तइयहुं सुकियसार

कोक्खिड कुमारु ताएण सयर ।
दुन्वारवेरिसंगामसोहु ।
पलयक्कु व विण्वपयंवारुहु ।
चउरद्धसयाइं सरासणाहं ।
लज्जइ गौरी सेविथ रमाइ ।
पुव्वइं अट्टारहलक्ख गलिय ।
पालंतहु पत्थिवपय पयत्तु ।
उप्पण्णड चक्कु फुरंतधार ।

५

कि जो पहले मनुष्य-जन्म प्राप्त करेगा, देव उसे परमधर्मका कथन करेगा। इस प्रकार जब वे दोनो स्वर्गमे निवास कर रहे थे तब समयके साथ महाबल देव स्वर्गसे च्युत हुआ। कोशलपुरमें राजा समुद्रविजय था। उसके घरमे नित्य विजय घोषित की जाती थी, उसकी विजया नामकी गृहिणी थी। वह परमेश्वरी जैसे कामदेवकी भूमि थी। वह देव स्वर्गशिखरसे च्युत होकर, उसके गर्भनिवासमे धारक बस गया।

घत्ता—सिहके समान कन्धोवाले, अनेक लक्षणोके धारक और पूर्णिमाके चन्द्रके समान मुखवाले उस बालकको माताने जन्म दिया, जैसे स्वर्णच्छविने नवसूर्यको जन्म दिया हो ॥४॥

५

संग्रामरूपी समुद्रके भयंकर मगर उस कुमारको पिताने मगर कहकर पुकारा। दुर्वार वैरियोके संग्राममे समर्थ वह मानो सिह था कि जिसकी थोड़ी-थोड़ी डाढ़ें दिखाई दे रही थी। समय बीतनेपर वह प्रौढ़ हो गया। वह प्रलय-सूर्यके समान अपने तीव्र प्रतापसे प्रसिद्ध था। उसका शरीर थोड़ाओंके हाथोके आभूषण स्वरूप साढ़े चार सौ धनुषके बराबर था। ऊंचाईमे वह मन्दराचलकी भित्तके समान था। लक्ष्मी और सरस्वतीसे सेवित वह शोभित था। पत्नीकी सुन्दर श्रीहामे अठारह लाख पूर्व वर्ष बीत गये, और जब इतने ही वर्ष महामण्डलाध्यक्षके रूपमे पार्थिवप्रजाका प्रयत्नपूर्वक पालन करते हुए हो गये तो उसे पुण्यका सारभूत चमकती धारवाला

३. A सयणि । ४. A P पवड घम्मु ।

५. १. A पयायक्कु । २. P उत्तगिमाइ । ३. P कुमारलीलाइ ।

असि चर्मं छत्तु गह्वरैः पुरोह
 १० वरजुवद् थर्वद् वरकुलिसदंढु
 चोद्दह^१ रयणं महियलु छखंढु
 दुई^२ पोम संख दुइ अवर^३ दिवु
 किरि हरि कागणि मणि सेण्णणाहु ।
 परपहरणगणिद्दहल्लणचंढु ।
 महाकालु कालु पिगलु^४ पर्यंढु ।
 माणव इय णव णिहि दंति सब्बु ।
 घत्ता—महि हिंडिवि समरु^५ समोड्डिवि दुल्लण^६ दुट्ट दुसाहिय ॥
 जलथलवद् पाहयर णरवद् देव वि तेण पसाहिय ॥५॥

६

वरवसुमद् असिणा वसि करेवि
 आवेप्पिणु कउ उव्वह्नि णिवासु
 जिंवे भरहहु तिंवे सयरहु जि होइ
 णामेण चउम्महु देउ संतु
 ५ आसीणु भडारउ णिलइ जेत्यु
 किंकरकरवालकरालधारु
 गउ वंदणहंतिह सयरु^१ राउ
 अबलोइवे जिणपयणिहियचित्तु
 भो देव महावउ णित्तिवयप
 णीसेसणरेसहं कप्पु लेवि ।
 एत्तिय संपय मुव्वणयलि कासु ।
 तं वण्णहुं ण वि सक्कंति जोइ ।
 उप्पण्णउं तहु केवलु अणंतु ।
 संजायउ देवागमणु तेत्थु ।
 अण्णहिं दिणि सुंदरु सपरिवारु ।
 अवयरिउ तहिं जि मणिकेउ देउ ।
 बोल्लाविउ तियसं परममित्तु ।
 ओलक्खहि किं सइ णाहिं वप्प ।

चक्ररत्न प्राप्त हुआ। असि, चर्म, छत्र, गृहपति, पुरोहित, हाथी, अश्व, काकणीमणि, सेनापति, वरकामिनी, स्वपति, शत्रुओंके शास्त्रसमूहको नष्ट करनेवाला श्रेष्ठ वज्रदण्ड, ये चौदह रत्न और छह खण्ड धरती महाकाल, काल, पिगल, पद्म, महापद्म, प्रचण्ड दो और शंख (शख, महाशंख), और मानव, ये नौ निधियाँ उसको सब कुछ देती थी।

घत्ता—धरतीपर घूमकर युद्ध कर उसने दुःसाध्य दुष्ट, दुर्जन, जलस्थलपति, विद्याधर, राजा और देव सभीको सिद्ध कर लिया ॥५॥

६

अपनी श्रेष्ठ तलवारसे श्रेष्ठ धरतीको जीतकर, समस्त राजाजोसे कर लेकर और आकर उसने अयोध्यामें निवास किया। भुवनतलमे इतनी सम्पत्ति किसकी है? जिस प्रकार भरतके पास सम्पत्ति थी, उतनी ही सगर चक्रवर्तीकी थी, योगी भी उसका वर्णन नहीं कर सकता। चतुर्मुख नामक एक मुनिको अनन्त केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। वह आदरणीय मुनि जिस स्थानपर विराजमान थे, वहाँ देवोंका आगमन हुआ। दूसरे दिन अनुचर और भयंकर तलवार धारण करनेवाला वह राजा सगर अपने परिवारके साथ वन्दनात्मिकके लिए गया। वहीपर मणि-केतु देव भी आया। उस देवने जिनके चरणोमे अपना मन लगाये हुए अपने मित्र सगरको देखा। उसने कहा—“हे विकल्पहीन महाबल देव! हे सुभट, क्या तुम मुझे नहीं पहचानते। पृथ्वीपुरमें

४. A P चम्पु । ५. A P गिह्वद । ६. A P हरि करि । ७. K omits थवद् । ८. A P दढं ।

९. A णिहहणचंढु, P णिव्यहणचंढु । १०. A चउदह । ११. A P पचंढु । १२. A तहु पोम संख णेसणु सव्वु । १३. P पवरअव्वु । १४. A P सुमडिवि । १५. P दुउज्जम ।

६. १. A P जिम । २. A P तिम । ३. P वंदणभत्तिह । ४. A P सयरराउ । ५. P अबलोयउ ।

पुहईपुरि णरवरंसंशुएहिं
चिरु चिण्णस तउ जइणिदमग्गि

होइवि जयसेणमहारुएहिं ।
जाया विण्णि वि सोलहमि सग्गि ।

१०

घत्ता—तुहुं सुहमइ हूयच णरवइ हचं ओहँच्छविं सुरवरु ॥
जं जंपिच आसि वियप्पिचं तं हियउल्लइ संभरु ॥६॥

७

जे गय ते मयमउलविचयेणयण
संदण ण मुणंति विइण्णु गेहु
रायहं हियवइ घम्मु जि ण थाइ
अंतरि छत्तइ छत्तहर देतु
अंगइ लच्छिहि दोसंकियाइं
रायउल्लइं पहु पइं जेरिसाईं
णिवडंति णरइ घोरंघचारि
किं रक्खइ तेरउ विजयचक्कु
तहु वयणहु तेण ण दिण्णु कण्णु
पुणु अण्णहिं वासरि रयणकेउ
सुणिवरु होइवि कयधम्मसवणि
तं पैच्छिचि पुरु जंपइ असेसु

जे हरिवर ते चल वंकवयण ।
किंकर णियकज्जहिं देति देहु ।
चामरपवणं उडुंवि जाइ ।
तं तइ वि वप्प पेक्खइ कयंतु ।
मुजंतइं केवै ण संकियाइं ।
पंचिदियसुहविसरसवसाइं ।
ण विरप्पइ किं तुहुं भोयभारि ।
सिरि पडइ भयंकरु कालचक्कु ।
गउ सुरवरु सुरहरु मणि विसण्णु ।
णियरूबोहामियमयरकेउ ।
आइउ थिच सयरजिणिदभवणि ।
एहंउं ण खुवु पावइ सुरेसु ।

५

१०

लोगोंके द्वारा संस्तुत जयसेन और महारत होते हुए, प्राचीन समयमें हम दोनोंने जैनमार्गका तप ग्रहण किया था, और हम सोलहवें स्वर्गमें देव उत्पन्न हुए थे ।

घत्ता—तुम, अब शुभमतिवाले राजा हुए हो, और मैं सुरवर ही हूँ । जो विचार तुमने कहा था, उसे अब याद करो ॥६॥

७

जो गज है वे आँखें बन्द कर मर जाते हैं, जो अश्व है वे चंचल और वक्रनेत्र हैं । रथ कुछ भी विचार नहीं करते । स्नेह विदोष (नष्ट) हो जाता है । अनुचर अपने स्वार्थसे शरीर देते हैं । राजाओंके हृदयमें धर्म नहीं ठहरता है, चमरके पवनसे वह उड़ जाता है । छत्रघर भीतर छत्र लगा देते हैं परन्तु उसे (जीवको) कृतान्त वहाँ देख लेता है । लक्ष्मीके दोषोंसे अकित अंगोंका (सप्ताग राज्य) का भोग करते हुए राजा लोग आशंकित क्यों नहीं होते ? पाँच इन्द्रियोंके सुख रूपी विषरसके वशीभूत होकर हे प्रभु, तुम्हारे जैसे राजकुल, घोर अन्धकारपूर्ण नरकमें गिरते हैं । तुम भोगके भारसे विरक्त क्यों नहीं होते ? क्या तेरा विजयचक्र तेरी रक्षा कर लेगा ? सिरपर भयंकर कालचक्र पड़ेगा । परन्तु राजाने उसके वचनोंपर कान नहीं दिया । सुरवर अपने मनमें दुखी होकर स्वर्ग चला गया । एक दूसरे दिन, अपने रूपसे कामदेवको तिरस्कृत करनेवाला मणिकेतु देव मुनिवर होकर, जिसमें धर्मश्रवण किया जाता है ऐसे जिन-मन्दिरमें सगर आकर बैठ गया । उसे देखकर, सारे नगरने कहा कि ऐसा रूप इन्द्र भी नहीं पा सकता ।

६. A P णरवइ । ७. A P सो अच्छमि ।

७. १. P मउलेवि णयण । २. P वियण्णु । ३. A के णउ संकियाइं; P केम ण संकियाइं । ४. P omits पुणु । ५. A P आइवि । ६. P एहउ णर ण अक्खुयसुरेसु ।

घत्ता—जणनेतई जहिं जि णिहितई तहिं जि णिरारिउ लमाई ॥
बुद्धयंदहु तासु मुणिदहु को वण्णइ तणुअंगई ॥७॥

- ५
- तं वंदिवि चित्तइ सयरु एंव
एहउ सुहूडु णउ वम्महासु
मुंणि किं तुह किर वेरेंग्गु थियउ
तं सुणिवि भणइ माथारिसिदु
भरियउ पुणु रिउउ होइ राय
तणु धणु परियणु सिविणयसमाणु
किज्जइ तरुणत्तणि तवपवित्ति
जर पसरइ विहडइ देहवंधु
पवभट्टचेट्ठु गयरमणराउ
- १०
- डहु थेरु सो वि किं णिवियारि
जीविज्जइ जहिं सो णिययदेसु
- किं एहा होंति ण होंति देव ।
पुणु चउइ णिवइ दरुचियेसियासु ।
भणु किं जोव्वणु वणजोगु कियउ ।
झिज्जंतु ण पेक्खहि पुण्णिमिदु ।
सासय किं चित्तिह अउभछाय ।
तसथावरजीवहुं अभयदाणु ।
बुद्धत्तणि पुणु परियलइ सत्ति ।
लियणजुयलुल्लउ होइ अंधु ।
तरुणिहिं कोकिज्जइ हसिचि ताउ ।
दइवेण जि पंडउ वंभयारि ।
तं भोयणु जं मुणिसुत्तसेसु ।

घत्ता—किं भव्वे पंडियगव्वे लोउ असेसु णडिज्जइ ॥

विउसत्तणु तं सुकइत्तणु जेण ण णरइ पडिज्जइ ॥८॥

घत्ता—लोगोके नेत्र जहाँ भी पड़ते वे वही लगकर रह जाते। बुध-चन्द्र उस मुनीन्द्रके शरीरके अंगोका वर्णन कौन कर सकता है ? ॥७॥

उसकी वन्दना करके राजा सगर अपने मनमे विचार करता है, हो न हो ये क्या देव हैं ? यह मनुष्यका स्वरूप नहीं है। अपना थोडा-सा मुँह खोलते हुए राजाते कहा, "हे मुनि, आप विरक्त क्यों हो गये ? बताइए आपने-अपने यौवनको, वनके योग्य क्यों बनाया ?" यह सुनकर वह कपटी मुनि बोला, "क्या तुम पूर्णिमाके चन्द्रको नष्ट होते हुए नहीं देखते ? पहले चन्द्रमा भर जाता है, फिर खाली होता है, हे राजा, क्या तुम बादलोको छायाको शाश्वत समझते हो ? तन, धन, और परिजन स्वप्नके समान हैं ? इसलिए त्रस और स्थावर जीवोके लिए, अभयदान एवं यौवनमे तपकी प्रवृत्ति करनी चाहिए। बुढ़ापेमे तो फिर शरीरकी शक्ति नष्ट हो जाती है। बुढ़ापा फैलने लगता है। शरीरके बंध ढीले पड़ जाते हैं, दोनो नेत्रयुगल अन्धे हो जाते हैं। चेष्टाओंसे भ्रष्ट और रमणरागसे रहित बूढा आदमी युवतियोके द्वारा हँसकर तात पुकारा जाता है। बूढा आदमी दग्ध हो जाता है (उसकी इन्द्रियचेतना नष्ट हो जाती है) क्या वह भी निवृत्ति करनेवाला हो सकता है ? नपुंसकको तो दैवने ही ब्रह्मचारी बना दिया ? वही जीवित रहना चाहिए जो अपना देश है, भोजन वही है जो मुनिके आहारसे बचा हो ।

घत्ता—बुद्धिके गर्ववाले भव्यके द्वारा समस्त लोक क्यों प्रतारित किया जाता है ? पाण्डित्य और सुकवित्व वही है कि जिससे मनुष्य नरकमें नहीं पड़ता ॥८॥

८. १. A सखउ; P सखव । २. A P दरविहसियासु । ३. A मुणि, P मुणे । ४. P वहरग्गु । ५. A वणजोगु; P वणिजोगु । ६. A P सुदुइ पडुत्तणु ।

सो सूरज जो इंदियई जिणइ
सो इट्ठु बंधु जो धम्मू कहइ
ते कर जे पडिलिहणं धरंति
तं सिरु जं जिणपयजुयलि णवइ
ते चक्खु ण जे तियमइ णियंति
सा जीह ण जा रसलोल लुलइ
सुंकार वेंतु णिंदइ दुगंधु
तं अंगु ण जं कुसयणहु तसइ
ते चारु केस संजमघरेहिं
संकयत्थइं जईकरहइं ताई
उब्बाउ कामाउरु सीलरहिउ

सो सुद्धवुद्धि जा तच्चु मुणइ ।
तं तणुवल्लु जं वयभारु वहइ ।
ते कम जे मलयुं संचरंति ।
तं तौडु णै जं विप्पियेइं चवइ ।
ते सवण ण जे रइसुइ सुणंति ।
तं हियउ ण जं परमत्थि चलइ ।
तं णंक्खं ण जं इच्छइ सुयंधु ।
सो भित्तु समवं जो रणिण वसइ ।
उप्पाडियि जे मुणिवरकरेहिं ।
उग्गाइं विलासिणियणि ण जाईं ।
तं जीविउ जं चारित्तसहिउ ।

धत्ता—उब्बायमणु जं गुणभायणु तं माणुसु सुकुलीणउ ॥

तं जोवणु हउं मण्णमिं घणु जं तवचरणं खीणउ ॥९॥

आवेहि जाहुं लइ तुहुं वि दिक्ख
इय कहइ जइ वि सो देवसाहु

१०

सिक्खहि गयमयरय भोक्खसिक्ख ।
पडिबुद्धउ तो वि ण पुहविणाहु ।

९

शूर वही है जो इन्द्रियोंको जीतता है, वही सद्बुद्धिवाला है जो तत्त्वका विचार करता है। वही इष्ट वस्तु है कि जो धर्मका कथन करता है। वही शरीरबल है जो व्रतभारको धारण करता है। वे ही हाथ हैं जो मयूरपिच्छ धारण करते हैं। वे ही चरण हैं जो मुद्रतासे चलते हैं, वही सिर हैं जो जिनपद युगलमे नमन करते हैं, वही मुख है जो दुरा नहीं बोलता। वे ही आँखें हैं जो स्त्रियोंको नहीं देखती। वे ही कान हैं जो रतिमुखको नहीं सुनते। जीभ वही है जो रसको लम्पटतामे नहीं पड़ती है। हृदय वही है जो परमार्थसे नहीं चलता। नाक वही है जो सुंकार करते हुए न तो दुर्गंधकी निन्दा करती है और न सुगन्धकी इच्छा करती है? शरीर वह है जो कुसा पर सोनेसे पीड़ित नहीं होता। वही मित्र है जो जगलमे साथ रहता है। सुन्दर केश वही हैं, जो संयमधारण करनेवाले मुनिवरोके द्वारा उखाड़े जाते हैं। मुनिके वे ही हाथ कृतार्थ हैं जो विलासिनियोंके स्तनोसे नहीं लगे। कामातुर और शील रहित जीवनमे आग लगे। वही जीवन है जो चारिष्यसहित हो।

धत्ता—जो सरलमन और गुणोंका भाजन है, वही मनुष्य कुलीन है। उसी जीवनको मैं मानता हूँ जो तपश्चरणके द्वारा क्षीण है ॥९॥

१०

“आओ, चलें, तुम भी दीक्षा ले लो। मदरजसे रहित मोक्षको शिक्षा सोख लो।” यद्यपि

९. १. A सो सुद्धवुद्धि जो । २. A P पडिलेहउ वरंति । ३. A जं ण । ४. A P विप्पियउ । ५. A P णवकु । ६. A सुगंधु । ७. P सकइत्थइं । ८. A P जण । ९. A उब्बायमणु । १०. A P मण्णमि । १०. १. A पुहविणाहु ।

- ४ लइ अँजि वि ण लहइ काललद्धि जाणिवि देवें^३ कय गमणसिद्धि ।
गळ चकवट्टि सणिहेलणासु णं ईदिंदिरु कमलिणिवणासु ।
- ५ अत्थाणि परिट्टिळ छुडु जि जाम सहसाइं सट्टि तणुरुहहं ताम ।
आयाइं भणंतइं जीयें देव पायडहुं तुहारी पायसेव ।
दे देहि तुरिळ आपसु किं पि णोसरहुं महारिच रणि पयं पि ।
मंदर महिहर जेवैडु जं पि लीलाइ समाणहुं कञ्जु तं पि ।
तं णिसुणिवि सक्कसमाणएण विहसेप्पिणु बुत्तं राणएण ।
- १० आपसहु कारणु किं पि णत्थि आरुहिवि तुरंगम मत्तहत्थि ।
अणुहुंजहु महु रिद्धिहि फलाइं मा जंपह वयणइं चप्फलाइं ।

घत्ता—किं वग्गह पेसणु मंग्गह मंडलाइं धणरिद्धइं ॥

महु एक्के मुक्के चक्के सुट्ठु दुसब्बाइं सिद्धइं ॥१०॥

११

- अहं जइ सुयत्तु दवखेविचं अब्जु तो करह महारच धम्मकञ्जु ।
देवेण जाइं चक्केसरेण कारावियाइं भरहेसरेण ।
लंबियघंटाचामरधयाहं केलासु गंपि कंचणभयाहं ।
वरसिहरहं चउवीसहं वि ताहं परिरेक्ख पलंजह जिणहराहं ।
- ५ जिहं णासइ खलमाणवहं मग्गु तिह विरयह त्तरुसिलसल्लिदुग्गु ।

वह देवमुनि यह कहता है, फिर भी वह पृथ्वीनाथ सगर प्रतिबद्ध नहीं हुआ । लो वह आज भी काललब्धि नहीं पाता । यह जानकर उस देवने गमनसिद्धि को (अर्थात् वह वहाँसे चला गया) । राजा सगर अपने निवासके लिए चला गया, मानो भ्रमर अपने कमलिनी-निवासके लिए चल दिया हो । जैसे ही वह अपने दरबारमे बैठा, वैसे ही उसने अपने साठ हजार पुत्रोंको देखा । आते हुए उन्होंने कहा—“हे देव ! आपकी जय हो, हम आपके चरणोंकी सेवा प्रकट करते हैं । आप शीघ्र ही कोई आदेश दीजिए, यदि युद्धमे सुभेस्रपर्वतके बराबर भी शत्रु होगा, तो भी हम अपना पैर नहीं हटायेंगे ? इस कार्यको भी खेल-खेलमे सम्मानित करेंगे ।” यह सुनकर इन्द्रके समान हँसते हुए राजा सगरने कहा, “आदेश देनेके लिए कोई कारण नहीं है ? तुम लोग अश्वों और मतवाले हाथियोंपर चढ़कर मेरे वैभवके फलोंको चखो । चंचल वचनोंका प्रयोग मत करो ।”

घत्ता—“क्यों सनकते हो और आज्ञा मांगते हो । मेरे द्वारा मुक्त एक चक्रसे ही दुःसाध्य और घन-सम्पन्न मण्डल अच्छी तरह जीत लिये गये ॥१०॥

११

अथवा यदि तुम्हें आज अपना सुपुत्रत्व दिखाना है, तो हमारा एक धर्मकार्य करो । चक्रवर्ती राजा भरतेश्वरने जिनमन्दिरोंका जो निर्माण करवाया था, तुम कैलास पर्वत जाकर, जिनमे घण्टा, चमर और ध्वज अवलम्बित हैं ऐसे स्वर्णमय और श्रेष्ठ शिखरवाले चौबीसो जिन-मन्दिरोंकी परिरक्षा करो । तुम वृक्षों, चट्टानों और जलोका दुर्ग बनाओ जिससे द्रष्टु मनुष्योंका

२. A P अज्ज वि । ३. P कय देवें जाणसिद्धि । ४. A P जीव । ५. A P जेवइ । ६. P तं सुणिवि । ७. P उत्तव । ८. P लग्गह ।

११. १. A सयत्त । २. A P दवखवहु । ३. A वर रक्ख । ४. A जिम ।

ता णिग्गय तणय पसाच्च भणिवि । जैमदंडचंड भुयदंड धुणिवि ।
धरैधरणक्खम उद्धुद्धसोड णं मयगल मयंजलगिल्लगंड ।
धाइय जुवाण सुहसुक्खरैव णं पलयजलय गवज्जणसहाव ।

घत्ता—पविदंडं खणरुइचंडं फाडिच्च खणि खोणीयलु ॥
णरसारहिं रायकुमारहिं देवहुं दाविडं सुयबलु ॥११॥

१०

१२

णियचिरपवाहपिहुपहु मुयंति करिकरडगलियमयंसलु धुयंति ।
परिभमियवारिविभम भमंति कमलोयरमयरंदइं वंसंति ।
परिमलमिलियालिहिं गुमुगुमंति वेंणयवजालोलिहिं सिमिसिमंति ।
सविसइं विसिचिवैरइं पइसरंति फणिफुक्कारिहिं दरोसरंति ।
गिरिकंदर दरि सर सरि भरंति दिसें णहयलु थलु जलु जलु करंति । ५
उत्तंगतरंगहिं णहि मिलंति चिर्यडयरसिलायल पक्खलंति ।
कच्छवमच्छोह समुच्छलंति हंसावलि कलरव कलयलंति ।
पविचलजलवलयहिं चलवलंति कड्डिय गंगाणइ खलखलंति ।
वलइयच्च ताइ कइलासु केव वेसाइ पमत्त मुयंगु जेव ।

मार्ग (आना) नष्ट हो जाये ।" तब 'जैसी आज्ञा'—कहकर वे पुत्र यमदण्डके समान प्रचण्ड अपने भुजदण्ड ठोकते हुए निकल पडे, जैसे वे पृथ्वी धारण करनेमें सक्षम, अपनी सूँड ऊपर किये हुए, मदसे आद्रं गण्डस्थलवाले मदगज हों । अपने मुँहसे शब्द करते हुए वे युवक ऐसे दौडे, मानो गर्जनस्वभाववाले प्रलयमेघ हों ।

घत्ता—विजलीकी तरह प्रचण्ड वज्रदण्डसे उन्होंने एक क्षणमें पृथ्वीतलको विदीर्ण कर दिया, और इस प्रकार मनुष्यश्रेष्ठ उन राजकुमारोने देवोंके लिए अपना बाहुबल दिखा दिया ॥११॥

१२

अपने चिर प्रवाहके विशाल मार्गको छोड़ती हुई, हाथोके गण्डस्थलोसे गलित मदजलको धोती हुई, धूमते जलोंसे विश्रमको धारण करती हुई, कमलोदरोसे मकरन्दका वमन करती हुई, सौरभसे मिले हुए भ्रमरोके द्वारा गुनगुनाती हुई, वनोंकी दावागिनियोंकी ज्वालाओसे सिमसिमाती हुई, साँपोंके विपैले विलोमे प्रवेश करती हुई, नागोंके फूत्कारोसे थोड़ा फैलती हुई, पहाड़की गुफाओं, घाटियों, सरोवरों, नदियोंको भरती हुई, दिशाओ, आकाशतल, स्थल और जलको जलमय बनाती हुई, ऊँची तरंगोंसे आकाशसे मिलती हुई, विकट शिलातलोंका प्रक्षालन करती हुई, कछुओ और मत्स्योके समूहोंको उछालती हुई, हंसावलियोंका कलरव करती हुई, विशाल जलविलयोंसे चिल-बिल करती हुई, और खल-खल करती हुई गंगा नदी आकषित की गयी, उसके द्वारा कैलास पर्वत उसी प्रकार घेर दिया गया, जिस प्रकार वेश्याके द्वारा प्रमत्त लम्पट घेर लिया जाता है ।

५. जयदंड । ६. A वरधरणक्खम उद्धायसोड । ७. A जलमयगिल्ल । ८. A राय । ९. A सहाय ।

१०. A परिचडिड गंगाजलु; P परिचट्टिड गंगाजलु ।

१२. १. A विच पवाहपिहमहुं । २. A मयजल चुवंति; P मयजल धुयंति । ३. P मुयंति । ४. A P वणदव । ५. A विसचिवरइ । ६. A दिसि । ७. P जलु थलु । ८. A विपलयलसिलायलि । ९. P खलहलंति ।

१० घत्ता—धवलंगह वैद्विच गंगइ पुणु वि ^{१०} भञ्जु सो ^{११} भावइ ॥
सुरमणहरु मंदरमहिहरु तारापंतिइ गावइ ॥१२॥

१३

फणिभवणि विलग्गड दंडरयणु तहु सहे कंपिउ सयलु सुवणु ।
भयथरहरंत कुंडलिय णाय वणि वणयरेहिं पविमुक्क णाय ।
झलझलिये जलहि ढल्लडलिय धरणि विम्हिउं सुरिदु कंपेविउ तरणि ।
पडिवोहणकारणु मुणिसं तेण मणिकेउणा हि ^{१०} पवरामरेण ।
५ फणिमणिपहपिहियदिणाहिवेण होइवि मायाणायाहिवेण ।
तिट्टयणजणमरणुप्पायणेहि गुंजारुणदारुणलोयणेहि ।
जोइवि कुमार कय भूइरासि णं पुंजिय सज्जसीविभूइरासि ।
तहि ^{११} कासु वि ण हवइ पलयकालु दरिसाविउ देवे इंदजालु ।
^{१२} असुयाइं वि सुयाइं व दिट्ट वधु गय भीम भइरहि पुहे ^{१३} सविधु ।
१० ^{१४} उव्वरिय कह व ते विहिवसेण घरु घत्ता मुक्का पोरिसेण ।

घत्ता—घरु गंपिणु पिउ पणवेप्पिणु आसणेसु आसीणा ।

सविसाएं विण्णि वि ताएं दिट्ट सुट्टु विहाणा ॥१३॥

घत्ता—गोरे अंगोंवाली गंगानदीके द्वारा घेरा गया कैलास पर्वत मुझे ऐसा लगता है मानो देवसुन्दर मन्दराचल तारापंक्तियोसे घिरा हुआ हो ॥१२॥

६३

वह दण्डरत्न नागभवनसे जा लगा । उसके शब्दसे सारा विश्व कांप उठा, कुण्डलाकार नाग भयसे कांप उठे, वनमें वनचरोंने शब्द करना शुरू कर दिया, समुद्र झलझला उठा, देवेन्द्र विस्मित हो उठा । सूर्य कांप गया । उस मणिकेतु प्रवर देवने इसे प्रतिबोधनका कारण समझा । जिसने अपने फणमणिको प्रभासे दिनाधिप (सूर्य) को ढँक लिया है, ऐसा मायावी नागराज बनकर, उस देवने, त्रिभुवनके लोगोंको मृत्यु उत्पन्न करनेवाले, गुंजाफलके समान लाल और भयंकर नेत्रोंसे कुमारोंको देखकर राखका ढेर बना दिया, (उन्हें भस्म कर दिया) मानो उसने अपने यशकी विभूतिराशि एकत्रित कर ली हो । उसमें किसीके लिए भी प्रलयकाल नहीं हुआ । क्योंकि देवने अपने इन्द्रजालका प्रदर्शन किया था । बिना मरे हुए भी भाई मरे हुए दिखाई दिये । तब भीम और भगीरथ अपने-अपने ध्वजचिह्नोंके साथ गये । भारयके पथसे वे दोनों किसी प्रकार बच गये थे । अपने पौरुषसे रहित वे घर पहुँचे ।

घत्ता—घर जाकर, अपने पिताको प्रणाम कर वे आसनोंपर बैठ गये । विषादपूर्वक पिताने देखा कि वे दोनों ही अत्यन्त दुःखी हैं ॥१३॥

१०. A मज्झि । ११. P भाइ ।

१३. १. A घरहरंति । २. A झलझलिय । ३. A टल्लडलिय । ४. A P विभिउ । ५. A P कंपियउ ।

६. A पडिवोहणु । ७. A P वि । ८. P फणमणि । ९. A भूय । १०. P सज्जसविहूह । ११. A

कासु ण ह्वयउ । १२. A P असुया वि । १३. A P पुरि । १४. A उव्वरिय ते ण कह विहिवसेण ।

१४

कक्षेयणकिरणुभ्रासणाहं
 बिहिं ऊणी सट्टि दुसंठिएण
 मणिमयकुंडलचंचइयगंड
 दुइ आया इयर ण पइसरंति
 पुवं चिय सुरसंकेइएण
 तं णिसुणिवि मंतिं बुत्तु तेण
 अत्यमंइ ण किं रवि उर्ययभाउ
 ण वि णासइ किं तडि मेहसोह
 थिह होइ ण संझारायरंगु
 विहइ ण काइं सुरचावदंडु
 कालेण गिलिर्य देविंद देव

जोर्यवि सहसहं सुण्णासणाहं ।
 सुयदंसणसोक्खुं कंठिएण ।
 राएण पैलोइचं मंतिंतोइ ।
 भणु कारणु तणुरुह किं करंति ।
 संबोहणबुद्धिविराइएण ।
 हे^५ महिवइ महिलाहियययेण ।
 उल्हाइ ण किं पञ्जलिउ दीउ ।
 फुट्टंति ण किं जलबुब्बुओह ।
 गउ आवइ णउ सरिसरतरंगु ।
 किं खयहु ण वच्चइ मणुयपिंडु ।
 पच्छण्णपवत्तिहिं कहिउ एम्ब ।

धत्ता—ता रायहु वड्ढियसोयहु बाहजलहइं णेतइं ॥

चलपत्तइं ओसासित्तइं णं गलंति सयवत्तइं ॥१४॥

१४

कर्कतन रत्नोकी किरणोसे आलोकित हुआरो सूनै आसनोंको देखकर भाग्यसे साठकी संख्या नष्ट हो जानेसे व्याकुल चित्त, और पुत्रदशनके सुखके लिए उत्कण्ठित राजाने, मणिकुण्डलों-से अलंकृत गालवाले मन्त्रीमुखकी ओर देखा (और कहा) कि दो ही पुत्र आये हैं, दूसरे नहीं आये है । कारण बताओ कि पुत्र क्या कर रहे हैं ? तब पहलेके देव (मणिकेतु) के द्वारा पहलेसे समझाये गये और राजाको सम्बोधन देनेकी बुद्धिसे शोभित मन्त्रीने कहा—“हे महिलाओके स्तनको चुरानेवाले राजन, क्या उदय होनेवाले सूर्यका अस्त नहीं होता ? क्या जलाया हुआ दीप शान्त नहीं होता ? मेघोकी शोभा बिजली क्या नष्ट नहीं होती ? क्या जलके बुदबुदोका समूह नहीं फूटता ? सन्ध्यारागका रंग स्थिर नहीं होता ! नदी और सरोवरकी गयी हुई लहर वापस नहीं आती ! क्या इन्द्रधनुष नष्ट नहीं होता ? क्या मनुष्य शरीर विनाशके मार्गपर नहीं जाता ? देवेन्द्र और देव महाकालके द्वारा निगल लिये जाते हैं ?” इस प्रकार प्रच्छन्न उक्तिसे मन्त्रीने कहा ।

धत्ता—तब जिसका शोक बढ़ गया है, ऐसे राजाके अश्रुजलसे गीले नेत्र इस प्रकार गल गये मानो ओससे गीले चंचल पत्तोंवाले कमल हों ॥१४॥

१४. १. A जोइवि सहास सुण्णा^०; P अवलोइवि सुयसुण्णा^० । २. A^० सुक्खुक्कंठिएण; P^० मोइक्कंठिएण ।
 ३. A पलोयउ; P पलोविउ । ४. A ते महिवइ महिलाहिययं; P हे महिवइ महिलाहियाययेण ।
 ५. A अत्यवइ । ६. P उयणभाउ । ७. A जलपुब्बुओह but gloss जलबुदबुद । ८. A गलिय ।
 ९. A पच्छण्णपवत्तिहिं ।

१५

तावेक्कु परायउ दंडपाणि	कासायचीरंधरु महुरवाणि ।
जिणवरु व णिवारियभन्वविहंरु	कुंडलियणीलभमरउलचिहुरु ।
सोत्तरियफुरियजणोववीउ	रुवेण गुणेण वि अंदुदुतीउ ।
सो मंतिहिं गहियखणेहिं महिउ	कुलवंभणु भणिवि नृवस्सुं कहिउ ।
५ ता भासइ लद्धावसरु विप्पु	को पुत्तु एत्थु किर कवणु चप्पु ।
संसारु असारु णिरायराय	किं सासय मण्णहि अन्भलाय ।
जिह तरुवेळ्ळिहि परगम्मु होइ	तिह णरु णारिहि अप्पं ण वेइ ।
जीहोवत्थहिं जगमारणेहिं	डिभहिं डंमुंभवकारणेहिं ।
संसारिय सयल सणेहु लेंति	केसा इव बंधणजोग्ग होंति ।
१० मोहो बद्धा भँवि संसंरंति	पुणु पुणु हँवंति पुणु पुणु ^{१०} मरंति ।

धत्ता—महु वित्तइं पुत्तकलत्तइं एम^१ भणंतु जि णिज्जइ ॥

^{१०}सुहुं माणइ धम्मु ण याणइ जगु खयरक्खे खज्जइ ॥१५॥

१५

तब इतनेमे गेरुए वस्त्र धारण किये हुए मीठी वाणी बोलनेवाला एक दण्डी साधु वहाँ आया । जो जिनवरकी तरह भयोंके कष्टोको दूर करनेवाला था, जिसके भ्रमरकुलके समान नीले बाल कुण्डलित थे, जो उत्तरीय वस्त्रके साथ यज्ञोपवीत धारण किये हुए था । वह रूप और गुणमे अद्वितीय था । तपके लिए नियम ग्रहण करनेवाले मन्त्रियोने उसका सम्मान किया और कुलीन ब्राह्मण समक्षकर राजासे कहा । तब अवसर मिलनेपर ब्राह्मण बोला—“यहाँ कौन पुत्र है, और कौन बाप है ? हे मनुष्योंके राजराज, यह संसार असार है । क्या तुम मेघोकी छायाको घासवत मानते हो ? जिस प्रकार तब लताओंके परवश हो जाता है, वसी प्रकार मनुष्य नारियोंके कारण अपनेको नहीं जान पाता । जगका नाश करनेवाली जीवकी अवस्थाओं, बच्चों और बच्चोके जन्मकारणोके द्वारा सभी संसारी जीव स्नेह ग्रहण करते हैं, और केशोके समान बन्धनके योग्य हो जाते हैं । मोहसे बँधकर संसारमे परिभ्रमण करते हैं । फिर-फिर जन्म ग्रहण करते हैं और फिर-फिर मृत्युको प्राप्त होते हैं ।

धत्ता—‘मेरा धन, मेरे पुत्र-कलज’ इस प्रकार कहता हुआ वह ले जाया जाता है, फिर भी वह सुख मानता है, धर्म नहीं जानता । और इस प्रकार यह जग यमरूपी राक्षसके द्वारा खा लिया जाता है ॥१५॥

१५. १. A °बीच घह । २. A P °विहुर । ३. A अदुहुईउ; P अदुईउ । ४. A P णिवस्स । ५. A डिमुंभव । ६. A मोह बद्धा । ७. P जणि । ८. P संभरंति । ९. A मरति; P भवति । १०. A हवंति । ११. A रुणंतु । १२. सुकु माणइ ।

१६

दारिवि धरणीयलु दिढमुर्पाहि
अहिभवणि विलगगड दंडरयणु
आरूसेप्पिणु^३ आसीविसेण
ता चवइ सयरु गयदुरियकलिलु
किं एण पणासइ ईट्टसोच

जहि कर्हि मि ण पेच्छमि सुहिविओच
जहि सयलकौल अयरामरत्तु
तं सिच सीहंवि गिणहंवि चरित्तु
लइ वसुह ण इच्छिय तेण केम
ता थविवि भईरहि पुहइरञ्जिज
दढधम्महु पायंतिइ समग्गु

आणिय मंदाइणि तुह सुएहि ।
णिगगड फणि गौरलुपेच्छणयणु ।
जोइय णिव^४ णंदण चइवसेण ।
णहाइजइ दिवजइ काइं सलिलु ।
वर पंचमुट्टि सिरि देमि लोच ।
ण हु होइ कयाइ अणिट्टजोच ।
जहि थक्कइ अप्पच णाणमेत्तु ।
पुणु भीमकुमार णिवेण वुत्तु ।
गुणवंते परगेहिणिय जेम ।
अप्पणु लग्गड परलोयकञ्जि ।
आराहिड भावें मोक्खमग्गु ।

५

१०

घत्ता—सहुं भीमें णिञ्जियकामें चारित्ते ण विहूसिच ॥

चक्केसरु हुच जोईसरु मणिकेउ^{१०} वि सुरु तोसिच ॥१६॥

१६

तुम्हारे पुत्र धरतीको अपने दूढ़ बाहुओंसे खोदकर गंगा नदी ले आये । उनका दण्डरत्न नागभवनसे जा टकराया । विपसे परिपूर्ण नेत्रवाला वह नाग निकला । उसने क्रुद्ध होकर यमके समान उन पुत्रोंको देखा । इसपर जिसका पाप कलंक धुल गया है ऐसा राजा सगर कहता है कि क्या स्नान किया जाये और पानी दिया जाये, क्या इससे इष्टजनका वियोग दूर हो जायेगा ? अच्छा है मैं पांच मुट्टियोंमें सिरके बाल लेकर केशलोच करता हूँ । जहाँ किसी सुधीका वियोग मैं नहीं देखता । और न कभी भी अनिष्ट योग होता है, जहाँ सदैव अजर और अमरत्व निवास करता है । जहाँ आत्मा ज्ञानमात्र रहता है, मैं उस शिवको सिद्ध करता हूँ । मैं चारित्र्य ग्रहण करता हूँ ।” तब राजाने कुमार भीमसे कहा कि यह धरती तुम ले लो । परन्तु उस गुणवान्ने उसको इच्छा नहीं की जैसे वह किसी दूसरेकी गृहिणी हो । तब भगीरथको पृथ्वीके राज्यमें स्थापित कर, राजा सगर स्वयं परलोकके काममें लग गया । दूढ़धर्मा मुनिके चरणोंके निकट उसने सम्पूर्ण भावसे समग्र मोक्षमार्गकी आराधना की ।

घत्ता—कामको जीतनेवाले चारित्र्यसे विभूषित, और भीमके साथ वह चक्रेश्वर योगीश्वर हो गया । इससे मणिकेतु देव भी सन्तुष्ट हो गया ॥१६॥

१६-१. P गरलु दुपेच्छणयणु । २. P रूसेप्पिणु आसीविसविसेण । ३. A P तुह । ४. A दुट्टसोच ।
५. P वरि । ६. A P सव्वकाल । ७. A P अयरामरत्तु । ८. A P साहमि । ९. A P गेण्हमि ।
१०. A P मणिकेउ वि संतोसिच ।

१७

गड तेत्तहि^१ जेतहि पडिय पुत्त
 अबहरिवि विठठिवियगरल्लं भप्पु
 उट्टिय ते सायरि सायरैण
 वसु वसुमइ सीहासंणु मुएवि
 ५ गियजीविथैचायपरिगहेण
 ता तेहि विमुक्कव णिहिल्लु गंधु
 जाया जइ गियजगणगणुयारि
 दोर्वासपयडपासुलियगत
 उत्ताणखप्पोथेरकराल
 १० जणदिट्टपुट्टिगैथैवंसपव
 कडयडियजाणुकोप्परपएस
 कंकालरुव जगभीमवेस

मायाविसमुच्छारयंवलित्त ।
 जीवाविथ कड णिम्मल्लु वियप्पु ।
 भासियसुरेण मड्ढरक्खरेण ।
 गड तुम्हइं पिठ पावज्ज लेवि ।
 तुम्हइं विणडिय गंगौगहेण ।
 गड जेण महाजणु सो जि पंधु ।
 णीरंजण थिरमंण णिवियारि ।
 स कवालमूलसुणिलीणणेत ।
 दीहरणह भासुररोमवाल्लं^२ ।
 विच्छिण्णगाव^३ तवत्तावतिव्व ।
 उववासखीण चम्मट्टिसेस ।
 णिज्जणणिवासि^४ सुइच्चुक्कलेस ।

घत्ता—दिहिपरियर पसभियसयजर जमसंजमधरणुच्छव ॥

बहुखमदम कुचियकरकम णावइ थलगय कच्छव ॥१७॥

१७

वह वहाँ गया जहाँ माया-विषकी मूर्च्छाके वेगसे लुप्त पुत्र पड़े हुए थे। उसने वैक्रियिक विषको खींचकर भस्मको जीवित कर सुन्दर शरीरमे परिणत कर दिया। वे सगर-पुत्र आदरके साथ बठ बैठे। देवने मधुरवाणीमे उनसे कहा कि धन, धरती और सिंहासन छोड़कर तुम्हारे पिता संन्यास लेकर चले गये हैं। अपने जीवनके त्यागका परिग्रह है जिसमे, ऐसी गंगा लानेके आग्रहसे तुम लोग प्रवंचित हुए। यह सुनकर उन लोगोंने भी समस्त परिग्रहका परित्याग कर दिया और उसी रास्ते पर गये, जिसपर महाजन जा चुके थे। अपने पिताका अनुकरण करनेवाले वे निरंजन, निर्विकार और स्थिरमन मुनि हो गये। जिनके शरीरके दोनों पार्श्वभागोंकी पसुलियाँ निकल आयी हैं, जिनके नेत्र कपालके मूल भागमें लीन हो गये हैं, जो उठे हुए खप्परके उदरसे भयंकर हैं जिनके लम्बे नाखून और चमकता हुआ रोमजाल है, जिनके पीठके बाँसकी गाँठें दिखाई दे रही हैं, जिनका अहंकार जा चुका है, जो तीव्र तपके तापसे सन्तप्त हैं, जिनके घुटने और हथेलियोंके प्रदक्ष सुख गये हैं, जो उपवाससे क्षीण हैं और जिनकी केवल चमड़ा और हड्डियाँ शेष रह गयी हैं। जो कंकालस्वरूप और जगमे भयंकररूप धारण करते हैं, एकान्तमे निवास करनेवाले जो पवित्र शुक्लेश्यावाले हैं।

घत्ता—जो वैथके परिग्रहसे युक्त जराकी शान्त करनेवाले, यम और संयमको धारण करनेका उत्सव करनेवाले, बहुत ही क्षमा और दयावाले तथा जिन्होंने अपने हाथ-पैर संकुचित कर लिये हैं ऐसे मानो स्थलपर रहनेवाले कच्छप हैं ॥१७॥

१७. १. A P जेतहि तेत्तहि । २. A रसपलित्त; P रयपलित्त । ३. A गरलु दप्पु; P गरलु सप्पु ।
 ४. A P सिंहासणु । ५. A जीवियरायं । ६. A P मायागहेण । ७. P थिर मणि । ८. A P दोपाकु-
 पयडपंसुलियं । ९. A उत्ताणुयखप्पो । १०. A P रोमजाल । ११. A गयवंपपव्व । १२. A P
 विच्छिण्णगव्व । १३. A P णिज्जणणिवासि । १४. A P बिहुखमदम ।

१८

सुरधनुवलए	विज्जुज्जलए ।	
गज्जंतघणे	हयविरहियणे ।	
सरिवहसरिसे	धारावरिसे ।	
संविहियैयले	पवहंतजले ।	
सुगरैवसुहले	वणविडवितले ।	५
णिवसंति इसी	विलुलंति विसी ।	
गलकंदलए	पुणु कंदलए ।	
ओसापसरे	पत्ते सिसिरे ।	
दैरिसियगयणे	वाहिरसयणे ।	
णिककंपमणा	धीरा समणा ।	१०
तमलइयदिसं	गमयंति णिसं ।	
हिमणिग्गमणे	गिन्हागमणे ।	
गिरिसिहरगया	सज्झाणरया ।	
संतावणिह	रविकिरणसिंहि ।	
विसहंति जई	सुविसुद्धमई ।	१५
णिल्लियविसय	इय एरिसयं ।	
पालेवि समं	पुत्तेहिं समं ।	
विद्धत्थरयं	णिन्वाणरयं ।	
जणतोसयरो	पत्तो सयरो ।	
णिट्टुविचरिडं	णिसुणेवि पिडं ।	२०
अयमेय वयं	गयमयणमयं ।	
णियपुत्तयहो	वरयत्तयहो ।	
जयलच्छिसाहिं	दाऊण महिं ।	

१८

इन्द्रधनुषसे मण्डित, विद्युत्से उज्ज्वल, विरहीजनोंको आहत करनेवाले मेघोंके गरजनेपर नदीके प्रवाह पथके समान स्थलभागको ढक लेनेवाले, धारावाहिक रूपसे जलके प्रवाहित होनेपर, पशुकुलसे मुखरित वनविटपके नीचे वे मुनि रहते हैं और विषयोंका नाश करते हैं। जिसके कन्दल (अंकुर/किश) गल चुके हैं, ऐसे मस्तक प्रदेशमे ओसके प्रसारसे युक्त शिशिरश्रुतुके प्राप्त होनेपर, जिसमे आकाश दिखाई देता है, ऐसे बाह्य शयनमें, धीर श्रमण निष्कम्प भावसे तमसे आच्छादित दिशाओंवाली रात्रि व्यतीत करते हैं। हिम (शीत) श्रुतुके चले जानेपर और ग्रीष्म श्रुतुके आगमनपर पहाड़ोंके शिखरोपर विराजमान वे सत् ध्यानमे रत रहते हैं। सतानेवाली रविकिरणोंकी आगको सुविशुद्ध मतिवाले वे मुनि सहन करते हैं। विषयोंको जीतनेवाले इस प्रकारकी साधनाका पालन कर राजाजनोंकी सन्तुष्ट करनेवाले सगर अपने पुत्रोंके साथ, पापका नाश करनेवाले निर्वाणको प्राप्त हुए। यह सुनकर कि पिताने कर्मोंका नाश कर दिया है, (यह सोचकर) अपने

१८. १. A P विज्जुज्जलए । २. A P संपिहियं; K संविहिय but gloss संपिहितं । ३. A P मिगरव । ४. A P दरसियं । ५. A P गिभागमणे । ६. A रई । ७. A गई । ८. A P अपमेय-वयं । ९. A वरदत्तयहो; P वरपत्तयहो ।

२५ ^{१०}आसमि गुणिहे गुत्तयमुणिहे^{११} ।
 घत्ता—अरितरुसिहि राच भईरहि हिंसारंमु मृएप्पिणु ॥
 सरहंगहि तडि थिच गंगहि^{१२} जिणपावज्ज लएप्पिणु ॥१८॥

१९

ताराहारावलिपविमलेहि सतुसारखीरसायरजलेहि ।
 कलहोयकलसकविलियकरेहि तहु पयजुयलस सिचिच सुरेहि ।
 तप्पायभोयसलिलेण सित्त तहि हई सुरवरसति पवित्त ।
 हिमवतपोमसरवरपसूय अञ्जु वि जणु मण्णइ तित्थभूय ।
 ५ मंदारजाइसिदूरपहि अरविदकुदकणियारएहि ।
 सुपवरमयरंदायंबपहि अंचिवि णवकुसुमकरंबपहि ।
 आमोयमिलियचलमहुलिहेहि गंधेहि दिण्णणासासुहेहि ।
 थोत्तेहि जईसरु धरियजोच वंदेवि देव गय सगगलोच ।
 उप्पाइवि केवलु तिजगचक्खु संपत्त भईरहि परममोक्खु ।
 १० घत्ता—सो मुणिवरु अजरामरु हूयच खणि असरीरिच ॥

भरहत्थेहि णिवसत्थेहि पुप्फदंतु जयकारिच ॥१९॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणाळंकारे महाकहपुप्फयंतविरहप महासंभवमहाणुमणिए
 महाकवे सयरणिग्वाणगवणं णाम पक्कूणचळोसमो परिच्छेओ समत्तो ॥३९॥

॥ सयरचरियं समत्तं ॥

पुत्र वरदत्तके लिए विजयरूपी लक्ष्मीकी सहेली धरती देकर गुणवान् गुप्तमुनिसे कामके मदसे रहित यही व्रत ग्रहण करता है ।

घत्ता—अरिरूपी वृक्षके लिए आगके समान राजा भगीरथ हिंसा और आरम्भको छोड़कर तथा जिनदीक्षा ग्रहण कर चक्रवाकोसे युक्त गंगानदीके तटपर स्थित हो गये ॥१८॥

१९

तारोंकी हारावलियोंके समान स्वच्छ, तुषारकर्णों सहित, क्षीरसागरके जलोसे स्वर्णकलशसे युक्त हाथोंसे देवोंने उनके पदयुगलका अभिषेक किया । उनके चरणोंके धोये गये जलसे सींची गयी देवनदी गंगा उस समय पवित्र हो गयी । हिमवन्त सरोवरसे निकलनेवाली गंगानदीको लोग आज भी तीर्थस्वरूप मानते है । मन्दार, जुही, सिन्दुवार, अरविन्द, क्रुन्द, कनेर पुष्पोंके सुप्रचुर मकरन्दोसे लाल नव कुसुम समूहोसे अर्चा कर, तथा जिनमें आमोदसे चंचल मधुकर मिले हुए है ऐसी नासिकाको सुख देनेवाले गन्धों और स्तोत्रोंसे योगधारी योगीश्वरकी वन्दना कर देव स्वर्गलोक चले गये । त्रिलोकनयन केवलज्ञान उत्पन्न कर भगीरथ परममोक्षको प्राप्त हुए ।

घत्ता—वह मुनिवर एक क्षणमे अजर-अमर और अशरीरी हो गये । भरतक्षेत्रवासी राजसमूहोंने पुष्पदन्तके समान उनका जयजयकार किया ॥१९॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभय भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका सगरनिर्वाणगमन नामका उनवाळीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥३९॥

१०. A P असमे । ११ A P गोत्तयमु णेहे । १२. A P जिणपव्वज्ज ।

१९. १. A महुवरहेहि; A महुयरेहि । २. A अशरीरत्त । ३. A P omit सयरचरियं समत्तं

संधि ४०

पणवेपिणु संभु सासयसंभु संभवणासणु मुणिपवरु ॥
पुणु तहु केरी कह रंजियवुहसैह कहंवि सरासइ देव वरु ॥ ध्रुवकं ॥

१

सदयं परिरक्खियमयं	अदयं विद्धंसियमयं ।
चूरियअलियलर्यंसयं	लुं चियअलिअलयं सयं ।
दूसियपरहणहरणयं	पुसियवंबहरिहरणयं ।
विणिवारियपरदारयं	परदरिसियपरदारयं ।
रथणीभोयणविरमणं	धीरं अविचेविरमणं ।
कयगिहिसंगपमाणयं	बहुणयणिहियपमाणयं ।

५

सन्धि ४०

शाश्वत है जन्म जिनका, ऐसे तथा जन्मका नाश करनेवाले मुनिप्रवर सम्भवनाथको प्रणाम कर, फिर उन्हीकी, पण्डित सभाको रंजित करनेवाली कथा कहता हूँ, है सरस्वती देवी, मुझे वर दो ।

१

जो पशुओंकी रक्षा करनेवाले सदय हैं, जो मदकी ध्वस्त करनेवाले अदय हैं, जिन्होंने असत्यके अंशको ध्वस्त कर दिया है, और भ्रमरके समान श्याम केशोंको उखाड़ दिया है, जिन्होंने दूसरेके धनके हरणकी निन्दा की है, जिन्होंने ब्रह्मा, हरि और हरके नथको दूर कर दिया है । जो परस्वीका निवारण करनेवाले हैं, तथा जिन्होंने दूसरोके लिए मोक्षका द्वार बताया है, जो निशा भोजनसे विरत हैं, धीर और अकम्पित मन हैं । जिन्होंने गृहस्थ जीवनमें परिग्रहका परि-

Mss. A and P have the following stanza at the beginning of this Sandhi :—

विनयाङ्कुरसातवाहनाधौ नृपचक्रे दिवि (व) मीयुषि क्रमेण ।
भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रसक्त एव ॥१॥

This stanza is also found at the beginning of Sandhi XXXIII of this Work in certain Mss. See foot-note on page 530 of Vol I. K does not give it there or here.

१. १. A P ० बुहसुह । २. A धीरं ।

	णाणेणं अपमाण्यं	सँवराणं पि पैमाण्यं ।
१०	पविहियभन्वसुरौरायमं	णिदियसौंडसुरौरायमं ।
	जं तवत्तावेणुगगयं	जेण वीथराउगगयं ।
	अणुहुत्तं संसारयं	णो वद्धं हरिसा रयं ।
	दूरुञ्जियसंसारयं	ण हि संसासंसारयं ।
	वेवासुरकंपावणं	जं देवं कं पावणं ।
१५	जयपायडियसयारयं	सिद्धिपुरंधिसयारयं ।
	कंतं तीइ अयारयं	पढंमट्टाणि अयारयं ।
	वीर्ण सरहंकारयं	अरुहं णिरहंकारयं ।
	उयरलीणसयलवखरं	संतेसं परमवखरं ।
	भुवणकुमुयवणसंभवं	तं बंदे हं संभवं ।
२०	^{१०} ओसारियअसिआवसं	^{११} णविऊणं असिआवसं ।
	भणिमो संभवसंकहं	जोणीमुहदुहसंकहं ।

घत्ता—तियसिदफणिदहिं खयरणरिदहिं जं थुव्वइ कयपंजलिहिं ।

तं जिणगुणंकित्तणु महुं सुकइत्तणु अमिउं पियह कणणंजलिहिं ॥१॥

माण किया है। जो अनेक नयोसे प्रमाणको स्थापित करनेवाले है, जो ज्ञानसे अप्रमाण (सीमा रहित) हैं; और जो स्वपरको ज्ञानरूपी लक्ष्मीको प्राप्त करानेवाले है, जिन्होंने भव्यजनोके लिए देवोंका आगमन करवाया है, जिन्होंने मद्यकी प्रशंसा करनेवाले शास्त्रोंकी निन्दा की है, जो तपभावसे उग्र हैं और जिन्होंने वीतराग भाव उत्पन्न किया है, जिन्होंने अनन्त सुखका अनुभव किया है, जो हर्षसे पापमे लिप्त नहीं हैं, जिन्होंने संसारको छोड़ दिया है, और जो प्रशंसा या अप्रशंसामे रत नहीं हैं, जो देव और अमुरोंको कँपानेवाले है, उस देवके समान पवित्र कौन है ? जिन्होंने जगमें सदाचारको प्रकट किया है, जो सिद्धिरूपी इन्द्राणीमें सदारत है, जो मुक्तिरूपी कान्ताके दूतरहित स्वामी हैं, जिनके नामके प्रथम अक्षरमें 'अ' और दूसरे स्थानमे 'र' सहित हकार है (अर्थात् अर्हत्), जिसके भीतर समस्त अक्षर लीन हैं, जो मन्त्रेश और परम अक्षर हैं, जो भुवनरूपी कुमुदवनके लिए चन्द्रमा है, ऐसे उन सम्भवनाथकी मैं वन्दना करता हूँ। जिन्होंने लक्ष्मी और आयुका निवारण कर दिया है, ऐसे पंचपरमेष्ठीको प्रणाम कर जन्म दुःखकी शंकाका नाश करनेवाले सम्भवनाथकी कथा कहता हूँ।

घत्ता—देवेन्द्रों, नागेन्द्रों और विद्याधरेन्द्रोंके द्वारा जिनको हाथ जोड़कर स्तुति की जाती है, ऐसे जिनके गुणकीर्तन और भेरे सुकवित्वरूपी अमृतको कर्णरूपी अंजलियोंके द्वारा पियो ॥१॥

३. A P add after this : देवं जं सुपमाण्यं; T seems to omit it. ४. P सबरे दरिसियमायमं । ५. P adds after this : सबरेवि परमायम; T seems to omit it ।

६. P सुरामयं । ७. A पढमट्टाणअयारयं । ८. A सुमहियसरहंकारयं । ९. A P add after this : पाइय (A धाइय) णिरहंकारयं, पावियसाहवकारयं । १०. AT ओहामियं; P ऊसारियं । ११. A भरिऊणं ।

२

दिणयरपईवए	इह पढमदीवए ।	
मेरुपुठिवल्लए	पसुकणघणिल्लए ।	
तहिं विदेहे वरे	सीयसरिउत्तरे ।	
पविमलदियंतरे	कच्छवेसंतरे ।	
रायहंसुज्जलं	सच्छविच्छुल्लु जलं ।	५
फुल्लपंकयवणं	पवणहल्लिरवणं ।	
णवकुसुमपरिमलं	सरंससुमहुरफलं ।	
रुणरुणियमहुयरं	रइरमियणहयरं ।	
संगपायारयं	गोउरदुवारयं ।	
विरइयमहुच्छवं	तुरयहिल्लिहिल्लिरवं ।	१०
रसियनृववारणं	णीलदलतोरणं ।	
चिंधमालाउलं	विविहजणसंकुलं ।	
हेममयमंदिरं	खेमणामं पुरं ।	
तहिं सुहडसाहणो	पहु विमलवाहणो ।	
वसइ सिरिसेविओ	पणइणीणं पिओ ।	१५
चारुल्ले कए	दीहकाले गए ।	
तिविहणिण्वेइणा	तेण वरराइणा ।	
थोरदीहरमुए	विर्मलकित्तीसुए ।	
सधरधरणी पया	विणिहियां संपया ।	

२

जिसमे सूर्यरूपी प्रदीप है ऐसे इस प्रथम द्योप जम्बूद्वीपमे सुमेरुपर्वतके पूर्वमे पशु और धान्य-से सम्पन्न श्रेष्ठ विदेह क्षेत्रमे सीता नदीके उत्तरमे प्रविमल दिशान्तरवाले कच्छ देशमे क्षेम नामका नगर है, जो राजहंसकी तरह उज्ज्वल और स्वच्छ लल्लते हुए जलवाला है, जिसमे कमलवन खिला हुआ है, और जो पवनसे हिलनेके कारण सुन्दर है । नवकुसुमोंसे सुरभित, और सरस तथा सुमधुर फलवाला है । जिसमे मधुप गुंजन कर रहे हैं और नभचर रतिसे क्रीडा कर रहे हैं । जिसमे ऊँचे परकोटे हैं, जो गोपुर द्वारवाला है, जिसमे महोत्सव हो रहे हैं, अश्वोके हिनहिनातेका शब्द हो रहा है; राजाके गज चिगवाडू रहे हैं, नीलपतोके तोरण हैं, जो ध्वजचिह्नोंकी मालाबोसे व्याप्त हैं, तरह-तरहके जनोसे संकुल हैं और जिसमे स्वर्णनिर्मित प्रासाद है, ऐसे उसमे सुमटोकी सेवासे युक्त विमलवाहन नामका राजा था । श्रीसे सेवित वह अपनी प्रणयिनियोंके लिए अत्यन्त प्रिय था । अपना सुन्दर राज्य करते हुए, उसका जब बहुत समय बीत गया, तो संसार, शरीर और कामसे विरक्त होकर उस उत्तम राजाने अपने स्थूल और लम्बी बाहुवाले विमलकीर्ति नामक पुत्रके लिए पर्वत और धरती सहित समस्त सम्पदा सौंप दी । और असन्दिग्ध प्रभावाले स्वयंप्रभ जिनको

२. १. P वसुकणं । २. P विदेहे पुरे । ३. A विच्छलजलं । ४. AP सरसमहुरं फलं । ५. P तुरियं ।
६. AP णिववारणं । ७. A विवलवाहणो । ८. A विवलकितीं । ९. AP विणिहया ।

२०	जिणमसंसयपहं जायओ जइवरो ^{१०} सहिवि तवतावणं जिणगुणणिवंधणं चिणिवि ^{११} सुहसंपयं	पणविचि सयंपहं । णिम्मम णिरंबरो । घरिचि सुहभावणं । सुवणयलखोहणं । घुणिचि भवभैवरयं ।
२५	ववसमविहूसणं ^{१३} अवियलियसंजमो पढमगइवेयए विस्सुयसुदंसणे अहसमरवइ हुओ	करिचि संणासणं । सरिचि मुणिपुंगमो । ^{१४} पढमयणिकेयए । दुक्खविद्धंसणे । भविययणसंथुओ ।

३० घत्ता—तेवीस अण्णइं जलहिसमाणइं आउ णिवद्धउं सुरवरहु ॥
चिहिं रयैणिहिं जुत्तउ अद्ध णिरुत्तउ तणुपरिमाणु वि भणिउं तहु ॥२॥

३

तेवीसवरिसंसहसहिं असइ वण्णे भावेण वि सुक्खिल्लउ णउ गेयवज्जसरकलयलउ पाविट्टु दुट्टु जहिं णत्थि जणु	तेत्तिचिहिं जि पक्खिहिं ऊससइ । विलुलंतहारमणिमेहलउ । णउ णारि ण हियवइ कलमलउ । जो जो दीसइ सो सो सुयणु ।
५ णाणं जाणइ सुरणरणियइ तं तेत्तिउ वैट्टइ णिट्ठियउं	सत्तमणरयंतु जाम णियइ । जांवाउसेसु तहु णिट्ठियउं ।

प्रणाम कर वह निर्मम दिगम्बर यतिवर हो गये । तपकी तपन सहकर और शुभभावना धारण कर त्रिभुवनतलको क्षुब्ध करनेवाले जिनगुणोंका निबन्धन कर शुभ सम्पदाका चयन कर, भवके भय और पापको नष्ट कर, उपशमसे विभूषित संन्यास धारण कर, अविगलित संयम वह मुनिश्रेष्ठ मरकर प्रथम श्रेय्यकके दृःखोंका नाश करनेवाले प्रथम विश्वप्रसिद्ध सुदर्शन विमानमे, भव्यजनों द्वारा संस्तुत अहमेन्द्र देवके रूपमें उत्पन्न हुआ ।

घत्ता—उस सुरवरके तेईस सागर प्रमाण पुरो आयु थी । ढाई हाथ ऊँचा उसके शरीरका प्रमाण था । वह भी मैंने निश्चयपूर्वक कहा ॥२॥

३

तेतीस हजार वर्षमे वह भोजन करता । और उतने ही पक्षोंमें (अर्थात् साढ़े ग्यारह हजार वर्षोंमें) श्वास लेता । रंग और भावसे वह शुभ्र था । उसपर हार और मणिमेखला झूलती थी । उस श्रेय्यक विमानमें कामदेवका कोलाहल नहीं था, और न स्त्री और हृदयमें पाप था । वहाँ पापिष्ठ और दुष्ट लोग नहीं थे । जो दिखाई देता था, वह सज्जन था । अवधिज्ञानसे वह सुर और मनुष्योंको जानता था । सातवें नरकके अन्त तक वह देख सकता था । जब उसका उतना समय

१०. A सहइ तव । ११. AP सुहसंचयं । १२. A भवभयरयं । १३. AP अविहिल्य । १४. A पढमणिक्लेयए; P पढमइ णिकेयए । १५. A विहरयणिहि ।

३. १. A तेवीससहासवरिसहि; P तेवीससहसवरिसेहि । २. A सुक्खिल्लउ । ३. AP वद्धइ ।

ता एतहि उववणि रमिर्येणसुरि
इक्खात्तेवसु सुविसुद्धमइ
धणुगुणसंधियपंचमसरहु
एक्कहिं दिणि णिसि पच्छिमपहरि

इह भरहखेत्ति सावत्थिपुरि ।
ह्यसहुं दहुं णामे पुइइवइ ।
तहु धरणि सुसेण सेण सरहु ।
सुहं सुत्ती देवि सवासहरि ।

१०

घत्ता—सा सालंकारी सेण भडारी पइवय सोलह सुंदरइ ॥

महिमंडलसामिणि मंथरगामिणि अवलोयइ सिचिणंतरइ ॥३॥

४

करिणं वसहं केसरिणं
झैसजुय कुंभजुयं च चरं
हरिबीढं देविदधरं
विष्फुलिगपिगलियणहं
इय जोइवि पीणत्थणिया
सिसुमयणयणा पत्तलिया
अहिणववेळ्ळि व कोमलिया
करि धरिवि सविलासिणियं
पत्ता कंता रायहरं
अवलोइवि पइसुहकमलं
णियवुद्धइ परिग्गहियं
जस्स वसा तेलोक्कसिरी

लच्छिं दामं चंदमिणं ।
सरवरममलिणमयरहरं ।
फणिभवणं फुडमणिणियरं ।
सिहिणं जलियं दीहंसिहं ।
पविउद्धा सीमंतिणिया ।
णीलुप्पलदलसामलिया ।
गहियाहरणा संचलिया ।
कलहंसी चिव हंसिणियं ।
सिहरोलंबियसलिलहरं ।
पुच्छइ सत्था सिचिणहलं ।
तेण वि तिस्सा तं कहियं ।
मज्जणवीढं मेरुगिरी ।

५

१०

बीत गया, और उसकी आयुका निश्चित भाग शेष रह गया, तब जिसमे देवता क्रोड़ा करते हैं, ऐसे उपवनवाले भरत क्षेत्रकी श्रावस्ती नगरीमे इक्ष्वाकुवंश था। उसमें विशुद्धतम बुद्धि दूरथ नामका राजा था। उसकी सुषेणा नामकी गृहिणी, मानो धनुषकी डोरीपर पांच बाणोका सन्धान करनेवाले कामदेवकी सेना थी। एक दिन रात्रिके अन्तिम प्रहरमे वह देवी अपने निवासगृहमे सुखसे सोयी हुई थी। महीमण्डलको स्वामिनी मन्द गतिवाली उसने स्वप्न-परम्परा देखी ॥३॥

४

हाथी, वृषभ, सिंह, लक्ष्मी, पुष्पमाला, चन्द्र, मत्स्ययुगल, श्रेष्ठ कुम्भयुग्म, स्वच्छ सरोवर, सूर्य, समुद्र, सिंहासन, देवविमान, नागभवन, स्फुटमणिसमूह और स्फुलिगोसे आकाशको पीला बनानेवाली दीर्घ ज्वालाओंवाली प्रज्वलित भाग। पीनस्तनोवाली वह सीमन्तिनी यह देखकर जाग गयी। शिशुमगनयनी दुबली पतली नीलकमलदलके समान क्यामल, अभिनवलताके समान कोमल, और आभरण धारण करनेवाली वह चली। विलाससे युक्त कलहंसीके समान वह हंसिनीको अपने हाथमे धारण कर, वह कान्ता शिखरोसे मेघगूहोको सहारा देनेवाले राजभवनमे पहुँची। अपने पतिका मुखरूपी कमल देखकर, स्वस्थ वह, स्वप्नोंका फल पूछती है। अपनी बुद्धिसे ज्ञात कर उसने भी उनका फल उसे बता दिया कि त्रिलोक लक्ष्मी, जिसके अधीन है, सुमंरुपवत,

४. A रमियसरि । ५. A इक्खागुवंस । ६. A ह्यसयवदु । ७. A ससेण । ८. A सुहसुत्तो; P सुहं सुत्ती ।

४. १. AP क्षसजुयलं कुंभजुय पवरं । २. A दीयसिहं । ३. P विवद्धा । ४. P मयसिधुं । ५. P रयणहरं ।

- अमरडलं चियं मिच्चडलं जस्स वरं तिजगं विचडलं ।
 सो भइ तुह् दिण्णवरो होही तणओ तित्थयैरो ।
- १५ वत्ता— तं गिमुणिवि सुंदरि सरमहिहरदरि रोमंचिय पुलण्ण किह् ।
 महूसमयहु वत्तइ पोसियसोत्तइ पणइणि पियमाहविय जिह् ॥४॥

५

- वज्जिणा धम्मकज्जं तथो पीणियं चित्थियं चित्तिणज्जं मणे भावियं ।
 एत्थ सावत्थिरायस्स गेहे जिणो जक्ख होही सुसेणासईणंदणो ।
 जाहि ताणं तुमं होहि तोसाथरो वासविच्चाइरिद्धीपविच्चीयरो ।
 तामयासाहिवाणाइ माव्वट्ठणं दण्वणाहेण वेडन्वियं पट्ठणं ।
- ५ सन्वहेमालयं सूर्यंतप्पहं सन्वकालंधिवं सन्वसोकखावहं ।
 आगया गन्मसंसोहर्णत्थं इरी कंतिं कित्ती दिही लच्छि बुद्धी हिरी ।
 जाम छम्मास ता संपयालिंगणे भम्मबुद्धी कथा राइणो पंगणे ।
 फग्गणे मासए सुक्कपक्खंतरे पंचमे रिक्खए अट्टमीवासरे ।
 सिंधुरायारधारी सुहेणुण्णओ पुज्जगेवज्जदेवो समोइण्णओ ।
- १० णारिदेहे थिओ सुद्धधावत्तए वारिविट्ठु व्व राईविणीपत्तए ।
 धम्मचंदस्स सच्चंदिमाणंदिया देवदेवेण मायापिऊ वंदिया ।
 णिच्च माणिक्कुरासी पुणो वत्तिया दोससंखेहिं पक्खेहिं णिच्चत्तिया ।

जिसका स्नानपीठ है, विशाल त्रिजग, जिसका घर है, हे कल्याणि, वरोंको देनेवाला तुम्हारा ऐसा तीर्थकरपुत्र हीगा ।

वत्ता—यह सुनकर कामरूपी पर्वतकी घाटी वह सुन्दरी पुलकसे रोमांचित हो उठी मानो वसन्तके कानोंको पोषित करनेवाली वातसि प्रणयिनी कीयल पुलकित हो उठी हो ॥४॥

५

उस अवसरपर इन्द्रने चिन्तनीय कर्मकी अपने मनमें चिन्ता और भावना की ओर यह धर्मकार्य यक्षसे कहा—‘हे यक्ष, श्रावस्तीके राजाके घरमें जिन भगवान् सती सुषेणाके पुत्र होगे, तुम वहाँ जाओ और सन्तोष उत्पन्न करनेवाली गृह-द्रव्य आदि मनोहर ऋद्धियां उत्पन्न करो।’ इस प्रकार आकाशके राजा (इन्द्र) की आज्ञासे कुबेरने रत्नोंकी वृष्टि और नगरकी रचना की। वह नगर स्वर्णनिमित्त घरों और सूर्यकान्त मणियोंकी प्रभासे युक्त था। उसमें सब कालके वृक्ष थे और वह सर्व प्रकारके सुखोंका घर था। शीघ्र ही गर्भ संशोधन करनेवाली देवियां, कान्ति-कीर्ति-धृति-लक्ष्मी-वृद्धि और ह्री, इन्द्रकी आज्ञासे वहाँ आयी। जब छह माह शेष रह गये तब सम्पत्तियोंसे आलिंगित राजाके आंगनमें स्वर्णवृष्टि हुई। फागुन माहके शुक्ल पक्षमें अष्टमोकी पांचवें मृगशिरा नक्षत्रमें गजका आकार धारण करनेवाला, सुखसे उन्नत पूर्वप्रैवेयकका देव अवतीर्ण हुआ और शूद्र धातुवाले नारीरूपमें इस प्रकार स्थित हो गया मानो कमलनी पत्रपर जलकण हो। जिनेन्द्रकी शोभासे आनन्दित होनेवाले माता-पिता की देवदेवने वन्दना की। फिर नौ महीने तक प्रति-

६. A विय; P पियं । ७. P तित्थहरो । ८. P जह ।

५. १. A मणे जाणियं; P कज्जयं जाणियं । २. AP भावइहणं । ३. A सूरयंतं पंहं । ४. A सोहणत्थे इरी and gloss इरी त्वरिता; T इ इरी; PK सिरौ । ५. P कित्ति कंती । ६. P पुव्वगेवज्जं ।

दीहरद्धीसमाणं खणोणं खणं
जितसत्तसुए कम्मणिम्मुक्कए
कत्तिए पुण्णिमासीइ भे पंचमे
तइव तइया तिणाणी ससुप्पण्णओ
आइया भावणा जोइसा वितरा
अंकुसो भासिओ देहभाधारिणा
णञ्चमाणा परे गायमाणा परे
१४ सट्टहासा परे गज्जमाणा परे
छाइयासारसा सारसा सासुरा

कोडिलक्खा गया तीस जइया घणं ।
यत्तिए वीर्यतित्थंकरे हुक्कए ।
सोमंजोए दुजोयावलीणिग्गमे । १५
इंदुं इंदो रवी कपिओ पण्णओ ।
सायरा भासुरा कप्पवासी सुरा ।
चोइओ वारणो हत्ति जंभारिणा^{१२} ।
धावमाणा परे खेलमाणा^{१३} परे ।
सीहसहा^{१४} परे संखसहा परे । २०
१५ चित्तचारेहि पत्तोहि पत्ता सुरा ।

धत्ता—पुरु परिचंनेप्पिणु घर जाएप्पिणु जणणिहि देप्पिणु सिंसु अवरु ॥
पियरइं पुज्जेप्पिणु कर मचलेप्पिणु लइव सुरिं दे तित्थयरु ॥५॥

६

जिणरूघरिद्धि पेच्छंतियइ
तक्खणि तारायणु लंघियव
पविलोइय पंडुर पंडुसिल्लं
ता तहिं सईइ सईं धारियव

सुरवरपंतियइ गच्छंतियइ ।
सुरसिहरिसिहरु आसंतियव ।
सा खंडससंकसमाण किल्लं ।
करिकंधराव उत्तारियव ।

दिन रत्नवृष्टि की गयी । फिर जितशत्रुके पुत्र दूसरे तीर्थकर (अजितनाथ) के कर्मसे निवृत्त होनेसे लेकर दीर्घ समुद्र प्रमाण तीस करोड़ वर्ष समय बीतनेपर कार्तिक शुक्ल पूर्णमासीके दिन मृगशिरा नक्षत्रमे दुर्योगावलीसे रहित सौम्ययोगमे तीन ज्ञानधारी सम्भवनाथका जन्म हुआ । इन्द्र, इन्दु, सूर्य और नागराज कांप उठे । भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषदेव और भास्वर कल्पवासी देव आदरपूर्वक आये । शरीरकी कान्तिके धारक इन्द्रने अपना अकुश घुमाया और शीघ्र अपने हाथीको प्रेरित किया । कोई नाच रहे थे, कोई गा रहे थे, कोई दौड़ रहे थे, कोई खेल रहे थे । कोई अट्टहास कर रहे थे, कोई गरज रहे थे । कोई सिंहगर्जना कर रहे थे । कोई शंख बजा रहा था । देवोंसे पृथ्वी और आकाश छा गये । उत्कृष्ट लक्ष्मीसे युक्त देवोंके साथ देव नाना प्रकारकी प्रवृत्तियाँ वाहनोंके साथ आये ।

धत्ता—नगरकी परिक्रमा कर घर जाकर, माताको दूसरा पुत्र देकर, माता-पिताकी पूजा कर और हाथ जोड़कर जिनेन्द्र भगवान्को ले लिया गया ॥५॥

६

जिनेन्द्रकी रूपश्रद्धि देखती हुई, देवताओंकी कतार जाती हुई, शीघ्र तारागणोंको लांघती हुई सुमेरुपर्वतके शिखर पर पहुँची । वहाँ सफेद पाण्डुक शिला देखी जो चन्द्रमाके खण्डके समान थी । वहाँ उसने इन्द्राणीके साथ उन्हे उठा लिया और हाथीके कन्धसे उन्हे उतारा । भ्रुको

७ AP यत्तए । ८ A वीह तित्थकरे । ९. A सोम्मजोए । १०. A इंदु इंदो रई कि पि उप्पण्णओ; P सहसु लवणहं वसुअहियसंपुण्णओ । ११. A देहभाधारिणो; P देहसाधारिणा । १२. A जंभारिणो । १३. AP खेलमाणा । १४. A सट्टहासा । १५. P संखसहा परे पडहसहा परे । १६. A चित्तचारेहि; P चित्तचारेहि ।

६. १ AP पंडुसिल्ला । २. AP किल्ला ।

- ५ हरिआसणि पद्म वइसारियउ
दिण्णउं दन्भासणु णिहयमलु
दसदिसु सुंयुत्तु उच्चाइयउ
दसदिसु थियै सुरवर कलसकर
खीरोयखीरधारधरहिं
- इंदेण मंतु उच्चारियउ ।
दसदिसु परिघित्तु सँकुसुमजलु ।
दसदिसु चरुभाउ णिवेइयउ ।
दसदिसु वित्थरिय सुइंगसर ।
सिंचिउ जिण्णित्तु सयलामरहिं ।
- १० हारावलितडिफुरिपहिं किह
घत्ता—मंगलु गायंतिहिं पुरउ णडंतिहिं दावियवहुरसभावहिं ।
णाणाविहभासहिं थोत्तसहासहिं जगगुरु संथुउ देवहिं ॥६॥
- गर्जसिहिं भेहहिं भेरु जिह ।

७

- हरिणा परमेद्धि पसाहियउ
सिहिणा तहु दीवउ बोहियउ
रिंछाहिउ रिंछहु ओयरिउ
जडवईणा जडमणु परिहरिउ
- सुइथुइगिराहिं आराहियउ ।
जउं जपइ हउं पइं साहियउ ।
विणयण णएण जि संचरिउ ।
परमपउ णियहियउइ धरिउ ।
- ५ चाएण भडारउ विज्जियउ
इसाणँ ईसु भणिवि णविउ
सूरेण वि मोहंधारहरु
- रयणेसँ रयणाहिं पुज्जियउ ।
सुसुहासूँ सुहाहि णहविउ ।
सूरु जि णिवज्जाइउ परमपरु ।

सिंहासनपर बैठाया। इन्द्रने मन्त्रका उच्चारण किया। दर्भासन रखा, और दसों दिशाओंमें मलका नाश करनेवाला कुसुमोसे सुवासित जल फेंका। दसों दिशाओंमें धूप उठा ली गयी, दसों दिशाओंमें चरुभाग निवेदित किया गया। हाथमें कलश लिये हुए देव दसों दिशाओंमें खड़े हो गये। मृदगका स्वर दसों दिशाओंमें फैल गया। क्षीरसमुद्रके क्षीरकी धाराओंको धारण करनेवाले समस्त देवोंने जिनेन्द्रका इस प्रकार अभिषेक किया, जैसे हारावलीके समान बिजलीसे भास्वर गरजते हुए मेघों द्वारा सुमेरु पर्वतका अभिषेक किया गया हो।

घत्ता—मंगलगान करते हुए, सामने नृत्य करते हुए, अनेक रसभावोंका प्रदर्शन करते हुए, देवोंने अनेक प्रकारको भाषाश्रीवाले हजारों स्तोत्रोंसे विश्वगुरुकी स्तुति की ॥६॥

७

देवेन्द्रने परमेष्ठोको अलंकृत किया। पवित्र स्तुतियोंको वाणोंसे उनको आराधना की। आगके द्वारा उनका दीप प्रचलित किया गया। यम कहता है कि मैं तुम्हारे द्वारा जीत लिया गया हूँ। नैऋत्यदेव अपने रीछके वाहनसे उतर पड़ा। वह विनय और नयके साथ चला। जड़वादी (वरुण) ने जड़बुद्धि छोड़ दी। उसने परमात्माको अपने हृदयमें धारण कर लिया। वायु ने आदरणीय पर पंखा झाला, रत्नेशन रत्नोंसे उनकी पूजा की। ईशानने ईश कहकर नमन किया। चन्द्रमाने अमृतसे स्नान करवाया। सूर्यने भी मोहान्धकारका नाश करनेवाले शूरवीर जिनका

३. P सुकुसुम । ४. A दसदिसु सुधुम्; P दसदिसु सुधुपुत्रा^० । ५. AP सुरवर यिय । ६. A^० भाविहिं; P^० भावेहिं । ७. A णाणाविहभासिहिं, P णाणाविहभासेहिं ।
७. १. P सइयुइ^० । २. AP जडवयणा । ३. A सुसुहासूई; P सुसुहासूई^० ।

धरणिदे धरणिसमुद्रणु
इय बहुगिन्वापहि बंदियच

पत्थिउ महुं देव तुहुं जि सरणु ।
ध्रुवुं संभवु संभवु सहियच ।

घत्ता—पुणु पुणु पणवेपिणु घर औपेपिणु दिण्णु सुसेणासुंदरिहि ॥ १०
गुरुचरणइं अंविचि सुक्किउ संचिवि गउ सुरवइ सुरवरपुरिहि ॥७॥

८

कणयच्छवि सुहुं सलक्खणउ
अंगउ लायणमहिड्डियच
जसु आयत्तउ सयमेव विहि
जसु अंगि दुद्ध लोहिउं गणमि
जसु गृणपरिमाणु पेय लहंवि
अच्छरणरामौणंदणहु
कीलंतहु असरवरेहि सहुं
घरघडियारयदडेण ह्य
पइरत्तउ पेच्छिवि तरुणियणु
उवणेपिणु नुवंडकुमारिगणु

जहि दीसइ तहिं जि सुहावणउ ।
चउवावसयाइं पवड्डियच ।
सो किं वणिणज्जइ रुचणिहि ।
सो खमवंतउ किं किर भणमि ।
सो सूहउ हउं किरै किं कहंवि ।
वेहुं तेत्थु सुसेणाणंदणहु ।
मुजंतहु रायकुमारसुहुं ।
पुवहं पण्णारहलक्ख गय ।
आहं डलु आयउ तहिं वि पुणु ।
पारंभिउ रायहु परिणयणु ।

घत्ता—तूरहि वजंतहिं गलगजंतहिं तियसेहिं किं ण विसंठु महि ॥

जिणणाहु ण्हवंतिहिं चारि वहंतिहिं किं जाणहुं सोसिउ उवहि ॥८॥

ध्यान किया। धरणेन्द्रने प्रार्थना की—“हे धरतीका उद्धार करनेवाले देव, आप ही मेरे लिए धारण हैं।” इस प्रकार देवोंने उनकी वन्दना की और निश्चित रूपसे ‘सम्भव-सम्भव’ शब्दका उच्चारण किया।

घत्ता—बार-बार प्रणाम कर और घर आकर, (उन्होंने) सुन्दरी सुषेणाको बालक दे दिया। गुरुके चरणोंकी वन्दना कर और पुण्यका संचय कर इन्द्र अपने स्वर्ग चला गया ॥७॥

८

स्वर्ण रंगवाले और लक्षणोंसे युक्त वह जहाँ दिखाई देते वही सुन्दर लगते। लावण्य और ऋद्धियोंसे सम्पन्न उनका शरीर चार सौ धनुष ऊँचा था। जिसके अधोन स्वयं विधाता हैं, उस रूपनिबिका क्या वर्णन किया जाये? जिसके शरीरमें मैं रक्तको दूध गिनता हूँ, उनको मैं क्षमावात् किस प्रकार कहूँ? मैं जिसके गुणोंके परिमाणको नहीं पा सकता, उन्हें मैं सुभग किस प्रकार कहूँ? अप्सराओं, मनुष्यों और स्त्रियोंको आनन्दित करनेवाले, सुषेणादेवीके पुत्र (सम्भव) के देवोंके साथ क्रीडा करते हुए, और राजकुमारका सुख भोगते हुए, घरकी घड़ीके दण्डसे आहत पन्द्रह लाख पूर्व वर्ष निकल गये। पतिमें अनुरक्त युवतीजनको देखकर, इन्द्र दुबारा आया। राजाओंकी कन्याओंका समूह देकर उनका विवाह प्रारम्भ किया गया।

घत्ता—वजते हुए तूयों, गरजते हुए देवेन्द्रोंसे क्या धरती विशिष्ट नहीं हुई? जिननायका अभिषेक करते और पानी बहाते हुए क्या जानें कि समुद्र सूख गया ॥८॥

४. A ध्रुव संभव संभव; P ध्रुव संभव संभव । ५. A आवेपिणु ।

८. १. AP महदुदियच । २. A किं किर । ३. A रामावंदणहु । ४. A ता तेत्थु । ५. AP पेक्खिवि

६. T उवणेपिणु । ७. AP पाहहु । ९. P विसइह ।

७

भालयलइ पट्टु चडाविथर.
चितंतहु तासु गणायणइ
पुव्हं परमाचहि संचलिय
तइयहं तहिं दियैहि सुसोहणइ
५ अवलोइवि गयणि विलीणु घणु
वेरगु पहूयउं जिणवरहु
गय भत्ता महुं वि जणति मउ
चामरवार्यं नृनु मोडियउ
सिरि धरियइ-वारिणिवारणइ
१० तहिं अवसरि लोयंतिय अइय
जं इंदियसोक्खु ससुज्जियउं
घत्ता—जो पइ संबोहइ सो संबोहइ सुरहु दीवउ मूढमइ ।
पइं सुइवि गुणुभव सामिय संभव को परियाणइ परमगइ ॥९॥

रायासणि राउ चडाविथर ।
पालंतहु गामेणयरसयइ ।
चालीस चयारि लक्ख गलिय ।
अच्छंतहु सुहुं सणिहेलणइ ।
थिउ महिगयणयणु विसणमणु ।
हरि सजव वि गेति ण सिवपुरहु ।
पहु रह रहंति मुणिधम्ममउ ।
मणु कवणु ण कालं तोडियउ ।
पुणु होंति ण मारिणिवारणइ ।
ते विण्णवंति भसिइ लइय ।
तं चारु चारु पइं बुज्जियउं ।

१०

आणंदु ण हियवइ माइयउ
पुणु पैरिखुद्धहिं देवावलिहिं
थिरदीहरहत्थगलत्थियहिं

पुणु तेथु पुरंदरु आइयउ ।
आहूय दुद्धसल्लिावलिहिं ।
चामीयरघडपहत्थियहिं ।

९

उनके भालतलपर पट्टु बांध दिया गया और राज्यासन पर राजाको बैठा दिया गया । न्याय-अन्यायको चिन्ता करते और सैकड़ों ग्राम-नगरोंका पालन करते हुए, उनकी परमायुके चालीस लाख पूर्व वर्ष और बीत गये । एक दिन, तब, अपने सुन्दर प्रासादमें सुखसे बैठे हुए उन्होंने आकाश में लुप्त होते हुए मेषको देखा । वह धरतीमें आखिं गड़ाकर उदासमन हो गया । जिनवरको अत्यन्त वैराग्य हो गया । (वे सोचते हैं) कि तेजसे तेज वेगवाले भी अश्व शिवपुर नहीं ले जा सकते । मदवाले गज भी मुझमें मद उत्पन्न नहीं करते, रथ मुनिधर्ममय पथका अवरोध करनेवाले होते हैं, चामरोंकी हवासे राजा मोड़ दिया जाता है, बत्ताजो संसारमें कालसे कौन नहीं तोड़ दिया जाता । सिरपर धारण किये गये छत्र, फिर मृत्युका निवारण करनेवाले नहीं होते । उस अवसरपर लौकान्तिक देव आये, उन्होंने भक्तिके साथ निवेदन किया, “जो आपने इन्द्रिय-सुखोंका त्याग किया है, वह आपने अच्छा किया ।

घत्ता—जो आपको सम्बोधित करता है, वह मूढमति दीपक, सूर्यको सम्बोधित करता है ? हे गुणसम्भव स्वामी, आपको छोड़कर और कौन परमगति को जान सकता है ?” ॥९॥

१०

जिसके हृदयमें आनन्द नहीं समा सका ऐसा इन्द्र फिर आया । पुनः दूष और जलोंकी (कलश पंकियां) लानेवाली-बढ़ती हुई देवपंकियोंने अपने लम्बे स्थिर हाथोंसे गिरती हुई स्वर्ण-

९. १. P पट्टु । २. A नयरगामसयइ । ३. A दिवसि । ४. AP सहं । ५. A पहूवउं । ६. AP णिवु ।
७. AP गुणणव ।
१०. १. AP परिखुद्धिहिं । २. A आहूउ ।

संपह्वैविच णविच पोमाइयत्
 दुम्मोर्धं सुएप्पिणु रज्जंगह
 परमेससु पणइप्पिपाणपिच
 बहुखगामाणियफलसाडयत्
 परिसेसेप्पिणु सिरिरर्भणित्त
 चप्पाडित्त केसकलात्त किह
 सङ्खुसुमु सभसलु सु करिवि करि
 किच रोसपसायह^{१०} णिक्खवणु
 उववासु करेप्पिणु सावसरि
 सावस्थिह चरियामग्गु किच

वत्थालंकारविराइयत् ।
 सिद्धत्थयसिवियारुहु पडु ।
 णरत्तयरहिं तियसहिं वहिवि णित्त ।
 णंदणवणु गंपि सहैउयत् ।
 पणवेप्पिणु देवें सिद्धगुरु ।
 भवकुहुंमूलपण्णार जिह ।
 सइरमणें चित्तत्त भयरहरि ।
 १० रायहं सहसं सहुं णिक्खवणु ।
 वीयइ दिणि दिणयरत्तरपसैरि ।
 १३ देविदत्तणिवभवणि थित्त ।

घत्ता—सुरवु मंदाणिलु घणवैरिसियजलु सुरहिच मणिकोडिहिं सहिउ^{११}
 दायारत्त पुज्जित्त दुंदुहि वज्जित्त^{१४} दाणपुण्णु^{१५} देवहिं सुहिउ^{१६}

११

द्वैतेण ण संकहु चित्तवैच
 जं संजमजोग्गत्त बुद्धियत्तं
 तं भुंजइ सबवीरोयणत्तं

जं अण्णहु कासु वि णिम्मविच ।
 दहिसप्पिखीरत्तल्लु विद्ध्यत्तं ।
 पडिसेहियदप्पुंकोयणत्तं ।

कलशोंकी कतारोंसे भगवान् को स्नान कराया, और वस्त्रालंकारोंसे अलङ्कृत कर उनको स्तुति की। दुर्मोहको उत्पन्न करनेवाले राजरूपी ग्रहको छोड़कर सिद्धार्थ नामक शिविकामे बैठकर प्रणयिनियोंके प्राणप्रिय परमेश्वर मनुष्य, विद्याधरों और देवोंके द्वारा ले जाये गये। जिसके फलोंका स्वाद अनेक पक्षियोंके द्वारा मान्य है, ऐसे सहैतुक नन्दनवनमें जाकर देवने लक्ष्मी और स्त्रियोंका अपने चित्तमें त्यागकर तथा सिद्धगुरुको प्रणाम कर अपने केश इस प्रकार उखाड़ लिये मानो संसाररूपी वृक्षकी जड़ोंको ही उखाड़ दिया हो। पुष्पों और भ्रमरों सहित उन्हें अपने हाथमें लेकर शचीरमण (इन्द्र) ने क्षीरसमुद्रमें फेंक दिया। उन्होंने क्रोध और प्रसादका संयम कर लिया और एक हजार राजाओंके साथ संन्यास ग्रहण कर लिया। उपवास कर पारणा व्रतामें, दूसरे दिन, सूर्यको किरणोंका प्रसार होनेपर वह चयंके लिए श्रावस्तीमें गये और इन्द्रदत्त राजाके घरमें ठहरे।

घत्ता—देवशब्द, मन्दपवन, सुरमित मेघोंसे बरसा हुआ जल, रत्नोंके साथ दातारकी पूजा हुई। नगाड़े बजे और देवोंने दान पुण्यका सम्मान किया ॥१०॥

११

(आहार) देते हुए उसने संकटको चिन्ता नहीं की, जो कि किसी दूसरेके निमित्तसे बनाया गया था, और मुनिके लिए उपयुक्त समझा गया था। दही, घी, खीर और तेलसे रहित था,

३. A सो ण्विच । ४. A दुम्मोह । ५. P रज्जु गह । ६. P णरत्तयरतियसहिं । ७. P adds after this: आगहणमासि सियकुहुयदिणि, सिलत्तवरि णिहत्त उद्यइप्पि । ८. A रमणियत्तं । ९. A मूल पण्णार । १०. A रोसकसायहं । ११. AP रायहंससहसं । १२. A कयपत्तरि । १३. P देवेंदत्तं । १४. A वरसियं । १५. AP गज्जित्त । १६. A दाणवणु ।

११. १. A चित्तियत्तं । २. A हुक्खुक्कोहणत्तं ।

	गहणंति कर्हि वि अहणिसु गमइ	जंपइ ण किं पि सं ^३ संसमइ ।
५	विहरइ मणपञ्जवणाणवरु	विसमें जिणकप्पे जिणपवरु ।
	तउ एंअ करंतहु झीणाइं	अवरइवरिसइं वोळोणाइं ।
	कत्थियसियपक्खिअ चअत्थिदिणि	अवरणिइ जम्मरिक्खिअ वियणि ।
	छट्टेणुववासं णिट्ठियहु	सुविसालसालतलि संठियहु ।
	गइ पढमि बीइ सुक्कुग्गामणि	अअकम्मञ्जुलक्खयसंकमणि ।
१०	अपणणसं केवलु केवलहि	गयणोवडंतकुसुमंजलिहि ॥
	घत्ता—तहु जाएं णाणं णेयपमाणं जे केण वि णं वि चित्तविय ॥	
	ते विवरि अहीसर महिहि महीसर सग्गि सुदिं वि कंयविय ॥११॥	

१२

	खगामिणा	ससामिणा ।
	समेयथा	अमेयथा ।
	अमाहरा	रमाहरा ।
	मल्लासयं	णियासयं ।
५	कुणंतया	शुणंतया ।
	सुणीसरं	सरो सरं ।
	ण संघय	ण विघय ।
	ण जम्मि सा	मलीमसा ।
	रइच्छिहा	कया विहा ।
१०	महाजसं	तमेरिसं ।
	महाइया	पराइया ।

ऐसा, दर्पकी उत्कण्ठाओंका निषेध करनेवाला यौवोरके भातको उन्होंने खा लिया। गहन वनमें वह कहीं भ्रमण करते हैं, वह कुछ भी नहीं बोलते, आत्माका उपशमन करते हैं, मनःपर्यय ज्ञानके धारो वह जिनप्रवर विषम जिनकल्पमें भ्रमण करते हैं। इस प्रकार तप करते हुए उनके क्षीण चौदह वर्ष बीत गये। तब कार्तिक शुक्ला चतुर्थीके दिन, जन्मकालीन मृगशिरा नक्षत्रमें अपराह्णके समय, छठे उपवासके साथ, एक विशाल झाल वृक्षके नीचे बैठे हुए प्रथम और दूसरी गतिमें शुक्लध्यान उत्पन्न होनेपर चार घातिया कर्मोंके कुलका क्षय कर लेनेपर, जिनके ऊपर आकाशसे कुसुम वृष्टि हो रही है ऐसे उन केवलीके लिए केवलज्ञान उत्पन्न हो गया।

घत्ता—जिसका प्रमाण नहीं है, ऐसे उत्पन्न केवलज्ञानके द्वारा किसीके भी ह्रास नहीं कंपाये गये, पाताल लोकके नागेश्वर, धरतीके राजा और स्वर्गके देवेन्द्र भी कम्पित हो उठे ॥११॥

१२

अपने स्वामीके साथ विद्याधर प्रचुर संख्यामें इकट्ठे हुए। अलक्ष्मीका नाश करनेवाले लक्ष्मीके धारक, अपने चित्तको मलरहित करते हुए तथा जिनपर कामदेव न तो बाणका सन्धान करता है, और न बेधता है, ऐसे मुनीश्वरकी स्तुति करते हुए, और जिन मुनीश्वरमें मलिन रति-कामनाका अन्त कर दिया गया है, महायशवाले ऐसे मुनीश्वरके पास, वे महा-

३. A सं सम्ममइ । ४. A ण वि चित्तिय; P ण वि चित्तविया । ५. A वि कंयिय; P वि कंयविया ।

समासुरा	सुरासुरा ।	
सिमुग्गया	ससुग्गया ।	
रसुद्धुरा	इमी गिरा ।	
सुसाइया	अणाइया ।	१५
सुवत्तया	अवत्तया ।	
रसंक्रिया	रसुज्झिया ।	
सरुवया	अरुवया ।	
सुगंधया	अगंधया ।	
सकारणा	अकारणा ।	२०
ससंभवा	असंभवा ।	
ससंगया	असंगया ।	
रयासवं	पुणो णवं ।	
द्वैयाणिही	तवोचिही ।	
अहंगया	अहं गया ।	२५
ण ते णया	वरायया ।	
सरायया	समायया ।	
खयं गया	महादिया ।	
सइंदिया	अण्णदिया ।	
णिविंदिया	णिवंदिया ।	३०
पसाहिओ	पवोहिओ ।	
कुक्कम्मदं	सुयंतं ।	
कहंति जे	कुसुद्धि ते ।	
णंगेसु या	पुरीसुं या ।	
पहंतुं मा	ण ताण मा ।	३५

आदरणीय सुन्दर सुर और असुर आये। उनके मुखसे सभी दिशाओंमें व्याप्त होनेवाली रससे परिपूर्ण यह वाणी निकली—“आप पर्यायकी अपेक्षा आदि हैं, और द्रव्यकी अपेक्षा अनादि। आप अत्यन्त व्यक्त हैं और अव्यक्त हैं, आप रससे युक्त हैं, और रससे रहित हैं, आप स्वरूपवान् हैं और अरूप हैं, आप गन्धयुक्त हैं और गन्धहीन हैं, आप कारणसहित हैं और अकारण हैं। आप संसारसहित हैं और संसारसे रहित हैं, ज्ञानसे युक्त होकर भी परिग्रहसे रहित हैं, कर्मोंका आश्रय होनेपर भी आप नये हैं। आप दयाकी निधि और तपका विधान करनेवाले हैं। भंगसे रहित हे देव, जो वेचारे देव आपको नमन नहीं करते वे नरकको प्राप्त होते हैं। रागसहित दूसरोंको ठगनेवाले (मायावी कपटी) महाद्विज क्षयको प्राप्त होते हैं। द्रव्येन्द्रियोंसे सहित, भावेन्द्रियोंसे रहित, मनुष्योंसे वंचित जो कुक्कर्मोंका प्रतिपादन करनेवाले शास्त्रान्तरोंको कहते हैं वे खोटी बुद्धिवाले होते हैं। जो पहाड़ोंमें और नगरियोंमें उन्हें पढ़ते हैं (शास्त्रोंको पढ़ते हैं) उन ब्राह्मणों-

२. P adds after this: सत्त्वया, अत्त्वया। ३. AP लगंधया। ४. P दयामही। ५. PA णिवदिया। ६. A omits this foot। ७. P कुक्कम्मदं। ८. AP णणसु वा। ९. P पुरेसु वा। १०. A पहंतु मा।

	सुसासया ^{११}	गिरंसया ।
	सुगौरए	तुहारए ।
	अदुणए	बुहा मए ।
	कञ्जमा	महाखमा ।
४०	चरंति जे	लहंति ते ।
	महुंणइं	परंगइं ।
	सुहं गया	हयावया ।
	गिरामया	सरामया ।
	गिरंजणा	गमो जिणा ।

४५ घत्ता—कथंमौणवखंभहिं सारसरंभहिं वैलीहुंमणिवेइयहिं ॥
वरधूलिसालहिं गण्णसालहिं गोउरयूहहिं चेइयहिं ॥१२॥

- १३

	जहिं समवसरणु सुरणिम्मविउं	गुरु कंठीरवविदुरे ठविउं ।
	जहिं सुविहावलउं विलिविकरु	अलिउंविउफुल्ले असोयतरु ।
	जहिं गहणिवडिउं पसूयपवरुं	आहंढलडिडिसु सुयइ सरु ।
	जहिं छत्तइं तिणिण समुग्भिभयइं	विविहइं चिधइं चमरइं सियइं ।
५	जक्खिदमउंउंसिहरुद्धरिउ	जहिं धम्मचक्कु आराफुरिउ ।
	जहिं वंति गंति गण्णंति सुंर	विंमंयसरपरवस थक्क णरं ।
	तहिं संणिसण्णु सो परमसुणि	सुणिवयणविणिग्गंउ दिउवहुणि ।

को शाश्वत और अंशरहित अर्थात् सम्पूर्ण लक्ष्मी नहीं प्राप्त होती। जो लोग तुम्हारे अत्यन्त पवित्र, दुर्नयोंसे रहित मार्गमें चलते हैं, उद्यम करनेवाले अत्यन्त क्षमाशील वे अपनी आपत्तियोंका नाश कर परमगति और सुखको प्राप्त होते हैं। जो निरामय हैं, कामदेवके रोगसे रहित ऐसे निरंजन जिनको प्रणाम करता हूँ ।”

घत्ता—बनाये गये मानस्तम्भों, सारसयुक्त जलों, लता-द्रुम और मणिमय वेदिकाओं, श्रेष्ठ घूलिप्राकारों, नृत्यशालाओं, गोपुर-समूहों और चैत्योंसे सहित—॥१२॥

१३

जहाँ देवनिर्मित समवसरण था। उसमें विशाल सिंहासन रखा हुआ था। जहाँ कान्तिसे सहित, प्रसरित किरणोंवाला, भ्रमरोसे चुम्बित पुष्पवाला अशोक वृक्ष था, जहाँ आकाशसे पुष्प समूह गिर रहा था। इन्द्रका नगाड़ा डिम-डिम वाद्य बना रहा था। जहाँ तीन छत्र उत्पन्न हुए थे, विविध ध्वजचिह्न और चमर भी। जहाँ यक्षेन्द्रके मुकुटशिखरपर उद्घृत और आशाओंसे विस्फुरित धर्मचक्र था। जहाँ देवता गाते-बजाते नाच रहे थे। त्रिसमय रससे भरे हुए लोक स्थिर रह गये। ऐसे उस समवसरणमें वह परममुनि विराजमान थे। मुनिवरके मुखसे दिव्यध्वनि

११. A सुसंसाया । १२. APT महुणइं । १३. A माणवहरखंभहिं; K omits कयं । १४. P बली ।
१३. १. A विदुर । २. AP फुल्ल । ३. गिवडिय । ४. AP पवर । ५. A सडल । ६. AP सुरा ।
७. A विभिय । ८. AP यरा । ९. P विणिग्गय ।

भृगुणि साहइ जणजम्भंतरइं
भृगुणि साहइ मणुयदेवसुहइं
भृगुणि साहइ जीवरासिद्धइं

भृगुणि साहइ^१ भूसुवणंतरइं ।
भृगुणि साहइ^२ णरतिरियदुहइं ।
भृगुणि साहइ बंधमोक्खफलइं ।

१०

घत्ता—भृगुणि सुणिवि पबुद्धहं जाइविसुद्धहं गिगंथहं मडलियकरहं ।
जायउ गयगामिहि संभवसामिहि पंचुत्तर सउ गणहरहं ॥१३॥

१४

तहिं चारुसेणु पहिलउ भंणिवि
दोसहसइं अवरु दिवद्धु सउ
सयतिउ सलक्खु सिक्खुयैमइहिं
परमीहिणाणघारिहिं मियइं
पण्णारहसहसइं केवलिहिं
सहसाइं रिसिदहं वसुसयइं
सउ सँडुहु सहासइं तवसमइं
सउ सयइं समउ सयवीसइइ
जायइं वम्मीसरदारोहं
लक्ख्वाइं तिण्णि रइवज्जियहं
सावियहं लक्ख पंच जि भंणमि

पुणु गणसुणि मेल्लिवि सुणि गर्णोवि ।
पुव्वंगंधरहं थिउ जिणिवि मउ ।
एक्कूणतीससहसइं जइहिं ।
छहसयइं रंधसहसंक्रियइं ।
एक्कूणतीस पसमियकलिहिं ।
वेउव्वणरिद्धिहिं कयवयइं ।
मणपज्जवधरिहिं धरियसमइं ।
जइवाइहिं संखे करवि मइइं ।
दुइलक्खइं एव भडाराहं^{१०} ।
दहगुणिय तिण्णि सहसज्जियहं ।
सावयइं तिण्णि ते हउं^{११} मुणमि ।

५

१०

निकलती है। वह ध्वनि जो जन्म-जन्मान्तरका कथन करती है, वह ध्वनि जो भू और भुवना-न्तरोंका कथन करती है, ध्वनि जो मनुज और देवोंके सुखोंका कथन करती है, ध्वनि जो नरक और तिर्यंचोके दुःखोंका कथन करती है, ध्वनि जो जीवकुलराशिका कथन करती है, ध्वनि जो बन्ध और मोक्षफलोंका कथन करती है।

घत्ता—ध्वनि सुनकर प्रबुद्ध हुए जातिसे शुद्ध निर्ग्रन्थ हाथ जोड़े हुए एक सौ पाँच गणघर गजगतिसे गमन करनेवाले सम्भव स्वामीके गणघर हुए ॥१३॥

१४

उनमे चारुसेनको पहला कहकर, फिर गणप्रमुखको छोड़कर मुनियोंको गिनाता हूँ। दो हजार एक सौ पचास मदको जीतनेवाले पूर्वधारी थे। एक लाख उनतीस हजार तीन सौ शिक्षा-मतिवाले शिक्षक मुनि थे। नौ हजार छह सौ परम अवधिज्ञानके धारी थे। पन्द्रह हजार केवल-ज्ञानी थे। पापको नष्ट करनेवाले उन्नीस हजार आठ सौ विक्रिया ऋद्धिके धारक मुनि थे। बारह हजार एक सौ पचास शान्तिको धारण करनेवाले मनःपर्ययज्ञानी उनको सभामें थे। वादी मुनियोंकी संख्या में बारह हजार कहता हूँ। इस प्रकार कामदेवको जीतनेवाले आदरणीय दो लाख मुनि थे। रतिसे रहित तीन लाख तीस हजार आर्यिकाएँ थी। पाँच लाख आर्यिकाएँ थी, तीन लाख श्रावक थे। उनको मैं जानता हूँ।

१०. P भुवणु अणतरइं । ११. A णरयतिरिय^० ।

१४. १. P भणमि । २. A गणिवि । ३. A सिक्खुव^०, P सिक्खयं । ४. AP सद्ध । ५. P सयवीमइह ।
६. AP करमि संखे । ७. P मइह । ८. A जाया । ९. A वारयहं । १०. A भडारयहं । ११. AP
मुणमि । १२. AP भणमि ।

घत्ता—अह्णिसु कयसेवहं चरविहदेवहं देविहिं संख ण दीसइ ॥

संखेज्जतिरिक्खहं इच्छियसोक्खहं धम्मो अधम्मो^१ वि भासइ ॥१४॥

१५

- महि विहरिचि भवियतिमिरु लुहिवि
 तर्हि दोगिण पक्ख तणुचाउ किउ
 दिक्खहिं लग्गिचि पुण्वहं तणउं
 बद्धारहिं पुण्वहं धित्ताइं
 ५ मासम्मि पहिल्लइ पक्ख सिइ
 णियज्जम्मरिक्खि संभाइयउ .
 छेइल्लउ सुक्खल्लणु धरिचि
 पुग्गलपरिणामह्णवणवहु
 ठिउ अट्टमपुइइहि अट्टगुणु
 १० सुरसुक्खसुमेरयमहमहिउ
 वउ वीयरायरायहु लल्लिउ
 लोएहिं पवित्त पावरहिय
 संमेयहुं सिहंरु समारुहिवि ।
 रिसिसैहसें सहुं षडिमाइ थिउ ।
 चोइहंवरिसूणउं लक्खु गउ ।
 लक्खाइं सट्ठि अणुहुत्ताइं ।
 छट्ठइ विणि मज्झणहइ ल्हसिइ १
 अवि घाइचउक्कु वि घाइयउ ।
 किरियाविच्छित्ति ष ति करिवि ।
 गउ सुक्कउ संभवु संभवहु ।
 महुं पसियउ णिक्खलु णाणतणु ।
 दीवेहिं गंधधूवहिं महिउ ।
 अग्गिदमउडमणिसिहिज्जलिउ ।
 अरुहंगभूइ सीसें गहिय ।

घत्ता—दिन-रात सेवा करनेवाले देवों और देवियोंकी संख्या दिखाई नहीं देती । सुखको चाहनेवाले उसमें संख्यात तिर्यच थे । वह धर्म-अधर्मका कथन करते हैं ॥१४॥

१५

धरतीपर विहार कर, भव्य लोगोके अन्धकारको दूर कर सम्मेदशिखर पर्वतपर आरूढ़ होकर उन्होंने वहाँ दो पक्ष तकके लिए एक हजार मुनियोंके साथ प्रतिमायोग धारण कर लिया । दोषाके समयसे लेकर चौदह वर्ष कम एक लाख पूर्व वर्ष बीतनेपर अपनी बँधी हुई आयुके साठ लाख पूर्व वर्ष भोगकर छोड़ दिये । चैत्र माहके शुक्लपक्षकी छठीके दिन मध्याह्न होनेपर अपने जन्मनक्षत्रमे सम्भावित चार घातिया कर्मोका नाश कर दिया । छेदक शुक्लध्यान धारण कर, शीघ्र सूक्ष्म क्रिया विप्रतिपत्ति कर, उत्पन्न होनेवाले नये-नये पुद्गल परमाणुओंसे युक्त होकर सम्भवनाथ मोक्ष चले गये । आठ गुणोंसे युक्त वह, आठवी भूमि (सिद्ध शिला) मे जाकर स्थित हो गये । निष्पाप ज्ञानशरीर वह मुझपर प्रसन्न हो । देवोंके द्वारा युक्त कुसुमांजलियोंके परागसे महकते हुए, दीपों और धूपोसे पूजित, वीतरागराजका सुन्दर शरीर, अग्निन्द्रोके द्वारा अपने मुकुटकी आगसे जला दिया गया । लोगोने पवित्र, पाप रहित अर्हतके शरीरकी भस्म अपने सिरपर ग्रहण की ।

१२. AP अहम्मु वि हासइ ।

१५. १. A सिहरि । २. P रिसिसहसें षडिमाजोए ठिउं । ३. A चउवहं ; P वारहं । ४. AP वित्ताइं ।

५. AP अणुहुत्ताइं । ६. P इय घाइं । ७. A परिमाणहु । ८. AP पुहविहि ।

घत्ता—जिणणिन्वाणुच्छवि सच्छरु सविह्वि सुरवइ भरहु पणच्चि ।
गड णियंघररंगहु सिंगारंगहु पुप्फदंतणियरच्चि ॥१५॥

इय महापुराणे विसट्टिमहापुरिसाण्णालंकारे महाकहपुप्फर्यंतविरहए
महामन्वमरहाणुमण्णिणए महाकव्हे संभवणिन्वाणगमर्णं णाम
चाळीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ४० ॥

॥ संभवचरियं समत्तं ॥

घत्ता—जिन भगवान्के निर्वाण-उत्सवमें, अप्सराओं और अपने विभावोंके साथ कान्तिमान् इन्द्र खूब नाचा । फिर पुष्पदन्त (नक्षत्रों) के समूहसे अचित वह शृंगारस्वरूप अपने घरकी रंगशालाके लिए चला गया ॥१५॥

इस प्रकार श्रेष्ठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एवं महामन्य मरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका
चाळीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥४०॥

सन्धि ४१

अहिणंदणु इंदानंदयरु णिदिंदियइं णिवारउ ॥
वंदारयवंदेहिं वंदियउ वंदिवि संतु भडारउ ॥ध्रुवकी॥

१

५	<p>असोकखकंतारयं ण जं च कंतारयं जेणस्स सं गंगयं विइणमलभंगयं सुवणरुइरंगयं विहंसियणिरंगयं रयं परमघोरयं</p>	<p>हयभवोहकंतारयं । णहवणयन्मि कं तारयं । कुणइ जस्स संग गयं । हुंणइ वड्डमाणं गयं । जसपण्णभूरंगयं । जणियभावाणारंगयं । असमसंपयावारयं ।</p>
---	---	--

सन्धि ४१

इन्द्रको आनन्द देनेवाले निन्दित इन्द्रियोंके द्वारा निवारित देवसमूहके द्वारा वन्दित सन्त भट्टारक अभिनन्दनकी मैं वन्दना करता हूँ ।

१

जो दुखरूपी जलसे तारनेवाले और जन्मसमूहरूपी कान्तारको नष्ट करनेवाले हैं, जो स्वयं कान्तामे रत नहीं है, जिनके अभिषेककर्मका जल स्वच्छ है, गंगासे उत्पन्न और उनके शरीरसे प्राप्त जो जल लोगोंके लिए सुख उत्पन्न करता है । मलोंका घातक जो बढ़ते हुए रोगोंका नाश करनेवाला है, जिनके शरीरकी कान्ति स्वर्णके समान है, जिनके यशसे समस्त भूमि-मण्डल परिपूर्ण है, जिन्होंने कामदेवको ध्वस्त कर दिया है, जिन्होंने सीलह कारण भावनाओंमें राग पैदा किया है, जो आत्मरत और परम अरौद्र हैं । जो क्रीषरूपी सम्पत्तिका निवारण करने-

Mss. A and P have the following stanza at the beginning of this Samdhi:—

वरमकरोदपारतरविवरमहिंकिरणेन्दुमण्डलं
यदपि च जलधिवलयमधिलंब्य विधेस्तदनन्तरं दिशः ।
विगलितजलपयोदपटलद्युति कथमिदमन्यथा यशः
प्रसरदमादमल्लकदनाभारत भुवि भरत साप्रतम् ॥१॥

A reads किरणद्विमण्डलं in the first ; P reads विधिसूदनन्तरं दिशः । P repeats the stanza at the beginning of XLVII. A gives it only here. K does not give it here or there.

१. १. AP विदेहि । २. AP add जं before जणस्स । ३. AP हणइ ।

सुजायमसरीरिणं
जमीसमसरक्षियं
अहं तमहिणंदणं
भणामि तववसियं
वणे चड्डलवाणरे
मुण्ड मा णा सणं
इमं सुकियवासणं

णिहणिरुणंससरीरिणं ।
गुणणिसेणियार्हि चियं ।
पणविरुण धीणंदणं ।
किर कहं तिणा ववसियं
सुहयसाणिणीवाणरे ।
मुण्ड पावणिण्णासणं ।
लहउ सम्मईसासणं ।

१०

१५

धत्ता—जिब सुयकेवलि जिब तियसवइ जिंवं पुणु शुणउ फणीसर ॥
हउं णरु जीहासहसेण विणु किं वण्णवि परमेसर ॥१॥

२

सालतालतालीदुमोहए
संचरंति करिमयरसंतई
तीई तीरि दाहिणइ पविउले
वारिवाहधाराहि सित्तए
छेत्तवालिणीसइसंगए
वेकरंतवहुदुद्धगोहणे
सवधण्णछण्णे अणूसरे

मेरुसिहरिपुंवे विदेहए ।
वहइ गहिर सीया महाणई ।
चूयचारफलघुलियसुंविउले ।
मुग्गमासजववीहिछेत्तए ।
दिण्णकण्णसंठियकुंरंगए ।
वच्छमहिसवसहिदसोहणे ।
सरतरंतकिणरवहूसरे ।

५

वाले हैं, जो सुजात सिद्ध और दारिद्र्यरूपी ऋणका नाश करनेवाले हैं, ईश्वर जो देवोंके द्वारा पूज्य हैं, जो गुणरूपी सीद्धियोंसे समृद्ध हैं, ऐसे बुद्धिको बढ़ानेवाले अभिनन्दनको प्रणाम कर उनके व्यवसित (चरित) को कहता हूँ कि जिसकी सन्ताने चेष्टा की। जिसमें चट्टल वानर हैं, और जो सुन्दर मानिनियोंके लिए पीड़ाजनक है, ऐसे संसाररूपी वनमें मनुष्य शब्दको न कहे, (चुप रहे) तथा पापका नाश करनेवाले उस शब्दको (कथान्तरको) अवश्य सुने, जिसमें पुण्य (सुकृत) की वर्षा है, तथा सन्मतिके शासनको प्राप्त करे।

धत्ता—जिस प्रकार श्रुतकेवली इन्द्र, और जिस प्रकार नागेश्वर स्तुति करता है, मैं मनुष्य, हजारों जीमोंके बिना परमेश्वरका वसा वर्णन कैसे कर सकता हूँ ? ॥१॥

२

सुमेरुपर्वतके पूर्वमें शाल और ताल तथा ताली वृक्षोंके समूहसे युक्त विदेह क्षेत्रमें गजों और मगरोंकी परम्परा जिसमें संचरण करती है, ऐसी गम्भीर सीता नदी बहती है। उसके विशाल दक्षिणी किनारेपर मंगलावती भूमिमण्डल (देश) है, जिसके आन्न और चार वृक्षोपर विशाल पक्षिकुल आन्दोलित है, जो मेघकी धाराओंसे अभिषिक्त है। जिसमें मृग, उड्ड, जौ और धान्यके खेत हैं। जो क्षेत्रोंकी रखानेवाली बालिकाओंके शब्दसे युक्त है, जिसमें हरिण कान दिये हुए बैठे हैं, अत्यधिक दूध देनेवाला गोधन जिसमें रंभा रहता है, जो बछड़ों, महिषों और वृषभेन्द्रोंसे शोभित है, जो सब प्रकारके धान्योंसे आच्छन्न और उपजाऊ है। जिसके सरोवरोंमें किन्नर वसुएँ

४. A °ससरीरिणं । ५. P गुणणिसेणिं । ६. A चड्डलवाणरे; P चवलवाणरे । ७. A जिण पुणु ।

२. १. A पुव्वविदेहए । २. A संचरंतं । ३. A ताइ । ४. P पविउले । ५. A मुग्गमाहं । ६. P छत्तए । ७. A वेकरंतवहुदुद्धं; P वुक्करंतं ।

	कंजपुंर्लरुंजंतमहुलिहे	कयलिललियलवलीलयानिहे ।
	णिसुचमहुरपियमाहवीसरे	पहियहियचगयविसर्मसरसरे ।
१०	उच्छुवीलणुल्लियरसजले	मंगलावईभूमिसंडले ।
	कोट्टुवट्टुलट्टालदुगमं	रुद्धकुलुद्धारिसंगमं ।
	खोलखाइयावूढकोमलं	पंचवैष्णकेलिल्लिचंचलं ।
	मणिराणंसुमालाविरोहियं	कूर्वेदीहियावाविसोहियं ।
	कणयन्नद्वियन्नरपंतिपिंगलं	णिञ्चमेव संगीयमंगलं ।
१५	अभियराचरिद्वीपपवट्टुणं	रयणसंचयं णाम पट्टुणं ।
	तत्थ वसइ राया महावलो	सुयवलि व्व घीरो महावलो ।
	जत्स लच्छिकंता उरत्थले	रमइ कित्तिरमणी महीयले ।
	दीहकालमवियलंमणोरहं	मुंजिळण रज्जं रमासुहं ।
	किं कुणोमि णिञ्चं परासुहं	हो सुयामि इणमो परासुहं ।
२०	माणसं दमेणं णियंतियं	एम तेण सहसा विंचितियं ।

घत्ता—घणवालहु बालहु णियसुचहु विरइवि पट्टुणिवंचणु ॥

सो पासि विमलवाहणजिणहु जायच राउ तवोइणु ॥२॥

तीरती हैं, जहाँ कमलोकें समूहपर अमर गुंजन कर रहे हैं, जिसमें कदलियों और लवली लताओंके सुन्दर लतागूह हैं, जिसमें कोयलोकें मयूर स्वर सुनाई दे रहे हैं, जहाँ पयिकोंके हृदय कामदेवके विषम तीरोसे आहत हैं, जिसमें गधोंके पेरनेसे रसरूपी जल उछल रहा है। उसमें (मंगलावती देशमें) रत्नसंचय नामका नगर है, जो परकोटों और गोल-गोळ अट्टालिकाओंसे दुर्गम है। जिसमें क्रुद्ध और लोभी शत्रुओंका समूह अवरुद्ध है, जो कोटरों और खाइयोंसे व्याप्त और कोमल है, जो पांच रंगोंकी पताकाओंसे चंचल है, जो मणिराणोंकी किरणमालाओंसे सुशोभित है, और कूप और दोष वापिकाओंसे सुशोभित है, जो स्वर्णनिर्मित गूह पंक्तियोंसे पीला है, और जिसमें सदैव संगीत और मंगल होते रहते हैं, जिसमें अभित राव्यवैभव बढ़ रहा है। उसमें (रत्नसंचय नगरमें) राजा महावल नामका राजा निवास करता था, जो बाहुबलिके समान धीर और महाबली था। जिसके उरत्थलमें लक्ष्मीकान्ता रमण करती थी, और महीतल पर कीर्तिरूपी रमणी। लम्बे समय तक निर्विघ्न मनोरथ राज्य और रमासुखका भोग करनेके बाद एक दिन उसने सहसा विचार किया कि मैं नित्य दूसरोंके प्राणोंका घात क्यों करता हूँ ? हा, मैं इन अत्यन्त अशुभ (कामोंको) छोड़ता हूँ। मैं अपने मनको संयमसे नियन्त्रित करता हूँ।

घत्ता—अपने पुत्र बालक घनपालको पट्टु बांधकर, वह राजा विमलवाहन जिनके पास जाकर मुनि हो गया ॥२॥

८. A पुंजरमरत्तं । ९. P विसमसरिसरे । १०. A सञ्जोलणुं ; P उच्छुवीलणुं । ११. A कोट्टु-
वट्टुलट्टालदुगमं, P कोट्टुवट्टुलट्टालदुगमं । १२. P क्रुद्धकुलुद्धारिसंगमं । १३. A पंचवैष्णकेलिल्लि ।
१४. P दीवियां । १५. A पवट्टुणं । १६. A P मविलयं । १७. A मणोहरं । १८. A
रमाहरं । १९. P कुणोमि । २०. हो ण जामि ।

३

सो णिगंधु गंधु^१ ण समीहइ
ण पसंसाइ करइ पहेसिचं मुहुं
दूसंतउ पैरु पिसुणु ण दूसइ
लाहालाहइ जीवियमरणइ
जिणिदि कुहेउवाय णयचंडहं
एयारह अंगई अवगाहिवि
बंधिवि कयसोलहकारणहलु
णिहणयालि अणसणु अन्मसियउं
कामकोहघरणीरुह खंडिवि
णाणसासु वद्धारिउ चंगउं

सणियउं वियरइ पावहु बीहइ ।
णउ केण वि णिदिउ मण्णइ दुहुं ।
हिंसंतउ मणावि णउ हिंसइ ।
समु जि समणु संठिउ समचरणइ ।
तिणिण तिउत्तरसंय पासंडहं ।
दंसणु सुद्धि वुद्धि आराहिवि ।
सिरिअरहंतणाउं गोत्तुज्जलु ।
देहखेत्तु रिसिहलिणं किसियउं ।
पासहि दिहिवइ दढयर मंडिवि ।
सासु मुयंतं सुक्कु णियंगउं ।

५

१०

घत्ता—सुहझाणें मुउं सो परमरिसि णिम्मलु णिरुवमरुह्यउ ।
अहमिदु अणुत्तरि धवलतणु विजयविमाणइ ह्यउ ॥३॥

४

जलहिसमैमिए
कालि णिग्गए
तम्मि सुंदरे

तीसतियहिए ।
सुरहं मग्गए ।
हं पुरंदरे ।

३

वह निर्ग्रन्थ मुनि, परिग्रहको इच्छा नहीं करते, धीरे-धीरे विचरण करते, और पापसे डरते। प्रशंसासे वह अपना मुख हँसता हुआ नहीं करते (प्रसन्न नहीं होते), और किसीके द्वारा निन्दा किये जाने पर दुःख नहीं करते। दूषण लगाते हुए भी दुष्टको वह दोष नहीं देते। हिंसा करनेपर भी, जरा भी हिंसा नहीं करते। लाभ-अलाभ, जीवन और मरणमें सम, वह श्रमण समताके आचरणमें स्थित हो गये। कुहेतुवादोंको जीतकर और नयसे प्रचण्ड तीत सो त्रेसठ पाखण्डोंको जीतकर, ग्यारह अंगोका अवगाहन कर दर्शनशुद्धि और वुद्धिकी आराधना कर, सोलह कारण भावनाओके फल, श्री अरहन्तके उज्ज्वल गोत्रका बन्ध कर, उन्होने अन्तिम समय अनशानका अभ्यास किया, और देहरूपी खेतको मुनिरूपी कृषकने कषित किया। काम-क्रोध-रूपी वृक्षोंको उखाड़कर चारों ओर धैर्यकी मजबूत वागइ लगाकर उन्होने ज्ञानरूपी धान्य खूब बढ़ा ली, साँस छोड़ते ही उन्होने अपने शरीरका त्याग कर दिया।

घत्ता—शुभग्र्यान्तसे भरकर वह निर्मल परममुनि, और विजय नामक अनुत्तर विमानमें अनुपम रूपवाले धवलशरीर अहमेन्द्र देव हुए ॥३॥

४

तोत अधिक तीस अर्थात् तैंतीस सागर प्रमाण, देवरीतिसे समय वीतनेपर, उस शुभाशय

३. १. P ण गंधु । २. A P पहसियमुहु । ३. A परपिसुणु ण दूसइ; P परि पिसुणु ण दोसइ । ४. A P तिणिण तिउत्तरिसयइ । ५. A P दंसणु । ६. A रिसिहलि संकितियउ । ७. A मुयउ । ८. A P क्लवउ । ९. A अणुत्तर । १०. P विनाणे ।

४. १. A समणिए; P समसिए । २. A सुरहरं गए ।

	थिई सुहासए	आलसेसए ।
५	धरियेजीवए	पढमदीवए ।
	बइरिखंडणा	भरहमंडणा ।
	अत्थि सुहयरी	कोसलाउरी ।
	रिसहकुलरुहो	पुण्णससिमुहो ।
	तहिं महीसरो	णाम संवरो ।
१०	तस्स इत्थिया	साहियत्थिया ।
	चारुहारिया	सुइसरीरिया ।
	भवणलच्छिया	मउँलियच्छिया ।
	णिसिविरामए	चर्रमजामए ।
	पेच्छए हियं	सिविणमालियं ।
१५	गलियमयजलं	असरमयगलं ।
	कुंदपंडुरं	गोवई वरं ।
	णहरदारुणं	दुरयवइरिणं ।
	बहुविलासिणी	णल्लिणविसिणी ।
	भमररामयं	कुसुमदामयं ।
२०	णयणपरिणयं	सिसिरकिरणयं ।
	णिहयैतिसिरयं	तरुणैसिहिरयं ।
	रमणरसनयं	मीणसिहणयं ।
	सजलकमलयं	कलसजुवल्लयं ।
	रमियैरोयरं	पंकयायरं ।
२५	मयरभीयरं	खीरसायरं ।
	लच्छिसासणं	हरिवरासणं ।
	हरिणिहेलणं	फणिणिकेयणं ।
	सुमणिसंगहं	अवि य हुयवहं ।

अहमेन्द्रकी थोड़ी आयु शेष रहनेपर, जीवोंको धारण करनेवाले प्रथम द्वीप (जम्बूद्वीप) में शत्रुका खण्डन करनेवाली, भारतका मण्डन, तथा शुभ करनेवाली कौशलपुरी नगरी थी। उसमें ऋषभ-कुलका अंकुर, पूर्वं चन्द्रमाके समान मुखवाला स्वयंवर नामका राजा था। उसको सिद्ध करने-वाली (सिद्धार्थी) नामकी पत्नी थी। सुन्दर पवित्र शरीरवाली उस भुवनलक्ष्मीने आँखें बन्द किये हुए, रात्रिका अन्त होनेपर अन्तिम प्रहरमें सुन्दर स्वप्नमाला देखी। मद झरता हुआ ऐरावत महागज; कुन्दपुष्पके समान श्रेष्ठ वृषभराज; नखीसे भयंकर गजका शत्रु (सिंह); कमलोंमें निवास करनेवाली, बहुविलासिनी (लक्ष्मी); भ्रमरोंसे सुन्दर कुसुममाला; नेत्रोंके लिए सुन्दर चन्द्र; अन्धकारको नष्ट करनेवाला तरुणसूर्य; रमणको ध्वनि करता हुआ मीनयुगल; कमल और जलसे सहित कलशयुगल, जिसमें चक्रवाक क्रीड़ा कर रहे हैं ऐसा कमलाकर, मगरोसे भयंकर क्षीरसमुद्र, लक्ष्मीका शासन सिंहासन, देवोंका विमान और नागभवन, मणियोंका समूह और अग्नि ।

३. A पिय । ४. P reads this line as : पढमदोवए धरियजीवए । ५. A P कोसलापुरी । ६. P सरीया । ७. A मीलियच्छिया । ८. A चरिम । ९. P reads this line as : गोवई वरं कुदपंडुरं । १०. A कमलवासिणि । ११. A णिहियं । १२. A तरुणि । १३. P रमियखेरं ।

घन्ता—इय दंसणणिउरुवउ सइइ सुहमुत्ताइ गिरिक्खिउ ॥
सुविहाणइ संवरणैरवइहि जं जिह तं तिह अक्खिउ ॥४॥

३०

५

तं गिसुणिवि जसधवलियमहियलु
जो तिहुवणमंगलु तिहुयणवई
सो तुह होसइ सुउ मई पायउं
तहि अवसरि दिवि सक्के बुक्किउं
सिरि अरहंतु देउ अबलोयउ
मा होज्जउ तहु किं पि तुगुंछिउ
ता सक्केयणयउ बित्थारिउ
फुरियपसंडिपिंडुं पविरइयउ
कडयमउडेमंडियवरगत्तउ

कहइ कंतु कंतहु सिविणयफेळु ।
जं क्षायंति जोई गयमलमइ ।
णधहि सुंदरि चंगउं जायउं ।
संवरमहिवइ मुंजउ सुक्किउ ।
सिद्धत्थइ सिद्धत्थु जणेवउ ।
अहु णिहिणाह करहि हियइच्छिउं ।
अहिणवु धणयं सवु सवारिउं ।
जहि दीसइ तहि तहि अइसइयउ ।
उयरसुद्धिपारंभणित्तउ ।

५

घन्ता—सोहम्मसुरिदे पेसियउ सवउ पुण्णपसत्थउ ।

१०

घरु रायहु आयउ देवयउ मंगलदण्वविहत्थउ ॥५॥

घन्ता—इस प्रकार मुखसे सोयी हुई उस सतीने स्वप्न-समूह देखा । दूसरे दिन सुन्दर प्रभातमें, उसने जैसा देखा था, वैसा अपने पति राजा स्वयंवरसे कहा ॥४॥

५

यह सुनकर अपने यशसे महीतलको धवल कर देनेवाले कन्तने अपनी कान्तासे कहा—
“जो त्रिभुवनके मंगल और त्रिभुवनपति हैं, निर्मल मतिवाले योगी जिनका ध्यान करते हैं, वह तुम्हारे पुत्र होंगे, मैंने यह जान लिया है । हे सुन्दरी, तुम नाचो; यह बहुत अच्छा हुआ ।” उसी अवसरपर स्वर्गमें इन्द्रने कहा कि राजा स्वयंवरको पुण्यका भोग हुआ है । देखो, वह श्री अरहन्त देवको सिद्धार्थकी तरह, सिद्धार्थसे जन्म देगा । हे कुवेर, उनके लिए कुछ भी खराब बात न हो, जाओ तुम उनकी इच्छाके अनुसार काम करो । तब उसने साकेत नगरका विस्तार किया । घनदने वहाँ सब कुछ नया कर दिया । सुन्दर स्वर्णपिण्डसे रचना की । वह जहाँ दिखाई देता वहाँ अतिशय सुन्दर था । उदरकी शुद्धि प्रारम्भ करनेके लिए नियुक्त कटक और मुकुटोंसे अलंकृत शरीरवाली,

घन्ता—सौषर्मा स्वर्गके देवों द्वारा भेजी गयी, पुण्यसे प्रशस्त मंगलद्रव्य अपने हाथोंमें लिये हुए देवियां राजाके घर आयी ॥५॥

१४. A णिउरुवउ । १५. A P सुहुं सुत्ताइ । १६. A संवरणिवइहि ।

१. १. P हल्लु । २. A तिमवणवइ । ३. A जोगि । ४. A मयणायउ । ५. A P बुक्किउं । ६. A संवरणवइ मुज्जइ । ७. A अवलोइउ । P अबलोइउ । ८. A सक्केयणयउ । ९. A P सवारिउ । १०. A पिउ । ११. A मडलमंडियं ।

६

छम्मासइं वसुहार वरिड्डी
 ता वइसाहैहु पंडेरपक्खइ
 विजयणाहु, तिहुयणविक्खायउ
 मयणविलासविसेसुप्पत्तिहि
 पुणु सो णिहि वइ णिवैहि पसाहिइ
 धरणीयल्लगैयणिहिआकरिसइं
 र्जससहरकरधवलियदिग्गइ
 जइयहुं सायरसरिसहुं क्षीणइं
 तइयहुं माहमासवारसियहि
 १० वारहैमम्मि जोइ कोमलतणु
 णाणत्तयजाणियजगरूयउ

थिय जिणैजणणि जाम संतुट्ठी ।
 छट्ठीवासरि सत्तमरिक्खइ ।
 करिरुवै सिविणंतरी आयउ ।
 उयरि परिट्ठिउ संवरपात्तिहि ।
 प्रंगैणि छडरंगावलिसोहिइ ।
 णैव वि मास माणिक्कइं वरिसइ ।
 संभविं संभवपासविणिग्गइ ।^{१०}
 दहलक्खइं कोडिहिं वोळीणइं ।
 पालेयंसुकरावलिसुसियहि ।
 वारहअणुवेक्खाभावियमणु ।
 देउ चउत्थउ जिणु संभूयउ ।

धत्ता—जिणजम्मणु^३ आसणथरहरणि जाणिवि कुंजरु सज्जिउ ॥

महि आयउ ससुरु सुराहि वइ सुरकरचमरिं विज्जिउ ॥६॥

६

छह माह तक रत्नवृष्टि हुई । भगवान्की माता सन्तुष्ट हो गयी । वैशाख माहके शुक्लपक्षमें षष्ठ्योके दिन, सातवें नक्षत्र (पुनर्वसु) में, त्रिभुवनविख्यात विजयनाथ अहमेन्द्र गजरूपमें स्वप्नान्तर-में आया और कामके विलास विशेषोंको उत्पन्न करनेवाली राजा स्वयंवरकी पत्नी सिद्धार्थके उदरमें प्रविष्ट हो गया । वह कुबेर पुनः राजाको प्रसन्न करता है, वह छह प्रकारके रंगों की रांगोलीसे शोभित घरके प्रांगणमें, धरतीतलकी निधियोंको आकर्षित करनेवाले माणिक्योकी नौ माह तक वर्षा करता है । अपने यशरूपी चन्द्रमाकी किरणोंसे दिग्गजोंको धवलित करनेवाले सम्भवनाथके जन्मपाशसे मुक्त होनेपर, जब दस लाख करोड़ सागर समय बौत गया, तब माव-मासके शुक्लपक्षकी चन्द्रकिरणोंसे धवल द्वादशोके दिन, बारह अनुपेक्षाओंसे भावितमन कोमल शरीर तीन ज्ञानोंसे विश्वस्वरूपको जाननेवाले, चौथे तीर्थंकर अभिनन्दन उत्पन्न हुए ।

धत्ता—सिंहासन कांपनेसे जिनका जन्म जानकर देवेन्द्रने अपना हाथी सज्जित किया और देवोके हाथोंसे चमरों द्वारा हवा किया जाता हुआ देवों सहित वह धरतीपर आया ॥६॥

६. १. A गियजणणि । २. P वयसाहहु । ३. A P पंडुर । ४. A पवरपसाहिइ । ५. A P पंगणि ।
 ६. P धरणीयले । ७. P णवमासइं । ८. A जं ससहरकरधवलियदिग्गइ; P धवलिए दिग्गए । ९. A संभमि । १०. A P संभवपासहु णिग्गइ । ११. A पालेयंसुकरावलि; P पालेयंसुक्कालवलि । १२. AP वारहयम्मि । १३. A P जम्मणि ।

७

पुरि परिचिचिवि पइसिवि णिवधरि कित्तिमु सिसु दिण्णउ जणणिहि करि ।
 सयणुकिरणकविलियपविचलणहु पोमरायपैहणिहतंविणणहु ।
 वहुँभवकयवयणिमैमियणियमइ विसमविसयविसहरणहयरवइ ।
 कमलकुलिसकळसंक्रियकमजुउ विरइयरइसंवरु संवरसुउ ।
 णंद वद्ध जय देव भणेपिणु सुरणाहें सुणिणाहु लपपिणु । ५
 अंकि चडाविउ चंपयगोरउ गोरु^० सो तेण जि अविचारउ ।
 जायउ जंतहु गुरु रहसुउभहु अमरविमाणहं घणवहि संकहु ।
 पडिवाहणहयवाहणसेणिहि इदें कह व मंदसंदाणिहि ।
 चारणु चरणचारु संजोईउ मंदरु मंदरुइल्लु पलोइउ ।
 जिणदेहच्छविइ अहिह्वियउ गुरुचणतेणं कवणु ण खवियउ । १०
 ससिरवितारापंतिउ लंघिवि तं तहु तणउ सिहरु आसंघिवि ।

घत्ता—तहि पंडुसिलायलु ससिधवलु तित्थु पसणुणिहालिउ ॥

अहिमंतिवि पाणिउं सयमहिण सीहवीहु^० पक्खालिउ ॥७॥

७

नगरकी परिक्रमा देकर, एवं राजाके घरमें प्रवेश कर कृत्रिम बालक माताकी गोदमें देकर, अपने शरीरकी किरणोंकी कान्तिसे विशाल आकाशको आलोकित करनेवाले, पद्मरागमणियोंकी प्रभाके समान लाल नखवाले, अनेक जन्मोंमें किये गये व्रतोंसे अपनी मति नियमित करनेवाले, विषयरूपी विषधरोंके लिए गरुड, कमल कुलिश और कलशोंसे चिह्नित चरण, रतिका संवरण करनेवाले हे स्वयंवर पुत्र, तुम बड़ो, प्रसन्न होओ, जय हो देव, यह कहकर सुरनाथने मुनिनाथ को ले लिया । चम्पक कुसुमकी तरह गोरे, ज्ञानरत, और अविचारी उन्हें, उसने अपनी गोदमें ले लिया । उसके जाते हुए अत्यन्त हर्ष-उल्लास हुआ । जिसमें प्रतिवाहनों और अश्ववाहन श्रेणियाँ हैं और जिसमें धीमे रथ चल रहे हैं, ऐसे धनपथमें देवोंके विमानोंका जमघट हो गया । इन्द्रने बड़ी कठिनाईसे अपने हाथीको प्रेरित किया और मन्दकान्ति मन्दराचलको देखा । जिनेन्द्रकी देहकान्ति से वह अत्यन्त अभिभूत हो गया । गुरुजनोंके तेजसे कौन क्षीणताको प्राप्त नहीं होता । चन्द्र, सूर्य-और तारोंकी पवितकी लौघकर, उसके उस सिखरको पाकर,

घत्ता—वहाँ उसने चन्द्रमाके समान धवल प्रसन्न पाण्डुक शिलातलको देखा, इन्द्रने जलको अभिमन्त्रित कर सिंहासनका प्रक्षालन किया ॥७॥

७. १. A पुह । २. A सवणुकिरण^० । ३. P^० पवियल^० । ४. A बहुतव^० । ५. A P^० णिवसियणियमइ ।
 ६. A कमलकलसकुलिसंक्रिय^० । ७. A P गोरउ तेण जि सो अविचारउ । ८. A संजोयउ; P संजोइउ ।
 ९. A पसल्लु । १०. P सीहपीहु ।

- कथविहिपरियम्भं लिण्णदुक्कम्मजम्भं सई सिरिअरहंतं चम्मि अरौहिदं तं ।
 धिवइ दसदिसासुं सेयभिगारणीरं कुणइ सुरवरिंदो सिद्धमंताहियारं ॥१॥
 बहुदसणविसाले कक्खणक्खत्तमाले चलियचमरलीले संठियं पीलुवाले ।
 पविहरमर्मराणीसेवियं देववंदं जिण्हवणविसेसे वाहरामोमरिदं ॥२॥
 ५ जलियकविलवालं भासुरालं करालं दिसि पसरियजालं धूमचिघेण गीलं ।
 पयपहयचरब्भं भाविणीभाविआसं जिण्हवणविसेसे वाहरामो हुयासं ॥३॥
 जलयपडलकालं णिद्धणीलं व सेलं महिसमुहसमीरुद्धीणजीमूयमालं ।
 करवडइयदंडं छाहिसंसत्तसंतं जिण्हवणविसेसे वाहरामो कयंतं ॥४॥
 भंसलगरलमालाकालरोमं तुरंतं अरुणणयणछोहं रिछमावाहयंतं ।
 १० जुवइजणियकामं साहिरामं करामो जिण्हवणविसेसे गेरियं वाहरामो ॥५॥
 करिमयैरणिचिद्धं हारणीहारतेयं धुवंधवलयओहं कामिणीए समेयं ।
 वरुणममरसारं माणसे संभरामो जिण्हवणविसेसे सायरं वाहरामो ॥६॥
 तरुपहरणपाणिं वाइसंदिण्णरायं सुरहिपरिमलंगं भाणिणीजायरायं ।

जिन्होंने विघाताके परिकर्मको किया है, और पापकर्म और जन्मका नाश कर दिया है, ऐसे श्री अरहन्तको उसपर आरोहित कर दिया । दसों दिशाओंसे श्वेत भृंगारपात्रोंका जल गिरता है; सुरवरेन्द्र सिद्धमन्त्रोंका अभिचार करता है । बहुतसे दाँतोसे विशाल, वरत्रारूपी नक्षत्रमालासे युक्त, चलते हुए चमरोंकी लीला धारण करनेवाले बाल ऐरावत गजपर उन्हें रख दिया । जिन भगवात्के अभिषेक-विशेषमें मैं, (कवि पुष्पदन्त) वज्रको धारण करनेवाले, इन्द्राणीके द्वारा सेवित, देवोंके द्वारा वन्दनीय, अमरेन्द्रको बुलाता हूँ । जिसके प्रज्वलित कपिल केश हैं, भास्वर भयंकर, दिशाओंमें जिसका जाल फैला हुआ है, धूमचिह्नोंसे नीला, अपने पैरसे मेघको आहत करनेवाला, अपनी पत्नीके द्वारा जिसका मुख देखा गया है, ऐसे अग्निदेवको मैं जिनेन्द्रके अभिषेक-विशेषमें बुलाता हूँ । जो मेघपटलके समान श्याम है, शैलके समान स्निग्ध और नीला है, जिसके महिषके मुखके पवनसे मेघमाला उड़ रही है, जिसके हाथमें दण्ड झुका हुआ है, अपनी भार्या, छायामें जिसका चित्त आसक्त है, ऐसे यमको मैं जिनके अभिषेक-विशेषमें बुलाता हूँ । भ्रमर और गरलमालाके समान जिसके रोम काले हैं, जो लाल आँखोंकी कान्तिवाला है, रीछपर सवारी करता है, युवतीजनमें जो काम उत्पन्न करता है, ऐसे नैऋत्यको मैं अनुरागयुक्त करता हूँ और जिनेन्द्रके अभिषेक-विशेषमें उसे बुलाता हूँ । जो गजाकार मगरपर अचिष्टित हैं, जो हार-नीहारकी तरह स्वच्छ है, हिलती हुई धवल ध्वज-समूहसे युक्त है, कामिनीसे सहित हैं, ऐसे अमरोमें श्रेष्ठ वरुणकी मैं याद करता हूँ और जिनेन्द्रके अभिषेक-विशेषमें उन्हे सादर बुलाता हूँ । वृष ही जिसके प्रहरण और हाथ है, वातप्रभी मृगीमें जिसका अनुराग है, सुरभिपरिमल जिसका शरीर है,

८. १. A कुक्कम्म । २. A सयसिरी । ३. AP अरिहंतं । ४. A आराहिकणं । ५. P लिबइ । ६. A ममराणीसंजुयं देवदेवं; P ममरेहिं सेवियं देवविदं । ७. P अगिवालं पहलं । ८. P णिद्धणीलालिले ।
 ९. A वडइय । १०. A छाहिसंसत्तगंतं; P छाहिसंसत्तवत्तं । ११. P कणणमसलमालाकारं ।
 १२. P साहिरामो । १३. A मयरणिविद्धं । १४. A P धुयधवलं । १५. A P वायसं । १६. P कामिणिजायं ।

चहुलगमणसीलं लंघियायासपारं
विमलमणिवियाणं^{१७} मंदरहीसमाणं
धणयमधणदुक्खातंकंपकावहारं^{१८}
सगणैरीणुणाणालं^{१९} भीमभीमच्छिवत्तं
फणिवलयकैरंगुविगणसूलं दुरिक्खं
अमयमयसरीरं कूरकंठीरवत्थं
जणयणसुहंकरं सक्कमुच्छिणसकं
मणिफुरियफणालं दित्तदिच्चकवालं
महिविवरणिवासं रम्मपोन्मावईसं

जिणणहवणविसेसे वाहरामो समीरं ॥७॥
कयमयरविमाणं देहभाभासमाणं १५
जिणणहवणविसेसे वाहरामो कुवेरं ॥८॥
वरंविस्वसहंदुक्खित्तपायं मईतं ।
जिणणहवणविसेसे वाहरामो तियक्खं ॥९॥
णवक्खुवलयैमालामालियं कौतहत्थं ।
जिणणहवणविसेसे वाहरामो ससकं ॥१०॥ २०
अहिणवरविवणं कुम्मथंहीणिसणं ।
जिणणहवणविसेसे वाहरामो फणीसं^{२०} ॥११॥

घत्ता—णियवाहणपहरणपियरमणिधिधावलिहिं विराइय ॥
इदं^{२०} संहं इंदावाहणए लोयवाल संप्राइयं^{२०} ॥८॥

९

एवं पत्ते पंकयणेत्ते चित्से देवे णविऊणं
दुहणोसणयं सुहसासणयं दन्भासणयं ठविऊणं ।

जो मानिनी स्त्रियोमे राग उत्पन्न करता है, जो चंचल और गमनशील है, जो आकाशकी सीमा-को लांघ जाता है, ऐसे समीरको मैं जिनेन्द्रके अभिषेक-विशेषमे बुलाता हूँ । जो विमल मणियोंका जानकार है, जो उत्तर दिशाका अधिपति है, जिसका विमान मकराकृति है, जो देहकान्तिसे भास्वर है, जो अधनके दुःख और आतंककी कीचड़का अपहरण करनेवाला है, ऐसे घनद कुवेरको मैं जिनेन्द्रके अभिषेक-विशेषमे बुलाता हूँ । जो अपने गणो और गुणगुणोका आश्रय है, जो भालपर भीम आंखोंवाला है, श्रेष्ठ वृषभके कन्धेपर जो पैर रखे हुए है, जो नागोके बलयवाले हाथकी अंगुलियोमे त्रिशूल उठाये हुए है, ऐसे दुर्दर्शनीय महाद् रत्नको मैं जिनेन्द्रके अभिषेक-विशेषके समय बुलाता हूँ । जो अमृतमय शरीरवाला है, जो कण्ठीरव (सिंह) पर स्थित है, जो नव-कुबलयमालासे शोभित है, जिसके हाथमे भाला है, जो जननेत्रोके लिए अमृतजल है, चिह्न सहित तथा शंकाओंको दूर करनेवाला है, ऐसे चन्द्रको मैं जिनेन्द्रके अभिषेक-विशेषमे बुलाता हूँ । जिसका फणसमूह मणियोसे स्फुरित है, जिसने दिशामण्डलको प्रदीप्त किया है, जो अभिनव सूर्यके रंगका है, जो कूर्मकी हृडियोपर आसीन है, जिसका निवास महीविवर है, जो सुन्दर पद्मावतीका स्वामी है, ऐसे फणोशको मैं जिनवरके अभिषेक-विशेषमे बुलाता हूँ ।

घत्ता—अपने-अपने वाहन, प्रहरण, प्रिय रमणो और चिह्नोकी पंक्तियोंके शोभित लोक-पाल, इन्द्रके आह्वानपर इन्द्रके साथ आये ॥८॥

९

इस प्रकार कमलनयनके प्राप्त होनेपर सब देवोको नमस्कार कर दुःखनाशक सुलका शासन

१७. A^० वितार्णं । १८. A P कणयमयविमाणं । १९. P^० तकसंकवाहारं । २०. A सगुणगुणं ।
२१. A P^० भीमच्छिवत्तं । २२. A^० वरविस्वसहंदुक्खित्तं ; P वरसियवसहपुट्टं खित्तं । २३. A^०
करम्मणिमण्णं । २४. A^० मालिमाकूतहत्थं । २५. A सुक्कमुच्छिण्णं ; P सक्कमुच्छिण्णं । २६. A P
कुम्मपिट्ठो । २७. A^० रवण्णं । २८. A फणिदं । २९. A सहुं देवाणंदएण । ३०. A P संपाइय ।
९. १. P दुहणासणयं ।

- सरगंभीरं पणकुम्भारं साहाकारं काऊणं
 अर्घं पत्तं गंधं धूवं चरुवं दीवं दाऊणं ।
 ५ दुण्णयैतावं मिच्छागावं दुक्कियभावं मैहिऊणं
 पव्वयसरिसे पयणियहरिसे कंचणकलसे गहिऊणं ।
 आसासंते रवियरवंते गयणचलंते चरिऊणं
 भंगरउहे खीरसमुहे विप्यं खीरं भरिऊणं ।
 कीलालोलं गेयरवालं सुरवरमालं रइऊणं
 १० ते जलवाहे जियजलवाहे हत्थाहत्थं लइऊणं ।
 सोहस्मेणं ईसाणेणं तियसयेणेणं सण्हविओ ।
 दावं वासं कुसुमं भूसं तेहि जिणिंदो पुणु णंविओ ।
 सिगुत्तुंगं वसियकुरंगं मेरुं मोत्तुं वारिदरिं
 १५ णरंसोक्खयरिं कोसलणयरिं आगांतूणं पुरिसहरिं ।
 णयणिरैयोणं गुरुपियराणं दावं णहयलदिण्णपया
 हरिसविसहं रइवं णहं देवा सग्गं झ त्ति गया ।

घत्ता—सज्जणहं णेहु दिहि दुत्थियहं तरुणिहि पेम्मपैहावउ ।
 णाहं वड्ढहं वड्ढियउ पिसुणहं मणि संतावउ ॥९॥

१०

जोवणभावो देहि चडंते
 देहपमाणु पत्तु रणचंडहं

घडियामाणे काले जंतं ।
 सड्ढहं तिणिण सयइ धणुदंडहं ।

दर्भासन ब्रिह्माकर, गम्भीर स्वरमे ओम्के साथ स्वाहाका उच्चारण कर अर्घ-पत्र-गन्ध-धूप-चरु और दीप देकर, दुर्नयका सन्ताप, मिथ्यागर्व और पापभावका नाश कर, पर्वतके समान हर्षको उत्पन्न करनेवाले स्वर्णकलशोंको लेकर, उच्छ्वासाके मध्य, सूर्यकी किरणोंसे युक्त आकाशमें चल कर, भंगिमासे भयंकर क्षीर समुद्रमें शीघ्र जल भरकर, क्रीड़ासे चंचल, गीतोसे सुन्दर सुरवरीकी पवित्र रचकर, मेघोंको जीतनेवाले उन कलशको हाथों-हाथ लेकर, सौधमैन्द्र, ईशानेन्द्र और देवजनोने स्नान कराया तथा वस्त्र-भूषण देकर, उन्होंने जिनेन्द्रको फिर नमस्कार किया । फिर शिखरोंसे ऊँचे हरिणोंसे बसे हुए जलयुक्त घाटियोंसे युक्त सुमेरु पर्वतको छोड़कर, मनुष्योंको सुख देनेवाली अयोध्या नगरीमें आकर न्यायरत उन पुरुषश्रेष्ठको माता-पिताको देकर और हर्ष-विशिष्ट नाट्यका अभिनय कर वे शीघ्र स्वर्ग चले गये ।

घत्ता—स्वामीके बढ़नेपर सज्जनोंका स्नेह, दुःस्थितोंका भाग्य, युवतियोंका प्रेमभाव और दुष्टोंके मनमें सन्ताप बढ़ने लगा ॥९॥

१०

यौवनभावसे उनकी देह बढ़ती गयी, और घड़ीके मानसे समय बीतता गया । उनके शरीर-

२. A दुण्णयभावं । ३. P गहिऊणं । ४. P हत्थाहत्थं गहिऊणं । ५. A तियसवरं । ६. P सण्हविवं ।
 ७. P णविवं । ८. A वोरदरिं । ९. P सोक्खयरी । १०. P णयरी । ११. A णरपियराणं । १२. P
 रइयं णहं । १३. P णेहपहावउ ।

१०. १. A देह चडंते । २. A P घडियामालें ।

सिसुकीलाइ रमियगंधवहं
फणिसुरणरमणययाणांदणु
भणित देव कि देंवि सकित्तणु
लइ लइ रज्जु अज्जु जाएसंवि
तहिं अवसरि आयउ सक्कंदणु
वाइउ सुसिरु तंति घणु पुक्खरु
पुरउ णडंते अमरणिहाएं
सायरसरिसरजलसंघाएं
हार तार जोयणविस्थिणी

दोणिण दहद्धलक्ख गय पुव्वहं ।
जणणे हँकारिउ अहिणंदणु ।
भुवणत्तयसामिहिं सामित्तणु ।
हचं परलोयकज्जु थाइसविं ।
पुरि घरि गयणि ण माइउ सुरयणु ।
गायउ किं पि गेउ मडुरक्खरु ।
चइयालियदिग्गणासीवाएं ।
पुणु ण्हाणिउं कुमारु सुरराएं ।
णं णहि गंगाणइ अवइण्णी ।

५

१०

घत्ता—जलधार पडइ सिरि दुद्धरिय देउ ताइ^{१०} ण वि इम्मइ ॥
भावेइ महुं णहुंतु वि घडसेयहिं विट्टुएणै णउ तिम्मइ ॥१०॥

११

मउडपट्टधरु बीयविणिट्ठिउ
विणिहँयरउ तउ रिसि जायउ

पित्तसंतणि णिओइ अँहिट्ठिउ ।
पँहु वि महिं मुंजंतु सजायउ ।

का प्रमाण साहे तीन सौ प्रचण्ड धनुष हो गया । क्रोड़ामे मन्धवोंके साथ खेलते हुए उनके साहे बारह लाख पूर्व वर्ष बीत गये । नागों, सुरों और मनुष्योंके मनको आनन्द देनेवाले अभिनन्दनको पित्तामे पुकारा और कहा, “हे देव, भुवनत्रयके स्वामीके लिए कीर्तिसहित स्वामित्व क्या दूँ, लोको राज्य, आज मैं जाऊँगा, और मैं परलोककार्यकी थाह लूँगा ।” उस अवसरपर भी इन्द्र आया, और वह देवसमूह, पुर, घर तथा आकाशमे नही समा सका । सुपिर, तन्त्री, घन और पुष्कर वाद्य बजाये गये । और मधुर अक्षरोंमे कुछ भी मधुर गीत! गाया गया । सामने नाचते हुए देवसमूह वैतालिकोंके द्वारा दिये गये आशोर्वादके साथ समुद्र, नदी और सरोवरोंके जलसमूहसे इन्द्रने कुमारका पुनः अभिषेक किया । हारोंकी तरह स्वच्छ एक योजनतक फैली हुई, मानो आकाशमे गंगानदी अवतीर्ण हुई हो । -

घत्ता—दुर्धर जलधारा उनके सिरपर पड़ती है, लेकिन देव उससे आहत नहीं होते । वह मुझे अच्छे लगते हैं कि सैकड़ों घड़ोंसे नहलाये जाते हुए भी वह एक बूँदसे भी नहीं भीगते ॥१०॥

११

मुकुट पट्टको धारण किये हुए, धैर्यसे युक्त वह नियोगसे पितृपरम्परामे नियुक्त हो गये । और पिता रागको नष्ट करनेवाले मुनि हो गये । प्रभु भी पत्नीके साथ घरतीका उपभोग करने

३. A कोवकाविउ । ४. P साहेसमि । ५. A वायउ सुसइ । ६. A गेय । ७. A P ण्हाविउ ।
८. A हारसुतारतोयविच्छिण्णो; P हारसुतारजोयविच्छिणी । ९. A सिरिसिहरि; P T दुद्धरिस ।
१०. A P तहिं ण वि इम्मइ । ११. A णावइ but records a p भावइ । १२. A P घडसएण ।
१३. A जं विट्टुएण; P तं विट्टुएण ।

११. १. A बीरविणिट्ठिउ; P बीडि विविट्ठउ । २. A P पहिद्विठिउ । ३. P विणियरउ । ४. P एहु वि महिं मुंजंतु ।

अच्छइ जाम सपुत्तु सपरिचणु गय छत्तीस लक्ख लक्खद्धे ५ सुयणभाणु णहि णयणइं डोयइ पेच्छइ सत्तभूमिघरसिहरइं पेच्छइ धंयमालउ उल्ललियउ पेच्छइ चंदसाल मुहसालउ पेच्छइ दाणसाल णडसालउ १० पेच्छइ हट्टमग्ग चउदारइं इय पेच्छंतहु तक्खणि णट्टउ घत्ता—णासंतं णयरं साहियउ णामु अत्थि नृवरिद्धिहि ॥ किं णरु रइपरवसु परिभमइ उज्जमु करइ ण सिद्धिहि ॥११॥	रक्खइ पोसइ माभोसइ जणु । सहं पुव्वहं सिरिसोक्खसमिद्धं । ता गंधवणयरं अवलोयइ । पेच्छइ जालगवक्खइं पवरइं । पेच्छइ पुत्तलियउ चित्तलियउ । पेच्छइ लेहसाल गयसालउ । मणुवारोगसाल असिसालउ । पेच्छइ पहु आरामविहारइं । तहिं तं पुरु पुणु तेण ण दिट्ठउ ।
---	---

१२

५ ता लोयत्तिएहिं संबोहिउ उट्ठिउ सयलदेवडिडिमसरु णरखेयरसुरेहिं पणवेप्पिणु णिहियउ पुरवाहिरि पांदणवणि अवरण्हइ णियसंभवरिक्खइ	आएणिदे णहविउ पसाहिउ । चडिउ विचिउत्तिहि सिवियहि जिणवरु । वाहुदंडखंधेहिं वहेप्पिणु । मग्गसिरइ सिइ वारहमइ दिणि । अप्पणु अप्पउ भूसिउ दिक्खइ ।
---	---

लगे । इस प्रकार जबतक वह अपने पुत्रों-परिजनके साथ रहते हैं, और लोगोंकी रक्षा-पालन करते और अभयदान देते हैं, तबतक उनके स्त्री-मुखसे समूह साढ़े छत्तीस लाख पूर्व वर्ष बोट गये । एक दिन विद्वसुर्यकी आंखें आकाशकी ओर जाती हैं, वह वहाँ गन्धर्व नगर देखता है । वह सात भूमिवाले गृहशिखर देखता है, जालोके विशाल गवाक्षोंको देखता है, उड़ती हुई ध्वजमालाओंको देखता है, वह चित्रित पुतलियोंकी देखता है, वह चित्रशाला और मुख्यशाला देखता है । वह लेखशाला और गजशाला देखता है । दानशाला और नटशाला देखता है । बाजार मार्ग और चारद्वार देखता है, राजा आराम और विहार देखता है । इस प्रकार उसके देखते हुए ही वह नगर तत्काल नष्ट हो गया । फिर उसने उस नगरकी नहीं देखा ।

घत्ता—नष्ट होते हुए नगरने मानो यह कहा कि नृप-श्रद्धिका भी नाश होता है । मनुष्य रतिके अधीन क्यों धूमता है; सिद्धिके लिए वह प्रयत्न क्यों नहीं करता ॥११॥

१२

तब लौकान्तिक देवोंने उन्हें सम्बोधित किया, आये हुए इन्द्रने उनका अभिषेक किया । समस्त देवोंका डिडिम स्वर उठा । जिनवर विचित्र शिविकापर चढ़ गये । प्रणाम कर मनुष्य, देव और विद्याधरोंने अपने बाहुदण्डों और कन्धोंसे उसे ले जाकर नगरके बाहर नन्दनवनमें रख दिया । माघ माहके शुक्लपक्षकी द्वादशीके दिन अपराह्णमें अपने जन्मनक्षत्रमें उन्होंने स्वयंको

५. A णयरि । ६. A घयमालाउरल । ७. P हट्टमग्गि । ८. A P णिवरिद्धिहि । ९. A परवसु मूठमइ उज्जणु ।

१२. १. A आहवि द्वे; T आयंशेण आगतेनेग्गेण । २. A मग्गसिरासिइ, P माहमासि सिइ ।

मण्णेप्पिणु घर गिरिवरकंदर
भातु करेवि अहप्पयरासिहि
दावियणिद्धे छट्टववासं
मुक्क जयधणासाकेयइ
पंशु पलोयइ जंतु ण खंडइ
लहुयउं गरुयउं गेहु ण चित्तइ

दडमुट्ठिहि उप्पाडिय कंदर ।
ते सक्केण धित्त पयरासिहि ।
जइ हूयउ सहुं णिवहं सहासं ।
वीयइ दिणि पइहुं साकेयइ ।
भे भे भवइ व घरि घरि हिंडइ ।
ग्रंगुं प्राविचि पुणु विणियत्तइ ।

१०

धत्ता—जहिं रंज्जु कियउ तहिं तेण पुणु दरिसिउ भिक्खविहाणउं ।
भयलज्जामाणमयवज्जियउं जिणवउं पैम्मसमाणउं ॥१२॥

१३

सयमहदत्ते पहु पाराविउ
पंचविहु वि जयजयपभणंतिहिं
अक्खयदाणु भणेप्पिणु णिग्गउ
जो ण समिच्छइ विपरियावहु
जेण मूलु रइवालहु छिण्णउं
जेण सहियवउं णाणे भिण्णउं
णीसंणेण णिरुत्तु विहारिउ

तहु देवहिं दाणुच्छतु दाविउ ।
आयासहु कुसुमाइं धिवंतिहिं ।
गउ वणु चरणविसेसहु लग्गउ ।
पहि चरंतु ण करइ इरियावहु ।
दाणु जेण अभयावहु दिण्णउं ।
अट्टारहवरिसइं तवु चिण्णउं ।
पुणुं वि जेण तं छट्ट संवारिउं ।

५

दीक्षासे अलंकृत कर लिया। गिरिवरकी गुफाओको घर मानकर उन्होने अपनी दृढ़ मुट्टियोंसे केश उखाड़ लिये। पापोंको नाश करनेवाले उन केशोंको इन्द्रने समुद्रमें फेंक दिया। निष्ठाको प्रदर्शित करनेवाले छोटे उपवासके साथ एक हजार राजाओं सहित वह मुनि हो गये। जीव और धनकी आशाखुपी डोरसे मुक्त वह दूसरे दिन, अयोध्या नगरी गये। वह रास्ता देखते हैं जन्तुका नाश नहीं करते। भो-भो शब्द होता है, वह घर-घर परिभ्रमण करते हैं, छोटे या बड़े घरका विचार नहीं करते। प्रांगणमे जाकर फिर उसे देखते हैं।

धत्ता—जहाँ उन्होने राज्य किया था वहाँ उन्होने भिक्षाके विधानका प्रदर्शन किया। भय, लज्जा, मान और मदसे रहित जिनपद प्रेमके समान है ॥१२॥

१३

इन्द्रदत्तने उन्हे पारणा करायी। जय-जय कहते, और आकाशसे फूलोंको गिराते हुए देवोंने उसके दानका पांच प्रकार महोत्सव किया। 'अक्षयदान' कहकर वह चले गये और वनमे जाकर विशेष तपश्चरणमे लग गये। जो ब्राह्मणोंके ऋचापथ (वेदमार्ग) को नहीं मानते, जो रास्तेमे चलते हुए ईर्ष्या समितिका हनन नहीं करते, जिन्होने कामदेवकी जड़को समाप्त कर दिया है, जिन्होने सबको अभयदान दिया। जिन्होने अपने हृदयको ज्ञानसे परिपूर्ण कर लिया और अठारह वर्ष तक लगातार तप किया, अनासंग भावसे लगातार विहार किया। फिर उन्होने छोटा उपवास

३. A भे भे विरइ व, but records a *h*: भवइ इति पाठः। ४. A P पंगणु पाहवि ।

५. A रज्जि ।

१३. १. P णीसंगत्तु । २. P पुणिवि । ३. A संचारिउ; P समारिउ ।

- पूरुहु मासहु पक्खि पहालइ । चउवहमइ दिणि सिणतरुमूलइ ।
 चडुवरि सत्तमि जेणुप्पाइवं । केवलणाणु तिलोच वि जोइव ।
- १० घत्ता—सो मोहमहामहिरुहजलणु जिणवरु जियँपँचिदिच ।।
 गिठ्वाणहिं समउं पराइएण वार्णवलेण पँवँदिच ॥१३॥

१४

- धुणइ सुरिंदु सरइ गुण समणे । तुहुं जिं देउ किं देवागमणे ।
 तुहुं जि अणंगु अणंगहु वंछहि । अणुदिणु णिकलगइ पर वंछहि ।
 तुहुं सरुवु किं तुह आहरणे । तुहुं सुयंधु किं तुह सबलहणे ।
 तुहुं अकामु किं तुह णारियणे । तुहुं अँणिदुदु किं तुह वरसयणे ।
 ५ सुद्धिवंतु तुहुं किं तुह णहाणे । दिठ्वासहु किं तुह परिहाणे ।
 तुच्छु ण वइरु ण भउ णउ पहरणु । तुच्छु ण रइ णउ कीलाविहरणु ।
 तुहुं जि सोम्मँ सोम्मँ किं किज्जइ । तुहुं छविहउ रवि काइं भणिज्जइ ।
 गुणणिहि तुहुं तुह किं किर थोत्ते । तो वि धुणइ जणवउ सहियत्ते ।
 हरिकरिगिरिजलणिहिहिं समाणउ । पइं किं भणइ वराउ अयाणउ ।
- १० घत्ता—ससिसुरहं सरिसउ पइं परम भत्तिइ कइयणु अक्खइ ॥
 गयणयलहु अवरु वि तुह गुणहं पारु को वि किं पेक्खइ ॥१४॥

किया, पूस माहके शुक्लपक्षकी चतुर्दशीके दिन असन वृक्षके तलभागमे सातवें पुनर्वसु नक्षत्रमें उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हो गया और उन्होंने त्रिलोकको देख लिया ।

घत्ता—मोहरूपी महावृक्षके लिए आगके समान, पाँचों इन्द्रियोंको जीतनेवाले जिनवरकी देवोंके साथ आकर इन्द्रने वन्दना की ॥१३॥

१४

देवेन्द्र स्तुति करता है, अपने मनसे उनके गुणोंका स्मरण करता है कि तुम्ही देव हो, देवागमनसे क्या ? तुम स्वयं काम हो, तुम कामको क्यों चाहोगे ? तुम स्वयं ही सुन्दर हो, तुम्हें आभरणसे क्या ; तुम स्वयं सुगन्ध हो, तुम्हें विलेपनसे क्या ? तुम स्वयं अकाम हो, तुम्हें नारी-जनसे क्या ? आप स्वयं निद्रारहित है, आपको उत्तम शयनसे क्या ? आप स्वयं शुद्धिसे युक्त है, आपको स्नानसे क्या ? आप दिग्म्बर हैं, आपको वस्त्रोंसे क्या ? आपका न शत्रु है, न भय है और न प्रहरण है, आपमें न रति है और न क्रोड़ाविहार है । आप स्वयं सौम्य है, आपको सोम (चन्द्रमा) से क्या ? कान्तिसे आहत सूर्यको कान्तिमान् क्यों कहा जाता है ? आप गुणोंकी निधि है, आपको स्तोत्रोंसे क्या ? फिर भी लोग, अपने मनसे तुम्हारी स्तुति करते हैं, बेचारे अज्ञानी वे आपको अश्व, गज, गिरि और जलनिधिके समान क्यों बताते हैं ।

घत्ता—कविजन केवल भक्तिसे आपको शशि और सूर्यके समान बताते हैं लेकिन एक आकाश और दूसरे तुम्हारे गुणोंका पार कौन पा सका है ? ॥१४॥

१. ४ A P पउसहु । ५. AT पहिल्लइ । ६. A P सिणितइ । ७. A पँचँदियउ । ८. AT वालबलेण ; P वणवालेण । ९. A पवंदियउ ।

१४. १. P वि । २. A P तुहुं अणंगु जो अंगु ण इच्छहि । ३. A सरुउ ; P सरुउ । ४. A P अँपिदु । ५. A सोमु सोमि किं । ६. A भणमि । ७. A गुणहं सामि पारु को लक्खइ ; P गुणहं सामिय पारु कु लक्खइ ।

१५

इंदुपरिद्वन्द्वसूराचलु
 बहुपालिद्वय अट्ट महाधय
 धम्मचक्रु अंगगइ अवङ्गणं
 पुण्णमणोरह जे ते^१ णं रह
 जसु तवेण कंपइ भूमंडलु
 छत्तइं दुरियायैवविणिवारइं
 जासु मोक्खुं सोक्खु जि जायवं फलु
 अवरु वि अरुइहु उतमसत्तहु
 आयासहु णिवडइ कुसुमौवलि
 संजले^{१०} अलि तइ सिंथ ण मेरी
 दुंदुहि खणु वज्जति ण थक्कइ
 दिव्वं घोसें भुवणु वि सुव्वइ

समवसरणु जिणरायहु राउंलु ।
 पसुकोट्टइ इक्खालियि हय गय ।
 प्रंगैणु सुरणैररमणिहिं छण्णवं ।
 मडलियकर थिय संमुह णव गह ।
 अवसें तासु होइ भामंडलु । ५
 चमरइं भवैसीणत्तणतारइं ।
 सो असोड किं वण्णमि चर्लदलु ।
 आसणु सासणु तिजगपहुत्तहु ।
 सरु भोयच भासइ ण सरावलि ।
 णिच्छउ सामिय आण तुहारी । १०
 लोच धम्म णिसुणहुं णं कोक्कइ ।
 अप्पवं परु परलोच वि बुव्वइइ ।

धत्ता—सिरिवज्जणाहु णिवु^{११} धुरि करिवि सीलविमलजलवाहं ॥

तिहिं सहियउ सउ संतासयहं संजायउ गणणाहं ॥१५॥

१५

इन्द्र, नरेन्द्र, चन्द्र और सूर्यसे परिपूर्ण समवसरणु जिनराजका राजकुल था। आठ महाध्वज थे और छोटे-छोटे ध्वज अनेक थे। पशुओंके कोठोंमें अश्व और गज दिखाई देते थे। आगे धर्मचक्र अवतीर्ण हुआ। प्रांगण सुरों और नरोंकी रमणियोसे भर गया। जो-जो पूर्णरथ थे, वे किसी भी प्रकार, अपने दोनों हाथ जोड़कर उनके सम्मुख नवग्रहके समान स्थित थे। जिसके तपसे भूमण्डल काँप उठता है; उनके लिए अवश्य भामण्डल प्राप्त होगा। दुरितोंके आतपका निवारण करनेवाले छत्र, संसारकी थकानकी दूर करनेवाले चामर होंगे। जिन्हें मोक्ष और सुखका फल प्राप्त है, उनका चंचल पत्तोंवाले अशोकके रूपमें क्या वर्णन करें। और भी उत्तम सत्त्ववाले श्री अरहन्तके आसन और त्रिजगती प्रभुताके शासनका क्या वर्णन करें? आकाशसे पुष्पोंकी अंजलि गिरती है, कामदेव डरता है, उनपर अपना तीरावलि नहीं छोड़ता। भ्रमर रोता है कि वह मेरी प्रत्यंचा नहीं है। हे स्वामी, यह निश्चय ही तुम्हारी आज्ञा है, दुन्दुभि बजते हुए थकती नहीं, लोगोंको धर्म सुननेके लिए मानो वह पुकार रही है, दिव्यघोषसे भुवन शुद्ध होता है और स्वपर तथा परलोकको समझने लगता है।

धत्ता—श्री वज्रनाथ (वज्रनाभि) को प्रमुख गणधर बनाकर, शीलरूपी विमल जलको वहन करनेवाले और शान्तचित्त एक सी तीन गणधर हुए ॥१५॥

१५ १. A P रावलु । २. A P पंगणु । ३. P सुरवररमणिहिं । ४. A ते णयरहं । ५. A P दुरियावयं^{१०} ।

६. A सवरीणत्तणु, P भवजीणत्तणु । ७. A P मोक्खसोक्खु । ८. A P वरदलु । ९. A कुसुमावलि ।

१०. A P संजह । ११. A धरिवि धुरि ।

१०

१६

अद्वाइज्जसहस्रं गिरणंगहं
पण्णासइ संजुत्तहं भिक्खुहुं
अद्वाणउवि सैयाइं तिणाणिहिं
एक्कुणवीससहस्रइं विक्किरियहं
५ सावयगुणठाणेहिं सहासहिं
एक्कारहसहसाइं विबाइहिं
तवसंजमवयतणुरुहमाइहिं
भोयभूमिसमसहस्रइं चेर्योहिं
अज्जियसंख एम जाणिज्जइ

१० पंचलक्ष सावियहं गिरुत्तउ

घत्ता—विहरंतहु महि परमेसरहु धम्मु कहंतहु भव्हहं ॥

अट्ठारहवरिसइं उणयरु एक्कु लक्खु गउ पुव्वहं ॥१६॥

१७

इय पुव्वहं पण्णास जि लक्खइं
गयइं ण किं पि वि धाइं गियाणह
हरिणहं अविहयकरिक्कुं भत्थलि
लंघियकरु सहुं मणिसदोहं

गणहरमुणिवरसाहियसंखइं ।
माससेसि थिउ आउपमाणइ ।
तहिं समेयगिरिदवणत्थलि ।
हुणिण पक्ख थिउ जोचणितोहं ।

१६

निष्काम पूर्वागधारी मुनिश्रेष्ठ ढाई हजार, संयमी शिक्षक दो लाख तीस हजार पचास, अवधिज्ञानी नौ हजार आठ सौ, केवलज्ञानी सोलह हजार, विक्रिया-ऋद्धिधारी उन्नीस हजार, मनःपर्ययज्ञानधारियोंकी संख्या कहता हूँ, वे ग्यारह हजार छह सौ पचास है। वादी मुनि ग्यारह हजार, इस प्रकार श्रुत ध्यानवाले कुल तीन लाख मुनि उनके साथ थे। तप, संयम, व्रत और शरीरकी कान्तिसे युक्त शुद्ध कुल जातिवाली तथा समय धारण करनेवाली आर्थिकाओंको तीन लाख तीस हजार छह सौ जानो। आर्थिकाओंकी संख्या इस प्रकार जानना चाहिए, श्रावकोंको तीन लाख गिना जाये। श्राविकाओंको निश्चित रूपसे पांच लाख जाना जाये। देवों और देवियोंकी वहाँ कोई गिनती नहीं थी।

घत्ता—इस प्रकार धरतीपर विहार करते हुए और भव्यजनोंके लिए धर्मका कथन करते हुए परमेश्वरके अठारह वर्ष कम, एक लाख पूर्व वर्ष व्यतीत हो गये ॥१६॥

१७

गणधर मुनिवरों द्वारा कहे गये एक लाख पचास हजार पूर्व वर्ष बीत गये। अन्तमें कुछ भी नहीं रहता, केवल उनकी आयुका प्रमाण एक माह शेष रह गया, जहाँ सिंहके द्वारा हाथियोंके कुम्भस्थल आहत नहीं किये जाते, ऐसे सम्भेदशिखर पर्वतपर, मुनिसमूहके साथ हाथ ऊपर कर दो

१६. १. A रिसिसोसहं । २. P सयइं तिणाणिहिं । ३. A P एयारह । ४. A omits this foot. ५. A omits this foot. ६. A विरयहिं । ७. P लक्खतइउ । ८. A P add after this : मिलिउ
तिरिक्खविदु संखेज्जउ, एत्तियजणहं करिवि साहिज्जउं । ९. A P कहंतहं । १०. A वरिसहं ।
१७. १. A P ठइ । २. A माससेस थिय । ३. A हरिणहअविक्कय; P हरिणहपरि ह्यं ।

वइसाहहु मासहु सियछट्ठिहि
 खंतिवर्यसियाइ संभाणित
 णाहु चारुचारित्तु विवज्जइ
 किरियाभट्टु उड्डु संचलियउ
 जीवपक्खिउदिग्गाहपंजरु
 अग्गिक्खुमारहि अग्गि विइण्णउ
 चउदहभूयगामरइ छंडिय
 गउ गउ गउ जि पढीवउं णायउ

सँत्तमभवि हियचंदाइट्ठिहि ।
 एक्कल्लउ समाहिघरु आणित ।
 णग्गउ थिउ णिल्लेज्ज ण लब्बजइ ।
 सिद्धिविलासिणीहि जिणुं मिलियउ ।
 इंदें पुच्चिउ मुक्ककलेवरु ।
 सर्वइ चवइ णहि जंतु सरण्णउ ।
 अहिणंदणेण मोक्खपुरि मंडिय ।
 मच्चु वि होज्जउ तंहि जि णिकेयउ ।

५

१०

घत्ता—जणु आवइ जाइ ण थाइ खणु अस्थवणुग्गमु दावइ ॥

महु हियवइ भरहाणंद्यरंपुष्पयंतसमु भावइ ॥१७॥

हय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसणुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइय महामव्वभरहाणुमणिए
 महाकव्वे अहिणंदणिव्वाणगमणं णाम एक्कचालीसमो परिच्छेउ .समत्तो ॥११॥

॥ ११ अहिणंदणचरिथं समत्तं ॥

पक्षके योगनिरोधमे स्थित हो गये। वैशाख माहके शुक्लपक्षकी पष्ठीके दिन सातवें नक्षत्रके चन्द्रमासे युवत होनेपर शान्तिरूपी सखीसे सम्मानित वह अकेले समाधिघरमे स्थित हो गये। सुन्दर चरितवाले स्वामीका विश्लेषण किया जाता है, वह नग्न स्थित थे एकदम लज्जाहीन, उन्हें लज्जा नहीं आती थी। स्पन्दनसे रहित नक्षत्रके समान वह ऊपर चले, और जिन भगवान् सिद्धि-रूपी विलासिनीसे जा मिले। इन्द्रने जीवरूपी पक्षीके लिए वन्दीगृहके समान उनके शरीरकी पूजा की। अभिनकुमार देवोंने उसे आग दी। आकाशमे जाते हुए पुण्यात्मा इन्द्र कहता है कि चौदह भूतग्रामोमे रति छोड़कर अभिनन्दनने मोक्षपुरीको अलंकृत किया। वह गये तो गये, फिर वापस नहीं आये। मेरी भी घर वहीपर हो।

घत्ता—जीव आता है और जाता है; एक क्षण भी स्थिर नहीं रहता, केवल अस्त और उदगम बताता है। वह मुझे भरतको आनन्द देनेवाले पुष्पदन्तके समान, हृदयमे अच्छे लगते हैं ॥१७॥

हस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त
 द्वारा प्रणीत और महामव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका अभिनन्दन
 जिनवरका चिर्वाणगमन नामका इकताश्रीसवाँ
 परिच्छेद समाप्त हुआ ॥११॥

४. A सत्तमभविर्हि चंदा । ५. A P णिल्लेज्जु । ६. A उवसचलियउ । ७. P जणु । ८. A P सबहु, but T सबइ स्वर्गपतिः । ९. A तं जि णिकेवउ; P वंहि जि णिकेयउ । १०. P ०णंदयइ । ११. A P omit the line.

सन्धि ४२

पंचमगङ्गामणु पदु पंचगुरुहुं पहिलारउ ॥
पंचमैतित्थयरु पणविवि पंचेसुवियारउ ॥ ध्रुवकं ॥

१

	णिज्जियसंघणं	संतं संघणं ।
	णिज्जियरुवं	णिरुवमरुवं ।
५	णिज्जियगंधं	सुरं हियगंधं ।
	णिज्जियसरसं	वज्जियसरसं ।
	णिज्जियकोहं	वरवक्कोहं ।
	णिज्जियमाणं	सुहरिसमाणं ।
	णिज्जियमायं	चत्तपमायं ।
१०	णिज्जियलोहं	गयसल्लोहं ।
	मुणियपयत्थं	भासातत्थं ।
	कयसुत्तत्थं	जं दिव्वत्थं ।
	पालियमहिमं	धंल्लियमहिमं ।

सन्धि ४२

पांच गुरुओंमें पहले, पांचवी गतिमें गमन करनेवाले प्रभु (सिद्ध) और कामका नाश करने-
वाले पांचवें तीर्थंकर (सुमतिनाथ) को मैं प्रणाम करता हूँ ।

१

जो श्रवण (कान) को जीतनेवाले सन्त श्रमण हैं, जो बाह्य रूपको जीतकर भी अनुपम रूपवाले हैं, गन्धको जीतकर भी सुरभिन्त गन्धवाले हैं, काम-सुखको जीतकर जिन्होंने सराग वचन छोड़ दिया है, जो क्रोधको जीतकर भी उत्तम वाक्य-समूहवाले हैं, मानको जीतकर भी जो इन्द्रके समान हैं, जिन्होंने मायाको जीत लिया है, एवं प्रमादका परित्याग कर दिया है । जो लोभको जीतनेवाले और शल्योंसे रहित हैं । प्रसस्तके ज्ञाता, निर्बाध वक्ता, दिव्यार्थवाले सूत्रोंके निर्माता,

A has, at the beginning of this Samdhi, the following stanza:—

सोऽयं श्रीभरतः कलङ्करहितः कान्तः सुवृत्तः शुचिः

सख्योतिर्मणिराकरो प्लुत इवानर्ध्वो गुणैर्भासते ।

वंशो येन पवित्रतामिह महाभवाद्भयः प्राप्तवान् (प्रापितः ?)

श्रीमद्वल्लभराज—कटके यश्राभवज्ञापकः ॥ १ ॥

No other known MS of the work gives it.

१. १. A P पंचम तित्थयरु । २. P समणं । ३. P समणं । ४. A सुरहिसुयंघं; T सुरहिसुयंघं ।
५. A सुवत्तत्थं । ६. T लघियमहिमं ।

महिलाकुमई
इच्छियसुमई
तस्स पचितं

मोतुं कुमई ।
णमिउं सुमई ।
बोच्छं वित्तं ।

१५

घत्ता—जिह ते लइउ ब्रउ जिह हुयउ अणुत्तरि सुरवरु ॥
जिह जायउ सुमई तिह कहमि समासइ वइयरु ॥१॥

२

जलवरिससीयए दीवए वीयए
भमियमत्तंडए तमपडलखंडए
तरुणणरमिहुणपरिवडियसणेहए
णडियवरहिणणडे सरिवरुत्तरतडे
दुक्खणिग्गमणरइरमणवणसिरिसही
तम्मि गच्छंतसामंतभडसुहयरी
सुसिणरससिचिए हसियगयणंगणे
अमलिणा सणलिणा जत्थ जलवाचिया
मंदिरे मंदिरे सइरंगइ गोमिणी

कुंभयणणेहि णिक्खित्तमहिबीयए ।
फुल्लतरुसंडए धौदईसंडए ।
पुण्वंसुरसिहैरिणो हरिदिसिविदेहए ।
पोमरयरासिपिंजरियकुंजरघडे ।
जत्थ तत्थत्थि पिहु पुक्खलावइ मही ।
सेयसउहवाली पुंडरिगिणि पुरी ।
मोत्तियकणचिए प्रंगणे प्रंगणे ।
कुररकारंडकलहंसससेविया ।
हम्मई मइलो णचए कामिणी ।

५

महिमाका पालन करनेवाले, धरती और लक्ष्मीको छोड़नेवाले हैं । जिन्होंने महिला पृथ्वीकी वृद्धि और कुमतिको छोड़नेके लिए सुमतिको इच्छा की है, ऐसे सुमतिनाथको मैं प्रणाम करता हूँ और उनके पवित्र वृत्तान्तको कहता हूँ ।

घत्ता—जिस प्रकार उन्होंने व्रत लिया, जिस प्रकार वह अनुत्तर स्वर्ग विमानमे उत्पन्न हुए और जिस प्रकार सुमति नामक तीर्थकर हुए, वह सारा वृत्तान्त मैं संक्षेपमे कहता हूँ ॥१॥

२

जो जल वर्षासे शीतल हैं तथा जिसमे घड़ोके द्वारा धरतीमे बीज बोये जाते हैं, जिसमे अन्धकारके समूहको नष्ट करनेवाला सूर्य परिभ्रमण करता है और वृक्षसमूह खिला हुआ है, ऐसे घातकी खण्ड द्वीपके पूर्वमें सुमेरुपर्वतकी पूर्वदिशामे, जिसमे तरुण नर जोड़ोंमे स्नेह बढ़ रहा है, ऐसा विदेह क्षेत्र है । जिसमे मयूररूपी नट नृत्य करता है और जिसमे कमलके परागसमूहसे हस्ति-घटा पिंजरित (पीली) है, सीता नदीके ऐसे उत्तर तटपर विशाल पुष्कलावती भूमि है, जो दुःखको दूर करनेवाली एवं रतिरमण करानेवाली वनलक्ष्मीकी सखी है । उसमे चलते हुए भट सामन्तोसे सुखकर एवं श्वेत चूर्णके प्रासादोवाली पुण्डरीकिणी नामकी नगरी है । जिसके केशर रससे सिंचित गगनांगनको हंसनेवाले भूकाकणोंसे अंचित आंगन-आंगनमे कमलों सहित निर्मल बावड़ियाँ हैं । धर-धरमे स्वैरगामिनी लक्ष्मी है । मृदंग बजाया जाता है और कामिनी नचायी जाती है । जहाँ

७. A लयउ वउ; P लइउ वउ ।

२. १. A P कुंभयणणेहिए खित्तं । २. A घायई । ३. A P ० णरमिहुणए वड्डियं । ४. A हरिदिसं ।

५. A P ० सिहरिए । ६. A सउहाउली । ७. A P पुंडरिगिणि । ८. A P पणणे पंगणे । ९. A समलिणा । १०. A P कलहंसजुयसेविया । ११. A सई रमइ but gloss स्वेच्छाचारिणी ।

- १० महसमयसंगमो उववणे उववणे - रमइ वईसवणओ आवणे आवणे ।
 वृढसिंगारए जोववणे णववणे वसइ वरसरसई माणवे माणवे ।
 जत्थ सब्बो जणो जित्तिगिवाणओ तत्थ पहु अत्थि णामेण, रइसेणओ ।
 किंकरा वंघुणो दाणसंमाणिया रायलच्छी चिरं तेण संमाणिया ।
 मंतियं चितियं चारु कळं पुणो मोक्खसोक्खं करो णत्थि रज्जे गुणो ।
- १५ घत्ता—उवसमवाणिएणै सिंचेप्पिणु किज्जइ सीयलु ॥
 भोयत्तेणेण पुणु पज्जलइ भीमु कामाणलु ॥२॥

३

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| गच्छामु इच्छामु | गुरुपाय पेच्छामु । |
| इय भणिवि ससु चिणिवि | जिणु थुणिवि मणु जिणिवि । |
| मोहणिउ मेल्लेवि | अइरइहु मई देवि । |
| वल्लइहु णंदणहु | तं अरुहणंदणहु । |
| ५ प्रायंति त्रउ लइउ | हियवउ ण चिन्दिहयंउं । |
| रामाहिरामेसु | इट्ठेसु कामेसु । |
| दुव्वारवारणइं | सोलह वि कारणइं । |
| भावेण भावेवि | णीसट्ठ वंचसेवि । |
| जिणसुत्तु जिणवित्तु | जिणणांउं जिणगोत्तु । |
| १० गुरुपुणु अज्जेवि | मोहं विसज्जेवि । |

उपवन-उपवनमें वसन्तका समागम है, और जहाँ कुवेर बाजार-बाजारमें रमण करता है। शृंगारित नवनवयौवन और मनुष्य-मनुष्यमें जहाँ सरस्वती निवास करती है। जहाँ सभी मनुष्य देवोंको जीतनेवाले हैं, ऐसे उस नगरमें रतिसेन नामका राजा था। जिसके अनुचर और बन्धु दानसे सम्मानित हैं, उसने बहुत राज्यलक्ष्मीको सम्मानित किया (बहुत समय तक उसका उपभोग किया)। फिर उसने अपने शुभ कामको मन्त्रणा और चिन्तना की कि राज्यसे मोक्षसुखको देने-वाला गुण नहीं है।

घत्ता—उपशमरूपी जलसे सींचकर कामरूपी आगको शान्त करना चाहिए, भोगोंसे तो कामाग्नि भयंकर रूपसे प्रज्वलित हो उठती है ॥२॥

३

'मैं जाता हूँ। इच्छा करता हूँ। गुरुचरणोंके दर्शन करता हूँ।' यह विचारकर, समताको पहचानकर, जिनकी स्तुति कर, मनको जीतकर, मोहनौय कर्मको छोड़कर, अपने प्रिय पुत्र अति-रथको राज्य देकर, अहोन्नन्दनके चरणोंमें उसने नृत ले लिया। स्त्रियोसे सुन्दर इष्ट कामोंमें उसका मन तनिक भी विस्मित नहीं हुआ। संसारका निवारण करनेवाली सोलह कारण भावनाओंकी अपने मनसे भावना कर, मुक्त व्यवसाय कर, जिनसूत्र जिनवृत्त जिननाम जिनगोत्र भारीपुण्यका

१२. AP वहसवणु पुणु । १३. A P पाणिएण । १४. A P भोयत्तेणेण ।
 २. १. P एच्छामु । २. P मही देवि । ३. A P जित्तारिसंदणहु । ४. A P add after this: थुणि-
 गोत्तणामासु रविकिरणवामासु । ५. AP प्रायंति तउ । ६. A P विभविउ । ७. A P उवसेवि ।

अंभ करिवि संगासु	हुळ वइजयंतीसु ।	
णिवसेइ कंतम्मि	तं वइजयंतम्मि ।	
कालेण दीहरहं	तेत्तीस सायरहं ।	
सरिसाउ माणियउं	णियंबंध णीणियउं ।	
पुणु तस्स सुहभाउ	ळम्माससेसाउ ।	१५
सक्केण जाणियउ	संबंधु भाणियउ ।	
धणयस्स णेहेण	हरिसुद्धदेहेण ।	
इह जंबुदीवम्मि	भो भरहत्तेत्तम्मि ।	
चिरु वसियसयरम्मि	साकेयणयरम्मि ।	
मेहरहु प्पहईसु	पिय मंगला तासु ।	२०
होविही सुओ ताहं	जिणु जाहिं पियराहं ।	
पुरु करहि सोवण्णु	ता झ सि बहुवण्णु ।	
घत्ता—वज्जहिं मरगयहिं वैरुलियहं गयणुन्मासणु ।		
जक्खं ^{१३} णिम्मवियउं कोसलपुरु पावविणासणु ॥३॥		

४

एत्थंतरए जणमणरामे	चासहरे णिसि पच्छिमजामे ।	
मळपल्लके णिहायंती	हंसी विव कभले णिवसंती ।	
पेच्छइ देवी सिविणयपंती	सुद्धिगतारमुत्ताहलकंती ।	
गयणाहं गोमंडलणाहं	पिंगलचलणयणं मयणाहं ।	
पोमं ^१ पीणियपुहईणाहं	दामं हंजियभसलसणाहं ।	५

अर्जन कर, मोहका विसर्जन कर; वह संन्यासपूर्वक मरकर वैजयन्त विमानमे अहमेन्द्र हुआ। वह सुन्दर वैजयन्त विमानमे निवास करता है। तेंतीस सागर पर्यन्त उसने सरस आयुका भोग किया, और इस प्रकार अपना निबन्ध पूरा किया। फिर उसकी वृषभभाववाली आयु छह माह शेष बची। इन्द्रने जान लिया। हर्षसे उद्वत है देह जिसमे, ऐसे स्नेहसे उसने घनदसे सम्बन्ध कहा—“इस जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रमे, जिसमे पहले सगरका निवास था ऐसे साकेत नगरमें राजा मेघरथ है। उसकी प्रिया मंगला है। उनका पुत्र जिन होगा; इसलिए तुम उनके माता-पिताके पास जाओ, नगरको स्वर्णमय बनाओ।” तब शीघ्र ही—

घत्ता—यक्षने वज्रों, मरकत मणियों-नैदूर्योसे आकाशचुम्बी पापोंका नाश करनेवाले बहुरंगे अयोध्यानगरका निर्माण किया ॥३॥

४

इसी वीच जनमनोके सुन्दर निवासगृहमे रात्रिके अन्तिम प्रहरमे कोमल पलंगपर सोती हुई, जैसे हंसिनी कमलोमे निवास करती है, हिम तार और मोतियोंके समान कान्तिवाली वह देवी स्वप्नमाला देखती है। गजनाथ-वृषभराज पीली और चंचल आंखोवाला, सिंह; पृथ्वीनाथको

८. A P मुठ । ९. A P तं । १०. P णियंबंधणियउ । ११. A होही । १२. A बहुपण्णु । १३. A P णिम्मियउ ।

४. १. A लच्छीविमसियकमलसणाहं, P पोमापीणियं ।

	ताराणाहं वासरणाहं कलसज्जयं मंगलकुलणाहं तुंगतरंगं तीरिणिणाहं गेहं सुवसिथसुरवरणाहं	क्षसजुयलं तडिजुयलगुणाहं । कमलसरं कीलियकरिणाहं । वइसणयं च ससावयणाहं । अवरं पवरं थियफणिणाहं ।
१०	रयणगणं विम्हिदधणणाहं इय दैट्ठुं पुच्छइ गियेणाहं मो सोलहपुरिल्लगयणाहो तं णिसुणिवि पभणइ णरणाहो सव्वणहं सविदसमच्चो	दीहसिहालं साहाणाहं । जायाअज्ज दिट्ठिसिणिणाहं । ताणं कहसु फलं भइ णाहो । होही पुत्तो तुह जगणाहो ^{१०} । देवो णहु ^{१२} सो भणइ मच्चो ।
१५	हुए हरिभणणे ^{१३} णिरवज्जे ^{१४} आया देवी हिरि ^{१५} सिरि कंती	सइसरीरपक्खालणकज्जे । लच्छी सुद्धी दिहि ^{१६} भइ कित्ती ।

घत्ता—अणवइण्णि अरुहे पहिलउ जि जाम छम्मासिउ^{१७} ॥

तास धणाहिवेण धणधारहिं^{१८} नृवधरि वरिसिउं ॥४॥

५

णीलियदिसावणइ
तहिं सुद्धवीयाइ

मासम्मि सावणइ ।
दूरं विणीयाइ ।

प्रसन्न करनेवाली पद्मा, (लक्ष्मी), गुणगुणते हुए भ्रमरोसि युक्त पुष्पमाला, तारानाथ (चन्द्रमा), वासरनाथ (सूर्य); विद्युत्तयुगलकी तरह मत्स्ययुगल, मंगलकुलका स्वामी कलशयुगल; जिसमे गजनाथ क्रीड़ा कर रहे हैं, ऐसा कमलाकर, ऊंची तरंगोवाला समुद्र; सिंहेसि युक्त आसन (सिंहासन), सुवसित-सुरवरोंका घर (देवविमान); नागलोक, कुबेरको विस्मित करनेवाला रत्नसमूह; लक्ष्मी ज्वालाओंवाली आग । यह देखकर वह अपने स्वामीसे पूछती है कि "आज मैं स्वप्न देखनेवाली हो गयी हूँ, अर्थात् आज मैंने स्वप्न देखे हैं, जिनमे पहला गजनाथ है, ऐसे उन स्वप्नोंका फल हे स्वामी मुझसे कहिए" । यह सुनकर राजाने कहा, "तुम्हे विश्वनाथ पुत्र होगा । सर्वज्ञ, और सर्वेन्द्रोंके द्वारा समर्पणीय वह देव हैं, उन्हें मर्त्य नहीं कहा जाता ।" इन्द्रका निरवच कथन पूरा होनेपर; सतीके शरीरका प्रक्षालन करनेके लिए, श्री-हो-कान्ति-लक्ष्मी-बुद्धि धृति देवियां आयी ।

घत्ता—देवके अवतार लेनेके पहले जब छह माह बाकी थे, तब कुबेरने राजाके घरमे स्वर्णवृष्टि की ॥४॥

५

श्रावण माहमें, जब कि दिशाएँ और धरती हरी थी, शुक्लपक्षकी द्वितीयाके दिन वह गर्भमें

२. A णिज्जियधणणाहं; P विभियधणणाहं । ३. P दिट्ठ । ४. A णिवणाहं । ५. A णिसिणिहो ।
६. A जे सोलहं । P जो सोलहं । ७. A P गयणाहं । ८. A P णाहं । ९. P महिणाहो ।
१०. P जयणाहो । ११. P सव्वणहं सविदं । १२. A देवो णठ भणइ सो मच्चो; P देवो ण हि सी
भणइ मच्चो । १३. A P हरिभवणे । १४. A णिरवज्ज । १५. P सिरि हिरि । १६. P सइं ।
१७. P छमासिउ । १८. A P णिवधरि ।

गन्धम्मि अवधरिउ	जणणीह उरि धरिउ ।	
सो वइजयंतेंदु	पुण्णिमइ णं चंदु ।	
कयजयरवालाइ	आवेवि लीलाइ ।	५
कैरघरियवीणाइ	सहुं तियससेणाइ ।	
तं णयरु तं भवणु	सा जणणि सो जणणु ।	
अंगंतरंगत्थु	वंदेवि मुंणित्तित्थु ।	
गड सयमहो तेत्थु	सविमाणु तं, जेत्यु ।	
रयणप्पहाकिट्टि	पुणु विहिय चसुविट्टि ।	१०
जक्खीकडक्खेण	तूसेवि जक्खेण ।	
ता जावणवमास	संपुण्णविहलास ।	
केवलसिरीरिद्धि	अहिणंदणे सिद्धि ।	
हयदियहपौडीहिं	णवलक्खकोडीहिं ।	
जइया गया ताहं	सायरसमाणाहं ।	१५
तइया महंतेण	पुण्णेण होंतेण ।	
चित्ताइ पिउजोइ	पविमलदिसौटोइ ।	
त्तिण्णाणमयदिट्टि	पंचमउ परमेट्टि ।	
संभूउ सो जास	संतुहिय सुर ताम ।	

घत्ता—णाणावाहणहिं दिसि दिसि झुल्लंतवडायहिं ॥ २०

आइउ अमरवइ सहुं चळैविहअमरणिक्कायहिं ॥५॥

अवतरित हुआ और अत्यन्त विनीत माने उस वैजयन्त देवको अपने उदरमें धारण किया, जैसे पूर्णिमाने चन्द्रमाको धारण किया ही। तब इन्द्रने जय-जय शब्द करती हुई हाथमें वीणा धारण करनेवाली देवसेनाके साथ लोलापूर्वक आकर, उस नगर, उस भवन, उस माता, उस पिता और शरीरके भीतर स्थित मुनितीर्थकी वन्दना की। और वह वहाँ चला गया जहाँ उसका अपना विमान था। फिर यक्षिणीके कटाक्षसे सन्तुष्ट होकर यक्षने रत्नोंकी प्रभाको आकृष्ट करनेवाली धनवृष्टि तबतक की कि जवनक विकलोंकी आशा पूरी करनेवाले नौ माह नहीं हुए; जब तीर्थकर अभिनन्दनको केवल श्रीरूपी ऋद्धि सिद्ध हुई थी, तबसे नौ लाख करोड़ सागर दिवस परिपाटीके गुणित होनेपर (बीतनेपर); तब महान् पुण्यके योगसे चित्रा नक्षत्रमे (माघ शुक्ला एकादशी); दसो दिशाओंका विस्तार जिसमे निर्मल है, ऐसे पितृयोगमे, तीन जानोंकी दृष्टिवाले पांचवें परमेष्ठो जब उत्पन्न हुए तो देवलोक क्षुब्ध हो उठा।

घत्ता—नाना वाहनो, दिशा-दिशामें झूलती हुई पताकाओं और चार प्रकारके अमर-निकायोंके साथ इन्द्र आया ॥५॥

५. १. A जणणीउरे । २. P करि धरियं । ३. A P मुणि तेत्थु । ४. P हयदियहणाडीहिं । ५. A P पविमलदिसाहोइ; T दिसाओइ दशदिशाटोपे । ६. P adds after this : एयादिसि पक्खि, सिण् चदे नहारिक्खि । ७. A बहुविहअमरं ।

६

	पाविऊण पट्टणं	देवि तिप्पयाहिणं ।
	गंपि रायमंदिरं	णिम्मिऊण णिन्भरं ।
	बंधुचित्तविन्भमं	अण्णवालसंकमं ।
	वज्जपाणिणा पुणो	वंदिओ सयं जिणो ।
५	अंकए णिवैसिओ	सूहवो सुहासिओ ।
	कुं भकंठबंधुरो	चोइओ ससिंधुरो ।
	पत्तओमरोयलं	पंडुरं सिलायलं ।
	तम्मि देहमाणवो	तेण दिव्वमाणवो ।
	णाहओ णिरुविओ	भत्तएहि भाविओ ।
१०	पावतावहारिणा	दुद्धरासिचारिणा ।
	देवएहि ण्हाणिओ	पुप्फगंधमाणिओ ।
	आलयं पुण्णोणिओ	जेहि सो वियाणिओ ।
	ते जयम्मि घण्णया	णाणिणो सँउण्णिया ।
	मंडणेहिं राइओ	किंणरोहिं गाइओ ।
१५	जोइएहिं झाइओ	अस्थिणत्थिवाइओ ।
	अप्पिओ विपंकए	मारुपाणिपंकए ।
	वज्जिणा जिणेसरो	जीयलोयणेसरो ।
	संसिऊण तं णिवं	कोसिओ गओ दिवं ।

६

नगरको पाकर, उसकी तीन प्रदक्षिणा कर राजमन्दिरमे जाकर, बन्धुओंके चित्तको विभ्रममे डालनेवाले कृत्रिम बालकका पूर्ण रूप निर्मित कर, इन्द्रने स्वयं जिनको प्रणाम किया, और सुभग सुभाषित उन्हें अपनी गोदमे ले लिया। गण्डस्थल और कण्ठसे सुन्दर अपने गजको उसने प्रेरित किया और अमरालय पाण्डुशिलापर पहुँचा। देहश्रीसे अभिनव दिव्य मानवनाथको उसने स्थापित किया। और भक्तोंने उसकी भक्ति की। देवोंने पापतापका हरण करनेवाली दुग्धराशिके जलसे स्नान कराया और पुष्पगन्धसे सम्मान किया। वे पुनः उन्हें घर ले आये, कि जिनके द्वारा वे ले जाये गये थे। जगमे वे ज्ञानी और पुण्यात्मा घन्य हैं जो अलंकारोंसे अलंकृत हैं, किन्नरोंके द्वारा जिनका गान किया जाता है, योगियोंके द्वारा जिनका ध्यान किया जाता है; जो स्थाप्तादके प्रतिपादक हैं। फिर माताके निर्मल करकमलमे इन्द्रने जोबलोकके ईश्वर जिनको दे दिया। और राजाकी प्रशंसा कर इन्द्रलोकको चला गया।

६. १. A वज्जपाणिणो । २. A P मरालयं but A corrects it to सुरालयं; gloss in K अमरानलं ।

३. P सिलालयं । ४. A माणवे । ५. A माणवे । ६. A णाहए । ७. A पुणो णिओ । ८. A समुण्णया;

घत्ता—सुरसीमंतिगिहिं थणथणणएण वड्डारिउ ॥

सुमइससैमंघचिउ पडु सुमैइ मणिवि हक्कारिउ ॥६॥

२०

७

पुन्वाण गिन्वाणकीलाइ कयसोक्ख
अइऊण ता णवर दणुयारिरायण
सिंचेवि सुईसलिलधाराणिवाएहिं
सवलहिवि कप्पूरचंदणपयारेहिं
कलरवतुलाकोडिकंचीकलावेहिं
वट्ठो सिरे पट्टु देवाहिदेवस्स
अंधाई बहिराई धणविह्वहीणाई
महि भुंजमाणस्स दिन्वाइ सोक्खाई
ता चित्थियं चित्थिण्जं जिग्गिदेण
तं चयमि तव करमि संचरमि मग्गेण विसहिंदचिण्णेण जडकसरदुग्गेण ।

कुमरत्तणेय वीलीण दहलक्ख ।
भंभंतगंभीरभेरीणिणाएण ।
संमैहिवि णवमालईपारियाएहिं ।
भूसेवि केऊरहारेहि दोरेहिं ।
णक्खेवि चिन्मसहिं हावेहिं भावेहिं ।
णिग्गिबंधकामावहो णिविलेवस्स ।
संपीणयंतस्स कापीणदीणाई ।
गलियाई पुन्वाइ णवलक्खसंखाई ।
रज्जेण मह होउ भववेल्लिकंदेण ।

५

१०

घत्ता—गिरिकक्करि पडइ मड्डुकारणि जिह हयकरहउ ।

रज्जरसेण तिह मणु महियलि को किर ण णिहउ ॥७॥

घत्ता—देव-सीमन्तिनियोके द्वारा अपने दूधसे वृद्धिको प्राप्त तथा सुमतिके लिए समर्पित प्रभुको सुमति कहकर पुकारा गया ॥६॥

७

सुख उत्पन्न करनेवाली देवक्रीड़ाओ और कौमार्यमे उनके जब दस लाख पूर्व वर्ष बीत गये, तो इन्द्रने आकर घूमते हुए गम्भीर भेरी निनादके साथ पवित्र जलधाराओकी वर्षासे आभषेक कर, नवीन मालती और पारिजात कुसुमोसे पूजा कर, कपूर और तरह-तरहके चन्दनोसे लेप कर, केयूर-हार-दोरो और सुन्दर बजते हुए घुँघरुओवाली करधनियोसे अलंकृत कर, विभ्रमों, हाव-भावोसे नृत्य कर, कामको निरन्तर ध्वस्त करनेवाले निर्लेप देवाधिदेवके सिरपर पट्ट बांध दिया । अन्धे, बहिरो, धनविभवसे हीनो, कन्यापुत्रों और दीनोको प्रसन्न करते हुए, धरती और दिव्य सुखोका भोग करते हुए, उनकी नौ लाख पूर्व वर्ष आयु बीत गयी । तब जिनेन्द्रने चिन्तनीय-का विचार किया कि संसाररूपी लताका अंकुर यह राज्य भेरे लिए व्यर्थ है । उसे मे छोड़ता हूँ, तप करता हूँ और वृषभेन्द्र (ऋषभनाथ धवल बैल) के द्वारा स्वीकृत जड़ और गरियाल बैलोके लिए अत्यन्त दुर्गम मार्गसे चलता हूँ ।

घत्ता—जैसे हत-करम (जैट) मधुके लिए पहाड़के शिखरपर गिरता है, बताओ राज्यके रसके कारण संसारमे कौन नहीं मारा जाता ? ॥७॥

११ P T सुमइ समप्पिवर and gloss in T सुमति: समपिता अतिशयवती येन । १२. P सुम्मह ।
७. १. P अविऊण । २. P सिंचेवि सो सलिल । ३. A सम्मोवणिण । ४. P पारियाएहि । ५. A दोरेहिं ।
६. A P णिग्गबंध ; T णिग्गबंध सातत्पम् । ७. P णववीसलक्खाई ।

अणुभासियं तं जि लोर्यति^१ विबुद्देहिं
तिपुरिल्लकल्लाणविहि तौहि संविहिउ
मुक्काइं वत्थाइं भीमाइं सत्थाइं
लुंवेवि कुंतलकलावो वि कौतल्लेइ
५ सो देवदेवैण धित्तो समुद्धम्मि
मणपल्लउप्पण्णणाणेण सुवसिल्लु
णीसंङ्कु णिक्कंखु णिम्मुककहुविहासु
वइसाहसियणवमि पुव्वणह्वेलाइ

आवेवि देवेहिं पज्जणपमुद्देहि ।
सिवियाइ षेऊण णंदणवणे णिहिउ ।
गहियाइं सत्थाइं णियधम्मसत्थाइं ।
सहुं छड्ढिओ जोगपत्तम्मि पविमलइ ।
दुद्धु बुकल्लोलमालारउहम्मि ।
छट्ठोववासत्थु णीसंगु णीसत्थु ।
सियलेसु णिहोसु णीरोसु णीहासु ।
आलिंणिओ सामिओ दिक्खवालाइ ।

घत्ता—अवरहिं दिवहि पुणु संसारमहण्णवतारउ ॥

१०

पुरवरु सउमणसु चरियाइ पइदुउ भडारउ ॥८॥

९

तत्थ सो पोमणामेण राण सभाविओ
पंचचोज्जाइं जायाइं दाणिसस तंस्सालए
वीसवासाइं घोरे गहीरे तवे संठिओ
तम्मि दिक्खावणे धायहल्लंततालीदले

भाववंतेण सत्तीइ भत्तीइ भुजाविओ ।
लोयणाहो भंमंतो वसंतो गिरिदालए ।
ता रओ दूसहो दुम्महो दुब्जओ णिट्ठिओ ।
णिच्चलं झायमाणेण झेयं^३ पियंगूतले ।

८

यही बात लौकान्तिक देवोने आकर कही। इन्द्र प्रभृति देवोने आकर आगेकी तीसरी कल्याण विधि सम्पन्न की और शिविकासे ले जाकर उन्हें नन्दनवनमे स्थापित कर दिया। वस्त्र और भीषण शस्त्र छोड़ दिये गये, स्वधर्मको शासित करनेवाले शास्त्र ग्रहण कर लिये गये। केशकलापको उखाड़कर पुष्पमालाके साथ पवित्र योगपात्रमें डाल दिया गया। देवेन्द्रने दुग्धजलकी लहरोकी मालासे भयंकर समुद्रमे फेंक दिया। मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न हो जानेके कारण स्ववशीभूत, अनासंग और शल्यरहित, छठे उपवासमे स्थित, निःसंग आकांक्षा-रहित, दुविधाओंसे मुक्त, शुक्ल लेश्यासे युक्त, निर्दोष अक्रोध, भाषाविहीन (गीन) स्वामीका वैशाख माहके शुक्लपक्षकी नवमीके दिन, पूर्वाह्ण वेलामे दीक्षा रूपी बालाने आलिगन कर लिया।

घत्ता—एक दूसरे दिन, संसाररूपी महासमुद्रसे तारनेवाले भट्टारक जिन सुमतिनाथ, सोमनस नगरमे चर्याके लिए प्रविष्ट हुए ॥८॥

९

वहां पद्मनाभके राजाने उन्हें पट्टयाहा तथा भावसे भरे हुए उसने शक्ति और भक्तिसे उन्हें आहार करवाया। उस दानीके घरमे पांच आश्चर्य हुए। लोकनाथ सुमति पहाड़ोंके घरमें भ्रमण करते और निवास करते हुए वे बीस वर्षोंके घोर तपमे स्थित हो गये। और तब दुःसह, दुर्मंद और दुर्जय कर्मरज नष्ट हो गया। वायुसे आन्दोलित तालीदलवाले उसी दीक्षा वनमे

८ १. P लोर्यंत । २. A P कुतलइ । ३. P कल्लोलवेलारउहम्मि ।

९. १. हम्मालए । २. P समतो । ३. A वायं ।

आइमे मासए चंदजोण्हं किए पक्खए
इच्छिये गो सइत्तम्मि राथाणसंमाणसं
मेरुधीरेण हंतूण कम्मारिकूरं बलं
आसणाणं पयपेण पायालए पण्णया
माणवा माणवाणं निवासाउ संचल्लिया
आगओ वित्तसच्चू ससूरो सतारो ससी
विण्णि बाणासणाणं सयाइं सरीरुण्णओ

बौरसीए इणे पच्छिमत्थे मघारिक्खए । ५
तेण मोत्तूण भत्तं तिरत्तं च काज्जण सं ।
सव्वदन्वावल्लोयं समुप्पाइयं केवलं ।
कंपिया देवलोयम्मि देवा वि णिद्दुण्णया ।
वाहणोद्देहिं खं ढंकिंयं मेइणी डोल्लिया ।
जोइओ दीहणीलाळिमालाज्जडालो रिसि । १०
अंगवण्णण सोवण्णवण्णं समावण्णओ ।

घत्ता—सुरवइअहिबहिहिं महिर्वइहि मि णियणियसत्तिइ ॥

पारद्धउ धुणहुं सुमईसरु परमइ भत्तिइ ॥९॥

१०

जय देव णिप्पाव	णिक्कोव णित्ताव ।
जय तुंग णिन्भंग	दिव्वंग णिन्वंग ।
जय वाम णिन्वाम	णिक्काम णिद्धाम ।
जय धीरे संसार-	कंतारणित्थार ।
जय संत विकंत	परमंत अरहुंत ।
जय कंत कुकथंत	कुणयंत भयवंत ।

५

प्रियंगुलताके नीचे अपने निश्चल ध्येयका ध्यान करते हुए चैत्र माहके शुक्लपक्षकी एकादशीके दिन सूर्यके पश्चिम दिशामे स्थित होनेपर मघा नक्षत्रमे उन्होने अपने चित्तमे राजाओंका सम्मान नहीं चाहा । भोगत्व और रतिको छोड़कर और सम्यक्त्व ग्रहण कर मेरुके समान धीर उन्होने कर्मरूपी अरिके क्रूर बलको नष्ट कर सर्व द्रव्यका अवलोकन करनेवाले केवलज्ञानको प्राप्त कर लिया । आसनोके प्रकम्पनसे पाताललोकमे नाग कांप उठे, देवलोकमे देव भी नीदसे उठ बैठे । मनुष्य मनुष्योके निवाससे चल पड़े । वाहनोसे आकाश ढक गया और धरती हिल उठी । इन्द्र आ गया, सूर्य और तारो सहित चन्द्रमा आ गया । उन्होने लम्बी नीली अलिमालाके समान जटावाले ऋषिको देखा । उनका शरीर तीन सौ धनुष ऊंचा था । अपने शरीरके रंगमे वह तपाये गये सोनेके रंगके समान थे ।

घत्ता—सुरपतियो, नागपतियो और महीपतियोने अपनी-अपनी शक्तिके अनुसार भक्ति-पूर्वक श्रेष्ठमति सुमतीश्वरकी स्तुति शुरू की ॥९॥

१०

हे निष्पाप, निष्क्रोध और निस्ताप ! आपकी जय हो । हे महान् निर्दोष दिशांग, आपकी जय हो । हे सुन्दर औरहित निष्काम और निर्घाम, आपकी जय हो । हे धीर और संसाररूपी कान्तारसे निस्तार करनेवाले, आपकी जय हो । हे शान्त विक्रान्त परमन्त्र अरहन्त, आपकी जय हो । हे स्वामी कृतान्तके लिए अभिय, कुनयका अन्त करनेवाले ज्ञानवान्, आपकी जय हो । हे

४. A वारसीए दिणे, P गारसीए इणे । ५. P सद्धंतं । ६. A पक्खेण । ७. P हल्लिया । ८. A P महिर्वइहि णविउ णियसत्तिइ ।

१०. १. A णित्ताव णिक्कोव । २. P धीर ।

	जय संथ मयमंथ	णिगंथ सिवपंथ ।
	जय दित्त तमैचत्त	अणिमित्तजगमित्त ।
	जय राय रिसिराय	णीराय णिम्मोय ।
१०	जय णंद रुइरंद-	सुहयंद सुहयंद ।
	सुजगिंद भूमिंद	खयरिंद तियसिंद ।
	णित्तंद णिहंद	सुणिवंदसयवंद ।
	जयणाह णिण्णाह	णिन्वाह दुन्वाह ।
	समयार सिदूर-	मंदारकणियार-
१५	सुरधित्तसियरत्त-	सयवत्त सुविचित्त ।
	कुसुमोहकयसोह	णिज्जोह णिम्मोह ।
	जय तिव्व दुणिरिक्ख-	तवपक्खधुवसोक्ख-
	फळसाहि महुं देहि	सुसमाहि लहुं बोहि ।
	घत्ता—इय वंदित्त सुमइ जीहासयहिं सहसक्खे ॥	
२०	चउदारहिं सहित्त किउ समवसरणु ता जक्खे ॥१०॥	

११

मइंदासणं लच्छित्तुंगत्तवासं	वरं आयवत्तत्तयं चंदभासं ।
सुरुम्मुकसेलिंधैविट्ठी विसिट्ठा	पडंती सराणीसरोलि व्व दिट्ठा ।
ण सा तस्स काही समारं वियारं	मणुम्मोहय्यां ते हया जेण दूरं ।

स्वस्थ मदका मन्थन करनेवाले निर्ग्रन्थ शिवमार्ग, आपकी जय हो । हे प्रदीप्त अन्धकारसे त्यक्त, विश्वके अकारण मित्र, आपकी जय हो । हे राजर्षिराज नीराग और मायासे रहित, आपकी जय हो । हे आनन्दमय कान्तसे महान् मुखचन्द वुधेन्द्र, आपकी जय हो । हे भुजगेन्द्र भूपेन्द्र, विद्याधरेन्द्र, देवेन्द्र, नित्येन्द्र निर्द्वन्द्व, सैकड़ो मुनिवरोंसे वन्दनीय, आपकी जय हो । हे नाथरहित निर्बाध और दुर्बाध आपकी जय हो । हे समाचार (शान्त आचारवाले) सिन्दूर मन्दार कर्णिकार देवोंके द्वारा फेंके गये श्वेत रक्त कमलोसे सुविचित्र कुसुमसमूहोंकी शोभावाले आपकी जय हो । हे तीक्ष्ण और दुर्दर्शनीय तपरूपी वृक्षकी शाश्वत सुखरूपी फलशाखावाले आपकी जय हो । आप मुझे (कविको) शीघ्र सुसमाधि और सम्बोधि प्रदान करें ।

घत्ता—इस प्रकार देवेन्द्रने अपनी सैकड़ों जिह्वाओंसे सुमत्तिकी वन्दना की । और इतनेमें यक्षने चार द्वारोंसे सहित्त समवसरणकी रचना कर दी ॥१०॥

११

लक्ष्मीके उच्च निवासवाला सिंहासन, चन्द्रमाकी आभावाले श्रेष्ठ तीन छत्र, देवों द्वारा की गयी पुष्पवर्षा, जो कामदेव द्वारा विसर्जित तीर-पंक्तिके समान दिखाई दी । लेकिन वह उनमें किसी भी प्रकारका कामका विकार उत्पन्न करनेमें असमर्थ थी । क्योंकि वे मनको उन्मादन

३. A तवत्त । ४. A सिरिराय । ५. P णीमाय । ६. P adds after this : अणवद ।
७. A तववेक्ख ।

११. A तगत्तु । २. A आयवत्तं तयं । ३. A सेलंभविट्ठी । ४. P मणुम्मोहय्यां हया ।

तवेणुभवाए बुहार्णद्विरीए .	विहामंडलं कुंडैलं णं सिरीए ।	
णहे सुम्मए हुंदुही गज्जभाणो	मुहालोयणेण्येय-विद्धत्थभाणो ।	५
अभन्वो वि देवस्स पाए णवतो	भिसं दीसए साणुकंपं चवंतो ।	
चला चामराळी मराळील्लिसेया	सुभासाविभासाहिं गिब्जंति गैया ।	
असोयदुद्दुमो दिव्वपक्खिदरावो	जग्ग्मोहणो भारहीए पहावो ।	
सुणिज्जंति दन्वत्थपज्जायभेया	मुणिज्जंति छोएहिं पंचत्थिकाया ।	
गणिज्जंति कम्माइं लल्लीवकाया	पवडूति देहोण चित्ते चिवेया ।	१०

वृत्ता—पुच्छंतहु जणहु सद्देहितिमिरु संणिरसइ ॥

जलि थलि णहि विवरि तं गत्थि जं ण जिणु ससइ ॥११॥

१२

संठ सोलहत्तरु गणहरहं	पुण्वचियाणहं मुणिवरहं ।	
दुण्णि सहस चत्तारि सय	णिसपडंजियज्जीवदय ।	
दोण्णि लक्ख चउपण्ण पुणु	सहस तिण्णि सय तहिं जि भणु ।	
अवरु वि पण्णासइ सहिय	एत्थि सिक्खुव सवरहिय ।	
एकारहसहसइं परहं	अत्थि तेत्थु अवहीहरहं ।	५
देवचित्तकुसुमंजलिहिं	तेरहसहसइं केवलिहिं ।	
चउसयअट्टारहसहस	वेउठिवयहं सुज्झाणवस ।	

करनेवाले उन्हें दूरसे ही नष्ट कर चुके थे । प्रभामण्डल (भामण्डल) ऐसा मालूम हो रहा था मानो तपसे उद्भासित, पण्डितोंको आनन्द देनेवाली लक्ष्मीका कुण्डल हो । आकाशमें बजती हुई द्रुमुभि सुनाई दे रही थी । मुखके अवलोकन मात्रसे विश्वस्त होता हुआ अभय भी देवके पैरोंमें नमस्कार करने लगता है, वह अनुकम्पापूर्वक सुन्दर वाणी कहते हुए दिखाई देते हैं, हंसोंको पंक्तिके समान श्वेत चामरोंकी पंक्ति चंचल है । सुभाषाओं और विभाषाओंमें गीत गाये जा रहे हैं । दिव्य पक्षीन्द्रोंके शब्दसे युक्त अशोक वृक्ष और विश्वका मोह दूर करनेवाला भारतीयका प्रभाव है । द्रव्यार्थ और पर्यायार्थोंके भेद सुने जा रहे हैं, लोगोंके द्वारा पंचास्तिकार्योंका मनन किया जा रहा है । कर्मादि और लह प्रकारके जीवनकार्योंकी गणना की जा रही है, मनुष्योंके चित्तमें विवेक बढ़ रहा है ।

वृत्ता—पूछनेवाले मनुष्यका सन्देहरूपी तिमिर नष्ट हो जाता है । जल-थल-नभ और आकाशमें वह नहीं है कि जिसका जिन कथन नहीं करते ॥११॥

१२

एक सौ सोलह गणधर थे । पूर्वोंके ज्ञाता मुनिवर दो हजार चार सौ । नित्य जीवदयाका प्रयोग करनेवाले स्वपरके हितके साधक, शिक्षक दो लाख चौवन हजार तीन सौ पचास, वहाँ ग्यारह हजार अवधिज्ञानी थे । जिनके ऊपर देवताओंने पुष्पांजलि डाली है, ऐसे केवलज्ञानी तेरह हजार, सद्दयानमें लीन विक्रिया-ऋद्धिधारी अठारह हजार चार सौ । मदका नाश करनेवाले

५. A P कौंडलं । ६. A सगंधो वि । ७. P मरालाण्णिसेया । ८ P सुहासाहिं भासाहिं । ९ K दिव्वत्थं but gloss द्रव्यार्थं । १०. A P भासइ ।

१२. १. A P संठ जि ससोलह । २. A P प्यारहं ।

- दहसहास चंचरो सयइं
तेत्तिय पुणु पण्णासज्जुय
१० लक्खइं गुत्तिसमय गणमि
सैरिसइं वंभीसुंदरिहिं
णिच्चमेव हउल्लियकरहं
पंचलक्ख घरचारिणिहिं
विहरंतहु तहु महिठाणाइं
१५ पुर्व्वहं घडिभालाहयइं
कायबिसरगं थिउ वियडि
मासिं पहिल्लइ पक्ख सिइ
मघणंक्खत्तं णिब्बुयउ
देविंदिहिं जयकारियउ
२० अट्टगुणालंकिउ सुमइ
मणपँज्जवहहं हयमयइं ।
वाइ तासु णिप्पणसुय ।
सहसइं अवरु तीस भणमि ।
तहु जायइं संजमघरिहिं ।
त्तिण्णि लक्ख सावयणरहं ।
णारिहिं अणुवयधारिणिडिं ।
वीसवरिसपँरिहीणाइं ।
एक्कवीसलँक्खइं गयइं ।
माससेसुं समैयतडि ।
एयारिसिदिणि दिण्णसिइ ।
सहुं जोइहिं णिक्कलु हुयउ ।
पुज्जिविं साहुक्कारियउ ।
देउ मज्जु अवियेले सुमइ ।

घत्ता—भरहेण अण्णहिं मि परमेसरु सो वण्णिज्जइ ।

सइं अमराहिवेण गुणैपुप्फयंतु जसु गिज्जइ ॥१२॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभन्वभरहाणुमणिए
महाकब्बे सुमइणिव्वाणगमणं णाम दुचालीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥१२॥

॥ सुमहचरियं समत्तं ॥

मनःपर्ययज्ञानी दस हजार चार सौ, श्रुतमें निष्णात वादी मुनि दस हजार चार सौ पचास । ब्राह्मी सुन्दरीके समान उनकी आर्थिकाएँ तीन लाख तीस हजार थी । नित्यप्रति हाथ जोड़े हुए श्रावक तीन लाख थे । अनुव्रत धारण करनेवाली श्राविकाएँ पाँच लाख थी । घरतीके स्थानोमें परिभ्रमण करते हुए उनकी बीस वर्ष कम, घटिकामालासे आहत इक्कीस लाख पूर्व वर्ष निकल गये । एक माह बाकी रहनेपर वह सम्मेदशिखरके विकट तटपर कायोत्सर्गमें स्थित हो गये । चैत्रशुक्ला ग्यारसके दिन, वह मोक्षलक्ष्मीको देनेवाले मघा नक्षत्रमें दूसरे मुनियोंके साथ निर्वाणको प्राप्त हुए (निष्पाप हुए) । देव-देवेन्द्रोने उनका जयजयकार किया और पूजा कर साधुवाद दिया । आठ गुणोंसे अलंकृत सुमतिदेव मुझे अविकल सुमति दें ।

घत्ता—स्वयं देवेन्द्रके द्वारा जिनके गुणरूपी पुष्पवाले यशका गान किया जाता है, ऐसे उन परमेश्वरका भरत तथा दूसरोके द्वारा भी वर्णन किया जाता है ॥१२॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित तथा महाभन्व भरत द्वारा अनुमत महाकव्यका सुमतिनिर्वाणगमन नामका बयालीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥१२॥

३. P चउरो य सइं । ४. A मणपञ्जवयहं गयमयइं; P मणपञ्जवह वि हयमयइं । ५. P सरसइं ।
६. A omits तहुं । ७. A परहीणाइं । ८. P पुण्णाहं । ९. P एकपुव्वलक्खइं । १०. A माससेसुं ।
११. A एगारसिं । १२. A P महणवसत्तं । १३. A अणिवेहिं सककारियउ; P अणिवेहिं
संकारियउ । १४. P देउ मज्जु विमलमइ । १५. A पुप्फयंतु । १६. A किज्जइ ।

संधि ४३

दप्पिदुदुपाविद्वजगजणियभातु दावियपहु ॥
कम्मट्टगंठिणिद्ववणखसु पणवेप्पिणु पवमप्पहु ॥ध्रुवकां॥

१

गिरंतरं जौं तबलच्छिणिकेउ
परज्जिउ जेण रणे हसकेउं
णियौयममग्गणिओइयसीसु
वियदुदुविवाइविइण्णवियारु
विवज्जिउ जेण वियालविहारु
कडीयलि मेहल णेय णिबद्ध
खयासरिसित्तसरोसहुयासु
भडारव जोरुणपंकयभासु
पमेज्जिउ जो विहिणा विविहेणौ
समिच्छियणिक्वत्तयसोक्खपयस्स
दुगुल्लियकण्हमयाइणयस्स

गइंदखगिदविसंक्रियकेउ ।
समुग्गंउ जो कुगईखयकेउ ।
अपासु अवासुं अर्णासु रिसीसु ।
रयासववारु विसुंक्कवियारु ।
सयौ गलकंदलु जस्स विहारु ।
ण कामिणि जेण सणैहणिवद्ध ।
सुझाणदवग्गिसिहोइहुयासु ।
अमिच्छअतुच्छपर्योपियभासु ।
णमाभि तमीसमहं तिविहेण ।
णइच्छियविप्पवियप्पपर्येस्स ।
अणाभि समायरियं इण्येस्स ।

५

१०

सन्धि ४३

दपसे भरे, दुष्ट और पापी जगमें शुभभाव उत्पन्न करनेवाले पथ-प्रदर्शक अष्टकर्मोंकी गांठको नष्ट करनेसे सक्षम पद्मप्रभुको मैं प्रणाम करता हूँ ।

१

जो निरन्तर तपरूपी लक्ष्मीके निकेतन हैं, जिनका ध्वज गजेन्द्र, गरुड़ और वृषभेन्द्रसे अंकित है, जिन्होंने युद्धमें कामदेवको पराजित कर दिया है, जो कुंगतिके क्षयके लिए उद्यत है, जिन्होंने शिष्योंको अपने आगममार्गमें नियोजित किया है, जो बन्धनरहित, गृहविहीन, अनीश, और ऋषीश्वर हैं । जिन्होंने विदग्ध विवादियोंसे त्रिचार किया है, जो कर्मोंके आसव-द्वारको रोकनेवाले और विकारोंसे मुक्त हैं । जिन्होंने असमयका विहार करना छोड़ दिया है, जिनका गला सदैव हारसे रहित है । जिन्होंने कटितलपर मेखला नहीं बांधी । जिनसे कामिनी स्नेहबद्ध नहीं है, जिन्होंने क्रोधरूपी ज्वालाको क्षमारूपी नदीसे शान्त कर दिया है, जिन्होंने सुध्यानरूपी दावाग्निके शिखासमूहमें इच्छाओंको होम दिया है, जो अरुण कमलोंको कान्तिवाले हैं, जिनकी भाषा मिथ्यात्व रहित प्रचुर जनताके लिए प्रिय है, जो विविध कर्मोंसे रहित हैं, मैं उन ईशको तीन प्रकारसे प्रणाम करता हूँ । जिन्होंने विप्रोंके विकल्पोंसे युक्त (संशयापन्न) पदकी इच्छा नहीं की है, जिन्होंने अक्षय सुखपदकी इच्छा की है, जिन्होंने कृष्ण मृगाजिनकी निन्दा की है, मैं ऐसे इनके (पद्मप्रभुके)

१. १. A समग्गउ । २. A णियागमं । ३. A सयासयकंदलु । ४. A P पयासियभासु । ५. A तिविहेण ।
६. A अक्खयसोक्खपयासु । ७. A पयासु । ८. P कण्हमयं अहणस्स । ९. P इणमस्स ।

भविस्सजिणिद अणिदसमीह
जगुत्तमु गोत्तमु भासइ एव

अहो सुणि सेणियराय णिसीह ।
सुणंति महोरय दाणव देवं ।

घत्ता—धादइसंडइ दीवम्मि वरे जणगोहणसंकिण्णइ ॥

तहि पुण्वमेरुपुण्वइ दिसइ पुण्वविदेहि रवण्णइ ॥१॥

२

सयामयणाहिसुगंधसमीरि
सकच्छव वच्छव वेसु विसालु
समीवसमीवपरिद्वियगामु
फलोणयच्छेत्तणियत्तणरिद्धु
५ तहि पुरि अत्थि पसिद्ध सुसीम
दुभूमितिभूमिसमुण्णयणीड
सरोरुहकेसरलग्गदुरेह
हरीमणिबद्धमणोहरमग्ग
तहि अपरज्जिच्च णाम परिद्धु
१० रईसु व भाविणिर्दुत्तल्लहसंगु

सुसीयहि सीयैहि दाहिणतीरि ।
मरालविहंगैविहिण्णमुणालु ।
परीणपैवासिपऊरियकामु ।
१ पिओ जहि रोसणियत्तणग्गिद्धु ।
दुवारविलंबियमोत्तियदाम ।
महंतफुरंतसुवण्णकवाड ।
जिणालयच्चुलियच्चं वियमेह ।
णिभोयविसेसविसेसियसग्ग ।
करिंदु व दाणि कुलंबरचंडु ।
सरासणु जेम गुणेणं वियंगु ।

सुन्दर चरितको कहता हूँ । उत्तम और सम्यक् चेष्टावाले हे भावो जिनेन्द्र, नृसिंह, हे श्रेणिक सुनो । विश्वमें श्रेष्ठ गौतम इस प्रकार कहते हैं और उसे नाग, दानव और देव सुनते हैं ।

घत्ता—धातकीखण्डद्वीपमें मनुष्यों और गोधनसे परिपूर्ण सुन्दर पूर्वविदेह, पूर्वसुमेरु पर्वतके पूर्वमें है ॥१॥

२

अत्यन्त शीतल सीता नदीके, कस्तूरीमृगोंसे सुगन्धित समोरवाले दक्षिण तटपर, सीमो-
घानोंसे सहित विवाल वत्स देव-है, जिसमें हंसपक्षी मृगालोंको छिन्न-भिन्न कर देते हैं, जहाँ ग्राम
अत्यन्त पास-पास बसे हुए हैं, जहाँ थके हुए प्रवासियोंको कामनाएँ पूरी की जाती हैं, जो फलोसे
झुके हुए खेतोंके नियन्त्रणसे समृद्ध हैं, जहाँ प्रिय क्रोधके नियन्त्रणसे स्निग्ध हैं । ऐसे उस वत्स देश-
में सुप्रसिद्ध सुसीमा नगरी है, जिसके द्वार-द्वारपर प्रोतियोंकी मालाएँ लटकी हुई हैं, जहाँ दो या
तीन भूमियों (मजिलों) से ऊँचे मकान हैं, खूब चमकते हुए स्वर्ण किवाड़ हैं, जहाँ भ्रमर कमलोपर
मड़रा रहे हैं तथा जिनमन्दिरोंके शिखर आकाशको चूम रहे हैं । जहाँ हरितमणियों (मरकत)
मणियोंसे निबद्ध सुन्दर मार्ग हैं । मनुष्योंके भोग विशेषोंसे जो स्वर्गसे विशिष्ट हैं । ऐसी उस नगरी-
में अपराजित नामका राजा था, जो करीन्द्रकी तरह दानो (मदजल और दानवाला) अपने कुल-
रूपी आकाशका चन्द्र था । कामदेव होकर भी जिसका संग, कामिनियोंके लिए दुर्लभ था ।
घनपके समान जो गुणोंसे वक्र था, जो तेल की तरह खल (खली और दुष्ट) से रहित और स्नेहपूर्ण

२. १. A सुगंधि; P सुगंध । २. P तीरिणि । ३. A मरालमूहण । ४. A पहीण । ५. A पवासि-
करिय; P पवासियपरिय । ६. A पंचजहि । ७. P कुलंबरचंडु । ८. P भाविणिदुण्णयसकु । ९. P
गुणेण अवकु ।

खलुंजिह्व तेल्लु व णेह्लभोच णहं व समेह्णु णिवेसियलोच ।
 सविग्गह सद्दु^१ व लक्खणवंतु पजंजइ संधि वियाणइ मंतु ।
 घत्ता—अण्णहिं दिणि तेण णराहिवेण चित्तिं होच पहुच्चइ ॥
 जं पुरचं पमेत्तइ वत्तहइं अप्पणु तं ल्हु मुच्चइ ॥२॥

३.

अरे जड्जीव समोसमि तुच्छु	ण कस्स वि हं जग्गि को ^२ वि ण मब्बु ।
गयालसु लालसु लोहरसेणै	णिरंतरयं णियक्खवसेण ।
जणेण जणो पणविज्जइ तेंव	सजीव विं तासु णरक्खइ जेंव ।
मयंगं तुरंगम किंकर कासु	फलक्खइ पक्खि व जंति दिसासु ।
ण भित्तु कलत्तु ण पुत्तु ण वंधु	सरीरु वि एं ^३ विणासि दुगंधु ।
विचित्तिवि एंव णिरुत्तु मणेण	पकोक्किउ ^४ पुत्तु सुमित्तु खणेण ।
सवित्ति धरित्ति णिवेइय तासु	घराभरधारणु कंधरु जासु ।
गुरुं पिहियासवर्थं पणवेवि	धिओ जिणादिकखवयक्खहु होचि ।
दसेक्कसुयंगवयाइं धरेवि	पुरायरगामसयाइं चरेवि ।
सुपासुयंभोयणुभक्खु गसेवि	अपंडयथीपसुवासि वसेवि ।
छुहा भयं ^५ मेहुणु णिइ सुएवि	सणाणजलेण कलंक्कु थुएवि ।

१०

भोगवाला था, जो आकाशके समान समेह (भेष और बुद्धिसे सहित); और लोको निवेशित करनेवाला था । जो शब्दकी तरह विग्रह-रहित (संघर्ष और पदविग्रहसे मुक्त) था, व्याकरणकी तरह सन्धिक प्रयोग करता था और मन्त्रको जानता था ।

घत्ता—दूसरे दिन, राजाका सोचा पूर्ण होता है । यदि वह प्रिय नगरको छोड़ता है-तो खुद भी मुक्त हो जायेगा ॥२॥

३

अरे जड़ जीव, मैं तुझसे कहता हूँ कि दुनियामे मैं किसीका नहीं हूँ और कोई मेरा नहीं है । लोभ रस और निरन्तर अपने-अपने कार्यके बशसे गतालस और लालची है । मनुष्यके द्वारा मनुष्यको इस प्रकार प्रणाम किया जाता है कि उसके द्वारा अपने जीव की भी रक्षा नहीं की जाती । गज, अश्व और अनुचर किसके ? फल क्षय होनेपर पक्षियोंके समान दिशान्तरोंमे चले जाते हैं । न मित्र, न कलत्र, न पुत्र और न वन्धु, यह शरीर विनाशी और दुर्गन्धयुक्त है । अपने मनमे अच्छी तरह यह विचारकर उसने एक क्षणमे अपने पुत्र और मित्रको पुकारा और वृत्ति सहित घरती छसे सोच दो कि जिसके कन्धे घराका भार उठानेमे समर्थ थे । गुरु पिहिताश्रवको प्रणाम कर, जिनदीक्षा और ब्रतोमे सक्षम होकर वह स्थित हो गया । ग्यारह श्रुतांग ब्रतोंको धारण कर, सैकड़ों नगरों और ग्रामोमे विचरण कर, प्रासुक भोजनका आहार ग्रहण कर, नपुंसक, स्त्री और पुंस्त्वकी वासनाको बशमे कर, भूल, भय, मैथुन और नीदको छोड़कर (आहार निद्रा भय और

१०. A खलुंजिह्वतेल्लु व णेह्लभोच; P खलुंजिह्व तेल्लु व णेह्लु भाउ । ११. P सद्दु सलक्खणवंतु ।
 ३. १. A पयासमि । २. P ण को वि. । ३. P मोहरसेण । ४. A तासु वि । ५. A एम विणासि । ६. A भित्तु सुपुत्तु । ७. A घराभरधारणु; P घराभर धारणु । ८. A पिहियासव णं पणवेवि । ९. A सुपासुयं । १०. A छुहामयमेहुणु ।

सहेवि परीसह भीमुवसग^१
 चप्यिणु दुव्वहसीलवहाव
 तवेण करेवि कलेवरु खामु
 १५ विहंढिचि छंढिचि चंडु तिदंडु

मुणित्तणवित्ति चिणेवि समग्ग^२।
 णिरिक्खवहूणिवभत्तकहाव ।
 णिवंधिवि गोत्तु जिणेसरणासु ।
 १३ मओ पसुएवि चडन्विहंपिडु ।

घत्ता—अवराड्व रिसि उवरिस्सियहि णरवंदहिं णिरवज्जहिं ॥
 पीइकरेणामविमाणवरि सुरु जायउ भेवज्जहिं ॥३॥

४

गिहीगुणठाणवएहिं विमीस
 सैसंतहु अंतरु तेत्तिय पक्ख
 ण को चि महीयलिं सण्हि जासु
 ५ छमासुं परिद्धिउ आउसु जांव
 पुरीकउसं विवईसु मणीसु
 सुसीम णियंविणि वल्लह तस्सं
 भिसं भरहेसरवंसरुहस्स
 अहो णिहिणाह विहंसियसोउ
 तओ धणिणा पुरुपेसणरम्मु

तहिं तहु आउ महोवहि वीस ।
 दुहस्सपमाणिय बोदि वल्लव ।
 दिणेहिं अहंसुरणाहहु तासु ।
 इणं घणवाहि पजंपइ ताव ।
 धराधरणो धरणीसु महीसु ।
 अखंडमुहारहंसोम्मसुहस्स ।
 करेहि दिहिं णिलयं व णिवस्स ।
 पहोसइ णंदणु णंदियलोउ ।
 विणिम्मिउं भम्मविणिम्मियहम्मु ।

मैथुन), अपने ज्ञानरूपो जलसे कलकको धोकर, भयंकर उपसर्ग और परीषह सहन कर, सम्पूर्ण रूपसे मुनीन्द्रवृत्तिको स्वीकार कर, दुर्वहशोलका नाश करनेवाली चोर, स्त्री और नृपभक्तिकी कथाओंका त्याग कर, तपसे अपने शरीरको क्षीण बनाकर, तीर्थंकर प्रकृतिका वन्ध कर, प्रचण्ड त्रिदण्डको खण्डित कर और छोड़कर, तथा चार प्रकारके आहारका त्याग कर वह मृत्युको प्राप्त हुआ ।

घत्ता—वह अपराजित मुनि, मनुष्योंके द्वारा वन्दनीय निरवद्य ग्रैवेयक विमानोमेंसे तीसरे प्रीतंकर विमानमे देव उत्पन्न हुए ॥३॥

४

गृहस्थोंके ग्यारह व्रतोंसे मिली हुई बीस सागर, अर्थात् इकतीस सागर प्रमाण उनकी आयु थी। उतने ही पक्षोंमे अर्थात् इकतीस पक्षोंमें वह सांस लेते थे। उनका शरीर दो-दो हाथ प्रमाण और शुक्ल था। जिसके समान धरतीपर कोई नहीं था। उस अहमैत्र देवराजके कई दिनोंके बाद छह माह आयु शेष रह गयी। तब इन्द्र कुबेरसे कहता है कि “कोशाम्बी नगरीका पुष्पकी घोषा करनेवाला मनस्वी राजा धरण है। सम्पूर्ण चन्द्रके समान सीम्य मुखवाले उसकी सुसीमा नामकी प्रिय पत्नी है। वह भरतेश्वरके वंशका अंकुर है। उसके लिए हे कुबेर, तुम भाग्य और धरकी रचना करो। हे कुबेर, उनके शोकका उपहास करनेवाला और लोकको हर्ष उत्पन्न करनेवाला पुत्र होगा।” तब कुबेरने इन्द्रके आदेशसे रम्य स्वर्णप्रासाद बनाया ।

११. A वसणि । १२. A समणि । १३. A P मुओ । १४. A पीईकरणाम; P पीयंकरमाण ।
 ४. १. A आव । २. A सुसंतहु । ३. P दिवह्दयहत्यय । ४. A P छमास । ५. A मुणीसु । ६. A धरणोद्धरणे । ७. A तासु । ८. A शुहावरसोम्मसुहासु ।

घत्ता—अण्णहिं वासरि रायाणियइ णिसिविरामि उवलक्खिय ॥
पासायत्तैल्लिमतलसुत्तियइ सिविणयमाल णिरिक्खिय ॥४॥

५

सुहाहिमसारयणीरयवणु
गलंतमओलकवोलुं करिंदु
खरेहिं खुरेहिं धरग्गु दलंतु
विसेसैविसेसु विसाण धुणंतु
गिरिंदगुहाकुहरंतविणित्तु
लयादललोलललावियजोह
णिसावइसेय दिसागयकंति
अणेयपसूयकरं वयगुत्थुं
णिहिचतमीतमु णिम्मलु चंदु
पैमत्तं रमंतं इहंति तरंत
महुप्पल कुंभलएसु णिसण्ण
अलीरं वफुल्लियपोमरयालु
णिमज्जणकील्लेणीण गइंदु
पदंसियभीयरमीणरंउइंदु

पईहरपाणि झलज्जलकण्णु ।
णियच्छिउ जंगमु णाईं धरिंदु ।
बलाल गैविंद बलेण खलंतु ।
णियच्छिउ संमुहु पंतु डरंतु ।
रुसारुणदारुणदूसहणेत्तु ।
गहालिफुरंतु णियच्छिउ सीहु ।
णियच्छिय लच्छि सरोवरि ण्हंति ।
णियच्छिउ दामयजुम्सु णहत्थु ।
णियच्छिउ तिव्वु तवंतु दिग्गिंदु ।
णियच्छिय मच्छ चलंत वलंत ।
णियच्छिय कुंभ वरंभपडण ।
विहंगसिलिवयचक्खियणाळु ।
णियच्छिउ तामरसायरे रंहु ।
णियच्छिउ वारिरवद्धु समुद्धु ।

५

१०

घत्ता—दूसरे दिन रात्रिके अन्तिम प्रहरमे प्रासादके अन्तिम तलमे सोते हुए रानीने स्वप्न-माला देखी ॥४॥

५

जो सुधा, चन्द्र और शरदकालीन मेघके समान सफेद रंगका है, जिसकी सूँड़ लम्बी है, जो हिलते हुए कानोंवाला है, और जिसके कपोलभागसे मद झर रहा है ऐसा गजराज देखा, जो मानो जंगम पहाड़ ही । अपने तीव्र खुरोसे धरतीके अग्रभागको रौंधता हुआ, बलशाली, बलसे स्खलित होता हुआ, सींग धुनता हुआ, सामने आता हुआ, गरजता हुआ विशेष वृषभेन्द्र देखा । पहाड़ोंकी गुफाओं और कुहरोंमें रहनेवाला, क्रोधसे अचण और भयंकर नेत्रवाला लतादलके समान चंचल जीभको हिलाता हुआ, नखावलीसे भास्वर सिंह देखा । चन्द्रमाकी तरह श्वेत और दिग्गजकी कान्तिवाली लक्ष्मीको सरोवरमें स्नान करते हुए देखा । अनेक पुण्यसमूहोसे गूंधी हुई मालाओका युग्म आकाशमे देखा । रात्रिके अन्धकारको नष्ट करनेवाला निर्मल चन्द्र देखा । तीव्रतम तपता हुआ सूर्य देखा, प्रमत्त रमण करती हुई, सरोवरमें तैरती हुई, चलती मुड़ती हुई मछलियाँ देखी । कुम्भमालामें रखा हुआ मधु कमलोसे ढका हुआ उत्तम जलसे परिपूर्ण घड़ा देखा, जिसमें डूबने और क्रीड़ा करनेमें गजेन्द्र लीन है, जो भ्रमरोंके शब्द और पुष्पित कमलोंके रजसे युक्त है, जिसमे हंसोके बच्चे मृगाल खा रहे हैं, ऐसा विशाल सरोवर देखा । जो दिखाई देनेवाले

१. A ° तल्ल सुत्तियइ, P ° तले सुत्तिइ ।

५ १. A कवोलं । २. P गइंद । ३. A P विसेसु विसेसु । ४. A P रंहुंतु । ५. A P गुंयु । ६. A reads this line after चक्खियणाळु below ७. A ममंतु । ८. A P दहंति । ९. AP अलीरव । १०. A कील्लणील्लुः P कील्लणील्लु । ११. P ° रसामइ । १२. A P रवद्धु ।

- १५ सुहावह सुहृ^३ पैरिद्विड इहृ
 गियच्छिउ अछरणाहविमाणु
 गियच्छिउ वोमदिसाणणभासि
 पैवित्तु पलित्तु धिपण व सित्तु
 गियच्छिउ चिच्चि णरसियदेहु
 गियच्छिउ विद्धरु सीहणिविट्टु ।
 अहीसरैमंदिरु मेरुसमाणु ।
 पहाइ अणण मणीण य रासि ।
 महंतु जलंतु णहंगि मिलंतु ।
 पहायइ गंपि णराहिवगेहु ।
- २० घत्ता—गियदइयहु देविइ वज्जरिउं जं जिह दंसणु विट्टुं ॥
 तुह होसइ तणुरुहु परमजिणु तेण ताहि फलु सिद्धउं ॥५॥

६

- पुरंदरणारि हिरो धवलच्छि
 पसाहिउ सोहिउ सीमहि गब्भु
 हिमागमि संगमि माहि पवण्णि
 असेयहि छट्टिहि रत्तिचिरामि
 इहाहिवरूवधरो वल्लिरेहि
 सुयंग णरामर मंदिरु आय
 दहट्ट जि पक्ख सिणा दुहहार
 गय सुमईसि महद्विसमेहि
 समायइ कत्तिइ कंदविचोइ
 सिरि दिहि कंति पराइय लच्छि ।
 रिदुत्तिउ वुट्टुव हेमवरंसु ।
 णहे दहदिव्वलयम्मि पसण्णि ।
 ससंकदिवायरसंगि सैकामि ।
 थिओ मुणिणाहु समा^५ रिदेहि ।
 रिहृच्छिण चच्छवि सुंक्कियमाय ।
 धरंगणि पाडिय कच्चुरधार ।
 असीदहकोडिसहासपमेहि ।
 अचंदिणतेरसि तह्यजोइ ।

भीषण मत्स्योसे रौद्र है ऐसे जलसे भयंकर समुद्र देखा । सुखावह सुन्दर अच्छी तरह स्थापित सिंहासन देखा । देवोंका विमान देखा, और मेरुके समान नागराजका लोक देखा । आकाश और दिशाओंमें चमकती हुई प्रभासे अत्युत्तम मणियोंकी राशि देखी । पवित्र प्रदीप्त घोसे सिंचित महान् आकाशसे मिलती हुई अग्नि देखी, प्रभातमे मनुष्योंके द्वारा पूजित राजाके घर जाकर—

घत्ता—देवीने अपने पतिसे जिस प्रकार स्वप्नदर्शन किया था वैसा कहा । उसने उसे फल बताते हुए कहा कि उसका पुत्र परम जिन होगा ॥५॥

६

इन्द्रकी नारियाँ धवल आँखोंवाली ह्रीं-श्री-धूर्ति-कान्ति और लक्ष्मी आर्यों और स्वामीके गर्भका प्रसाधन तथा शोधन किया । छह माह तक स्वर्णवर्षा हुई । फिर हिमागमवाले माघ माहके कृष्णपक्षमे षष्ठीके दिन जब कि दिशाचक्र निर्मल था, रात्रिके अन्तमे चन्द्र और सूर्यके सकाम योगमें गजरूपमे त्रिबलसे शोभित अपनी माताकी देहमे भगवान् स्थित हो गये । नाग, मनुष्य और देव उनके घर आये । और इन्द्रके साथ उत्सवमें उन्होंने मायाको खण्डित कर दिया । क्रुबेरने अठारह पक्षों तक लगातार गृहप्रांगणमे दुःखको दूर करनेवाली स्वर्णवृष्टि की । सुमतिनाथके बाद महाऋद्धियोंसे परिपूर्ण नब्बे हजार करोड़ सागर बीत जानेपर कार्तिक माहके कृष्णपक्षकी

१३. A P पणिट्टियदुट्टु । १४. A P अहीसरगेहु गिरिदसमाणु । १५. A पलित्तु पवित्तु धिपण;
 P पवीवि पलित्तु धिपण । १६. A णहग्गमिलंतु ।

६. A^५ णारिहिं वी धवलच्छि । २. A उदुत्तिउ । ३. A P^० संगमिकामि । ४. A सुक्किय । ५. A मह-
 मद्विसमेहि । ६. A तह्यि ।

हुओ परमेसु सुहाइं जणंतु	असंखसहस्रु महामहवंतु ।	१०
पुणाइव जीय जिणिद भणंतु	णहं तुरएहिं गएहिं पिहंतु ।	
पुरं पणवेवि णिवासि विसेवि	सुहीहिंयंतरि भत्ति करेवि ।	
जिणंमहि हत्थि परो सिसु देवि	जगतयणाहु णवेवि लएवि ।	
पवजियठेक्कु कमकमियंक्कु	णिओइव वारणु च्छिउ सक्कु ।	
गओ गहमंडलु लंघिवि तांव	सिला इणसिचणमेइणि जांव ।	१५
घत्ता—तहिं मेरुसिणि संणिहिउ जिणु पाणिउ सुरयणु आणइ ॥		
कल्हारपिहियघडसहसकरु सइं पुलोमिपिउ ण्हाणइ ॥६॥		

७

वियाणिवि ण्हाणिवि ण्हाणविहीइ	पुणो अवयारु करेवि महीइ ।	
पर्णवि अगइ वारुं चलेहिं	धुणेवि सुरेहिं गुणौलकुलेहिं ।	
समप्पिउ भायहि पंकयणेत्तु	सुलक्खणवंजंणरंजियगत्तु ।	
गयामयभोइ सवासपएसु	पवट्ठिउ तायहरम्मि जिणेसु ।	
ण वण्णेहु सक्कंवि तासु कयाइं	सयद्ध णिउत्तइं दोणिण सयाइं ।	५
सरासणयाहं सरीरपमाणु	रुइइ विरेइइ णं णवभाणु ।	
समं णरुडिभयणेण रमेवि	इसीसमपुण्वहं लक्ख गमेवि ।	
वयं कस मंकिउ सुणणचउक्क	इणं पि दिणेहि पमाणु पट्टवक ।	

तेरसके दिन त्वष्ट्रायोगमें परमेस्वर सुखोको उत्पन्न करते हुए उत्पन्न हुए । असंख्य देव और पांच कल्याणकार्यको करनेवाला इन्द्र फिर आया, 'हे जिनेन्द्र जीवित रहो' यह कहते हुए और गर्जो तथा अवशोसे आकाशको आच्छादित करते हुए, फिर प्रणाम कर और घरमे स्थापित कर, बन्धुजनोंके हृदयके भीतर भक्ति कर जिनमाताके हाथमें दूसरा शिशु देकर, त्रिलोकनाथको प्रणाम कर और लेकर, जिसपर ढक्का बज रहा है, और जो सूर्यका अतिक्रमण करनेवाला है, ऐसे गजको उसने प्रेरित किया, और इन्द्र चला । ग्रहमण्डलका चल्लंघन करता हुआ वह वहाँ पहुँचा जहाँ जिन भगवान्की अभिषेकभूमि पाण्डुशिला थी ।

घत्ता—उस सुमेरु पर्वतपर जिन भगवान्को स्थापित कर दिया गया । सुरसमूह जल लाता है, कमलोसे आच्छादित घड़े जिसके हजार हाथोंमें है ऐसा इन्द्र उनका अभिषेक करता है ॥६॥

७

जानकर और स्नानविधिसे स्नान कराकर पुनः धरतीपर अवतरण कर, बालकके आगे नृत्य और स्तुति कर गुणालकुलेके देवोंने लक्षणों और सुकमव्यंजनोसे शोभित-शरीर कम्बलनयन बालक माताके लिए सौंप दिया । देव अपने-अपने घर चले गये । जिनेश अपने पिताके घरमें बढने लगे । उनकी लीलाओंका मैं वर्णन नहीं कर सकता । उनके शरीरका प्रमाण ढाई सौ धनुष ऊँचा था । कान्तिमे वह ऐसे शोभित थे मानो नवसूर्य हो । इस प्रकार मानव बालकोंके साथ रमण करते हुए, उनके सात लाख पचास हजार पूर्व समय बीत गया । इतने दिनोंका मान (प्रमाण) पूरा

७. A T सुहायु । ८. A P T जिणंमहि । ९. A ° ढक्क । १०. A कमकमियंक्कु ।

७. १. A P read a as b and b as a. २. A P बाहुवलेहिं । ३. A P गुणाण । ४. A P ° विजणं ।

५. A ण वण्णेहं सक्कमि; P ण वण्णवि सक्कमि । ६. A P सरीर पमाणु ।

तत्रो तर्हि पत्तु सयं सयमण्णु कुमारु णिवेसिउ रज्जि पसण्णु ।
 १० दु एक्कु जि विट्ठय पंच जि देहि । पुणो वि सिमुत्तरसंख गणेहि ।
 घत्ता—इय पुव्वकालु पुहईसरहु गउ सुहं सिरि माणंतहु ।
 विण्णवियउ ता किंकरेणरिण कर मउल्लवि पणवेवि-तहु ॥७॥

— णराहिव दीहरपासणिरुद्धु करीसरु वारिणिवंधणि बंधु ।
 समुण्णयक्कुमु .णहग्गविलग्गु धराहिव जाणवि तुम्हहुं जोग्गु ।
 तत्रो परिचित्तिउं दिव्वेणिवेण पमग्गियकेवलणाणसिवेण ।
 ण विहसारीजलकील मणोज्ज ण सल्लइपल्लवभोज्ज ण सेज्ज ।
 ५ ण कंदल मिट्ठ ण कोमलवेणु ण मग्गविलग्गिरवालकरेणु ।
 करेणुरई करताडणु णस्थि सफासवसेण विडंविउ हत्थि ।
 दढंकुसघट्टणु फौसणिरोहु सहेइ वराउ विर्यंभियमोहु ।
 ण एक्कु ईहिदु मए इह उत्तु अहो जणु दुक्कियदेहिणु खुत्तु ।
 ण णिग्गइ जग्गइ किं पि ण मूहु सिरिभयणिहपरव्वसु मूहु ।
 १० अहं पि हु मोहिउ किं परु मोक्खु टुमाणु चम्मविणिम्मिउ रुक्खु ।
 विणासिरु जाणिवि पैच्छमि लोउ चिरप्पेमि तो विण मुंजमि भोउ ।
 असासउं रउजु असुंदरु अंति ण इच्छमि अच्छमि गंपि वणंति ।

होनेपर, तब फिर वहाँ इन्द्र स्वयं आया और प्रसन्न कुमारको राज्यमें प्रतिष्ठित किया। फिर दो और एकके ऊपर पांच बिन्दु दो और तब शैशवके बादकी संख्या गिनी।

घत्ता—इतने वर्ष पूर्व (इक्कीस लाख पूर्व वर्ष) वर्ष लक्ष्मीका मुख मानते हुए राजाके निकल गये तो अनुचर मनुष्यने हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए राजासे निवेदन किया ॥७॥

हे नराधिप, जो लम्बे पाशसे निरुद्ध था, हाथियोंके आलानमें बैधा हुआ था और जिसका कुम्भस्थल समुन्नत था, ऐसा वह महागज आकाशके अग्रभागसे जा लगा है (भर गया है)। अब तुम्हारे योग्य बातको मैं जानता हूँ। तब जिसने केवलज्ञान और शिवकी याचना की है, ऐसे दिव्य राजाने विचार किया—“विन्ध्या नदी (नर्मदा) की जल-क्रीड़ा सुन्दर नहीं है, शल्यकी लताके पल्लवों को भोजन और सेज भी ठीक नहीं हैं, न कन्दल मोटे हैं और न कोमल वेणु। न मार्गमें लगी हुई बाल करेणु अच्छी है, अब उसमे हथिनीका प्रेम और सूँडसे प्रताड़न नहीं है। स्पर्शके वशीभूत होकर हाथी विडम्बनामे पड़ गया है। बढ़ रहा है मोह-जिसका, ऐसा यह बेचारा गज दृढ़ अंकुशोंका संघर्षण एवं स्पर्शका निरोध सहन करता है, मैं यह कहता हूँ कि, अकेला गजेन्द्र नहीं, आश्चर्य है लोग भी पापोंकी क्रीचड़मे फँसे हुए हैं। मूर्खजन न निकलता है और न थोड़ा भी जागता है। मूर्ख लक्ष्मीके मद और निद्राके वशीभूत है। अरे मैं भी तो मोहित हूँ, श्रेष्ठ मोक्ष क्या? खोटा मनुष्य चर्मसे निर्मित और रूखा है। लोकको विनश्वर जानता हूँ और देखता हूँ। तो भी विरक्त नहीं होता, और भोग भोगता हूँ। राज्य अशाश्वत है और अन्तमे सुन्दर नहीं होता। मैं इसे नहीं चाहता। वनमे जाकर रहता हूँ।”

१. ७. P पच जि विट्ठय । ८. P चचारिं । ९. A णरिणा ।

८. १. A P बद्ध । २. A दिव्वु । ३. A पासणिरोहु । ४. A P वूहु । ५. A विरप्पवि ।

घत्ता—तावायहिं लहुं लोयतियहिं णाहहु वयणु समत्थिउ ।
अंवरु धावंतहिं वणुयरिहिं चित्तचीरु णावइ थिउ ॥८॥

गिरि उव जलागमणे जलएहिं
समच्चिउ लोयगुरु कुडएहिं
सुवण्णमयाइ णरच्छिपियाइ
वर्णतरु चारु पहुल्लियचारु
खमाविउ लोउ सिरु कउ लोउ
करेण्णिणु छट्ठु वि सुट्ठु वरिट्ठु
समट्ठममासि जंगंतपयासि
दिणे असियम्मि सुतेरसियम्मि
विणिग्गउ हत्थु पहुइय चित्त
सुयाइं सुणेवि रयाइं धुणेवि
समं सकिवाहं सहासु णिवाहं

सुरेहिं पहु णहविओ कुलएहिं ।
थुओ दुवईवयणुककुडएहिं ।
महिंदणियाइ गओ सिविवाइ ।
सकंणु हारु पमोल्लिवि दोरु ।
मवण्णवपोठ विसुद्धतिजोउ ।
पदिट्ठसइट्ठु समासियणिट्ठु ।
घणागमणासि हिमालपवासि ।
दिणेसरि जाम दुयांलसियम्मि ।
अलंकिउ तहिणि संजमजैत्त ।
महव्वय लेवि थिओ रिसि होवि ।
तवंकिउ ताहं ण मच्छरु जाहं ।

घत्ता—वारहविहवणित्वाहं णहि धम्मजोयपरिरक्खहि ॥ १
पत्तप्पहु वट्ठमाणणयरि देउ पइट्ठउ भिक्खहि ॥९॥

घत्ता—तब लौकान्तिक देवोने आकर प्रभुके वचनोंका समर्थन किया । आकाशमें दौड़ते हुए देवदानवोंने जैसे अपने चित्तरूपी चीरको स्थिर कर लिया ॥८॥

जिस प्रकार वर्षाकाल आनेपर मेघोंके द्वारा गिरि अभिषिक्त होता है, उसी प्रकार देवोंने घडोंसे प्रभुका अभिषेक किया । कुटक पुष्पोंसे लोकगुरुकी समर्चना की । दुवहं वचनों (द्विपदो वचनो) से बत्कट (गीतों) से स्तुति की । लोगोंके नेत्रोंके लिए सुन्दर, स्वर्णमयी इन्द्रके द्वारा ले जायी गयी शिविकाके द्वारा वह, जिससे चार पुष्प खिले हुए हैं, ऐसे सुन्दर वनमें गये । अपना कंगन हार डोर छोड़कर लोगोसे क्षमा माँगकर, सिरका केश लौंचकर, संसाररूपी समुद्रके जहाज तीन योगोसे विशुद्ध, छाटा उपवास कर, श्रेष्ठ वरिष्ठ, अपने हितके द्रष्टा, चारित्रसे आश्रय लेनेवाले वह, आठवें माह (कार्तिक माह) जबकि विश्वको प्रकाशित करनेवाला सूर्य, मेघोंके आगमनका नाश करता हुआ, शीतलताका प्रवेश कराता है, कृष्ण पक्षकी त्रयोदशोके दिन, सूर्य दो पहर ढल चुकता है, चित्रा और हस्त नक्षत्र उगे हुए थे, तब वह संयमकी यात्रासे शोभित हुए । श्रुतका अध्ययन कर, पापोंका नाश कर महाब्रत ग्रहण कर और महामुनि होकर स्थित हो गये । उनके साथ समान कर्षणावाले एक हजार ऐसे राजाओने भी अपनेको तपसे अंकित किया कि जिनमें ईर्ष्या नहीं थी ।

घत्ता—वारह प्रकारके तपोंके निर्वाहके लिए, और धर्मयोगकी रक्षाके लिए, पद्मप्रभु स्वामी आहारके लिए वर्धमान नगरीमें प्रविष्ट हुए ॥९॥

६. A P समत्थियउ ।

९. १. A सुवण्णमियाइ । २. A P जगत्तपयासि । ३. A संजमजुत्त । ४. A णिव्वाहणउ । ५. A धम्म ।

६. P जोइपरिक्खहि । ७. A पयट्ठउ ।

	१०
णमोत्थु भणेचिं गहीररवेण तिणा तहु णिम्मेलु भोयणु दिण्णु णिहेलणि उग्गय अब्भुय पंच गओ रिसि चोसिवि अक्खयदाणु	घरं णिडे'सो ससियेत्तणिवेण । मुण्णिदणिहालणि संचिच पुण्णु । अहासवदारइं हंमिवि पंच । सुवंधुसु वरिसु णिच्चसमाणु ।
५ पमाय कसाय विसाय हरंतु विहूयतमोमयमंदकलंकि सुचित्तहि चित्तइ चित्तविमुक्क परदिसमासिइ वासरराइ णियासणचालणचालियसग्गु	छमास विहिंदिउ वित्त चरंतु । चइत्तछणम्मि पण्णसंसंकि । दढं मणि पूरिउं वीयइ सुक्कु । उइण्णउ केवल्लणाणु विराइ । विमाणपऊरियवारियसग्गु ॥
१० समागब. धौत्ति पवाहियपीलु	विडोउ सभिञ्चु सच्चधु सलीलु ।

घत्ता—दह भावण वंतर अट्टविह जोइस पंचविहाइय ॥

सोलहविह कप्पणित्रासिसुर जिणु णवति गुणराइय ॥१०॥

११

णमो अरिहंत णमो अरिहंत
णमो दयवंत णमो दयवंत

णमो विसयंत णमो विसयंत ।
णमोत्थु अभंत भयंत भवंत ।

१०

'नमस्कार हो' गम्भीर ध्वनिमें यह कहकर सोमदत्त उन्हें अपने घर ले गया। उसने उन्हें निर्मल भोजन दिया और इस प्रकार मुनीन्द्रदर्शनसे पुण्यका संचय किया। उसके घरमें पांच आश्चर्य प्रकट हुए। पांच पापास्रवोंके द्वारको रोककर, महामुनि, 'अक्षयदान' कहकर चले गये। अच्छे बन्धु या शत्रुके प्रति नित्य समानरूपसे रहनेवाले प्रमादों, कषायों और विषादोंको दूर करते हुए और मुनिवृत्तिका आचरण करते हुए उनके छह माह वीत गये। जिसने तमोमय मृग-लांछनको नष्ट कर दिया है ऐसी पूर्णचन्द्रमावाली चैत्रशुक्ला पूर्णमाके दिन, चित्रा नक्षत्रमे, विन्ता-से मुक्त अपने सुचित्तमे दूसरा शुक्लस्थान पूरा कर लिया। और जब सूर्य पश्चिम दिशामे पहुँच रहा था उन विरागीको केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। अपने आसनोंके डिगनेसे स्वर्ग चलायमान हो गया। आकाशमार्ग विमानोंसे भर गया। अपने हाथीको प्रेरित कर, अपने भृत्यों, पत्ताकाओ और लीलाओके साथ शीघ्र इन्द्र आ गया।

घत्ता—दस प्रकारके भवनवासी, आठ प्रकारके व्यन्तर, पांच प्रकारके ज्योतिष और सोलह प्रकारके कल्पवासी देव गुणोंसे विराजित जिनको नमस्कार करते हैं ॥१०॥

११

कर्मरूपी शत्रुओंका घात करनेवाले आपको नमस्कार, अहंन्याथ आपको नमस्कार, विषयों का अन्त करनेवाले आपको नमस्कार, विषय (वस्तु) को अन्तिम सीमा तक जाननेवाले आपको नमस्कार, दयायुक्त आपको नमस्कार, अदयाको नष्ट करनेवाले आपको नमस्कार, अश्रान्त भदन्त

१०. १ A ससिदत्त । २. A भोयणु णिम्मेलु । ३. A णियय । ४. A P संधु । ५. A सवेरि । ६. P सुभिच्च । ७. A विहंदिउ । ८. P उप्पण्णउं । ९. P ताव ।
११. १. A P अरहंत । २. A णमोत्थु भयंत ।

णमो बृहराम णमोहविराम
 णमो गिरिधीर णमो गयसीर
 णमो गियमाल सुपंकयमाल
 फलाई गसंतु जलाई रसंतु
 ण जे तवसीह अहो मुणिसीह
 तुमं सुमरंति भवेसु मरंति
 पणासियसासयसंपथमूलु
 कुसंगु कुलिंगु कुसामि कुदेव
 विर्यभउ णाणविलोयणसत्ति

णमो गुणथाम णमोमियथाम ।
 णमो हयमार णमो धुवमार ।
 कैयंधिसुसील महाकरिलील ।
 दलाई वसंतु वणम्मि वसंतु ।
 परतसिरीह गिरीस गिरीह ।
 ण ते सुहि होंति भूंगेसु हि होंति ।
 महं तुह धम्मसिरीपडिकूलु ।
 कुपत्ति कुमित्तु म जम्मि विहोव ।
 सुणिच्चल होव तुहुप्परि भत्ति ।

५

१०

धत्ता—णिन्वाणभूमिवररमणिसिरिचूडामणि पई वण्णमि ॥

जडु कव्वपिसाएं चिण्डियउ अप्पउ हूँउं तणु मण्णमि ॥११॥

१२

शुषेप्पिणु एम गुणोहु जिणेसु
 चउहिसु उच्चिमय सोहिय खंभ
 चउहिसु दारई गोउरयाइं
 चउहिसु पायववेज्जिहंराइं

तओ तियसेहिं कओ तहु वासु ।
 चउहिसु सारसरावसरंभ ।
 चउहिसु चेइयमंदिरयाइं ।
 चउहिसु थूहइं दिव्वंघराइं ।

(मुनि) और ज्ञानवान् आपकी जय हो । पण्डितोंके लिए आपको नमस्कार, अथवा नाश करनेवाले आपको नमस्कार हो, गुणोंके धर आपको नमस्कार, हे अनन्तवीर्य आपको नमस्कार । गिरिकी तरह गम्भीर और हल रहित आपको नमस्कार, कामको जीतनेवाले आपको नमस्कार, ध्रुव लक्ष्मीदायक आपको नमस्कार, नियम सहित आपको नमस्कार, कमलोंकी मालासे शोभित आपको नमस्कार, जिन्होंने सुशील मुनियोंको अपने चरणोंमें नत किया है ऐसे महागजकी लोछा करनेवाले आपको नमस्कार । जो तपस्वी फल खाते हैं, जल पीते हैं, दलोये रहते हैं, वनमें निवास करते हैं, ऐसे तपस्वीश्रेष्ठ भी, यदि हे निरीह निरीष मुनीस्वर, तुम्हे स्मरण नहीं करते, तो वे जन्म-जन्मान्तरोंमें मरते हैं, वे पण्डित भी नहीं होते, पशुओंमें उनका जन्म नहीं होता । जिन्होंने शाश्वत सम्पत्की जड़को नष्ट कर दिया है और जो धर्मरूपी लक्ष्मीके प्रतिकूल है, ऐसा कुसंग कुलिंग कुस्वामो कुदेव कुपत्ती कुमित्र मेरा, किसी भी जन्ममें न हो । मेरी ज्ञानसे देखनेकी शक्ति बढ़े (विकसित हो), तुम्हारे ऊपर मेरी भक्ति निश्चल हो ।

धत्ता—निर्वाणभूमिरूपी श्रेष्ठ रमणीके सिरके चूडामणि हे देव, मैं तुम्हारा वर्णन करता हूँ । काव्यरूपी पिशाचसे प्रताड़ित मैं जड़ स्वयं तिनकेके बराबर समझता हूँ ॥११॥

१२

इस प्रकार गुणोंके समूह जिनकी वन्दना कर, उस समय देवोंने उनके निवासकी रचना की । चारों दिशाओंमें खम्भे स्थापित कर दिये गये । चारों ओर सारसोंके शब्दसे युक्त जल था । चारों ओर दरवाजे और गोपुर थे । चारों दिशाओंमें चैत्य और मन्दिर थे । चारों ओर वृक्ष और

३. P कलविं । ४. A मिगेसु; P मगेसु । ५. A सिरचूडामणि । ६. A मण्णमि । ७. A तणु हूँ ।
 १२. १. P धाविय । २. A वेत्तिलवणाइ । ३. A दिव्वयराइं ।

- ५ चरहिमु दीसइ सम्मुहुं देउ
चरहिमु भावलउभ्रवु तेउ
चरहिमु छतई पंडुरयाई
चरहिमु अट्टमहाधयपंति
चरहिमु दुंदुहिसइ धडंति
१० असेसहं भासविसेसहं खाणि
चरहिमु आसणु सीहसमेउ ।
चरहिमु पल्लवरत्तु असोउ ।
चरहिमु सुम्भई चामरयाई ।
चरहिमु पुप्फचयाई पडंति ।
चरहिमु इंदुयाउं गडंति ।
चरहिमु तैस्स वियंभइ वाणि ।

घत्ता—तथाई सत्त दह धम्मविहि णव पयत्थ छहर्दवइ ॥

आहासइ परमपुत्त जणहु सव्वई भूयइ भवइ ॥१२॥

१३

- खण्णु पुणेक्कु गणेशवराहं
तिबिंदुय रंध रिऊयदुयजुत्त
सहास दसेव य ओहिजुयाहं
सहासइ सोलह अट्टसयाई
५ महामणपज्जयणाणधराहं
सहासहं उप्परि रंधसमाहं
सहासई वीस पयोणिहि लक्ख
चयत्थघरत्थहं तासु तिलक्ख
दुसुण्णइ तिणिण दु पुव्वधराहं ।
जिणिंदहु एतिय सिक्खंपवत्त ।
दुवालस ते च्चिय सव्ववियाहं ।
विचवणरिद्धिरिसिंदहं ताहं ।
धुवं तिसयंकिउ सउ जि सयाहं ।
खजुम्मु सडंक्कु वि वाइवराहं ।
वियाणहि संजमधारिणिसंख ।
अणुव्वयणाारिहि पंच जि लक्ख ।

लतागृह थे, चारों ओर स्तम्भ तथा दिव्य घर थे। चारों दिशाओंके सामने देव थे, चारों तरफ सिंहासन थे। चारों ओर भामण्डलोंसे उत्पन्न तेज था, चारों ओर पल्लवोंसे आरक्त अशोक वृक्ष थे। चारों ओर सफेद छत्र थे, चारों ओर दोनों हाथोंमें चामर थे। चारों ओर आठ ध्वज-पंक्तियाँ थीं। चारों दिशाओंमें पुष्प-समूहकी वर्षा हो रही थी। चारों दिशाओंमें दुन्दुभि शब्दकी रचना हो रही थी। चारों ओर इन्द्राणियाँ नृत्य कर रही थीं। समस्त भाषाओंकी खदान उनको वाणी चारों दिशाओंमें फैल रही थी।

घत्ता—सात तत्त्व, दस प्रकारका धर्म, नौ पदार्थों और छह द्रव्योंका कथन वह सबके लिए करते हैं। उस अवसरपर सभी लोक भव्य हो गये ॥१२॥

१३

एक सौ दस उनके गणधर थे। दो हजार तीन सौ पूर्वधारी थे। जिनेन्द्रके दो लाख उनहत्तर हजार शिक्षक कहे गये हैं। दस हजार अवधिज्ञानी, बारह हजार केवलज्ञानी, विक्रिय-ऋद्धिके धारक मुनीन्द्र सोलह हजार आठ सौ; मनःपर्ययज्ञानी दस हजार तीन सौ, नौ हजार छह सौ श्रेष्ठवादी थे। चार लाख बीस हजार संयम धारण करनेवाली आर्षिकाएँ हैं। व्रती गृहस्थ तीन लाख थे। अणुव्रत धारण करनेवाली आर्षिकाएँ पाँच लाख थीं। संख्यात तिर्यक थे, और देव

४. P जवखकरे । ५. A P इंदुतियाउ । ६. A तासु । ७. A धम्मविह । ८. P छहवइ ।

९. A सव्वभूइभूयइ भवइ ।

१३. १. A सिक्खय उत्त । २. A P अणुव्वयणाारिहि ।

तिरिक्ख ससखँ सुरा वि असख पणासिवि राईरईसुहकंख ।
समासिवि धम्मु पँधंसियदुक्खु छेमासविहीणचं पुठवहं लक्खु ।

१०

घत्ता—संमेयहु सिहँरि समासविहि मासमेत्तु थिउ जोएं ॥
जिणु अंतिमु ज्ञाणु पराइयउ सहुं मुणिवरसंघाएं ॥१३॥

१४

मंहग्गमि फग्गुणपक्खि सुक्किण्हि	सँचित्तचउत्थित्थिहीअवरणिहँ
स णाणसरुवु तिदेहविमुक्खु	जगग्गधैरित्ति जाइवि थक्खु ।
ण कण्णं ण पीठ ण लोहिउ सुक्खु	ण लाहवु तासु ण चत्थि गुरुक्खु ।
ण पुंसुं ण संहु ण भण्णइ इत्थि	फुरंतसकेवलवोहँगभत्थि ।
हुओ परमेसरु अट्टगुणद्धु	सरीरु सलक्खणु तक्खणि
सिहँदसिरोमणिमुक्कसिहीहि	समच्चणवदणहोमविहीहि ।
णँमंसिवि सिद्धणिसीहियत्थि	पपहिं णिओइउ कुंजरु झ त्ति
णओ पविहारि समीरवहेण	सुरण्ण वि अण्णविभाणुमहेण ।

असंख्य थे । रातकी रतिके मुखकी आंकाक्षाका त्याग करनेवाले, धर्मका आश्रय लेनेवाले और दुःखका ध्वंस करनेवाले उनका छह माह कम एक लाख पूर्व समय बीत गया ।

घत्ता—सम्मैद शिखरपर चढ़कर वह एक माह तक योगमे स्थित रहे । मुनिवरसमूहके साथ वह अन्तिम शुक्ल ध्यानपर पहुँचे ॥१३॥

१४

माघ माह बीतनेपर फागुनके कृष्णपक्षमें चतुर्थके दिन अपराह्निके समय चित्रा नक्षत्रमें ज्ञानस्वरूप, तीन प्रकारकी देहोंसे विमुक्त वह जाकर विश्वके अग्रभागमे स्थित हो गये । जहाँ वह न कृष्ण थे और न पीत । न लाल और न शुक्ल । न उनमे लाघव था और न गुरुता । न वह पुल्लिग थे और न नपुंसक । और न खी कहे जाते थे । वह अपने प्रकाशमान केवलज्ञानमे स्थित थे । वह आठ गुणोंसे समृद्ध परमेश्वर हो गये । लक्षण सहित उनका शरीर समर्चन, वन्दन और होमकी विधियोंसे युक्त अग्निकुमार देवोंके मुकुटमणिकी ज्वालाओंसे तत्काल दग्ध हो गया । सिद्धरूपी नृसिंहोंमें स्थिति पानेवाले उनको नमस्कार कर इन्द्रने अपने पैरसे ऐरावतकी प्रेरित किया, और चला गया । दूसरे देव भी सूर्य-चन्द्रमाके समान तेजवाले विमानोंपर बैठकर चले गये ।

३. A सुसंख । ४. A रायरईसुहँ ; P णारिरईसुहँ । ५. A पहंसियँ । ६. A सिहुर ।

१४. १. A मंहग्गमि । २. A सुचित्त । ३. A P जगग्गधैरित्तिहि । ४. A किण्ह । ५. A ण पुंसुं संहु ण ।

६. A बोधगमत्थि । ७. A समंचित्ति ।

घत्ता—महुं तूसउ भरहभववणमिउ पउमप्यहुं गिहयावइ ॥
 १० तिजगिंदहु केरउ एम जसु पुफ्फयंतु को पावइ ॥१४॥

इय महापुराणे विसद्विमहापुरिसगुणाळकारे महाकइपुफ्फयंतविरइए
 महामन्वभरहाणुमणिय महाकव्वे पउमप्यहगिन्वाणामणं नाम
 तियाळीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥१३॥
 ॥ ^{१०}पउमप्यहचरियं समत्तं ॥

घत्ता—भरत भव्यके द्वारा प्रणम्य, आपत्तियोंका नाश करनेवाले पद्मप्रभु मुझपर प्रसन्न
 हों, सूर्य-चन्द्रके समान त्रिजगेन्द्रका यश इस प्रकार कौन पा सकता है ? ॥१४॥

इस प्रकार त्रेलोक महापुरुषोंके गुणाळकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त
 द्वारा विरचित एवं महामन्व भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यमें पद्मप्रभु
 निर्माण-गमन नामक तैवाळीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥१३॥

अगहिय असिपासहु गयदप्पासहु पासाइयवम्महजयहु ॥
तोडियपसुपासहु णविचि सुपासहु पासियपासंडियणयहु ॥ध्रुवकां॥

१

गिरायसं महाजसं
अमोसयं गिरंजणं
पुरं गुरुं गिरासवं
असंगयं गिरंवरं
असंदिरं गैयालयं
मुणीसरं गिरामयं
अलं कुलेण उत्तमं
जिणोहिवेशु सत्तमं
जयाहियं जईहियं

गिरंजसं समजसं ।
सुवच्छलं गिरंजणं ।
तैवोणिहं गिरासवं ।
मयप्पमाणियंवरं ।
विचक्खणं गयालयं ।
समोसहं गिरामयं ।
सणाणएण णित्तमं ।
णसंसिऊण सत्तमं ।
भणामि तस्स ईहियं ।

५

१०

धत्ता—गररयणकरंडइ धौदइसंडइ पुन्वविदेहि पुन्वगिरिहि ॥
हिमजललवसीयहि उत्तरि सीयहि कच्छव देसु महासरिहि ॥१॥

सन्धि ४४

जिन्होंने आशाके पाशको ग्रहण नहीं किया, जिनका दर्प और आशा जा चुकी है, जिन्होंने कामदेवकी विजयको नियन्त्रित कर लिया है, जिन्होंने जीवके बन्धनोंको तोड़ दिया है, जिन्होंने खण्डियोंके नयका खण्डन कर दिया है, ऐसे सुपार्श्वनाथको मैं प्रणाम करता हूँ ।

१

जो रागसुखसे रहित हैं, जो परमार्थस्वरूप, कुटिलतासे रहित, अमृषावादी, निरंजन, वृत्तल, अपाप, महान् हितोपदेश, आस्रवसे रहित, तपोनिधि, अपरिग्रही, दिगम्बर, ज्ञानसे प्राकाशको आच्छादित करनेवाले, गृहविहीन, पहाड़ोंमें भ्रमण करनेवाले, विचक्षण नययुक्त मुनीश्वर, रोग उपशामरूपी औषधिसे युक्त, स्त्रीसे रहित, समर्थकुलसे उत्तम, केवलज्ञानसे अज्ञानतमको नर करनेवाले, जिनाधियोंमें सातिशय सबसे अधिक प्रशस्त, जगके अधिपति और यतियोंके द्वारा आम्न्य हैं, ऐसे सुपार्श्वनाथको प्रणाम कर उनकी चेष्टा (चरित) को कहता हूँ ।

धत्ता—जो महापुरुषरूपी रत्नोंके लिए पिटारीके समान हैं ऐसे धातकीखण्डके पूर्वविदेह-पूर्वविदेह पर्वतकी हिमकणोंसे शीतल सीता नदीके उत्तरमें कच्छ देश है ॥१॥

१. १. P महायसं । २. A पर; P पुरं । ३. A P तवोणिहि । ४. A गियालयं । ५. P reads a as b and b as a. ६. A घायइ । ७. A उत्तरसीयहि ।

२

तेत्यु सत्तभूयलसत्तह्यलहि
 पाणियपूरियपविमलपरिहहि
 पाणावणतरुकीलियखयरिहि
 महि मुंजेवि सुइरु गिन्वेइँच
 ५ धणवइणामहु पामसमाणहु
 अरहंतहु सिरिणंदणसामिहि
 पयारह अंगइ अवगाहि वि
 पावपडलपसरणु आँचि वि
 दीहु कालु तनु तिन्नु तवेप्पिणु
 १० पाणिदियसंजमु अविंराहि वि
 चरविहु पच्चक्खाणु लपप्पिणु

चूलाकलसलिहियेवोमयलहि ।
 कोट्टहालयणसियवैरिहहि ।
 पाँदिसेणु पहु खेमाणयरिहि ।
 लच्छिभारु णियतणयहु ढोइँच ।
 णारवम्मीसहु विळुसुमबाणहु ।
 पासि लइँच वरु सिवपयगासिहि ।
 अप्पचं सीलगुणेहिं पसाहि वि ।
 तित्थयरत्त पुणुं संसंचि वि ।
 हियवच जिणकमकमलि यवेप्पिणु ।
 आराहँणभयवइ आराहि वि ।
 पाँदिसेणु सुणिणाहु मरेप्पिणु ।

धत्ता—मञ्जिमगेवज्जहि संभवसेज्जहि चंदकुंदसंणिहरुईँरु ॥

भद्रामरमंदिरि णयणाणंदिरि संजायउ अहमिंदु सुरु ॥२॥

२

उसमे क्षेमपुरी नगरी है जिसमे सातभूमियोंवाले सौवतल हैं, जो अपने शिखरकलशोंसे आकाशतलको छूती है, जिसको परिखाएँ निर्मल पानीसे भरी हुई हैं, जिसके परकोटों और अट्टालिकाओंपर मयूरोंके नृत्य हो रहे हैं, जिसके नाना प्रकारके वृक्षोंपर विद्याधरियाँ कोड़ा कर रही हैं ऐसी उस नगरीमें राजा नन्दिवेण निवास करता था, जो बहुत समय तक लक्ष्मीको उपभोग करनेके बाद विरक्त हो गया । उसने लक्ष्मीका भार सार्थक नामवाले अपने पुत्र धनपति-को सौंप दिया, और स्वयं नर ब्रह्मेश्वर कामदेवसे रहित, अरहन्त शिवपदगामी श्रोतन्दन स्वामीके पास व्रत ग्रहण कर लिया । ग्यारह अंगोंका अवगाहन करते हुए, स्वयंको शीलगुणोंसे विभूषित करते हुए, पापपटलके प्रसारको संकोच करते हुए, तीर्थकर प्रकृतिके पुण्यका संचय कर, दीर्घ समय तक लम्बा तप कर हृदयको जिनके चरणकमलोमें स्थापित करते हुए, प्राणों और इन्द्रियोंके संयम-को अवधारित करते हुए, भगवतीकी आराधना कर, चार प्रकारका प्रत्याख्यान कर, नन्दिवेण मुनिनाथ मृत्युको प्राप्त होकर—

धत्ता—मध्यम प्रैवैयकके नेत्रोंके लिए आनन्ददायक, भद्रामर विमानके उत्पत्ति शिला सम्पुटपर चन्द्रमा और कुन्दके समान कान्तिवाला अहमेन्द्र देव उत्पन्न हुआ ॥२॥

२. १. P तत्य । २. A णिहियं । ३. P बरहिहि । ४. P गिन्वेइँच । ५. A P विक्कमणहु ।
 ६. P अरिहंतहु । ७. A अलुंवि वि । ८. A तित्थयरत्त पुणु; P तित्थयरत्त गोत्तु । ९. P आराहणा ।
 १०. A P संणिहु । ११. P अहिमिंदु ।

३

दुरयणितणु लोयणइं अणिहइं
 तेत्तिरैहिं सो वरिससहासहिं
 अक्खिख भिक्खुवरेहिं जियक्खहिं
 काले तं तहु आउ विणिट्ठिउ
 उँडुमासाउसु थक्कउ जइयहुं
 जंबुदीवि बहुदीवणिवाँसइ
 सरयसल्लिहरससहरसियगिहि.
 परमारिसैरिसहणवजायउ
 तासु अत्थि पृयं प्राणपियारी
 ताहं विहिं मि होसइ तित्थंकरु
 ताहं विहिं मि करि तुहु जं जोगगउ
 ता जक्खं तं तेम समारिउ

आउ वि सत्तावीससमुदइं ।
 भुंजइ अणु गियमणविण्णासहिं ।
 गीससइ जि तेत्तियहिं जि पक्खहिं ।
 काले तिहुयणि किं पि ण संठिउ ।
 अक्खइ सुरवइ धणयहु तइयहुं ।
 भारहवरिसइ कासीदेसइ ।
 वाणारसिपुरि सुरपुरसंणिहि ।
 सुपइट्टउ णामे महिरायउ ।
 पुहइसेण णामेण भडारी ।
 देवदेउ जिणु पावखयंकरु ।
 पट्टणु भर्वणु भोयसुहुं चंगउं ।
 रयणविचित्तु णयरु वित्थारिउ ।

घत्ता—तुंगियहि विरामइ पच्छिमजामइ बालभराललीलागइइ ॥

मणिमंचइ सुत्तिइ ढंकियणेत्तइ दीसइ सिविणावलि सइइ ॥३॥

३

दो हाथ ऊँचा शरीर, नीदरहित नेत्र, सत्ताईस सागर आयु, इतने ही हजार वर्षमें अपने मनके अनुसार वह भोजन करता है। इन्द्रियोंको जीतनेवाले मुनिवरोंने कहा है कि वह सत्ताईस हजार वर्षोंमें साँस लेता है। समयके साथ उसकी भी आयु समाप्त हो गयी। समयके साथ त्रिभुवनमें कुछ भी स्थित नहीं रहता। जब उसकी आयु छह माह शेष रह गयी, तब इन्द्रने कुबेरसे कहा, “अनेक द्वीपोंके निवासस्थान जम्बूद्वीपके भारतवर्षमें काशी देश है, उसमें शरद् मेघ और चन्द्रमाकी शोभाके समान धरोवाली वाराणसी नगरी इन्द्रपुरीके समान है। उसमें परम ऋषि ऋषभनाथकी कुलपरम्परामें उत्पन्न सुप्रतिष्ठ नामका राजा था। पृथ्वीसेना उसकी प्राणप्यारी पत्नी थी। उन दोनोंके तीर्थंकरका जन्म होगा, देवोंके देव और पापोंका नाश करनेवाले। उनके लिए जैसा योग्य समझो वैसा सुन्दर नगर, भवन और भोगसुख पैदा करो।” कुबेरने उसी प्रकार रचना कर दी, रत्नोंसे विचित्र नगरकी रचना कर दी।

घत्ता—रातका अन्त होनेपर—अन्तिम प्रहर होनेपर बालहंसिनोके समान लीलागतिवाली उस सतीने मणिमय मंचपर आँखों बन्द कर सोते हुए स्वप्नावली देखी ॥३॥

३. १. A P अणिदइं । २. P तेत्तियहि जि सु । ३. A छम्मासाउसु । ४. A P °दीवणिवेसइ । ५. A सुरपुरि । ६. A °सुरिसहं णयआयउ । ७. A P पिय पाण । ८. A भोयसवणु सुहुं ।

- ४
- दीसइ पीणपाणि सुरपूर्णउ
 दीसइ भंगुरु गहरुकरउ
 दीसइ दिग्गवरसिचिय चल
 दीसइ जोउसु जोणहावासउ
 ५ दीसइ पाढीणहं मिहूणुल्लउ
 दीसइ वियसिउ वंभहरायरु
 दीसइ पीहु सीहरुवाळउ
 दीसइ गेयसुहलु विसहरघरु
 दीसइ जायवेउ जालाहरु
- दीसइ सरु सुयंतु उळ्ळाणउ ।
 कंठीरु करिकुंभविसारउ ।
 दीसइ सुसुमणमाल सपरिमल ।
 दीसइ उग्गंमंतु णहि पूसउ ।
 दीसइ ससल्लिळु कुडुंजुल्लउ ।
 दीसइ सरिवइ सरयरभीयरु ।
 दीसइ घंठारवु तियसालउ ।
 दीसइ रयणरासि पसरियकरु ।
 इय जोइवि जाइवि रायहु घरु ।
- १० घत्ता—जं जिह मणलालिउं णिसिहि णिहालिउं तं तिह दइयहु १० भासियउं ॥
 तेण वि तहि तुहें पत्थिवजेहें सिविणयफलु उवैएसियउं ॥४॥

दोही सुंदरि तुह सुउ तेहउ
 जासु किति लोयंतु पधावइ
 वारहपक्ख जांव ससिवासहु
 सोचठाण गहयण सुहदिट्ठिहि

५
 को वि ण दीसइ जंगि जें जेहउ ।
 गाणु अलोयंतु वि दरिसावइ ।
 भूरिचंदु णिवडिउ आयासहु ।
 भइवयहु मासहु सियळट्ठिहि ।

४

स्थूल सूंडवाला ऐरावत हाथी देखा, आवाज करता हुआ बैल, नखोंके समूहवाला, भंगुरगजोंके गण्डस्थलोंको विदीर्ण करनेवाला सिंह देखा, दिग्गजोंसे अभिषिक्त लक्ष्मी दिखाई दी, परिमल सहित सुमनमाला दिखाई दी, ज्योत्स्नाका घर चन्द्रमा दिखाई दिया, आकाशमें उगता हुआ सूर्य दिखाई दिया, मत्स्योंका युगल दिखाई दिया, जलसे भरा हुआ कुम्भयुगल दिखाई दिया, खिला हुआ सरोवर दिखाई दिया, जलचरोसे भयंकर समुद्र दिखाई दिया, सिंहासनपीठ दिखाई दिया, गतिमुखर नागलोक दिखाई दिया, किरणोंके प्रसारसे मुक्त समुद्र दिखाई दिया, ज्वालामोंको धारण करनेवाली आग दिखाई दी, यह देखकर और राजाके घर जाकर—

घत्ता—रात्रिमें मनको सुन्दर लगनेवाला जो जैसा देखा था, वह उस प्रकार अपने पति-को बताया । उस ज्येष्ठ राजाने भी सन्तुष्ट होकर स्वप्नफलका कथन किया ॥४॥

५

हे सुन्दरी, तुम्हारा ऐसा पुत्र होगा, जैसा इस संसारमें कोई नहीं है, जिसकी कीर्ति लोकान्त तक जायेगी, जिनका ज्ञान अलोकान्त तक को प्रकट करता है । जब बारह पक्ष (अर्थात् छह माह) शेष रह गये, तो चन्द्रमाके निवास घर (आकाश) से स्वर्णवृष्टि हुई । भाद्रपद शुक्ल

४. १. A P सुरपूर्णउ; K सुरपूर्णउ and notes a षः पूर्णो वा पाठः । २. A सर । ३. P वियवदाहु सिविणयकंठीरउ । ४. A P सुमणसमाल । ५. A उग्गवंतु । ६. A जुयल्लउं । ७. A कुंभमिहूणुल्लउं । ८. P सोहरहरालउ । ९. P मणलालउं । १०. P भासिउं । ११. A P उवएसिउं ।
 ५. १. A जं जंगि जेहउ; P जंगि जं जेहउ ।

बद्धतेण विसाहारिकलें	सुसुदुत्तेणुप्पाइयसोक्खें ।	५
गयरुवें विन्हाँवियसिद्धिहि	हुच गब्भावयारु परमेद्धिहि ।	
धर आवेप्पिणु खणि सुतामें	गुरु गुरुयणु अंचिच जसरामें ।	
गठ देवाहिच देवावासहु	पय वंदैवि भावें देवैसहु ।	
घत्ता—णरणाहहु केरइ हरिसजणेरइ णव मासइ तूसवियजणु ॥		
जंजुणयघारहिं दुहमलहारहिं धरि बुट्टच वइसवणुं घणु ॥५॥		१०
	६	
जयडिडिमि दंडेणें समाहइ	णिव्वुइ पडमप्पहि पडमाहइ ।	
सायरसमहं पमाणें लइयहं	णवसहासकोडिहिं गय जइयहं ।	
कालपमाणें संखहि आयच	तइयहुं एहिं वइसाहहु जायच ।	
पसवणु देवहु जाइ सुहासिइ	वारसिवासरि जेट्ताभूसिइ ।	
सामरु सच्छरु सधच सवारणुं	पुणु संप्राइच सो हरिवाहणु ।	५
अम्महि अवरु डिंसु संजोइवि	णिच हरिणा जगगुरु उच्चाइवि ।	
सिंचिच सुरगिरिसिरि सुररायहिं	मुहवियलियसिचणिवसंधायहिं ।	
सुहतणुपासु सुपासु पकोक्किच	सयमहु थोत्तु करंतच संकिच ।	
पुल्लिचि वंदिवि णिठ सणिकेयैहु	पहु करंपकइ णिहियच तायहु ।	
देच पियंगुपसवसरिसप्पहु	दोधणुसयपमाणु माणावहु ।	१०

षष्ठीके दिन विशाखा नक्षत्रके बढनेपर सुख उत्पन्न करनेवाले शुभमहूर्तमें जिन्हीने सृष्टिको विस्मय-
मे डाल दिया है, ऐसे परमेशीका गजरूपमे अवतार हुआ । यशसे सुन्दर इन्द्रने एक क्षणमे आकर
श्रेष्ठजन गुरुकी पूजा की । भावपूर्वक देवेशके पैरोंकी वन्दना कर देवेन्द्र अपने देवगृह चला गया ।
घत्ता—हर्ष उत्पन्न करनेवाले राजाके घरमे नौ माहतक जिसने जनोको सन्तुष्ट किया है
ऐसा कुबेररूपी मेघ, दुखमलको हरण करनेवाली स्वर्णधाराओसे बरसा ॥५॥

६

विजयरूपी दुन्दुभिके ढण्डेसे आहत होनेपर, रक्तकमलके समान आभावाले पद्मनाथके
निर्वाण प्राप्त करनेपर जब नौ हजार करोड़ सागर प्रमाण समय बीत गया तथा कालप्रमाणमें एक
शंख हुआ तब विशाखा नक्षत्रका उदय हुआ । जैठ शुक्ल द्वादशीके दिन अतिमित्र नामक शुभ-
योगमे देवका जन्म होनेपर देवेन्द्र अपने देवों, अप्सराओं, ध्वजों और गजोंके साथ फिर वहाँ
पहुँचा । माताको दूसरा मायावी बालक देकर, इन्द्रके द्वारा विश्वगुरुको ऊँचा कर, ले जाया
गया । शब्दों (स्तुति वचनों) के साथ, जो जलघट छोड़ रहे हैं ऐसे देवेन्द्रोंने सुमेरुपर्वतपर उनका
अभिषेक किया । दोनों पार्श्वभाग सुन्दर होनेसे उन्हें सुपार्श्व कहा गया । स्तुति करते हुए इन्द्र
शंकामें पड़ गया । पूजा और वन्दनाके बाद, उन्हें (सुपार्श्व को) अपने घर ले जाया गया, और
उन्हें पिताके हाथमे रख दिया गया । सुपार्श्वदेव त्रियंगु रूपके समान आभावाले थे, मानका नाशक
उनका शरीर दो सौ धनुष प्रमाण था ।

२. A P विभाविय । ३. A वंदिवि, P वंदिय । ४. P वइसवणवणु ।

६. १. P डंडेण । २. A वंदिवुहासिइ । ३. A जेट्ठपभूसिइ । ४. सवाहणु । ५. A P संप्राइच । ६. P सणिकेवहु ।

घत्ता—जे णाहतणुत्तणु गय दिव्वत्तणु ते तेत्तिय परिमाणु भणु ॥
जे तेणे समाणउं रुवपहाणउ अण्णु ण दोसइ को वि जणु ॥६॥

खेलंतहू दरिसियसिसुलीलहू पंचलक्ख पुव्वहं गय बालहू ।
णाहू सुणोसीरे खीरोहे पुणु ण्हवियउ पुव्वुत्तपवाहे ।
रायलच्छिदेविइ अवरुद्धिउ थिउ णरवइ णयेसत्तिइ मंडिउ ।
तित्ति ण पूरइ भोयहं दिव्वहं चउदहलक्ख जांव गय पुव्वहं ।
तावेक्कहिं दिणि उडुपल्लट्टउ पेच्छिवि णाहू समग्गि पयट्टउ ।
काले कालु वि जेण गिलिज्जइ तेण किं ण माणुसु कवल्लिज्जइ ।
जांवि थांवि पावज्ज लएप्पिणु तौ भणंति सुर रिसि पणवेप्पिणु ।
एमे बुहाहिउ तुब्भु जि छज्जइ अण्णु ण एहंउ जग्गि पडिबज्जइ ।
घत्ता—जणु तिड्डइ छित्तउ भमइ पमत्तउ पावइ जम्मि जम्मि मरणु ॥
१० पइ सुइवि भडारा तिहुयणसारा एंव हणइ को जमकरणु ॥७॥

पणु पाईणैवरिहि संपत्तउ जिणु कल्लणणहाणि अहिसित्तउ ।
विहिउ तेणे लहं सिवियारोहण दुक्कु सहेउयंकु णामे वणु ।

घत्ता—स्वामीके शरीरमे जितने परमाणु थे वे उतने ही थे इसीलिए उनके-जैसा रूपप्रधान कोई दूसरा आदमी नहीं था ॥ ६ ॥

खेलते और शिशु-श्रीड़ाओंका प्रदर्शन करते हुए शिशुके पांच लाख वर्ष बीत गये । स्वामी-का इन्द्रने फिरसे पूर्वोक्त जलप्रवाह और दूधसे अभिषेक किया, राज्यलक्ष्मी देवीने वालिगन किया, न्यायकी शक्तिसे अलंकृत यह राजा बने । चौदह लाख वर्ष पूर्व समय बीतनेपर भी जब भोगोंसे तृप्ति नहीं हुई, तब एक दिन दृढ़ता तारा देखकर, स्वामी अपने मार्गमें प्रवृत्त हुए, जिस कालके द्वारा काल (नक्षत्र जो समयका प्रतीक है) नष्ट होता है, तो क्या उससे मनुष्य कबलित नहीं होगा । जो मैं जाता हूँ और प्रव्रज्या लेकर स्थित होता हूँ । इतनेसे लौकान्तिक देवोंने आकर प्रणाम किया और कहा—'हे पण्डितोंमे श्रेष्ठ, यह तुम्हें ही शोभा देता है । विस्वमें दूसरा व्यक्ति इसे स्वीकार नहीं कर सकता ।'

घत्ता—मनुष्य तृष्णासे व्याकुल और प्रमत्त होकर धूमता है, और जन्म-जन्ममें मृत्युको प्राप्त होता है । हे त्रिभुवनश्रेष्ठ आदरणीय, तुम्हें छोड़कर दूसरा कौन यमकरणका नाश कर सकता है ? ॥ ७ ॥

इन्द्र फिरसे आया और दीक्षाकल्याण-स्नानमें उनका अभिषेक किया । शीघ्र उन्होंने

७ A जो पाहं । ८ A तो तेत्तियं; P तेत्तिओ जि । ९. A जेणु समाणउ; P तं तेण समाणउं ।
७. १. खेलंतहू । २. P सुणासिरेहि । ३. A ष्हावियउ । ४. A णिवसत्तिइ । ५. P ताम भणहि सुर ।
६. A एहू । ७. A वेहउ । ८. A P जम्मजराभरणु । ९.-P सुरवरसारा ।
८. १. T records a p : दाणवरिउवइ इति पाठेऽपि इन्द्रः । २. A तंहि ।

जेद्वहु मासहु पक्खि वलक्खइ
खत्तियदहसएहिं संजुत्ते
छट्टुववासु करिवि कयकिरियहु
तेत्थु महिददत्तणरराएं
तहु घरि तियैसणिघोसणिणायइं
णववरिसइं छवमत्थु ह्वेप्पिणु
पुणु सहेउवणि मूलि सरीसहु
णाणावाहणवलइयपायउ

वारैसिदिवसि सँसंभवरिक्खइ ।
लइय दिक्ख भुवणुत्तमसत्ते ।
सोमखेटपुरवरु गउ चरियहु ।
पाराविउ णवेवि अणुराएं ।
पंचच्छेरैयाइं संजायइं ।
अच्छिउ जिणु जिणकप्पु चरेप्पिणु ।
पंचसु हुयउ णाणु तिजगीसहु ।
देवलोउ गीसेसु वि आयउ ।

घत्ता—उट्टंतपडंतहिं पुरउ गडंतहिं णविउ णाहु पंजलियैरैहिं ॥

दहविहअट्टविहहिं पुणु पंचविहहिं सोलहैविहहिं वि सुरवरहिं ॥८॥

९

पैइं शुणंति रिसि अमर सविसहर
एक्कु जि फलु जइ भत्ति समुज्जल
तो अच्छउ पटंतु शुइलक्खइं
कँहउ सक्कु फणिराउ सरासइ
जइ तो किं चायइ वण्णइ जइ

माणुस अन्हारिस वि णिरक्खर ।
लहै पुणु हियवइ सा गउ गिम्मल ।
पावउ मुहचायामें दुक्खइं ।
तुह गुणरासिहि छेउ ण दीसइ ।
जलहिमौणि किं आणिज्जइ घडु ।

शिविकामे आरोग्य किया, और वह सहेतुक नामके वनमे पहुँचे । श्लेषशुक्ल द्वादशीके दिन विशाखा नक्षत्रमें, भुवनमें सर्वश्रेष्ठ सत्त्ववाले उन्होने एक हजार क्षत्रियोंके साथ दीक्षा ग्रहण कर ली । छठा उपवास कर कृतक्रिया चर्याके लिए वह सोमखेट नगरमें गये । वहाँ राजा महेन्द्र-दत्तने प्रेमसे प्रणाम कर उन्हें आहार कराया । उसके घरमे देवोके द्वारा किये गये धोष-निनादोके साथ पाँच आश्चर्य उत्पन्न हुए । नौ वर्ष तक वह छद्मस्थ अवस्थामें रहे । जिनचर्याका आचरण जिन भगवान्ने किया । फिर सहेतुक वनमे शिरोष वृक्षके नीचे त्रिजगके स्वामीको पाँचवाँ ज्ञान (केवलज्ञान) उत्पन्न हुआ । नाना वाहनोपर अपने पैरोको मोड़ते हुए समस्त देवलोके वहाँ आया ।

घत्ता—इस प्रकार आठ प्रकार, पाँच प्रकार और सोलह प्रकारके उठते-पड़ते और नाट्य करते हुए देवोंने अंजलियोसे सामनेसे देवको नमस्कार किया ॥ ८ ॥

९

ऋषि, अमर, नाग और हम-जैसे भी निरक्षर मनुष्य आपको जो स्तुति करते हैं, इसका एक ही फल है कि यदि समुज्ज्वल भक्ति उत्पन्न हो, यदि वह निर्मल भक्ति हृदयमें नहीं आती, तो तुम लाखों स्तुतियाँ पढ़ते रहो, मुखके व्यायामसे केवल कष्ट ही प्राप्त करोगे । इन्द्र, नागराज और सरस्वती कहे, फिर तुम्हारी गुणराशिका यदि अन्त नहीं दीखता, तो जड़कवि क्या वाँचता और

३. P वारिसिदिवसि । ४. A संभवरिक्खइ; P नुसंभवरिक्खइ । ५. A णिग्घोसणिणायं । ६. A पंचच्छरियइं ता संजायइं । ७. A P छम्मत्थु । ८. A वहेप्पिणु । ९. P adds after this: फणुणुपि किण्ह पक्खि छट्ठियदिणि, भे विसाहि पच्छिमसमुहइ दिणि । १०. A P सिरिसहु । ११. P अंजलि-करोहि । १२. A विहहिं सुरवरहिं; P विहहिं वि सुरवरहिं ।

९. १. A संशुणंति । २. A P जइ । ३. A तो । ४. AP कहइ । ५. A P जलहिमाणु ।

देव तुहारी ह्यदुहवेल्लिहि
अट्ट वि पाडिहेर थिय जावहि
भासइ धम्म भडारउ जेहउ
पालइ को वि कहि मि जइ सूरउ

भक्ति मूलु औसिद्धि सुहेल्लिहि ।
समवसरणि आसीणउ तांचिहि ।
भासहुं सक्कइ को वि ण तेहउ ।
णासइ णिड्ढि जणु विवरेरउ ।

- १० घत्ता—पाणिर्वह पमेल्लह अलिउं म बोल्लह व्वु परायउ मा हरह ॥
परदार म माणह धणु परिमाणहँ रयणिहि भोयणु परिहरह ॥९॥

१०

एवं भणिवि संबोहिय मणहर,
विणिण सहस भासिय तीसुत्तर
विणिण लक्ख चालीससहासइ
अवर वि बीस जि सिक्खुय साहिय
णव जि सहासइ ओहिविबोहँहँ
सँयइ तिणिण सहसइ पण्णारह
सोत्तसमाणसहंसपमाणहँ
वसुसहसइ रिदुसयइ विचाइहि
लक्खइ तिणिण तीससहसालइ

पंचणवइ संजाया गणहर ।
अंगसपुब्बधारि तहु म्णिवर ।
चउसहसइ णवसयइ विमीसइ ।
जे णीरंजणेण णिव्वाहिय ।
सहसेयारह पंचमबोहहँ ।
विकिरियालहँ रिसिहि सुहीरेहँ ।
पण्णासुत्तरु सउ मणजाणहँ ।
सुद्धसुरुवदेसकुलजाइहि ।
विरयँहँ णारिहि लुंचियवालहँ ।
वयंगुणियाइं ताइ तप्पत्तिहि ।

- १० सागारहँ वि लक्खु गुणगुत्तिहि

वर्णन करता है ? समुद्र मापनेके लिए क्या घड़ा लाया जाता है ? हे देव, दुःखरूपी लताका हनन करनेवाली सुखरूपी लताका, सिद्धिपर्यन्त मूल तुम्हारी भक्ति ही है । जैसे ही आठ प्रातिहार्योंकी स्थापना हुई जैसे ही, वह समवसरणमे विराजमान हो गये । आदरणीय वह जिस प्रकार धर्मका कथन करते हैं, उस प्रकारका कथन दूसरा कोई नहीं कर सकता । कहीं यदि कोई सूर हो तो वह पालन कर सकता है ? निष्ठासे विपरीत मनुष्य नाशको प्राप्त होता है ।

घत्ता—प्राणियोंका वध छोड़ो, झूठ मत बोलो, दूसरेके धनका अपहरण मत करो, परस्त्रीको मत मानो, धनका परिसीमन करो, रात्रिमे भोजनका परिहार करो ॥ ९ ॥

१०

इस प्रकार कहकर उन्होंने सम्बोधित किया । उनके पंचानवें सुन्दर गणधर हुए । अंगधारी मुनिवर दो हजार तीस थे । शिक्षक दो लाख चौवालीस हजार नौ सौ बीस कि जिनका निरंजन (तीर्थकर) ने संसारसे उद्धार किया । अवधिज्ञानी नौ हजार; केवलज्ञानी; पन्द्रह हजार तीन सौ सुधीर, विक्रिया-ऋद्धिके धारक थे । मनःपर्ययज्ञानी नौ हजार एक सौ पचास । शुद्ध स्वरूप, देशकालमें उत्पन्न हुए वादी मुनि आठ हजार छह सौ । तीन लाख तीस हजार केश लोंच करनेवाली आर्थिकाएँ थी । तीन लाख श्रावक और पाँच लाख श्राविकाएँ ।

१. A आसुद्धि । ७. A कहि मि को वि । ८. AP पाणिवहु । ९. P परदार । १०. P परिमाणह ।
१०. १. A दोणिण । २. A अंगसुपुब्बधारि; P अंगपुब्बधारिय । ३. A ओहिविबोहहँ । ४. P सयाइं ।
५. P सुधीरहँ । ६. P समारण । ७. A विरइयणारिहि । ८. P लुचियकुलहि । ९. A वयगणि-
याइं ।

घत्ता—तियसेहिं असंखहिं संखतिरिक्खहिं सहं दुक्करियइं खंडिवि ॥
णववरिसविहीणउ जयविजयाणउ पुव्वलक्ख महि हिंडिवि^{१०} ॥१०॥

११

महियमहिउ महमहियाणंगउ	सहुं सीसेहिं समाहिवसंगउ ।	
संमेयहु जाइवि गिरिधीरउ	तीस दिर्यह थिउ मुक्कसरीरउ ।	
फग्गुणमासि कालंपक्खंतरि	साणुराहि सुहसत्तमिवासरि ।	
सूरुग्गमि बुहदेवहं देवें	णिक्किरियत्तु पत्तु विणु खेवें ।	
णिट्ठिउ अट्टमवंसुह पट्टकउ	गउ सुपासु पासेहिं विमक्कउ ।	५
चंदणक्कहमेण पव्वालिय	पईल्लोमीसें माल्हेहिं मालिय ।	
दिण्णीं मउडाणलजालोलिय	चिच्चिक्कुमारिं तणु पज्जालिय ।	
वंदिवि भर्प पावणिण्णासउ	णायणाहु गउ णायवासउ ।	
णायारूढउ कहइ णयंगहं	पवणवरुणवइसवणपर्यंगहं ।	
घत्ता—जहि भरहजिणेसहु णाणु सुपासहु पसरइ देवहु केवल्लिहिं ॥		१०
तहि वाइ ण वायउ ण तमु ण तेयउ पुप्फदंतकिरणवल्लिहिं ॥११॥		

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंवविरहए महामन्वमरहाणुमणियए
महाकव्वे^{१०} सुपासणिन्वाणामणं णाम चउयालीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥१३॥

॥ सुपासचरियं समत्तं ॥

घत्ता—असंख्यात देवो और संख्यात तिर्यचोके साथ दुश्चरित्तोका खण्डन कर, नौ वर्ष
कम, जय-विजय करनेवाले एक लाख पूर्व वर्ष धरतीपर विहार कर ॥१०॥

११

पूज्योके पूज्य, तेजसे कामका मथन करनेवाले, समाधिमें लीन, शिष्योके साथ, पहाड़की
तरह धीर सम्मेद सिखरपर जाकर वह तीस दिन तक मुक्त शरीर रहकर फागुन माहके कृष्णपक्षमें
शुभ सप्तमीके दिन अनुराधा नक्षत्रमें सूर्योदय वेलामे अनेक देवोके देवने बिना किसी विलम्बके
निष्क्रियत्व (मुक्ति) को प्राप्त कर लिया । निष्ठावान् वह आठवी भूमिमें पहुँच गये, सुपाश्वं पाशके
बन्धनोसे मुक्त हो गये । उनके शरीरको चन्दनसे प्रलिप्त किया गया, इन्द्रके द्वारा मालाओसे
लपेटा गया, अग्निकुमार देवने मुकुटानल ज्वाला दी और शरीर प्रज्वलित कर दिया गया ।
उनकी, पापका नाश करनेवाली भस्मकी बन्दनाकर इन्द्र अपने निवासके लिए चला गया । अपने
ऐरावत नागपर आरूढ वह नत शरीर पवन, वरुण, वैश्रवण और सूर्य आदि देवोंसे कहता है—

घत्ता—कि जहाँ सूर्य-चन्द्रके समान किरणावलिवाले भरतजिनेश और केवली देव
सुपाश्वंका ज्ञान प्रसरित होता है वहाँ न वादी है और न प्रतिवादी, न तम है और न तेज ॥११॥

इस प्रकार त्रेलस महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित महाभन्व सरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका सुपाश्वं निर्वानगमन
नामका चवाकीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥१३॥

१०. P मंडिवि ।

११. १. A P दिवह । २. P कालि पक्खंतरि । ३. A अट्टमिवसुह । ४. A P पोलोमीसें । ५. A मालह-
मालिय । ६. P मणिमउडाणलेण जालोलिय । ७. P चच्चिक्कुमारिहिं । ८. A भव्व । ९. AP पुप्फ-
यंत । १०. A सुपासजिणगिन्वाण । ११. A P omit this line.

सन्धि ४५

णित्तेइयअरिवंदहु
पणविवि कुवल्लयचंदहु

वयणचंदजियचंदहु ॥
चंदप्पहहु जिणिदहु ॥ध्रुवकां॥

१

५ णियंगरस्सीहि तमं विणीयं
कर्यं कयत्थं किर जेण णिञ्चं
अतुच्छलच्छीहलकप्पभूयं
दयावरं पालियसन्वभूयं
ण जं पियालीविरहे विसणं
विसुद्धभावं विगयप्पमायं
णिहीसरं जं महियंतरायं
१० पलुद्धदुक्कमविवायवीलं

सुयंगउत्तीहि जयं विणीयं
णमंति जं देववई वि णिञ्चं ।
उदारचित्तं गुणपत्तभूयं ।
गिराहिं संबोहियरैक्खभूयं ।
मुंणि महंतं विमलं विसणं ।
परं परेसं परिङ्गीणमायं ।
परजियाणंतदुरंतरायं ।
विइण्णदुक्कवाइविवायवीलं ।

सन्धि ४६

शत्रुसमूहको निस्तेज करनेवाले तथा मुखचन्द्रसे चन्द्रमाको पराजित करनेवाले पृथ्वी-
मण्डलके चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रको मैं प्रणाम करता हूँ ।

१

जिन्होंने अपने शरीरकी किरणोंसे अन्धकारका विनाश किया है, और शोभन द्वादशांग
श्रुत की उक्तियोंसे जगको विनीत और कृतार्थ किया है, जिन्हें देवेन्द्र प्रतिदिन नमस्कार करते हैं,
जो महान् लक्ष्मीरूपी फलके लिए कल्पवृक्षके समान हैं, जो उदारचित्त और गुणोंके पात्रीभूत हैं,
दयावर सब प्राणियोंके पालनकर्ता, अपनी वाणीसे भूतपिशाचोंको सम्बोधित करनेवाले जो प्रिय
सखीके विरहमे विषण्ण नहीं होते, जो पवित्र संज्ञाशून्य महान् मुनि हैं, जो विगुद्धभाव और प्रमाद
रहित हैं, जो श्रेष्ठ दिक्वस्वामी और माया रहित हैं, निवियोंके ईश्वर, अन्तरायोंका नाश करने-
वाले, अनन्त दुरन्त रागोंको जीतनेवाले, दुष्पाक कर्मकी संवेदनासे सजग, जो दुष्ट वादियोंकी

A has, at the beginning of this Samdhi, the following stanza:—

वापीकूपतडागजैववसतीस्त्वपत्त्वेह यत्कारितं
भव्यश्रीमरतेन सुन्दरधिया जैनं सुराणा (पुराणं) महत् ।
तत्कृत्वा प्लवमुत्तमं रविकृतिः (?) संसारवाघैः सुखं
कोन्यत् (?) ससहस्री (?) स्ति कस्य हृदयं तं वन्दितुं नेहते ॥ १ ॥

This stanza is not found in any other known MS. of the work.

१. १. A अरिविदहु; P अरिविदहु । २. A दयावर । ३. A संबोहियसन्वभूयं; T records a *p* सन्व-
भूयमिति पाठे सर्वभूकं सर्वभूमिकम् । ४. P मुणोमहंतं । ५. A P परिङ्गीणं । ६. A दुब्बावविवायं ।

सुसञ्चतसंगविचारणासं
सदितियाभक्त्वरभावाहारं
पुरंदरालोयणजोगगत्तं
णिवारियप्पवहसेलपायं
खगिद्वेविदमुणिद्वैयं
भणामि तस्सेव पुणो मुराणं

घत्ता—अमलइ अत्थरसालइ
अट्टसु जिणवरु पुज्जमि

अणंगसिगारविचारणासं ।
भवोहसंभूइभयावहारं ।
समुज्जियाहम्मदुपंकगतं ।
फणिदचूडामणिघट्टपायं ।
णमासि चंदप्पहणामवेयं ।
गणोसगीयं पवरं पुरा णं ।

१५

वयणणुप्पलमालइ ॥
पचेहं पुणु आवज्जमि ॥१॥

२

मणुत्तरोइल्लि
दीवै पसिद्धम्मि
जलभरियकंदरहु
सुरलोयसोइम्मि
धणकणसमिद्धम्मि
छक्खंडधरणिवइ
उद्धूयरिउरेणु
सिरिकंत तहु धरिणि
सुयरहिउ णरणाहु
किं करमि-कहिं चरमि

भूभाइ सुसहिंल्लि ।
पुक्खरवरद्धम्मि ।
पुणिवल्लमंदरहु ।
पच्छिमविदेइम्मि ।
देसे सुगंधम्मि ।
सिरिपुरवरे णिवइ ।
णामेण सिरिसेगु ।
करिवरहु णं करिणि ।
चित्तवइ थिरवाहु ।
को-वेउ-संभरमि ।

५

१०

विशेष पीड़ा देनेवाले हैं, जिनका मुख सुसत्य और तत्त्वसे उपलक्षित है, जो कामशृंगारके विचारों-का नाश करनेवाले हैं, जो अपनी दीप्तिसे सूर्यप्रभाका अपहरण करनेवाले हैं, जिनका शरीर इन्द्रके लिए दर्शनीय है, जिन्होंने अधर्मके दुष्पंकका गतं छोड़ दिया है, जिन्होंने आत्मज्ञानके लिए पर्वतसे नीचे गिरनेका विरोध किया है, जिनके चरण नागराजके चूडामणिसे घिसे जाते हैं, जो खगेन्द्रों, देवेन्द्रों और मानवेन्द्रोंके द्वारा ध्येय है—मैं ऐसे चन्द्रप्रभ स्वामीको नमस्कार करता हूँ और फिर उन्हीका पुराण कहता हूँ जो कि पहले गणधरोके द्वारा कहा गया था ।

घत्ता—स्वच्छ अर्थसे रसाल वचनरूपी नवकमलोंकी मालासे आठवें जिनवस्की मैं पूजा करता हूँ और प्रचुर पुष्पका उपाजन करता हूँ ॥१॥

२

मानुषोत्तर पर्वतसे सुशोभित सुखद भूभागवाले प्रसिद्ध पुष्कर द्वीपमें, जिसकी गुफाएँ जलसे पूरित हैं ऐसे पूर्वे मन्दराचलके पश्चिम विदेहमे धनकणसे समृद्ध-सुगन्धि-देशके श्रीपुर नगरमें-छह खण्ड धरतीका अविपति, शत्रुओंकी धूल उड़ानेवाला राजा-श्रीषेण था । श्रीकान्ता उसकी गृहिणी थी, मानो करिवरकी हथिनी हो । पुत्रसे हीन स्थिरवाहु राजा विचार

७. A T °भाविहारं । ८. A °संभूइभयावहारं । ९. A पुरंदरालोयणजोगगत्तं; P पुरंदरालोयणजोय-गत्तं । १०. A °षिट्टपायं । ११. A P पवरं ।

२. १. A P मणुत्तरोइल्लि ।

	को देइ मह पुत्तु ता भणइ सुपुरोह तो कुणसु सहहेउ धम्माणुरापण	गुणरयणसंजुत्तु । जइ महसि सुयलाहु । जिणणाहथहिसेउ । तं सुणिवि राएण ।
१५	जरमरणभयहरहं रयणोहं रइयाउ मंतेहिं थवियाउ संसुहं सुयत्तीइ सि विणम्मि सुहईइ	पडिमाउ जिणवरहं । कलहोयमइयाउ । खीरेहिं णहवियाउ । महिरायपत्तीइ । छेयंमि राईइ ।
२०	करि सीहु सिरि चंहु घत्ता—वरपुत्तासइ लइयहु तेण वि तहु परियाणिउं	दिट्ठो विहांसुं । अक्खिउ जाइवि दइयहु ॥ दंसणंफलु वक्खाणिउं ॥२॥

	सज्जणगणमणपयणियपणउ कइवयदियहहिं वेळि व लळिउ वउ देविहि गम्भालंकरिउं कंचुइहिं णरिंदहु वज्जरिउ संतोसें देविहि पासि गउ	तुह सुंदरि.होसइ पियतणउ । लायणणबहलजलविच्छुंलिउ । ओलक्खि वि देहं चिंधु तुरिउं । तहु हियवउं हरिउं विष्फुरिउं । णं वणगणियारिहि मत्तगउ ।
--	--	---

करता है—क्या करूँ, कहाँ जाऊँ ? किस देव की आराधना करूँ, कौन मुझे गुणरत्नसे युक्त पुत्र देगा ? तब सुपुरोहितने कहा कि यदि तुम पुत्र-लाभ चाहते हो तो शुभके हेतु जिननाथका अभिषेक करो । यह सुनकर राजाने धर्मके अनुरागसे जरा और मरणके भयका अघहरण करनेवाले जिनवरों-की रत्नोंसे रचित स्वर्णमयी प्रतिभाएँ बनवायीं । मन्त्रोंसे उनकी स्थापना की और दूधसे अभिषेक कराया । महाराजकी सुभगा पत्नीने सुखपूर्वक सोते हुए, रात्रिके अन्तिम भागमे हाथी सिंह, लक्ष्मी और प्रभासे बहुल चन्द्रमा देखा ।

घत्ता—उसने जाकर श्रेष्ठ पुत्रकी आशासे पतिसे कहा । उसने भी उसे बताया और स्वप्न-दर्शनके फलकी व्याख्या की ॥२॥

३

हे सुन्दरी, तुम्हारे सज्जनसमूहके मनमें प्रणय उत्पन्न करनेवाला प्रिय पुत्र होगा । कुछ ही दिनोंमें देवीका लताके समान सुन्दर लावण्यके अत्यधिक जलसे विच्छुरित शरीर, गर्भसे अलंकृत हो गया । शरीरके चिह्नको देखकर कंचुकीने जाकर राजासे कहा । उसका हृदय हर्षसे विस्फुरित हो गया । सन्तोषके साथ वह देवीके पास गया, मानो वनहृदिनीके पास मतवाला गंज गया हो । उसके

२. AP सुसुहं सुवत्तीइ । ३. A सुसईइ । ४. P प्चम्मि । ५. A चंहु and gloss सुयः । ६. A विहोसंहु and gloss चम्भः । ७. A सिविणयफलु ।
३. १. A सज्जणगणमणपयणियपणउ; P सज्जणजणमणपयणियउ पणउ । २. AP होसइ सुंदरि । ३. A ललिय । ४. A विच्छुलिय । ५. P देहि चिंधु । ६. A पासु ।

पेच्छिवि कसणाणु थणजुयलु
 सालसुयंगर गयर्गइपसरु
 णरवइ^{१०} णियमंदिरि गंपि थिउ
 सु^{११} दुल्लहु वल्लहु सज्जणहं
 णच्चिज्जइ गिज्जइ महुरसरु
 काणीणहुं दीणहुं दुत्थियहं

पेच्छिवि मुहमंडलु दरधवल्लु ।
 पेच्छिवि पिय संभासिवि सुखंरु ।
 णवभासहिं जणियउ^{११} प्राणप्रिउ ।
 कुलमंडणु खंडणु दुज्जणहं ।
 धंहु वज्जइ दिज्जइ धणणियरु ।
 णिहविणहु किविणहु पंथियहं^{१५} ।

१०

घत्ता—तूररवे^{१०} दिस हम्मइ कणिण वि पडिउ^{१०} ण सुम्मइ ॥
 णारीणेरुणपेल्लिय वसुमइ णावइ हल्लिय ॥३॥

४

विण्णाणं सण्णाणं घडियउ
 ससिवयणहं सयणहं आवडिउ
 जणणीजणैणइं जोर्यति सुहुं
 ता इहउं विट्ठउं णउ रडिउं
 अरहंतहु संवहु आगमणु
 मथभावु गावु खणि परियलिउ
 समसरणु समवसरणंतु गउ

हियजणमणि णवजोव्वाणि चडियउ ।
 सो इहु व चंदु व णहि वडिउ ।
 अच्छंति तेण सहं जाव सुहुं ।
 सुइसीलं वणवालं कडिउं ।
 कयतावहु पावहु णिणामणु ।
 लहुं णरवइ सुरवइ जिह चलिउ ।
 पहु विविहधल्लै जियमयरधउ ।

५

स्तनयुगलको श्याममुख देखकर और मुखमण्डलको कुछ सफेद देखकर, अलसाये अंगों और गजगतिका प्रसार देखकर, प्रियासे सुन्दर स्वरमें बात कर राजा अपने प्रासादमें जाकर स्थित हो गया। नौ माहमें प्रणयिनोने प्राणप्रिय पुत्रको जन्म दिया। वह दुर्लभ पुत्र सज्जनोंका बल्लभ (प्रिय) था, कुलमण्डन और दुर्जनोका खण्डन करनेवाला था। मधुर स्वरमें गायानाचा जाने लगा। घण्टा बजने लगा, धनसमूह दिया जाने लगा—कानोनों, दीनों, दुःखितों, धनरहितों, कृपणों और पथिकोंको।

घत्ता—तूर्योके शब्दोंसे दिशाएँ आहत हो उठी। कानमें पड़ा हुआ भी शब्द सुनाई नहीं देता। नारियोकें नृत्यसे प्रेरित जैसे धरती हिल उठी ॥३॥

४

विज्ञान और सम्यक्ज्ञानसे रचित, जनमनका हरण करनेवाला वह नवयौवनमें आरूढ़ हो गया। चन्द्रमाके समान मुखवाले अपने लोभोभे आकर वह ऐसा लगता था जैसे इन्द्र या चन्द्रमा आकाशमें चढ़ गया हो। माता-पिता जबतक सुखसे उसका मुख देखते हुए रहते हैं तबतक वनपालने जो इष्ट दर्शन किया था, उससे वह रह नहीं सका। उस सुविशील नामक वनपालने वह कह दिया—अरहन्त सन्तका आगमन और सन्तापदायक पापका निर्गमन। एक क्षणमें राजाका मदभाव और गर्व चला गया। शीघ्र ही वह राजा इन्द्रकी तरह चला। उपशमके स्थानपर

७. A वरधवल्लु; P छूहववल्लु । ८ A गइगयपसरु; P गउ गयपसर । ९. A ससुरु । १०. A मंदिर ।
 ११. AP णण पिउ । १२. AP सो दुल्लहु । १३. P महुरयर । १४. AP पहु । १५. P पत्थियहं ।
 P adds after this: सिरिसम्मणिरुविउ णामु तसु, सुहलवणु जणवइ लद्धजसु । १६. A तूररवहं ।
 १७. P वडिउ । १८. K^० णचवणपडिपेल्लिय ।

४. १. P सो इहु चंदु णं वडिउ । २ P^० जणणु वि । ३. K विवहवउ ।

- जिणु वंदिवि णिवि अप्पणं
सिरिसेणं सेणं पमेत्तलविय ।
१० महियासि णिवासि सिरिप्पहहु
तवु गहियसं महियसं दुच्चरिं
एत्तहि णंदणु णंदणु जणहु
आसाहि रुद्धि णंदीसरइ
उववासिउ तोसिउ सुयसुइहि
- १५ घत्ता—अट्टरउहहि चत्तउ
थिउ अत्थाणि णराहिउ णं गहयलि ताराहिउ ॥४॥
- तें पिसुणिउं णिसुणिउं विहुयणं ।
सिरिसम्मइ सिरिसम्मइ थविय ।
णियरुइगइछाइयरविरहहु ।
चेट्टिउं चिरु णिरु णिम्मच्छरउ ।
पउणंतु अंतु दुक्कियरिणहु ।
छणंससिहरि १० मणहरि वासरइ ।
सहुं सदिहिहि ११ ससुहिहि सुहमइहि ।
- ५ धम्मञ्जाणसंजुत्तउ ॥

- जावच्छइ पेच्छइ जलियंदिंस
विहिचिरैलिय वियलिय उक्क किंइ
तं पेच्छिवि परिहंछिवि सयलु
णियतणयहु पणयहु लच्छिसहि
५ पिउगुरहि पुरैहि थिरु लइउं अउ
ता कामिणिचूडामणिसरिस ।
सुहरुहरसररुहमयरंदु जिह ।
संचियमलु चंचलु सुवणयलु ।
अहिअलिय घलिय दिण्ण महि ।
सिरु मुंडिउं दंडिउं तेण वउ ।

समवसरणके लिए चला । विविध ध्वजवाले राजाने मकरध्वज (कामदेव) को जीतनेवाले जिनकी वन्दना कर अपनी निन्दा की । उसने जो कहा वह त्रिभुवनने सुना । श्रीवेणर्ने सेना छोड़ दी और लक्ष्मी श्रीशर्मा पुत्रको सौंप दी । अपनी कान्ति और गतिसे जिन्होंने सूर्यके रथको आच्छादित कर लिया है ऐसे श्रीप्रभ (श्रोपद्म) के आशाओंका नाश करनेवाले निवासपर जाकर उसने तप ग्रहण कर लिया और दुश्चरितका नाश किया । उसकी पुरानी चेष्टाएँ मत्सरभावसे बिलकुल रहित हो गयी । यहाँ लोगोंकी वृद्धि करनेवाले उस पुत्रने पापोंका अन्त करते हुए, आषाढ़ माहके प्रसिद्ध नन्दीस्वरमे पूर्णिमाके सुन्दर दिन, वैर्य सम्पन्न और शुभमतिवाले सुहृदोके साथ उपवास किया और सन्तुष्ट हुआ ।

घत्ता—आठ रौद्रध्यानसे दूर और धर्मध्यानसे संयुक्त वह राजा दरवारमे बैठा हुआ ऐसा मालूम होता मानो नभतलमे चन्द्रमा हो ॥४॥

जब वह बैठा हुआ था तो जलती हुई दिशा देखता है । कामिनीके चूडामणिकी तरह आकाशमे फँकी गयी उल्का उसे ऐसी दिखाई दी जैसे चन्द्ररूपी कमलका पराग हो । उसे देखकर संचित मल चंचल समस्त भुवनतलको छोड़कर अपने प्रणत पुत्रको अहित करनेवाली लक्ष्मीरूपी सखी त्याग दी और धरती दे दी । अपने पिताके गुह नगरमें स्थिर व्रत लिया, सिर मुड़ा लिया,

४. A शेषय मेललविय । ५. A सिरिसमइ सिरिवम्मइ । ६. P reads a as b and b as a. ।
७. P महिउं । ८. उब्बेद्धिउ थिउ णिम्मच्छरिउ । ९. AP छणंससहरि । १०. A मणहरवासरइ ।
११. A. सु मु हि हि सुहमइहि; P मंतिहि सुहमइहि । १२. P अत्थाणेण ।
५. १ A जामच्छइ; P जावच्छइ । २. A जडिय । ३. P वियलिय विरलिय । ४. P परियच्छिवि ।
५. A पुरहि; P गुरहि । ६. A वउ; P तउ ।

सहरिहि सिरिसिहरिहि हरिवि रइ कयकलसणास संगासगइ ।।
 सवियपि कपि सोहम्भवरि एकोर्वहिसुहणिहिआउधरि ।
 सिरिबहि सिरिर्वहि विलुलियचमर सिरिहर मणहर जायउ अमरु ।
 ११ एसञ्जु पुञ्जु तहु अट्टुगुणु सुहवत्त सत्तकरमवियतणु ।
 विहवदहं अइहं सहस दुइ वट्टति जंति जइ सुत्ति तइ । १०
 गीसासु मासु पूरिवि मुयइ भावइ सेवइ काए^{१२} जुयइ ।
 घत्ता—तहु तहि पंकयत्तहु कीलंतहु^३ कीलंतहु ॥
 आउ पईहु वि पर्यलिउ कालें को व^{१४} ण कवलित ॥५॥

६

अवर^१ वि णररविपहवत्ति जहि बहुजीवइ वीयइ दीवि तहि ।
 मोरयभीमोरयसंगरहु इसुकारहु सारहु गिरिवरहु ।
 पुढ्वासइ वासइ भारहइ सियभागुभागुकरभारहइ ।
 णंदंतपंगावगांवगहिरि इलतिलइ अलयइ विसयवरि ।
 संपयहि पयहि णिञ्चु जि पियहि णिट्टुगेज्झहि उज्झहि णयरियहि । ५
 णिव्वट्टिउ लोट्टिउ क्रूरमइ अजियंजउ दुज्जउ मणुयमइ ।

और शरीरको दण्डित किया। सिहों सहित श्रीपर्वत शिखरपर रतिका नाश कर, जिसमें कालुष्य-का नाश कर दिया गया है, ऐसी संन्यास गति रचकर वह एक सागर वायु और सुखकी निधि धारण करनेवाले सौधमें स्वर्गके श्रीसम्पन्न श्रीप्रभ विमानमें, जिसपर चमर ढोरे जा रहे हैं, ऐसा श्रीधर नामका सुन्दर देव हुआ। उसका आठ गुना पूज्य ऐश्वर्य था। उसका सात हाथेंसे मापा गया शरीर सुखका पात्र था। वैभवंसे गोले दो हजार वर्ष जब बीत जाते हैं, तब उसका भोजन होता है, एक माहमें साँस लेकर छोड़ता है। उसे स्त्री अच्छी लगती है, और शरीरसे उसका सेवन करता है ?

घत्ता—वहाँ क्रीड़ा करते-करते कमलनेत्र उसका लम्बा समय निकल गया। समयके द्वारा कौन कवलित नहीं होता ? ॥५॥

६

मनुष्य रूनी सूर्यको प्रभावाले अनेक जीवोंसे युक्त दूसरे घातकीखण्ड द्वीपमें जिसमें मयूर और भयंकर साँपोका युद्ध होता है, ऐसे श्रेष्ठ इषाका पर्वतकी पूर्व दिशामें सूर्य और चन्द्रमाकी किरणोंसे आलोकित भारतवर्षके आनन्द करते हुए प्रचुर गाँवोंसे गम्भीर पृथ्वीमेंश्रेष्ठ अलका क्षेत्रमें सम्पत्तियों और प्रजाओंसे प्रिय मनुष्योंके द्वारा अग्राह्य अयोध्या नगरीमें अत्यन्त भ्रष्ट

७. AP सुरसिहरिहे । ८ A जुम्मोवहि । ९. A सुरसिहि । १०. A सिरिहर । ११. A एसञ्ज पुञ्ज । १२. A कायवि जुवइ । १३. P सहं अच्छर । १४. A पयडिउ । १५. A कालें को वि ण कवलित; P कालें को ण कवलित ।

६. १. A अवर वि णर रवि पवहंति जहि; P अमर वि णरवर विहरंति जहि । २. A दीवइ बीइ । ३. A सुइकारहु । ४. AP पगामगाम । ५. A णिस णिज्झहि but णिट्टुगेज्झहि in margin । ६. AP अजियंजउ ।

तद्दु संदिरि^{१०} गंदिरि गिम्मलिणि सुंदरि ईदंदिरि गं णलिणि ।
 सुक्कमलकमलदलणयणजुय सुहजलरहल्लि णववेल्लिमुय ।
^{१०} सुयसिरमणि गुणमणिणिवहखणि सरसेणाजियसेणा रमणि ।
 सुपसुत्त पुत्तसंणिहियमइ सा सिविणय^{११} सुविणिय णियइ सइ ।
 घत्ता—सीहु हत्थि ससि दिणयरु पुण्णकलसु पंकयसरु ॥
 सिरि वसहिंदु पमत्त^{१२} संखु दाहिणावत्त ॥६॥

७

दिट्ठउ सिट्ठउ सुहिभौणियइ णियकंतहु कंतहु राणियइ ।
 फलु विलसिउं भासिउं तेण तहि दिसवल्लेय विमलइ थियइ णहि ।
 तहि गत्थि अत्थि णं चंदमउ थिउं सिरिइरु सिरिइरु सच्चमउ ।
 उप्पण्णउ घण्णउ पुण्णणिहि तरु धरणिहि अरणिहि णाई सिहि ।
 १५ जं जाणिउं भाणिउं जेण जहि चड्ढंते संते तेण तहि ।
 णयरिद्धिइ बुद्धिइ लक्खियउं णिहिल्लथु वि सत्थु वि सिक्खियउं ।
 मायइ पियवायइ गुणसहिउं णियणामु सधामु तामु णिहिउं ।
 संवियकउ थक्कउ तरुणिरुउ णवज्जोवणि णं^{१३} वणि महुसमउ ।

क्रूरमति अजितंजय नामका दुर्जेय (मनुजमति) राजा था । मानन्द देनेवाले उसके घरमे निर्मल सुन्दरी गृहिणी थी मानो कमलिनीमे लक्ष्मी हो । वह निर्मल कमलके समान आंखों वाली सौन्दर्यके जलकी लहर नवलताके समान बाहुवली, स्त्रियोंमे शिरोमणि, गुणरूपी मणिसमूहकी खदान, और कामदेवकी सेना अजितसेना नामकी स्त्री थी । पुत्रमें अत्यन्त बुद्धि रखनेवाली, अत्यन्त प्रगाढ़ रूपसे सोयी हुई, सुविनीता वह सती स्वप्न देखती है ।

घत्ता—सिंह, हाथी, चन्द्रमा, दिनकर, पूर्णकलश, कमल, सरोवर, लक्ष्मी, प्रमत्त वृषभेन्द्र और दक्षिणावर्त शंख ॥६॥

७

सुधियोकके द्वारा मान्य रानीने जो देखा, वह अपने प्रिय पतिसे कहा । उसने उससे उसका विलसित फल कहा । दिशा मण्डल और आकाशके निर्मल होनेपर उसके गर्भमें, बादलोमे चन्द्रमा के समान, लक्ष्मीधारक श्रीघर स्थित हो गया । पुण्य निधि और धन्य वह इस प्रकार उससे उत्पन्न हुआ जैसे घरती पर वृक्ष और लकड़ीसे आग उत्पन्न हुई हो । बुद्धिको प्राप्त होते हुए उसने जहाँ जो जाना वह कहा । नय-ऋद्धि और बुद्धिसे वह उपलक्षित हो गया, निखिलार्थ शास्त्र भी उसने सीख लिये । प्रिय. बोलनेवाली मां ने गुण सहित अपना नाम और घर उसे सौंप दिया (अजितसेन उसका नाम था) नवयीवनमें वह विचारग्रस्त और तरुणीरत हो गया मानो वनमें

७. A गंदिरि संदिरि । ८. A सुक्क. । ९. A सुयजलहरणि णिववेल्लिमुय; P सुहजलवहुल्लि । १०. AP तियसिरि । ११. A सविणय सिविणय; P सुविणय सिविणय । १२. AP संखु वि दाहिणवत्त ।
 ७. १ सुहमाणियइ । २. A दिसवल्लयइ विमलि थियम्मि णहि; P दिसवल्ल विमलि थियम्मि णहि ।
 ३. AP omit थिउं । ४. A उप्पण्णउ घण्णउ सच्चणिहि; P उप्पण्णहु घण्णहु पुण्णणिहि । ५. A तरुणियउं । ६. AP वणि णं ।

सा राएँ ताएँ तालघणु गंपिणु गयसोच असोयवणु ।
 हुहहरु सिरिहरु जिणु सेचियच भर्वपासु सुदुरु^१ विहा^२विचय । १०
 घत्ता—चितइ महिपरमेसरु एंबहिं धम्महु अवसर ॥
 कण्णहु गियडइ घुलियइं मरणु कहति व पलियइं ॥७॥

८

सो अजियसेणु वेणु^३ व धरहि अहिथविच णहविच ढोइयकरैहि ।
 रिसिसिक्खहि दिक्खहि लग्गु किह पिच ह्यकलि केवलि हुयच जिह ।
 एचहि जयजत्तहि जोत्तियहु णिक्खत्तियखत्तियसोत्तियहु ।
 तसियक्क चक्क तहु हुयच धरि रुइपुंजु कंजु ण कंजैसरि ।
 जणजोणिहि खोणिहि साहियइं चडइं छक्खंडइं साहियइं । ५
 णवणिहि मणदिहिचप्पायणइं रयणइं चेयणइं अचेयणइं ।
 चचदह दहंगभोएँण सहुं धरु एंति देति चितविचं लहु ।
 कयदसु अरिदसु णामेँ समणु मासोववासि धणरासितणु ।
 जो मण्णइ वण्णइ जिणचरिउं जेँ सुत्तु सुजुत्तु समुद्धरिउ ।
 धरु पत्तु पत्तु तें जोइयच अणवज्जु भोज्जु संप्राइयडं । १०
 णर्वपुण्णइं णवणव भावणइ तें वद्धइं णिद्धइं कयपणइ ।

वसन्तका समय हो । तब पिता राजाने शोकसे रहित होकर ताल वृक्षोंसे सघन अशोक वनमें जाकर दुःखका हरण करनेवाले श्रीधर जिनकी सेवा की और अत्यन्त दूरवर्ती भवरूपी बन्धनको देख लिया ।

घत्ता—धरतीका वह राजा विचार करता है कि इस समय, अब धर्मका अवसर है । कानोके निकट व्याप्त सफेदी मानो मृत्युका कथन कर रही है ॥७॥

८

उसने उस अजितसेनको कर देनेवाली धरती पर वेणुके समान स्थापित कर दिया और अभिषेक किया और मुनिकी शिक्षासे युक्त दीक्षामे वह इस प्रकार लग गया कि पापको नष्ट करनेवाले पिता केवलज्ञानी हो गये । इधर विजय-यात्रामें लगे हुए तथा जिसने क्षत्रियों और ब्राह्मणोंको क्षत्र रहित कर दिया है ऐसे उस राजा अजितसेनको सूर्यको व्रस्त करनेवाला चक्र, इस प्रकार उत्पन्न हुआ मानो कमलोंके सरोवरमें कान्तिका समूह उत्पन्न हुआ हो । उसने मनुष्योंकी योनि प्रचण्ड छह खण्ड भूमि सिद्ध कर ली । नव निचियाँ, मनके भाग्यको उत्पन्न करनेवाले चेतन अचेतन चौदह रत्न, दशांगमोगिकी साथ धर आते हैं और वह जिसकी चिन्ता करता है, वे वह शीघ्र प्रदान करते हैं । शान्तमन एक मासका उपवास करनेवाले और तुणके समान शरीरवाले अरिदम नामक श्रमण, जो जिनचरितको मानते हैं और उसका वर्णन करते हैं, तथा जिन्होंने युक्तियुक्त सूत्रोंका उद्धार किया है धर आये । राजाने उन्हें देखा और उन्हें अनवद्य आहार दिया । प्रणतिपूर्वक नव-नव भावनासे उसने स्निग्ध नये-नये पुण्योंका बंध किया । जिन्होंने शुभ दिशा

७. A तालहिं तालघणु । ८. AP भवयाव । ९. A सुवृच ।

८. १. A वेणु व धरह । २. A करह । ३. P रजसरि । ४. P ओएँहि । ५. A गुणरासितणु । ६. P सजुत्तु । ७. A P संप्राइच । ८. P णवपुण्णय । ९. P कयपणइ ।

गुणवत्तहं संतहं महारिसिंहिं	आदसियसंसियसुहदिसिंहिं ।
महिवंटयणिकंटयवइहि	पंचभुय तहु हुय णरवेइहि ।
घत्ता—चक्रवट्टिसिरिलीलइ	एवं तासु गयकालइ ॥
१५ दिट्टठ जिणु तरेणीलइ	मणहरणामवणालइ ॥८॥

९

	सुहावहं	गईवहं ।
	रविप्पहं	गुणप्पहं ।
	थिरं पियं	सुवं सुयं ।
	णिवाइणा	सराइणा ।
५ महाणिणा	मुपवि सं	पुणो तिणा ।
	कथं तवं	रईविसं ।
	णिरासयं	गयासवं ।
	अदोसयं	अहिसयं ।
	अरोसयं	असोसयं ।
१० विइट्टियं	अतोसयं	अतोसयं ।
	चैलं खलं	पलोट्टियं ।
	मैओ मुणी	मणीमलं ।
	अणप्पए	हुओ गुणी ।
	बुहत्थुए	सुकप्पए ।
१५ विहंकरे	स अच्चुए ।	सुहंकरे ।
	समाणए	विमाणए ।

दिखायी और सूचित की है, ऐसे गुणवान् और सन्त महर्षियोंके द्वारा मही और पत्तनोंके निष्कटक स्वामी इस राजाके लिए पांच वाइचर्य उत्पन्न किये गये ।

घत्ता—इस प्रकार चक्रवर्तीको श्रीलीलासे उसका समय निकलता चला गया । उसने ब्रह्मसे हरेभरे मनहर बनालयमे जिनके दर्शन किये ॥८॥

९

सुख प्राप्त करानेवाले, गतियोंके नाशक, सूर्यके समान प्रभाववाले-गुणोंके मार्ग, स्थिर स्थित, उन्हें राजाने प्रेमके साथ सुना और फिर चक्रवर्तीने गतिके अधोन सुख छोड़कर आसव रहित, आश्रयहीन अहिंसक अदोष मुषा सून्य अक्रोध, दोष रहित तप क्रिया और चंचल दुष्ट-मनोबल को नष्ट कर दिया । वह मुनि मर गये और वह गुणी महान् विभासे युक्त शुभंकर सम्माननीय अच्युत विमानमें अच्युतेन्द्र हुआ ।

१०. A महिवट्टयणिकंटयवइहो; P महिवट्टयणिकंटियमहिहि । ११. A णरवइहो ! १२. P तसलीलइ ।

९. १. A omits अहिसयं । २. A सतोसयं । ३. A वलं । ४. A मुओ । ५. P-हो । ६. A P सुअच्चुए ।

घत्ता—आडमाणु ह्यणिहइं तहु वावीसससुहइं ॥
तेत्तियवाससहासहिं मुंजइ मणविण्णासहिं ॥१॥

१०

ससेइ सो पमत्तए	दुवीसपक्खमेत्तए ।	
सहंतकंठरेहओ	तिहत्थमेत्तदेहओ ।	
अंमस्सरोमकेसओ	ससंकसुकलेसओ ।	
अमोहबोहसणिही	पैहू तमप्पभावही ।	
किरीड्ढकोडिमंडिओ	अपाढओ वि पंडिओ ।	५
अधूविओ सुगंधओ	अण्होयओ सिणिद्धओ ।	
सहावजायभूसणो	क्रेणंतिक्किणिीसओ ।	
विचित्तचारुचेलओ	ललंतफुल्लमालओ ।	
जहिं जहिं विजोइओ	तहिं तहिं विराइओ ।	
गुणेहिं सो अदुल्लसो	अणालसो अतामसो ।	१०
मणेण चित्तिं जहिं	खणेण गच्छए तहिं ।	
कवाडवेइअंतरे	असंखदीवसायरे ।	
कुलायलावलीवणे	रमेइ गंधमायणे ।	
जलंतरणपावए	दुइल्लयन्मि दीवए ।	
तहिं पि सीयतीरिणी	णिदाहड्ढाहहारिणी ।	१५
गईदघट्टच्चंदणे	तडम्मि तीइ दाहिणे ।	

घत्ता—उसकी आयु, निद्रासे रहित बाईस सागर प्रमाण थी। उतने ही हजार वर्षों (बाईस हजार वर्षों) में वह मनसे कल्पित आहार ग्रहण करता ॥१॥

१०

बाईस पक्षोकी यात्रावाले समयमें वह साँस लेता। उसके कण्ठकी रेखा शोभित थी। उसका शरीर तीन हाथ प्रमाण था। मूँछ और केशोसे रहित वह चन्द्रमाके समान निर्मल गुक्क लेश्यावाला था। तमप्रभा नामक नरक तक अवधिज्ञानसे युक्त था। जो किरीटकोटिसे मण्डित था, बिना पढ़ाये हुए भी पण्डित था। बिना घूपके ही जो सुगन्धित था। बिना स्नानके भी स्निग्ध था, स्वभाव ही से उसे आभूषण उत्पन्न हुए थे, जो किंकिणियोके मधुर स्वरसे युक्त था, विचित्र सुन्दर वस्त्रोसे सहित था, झूलती हुई सुन्दर मालाओसे युक्त था, वह जहाँ-जहाँ भी देखा गया, वहाँ-वहाँ सुन्दर था। गुणोके कारण अपयशसे रहित, अनालस और तामसिक प्रवृत्तिसे रहित था। मनसे जहाँ चाहता था, वहाँ एक क्षणमें पहुँच जाता था। वह कपाटवेदो और वेदोवाले असंख्य द्वीप सागरों, कुलाचलोके पंक्तिवनो और गन्धमादन पर्वतपर रमण करता। जिसमें रत्नोकी ज्वाला प्रज्वलित है, ऐसे दूसरे द्वीपमें श्रीष्मकी जलनका हरण करनेवाली सीता नदी है, जिसमें

१०. १ A P पमेत्तए । २. A P अमंसुं । ३. P पट्टत्तमण्णहां । ४. A किरीडिक्कोडिं । ५. A P अण्होयिओ । ६. A P कणंत । ७. AP डोहहारिणी । ८. P गयंदं ।

	विलासवाससंतई पुरं तर्हि धरुचचयं	धरिति मंगलावई । विहाइ वत्थुसंचयं ।
२०	घत्ता—सूहउ कामसमाणउ कणयमाल तहु गेहिणि	कणयप्पहु तर्हि राणउ ॥ णं जैलहिहि जलवाहिणि ॥१०॥

११

	तओ सो सुवत्तो चुओ देवणाहो सुओ तीई दिव्वो सरुवेण मारो	जिणिदस्स भत्तो । हुओ पोमणाहो । अगव्वो सुभव्वो । बलेणं समीरो ।
५	पयावेण सूरु गईए विसिदो मईए महल्लो रमाए सुरिदो पिळु तुट्टुचित्तो	घणेणं कुवेरो । जुईए णिसिदो । गुणीणं पहिल्लो । खमाए मुण्णिदो । स पुत्तेण जुत्तो ।
१०	गओ रिद्धरुक्खं णहालग्गतालं भमंतालिसांमं वणं तं पइट्ठो तर्हि तेण दिट्ठो	सरुद्धरुक्खं । फललं लयालं । मणोहारिणामं । सयासिद्धिणिट्ठो । मुणीणं वरिट्ठो ।

गजों द्वारा चन्दन धूपित है उसके ऐसे तटपर विलासपूर्ण गृहोंकी पक्किवाली मंगलावती नामकी भूमि है। उसमे धरोसे ऊँचा वस्तु संचय नामका नगर शोधित है।

घत्ता—उसमें सुन्दर कामदेवके समान कनकप्रभ नामका राजा था। कनकमाला उसकी गृहिणी थी, मानो समुद्रकी नदी हो ॥१०॥

११

तब वह सुमुख जिनभक्त देवेन्द्रनाथ उद्युत होकर उससे पद्मनाथ नामक पुत्र हुआ जो दिव्य गर्वरहित, सुन्दर और भय था। जो स्वरूपमे कामदेव, बलमे समीर, प्रतापमे शूर, धनमे कुवेर, गतिमें वृषभराज, ज्योतिमे चन्द्रमा, मतिमे श्रेष्ठ, गुणियोंमें पहला, लक्ष्मीमे देवेश, और क्षमामें मनीन्द्र था। सन्तुष्ट चित्त पिता पुत्रके साथ मनोहर नामके वनमे गया, जिसमे समृद्ध वृक्ष थे, जो रुद्राक्ष और द्राक्षा वृक्षोंसे युक्त था। जिसमे ताल वृक्ष आकाशको छू रहे थे। जो फलों और लताओंसे युक्त था और भ्रमण करते हुए भ्रमरोंसे श्यामल था। उसने वनमे प्रवेश किया। वहाँ उसने श्रेष्ठ अनुष्ठानसे युक्त तथा मुनियोमे वरिष्ठ एक मुनिको देखा।

१. A जलणिहि ।

११. १. P पवमणाहो । २. A तेए दिव्वो । ३. AP सरुवेण । ४. P रुईए सुचंदो । ५. A रिद्धरुक्खं ।

६. A सुरो दक्खदव्वं । ७. P भमंतालिमालं; P adds after this : मरालीमरालं, सुच्छाइसामं ।

८. T सिद्धिणिट्ठो वत्तमानुष्ठानः ।

घत्ता—तद् ध्रुवसिर्वपुरगामिहि णरवइ सिरिहरसामिहि ॥
जन्मभर्वणसमभग्गड दिहु कमकमेलहिं लग्गड ॥११॥

१५

१२

णिवदोरणि मारणि साइणिय
लहु ढोयवि जोयवि सुयमइउ
पडिवण्णउं सुण्णउं तेण वणु
सोमप्पह सुप्पह तासु पुय्यं
णिरवण्णु सुवण्णु ताहं तणउ
ससिअक्कवक्कचलपयहिं
सइं सासणि आसणि थियउ जहिं
विण्णविवि णविवि ओलग्गियउ
णिग्गथहु पंथहु खणुं ण चुउ

णियतणयहु पणयहु मेइणिय ।
कणयप्पहु दप्पहु पावइउ ।
चलसंदणु णंदणु गउ भवणु ।
किं अक्खमि पेक्खमि णाइं सूर्ये ।
लद्धण्णइ भण्णइ किं मणुंउ ।
दियेहेहिं रहेहिं व संगयहिं ।
पहसियमुहु तणुरुहु र्थविउ तहिं ।
व्रउं सिरियरु सिरिहरु मग्गियउ ।
सो पोमप्पेहुं रिसिणाहु हुउ ।

५

घत्ता—सयलहं जीवहं मित्तउ
णियदेहे वि णिरीहउ

हेमधूलिसमचित्तउ ॥
वणि णिवसइ मुणिसीहउ ॥१२॥

१०

घत्ता—जन्मभवके श्रमको नष्ट करनेवाला वह राजा शादवत शिवपुरके गामी उन श्रोधर
स्वामीके चरणोंमें पूरी दृढ़तासे लग गया ॥११॥

१२

नृपदारिणी, मारिणी, शाकिनो, भेदिनी आदि विद्याएँ और धरती अपने प्रिय पुत्रको
देकर, श्रममति दर्पको आहत करनेवाला वह कनकप्रभ प्रव्रजित हो गया। उसने शून्य वन
स्वीकार कर लिया। चंचल है रथ जिसका ऐसा पुत्र अपने घर गया। चन्द्रमाके समान कान्ति-
वाली सुप्रभा उसकी प्रिया थी। उसका क्या वर्णन करूँ। मैं उसे पुष्पमालाके समान देखता हूँ।
स्वर्णनाभ उन दोनोका पुत्र था जो मनुष्योमें सुन्दर था। उसति प्राप्त करनेपर (बड़े होनेपर)
उसे मनुष्य क्या कहा जाये ? जिनके चन्द्रमा और सूर्यरूपी चक्र पैर हैं ऐसे दिनरूपी रथोके
निकल जानेपर, जहाँ राजा स्वयं शासन और सिंहासनपर स्थित था, वहाँ उसने प्रहसित मुख
अपने पुत्रको स्थापित कर दिया। विनय और प्रणाम कर उसने सेवा की, श्रीलक्ष्मीके कर्ता पद्मनाभ
श्रीधरसे व्रतकी याचना की। निर्गन्थ पथसे वह एक क्षण च्युत नहीं हुआ। इस प्रकार वह पद्मनाभ
मुनि हो गये।

घत्ता—वह समस्त जीवोके मित्र थे, स्वर्ण और धूलमे समान चित्त रखनेवाले थे। अपने
ही शरीरके प्रति निरीह वह मुनिंसिंह वनमे निवास करने लगे ॥१२॥

१ P^० पुरिगामिहि । १० P जन्ममरणसम^० । ११. A^० कमलहो लग्गड ।

१२. १. P णिवमारणि । २ मारणि । ३ A सइरिणिय । ४. AP णिय । ५. AP सिय । ६. A णाहत-
णउ । ७. P भणउ । ८. A थियउ; P णिहिउ । ९ A णविउ । १०. AP वउ सिरिहरु । ११. P
खणिण कउ । १२. A पोमणाहु; P पडमणाहु ।

१३

५ एयारह मणहरकहियाइं
मयदवणें तवणें तवियाइं
उद्दामकामविहावणउ
तहु लीणउ क्षीणउ रयपसरु
५ णामल्लउं मल्लउं जाणियउ
आराहिवि साहिवि संतमइ
अववग्गहु सग्गहु मच्चि जइ
उच्चउणउणमिच्छत्तर्गहि
तिगुणियदइतिजलहिआउहरि
१० तेत्तीसवाससइसंतरिउ
करमेत्तु गत्तु विच्छुरियदिसु^{१०}

अविहंगइं अंगइं गहियाइं ।
तुंगइं अडुंगइं खवियाइं ।
सुहसीलहं सोलहहं भावणउं ।
लइ लद्धउं वद्धउं तिस्थयरु ।
परिछेयहु छेयहु आणियउ ।
जीविउं संप्राविउं दिवगइ ।
णिवणाणठाणसंवद्धरइ ।
संपुणणपुणणफलभुत्तिवहि ।
तइसंखपक्खणीसासयरि ।
आहारु चारु जहिं अवयरिउ ।
जहिं णिहिलु धवलु जणु णं सुजसु^{११} ।

धत्ता—तहिं सियंगु सुच्छायउ वइजयंति सो जायउ ॥

जं पेक्खिवि पईहणी भरह पुप्फदंताणी ॥१३॥

इय महापुराणे तिसट्टिबहापुरिसण्णालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए

महामव्वमरहहाणुमणिए महाकव्वे पउमणाहवइजयंतसंभवो णाम

^{१३} पंचचालीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥४५॥

१३

केवलज्ञानियो द्वारा प्रतिपादित अविकल ग्यारह अंग उसने स्वीकार कर लिये । मदको सन्तप्त करनेवाले तपमे उन्होंने उसके ऊँचे आठो अंगोको नष्ट कर दिया । उद्दाम कामको नष्ट करनेवाली शुभशील सोलह कारण भावनाओंका ध्यान किया । उनका रतिप्रसार लीन और क्षीण हो गया, तो उन्होंने तीर्थकरत्वका बन्ध कर लिया और उसे पा लिया । श्रेष्ठ नामप्रकृतिको जाने लिया और उत्तम पुरुषकी आयुका बन्ध कर लिया । शान्तमति वह आराधना और साधना कर दिव्यगति और जीवनको प्राप्त हुआ । जिसने निर्वाणके स्थानमे अपनी रति बांधी है ऐसे वह मुनि अवग्रह स्वर्गमे (वैजयन्त विमानमे) उत्पन्न हुए । जहाँ मिथ्यात्वरूप ग्रह नष्ट हो गया है और जो सम्पूर्ण पुण्यफलकी भुक्तिको वहन करता है, जहाँ तैत्तीस सागर प्रमाण आयु होती है, तैत्तीस पक्षोमे इवास लिया जाता है, और तैत्तीस हजार वर्षमे जहाँ सुन्दर आहार किया जाता है । जहाँ दिशाओंको विच्छुरित करनेवाला एक हाथ प्रमाण शरीर होता है और जहाँ मनुष्य मानो यशके समान सब ओरसे धवल होता है ।

धत्ता—वहाँ उस वैजयन्त विमानमे सुन्दर कान्तिवाला वह श्वेतांग देव हुआ, जिसे देखकर पुष्पदन्त (सूर्य-चन्द्र) की भार्या (प्रभा) प्रभासे हीन हो गयी ॥१३॥

इस प्रकार त्रैसठ महापुरुषोंके ण्णालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त

द्वारा विरचित और महामन्त्र सरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका पञ्चदशम-

वैजयन्त-उत्पत्ति नाम का पैंतालीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥४५॥

१३. १. A T मणहरणिहियाइं । २. P omits this foot. । ३. A^० सोलउ । ४. A P add after this : भावेपिणु सिवपहदावणउ । ५. P क्षीणउ लीणउ । ६. P रइपसरु । ७. A P संप्राविउ । ८. A P उच्चउण्ण । ९. A णिहे but gloss ग्रहे । १०. A P तिस्थरियदिसु । ११. A पंडजसु । १२. A पहहाणी । १३. P पंचचालीसमो ।

संधि ४६

तद् देवद्देवतेत्तीसंबुणिहिपरिमियात् पुणु णिट्ठिच्च ॥
कालं कलियंत्तं तं तेत्तिच्च वि लम्मासंतु परिट्ठिच्च ॥ध्रुवकां॥

१

तद्देवद्देवतेत्तीसंबुणिहिपरिमियात् पुणु णिट्ठिच्च ॥	अकखइ जकखहु सोहम्मणाहु ।	
भो जकख जकख सयदलदलकख	परिपालियवसुह्णिद्दिणलकख ।	
इह जंबुदीवि भरहंतरालि	चंदउरि पउरि धणकैणज्जणालि ।	५
धरंसेणु महासेणकखु णिवइ	जं लंघिवि उवरि ण रवि वि तवइ ।	
सोहग्गं तिहुयणहिययलीण	गमणेण हंसि घोसेण वीण ।	
सियसरत्तरलणयणहिं कुरंगि	लक्खण णामे लक्खणहरंगि ।	
तद्दु पणइणि णं ससहरहु कंति	ण मुणिवरणाहुह लग्ग खंति ।	
अट्टमच्च दयासरिमहिहरिंदु	एयहु घरि होसइ जिणवरिंदु ।	१०
सयणासणु भूसणु असणु वसणु	कुरि पुरवरु सुंदरं दलहि वसणु ।	

घत्ता—ता भूरिचंद्रमच्च चंदउरु चंदमुहिण तं विरइयच्च ॥

घणदेवीभत्तारेण खणि भोत्तियरयणहिं खइयच्च ॥१॥

संधि ४६

उस देवकी तैंतीस सागर परिमित आयु फिर समाप्त हो गयी । वह उतनी आयु भी कालके द्वारा कवलित कर ली गयी । केवल छह माह आयु शेष रही ।

१

तब हज्जार आँखों और बाहुओंवाला सौषमन्द्र यक्षसे कहता है—“कमलके समान आँखोंवाले, और जिसने वसुधाके लाखों खजानोंकी रक्षा की है ऐसे हे यक्ष, इस जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रके भीतर धन-जन और अन्नसे परिपूर्ण प्रवर चन्द्रपुरमे सेनाको धारण करनेवाला महासेन नामका राजा है, उसे लाँघकर; उसके ऊपर सूर्य भी नहीं तपता । उसकी लक्ष्मणोको धारण करनेवाली लक्ष्मणा नामकी पत्नी है, जो सौसाग्यसे त्रिभुवनके हृदयोमे लीन है, जो गमनमें हंस और बोलनेमे वीणा के समान है, जो अपने श्वेत और चंचल नयनोसे हरिणी है । उसकी वह प्रणयिनी ऐसी थी मानो चन्द्रमाकी कान्ति हो, या मानो मुनिवरके लिए क्षांति लगी हो । दयारूपी नदीके लिए महीधरेन्द्रके समान आठवें जिनेन्द्र इनके घर जन्म लेंगे । इसलिए शयनासन, भूषण, अशन, वसन और नगरको सुन्दर बनाओ, सब कष्टोकी दूर कर दो ।”

घत्ता—तब चन्द्रमुख और लक्ष्मी देवीके स्वामी कुबेरने शीघ्र ही स्वर्णमय नगरकी रचना की और उसे एक क्षणमें भोतियो तथा रत्नोसे विजडित कर दिया ॥१॥

१. १. A P कवलित । २. A सहस्रत्ति but gloss सहस्रपाक इन्द्रः । ३. A घणकयज्जणालि । ४. A वरसेणु । ५. A P सुंदर दलियवसणु । ६. P भूरिचंद्रसुहचंदर । ७. A चदमुह्णिं विरयच्च ।

२

सर्भविचलवाहियालीणिवेसु
 वियसियवणपरिमलमहमहंतु
 जिणवरघरघटाटणटणंतु
 माणिक्करावलजलजलंतु
 ५ ससिमणिणिञ्ज्जरलझलझलंतु
 करिचरणैसखलाखलखलंतु
 वहुमंदिरमंडियैजिगिजिगंतु
 गंभीरतूरवरसमसंतु
 कालायरुधूवियणायरंगु

अवितुहृहृट्टिट्टैपएसु ।
 चलचंचरीयकुलगुसुगुसंतु ।
 कामिणिकरकंकणखणखणंतु ।
 सिहरगगधयावलिललललंतु ।
 मग्गावलमगहरिहिलिहिलंतु ।
 रंविचंतुहुयासणधगधगंतु ।
 सहलदलतोरणचलचलंतु ।
 तरुगयवसंतु णिचचु जि वसंतु ।
 णाणारंग्गावलिलिहियरंगु ।

१०

घत्ता—सा सुंदरि पियमणहारिणिय सुरहियगंधई मालइ ॥

सुहं सुत विरामि विहावरिहि सिविणयमाल णिहालइ ॥२॥

३

गलियदाणचलजललवलोलिरभिगयं

पेच्छइ विसालच्छि पमत्तमयंगयं ।

इट्टुगिट्टितणुफंसणकंटइयंगयं

वसहममलथलकमलपसाहियसिगयं ।

२

जिसमें अश्वोंके सम और विस्तीर्ण क्रीड़ाप्रवेश हैं, तथा सम्पुष्ट बाजार और द्यूतप्रवेश है। जो विकसित वनके परिमलोंसे महक रहा है और चंचल भ्रमरोंके कुलसे गुनगुना रहा है। जिसमें जिनवरके मन्दिरोंके घण्टोंकी टन-टन ध्वनि तथा कामिनियोंके कंगनोंकी खन-खन ध्वनि हो रही है, जो माणिक्योंकी किरणावलीसे प्रज्वलित है और शिखरोंके अग्रभागकी ध्वजाओंसे चंचल है। जो चन्द्रकान्त मणियोंके निक्षरोंके जलसे चमक रहा है। मार्गपर चलते हुए अश्वोंसे आन्दोलित है तथा हाथियोंके पैरोंकी शृंखलाओंसे झूल-सा रहा है, सूर्यकान्त मणियोंकी ज्वालासे धकधक करता हुआ, अनेक प्रासादोंकी शोभासे चमकता हुआ जो गीले पत्तोंके तोरणोंसे चंचल है, गम्भीर तूर्यसे शब्द करता हुआ जो तरुणजनोंसे अधिष्ठित है और जिसमें वृक्षोंके नित्य वसन्त स्थित रहता है। जिसके प्रांगण कालागुरुके घुएँसे युक्त तथा नाना प्रकारकी रांगोलियोंसे लिखित हैं।

घत्ता—सुरभित गन्धसे मालतीके समान अपने प्रियके मनका हरण करनेवाली, सुखसे सोती हुई वह रात्रिका अन्त होने पर स्वप्नावली देखती है ॥२॥

३

वह विशालाक्षी स्वयं देखती है—जिसके क्षरते हुए चंचल मदजलके कक्षोंपर चंचल भ्रमर मंडरा रहे हैं ऐसे प्रमत्त महागजको; जिसका शरीर प्रिय गौके शरीरके संस्पर्शसे रोमांचित है,

२. १. P समु जेत्थु वाहिं । २. टंटापवेसु । ३. P चरणह संखला । ४. AP रविमंत । ५. A मंडण ।
 ६. A समसमंतु । ७. A सुरहियघ णं मालइ; P सुरहियगंध स मालइ । ८. A सुहसुत्ति;
 P सुहं सुत ।

तिक्खणक्खणिहारियमारियकुंजरं	५
रत्तलित्तमुत्ताहल्लमंडियकैसरं ।	
सीहयं सुहावालुयणिग्गयदाढयं	
गोमिणिं च दिसकुंजरसिचणरुढयं ।	
इट्टगंधसेलिधकरंवर्येकोसयं	
दामजमलमलिमालासहपरिपोसयं ।	१०
पुण्णयं चिहुं जामिणिकामिणिदप्पणं	
ज्जगयं इणं पीणियपंकइणीवणं ।	
मीणमिहुणमणिहणजलकीलणलंपडं	
चारुहारिकल्लाणघरं घडैसंपुडं ।	
हंसचंचुपुडुखुडियभिसं भिसिणीहरं	१५
सेयसलिलवेलागहिरं रयणायरं ।	
कुलिसणहरकैसरकिसोरधरियासणं	
अवि य पायसासणजसस्स णं सासणं ।	
इंदधाममहिचंदवइस्स णिहेलणं	
रयणपुंजरुणंसुसिहातर्महालणं ।	२०
झत्ति दित्तजालासयलित्तणहंरणं	
हुयवहं च सई पेच्छइ जालियकाणणं ।	

और जिसके सींग स्थलकमलो (गुलाबपुष्पों) से प्रसाधित हैं, ऐसे वृषभको; जिसने अपने तोखे नखोंसे हाथियोको फाड़कर मार डाला है; जिसकी अयाल रक्तसे रंजित मोतियोसे चोभित है, जिसकी लम्बी दाढ़े निकली हुई हैं ऐसे सिंहको; दिग्गजोंके द्वारा किये गये अभिषेकसे प्रसिद्ध लक्ष्मीको; प्रिय गन्धवाले शैलिन्द्र पुष्पोंके समूहको जिसमे स्थान है, और जो भ्रमरमालाकी सभासे परिपोषित हैं ऐसे पुष्पमाला युग्मको; भामिनीरूपी कामिनीके लिए दर्पणके समान पूर्णचन्द्र को कमलिनी वनको प्रसन्न करनेवाले उगते हुए सूर्यको, प्रचुर जलक्रोड़ाके लम्पट मीन युगलको, सुन्दरताको धारण करनेवाले और कल्याणके घर कलशयुगलको; जिसमे हंसिनियोके चंचुपुटोंसे कमलिनियां काटी गयी हैं, ऐसा कमलिनीगृह अर्थात् सरोवरको; श्वेत मल्लिके तटोंसे गम्भीर समुद्रको; वज्रके समान नखोवाले किशोरसिंहके द्वारा धारण किये गये आसन (सिंहासन) को; और भी जो इन्द्रके यशके मानो शासन हो, ऐसे इन्द्रके विमानको; नागराजके भवनको; अपनी अरुण किरणोंको ज्वालासे अन्धकारका प्रक्षालन करनेवाले रत्नसमूहको; और शीघ्र ही अपनी सैकड़ों प्रदीप्त ज्वालाओंसे आकाशके आंगनको आच्छादित करनेवालों और वनोंको भस्म करनेवाली आग को ।

३. १. P° विहारियं । २. P° मुत्ताहल्लमालामंडियं । ३. AP° सुहावालयुं । ४. AP° करंविद्यं । ५. AT° घडसंघडं । ६. A° फुडकुडियं । ७. A° इंदधामं वरउरवइणिहेलणं । ८. A° तमहारणं । ९. P° दित्तजालां । १०. A° हुयवहस्सं जं सा पेच्छइ; P° हुयवहं च सा पेच्छइ ।

घत्ता—इय पेक्खिखि रायहू राणियइ संतोसँ आहसिच ॥

तेण वि तहू मंगलदंसणहू फलु पण्हैणिहि पयासिच ॥३॥

४

- सुओ देवि होही तुहं तिथ्यणाहो असौमण्णसंपत्तिविच्चीसणाहो ।
 दिही आगया देवया पंकयच्छी हिरी कंति कित्ति सिरी बुद्धि लच्छी ।
 णिहीसेण रोहम्मि लम्मासकालं णिहित्तं^१ सुवण्णं सुवण्णं पहाळं ।
 चइत्तस्स पक्खंतरे चंदिमिल्ले^२ सुहोहायरे वासरे पंचमिल्ले ।
 ५ रिसी पोमणाहो चुओ सोहम्मिदो थिओ गम्भवासे पुलोमौरिबंदो ।
 सुपासादिवे णिव्वुए संगएहि समुद्वाणहो रंधकोडीसएहि ।
 णहाजक्खणिक्खित्तमाणिक्कएहि पउण्णेहिं मासेहिं रामंकएहि ।
 तओ पूसमासे पडंतम्मि सीए सुहे सक्कजोयम्मि एयारसीए ।
 पहूओ पहू पुण्णपाहोहमेहो जगौणं गुरू लक्खणुप्पत्तिगेहो ।
 १० सपायाल्लमगं सतारक्कसक्कं खणे कंपियं झत्ति तेलोक्कचक्कं ।

घत्ता—परतेण ण कत्थइ विप्फुरइ अंधारउ णउ रेहइ ॥

जम्मणु उग्गमणु वि मुवणयलि जिणदिणणाहहं सोहइ ॥४॥

घत्ता—यहू देखकर रानीने राजासे सन्तोषपूर्वक कहा । उसने भी अपनी प्रणयिनीसे मंगल स्वप्न देखनेके फलका कथन किया ॥३॥

४

हे देवी, तुम्हारा असामान्य सम्पत्तियों और प्रवृत्तियोंका स्वामी तीर्थंकर पुत्र होगा । कमल नेत्रोंवाली धृति, ह्री, कान्ति, कीर्ति, श्री, वृद्धि और लक्ष्मी देवियाँ आ गयी । कुबेरने उसके घरमे छह माह तक प्रभासे धुक सुन्दर रंगके स्वर्णकी वर्षा की । चैत्रशुक्ल शुभयोगके आकर, पांचवीके दिन ऋषि पद्मनाथ सीधमें इन्द्रच्युत हुआ और इन्द्रके द्वारा संस्तुत वह गर्भवासमें आकर स्थित हो गया । सुपाश्वनाथके निर्वाण प्राप्त करनेके नौ करोड़ सागर समय बीतनेपर, जिनमे यक्षके द्वारा आकाशसे रत्नोंकी वर्षा की गयी है ऐसे नौ माह सम्पूर्ण होनेपर, पूष माहमे शुक्लपक्षकी एकादशीके दिन शुभ इन्द्रयोग और ज्येष्ठा नक्षत्रमें पुण्यरूपी जलोके मेघ, विश्वगुरु लक्ष्मीकी उत्पत्तिके घर प्रभु उत्पन्न हुए । पातालमार्गसे लेकर तारों, सूर्य और इन्द्रके साथ एक क्षणमें त्रिलोकचक्र काँप उठा ।

घत्ता—कही पर भी दूसरेका तेज नहीं चमकता था और न अन्धकार ही कही शोभित था; जिनरूपी दिननाथ (सूर्य) का जन्म और उदय शोभित होता है ॥४॥

११. पण्हैणिहो ।

४. १. P असावण्णं । २. A णिहत्तं । ३. A चंदमिल्ले । ४. A पुणोमारिबंदो । ५. A सुपमाहिए ।

६. P पुण्णयंभोहमेहो । ७. P जयाणं । ८. P सपायाल्लमगं सतारं सक्कं ।

सहसा जायत सुरलोयैखोह
 चच्छाहै रक्खस किलिकिलंति
 किंपुरिस के वि किं किं भणंति
 रयवंत महोरय फुफ्फुयंति
 अणिवद्धु पिसायत लइ चवंति
 ससहरैरवितेपं महि णहवंति
 दुग्गह गहचरियइं णिक्खवंति
 णक्खत्तइं णवणक्खत्तमहिउ
 दाविच णियपंति पइण्णएहिं
 णहवडणविवरमुह्णिग्गमेहिं
 संगलियइं^{१०} मिलियइं सुरलडाइं

५

वीणारवु चल्लिउ किंणरोहु ।
 वैडुंतइं भूयइं णहि मिलंति ।
 सहिद्धिदेव पुच्छिवि मुणंति ।
 गंधव्व गेयसरु सँइं मुयंति ।
 दसदिसइं जक्ख रयणइं धिबंति ।
 तारउ तारत्तणु पक्खवंति ।
 जय णंद वैडु सामिय चवंति ।
 वंदहुं चलियाइं वियाररहिउ ।
 सासेहि वं चासपइण्णएहिं ।
 दिसिविदिसामग्गसमागमेहिं ।
 भावणमैभरियइं जलथळाइं ।

५

१०

धत्ता—अइरावयकुंभविइण्णकरु पत्तु जियपरसेणहु ॥

पुरुहूयत पुरपासहिं भमिवि धरि पइट्टु महसेणहु ॥५॥

५

शोघ्न ही देवलोकमें क्षोभ मच गया । वीणाके स्वरवाला किन्नर लोक चला । उत्साहसे राक्षस किलकारियाँ भरते हैं, बढ़ते हुए भूत आकाशमें मिलते हैं । कितने ही किंपुषप किं किं का उच्चारण करते हैं, अच्छी दृष्टिवाले देव पूछकर विचार करते हैं, वेगशील महोरग फूटकार करते हैं, गन्धर्व अपने गीत स्वर स्वयं छेड़ने लगते हैं ? पिशाच अनिवद्ध बोलते हैं, दसों दिशाओंमें यक्ष रत्नोकी वर्षा करते हैं । चन्द्रमा और सूर्यकी प्रभासे पृथ्वी अभिषेक करती है, तारागण भी अपना तारापन प्रदर्शित करते हैं ? खोटे ग्रह अपनी गृहचर्याका त्याग कर देते हैं, और वे हिं स्वामी, जय हो, आप वृद्धिको प्राप्त हों, आप प्रसन्न हो, यह कहते हैं । नक्षत्र भी नव नक्षत्रोंसे पूजित और विकार रहित की बन्दना करनेके लिए चले । नागोंने अपनी पंक्तिका प्रदर्शन किया, जैसे क्षेत्र हल रेखासे निवद्ध धान्योकी पंक्ति हो, आकाश पतनके विवर मुखोके निर्गमों और दिशा विदिशा मार्गों के समागमनोंसे देवकुल मिलकर चले । भवनवासी देवोकी आभासे जल और स्थल आलोकित हो उठे ।

धत्ता—जिसने ऐरावतके गण्डस्थलपर हाथ फैला रखा है ऐसा इन्द्र, वहाँ आया और नगर की चारो ओर परिभ्रमा देकर, शत्रुसेना को जीतनेवाले राजा महासेनके घरमें उसने प्रवेश किया ॥५॥

५. १ सुरलोइ खोह । २ A वगंतइ । ३. P पुफ्फुयति । ४ P सयं । ५. A °तेय महि; P तेयइ महि ।
 ६. P ताराउ । ७. AP वद्ध । ८. A व वासपइण्णएहिं; P व वण्णपयण्णएहिं । ९. A °णियएहिं ।
 १०. संवलियइं । ११. P °भाभारिय जल° ।

६

	तथो तेण लम्मेण णिच्छम्मयाए	परं हिभयं दिण्णयं अम्मयाए ।
	तडालग्गतारावलीमेहूलालं	ससिगप्पहापिगदिच्चैककूलं ।
	रमतच्छराणेवरारावरम्मं	दिसादीसमाणुद्धजेण्णिद्वम्मं ।
	फण्णिदाणियापायरायावलित्तं	अदिट्ठेकळंबत्तैकिंकिण्णिवत्तं ।
५	ल्यामंडवासीणविजाहरिदं	तुरंगासणौसत्तकीलापुल्लिदं ।
	दरीचंदणामोयलगाहिकण्णं	मौओमत्तमायंगदंतग्गभिण्णं ।
	गुहाकिणरीकिणरालत्तगेयं	सपायंतणिक्खित्तचंदकत्तेयं ।
	णिओ सुंदरं मंदरं देवदेवो	तहिं तेहिं सो णाणणिक्खंभाओ ।
	पविच्छिण्णकुंभेहिं कुंभीसगामी	तिलोयंतवासीहिं तेओकसामी ।
१०	गुणुप्पण्णोहेहिं णिण्णट्ठोहे	अकूवारखीरेहिं खीराहदेहो ।
	जिण्णिदो जियारी जयंभोयमित्तो	फण्णिदेहिं इदेहिं चंदेहिं सित्तो ।

घत्ता—तं दुद्धु पडंतउ जिणतणुहि कंतिई पयडु ण होंतउ ॥

णं अमित्तं ससंकहु विर्यैलियत्तं दिट्ठु महिहि धावंतत्तं ॥६॥

६

उस अवसरपर उस मायावी इन्द्रने (भगवान् की) निष्कपट माँके लिए दूसरा बालक दिया और वह ज्ञानभावसे निष्कम्प उस देवदेवको सुन्दर मन्दराचल पर्वत पर ले गया, जो (मन्दराचल) तटपर लगी हुई तारावलीसे युक्त है, अपने ही शिखरोंकी प्रभासे जिसके दिग्मण्डलोंके तट पीले हैं, जो रमण करती हुई अप्सराओंके शब्दसे रमणीय हैं, जिसकी दिशाओंमें ऊँचे-ऊँचे जिन मन्दिर दिखाई देते हैं, जो पद्मावतीके चरणरागसे (चरण लालिमासे) लिस है, जो अदृष्ट और एक पर एक अवलम्बित अशोकपत्रोंसे युक्त हैं, जिसके लता मण्डपों में विद्याघरेन्द्र बैठे हुए हैं, जिसमें घोड़ोंके सरासनोंपर बासक कीड़ा-पुल्लिन्द हैं । जिसमें नागकन्याएँ घाटीके चन्दनोंके आमोदमें लगी हुई हैं, जो मतवाले गजोंके दाँतोंके अग्रभागोंसे विदीर्ण हैं, जिसमें किन्नर और किन्नरियाँ गीतिका आलाप कर रहे हैं, जिसने सूर्य और चन्द्रमाको अपने चरणोंके नीचे डाल रखा है । कुंभीसगामी (गजगामी) का अविच्छिन्न कुम्भों (घड़ों) के द्वारा, त्रिलोक स्वामीका त्रिलोकके अन्तमें निवास करनेवाले देवोंके द्वारा स्नेहका नाश करनेवालेका गुणोंमें उत्पन्न स्नेह करनेवालोंके द्वारा दूधकी आभाके समान देहवाले जिनेन्द्रका, समुद्रक्षीरोंके द्वारा, शत्रुओंको जीतनेवाले विजयरूपी कमलके सूर्य श्री जिनेन्द्रका, नागेन्द्रों, इन्द्रों और चन्द्रोंके द्वारा, अभिषेक किया गया ।

घत्ता—गिरता हुआ वह दूध जिनवरके शरीरकी कान्तिसे प्रगट नहीं होता हुआ, ऐसा मालूम हो रहा था मानो चन्द्रमासे विगलित अमृत धरतीपर दौड़ रहा हो ॥६॥

६. १. P अंबयाए । २. A मेहूलालं; P मेहूलालं । ३. AP दिक्कवक्कवालं । ४. AP कंकेत्तिलं । ५. A णासंतं । ६. A लगगाहिकिण्णं । ७. P मयमत्तं । ८. P कौत्तं । ९. P वियलित्तं ।

७

दिवं गंधं पुष्पं धूवं	वासं भूसं चरुयं दीवं ।	
दासं सव्वं सैन्वाणिद्वं	कारुं पुञ्जं सत्ये दिद्वं ।	
गाणत्तयधणपुप्फससुदं	तं गहिरुणं भयैवं भदं ।	
तं पेच्छंता तं पणवता	तं गायंता तं णञ्चंता ।	
चंदरं मणितोरणंदारं	आया देवा रायागारं ।	५
सवैसमवेल्लीवासारत्तं	जणणीहत्ये दाऊणं तं ।	
सोहम्मीसाणा देवेसा	पत्ता सग्गं णाणावेसा ।	
वाणासणदिवद्धसयैतुंगो	सेयंगो णं सेयपयंगो ।	
उप्पाइयखाइयसम्मत्तो	इक्खाऊ कासवणिवगोत्तो ।	
दो लक्खा पुव्वाणं छिण्णा	पण्णासँद्धसहासाउण्णा ।	१०
एस तस्स तरुणत्तणकालो	पच्छा हूओ मेइणिवालो ।	
तत्थ वि जायं देवागमणं	पारौवारवारिधउण्हवणं ।	
वइसवणाणियवसुसंदोहे ^{१०}	भोए मुजंतस्स ^१ ससोहे ।	
छद्ध लक्ख पुव्वाणं शीणा	अरिहसंखपुव्वंगविलीणा ।	
घत्ता—अण्णहिं दिणि दप्पणयलि वयणु जोयंतं सँ दिद्वत्तं ॥		१५
जेणेत्थे ^२ दद्धसंसारसुहि हियचल्लत्तं वणिवट्टत्तं ॥७॥		

७

इष्ट दिव्य गन्ध पुष्प धूप वस्त्र भूषा चरु और दीप सबके लिए इष्ट जिन भगवान्को देकर और शाश्वमे निर्दिष्ट पूजा कर, और ज्ञानत्रयरूपी सधन जलके समुद्र सबके लिए भद्र उन्हें लेकर, उनको देखते हुए उनको प्रणाम करते हुए, उनको गाते हुए और नृत्य करते हुए देवता लोग, मणियोंके तोरणद्वारवाले चन्द्रपुरमें राज्य-प्रासादमें आये। उपशमरूपी लताके लिए वर्षा ऋतुके समान उन्हें माताके हाथमे देकर सीधमें ईशान स्वर्गके नाना देशवाले देवेश अपने-अपने स्वर्ग चले गये। उनका शरीर डेढ़ सौ धनुष ऊंचा था मानो श्वेत अंगोंवाला चन्द्रमा ही। उन्हें क्षायिक सम्भवत्व उत्पन्न हो गया है, ऐसे वह इक्ष्वाकुवंशीय और कश्यपगोत्रीय थे। जब उनकी दो लाख और पचचीस हजार पूर्व आयु बीत गयी, तो यह उनका धौवनकाल था। इसके बाद वह पृथ्वीके राजा बने। वहाँपर भी देवोंका आगमन हुआ और समुद्रके जलघटोंसे अभिषेक किया गया। जिसमें कुबेरके द्वारा धनसमूह लाया गया है ऐसे शोभायुक्त भोगको भोगते हुए उनका छह लाख पचास हजार चौबीस पूर्व समय बीत गया।

घत्ता—एक दूसरे दिन, “वर्षणतलमें मुखको देखते हुए उन्होंने ऐसा कुछ देखा कि जिससे दग्ध संसार सुखोंमें उनका मन विरक्त हो गया ॥७॥

७. १. AP चरुवं। २. A इद्वं सिद्वं, P णिद्वं सिद्वं। ३. A सव्वं भदं। ४. A^० तोरणवारं। ५. P तवसमं। ६. P सद्धसुतो। ७. AP पण्णाउद्धसहासा। ८. AP ह्यउ। ९. P पारवारि वारि। १०. P^० संदोहं। ११. P ससोहं। १२. A जेणित्थु दद्ध संसारसुहि ।

- आवेपिणु पंजलिहत्थएहि
 पंचमगइसंमुहुं मञ्जुणीहि
 मुहपथलमाणधारासिवेहि
 कल्लाणाहरणविहूसियंगु
 ५ वरचंदु सणंदणु णिहिउ रत्ति
 सिवकंखइ पट्टु सिचियहि चंडिणु
 दयविच्छिणीगरुईणिसीहि
 अणुराहाणक्खत्तावयारि
 णिल्लूरियि मंदिरमोहवासु
 १० णिक्खंतु लेवि छट्ठोववासु
 तहुं को वि ण मित्तु ण को वि वेसु
 दंडगविलंबियचेलभयरि
 दूराउ पर्णाभियमत्थएहि ।
 पडिसारिउ आहंडलमुणीहि ।
 अहिसिचिउ विहु अज्जुणणिवेहि ।
 पैरदिण्णदाणु णं वरमयंगु ।
 तहि कालइ सुरहयविचिहवज्जि ।
 सैवत्तुवणंतरि समैवइण्णु ।
 पूसन्भि कसणएयारसीहि ।
 णिण्णेहत्तणु जुंजिउ सरीरि ।
 लुंचिवि घल्लिउ सिरकेसवासु ।
 सुहुं पावइयउ रायहं सहासु ।
 मञ्जुत्थु महत्थु विसुद्धलेसु ।
 अवरहि दिणि पइसइ णलिणणयरि ।
 घत्ता—णंउ करयलि पत्तलि पत्तु ण वि णउ पइ णेउरघोसणु ॥
 णउ भूरिभूइ सुरैकुंडियउ णउ मैसिरेहाभूसणु ॥८॥

हाथ जोड़े हुए दूसरे प्रणामके लिए मस्तिष्कको झुकाते हुए, कोमल स्वरवाले श्रेष्ठ इन्द्रोने उन्हें प्रोत्साहन दिया। जिनके मुखसे धाराजल निकल रहे हैं—ऐसे धारा कलशोसे अभिषेक किया गया। कल्याणके आभूषणोंसे विभूषित-अंग वह ऐसे मालूम होते थे मानो परदिण्णदान (दूसरोंको जिसने दान, या मदजल दिया हो ऐसा) मार्तण (महागज) हो। उसने अपने पुत्र वरचन्द्रको राज्यमें स्थापित किया। देवों द्वारा बजाये गये विविध वाद्योंके उस कालमें मोक्षकी आकांक्षासे प्रभु शिविकापर चढ़े और सर्वर्तु वनके भीतर अवतीर्ण हुए। पूस माहकी, दया (कल्याण दीक्षा) से विस्तीर्ण, कृष्ण एकादशी की रात्रिमें अनुराधा नक्षत्रका अवतार होनेपर, वह चारीरसे स्नेहहीन हो गये, अर्थात् उन्होंने दीक्षा ग्रहण कर ली। घरके मोह और वर्षोंको दूर कर तथा सिरके बालोंको उखाड़कर फेंक दिया। छठा उपवास करते हुए और संन्यास लेते हुए एक हजार राजा भी सुखपूर्वक संन्यासी हो गये। उनका न तो कोई मित्र था और न कोई द्वेषी। वह मध्यस्थ महार्थ और विशुद्ध लेश्यावाले थे। दूसरे दिन, जिसमें दण्डोंके अग्रभागमें वस्त्रध्वज लगे हुए हैं, ऐसे नलिन नामक नगरमें वह प्रवेश करते हैं।

घत्ता—न करतलमे पत्तल, न पात्र है और न पैरोंमें भूषणको ध्वनि है, न प्रचुर भस्म है और न अकुटिल भीहे हैं और न श्मश्रुरेखाका भूषण है ॥८॥

८. १. A पणावियं । २. A पहिवारिउ । ३. P परिदिण्णं । ४. P चंदंतु । ५. A संपत्तु । ६. P समयंतु । ७. P मोहवासु । ८. AP सिरि केसवासु । ९. A तहुं । १०. P तहु मित्तु अमित्तु ण को वि वेसु । ११. P ण वि । १२. AP णउ कुंडियउ । १३. A ससिरेहा ।

९

हुंकार ण सुयइ ण देहि भणइ
परमैसर पंचायारसार
जा छुड्डु जि भवणप्रंगणुं पइट्ठु
कँर मउल्लिक्खि करेवि उरुत्तरीउ
काएं वयणे सुद्धे मणेण
हुंहुंहिसर सुरसर पुप्फविट्ठि
तहिं चोळ्ळइं पंच समुग्गयाइं
थिउ तिण्ण मास छम्भत्थु तां व
फग्गुणि दिणि सत्तमि किण्हवक्खि
छट्ठेणुववासं केवलक्खु

णउ सण्णइ णउ गंघन्नु ह्णणइ ।
दक्खवइ वीर भिक्खावयार ।
ता सोमयत्तराएण दिट्ठु ।
संचिउ पुण्णं कुरपवरवीउ ।
आहारदाणु तहु दिण्णु तेण ।
घणु वरिसिउ हूई रयणविट्ठि ।
पालंतु संतु संतइं वयाइं ।
णायवणिरुहतलु पत्तु जाव ।
अवरण्हइ तहिं गिक्खवणरिक्खि ।
उप्पाइउं णाणु विवज्जियक्खु ।

५

१०

घत्ता—कल्लाणि चउत्थइ जइवइहि सुरयणु दिसहिं ण माइउ ॥
अहिरामे अहिणवभत्तिवसु अहिहुं अहीसर आइउ ॥९॥

१०

लोयालोयविलोयणणणं सिरिणाहं
ससहरकंतं पयडियदंतं कंकालं

श्रुणइ मियंको अक्को सक्को मुणिणाहं ।
हत्थे सूलं खंडकवालं करवालं ।

९

न हुंकार करते हैं, और न यह कहते हैं कि 'दो'। न क्लान्त होते हैं, न गन्धर्व गाते हैं, फिर भी पांच प्रकारके आचारोंमें श्रेष्ठ वीर परमेश्वर (चन्द्रप्रभु) भिक्षाके अवतारको दिखाते हैं। जैसे ही वह शीघ्र घरके आंगनमें प्रवेश करते हैं, वैसे ही राजा सोमवत्तने उन्हें देख लिया, हाथ जोड़कर और उत्तरीयको उरपर करते हुए उसने पुण्यरूपी अंकुरोंके प्रवर वीज झकट्टे कर लिये। शुद्ध मन-वचन-कायसे उनके लिए उसने आहार दान दिया। दुन्दुभिस्वर, देवोंका साधुवाद, पुष्प-वृष्टि घन बरसा और रत्नोंकी वर्षा हुई। इस प्रकार वहाँ पांच आश्चर्य प्रकट हुए। शान्त व्रतोंका परिपालन करते हुए जब वह छद्मस्थ तीन माह स्थित रहे तो वह नागवृक्षकी तलभूमिपर पहुँचे। फागुन माहके कृष्णपक्षकी सप्तमीके दिन, अपराह्णमें अनुराधा नक्षत्रमें छठे उपवासके द्वारा उन्हें इन्द्रियोसे रहित केवल नामका ज्ञान केवलज्ञान प्राप्त हो गया।

घत्ता—उन यतिवरके चौथे कल्याणमें देवता लोग दिशाबोमें नहीं समा सके। सौन्दर्यसे अभिनव भक्तिके वशीभूत होकर नागराज भी पृथ्वीकी लक्ष्य करके आया ॥९॥

१०

चन्द्र, सूर्य और इन्द्र लोकालोकका अवलोकन करनेवाले ज्ञानसे युक्त लक्ष्मीके पति मुनिनाथ (तीर्थंकर) की स्तुति करते हैं, 'जो चन्द्रमाके समान कान्तिवाले हैं, जिनके दांत प्रकट हैं, जो

९. १. A reads a as b and b as a । २. AP पंगणु । ३. A सोमवत् । ४. A कइ मउल्लिक्खि करेविणु रंत्तरिउ; P कर मउल्लिक्खि करेविणु उत्तरीउ । ५. A संचिउ । ६. AP पुण्णं कुइ । ७. AP वरिसिउ । ८. A उप्पायउं; P उप्पण्णउं । ९. A अहहु ।

१०. १ A हत्थे संडं कूलकवंडं करवालं ।

- कडिहि रवाला किंकिणिमाला झणैझणिया पासे रासा सुद्धा सामा वणथणिया ।
 मईरावाणं मिहं खाणं मृगैमासं दाढाचंडं कुद्धं तोंडं जणतासं ।
 ५ पेयावासो रक्खसभीसो णियठाणं चित्तविचित्तं रम्मं चम्मं परिहाणं ।
 एसो वेसो देवे जाणं धम्ममाणं हाणी उच्चियसुत्तो हिंसाजुत्तो रयखाणी ।
 जे सरगायणवायणणच्चणलद्धरसा वामच्छीणं रत्ता मत्ता कामवसा ।
 कट्ठा दुट्ठा णिट्ठाणंटां णायचुया मइमिच्छेणं मइत्तुच्छेणं ते वि थुया ।
 संसरमाणो भवभमभग्गो मुत्तदुहो भो चंदप्पह दरिसियसुप्पहं तुह विसुहो ।
 १० पइं ण सुणंतो पइं ण थुणंतो कयमाओ आसो मेसो महिसो हंसो हं जाओ ।
 छिदण भिदण कप्पण पचलण घयतलणं पत्तो तिरिए पुणरवि णरए णिहलणं ।
 परघरवासं परैकयगासं कंखंतो णीरसपिंडं तिलखलैखंडं भक्खंतो ।
 परलच्छीओ धवलच्छीओ सलहंतो अलहंतो णियहंतो दीणो हं हंतो ।
 कल्लचियक्के जोइणिकके रइधरणी लोयणगामिय हा मइं रमिया परघरिणी ।
 १५ घत्ता—मइं विप्पं होइवि आसि भवि पसु मारिवि पलु मुत्तं ॥
 गंडयहु हंडु हरिणयहु अइणु देव पविचु पवुत्तं ॥१०॥

अस्थियोसे युक्त हैं, जिनके हाथमें त्रिशूल है, खण्डित कपाल और तलवार है, कमरमें शब्दयुक्त झनझन करती हुई किंकिणीमाला है, पासमें सघन स्तनों की मुग्धा श्यामा है, मविरापान है, पशुमांसका मीठा खाना है, जो दाढ़ीसे प्रचण्ड, क्रुद्ध भूखवाले और जानोंको त्रस्त करनेवाले है, राक्षसोंसे भयंकर भयंकर जिनका अपना निवास है। चित्र-विचित्र सुन्दर चर्म जिनका परिधान है। जिनका इस प्रकारका रूप है, ऐसे देवके ज्ञानमें धर्मकी हानि है। शास्त्रविहीन, हिंसासे सहित वह पापकी खान हैं। जो स्वरोके गाने-बजाने और नाचनेमें रस प्राप्त करते हैं और कामके वशी-भूत होकर सुन्दरियोंमें रत और मत्त हैं, जो कठोर दुष्ट, निष्ठासे भ्रष्ट न्यायसे च्युत हैं, बुद्धिहीन मिथ्यादृष्टिके द्वारा उनकी भी स्तुति की जाती है। संसारमें परिभ्रमण करनेवाला भवभ्रमणसे भग्न, दुःखको भोगनेवाला वह, सुपथके प्रदर्शक हे चन्द्रप्रभ, तुमसे विमुख है। वह तुम्हें नहीं मानता है, तुम्हारी स्तुति नहीं करता है, माया करनेवाला वह, मैं अद्व-भेष-महिष और हंस हुआ हूँ। छेदा जाना, भेदा जाना, काटा जाना, पकाया जाना, घीमें तला जाना (इन्हें) तिर्यक्-गतिमें प्राप्त करता है, फिर नरकमें वह दला जाता है। दूसरेके घरमें निवास, दूसरेका दिया भोजन चाहता हुआ, नीरस आहार तिलखलके खण्डोंको खाता हुआ दूसरेकी धवल आँखोंवाली स्त्रीकी प्रवांसा करता हुआ, नही पाकर अपनी हत्या करता हुआ मैं दीन हुआ हूँ। चारोंकोके एक भेद योगिनीचक्रमें अफसोस है कि मैंने रतिकी भूमि देखी और परस्त्रीका रमण किया।

घत्ता—मैंने विप्र होकर, जन्ममें पशु मारकर मांसका भक्षण किया हुआ है। गंडे की हड्डियों और हरिणोंके चर्मको हे देव, मैंने पवित्र कहा है ॥१०॥

२. A-झणिझणिया । ३. A सुद्धा । ४. P महराणं । ५. AP मियदासं । ६. AP omit हाणी ।
 ७. AP रयखाणं । ८. AP सुरगायणं । ९. AP तुद्धा । १०. A णिट्ठाण्ठा । ११. AP भवभयं ।
 १२. A सुहपय, P सुहपह । १३. AP हंसो महिसो । १४. P कयपरगासं । १५. A खखंडं ।
 १६. A रघरिणी । १७. विप्पहु होइवि । १८. AP हहु हरिणहु अणु ।

११

गिद्धम्महं मांसाहारियाहं
तुहं देव ण होसि सुसामि जाहं
महथालइ गाइ वि जासु वञ्ज
एवंहि सुदयावर तुहं जि सरणु
वलदेवहं अग्गइ देहि तिणिण
जे परमविराय वसंति रणिण
णैहु सहसइं पुणु चचरो सयाइं
अट्टंसहसइं सावहिलोयणाहं
ते चोहंस विच्चिरियागुणीहिं

रसलोलहं गियपरवईरियाहं ।
अजिणु वि अजिणहं चुक्कइ ण ताहं ।
हो हो किं वेएं तेण मच्चह ।
तुह पायमूलि महं होच मरणु ।
तहु गणहर सुंयहर सहस दोणिण ।
ते तहु मुणिसिक्खुव लक्ख दोणिण ।
सिक्खंति सत्थु गुरुसम्मयाइं ।
अट्टारहसहस गिरंजणाहं ।
वसुसहसइं मणपज्जवमुणीहिं ।

घन्ता—पिंडीदुमु चमरइं दिव्वल्लुणि कुसुमवरिसु सियल्लत्तइं ॥
भामंडलु दुंदुहि सुरवरहिं जिणचिधाइं णिञ्चत्तइं ॥११॥

१०

१२

भयसहसइं छंसय विचाइयाहं
भणु अंसीयसहासइं तिणिण लक्ख
सावयहं लक्ख गुत्तीसमाण

छलहेचजाइक्कलघाइयाहं ।
संजमधारिणिहिं वहंति दिक्ख ।
ते अणुवयणारिहिं वयपमाण ।

११

हे देव, जो धर्महीन, मांसाहारी, रसलोलुप स्वपरके शत्रु हैं, आप उनके स्वामी नहीं हैं। जिन भगवान्से रहित जिन्होंने भृगुचर्म नहीं छोड़ा, उनके आप स्वामी नहीं हैं। यज्ञमें जिसके लिए गाय बध है, हो-हो! उस वेदसे मुझे क्या करना। हे सुदयावर, इस समय तुम्ही मेरी शरण हो, तुम्हारे चरणोंके मूलमें मेरी मृत्यु हो। उनके तेरानवे गणधर थे, दो हजार पूर्वधारी थे, जो परम विरक्त और वनसे निवास करते थे, ऐसे उनके दो लाख चार सौ शिक्षक मुनि थे जो गुरुसम्मत शास्त्रोंकी शिक्षा देते थे। आठ हजार अवधिज्ञानी थे। निर्विकार केवलज्ञानी (आठ हजार सहित अट्टारह हजार अर्थात् १० हजार) दस हजार, विक्रिया-ऋद्धिके धारक मुनि चौदह हजार, और मनःपर्यय-ज्ञानी आठ हजार थे।

घन्ता—अशोक वृक्ष, चामर, दिव्यध्वनि, पुष्पवर्षा, श्वेतलज्ज, भामण्डल, दुन्दुभि जिनवरके ये चिह्न देवताओं द्वारा कहे गये हैं ॥११॥

१२

छल जाति हेतु समूह का खण्डन करनेवाले सात हजार छह सौ वादी मुनि थे। तीन लाख अस्सी हजार संयम की धारण करनेवाली आर्यिकाएँ वीक्षाको धारण करती हैं, तीन लाख श्रावक

११. १. P मंसाहारिं । २. P परवेरियाहं । ३. AP सुदयावह । ४. A omits portion from सुयवर down to मुणि in 6 b; K writes it in marg । ५. A दहसहसइं । ६. A adds after this; चससहस ताह पूर्वधराहं । ७. A दोसहसइं । ८. P जाणिय दहसहस । ९. P ते चवदस । १०. A रिदुसयइ सुविक्किरिया ।

१२. १ A तामु; K तामु but corrects it to छसय । २. P जाउ । ३ A चररासोसहसइ । ४. P वेहिं अणुवयं ।

- ५ देवहं देविहि^५ णञ्छेअ अत्थि
चत्तवीसहं पुव्वंगहं विहीणु
वसुमइ विहरिवि तेणेक्कु पुव्वु
संमेयहु सिहरु सभारुहेवि
णामइं गोत्तइं वेयणिययाइं
कम्मइयतेयअञ्चारियाइं
- १० घत्ता—सियपक्खहु फग्गुणसत्तमिहि परमविर्सुद्धिइ रिद्धव ॥
जेट्टहि णिट्ठियेमलु वहुरिसिहिं सहुं चंदप्पहु सिद्धव ॥१२॥

१३

- ५ णोहस्स णिव्वाणि
तूराइं वज्जंति
थोत्ताइं किज्जंति
दीणाइं सं^२ जंति
चंदणइं सीर्यलइं
ज्जिणत्तेणुहि धिप्पंति
अग्गिण्णं पणमंति
दीवोहं दिज्जंति ।
- पंचमइ कल्लाणि ।
मंगलइं गिज्जंति ।
दाणाइं दिज्जंति ।
दुरियाइं खिज्जंति ।
सुरहियइं परिमलइं ।
धुसिणेण^५ सिप्पंति ।
मचंडोहं दिप्पंति ।

थे । अणुव्रतों का पालन करनेवाली नारियाँ (भार्यिकाएँ) पाँच लाख थी । देवों और देवियोंका अन्त नहीं था । केवलज्ञानरूपी किरणवाले त्रैलोक्य सूर्य जिन चौबीस पूर्वांगोसे रहित और भी उनमें तीन माह कम समझो । एक पूर्व तक धरतीपर विहार कर और भव्य मनुष्यसमूहको-सम्बोधित कर सम्भेदशिखरपर आरोहण कर एक माह पर्यन्तका योग लेकर, नाम-गौत्र वन्दनीय को आयुके समान स्थितिवाला कर, औदारिक-तैजस और कामण तीनों शरीरोंको उन्हींने हटा दिया ।

घत्ता—फागुन माह के शुक्लपक्षकी सप्तमीके दिन परम विशुद्ध ज्येष्ठा नक्षत्रमें मलको नाश करनेवाले चन्द्रप्रभु अनेक मुनियोंके साथ सिद्ध हो गये ॥१२॥

१३

स्वामीके पाँचवें कल्याण निर्वाण होनेपर नगाड़े बजते हैं । मंगल गीत गाये जाते हैं, स्तोत्र रचे जाते हैं, दान दिया जाता है, दान सुखको प्राप्त हो जाते हैं, दुरित नष्ट हो जाते हैं, शीतल चन्दन और सुरभित परिमल जिनके शरीरपर डाले जाते हैं, केशरसे उसका लेप किया जाता है, अग्नौद्ध

५. AP देविठ । ६. AP चत्तवीसहं पुव्वंगहं । P^० अलदारियाहं । ८. विसिद्धिह । ९. A णिट्ठिवि ।
१३. १. A णाणस्स णिव्वाण । २. AP सज्जंति । ३. वंदणहं । ४. A सुरहोअहंघणहं ; P सुरहियइं हंघ-
णइं । ५. A खोणियहि धिप्पंति । ६. AP लिप्पंति । ७. A मुणि इववहं दंति ; P मणिइववहं दंति ।
८. AP omit दीवोहं दिज्जंति ।

ध्रुवोहध्रुमेण	^{१०} णाणाविहोएण ^१ ।	
महुयररविल्लाई	पंजलिहिं फुल्लाई ।	१०
घल्लंति देवद	वण्णंति णाइंद ।	-
जीहासहासेहिं	विब्भमविलासेहिं ।	
देवीउ णञ्चंति	सिद्धं समञ्चंति ।	
^{१२} णविऊण तं तित्थु	सो सयल्लु सुरसत्थु ।	
जिह ^{१३} गुणकहाकारि	पत्तो पुलोमारि ।	१५
सन्नां सलीलेण	करिणा मयालेण ।	
^{१४} ससिक्कंतिदंतेण	धीरं ^{१५} रसंतेण ।	

घत्ता—इयं^{१६} भरहखेत्तणंरयदियहु जगचंदुल्लयचंदहु ॥
किं^{१८} पुष्पचंतु हसं जडु करमि चंदप्पहहु जिणिदहु ॥१३॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणाळंकारे महाकहपुष्परयतविरहए महामव्वसरहाणुमणिणए
महाकव्वे चंदप्पहणिव्वाणगमणं णाम छायालीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥४६॥

॥ चंदप्पहं चरियं समत्तं ॥

प्रणाम करते हैं, उनके मुकुटसमूह प्रज्वलित होते हैं, दीपके समूह दिये जाते हैं, घूप समूहके घुएँ और विशिष्ट भोगोंके साथ देवेन्द्र अपने हाथोंकी अंजलियोसे, भ्रमरके शब्दोंसे युक्त पुष्प बरसाते हैं। नागेन्द्र अपनी हजाराँ जीभोंसे स्तुति करते हैं, देवियाँ विभ्रम विलासोंके साथ नृत्य करती हैं तथा देवकी समर्चा करती हैं। वह समस्त सुरसमूह उस तीर्थकी वन्दना कर उसी प्रकार स्वर्गको गया जिस प्रकार इन्द्र लीलावाले मदालस चन्द्रकान्तिके समान दांतवाले धीरे-धीरे गरजते हुए हाथीके साथ स्वर्ग गया।

घत्ता—जो यहाँ भरतक्षेत्रके लोगोंके लिए दिवस और त्रिदशरूपी कुमुदके लिए चन्द्र हैं ऐसे चन्द्रप्रभ जितेन्द्रके वर्णनमें जड़ कवि पुष्पदन्त क्या करे ? ॥१३॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणाळंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महामव्व भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका चन्द्रप्रभ निर्वाणगमन नामक छियालीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥४६॥

९. A घ्रुमोहणीलात्त । ११. AP जिणंति जालात्त । ११. AP add after this : णिरसियअणंगादं, ङ्खंति .अंगाई । १२. AP णमिऊण तं तेल्लु । १३. AP जिणं । १४. A ससिक्कंतदंतेण । १५. A धीरं । १६. A इह । १७. AP भरहखेत्ति णरं । १८. किम । १९. AP omit this line ।

संधि ४७

सुविहिं सुविहिपेयासणं सयमहर्बंदियसासणं ॥
सुवणणल्लिणवणदिणयरं वेदेणवसं जिणवरं ॥ ध्रुवकां ॥

१

५	णह्णखित्तारं सुहामोयसासं पदिट्ठं दिसासुं अरीणं अगम्मं हयं जेण कम्मं गयासाविहाणं सुरिंदहिधीरो	सवण्णेण तारं । सया जस्स सासं । रिसिं रक्खियासुं । पमोत्तूणं गं मं । जरो जस्स कम्मं । णिहाणं विहाणं । सभत्ताणं धीरो ।
१०	पयोहीगहीरो दिहीगाइगोवो सकारुणभावो कुसिद्धंतवारो ण जो मोहभंवो	अकंतंगहीरो । असोहो विगोवो । जणुगघुट्टभावो । सुदिट्ठंतवारो । ण जम्मोहवंतो ।

संधि ४७

सुविधिका प्रकाशन करनेवाले, इन्द्रके द्वारा जिनका शासन वन्दनीय है ऐसे भुवनरूपी कमलवनके लिए दिवाकर नौवें तीर्थकर सुविधि (पुष्पदन्त) को मैं नमस्कार करता हूँ ।

१

जिन्होंने अपने नखोंसे आकाशके तारोंको तिरस्कृत कर दिया है, जो अपने वर्णसे स्वच्छ हैं, जिनके श्वास सुख और आमोदमय हैं, जिनका मुख सदैव शोभामय है, जिन्होंने दिशामुखोंको उपदिष्ट किया है, जो प्राणियोंके प्राणोंकी रक्षा करनेवाले हैं, जिन्होंने शत्रुओंके लिए अगम्य भूमि और लक्ष्मी छोड़कर कर्मोंका नाश किया है, विश्वमें जिनका काम (नाम) है । जिनका विधान और धर्मोपदेश विधान फल की इच्छासे रहित है । जो सुमेरुपर्वतकी तरह गम्भीर हैं, जो अपने भक्तोंके लिए बुद्धि देते हैं, जो समुद्रकी तरह गम्भीर हैं, जो शरीरसे स्त्रीका त्याग कर देनेवाले महादेव हैं । जो घृतिरूपी गायकी रक्षा करनेवाले गोप (विष्णु) हैं । मोह और गर्वसे रहित हैं; जो कारण्य भावसे युक्त हैं, जो लोगोंको पदार्थका स्वरूप बतानेवाले हैं, छोटे सिद्धान्तोंका निवारण करनेवाले और अनन्त स्वरूपोंका अन्त देखनेवाले हैं । जो मोहसे भ्रान्त नहीं हैं और न जन्मके

P gives, at the beginning of this Samdhi, the stanza: वरमकरोदयारं^१ for which see note on page 45 A and K do not give it,

१. १. PT सुविहियसासणं । २. P सुविधि । ३. A णहुखित्तारं । ४. A अगोवो । ५. P सुसिद्धंतवारो ।

णमामो अणंतं	रईमोयणं तं ।	१५
जिणं पुप्फयंतं	जिणा पुप्फयं तं ।	
ण हत्थेण छित्तं ^१	दयाधम्मं छित्तं ।	
सया जस्स सीलं	बुहाणं सुसीलं ।	
पयासेइ संतो	खणेणं इंसतो ।	
महीदिण्णमारो	कओ जेण मारो ।	२०

घत्ता—तद्दु वरचरियविसेसयं
मेल्लह मोहविडंबणं

आयण्णह महिमासयं ॥
अथिरं घर र्छरिणी घणं ॥१॥

२

दीवि खरंसुदीवि कुसुमियतठ	पुक्खरद्धि पुण्णामरमहिहर ।	
पुण्वविदेहि तासु मंथरगइ	णीरगहिर सीय सीयाणइ ।	
णवलवंगपल्लवसुरहियजल्ले	मज्जमाणगज्जिरवैरमयंगल ।	
खयरीसिह्णिणघुसिणरसपीयल	गुरुतरंगघोलिरमडुल्लिहचल ।	
तडवरविडविपडियणोणाहल	कीलियमहिसंबंदहयणाहल ।	५
देहं णिल्लोलमाणसूयरडल	पक्खित्तुंडपविहं डियसयदल ।	
जिणपडिमा इव सार्वयसंगिणि	किं वण्णिज्जइ दिवतरंगिणि ।	
उत्तरि तीरिं ताहि ह्यखलवइ	अत्थि भूमि णामे पुक्खलवइ ।	

युक्त हैं, ऐसे रतिका मोचन करनेवाले अनन्त जिन पुष्पदन्तको मैं नमस्कार करता हूँ। जिन्होंने कामदेवको अपने हाथसे नहीं छुआ। जिनका शील सदैव दयाभावसे स्पृष्ट है और पण्डितोंके लिए सुशील (त्रुतों) का प्रकाशन करनेवाला है। घरतीपर प्राणियोंको मृत्यु देनेवाले विद्यमान कामदेवको जिन्होंने एक क्षणमे नष्ट बाणोवाला बना दिया।

घत्ता—ऐसे उन पुष्पदन्तके सैकड़ों महिमावाले श्रेष्ठ चरित्र विशेषको सुनो। मोहकी विडम्बना अस्थिर घर-गृहिणी और घरको छोड़ो ॥१॥

२

सूर्यको तीव्र किरणोंसे दीप्त पुष्करार्ध द्वीपमें कुसुमित वृक्षोंवाला पूर्व सुमेरुपर्वत है। उसके पूर्व-विदेहमें मन्थरगतिवाली जलसे गम्भीर शीतल शीतोदा नदी है। जिसका जल नवलवंगोंके पल्लवोंसे सुरभित है, जिसमे नहाते हुए और गंजित शब्दवाले मैगल हाथी हैं, जो विद्याधरियोंके स्तनोंके केशररससे पीली है, जो बड़ी-बड़ी लहरोंपर व्याप्त भ्रमरोंसे चंचल है, जिसमे तटवर्ती वृक्षोंके नाना फल गिरे हुए हैं, जिसमे भैंससमूह, अश्व और भील क्रौडा कर रहे हैं, जिसमें शूकर-कुल कीचड़से खेल रहा है, जिसमे पक्षिसमूहके द्वारा कमल खण्डित कर दिये गये हैं, जो जिन प्रतिमाके समान सावयसंगिनी (आवक संगिनी, श्वापद संगिनी) है, ऐसी उस दिव्य नदीका क्या वर्णन किया जाये। उसके उत्तर तटपर खल-राजाशोका नाश करनेवाली पुक्कलावती नामकी भूमि है।

६. A छिण्णं । ७. छिण्णं । ८. A घरणी ।

२. १. AP सीयल । २. A जले; P जलु । ३. P गज्जियं । ४. A मयगले; P मयगलु । ५. A पलियं । ६. AP महिविदं । ७. A दहिणीलोलं । ८. संगिणि । ९. A उत्तरतीरे ।

पुरि णहसिरि व भमालाकंतिहि
१० राउ महापउमउ पउमाणणु
घत्ता—करतरवारिचियारिया
णिवडिय सूर वणंगया

पंडु १० पुंडरिंकिणि धरपंतिहि ।
पउमविलोयणु पउमाणणु ।
जेण रिउ संधारिया ।
णासिवि भीरु वणं गया ॥२॥

परियाणिय णिव अत्याणत्थहु
आवेप्पिणु अक्खिउ वणवालें
तं णिसुंणिवि सो रइयरहंतहु
वंदिउ वंदणिज्जु जो वंदहुं
५ जिह जिह तेणं देन णिज्जाइउ
सिखलोउ दूसणु परलोयहु
णारि मारि भीसण ते दिट्ठी
पुत्तहु बालकमलदलणेउहु
सुक्खं घरु बहुदुक्खहं भंडउं
१० घत्ता—सुयरंतो^० जिणपुंगमं
पालइ सुक्खणिउंगउ

३
एक्काहिं दिणि तहु अत्याणत्थहु ।
नृव वणु भूसिउं तिहुवणवालें ।
वंदणैहत्तिइ गउ अरहंतहु ।
इंदउंदणाईदणरिदहुं ।
तिह तिह सो णिव्वेउ पराइउ ।
भोउ गणिउ सरिसउ फणिभोयहु ।
दियवइ विसयविरत्ति पइट्ठी ।
देवि धैरत्ति झत्ति धणयत्तहु ।
लइयउं उउं संसारतरंडउं ।
इसि प्राणिदियसंजमं ॥
सुयप्यारहअंगउ ॥३॥

उसमे गृहपतिकोसे सफेद पुण्डरीकिणी पुरी नक्षत्रमाला की काण्तिसे आकाशलक्ष्मीको तरह जान पड़ती है, उसमें कमलके समान आँख, हाथ और मुखवाला महापद्म नामका राजा था ।

घत्ता—जिसके द्वारा हाथकी तलवारसे विदारित और संहारित शूरवीर शत्रु धायल होकर गिर पड़े और भागकर वनमे चले गये ॥२॥

३

अर्थ-अनर्थको जाननेवाले उस राजाके दरबारमें आकर एक दिन वनपालने कहा, "हे राजन्, वन तीन कालकी शोभासे विभूषित हो गया है ।" यह सुनकर वह कामदेवका अन्त करनेवाले अरहन्तकी वन्दनाभक्ति करनेके लिए गया । इन्द्र, चन्द्र, नागेन्द्र और नरेन्द्रोंके समूहके द्वारा वन्दनीय उनकी उसने वन्दना की । जैसे-जैसे उस राजाने देवका ध्यान किया, वैसे-वैसे वह निवेदको प्राप्त हो गया । (उसने सोचा) कि भुत्यलोग परलोकके लिए दूषण है, उसने भोगोंको नागके फनकी तरह समझा, उसने नारीको भीषण मारीके रूपमें देखा, उसके हृदयमें विषयोके प्रति विरक्ति प्रवेश कर गयी । बालकमलके समान आँखोंवाले अपने पुत्र घनदत्तको शीघ्र धरती देकर अनेक दुःखोंके पात्र धरका परित्याग कर दिया, और संसारसे तारनेवाले व्रतको स्वीकार कर लिया ।

घत्ता—जिनश्रेष्ठका स्मरण करते हुए वह मुनि प्राण और इन्द्रियोंके संयम और कामदेवसे रहित एकादश श्रुतांगोंका पालन करते है ॥३॥

१०. A मुंडरिंकिणि ।

३. १. AP णिव । २. AP तं णिसुणेवि रइयं । ३. A वंदणमत्तिइ । ४. P देउ तेण । ५. P धरत्ति उत्ति । ६. AP वउ । ७. A सुयरंतो जिणपुंगवं; P सुयरंतो जिणपुंगवं । ८. AP पाणिदियं ।

४

णारीचितणु णे करइ दंसणु
 गंधु मल्लु सरु राउप्पायणु
 तं परिहरइ वच्छुं जहिं रोसहु
 भाविवि भावणाउ णयजुत्तिउ
 कम्म अहम्मु णियँणु णिसिद्धवं
 मुउ संणासणेण जोईसरु
 अट्ठाईल्लहत्थतणु सुंदरु
 सुयइ सासु सुहँणिहि दहँमासहिं
 ओहिणासणाणेणं परिक्खइ
 काले कालाणु संप्राविइ १

णउ संभासणु णउ करफंसणु ।
 णउ अइमत्तपाणेरसभोयणु ।
 होइ सूइ भाणाइयदोसहु ।
 दंसणसुद्धिविणयसंपत्तिउ ।
 तित्थयरत्तगोचु ते बद्धवं ।
 जायउ प्राणयकप्पि सुरेसरु ।
 वीससमुइमाणंजीविउधरु ।
 मुंजइ वीसहिं वरिससहासहिं ।
 धूमप्पह महिं जाव णिरिक्खइ ।
 थिइ छम्माससेसि तहु जीविइ ।

घत्ता—दिण्णविवक्खासंकयं
 सुहलियसुहमाणियसिचं

सुहसोहाजियपंकयं ॥
 भणइ कुलिसि दविणाहिचं ॥४॥

५

जंबुदोवि रविदोवयदरिसइ
 मंडुधरियपरमहिउइवंदिहि
 कासवगोचहु गुत्तससंकहु

भरहँ भुत्तइ भारहवरिसइ ।
 णरभरियहि णयरिहि काकंदिहि ।
 वइरिरणंगणि वज्जियसंकहु ।

४

वह न तो नारीका चिन्तन करते और न दर्शन । न भाषण और न हाथ से संस्पर्श, न राग को उत्पन्न करनेवाले गन्ध-माल्य और स्वर, और न प्राणोंको अत्यन्त मत्त बनानेवाले रसभोजन । उस वस्तुका परित्याग कर देते, जिससे मानादि दोषों और क्रोधको उत्पत्ति होती । दर्शनविक्षुद्धि, विनय-सम्पन्नता आदि नययुक्त भावनाओंका चिन्तन कर, कर्म-अघर्म और निदानका निषेध कर उन्होंने तीर्थंकर गोत्रका बन्ध कर लिया । संन्यासमरणसे मरकर वह योगीश्वर प्राणतस्वर्गमें सुरेश्वर हुए । साढ़े तीन हाथका सुन्दर शरीर । वीस सागर प्रमाण जीवको धारण करनेवाला, सुखनिधि वह दस माहमें साँस छोड़ता और वीस हजार वर्षमें भोजन करता । वह अवधिज्ञानके द्वारा धूमप्रभ नरक पर्यन्त भूमिको जानता । समयके साथ कालकी अवधि समाप्त होनेपर तथा उसका जीवन छह माह शेष रह जानेपर ।

घत्ता—शत्रुपक्षको शंका उत्पन्न करनेवाले, तथा अपने मुखकमलोंको जीतनेवाले सुफलित सुख और शिवको माननेवाले कुवेरसे इन्द्रने कहा—॥४॥

५

जिसमें सूर्यरूपी दीपक दिखाई देता है ऐसे जम्बूद्वीपमे भरतके द्वारा भुक्त भारतवर्षमें, जहाँ बलपूर्वक राजारूपी वन्दियोंको पकड़ रखा है, ऐसी आदमियोंसे संकुल काकन्दी नगरीका,

४. १. P करइ ण । २. A °पाणु रसं । ३ P वासु । ४. A णियाणि । ५. AP पाणयकप्पि । ६. A अट्ठाहियविहत्थं; P आट्ठु जि हत्थं । ७. P °माणु । ८. P सुहोणिहि । ९. A दसमासहिं । १०. P ओहिणाणमाणेण । ११. AP संप्राविइ ।

५. १. P मंडं ।

मुत्ताहलमंडियसुग्गीवहु
 ५ वासवकुलिसु व मञ्जो खामहि
 विद्धंसियदुद्धरमणसियसरु
 जाहि वाह तुहुं दुज्जण^३ जूरहि
 करि चंगळं पुरुं घरु सुहदंसणु
 गिम्मिउ णयंरु काइं वण्णिज्जइ
 १० भाणुविउ तहिं परु कि सीसइ

घत्ता—पयगथरंराचिहंतियं^४

दंकइ जत्थ वहुल्लिया

इक्खावहु रायहु सुग्गीवहु ।
 जसरामहि देविहि जयरामहि ।
 होसइ देउ णवैमतिथंकरु ।
 चितियं सयल मणोरह पूरहि ।
 ता जक्खेण दुक्खविद्धंसणु ।
 जहिं मणिफिरणचिरोहें भिज्जइ ।
 तेए रयणि ण वासरु दीसइ ।

पोमरायमणिपंतियं ॥

किं सा चंदगहिल्लिया ॥५॥

६

कज्जलु णयणि दंति हरिणीलहु
 दंतपत्ति ससियंतकरोहें
 भणइ धरिणि सहियउ सरलच्छउ
 जोयवि धरि मोत्तियरंगवलि
 ५ णील्लं णेतुं ण गिहिलं णियच्छइ

आरूसइ किरणावलि कालहु ।
 दपपणयलि ण णियंति समोहें ।
 एवहि दसण ण धोयवि णिच्छउ ।
 अवर ण वंधेइ गलि हारावलि ।
 मरगयदिति मयच्छि दुगुंछइ ।

कश्यपगोत्रीय शशांकगुप्त नामक, शत्रुओंके प्रांगणमें आशंकाओंसे रहित, गुप्तशशांक, जिसका कण्ठ मुक्तामालाओंसे शोभित है, ऐसे हृषवाकुवंशके राजा सुग्रीवकी वज्रायुधकी तरह मध्यमें क्षीण तथा यशसे रमणीय जयरामा नामकी देवीसे, कामदेवके दुर्धर्ष बाणोंको नष्ट करनेवाले नीवे तीर्थंकरका जन्म हुआ। जाओ तुम शीघ्र दुश्मनोंको सताओ और चिन्तित समस्त मनोरथोंको पूरा करो। देखनेमें क्षुम सुन्दर नगर बनाओ। तब कुवेरने दुखोंका नाश करनेवाले नगरकी रचना की। उसका क्या वर्णन किया जाये? जहाँ मणिफिरणोंके विरोधसे सूर्यबिम्बका तिरस्कार किया जाता है वहाँ दूसरेके विषयमें क्या कहा जाये? तेजके द्वारा वहाँ न रात जान पड़ती है, और न दिन।

घत्ता—चरणोंमें लगे हुए राग (लालिमा) को नष्ट करनेवाली पद्मरागमणियोंकी पंक्तिों जहाँ वधू आच्छादित कर देती है, क्या वह चन्द्रमाके द्वारा अभिभूत है? (क्या चन्द्रमाक्षुपी ग्रह उसे लग गया है?) ॥५॥

६

कोई आँखोंमें काजल लगाती हुई, हरिनील और काले मणियोंकी किरणावलीपर क्रुद्ध हो उठती है। वह चन्द्रकान्तमणिके किरणसमूह से दन्तपंक्तिको दर्पणतलमे अपनी भ्रान्तिके कारण नहीं देखती। वह गृह्णिणी, सरल आँखोंवाली सखीसे कहती है कि इस समय मैं निश्चयपूर्वक दंत नहीं धोऊँगी। एक और नारी घरमें मोतियोंकी रगावली देखकर अपने गलेमें हारावली नहीं बांधती। अपने स्थापित नीले नेत्रोंको नहीं देख पाती और वह भृगनयनी मरकतमणिकी

२. A णववु । ३. P दूरहि । ४. P तहु वरि घणय मणोरह । ५. A पुरवह । ६. P काइं णयव ।

७. A मणिक्कफिरणविहि । C. AP विहत्तियं ।

६. १. A ससियंतं; P ससिकंतं । २. P. वद्धइ । ३. A णील्लेत्तु णं ।

कक्षेयणकुह्यलइ पेच्छिवि
दिण्णत्त मुह्विवाहरतवइ
अण्णु वि रंगंतत्त सुत्तुत्त
मणिमहियलगतत्तणु पँडिमुल्लत्त
जं घरसिहराहयणहभायत्त
णिच्चु जि अमुणियसंझारायत्त
घत्ता—तहिं रयणंसुकरालइ
अम्भाएवि महासइ

मुंज मुंज णियभासइ पुच्छिवि ।
सिसुणा कूरकवल्लु पँडिबिंविइ ।
थणइ थण्णरसगहणुक्कंठिउ ।
दोमायत्तं चितइ डिंमुल्लत्त ।
कणयघडिउ पुरु पीयल्लायत्त ।
सुरहिसुसीयल्लदाहिणवायत्त ।
सोवती सयणालइ ॥
पेच्छइ सिविणयमंतइ ॥६॥

१०

७

णायं णाइल्लं णायारिं
णाणाफुल्लं मालाजैमलं
जाययजुम्मं सिरिणिवजुम्मं
पालंतुंगयवेलावारं
पीढं चामीयरसेहीरं
दीहमऊहं रयणसमूहं

णारायणियं णरमणहारिं ।
णिसियरयं णेसरयं विमलं ।
पोमसरं पोमासियपोमं ।
पारं पंडुरपाणियफारं ।
णाइहरं णाइंदागौरं ।
णिद्धं णिद्धूमं हुयवाहं ।

५

दीप्तिकी निन्दा करती है । नीलरत्नकी भित्तिकी देखकर अपनी भाषा (शिबूभाषा) में 'खाओ खाओ' पूछकर बच्चेने मुखके बिम्बाधरसे ताम्र प्रतिबिम्बको भातका कौर दे दिया । एक और सोकर उठा हुआ बालक, खेलते-खेलते मां का दूध पीनेकी उत्कण्ठासे चिल्लाता है । लेकिन मणि-महोत्तलमे प्रतिबिम्बित तनुको देखकर भूल गया, और बालक सोचता है कि दो माताएँ हैं । जो अपने गृहशिखरोसे आकाशभागको आहत करता है, स्वर्गनिर्मित और पीली कान्तिवाला है, जो प्रतिदिन सन्ध्यारागको नहीं जानता, और जिसमे सुरभित शीतल और दक्षिण पवन बहता है ।

घत्ता—ऐसे उस नगरमे रत्नकिरणोसे मिश्रित शयनतलमें सोती हुई महासती अम्बादेवी स्वप्न-परम्पराको देखती है ॥६॥

७

गज, बेल, मनुष्योके लिए सुन्दर लक्ष्मी, नाना पुष्पोंकी दो मालाएँ, विमल चन्द्रमा और सूर्य, मत्स्ययुग, लक्ष्मीसे युक्त कुम्भयुगल, लक्ष्मीसे अधिलिखित कमलका सरोवर—जिसका तट-समूह बांधोके बाहर निकला हुआ है और जिसके पानीका विस्तार सफेद है, ऐसा समुद्र; सोनेके सिंहाँका पीठ (सिंहासन); स्वर्गाविमान और नागभवन, लम्बो किरणोंवाला रत्नसमूह, स्निग्ध और निर्धूम अग्नि ।

४. P परिबिंविइ । ५. A मणिमहियतणु णिउ पडिमुल्लत्त; P मणिमहियतणु परिविवुल्लत्त । ६. AP सुसीयल्लु । ७. AP रम्माए वि ।

७. १. P णायल्ल । २. A जुवलं । ३. AT जलयरजुम्मं । ४. AP पालंतुंगयवेलावारं (P वारं) ।

५. P णायहरं । ६. A adds after this : ऊहयपंचवीथं एवहं । ७. A adds after this : जालामालाजडियदिसोहं ।

घत्ता—इय वरसि विणयमालियं
पइणो तीए सिद्धियं

जयरामाइ णिहालियं ॥
तेण वि फलमुवदिदियं ॥७॥

८

५ दयाभावजुत्तो
हले होहि दीसो
परस्सोवयारी
तओ तन्मि काले
तिलोयस्स पुज्जा
मई कंति बुद्धी
ससिगारभारा
गुणुत्तालभावा
तुलाकोडिपाया
१० दिही दीहरच्छी
पवण्णा णिवासं
कया गम्भसुद्धी
घणेसो पहिट्ठो
रिऊमासमेरं
१५ अमंदो णिवंदो

तुमं चारुपुत्तो ।
अणीसो मुणीसो ।
जिणो णिज्जियारी ।
महात्तुरोले ।
सई का वि लज्जा ।
सिरी संति सिद्धी ।
पघोळंतहारा ।
सकंचीकलावा ।
विइण्णंगराया ।
परा का वि लच्छी ।
जिणंवाह पासं ।
इमीहिं महिद्धी ।
हिरैण्णं पवुट्ठो ।
घरेडं समेरं ।
जुओ प्राणईदो ।

घत्ता—फगुणमासे पत्तए
णवमीदियहि पवित्तए

पवखे ससियरदित्तए ॥
देवं मूलणक्खत्तए ॥८॥

घत्ता—इस प्रकार जयरामाने स्वप्नमालिका देखी । उसने पतिसे कहा । उन्होने भी उसके फलका कथन किया ॥७॥

८

कि तुम्हारा दयासे युक्त सुन्दर पुत्र होगा । हे हला, अनीश, मुनीश, दूसरोंका कल्याणकारी, शत्रुओंका नाश करनेवाले जिन; तब उस समय कि जब महातूर्यं बज रहा था, त्रिलोककी पूजनीय सती कोई लज्जा, (ह्री), कान्ति, मति (बुद्धि), सिद्ध होती हुई श्री, श्रृंगारके भारसे दबी हुई, हारको आन्दोलित करती हुई लक्ष्मी, गुणोंसे ऊँचे भाववाली कांची कलापसे युक्त, पैरोंसे धुँधरू पहने हुए अंगराग विकीर्ण करती हुई लम्बी आँखोंवाली कोई श्रेष्ठ लक्ष्मी जिननाथके निवास-स्थान पर पहुँची । इनके द्वारा महाद् ऋद्धिवाली गर्भशुद्धि की गयी । छह माहकी अपनी मर्यादा तक कुबेरने प्रसन्नतासे धनकी वर्षा की । अमन्द मनवन्दनीय प्राणत इन्द्र-व्युत हुआ और ।

घत्ता—फागुन माहके कृष्णपक्षकी नवमीके दिन मूलनक्षत्रमे ॥८॥

८. A वरि । ९. A सिद्धियं । १०. A दिदियं ।

८. १. AP तुहं । २. तुरराले । ३. A सुई कावि; P सयं कावि । ४. P जिणंवाय । ५. P सुवण्णेण वुट्ठो ।

६. A रमंतो समेरं । ७. P णिमंदो । ८. AP पाणदंदो । ९. A देव ।

९

जिणो णारिदेहे थिओ दिव्वणाणो
 णिहीकुंमहत्था पणच्चति जक्खा
 पमोत्तूण संसारवित्थारदुग्गं
 समुद्दाण कोडीण सीरीसमाणं
 तथो मग्गसीसे णिसीसंसुसेए
 जिणिंदस्स जम्मे जियाराइवग्गो
 ण साम्माइ खे खीणपावो महप्पो
 सणोईकुमारो स माहिंदणामो
 समं वंभणाहेण वंसुत्तरेसो
 चलो चल्लिओ लंतवो लच्छिधामो
 ससुक्को महासुक्कदेवग्गं गामी
 समुद्दाइओ आणओ प्रार्णइंदो
 ससी वासरीसो रहुव्वद्धकेळ
 दिर्यंतं गयणंदभेरीणिणाय
 णिवो वंदिओ तेहि कार्कदिवालो^१

सुरिंदाण वंदेहि वंदिज्जमाणो ।
 वरिट्ठा सुव्वणं दहट्टेव प्रक्खा ।
 पवणम्मि चंदप्पहे भोक्खमग्गं ।
 सुसुण्णं गयं एत्तिर्यं कालमाणं ।
 पहिल्ले दिणे जायओ जायसेए । ५
 ससक्को असेसो वि सोहम्मसग्गो ।
 विमाणेहि जाणेहि ईसाणकप्पो ।
 विल्लंतसोहंतमंदारदामो ।
 णहुड्डोणगिण्वाणसोहाविसेसो ।
 असट्टेण काविट्टवो तुट्टिकामो । १०
 सयारो सहारो सहस्सारसामी ।
 जगुद्धारणो आरणो अच्चुइंदो ।
 बुहो अंगिरारो सणी राहु केळ ।
 पुरिं^१ प्राइया सामराणं णिहाया ।
 करे ढोइओ कित्तिमो को वि वालो । १५

९

देवेन्द्रोंके समूहके द्वारा वन्दनीय देव जिन नारीदेहमे आकर स्थित हुए । निधिकलश अपने हाथमें लेकर यक्ष नृत्य किया और अठारह पक्षो तक घनकी वर्षा की । संसारके विस्तार दुर्गको छोड़कर चन्द्रप्रभ स्वामीके मोक्षमार्गमें प्रवृत्त होनेपर, नब्बे करोड़ सागर पर्यन्त समय बीतनेपर मार्गशीर्ष शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके दिन जिनेन्द्रके जन्ममें, शत्रुवर्गका विजेता, इन्द्र सहित समस्त सौधर्म स्वर्ग आकाशमें नही समा सका । निष्पाप और माहात्म्यवाला ईशान स्वर्ग विमानो और यानेसे, जो लटकती हुई मन्दारपुष्प मालाओसे शोभित है, ऐसे सानत्कुमार और महेन्द्र स्वर्ग, ब्रह्म स्वर्गके इन्द्रके साथ ब्रह्मोत्तर स्वर्गका इन्द्र (जि जिसकी आकाशमें उड़ते हुए देवोंसे शोभा विशेष है) लक्ष्मीसे युक्त चंचल लान्ताव स्वर्ग तथा बिना किसी कपट भावसे सन्तुष्ट काम कापिट्ठ स्वर्ग चल पड़ा । शुक्र वर्गके साथ महाशुक्र स्वर्गका अग्रगामी देव (इन्द्र), सतार स्वर्ग और हारसहित सहस्रार स्वर्गका स्वामी आनत और प्राणत स्वर्ग दीह पड़ा, विद्वको धारण करनेवाला आरण और अच्युत स्वर्ग भी । चन्द्रमा, सूर्य, जिसके रथ पर पताका बँधी हुई है ऐसा बुध, वृहस्पति, शनि, राहु और केतु आये । आनन्दमेरीके निनाद दिशाओमें फैल गये । लोहपालोंके समूह उस नगरीमें पहुँचे । उन्हीने काकन्दी नगरका पालन करनेवाले उस राजाको नमस्कार

२. १. AP ससुण्ण । २. A सुसेओ । ३. A जायसेओ । ४. AP संमाइ । ५. P सणोईकुमारो । ६. AP विल्लंतसोहहं । ७. AP देवक्क । ८. AP पाणइंदो । ९. P वासरेसो । १०. AP पाइया । ११. AP कार्कदिवालो ।

असामण्यलौयणभारम्भयाप
तिर्णानी तिसुद्धो सुलेसासहावो

जणेऊण भंति^{१३} मणे अम्मयाए ।
णिओ मंदरं देवदेवेहिं देवो ।

घत्ता—पंडुसिलोवरि ण्हाणियं पूयाविहिसंमाणियं ॥
११० णविऊणं अरहंतयं ११ पुप्फदंतभयवंतयं ॥९॥

ते सुरवर लंघिवि गयणंतरु
जणणिहि करयलि णिहियर जइवइ
काले जंतं वट्ठिच सायर
वड्ढिच सुकइहि कब्बालाच व
५ वड्ढिच उवसमवेल्लिहि कंदु व
वड्ढिच धम्मदिवौडहु तेच व
कंदुज्जलतणु अइसयभूयच
सिसुळीलाइ पओसियदिग्घं
पच्छइ पत्तु पायसासणु सइं
१० जं चिंतंतच सुरगुरु गुप्पइ
लक्खणलक्खियंवरतणुलट्ठिहि

१०
ते लेप्पिणु पडिआया तं पुरु ।
गच आणंदु पणच्चिवि सुरचइ ।
वड्ढिच णं सियेपक्खइ सायर ।
वड्ढिच सुसुणिहिं णाणसहाच व ।
वड्ढिच अमैयकलिहिं णवेंचंदु व ।
वड्ढिच भवमयरहरहु सेच व ।
बाणासणसच तुंगु पहूयच ।
गय पण्णाससहस तहु पुग्घं ।
उच्छच किं सीसइ मणुणं मइं ।
तहिं महं मइ णच किं पि विसप्पइ ।
पट्टबंधु जाइच परमेट्ठिहि ।

क्रिया, और उसके हाथमे कोई भी कृत्रिम बालक दे दिया । असामान्य लावण्यके भारसे युक्त माताके मनमें भ्रान्ति उत्पन्न कर तीन ज्ञानधारी तथा मन-वचन-कायसे शुद्ध शुभलेश्याके स्वभाववाले देवदेवको देवेन्द्रोके द्वारा मन्दराचल ले जाया गया ।

घत्ता—पाण्डुकशिलाके ऊपर अभिषिक्त पूजाविधिसे सम्मानित सूर्य और चन्द्रमाकी आभावाले अरहन्तको नमस्कार कर—॥९॥

१०

सुरवर आकाशको पार करते हुए उन्हे वापस लेकर उस नगर आये । यतिपति जननिधि जिनको हथेलीपर रखकर तथा आनन्दसे नृत्य कर इन्द्र वापस चला गया । समय बीतनेपर वह आदरपूर्वक बढ़ने लगे मानो क्षुब्ध पक्षमें सागर बढ़ रहा हो । वह सुकविके काव्यालापको तरह बढ़े हो गये, सुमुनिके ज्ञानस्वभावकी तरह बढ़े हो गये, उपशमकी लताके अंकुरकी तरह बढ़े हो गये, अमलकलाओंसे चन्द्रमाके समान बढ़े हो गये । सूर्यके तेजके समान वह बढ़े हो गये, संसार-रूपी समुद्रके सेतुके समान बढ़े हो गये, स्वर्णकी तरह अत्यन्त उज्ज्वल, उनका शरीर सी धनुष प्रमाण ऊंचा और प्रचुर था । इस प्रकार बालक्रीडामे उनके देवोंको सन्तुष्ट करनेवाले पचास हजार पूर्व वर्ष बीत गये । उसके बाद इन्द्र स्वयं आया । उस उत्सवका मुख मनुष्यके द्वारा क्या वर्णन किया जाये । जिसके वर्णनमें स्वयं बृहस्पति व्याकुल हो उठता है, उसमें मेरी मति बिलकुल भी नहीं चलती । लाखों लक्षणोंसे युक्त शरीरलतावाले परमेष्ठीके लिए पट्ट बांध दिया गया ।

१२. P असावाणं । १३. A भंती । १४. A तिणाणी तिलेसो तिसुद्धो सुहावो । १५. AP णमिऊणं ।
१६. AP पुप्फदंतं ।

१०. १. P जयवइ । २. AP सियवक्खइ । ३. A अमयकलिहिं । ४. P णवचंदु व । ५. A धम्मु दयादहं-
नेठ व; P धम्मदिवायरत्तेच व । ६. P अइसंभूयच । ७. P परतणुं । ८. AP जायच ।

घत्ता—भाणंतहु सिरिचंगई अट्टवीसपुंठवंगई ॥
पुंठवहुं पुणु सविलासई पण्णासेव संहोसई ॥१०॥

११

तेथु तासु बोलीणई जइयहुं
तं जोइवि जिणणाहु विचक्कइ
जणणमरणपरिवट्टणलक्खणु
जं जं कौंइ वि णयणहिं दीसइ
अथिरु सव्हु भणु कहिं रइ कीरइ
वइसाणरु इंधणतणपवणें
भोयं इंदियतित्ति ण पूरइ
इय चिंतंतु णाहु संभाविच
चारु चारु पइं जिणवर जाणिउं
घत्ता—ता घयवीईराइयं
पुंडरीयमालाघरं

उक्क पडंती दिट्ठी तइयहुं ।
कौलहु कलिहि ण कोइ वि चुक्कइ ।
एउ तिजगु परिणवइ पैडिक्खणु ।
उक्का इव तं तं खणि णासइ ।
तो वि चित्तु विसयासइ हीरइ ।
ण समइ कंहु णक्खकंडुयणें ।
वट्टइ दुट्ट तिट्ट मइ जूरइ ।
अमरमुणीसरेहिं बोल्लैविच ।
सासयवित्तिहिं हियवच आणिउं ।
विचलपत्तपच्छाइयं ॥
सोइइ गयणंगणसरं ॥११॥

५

१०

घत्ता—राज्यश्रीके अंगोंको मानते हुए उनके पचास हजार पूर्व और अट्टाईस पूर्वाय समय विलासपूर्वक बीत गया ॥१०॥

११

जब उनका इतना समय बीत गया, तो उन्होंने एक उल्काको गिरते हुए देखा । उसे देखकर जिननाथ विचार करते हैं—यमसे युद्ध करते हुए कोई नहीं बचता, जनन-मरण और परिवर्तनके लक्षणवाला यह त्रिलोक प्रतिक्षण बदलता रहता है । नेत्रोंसे जो-जो कुछ भी दिखाई देता है, उल्काके समान वह एक क्षणमें नष्ट हो जाता है, जहाँ सब कुछ अस्थिर है, बताओ वहाँ कहीं रति की जाये । फिर हृदय विषयकी आशाके द्वारा अपहृत किया जाता है । भाग ईन्धन-स्वरूप शरीर और हवासे, और खाज नाखूनोसे खुजलानेसे नष्ट नहीं होती । भोगसे इन्द्रिय तृप्ति नहीं होती । दुष्ट तृष्णा बढ़ती है और मति पीडित होती है । इस प्रकार विचार करते हुए स्वामीकी सम्भावना कर अमरमुनीस्वरु (लोकान्तिक देवों) ने आकर कहा—हे जिनवर ! आपने सुन्दर जाना और शाश्वत वृत्तियोंसे अपनेको अनुशासित किया ।

घत्ता—तब इतनेमें ध्वजरूपी तरंगोंसे शोभित, विपुल पात्रों (पत्तो वाहनों) से आच्छादित पुण्डरीकों (कमलों और छत्रों) को माला धारण करनेवाला आकाश प्रांगणरूपी सरोवर शोभित हो उठा ॥११॥

१०. A सिरिअंगयं । १०. A पुंठवंगयं । ११. A सव्वसई ।

११. १. A कालहु कालि ण वि को चुक्कइ । २. A मरणु परिं । ३. A परिक्खणु । ४. A कायमि णयणहं । ५. A कंडमणें । ६. A बोलाविच ।

१२

सुरवरकरयलपहयइं तूरइं
णविउ ण्हविउ भावें तित्थंकरु
दिठ्वैदुगुल्लयाइं परिहेप्पिणु
सुमइहिं रज्जु समप्पिवि राणउ
गउ णहत्तणाणाखयरामर
तहिं मायैसिरि मासि सिसिरहु भरि
कुडिलकेस णिककुडिलें लुंचिवि
जाइवि अमर पवरमयराळइ
छट्टुववासु पयासु करेप्पिणु

१० घत्ता—वित्थारियतवसिंहिसिंहं ससरीरे वि हु णिप्पिहं ॥
उज्झियरइसंकप्पयं पडिवणं जिणकप्पयं ॥१२॥

खीरमहण्णवि भरियइं खीरइं ।
घणवाहें घणेण णं महिहरु ।
परमसिद्धसंतइहि णवेप्पिणु ।
सूरप्पहसिवियहि आसीणउ ।
चियसियपुप्फइ पुप्फवणंतरि ।
सियैपाडिवइ वरुणदिसि दिणयरि ।
घल्लिय ते तियसिंदे अंचिवि ।
जयकारिउ विज्जाहरमालइ ।
थिउ नृवसैहसें सहं तउ छेप्पिणु ।

१३

अवरहिं वासरि संतकसायउ
सइल्लेणयरु मुणिभिव्वहि दुक्कउं
तहु तहिं उप्पणउं अच्छेरउ

हासकासजैससिसुच्छायउ ।
पुप्फमित्तरायहु घरि थक्कउ ।
पंचपयासु मणोरैहगारउ ।

१२

देववरोके हाथोंसे नगाड़े बज उठे । क्षीर समुद्रसे जल भरा जाने लगा । इन्द्रने नमन किया, तीर्थंकरका भावसे अभिषेक किया, मानो मेघने महीधरका अभिषेक किया हो । दिवा वस्त्र पहनाकर, परम सिद्ध सन्ततिको प्रणाम कर, सुमतिको राज्य समर्पित कर राजा सूर्यप्रभा शिविकामे बैठ गये । नृत्य करते हुए नाना विद्याधर और देव विकसित पुष्पोसे युक्त पुष्पवनमे पहुँचे । वहाँ मार्गशीर्ष शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके दिन, सूर्यके पश्चिम दिशामे पहुँचनेपर अपने घुँघराले बालोको उन्होंने निष्कपट भावोंसे उखाड़ डाला । इन्द्रने पूजा करे उन्हें क्षीरसागरमे फेंक दिया । विद्याधर समूहने जय-जयकार किया । छठा उपवास कर, एक हजार राजाओंके साथ तप ग्रहण कर स्थित हो गये ।

घत्ता—जिसमे तपस्वी अग्नि विस्तारित की गयी है, जो अपने ही शरीरमे निष्प्रभ है, जिसमें रतिकी संरचनाका परिचय कर दिया गया है, ऐसे जिनाचरणको उन्होंने स्वीकार कर लिया ॥१२॥

१३

एक दूसरे दिन हास्य, काश, यश और चन्द्रमाके समान कान्तिवाले शान्तकषाय वह शैलनगरमे मुनिचर्याके लिए पहुँचे । वहाँ पुष्यमित्र राजाके घर ठहर गये । वहाँ उसे पाँच सुन्दर

१२. १. A महण्णव । २. APT^० दुगुल्लयाइ । ३. A मायसिरिमासि; P मागसिरि मासि । ४. A पडिवण;
P पडिवाए । ५. P णिकुडिल्ले । ६. AP णिवसहसें ।
१३. १. P^० ससिजसें । २. AP सयलणयर । ३. P मणोरैह ।

चउवरिसइं गलियइं छम्मत्थहु
 कत्तियमासि विसुद्धहि बीयहि
 लोयालोयपलोयणदीवउ
 केवलणाणु सो जि लइ भणणइ
 जं बुद्धे सुण्णं जि पयासिउं
 जं कवल्लं अंबरु आहासिउं
 जं कविल्लं णिक्किरिउं णिउत्तउ
 जं सुरगुरुणा गत्थि पउत्तं
 तं खं देवं सुसिरु विसिट्ठउ
 घत्ता—एयाणेयविवाइणा
 जेउं कुसुमपिसक्कयं

गाथरुक्खतलि मुणियपयत्थहु ।
 दिवसक्खइ गिन्वाणपगीयहि ।
 जायउ देवहु अप्पसहावउ ।
 अण्णे जीवहु कहिं परमुण्णइ ।
 जं विप्पेण वंमु णिहेसिउं ।
 जं सइवेण सिवत्तु समासिउं ।
 णिग्गुणु णिच्चविसुद्धु अकैत्तं ।
 जं अणंतु अच्छइ अविहत्तं ।
 अप्पाणाउ विहिण्णं दिट्ठउ ।
 पुप्फदंतजिणजोइणा ॥
 पैहि णिहियं तेलोक्कयं ॥१३॥

१४

इंद्रेण जलणेण
 फणिणा कुबेरेण
 दसदिसिहिं आपण
 थोत्तं पढंतेण
 तुहुं धोयरइरेणु
 तुहुं वंधु ह्यदप्पु
 जे दुट्ट पाविट्ट

वरुणेण पवणेण ।
 चंद्रेण सूरेण ।
 सुरवरणिहाएण ।
 शुउ जिणवरो तेण ।
 तुहुं कामदुह्वेणु ।
 तुहुं माय तुहुं वप्पु ।
 णिक्किट्ट जेड धिट्ट ।

५

आश्चर्य उत्पन्न हुए । जब चार वर्ष बीत गये, तो नागवृक्षके नीचे, पदार्थोंको जाननेवाले छद्मस्थ देवको कार्तिक मासकी देवोके द्वारा प्रगीत द्वितीयाके दिनका अन्त होनेपर लोकालोकके अवलोकनका दीप आत्मस्वभाव प्राप्त हो गया । लो, उसीको केवलज्ञान कहा जाता है, किसी दूसरे ज्ञानके द्वारा परम उन्नति कहाँ ? जिसे बुद्धने शून्य प्रकाशित किया है, जिसे ब्राह्मणने ब्रह्मके रूपमें विशेष कथन किया है, जिस कौलने (मीमांसक) स्वर्ग कहा है, जिसे शैवने शिवत्व कहा है, जिसे कपिल (सांख्य) ने निष्किय, निर्गुण, नित्य विशुद्ध और अकर्ता कहा है, जिसे चार्वाकने नास्ति (नही है) कहा है, और जो अनन्त और अविभक्त (अखण्डित) है, देवने उस अन्तःशून्य विशिष्ट अपनेको पृथक् करके देख लिया ।

घत्ता—एकानेक विवादी पुष्पदन्त जिनयोगीने (इस प्रकार) सारे संसारको कामरूपी पिशाचको जीतनेके लिए रास्तेपर लगा दिया ॥१३॥

१४

इन्द्र, अग्नि, वरुण, पवन, नागराज, कुबेर, चन्द्र, सूर्य और दसों दिशाओंसे आये सुरवर-समूहने स्तोत्र पढ़ते हुए जिनवरकी स्तुति की—“तुमने रतिरूपी रेणुको धो लिया है, तुम कामरूपी घनु हो, तुम हस्तदर्प बन्धु हो, तुम माँ हो, तुम बाप हो । जो दुष्ट, पापिष्ठ, निकृष्ट, जड़ और ढीठ

४. AP कवल्लं । ५. A खल्लं । ६. P अक्कत्तउ । ७. A अप्पाणाउ विभिण्णउं; P अप्पसहावें जाएं ।

८. AP पुप्फयत्तं । ९. P पहि णीयं ।

१४. १. P adds after This : जमदिसिक्कुमारेण; णेरइयभावेण । २. P जण वेट्ट ।

	उम्मगिग घट्टति अलियं पर्यंपति परवहु णिहालंति लोहेणं भजंति रोसेस वट्टति जे मासु भक्खंति मूढा ण वंदंति संचरइ जणुं छम्मु बहुजणणजलसेच	महु मज्जु घोट्टति । कामेण कंपति । पारद्धि खेळंति ^३ । परहणु ण वज्जंति । खग्गाइ कट्टति । ते पइं ण पेक्खंति । णिच्चं पि णिंदंति । पइं सुइवि कहिं धम्मु । पइं सुइवि को देउ । लगगं घणतमहुव्वहे । जगडिभं पइं रक्खियं ॥१४॥
१०		
१५		
	घत्ता—मिच्छापरिणामग्गहे णिवडंतं ण उवेक्खियं	

१५

	समवसरणि जिणु संठिउ जावंहिं पण्णारहसय वज्जियसंगहं एक्कलक्खु सहुं पंचावण्णहिं सिक्खुयाहिं णिम्महियरईसहं सत्तसहस केवलणाणालहं भयसहास वयसय मणपज्जय वईतंठियपच्चतरदाइहिं	अट्ठासी ह्य गणहर तांविहिं । परमरिसिहिं जाणियपुव्वंगहं । सहसहिं पंचसईसंपण्णहिं । अट्टसहस चउसय ओहीसहं । तेरहसहसइं विक्किरियालहं । णाणधारि दोसासय दुज्जय । रिदुसहसइं रिदुसयइं विवाइहिं ।
५		

उन्मार्गपर चलते हैं, मधु बीर मद्य खाते हैं, झूठ बोलते हैं, कामसे कांपते हैं, परवधूको देखते हैं, शिकार खेलते हैं, लोभसे भग्न होते हैं, परधनको नहीं छोडते, क्रोधसे भड़कते हैं, तलवारें निकाल लेते हैं और जो मांस खाते हैं वे तुम्हें नहीं देख सकते। मूर्ख तुम्हारी वन्दना नहीं करते, नित्य तुम्हारी निन्दा करते हैं, जन क्षमा धारण करता है, आपको छोड़कर कहीं धर्म है, संसाररूपी जलके लिए सेतु हो, तुम्हें छोड़कर कौन देव हो ?

घत्ता—मिथ्या परिणामका जिसमें आमह है ऐसे घनतमरूपी दुष्पथमें लगे हुए, गिरते हुए विश्वरूपी बालकको तुमने उपेक्षा नहीं की, उसकी रक्षा की ॥१४॥

१५

जैसे ही जिनवर समवसरणमें विराजमान हुए, तों उनके अठासी गणधर हुए। परियहसे रहित पूर्वांगोंको जाननेवाले पन्द्रह सौ परममुनि, एक लाख पचपन हजार पांच सौ शिक्षक थे। कामदेवको नष्ट करनेवाले आठ हजार चार सौ अवधिज्ञानी थे। केवलज्ञानके धारी सात हजार थे, विक्रियाक्रुद्धिके धारक तेरह हजार थे, सात हजार पांच सौ मनःपर्ययज्ञानके धारक थे।

३. P खेळंति । ४. P reads a as b and b as a । ५. A जणल्लम्मु; P जहिं छम्मु । ६. P हुप्पहे । ७. A णिवडंतल ।

१५. १. P adds after this : एए मुणि संजाया तांविहिं, इंदचंदविसहरमणहर । २. P अट्ठासीस जाया गणधर । ३. AP सिक्खुवाहं । ४. AP वयतडिय ।

सहुं असीइसहसइं गिरवज्जहं
 दोणिण लक्ख पालियघरधम्महं
 अमरच्छरत्तलहं गयसंखइं
 इय एत्तियलोपं संजुत्तहु
 महि विहरंतहु धम्मु कैहंतहु
 अट्टवीसपुव्वंगविहीणत्त
 घत्ता—मासमेत्त मुणिगणज्जुओ
 लंबियपाणि मणोहरे

लक्खइं तिणिण पत्तइं अज्जहं ।
 मणुयहं मणुइहिं पंच सुसोम्महं ।
 तिरियइं पुणु कहियाइं ससंखइं ।
 सुवणत्तयराईवयमित्तहु ।
 पुप्फदंतदेवहु अरहंतहु ।
 पुव्वहं एकु लक्खु तैहिं शीणत्तं ।
 फणिदेवासुरणरथुओ ॥
 थिच्च संमेयमहीहरे ॥१५॥

१०

१५

१६

आवसमाणइं गौमइं गोत्तइं
 दंडकवाडरुजगजगपूरइं
 तेज्जइओरालियकम्मइयइं
 च्चवेत्तिवि कट्ठिद्वि आचंचिवि
 च्चसमयंतयालु थिच्च देहइ
 अवरणइ सहुं मुणिहिं सहासं
 पुज्जिय तणु च्चच्चैविहहिं सुरिंदहिं
 गइ देवाहिदेवि अवचगगहु

करिवि वेयणीयाइं गिहित्तइं ।
 विरइवि मुक्कइं तिणिण सरीरइं ।
 ज्ञां विमुक्कइं पुणु वि ण लइयइं ।
 जीवपएस सयलघण संचिवि ।
 भद्वप सुक्कट्टिमिदियहइ ।
 सिद्धच्च जिणु जणजयजयघोसं ।
 वंदिच्च इंदपडिंदपरिंदहिं ।
 गत्त सुरयणु णीसेसु वि सग्गहु ।

५

वितण्डावादियोको प्रत्युत्तर देनेवाले वादी मुनि छह हजार छह सौ, तीन लाख अस्सी हजार निरवध आर्यिकाएँ थी, दो लाख गृहस्थ धर्मका पालन करनेवाले श्रावक थे और सुसौम्या पाँच लाख श्राविकाएँ थी। अमरों और अप्सराओंका कुल असंख्यात था परन्तु तिर्यंच ससंख्य कहे गये हैं। इस प्रकार इन लोगोंसे संयुक्त तथा भुवनत्रयरूपी कमलके लिए सूर्यके समान अरहन्त पुष्पदन्तकी धरतीपर विहार और धर्मोपदेशका कथन करते हुए अट्टाईस पूर्वांग रहित एक लाख पूर्व समय बीत गया।

घत्ता—मूनिमूहसे सहित, नागदेव और असुरोंसे संस्तुत हाथ ऊँचा किये हुए वह सुन्दर सम्मेद शिखर पर्वतपर स्थित हो गये ॥१५॥

१६

आयुकर्म, नाम, गोत्र और वेदनीय कर्मका उन्होंने नाश कर दिया और दण्ड, कपाट, प्रतर और लोकपूरणकी रचना कर उन्होंने तीनों शरीर छोड़ दिये। जब उन्होंने तैजस, औदारिक और कामर्षण शरीरको छोड़ दिया तो उन्हें दुबारा ग्रहण नहीं किया। एकत्रित, आकर्षित और संकोचित कर समस्त सषण जीवप्रदेशोंको संचित कर चार समयके अन्तराल (दण्ड, कपाट, प्रतर और लोक-पूरण) तक, देहमे स्थित रहकर, भाद्रपदके शुक्लपक्षके उत्कृष्ट अष्टमीके दिन अपराह्णपे एक हजार मुनियोंके साथ, लोगोंके जयघोषके साथ जिन सिद्ध हो गये। चार प्रकारके देवेन्द्रोंने उनके शरीर-को पूजा की। इन्द्र-प्रतीन्द्र-नरेन्द्रोंने वन्दना की। देवाधिदेवके मोक्ष जानेपर समस्त देवसमूह भी स्वर्ग चला गया।

५. A करंतहु । ६. AP पुप्फयंत । ७. A तहो शीणत्तं; P परिखीणत्तं । ८. A मासमेत्तं ।

१६ १. P णामयं । २. A दंडकवाडरुजगजगं; P दंडकवाडपरजगं । ३. P तेजोरालियकम्मं ।

४. A जोयविमुक्कइं; P जाएवि मुक्कइं । ५. AP सिहिं दिण्ण सिंदिहं ।

घत्ता—जिह भरहस्स समीरिओ रिसहेणंगयवयरिओ ॥
 १० तिह मइं तुह कहिओ इमो पुप्फदंतजिणपुंगमो ॥१६॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकहपुप्फयंतविरहए महामण्वभरहाणुमणिणए
 महाकव्वे पुप्फदंतजिणव्वाणममणो णाम सत्तचालीसमो परिच्छेओ समत्ते ॥१७॥
 ॥ जिणपुप्फयंतचरिवं समत्तं ॥

घत्ता—जिस प्रकार ऋषभनाथने कामके शत्रु भरतसे कहा था, उसी प्रकार जिनवर श्रेष्ठ
 पुष्पदन्तका यह चरित मैंने तुमसे कहा ॥१६॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
 विरचित और महामण्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका पुष्पदन्त निर्वाणमम
 नामका सैंतालीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥१७॥

संधि ४८

आसच्छणदच्छ सच्छिणियच्छियधम्मपह ॥
सुणि सेणियराय सीयलणाहहु तणिय कह ॥ ध्रुवकं ॥

१

जो परिपालियतिरयणो	पयजुयपाडियसुरयणो ।	
तिक्खं वारियदुब्बहं	जस्स वयं परदुब्बहं ।	
बुहतोसो परमागमो	जेण कओ परमागमो ।	५
कणयकमलकोसाहओ	अविणस्सरसिरिसाहओ ।	
जो पिहियासवदारओ	णग्गो णिग्घरदारओ ।	
णासियणिञ्जायारओ	पोसियपंचायारओ ।	
अमुणियवणियौयल्लओ	जो दयाइ अल्लल्लओ ।	
जस्स पहुँसइ जइयणो	वसहएहिं णिज्जइ यणो ।	१०
जेव तेव उग्गययगं	धरियं जीवेणंगयं ।	
तं वीहच्छं पूइयं	गंधमल्लविहिपूइयं ।	
तइ वि खलं खइ तावयं	होइ ण हो चत्तावयं ।	
एत्थ सणेहं सीसया	जस्स कुणंति ण सीसया ।	

सन्धि ४८

श्री गौतम स्वामी कहते हैं—पूछनेमें चतुर तथा धर्मकी प्रभाको अपनी आँखोंसे देखनेवाले हे श्रेणिकराजा, तुम शीतलनाथकी कथा सुनो ।

१

जो तीन रत्नों (सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र) का पालन करनेवाले हैं, जिनके चरणोंमें सुर समूह प्रणत है, जिनका व्रत तीव्र तथा दुष्पापका निवारण करनेवाला है, तथा दूसरोंके लिए कठिन है, जो अत्यन्त सन्तुष्ट है, और श्रेष्ठ लक्ष्मीके कारण हैं, जिन्होंने परमागमोंकी रचना की है, जो स्वर्णकमलको कर्णिकाके समान हैं, जो अविनश्वर श्रीकी साधना करनेवाले हैं, जिन्होंने आस्रवके द्वारको ढक दिया है, जो वस्त्रहीन और गृहद्वारसे रहित हैं, जिन्होंने नीच आचरणका नाश कर दिया है, जिन्होंने पांच आचारोंका परिपालन किया है, जिन्होंने स्त्रियोंके कटाक्षोंकी उपेक्षा की है, तथा जो दयासे अत्यन्त आर्द्र हैं, जिनसे यति जन अत्यन्त आलोकित होते हैं, जिस प्रकार वृषभेन्द्रों द्वारा शकट ढोया जाता है, उसी प्रकार जीवोंके द्वारा रोगोंसे युक्त शरीर ढोया जाता है, जो बीभत्स और दुर्गन्धयुक्त है, गन्धमाल्य विधिसे पवित्र होते हुए भी जो दुष्ट, नश्वर और सन्तापदायक है, जो आपत्तियोंसे रहित नहीं है ऐसे शरीरमें जिसके शिष्य रति नहीं करते,

१ १. AP सच्छणियच्छियं । A पालियं । २. A कणयकलसं । ३. वणियापल्लओ । ४. A पयासइ; P य मासइ । ५. A णिज्जययणो; P णिज्जइयणो । ६. A जत्थ ।

- १५ जं दृष्टुं सकाणणं महुसमयम्मि व काणणं ।
 विथंसइ ससहरराहयं कमलं पिब रविभाहयं ।
 जो वणवासि वसी यलं वयणं चंदणसीयलं ।
 जस्स पसाया सीयलं हवइ णविवि तं सीयलं ।
 घत्ता—गुणभइगुणीहि जो संथुळ गुणगरुयगइ ॥
- २० दहमळ जिणणाहु हँचं वि थुणविं सो दिव्वजइ ॥१॥

२

- उत्तुंगकोलखंडियकसेरु पुम्बरवरदीवइ पुम्बमेरु ।
 तहु पुम्बविदेहइ वहइ विमल णइ कीलमाणकारंडजुयल ।
 खरदंडसंडदलछइयणीर डिंडीरपिंडपंडुरियतीर ।
 दरिसियपयंडसोंडालली लोलंतथूलकल्लोलमाल ।
 ५ जुज्झंतचडुलकरिमयरणिलय परिभमियगहीरावत्तवलय ।
 जलपक्खालियतंडसाहिसाह णामेण सीय सीयल सगाह ।
 दाहिणइ धणसंछणणीसिम उवयंठि ताहि संठिय सुसीम ।
 जसससिधवलियदिच्चक्कवालु तहि णयरिहि णरवइ पुहइपालु ।

जिन्हें देखकर देवेन्द्रका मुख उसी प्रकार विकसित हो जाता है, जिस प्रकार वसन्तकालके आनेपर कानन, और सूर्यकी प्रभासे आहत होकर कमल खिल जाता है, जो वनमे निवास करते हैं, आत्माके वशीभूत है, जिनके वचन चन्द्रमाके समान शीतल है, जिन्हें नमस्कार कर मनुष्य शान्त हो जाता है—

घत्ता—गुणभद्र जो आचार्यके गुणसे संस्तुत है, जो गुणोंसे महान् गतिशील है, ऐसे उन दसवें जिननाथ दिव्ययति शीतलनाथको मैं प्रणाम करता हूँ ॥१॥

२

जहाँ उन्नत सुअर जड़ोंको खण्डित करते हैं, पुष्करद्वीपमे ऐसा पूर्व सुमेरु पर्वत है। उसके पूर्वविदेहमें पवित्र सीता नामकी नदी बहती है, जिसमे हंसयुगल क्रीडा करता है, जिसका जल कमलसमूहसे आच्छादित है, फेनोके समूहसे जिसके तट धवल है, जिसमे प्रचण्ड जलगर्जोंकी क्रोड़ा दिखाई देती है, जिसमें चंचल स्थूल लहरोकी माला है, जो लड़ते हुए गर्जों और मगरोका घर है, जिसमे गम्भीर जलावर्तोंके समूह परिभ्रमित हैं, जिसके तटवर्ती वृक्षोंकी शाखाओंको जलो-से प्रक्षालित कर दिया है, और जो ग्राहोसे युक्त है, ऐसी उस सीता नदीके दक्षिण तटपर धान्योंसे आच्छादित ऐसी सुसीमा नामकी नगरी स्थित है। उस नगरीका यशस्वी चन्द्रसे

७ A विहसइ । ८. AP. गुणगरुवमइ । ९. P हँचं थुणामि सो ।
 २. १. A उत्तंगं ; P उत्तुगु । २. P तंडि साहिघाह । ३. A संछणणं ।

पॅरिहासियतिचलिइ जणियसोह	दाबियरोमावलिअंकुरोह ।	
घणथणहल कौतलभसलसाम	कयपत्तौवलि अहिजणियराम ।	१०
पियचिडविचेदणुवभासकाम	कोमलिय सरस खंदिण्णकाम ।	
णं पवरअणंगहु तणिय वेळि	णं तामु जि केरी इत्थमह्लि ।	
सूहव सारंगसिलिंवयच्छि	तहु वल्लह देवि वसंतलच्छि ।	
सा मुल्लिथंगि पंचत्तु पत्त	णीसासविवज्जिय पिहियणेत ।	
अवलयोचि चिंतइ सामिसालु	णिफ्लु मोहंधंहुं मोहजालु ।	१५
मुथ मेरी पिय पयडीकॅपहिं	हसइ व दसणेहिं गिसिक्किएहिं ।	
तोडेपिणु णिब्भरु गेहवासु	अकहंति दुक्क परजन्मवासु ।	
अपणिय एह मइं भणिय काइं	इह परियणसयणइं जाइं जाइं ।	
संचियणियेकम्मवसंगयाइं	जाहिंति एंव सव्वाइं ताइं ।	
एक्कं मइं जाएवळं णियाणि	तो वरमइं जुंजमि अरुहणाणि ।	२०
जं अच्छिवि पुणु वि विणासैभौउ	तं सुवइ एंव भणेवि राउ ।	

घत्ता—करु देंति विहेय कुंमिणि एव तोसियजणहु ॥

कुंमिणि ढोएवि चंदणैमहु णंदणहु ॥२॥

दिरमण्डलको आलोकित करनेवाला पृथ्वीपाल नामका राजा था । उसकी भृगुशावककी आँखोंके समान आँखोंवाली वसन्तलक्ष्मी नामकी प्रिया थी, जो परिखात्रय (तीन खाइयों) के समान त्रिवलिसे शोभावाली थी, जो रोमावलीके अंकुरसमूहवाली थी, जो सधन स्थनरूपी फलोसे युक्त थी, जो कुन्तलरूपी भ्रमरोंसे सुन्दर थी, की गयी पत्र-रचनावलीसे जो अत्यन्त सौन्दर्य उत्पन्न करनेवाली थी । जिसमे प्रियरूपी वृक्षको घेरनेकी उत्कृष्ट शोभा और इच्छा थी, जो अत्यन्त कोमल, सरस और कामनाओंकी पूर्ति करनेवाली थी ऐसी जो मानो प्रवर कामदेवकी लता है, जो मानो उसीके हाथकी मल्लिका है, लेकिन सुन्दर अंगोवाली वह मृत्युको प्राप्त हो गयी, निःश्वाससे रहित उसकी आँखें बन्द हो गयी । उसे देखकर वह स्वामीश्रेष्ठ विचार करता है कि मोहसे अन्धोका मोहजाल व्यर्थ है, मेरी मरी हुई प्रिया क्रीड़ाशून्य निकले हुए दाँतोसे जैसे हँस रही है, अपने परिपूर्ण स्नेहपाशको तोड़कर जैसे वह कुछ भी नहीं कहती हुई दूसरे जन्मवासमे पहुँच गयी है । मैंने इसे अपनी वधो कहा ? यहाँ जितने भी स्वजन और परिजन है, वे सब अपने सचित कर्मके वशीभूत होकर जायेंगे । जब अन्तमें मैं अकेला जाऊँगा, तो अच्छा है कि मैं अरहन्तके श्रेष्ठज्ञानमे अपनेको नियुक्त करूँ । और जो विनाशभाव है उसे छोड़ देना चाहिए, यह कहकर वह राजा—

घत्ता—कर (सूँड़ और कर) देती हुई हथिनीके समान पृथ्वी-लोगोंको सन्तुष्ट करनेवाले अपने चन्दन नामक पुत्रको देकर (वह)—॥२॥

४. A विरइयणाथरणरमणियरोहु । ५. A अंकुरोहु । ६. P कृतल । ७. P कयवत्तावलि । ८. A वेढणव्भासं ; P वेढदणुं ; ९. A पयडीकिएहि । १०. A णिवकम्म । ११. A विणासु भाव ; P विणासिमाउ । १२. चंदणामे ।

३

- मुणिवरु जायच संसारकूलि
सीलद्धरोमु गयसीहरोलि
गुल्लु सपिण्णु दुद्धु तेरंगु तेल्लु
पाल्लु पारत्तिळ मेरुधीरु
५ उवयरणगहणि णिक्खेवणेसु
जोयइ तसथावर मग्गचरणि
तं जंपइ जेण ण पावबंधु
तवु करिवि तिव्वु णिम्मुकककामु
आराहण भयवइ संभरेवि
१० माणिकककडयचेंचइयवाहु
वावीससमुहंपमाणियाड
- आणंदमहामुणिपायमूलि ।
णिवसइ गिरिवरकुहरंतरालि ।
वियडीच ण भुंजइ जइ वल्लि ।
णवकोडिविसुद्धु वंभचेरु ।
परिहरइ दोसु रिसि भोयणेसु ।
उच्चारखेलपस्सावकरणि ।
संजमभारालंकरियखंधु ।
वंधेप्पिणु तं तित्थयरणांसु ।
सो अवसणु कयणिरसणु मरेवि ।
संजायड आरणि अमरणहु ।
तिरयणिसरीरु^२ वणणेण सेड ।

घत्ता—तहु पक्ख दुवीस अवहिय^३ सासहु परिगणिय ॥

तइवरिससहास आहारंतरु मुणिभणिय ॥३॥

३

संसारके तटस्वरूप आनन्द महामुनिके चरणमूलमें जाकर मुनि हो गया। ऊण्डसे जिसके रोम खड़े हो गये हैं ऐसा वह गज और सिंहोंके शब्दोंवाले गिरिवरके कुहरोके भीतर निवास करता है, गुड़-धी-दूध-दही-तेल तथा विकृतियाँ, मधु-मांस मद्य और नवनीत आदि वस्तुओंको आत्मवशो वह यति नहीं खाता। मोक्षार्थी और सुमेखपर्वतके समान धीर वह नौ प्रकारसे विचूढ़ ब्रह्मचर्यका पालन करता है। उपकरणोंके ग्रहण करने और निक्षेपण तथा भोजनमें वह मुनि दोषोंका परिहार करता है। मार्गकी चर्यामें बोलने, धूकने और प्रस्रवण करनेमें त्रस-स्थावरको देखकर चलता है, इस प्रकार बोलता है जिससे पापबन्ध नहीं होता। संयमके भारके लिए जो समर्थ आघारस्तम्भ है। कामसे मुक्त वह तोत्र तप तपकर, तीर्थकर नामप्रकृतिका बन्ध कर भगवती आराधना कर दिग्म्बर वह निराहार भरकर, जिसके बाहु माणिक्यके केयूरोसे शोभित है? आरण स्वर्ण ऐसा इन्द्र हुआ। उसकी आयु बाईस सागर प्रमाण थी, तीन हाथ उसका शरीर था, और उसका वर्ण श्वेत था।

घत्ता—बाईस पक्षमें वह श्वास लेता था और बाईस हजार वर्षमें आहार ग्रहण करता था जैसा मुनियोंके द्वारा कहा गया है ॥३॥

३. १. A सीहु व्व रोमगयं । २. P गुहु । ३. A नेरंगु and gloss दधि; T जेरंगु दधि । ४. रसल्लु ।
५. A पारइ पारत्तड । ६. A गहणं । ७. P पस्सवणकरणि । ८. A तित्थु णिम्मुककं । ९. AP काडं । १०. AP णाडं । ११. P पमाणुशड । १२. A सरीर । १३. AP अवहिय ।

४

गिरुवमसुहसंपावणखणेण
 सो कर्हि वि ण मेल्लइ सुक्कलेस
 परियाणइ पेच्छइ तमपहंतु
 उदुंभाससेसि जीवियपमाणि,
 भो गुञ्जय बुञ्जहि भसियसरहि,
 मलययदुमसुरहिउ मलयदेसु
 रइकइयवकीलाकोच्छराउ
 जहि कामधेणुणिह गोहणाई
 जहि णिञ्चमेव मंगलणिणदुदु
 रणरंगंतुंगमायंगसीहु
 मुहयंदोहाभियसंदचंद
 विसहरवंदारयवंदवंदु
 जज्जाहि तांवे तुहुं करहि तेंव

रमणीरमैणु चि सारइ मणेण ।
 जिणु पणवइ गेणहइ चरणसेस ।
 अट्टगुणसारु महिसा सहंतु ।
 आघोसइ सयमहु उदुंविमाणि ।
 किं बहुपं जंदुदीवेभरहि ।
 जहिं गरहिं परिट्टिउ अमरवेसु ।
 जहिं कामिणीउ णं अच्छराउ ।
 जहिं कप्परुक्खैरिद्धई वणाई ।
 तहिं पुरवरु णामें रायमदुदु ।
 दढरहु णरिंदु जयजयसिरीहु ।
 महएवि तासु णामें सुणंद ।
 एयहं णंदणु होसइ जिणिंदु ।
 संभवइ णयेंरु घर दिव्वु जेंव ।

५

१०

घत्ता—ता वइसवणेण तं पट्टणु कंचणुं घडिउं ॥

मणिकिरणकरालु सग्गखंडु णावइ पडिउं ॥४॥

१५

४

अनुपम सुखकी संप्राप्तिके क्षणवाले मनसे वह स्त्रीरमण करता है, वह अपनी शुक्ल-लेश्याका कभीका परित्याग कर चुका है, जिनको प्रणाम करता है और उनके चरणरूपी अक्षतोंको ग्रहण करता है। तमप्रभा नरक तक वह देखता है और जानता है, आठ गुणोंसे युक्त और महिमामें म्हात्। उसके जीवन प्राणके छह साह शेष रहनेपर इन्द्र अपने ऋतु विमानसे कहता है—“हे कुबेर, जिससे श्वापद परिभ्रमण करते हैं ऐसे जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमे मलयवृक्षोंसे सुरमित मलय-देश है। जहाँ मनुष्योंने अमररूप बना रखा है। रतिकी कैतवक्रोड़ामे दक्ष स्त्रियाँ ऐसी मालूम होती हैं, मानो अप्सराएँ हो। जहाँ गोधन कामधेनुके समान हैं। जहाँ वन कल्पवृक्षोंसे सम्पन्न हैं। जहाँ मंगल शब्द प्रतिदिन होते हैं, वहाँ राजभद्र नामका नगर है। उसमें युद्धके रंगमे ऊँचे गज और सिंहोंके समान तथा विजयलक्ष्मीके इच्छुक दृढरथ नामका राजा था। उसकी अपने मुखचन्द्रसे विशालचन्द्रको तिरस्कृत करनेवाली सुनन्दा नामकी महादेवी थी। नागराजो और देवोंके समूहके द्वारा बन्दनीय जिनैन्द्र, इनके पुत्र हीगे। तुम जाओ और वहाँ इस प्रकार करो कि जिससे दिव्य धर और नगर उत्पन्न हो जायें।

घत्ता—तब कुबेरने स्वर्णमय नगरकी रचना की, जैसे मणिकिरणोंसे उन्नत स्वर्गखण्ड गिर पड़ा हो ॥४॥

४. १. A °रमण । २. AP उदुमासं । ३. AP उदुविमाणि । ४. P जंदुदीवि भरहि । ५. AP मलयदुमं ।
 ६. A कप्परुक्खणिद्धं । ७. मुहयंदो । ८. P ताहं । ९. A णवर । १०. AP कंचणघडिउं ।

	जहिं दीसइ तहिं सोवणभवणु	जहिं दीसइ तहिं वणसुरहिपवणु ।
	जहिं दीसइ तहिं हरिणीलणीलु	जहिं दीसइ तहिं वररमणिलीलु ।
	जहिं दीसइ तहिं मंडलु विचिंतु	जहिं दीसइ तहिं धुसिणावलित्तु ।
	जहिं दीसइ तहिं मुत्तावलिल्लु	जहिं दीसइ तहिं णवतोरणिल्लु ।
५	जहिं दीसइ तहिं कप्पूरेणु	जहिं दीसइ तहिं गज्जियकरेणु ।
	जहिं दीसइ तहिं थियकामधेणु	जहिं दीसइ तहिं वज्जंतवेणु ।
	जहिं दीसइ तहिं वीणारवालु	जहिं दीसइ तहिं अलिउलवमालु ।
	जहिं दीसइ तहिं चळचिधेचवलु	जहिं दीसइ तहिं ससियंतधवलु ।
	जहिं दीसइ तहिं विविहुच्छबोहु	जहिं दीसइ तहिं कयरच्छसोहु ।
१०	जहिं दीसइ तहिं णखियमऊरु	जहिं दीसइ तहिं सिरिविहवफारु ।

घत्ता—जहिं दीसइ तेत्थु पुरवरु जणमणु रावइ ॥

पिययमहिं सरीरु जिह तिह चंगचं भावइ ॥५॥

६

तहिं विजयंदिरे	णिवणिहेलणे सुंदरे ।
णयंगि सियणेत्थिया	रयणमंचए सुत्थिया ।
णिएइ छेउओयरी	सिविणए ईमे सुंदरी ।

५

जहाँ दिखाई देता है वहाँ स्वर्णभवन है, जहाँ दिखाई देता है वहाँ वनका सुरभित पवन है। जहाँ दिखाई देता है हरे और नील मणियोंसे नील है, जहाँ दिखाई देता है वहाँ उत्तमस्त्रियोंकी लीला है, जहाँ दिखाई देता है वहाँ विचित्र मण्डप है, जहाँ दिखाई देता है वही केदारसे विलिप्त है, जहाँ दिखाई देता है, वहाँ मुक्तावलिर्वा हैं, जहाँ दिखाई देता है वहाँ नव तोरण हैं, जहाँ दिखाई देता है कपूर की धूल है, जहाँ दिखाई देता है गरजते हुए हाथी हैं, जहाँ दिखाई देता है, वहाँ स्थित कामधेनुएँ हैं। जहाँ दिखाई देता है वहाँ वजते हुए वेणु हैं, जहाँ दिखाई देता है वीणाके शब्दका निनाद है, जहाँ दिखाई देता है वहाँ भ्रमरकुल कलकल है, जहाँ दिखाई देता है वहाँ चंचल चिधोंसे चपल है। जहाँ दिखाई देता है, वहाँ चन्द्रक्रान्तकी धवलता है। जहाँ दिखाई देता है वहाँ विविध उत्सवोंका समूह है। जहाँ दिखाई देता है, वहाँ की गयी रथ्या शोभा (मार्ग शोभा) है। जहाँ दिखाई देता है, वहाँ नाचते हुए मयूर हैं। जहाँ दिखाई देता है, वहाँ श्री और वैभवका विस्तार है।

घत्ता—जहाँ दिखाई देता है, वहाँ वह नगर जनमन-रंजन करता है। जिस प्रकार प्रियतमाका शरीर अच्छा लगता है, उसी प्रकार वह नगर अच्छा लगता है ॥५॥

६

वहाँ विजयसे आनन्दित होनेवाले राजाके सुन्दर भवनमें रत्नमंचपर सोती हुई, नर्तकी और श्वेतनेत्रवाली कृशोदरी वह सुन्दरी स्वप्नमें यह देखती है, जो मजदल झर रहा है और जिसपर

५. १. AP णव । २. P adds after this: जहिं दीसइ तहिं खेररु कीलु, जहिं दीसइ तहिं सुरव-
रहिं मेलु । ३. A मंडल । ४. P चळचिधु चवलु । ५. AP सिरिविहवफारु ।
६. १. AP विजयंदिरे । २. A छेउओयरी; P तुच्छओयरी । ३. AP धं ।

गयं गलियमयजलं	भसियभिगकोलाहलं ।	
विसं रसियपेसलं	खरखुरग्गखयभूयलं ।	५
करालणहभइरवं	कयरवं च कंठीरवं ।	
कुसेसयगिर्वसिणि	सिरिसुर्विदसीमतिणि ।	
पसूयसयमालियं	भसैरपंतियाकालियं ।	
विहुं विहियजामिणि	खरयरं खचूडामणि ।	
झसाण जुयलं चलं	कुडजुयं ससंकामलं ।	१०
सरोरुहसरोवरं	मयरमंदिरं गजिरं ।	
मइंदर्पवरुडयं	रयणचित्तियं पीढयं ।	
पुरंदरणिहेलणं	भवणमुज्जलं भावणं ।	
महारयणरासियं	सिहिणसुरुसिहुवभासियं ।	
घत्ता—इय पेच्छिवि ताए रायहु गंपि ^१ समासियउं ।।		१५
सिविणियफलु ^२ तेण कंतहि कंतं भासिउं ॥६॥		

७

जस्स छत्तत्तयं	जरस लोयत्तयं ।	
वहइ दासित्तणं	कुणइ गुणंकित्तणं ।	
मणिमयरकुंडलो	जस्स आहंडलो ।	
धिविवि णवकुवलयं	णवइ कमकमलयं ।	
सो तुहं तणुरुहो	चंडि होही सुहो ।	५
देवदेवो जिणो	खं तिपोमिणिइणो ।	

मंडराते हुए भ्रमरोंका कोलाहल हो रहा है, ऐसा मदगज, गर्जनामें बड़ा चतुर और तीव्र खुरोके अग्रभागसे भूतल खोदता वृषभ, विद्याल नखोसे भयंकर, शब्द करता हुआ सिंह, विष्णुकी पत्नी और कमलमे निवास करनेवाली लक्ष्मी, भ्रमरपंक्तिसे शोभित पुष्पमालाएँ, रात्रिको करनेवाला चन्द्रमा, आकाशका चूडामणि सूर्य, मत्स्योंका चंचल युग्म; चन्द्रमाकी तरह स्वच्छ कुम्भयुग्म, कमलोंका सरोवर, गरजता हुआ समुद्र; सिंहांपर आरूढ़, रत्ननिर्मित आसन (सिंहासन), इन्द्रका निकेतन, उज्ज्वल भावन-भवन ? (यहाँ नाग लोकका उल्लेख नहीं है); महारत्नराशि और प्रचुर ज्वालाओसे भास्वर अग्नि ।

घत्ता—यह देखकर उसने जाकर राजासे निवेदन किया । उसने भी अपनी कान्ताको स्वप्नोंका फल बताया ॥६॥

७

हे सुन्दरी, जिनके तीन छत्र हैं, तथा त्रिलोक जिनका दासत्व वहन करता है और गुण कीर्तन करता है, मणिमय मकराकृति कुण्डलोवाला इन्द्र, नवकमल अपित कर जिनके चरणकमलों की वन्दना करता है, ऐसे वह शुभ देव देव, शान्तिरूपी कमलनीके लिए सूर्य, जिन तुम्हारे पुत्र होंगे । बुद्धि कान्ति श्री लक्ष्मी कीर्ति ह्री, गर्भशोधन करनेवाली देवांगनाएँ आयी, मत्तगजगामिनी

४. P^० णिवासिणे । ५. A सिरि उर्विद^० । ६. P^० सीमतिणी । ७. AP भवरं । ८. A मयदसुरं; P मइंदसिरं । ९. AP रयणणिम्मियं । १०. P समासिउं । ११. AP सिविणयं ।

	बुद्धि ^१ कंती सिरी गन्धसुद्धीयरी मत्तगयगामिणी	लच्छि ^२ कित्ती ह्रीरी । अमरवरसुन्दरी । राइणो सौमिणी ।
१०	ताहि संसेविया दुक्खपक्खक्खया वित्तएणं सयं आइमासंतरे अट्टमीवासरे	तित्थणाहंविद्या । हेसवुद्धी कया । जाव छम्मासयं । किण्हपक्खंतरे । रविकिरणभासुरे ।
१५	रिक्खए रूढए माउथासंगओ तत्थ जंभारिणा मण्णिऊणं पईं सोत्तकोडीसमे	उत्तरासाढए । गन्धवासं गओ । वेरिखंघारिणा । पुंजियं दंपईं । वारिहीणं गमे ।
२०	णाणविद्धंसयं संजमे संमए पुप्फदंतंतरे छीणसालंछणे णंददेवीसुओ	पल्लचोत्थंसयं । णट्टए धम्मए । साहमासे वरे । वारसिल्ले दिणे । विस्सजोए हुआओ ।
२५	तां व संतोसिओ अग्गि वाऊ ^{११} सही रिंछवाहो परो पोमसंखाहिवो चमर चइरोयणो सयल देवा खणे	आगओ कोसिओ । दंडधारीवही ^{१२} । वारिणीसामरो । सुलपाणी भवो । भाणु सयलंछणो । तूसमाणा मणे ।
३०	आगयं तं पुरं	राइणो मंदिरं ।

राजाकी स्वामिनी तीर्थकरकी माताकी उन्हींने सेवा की। कुबेरने स्वयं दुखपक्षका नाश करनेवाली स्वर्णवृष्टि छह माह तक की। चैत्र माहके कृष्णपक्षके सूर्यकी किरणोंसे आलोकित अष्टमीके दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्रके रूढ़ होनेपर, वह माताके उदरमें गर्भवासको प्राप्त हुए। उस अवसरपर शत्रुओं का संहार करनेवाले इन्द्रने स्वामीको मानकर दृढ़रथ दपतिकी पूजा की। नौ करोड़ प्रमाण सागर, समय बीतनेपर, तथा पत्यके चौथाई भाग तक (जन्मके पूर्व) ज्ञानका विध्वंस, संयम और सम्यक्त्व और धर्मका नाश होनेपर पुष्पदन्तके बाद माघ कृष्ण द्वादशीके दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्रके विश्वयोगमे नन्दादेवीको पुत्रकी उत्पत्ति हुई। इन्द्र अत्यन्त सन्तुष्ट होकर आया, अग्नि वायु और इन्द्रसे भयभीत यम रीछपर सवार एक और देव, वारुण सामर कुबेर शूलपाणि शिव चामर वैरोचन सूर्य और चन्द्र आदि सभी देवता मनमें सन्तुष्ट होकर, राजाके उस घर आये।

७. १. A किति । २. A कति । ३. AP हिरी । ४. P भामिणी । ५. A कण्हपक्खंतरे । ६. AP पईं ।
७. AP पुज्जओ दंपईं । ८. A विद्धसियं । ९. A संयमे । १०. A छीलमालंछणे but records a
p in second hand : क्षीणमयलं छणं इति वा पाठः । ११. सिहो । १२. A बिही । १३. A वारुणो
सामरो । १४. A आगयं तं पुरं ।

घत्ता—उत्तुंग सुवसु कणयच्छवि गहमालियत्त ॥
जिणभेरु सुरेहिं मेरुगिरिहि संचालियत्त ॥७॥

८

तन्मि सेलसिंगए
वंदिओ^३ जसंसिओ
धम्मतित्थरायओ
सीयलेण सीयलो
सिंचिओ मह्छवै
देहदित्तिपिंगलं
णीयवालकंदलं
रायहंसमाणियं
दिव्वावासुंदरे
कक्करे विलंबियं
किणरेहिं वंदियं
संचुयं लयाहरे
भग्गतोडमंडणं
झत्ति धावमाणयं
सित्तखेयरीवरं

पंडुपत्थरंगए ।
वज्जिणा णिवेसिओ ।
दुक्खतोयपोयओ ।
वारिणा गुणामलो ।
देवदुंदुहीरवे ।
सव्वलोयमंगलं ।
चारु सच्छविच्छुलं ।
जाइ ण्हाणवाणियं ।
मंदरस्स कंदरे ।
चंचरीयचुंचियं ।
दाणवाहिणंदियं ।
णायसुंदरीसिरे ।
पावपंकखंडणं ।
धोयदंतिदाणयं ।
अक्खंकीलियाहरं ।

५

१०

१५

घत्ता—जं एंव वहंतु भरइ सिंहरिचिवरंतरइ ॥
तं जिणण्हाणुवु हणत्त भवियजम्मंतरइ ॥८॥

घत्ता—जो ऊँचा है, सुवशावाला और स्वर्ण आभावाला है, ग्रहोंसे घिरा हुआ है, ऐसे जिनश्रेष्ठको देवेन्द्रोंने सुमेरुपर्वतके लिए संचालित किया ॥७॥

८

वहाँ शैल शिखरके पाण्डुकशिलाके अग्रभागपर, यथासे अंकित वन्दनीय जिनवरको इन्द्रने स्थापित कर दिया । देवताओके नगाड़ोंकी ध्वनियोंसे युक्त महोत्सवमें धर्म तीर्थराज दुखरूपी जलके लिए जहाज स्वरूप शीतलनाथका शीतलजलसे अभिषेक किया गया । शरीरकी कान्तिसे पीला, सब लोगोंके लिए मंगलप्रद, जिसके द्वारा, नव अंकुर ले जा रहे हैं, ऐसा सुन्दर स्वच्छ और विच्छुरित तथा राजहंसीसे सम्मानित, दिव्यवासोंसे सुन्दर, ऐसा महाभिषेकजल गिरि कन्दराओंसे विलीन हो गया । भ्रमरोके द्वारा चुम्बित, किन्नरोंके द्वारा वन्दनीय दानवोंके द्वारा अभिनन्दनीय लतागूहोंमें नागसुन्दरियोंके सिरोंपर च्युत, भग्नमुखोंके लिए अलंकार स्वरूप, पापरूपी कीचड़को काटनेवाला, शीघ्र दौड़ता हुआ, हाथियोंके मजजलोकी धोनेवाला, विद्याधरियोंके बरोंको अभिषेक करनेवाला इन्द्रियोंका क्रीड़ा घर ।

घत्ता—जब इस प्रकार वह अभिषेक जल भरत क्षेत्र और पहाड़ोंके विवरोंमें बहता है तो वह सैकड़ो होनेवाले जन्मान्तरोंको नष्ट कर देता है ॥८॥

८. १. A पत्थरंगए । २ P वंदिदं । ३. A^० भविच्छलं । ४. A ष्ठवणवाणियं; P ष्ठवणवाणियं । ५. A सचुयं । ६. A जविळ; P जवळ; T अक्खं । ७. A जिणवरण्हाणुवु ।

९

तं सईं हेडामुहं जइ वि जाइ	उद्गुद्गु तो वि भव्वाइं गेइ ।
सक्केण करिवि अहिसेयभद्दु	आणिउ जिनपुंगुसुं रायभद्दु ।
णिहियउ महएविहि पाणिपोमि	णं इंदिदिउ पप्फुल्लपोमि ।
वंदिवि कुमारु भावें तिणाणि	गउ सग्गावासहु कुलिसपाणि ।
५ जायउ जुवाणु देवाहिदेउ	किं वण्णमि रुवें मयरकेउ ।
जसु एक्कु वि देहावयउ णत्थि	मेसैहु उवमिज्जइ केंव हत्थि ।
किं जिणहु अण्णु उवमाणु को वि	कइयणु जंपइ धिट्ठिमइ तो वि ।
हेमच्छवि संगरभीसणाइं	तणुमाणें णवइ सरासणाइं ।
पुण्वहं तरुणत्ते परिबडंति	जा पंचवीससँहसाइं जंति ।
१० करिवसहविमौणावाहणेण	तांवावेप्पिणु हरिवाहणेण ।
अहिंसिचिचि देवहु पट्टु बद्ध	णारीयणणेहें सो वि बद्धु ।
महि मौणंतहु पुण्वहं गय्याइं	पण्णाससहासइं णिग्गयाइं ।
तेणेक्कहिं दिणिकीलावणंति	कीलंतें णवकमलोयरंति ।

घत्ता—खरदंडकरंडि पिंडियतणु करलालियउ ।

१५ णं सिरिताविच्छु मुउ छच्चरणु णिहालियउ ॥९॥

९

यद्यपि वह स्वयं नीचा मुख करके जाता है, फिर भी भवोको ऊपरसे ऊपर ले जाता है। अभिषेक कल्याण करनेके बाद इन्द्र उन्हें राजभद्र नगर ले आया। उन्हे महादेवीके करकमलमें इस प्रकार दे दिया, मानो खिले हुए कमलपर भ्रमर हो। तीन ज्ञानके धारी कुमारकी वन्दना कर इन्द्र अपने निवास स्वर्ग चला गया। देवाधिदेव युवक हो गये, रूपमें कामदेवके समान उनका क्या वर्णन करूँ परन्तु कामको एक भी शरीरावयव नहीं है। भेषसे हाथीकी तुलना किस प्रकार की जाये? क्या जिनका कोई दूसरा उपमान है? फिर भी घृष्टमति कविजन तब भी उपमान कहता है, स्वर्णके समान कान्तिवाले वह शरीरके मानसे युद्धमें भयंकर नब्बे धनुषके बराबर थे। तरुणाईं में जब पचवीस हजार पूर्व वर्ष बीत गये, तो हाथी, बैल और विमानोंको वाहन बनानेवाले इन्द्रने आकर—अभिषेक कर उन्हें राजपट्ट बांध दिया। वह स्वयं भी भारी स्नेहमें बँध गये। इस प्रकार धरतीका उपभोग करते हुए उनके पचास हजार वर्ष बीत गये। एक दिन क्रोड़ावनमें क्रीड़ा करते हुए कमलके भीतर उन्होंने—

घत्ता—कमल कोशमें करसे लालित और गोल शरीर मरा हुआ भ्रमर देखा मानो तमाल वृक्षका पुरुष हो ॥९॥

९. १. AP भवियाइं । २. P पुंगुवु । ३. A मसयहु । ४. A सहुसाइं होंति । ५. A विवाणावाहणेण ।
६. A माणंतहु । ७. A हयाइं । ८. P ताणेक्कहि । ९. A तं सिरि ।

१०

जं विट्ठु^१ मओ मह्यरु सणालि
 ता चित्तइ जिणु सिरिरसवसाहं
 हो धिगिधिगत्यु धणु धरु कलत्तु
 खणि णच्चइ खणि गायइ सरेहिं
 खणि णिद्धणु खणि विहवत्ति थाइ
 हचं सुकइ सुहइ हचं चाइ भोइ
 हचं चंगर एवं भँणत्तु मरइ
 जहिं जहिं उप्पल्लइ तहिं जि वंधु
 सहुं जाइ ण परिचणसयणसत्थु
 भासंतइ संजयसंमयाइं
 अणुकूलिच तेहिं तिलोयणाहु
 तें प्पहवणु करिवि प्पहु महिच जँव

मयरंदालुद्धउ आरणालि ।
 अलिबिहि होसइ अम्हारिसाहं ।
 जणु सयल मोहमइराइ मत्तु ।
 खणि रोवइ उरु ताडइ करेहिं ।
 उत्ताणणु गन्वेण जाइ ।
 हचं सूहच हचं णिप्पण्णैजोइ ।
 जोणीसुहेसु संसरइ सरइ ।
 अण्णाणल्लणु णउ णियइ अंधु ।
 संसारि णै कासु वि को वि एत्थु ।
 ता पत्तइं सुरवरगुरुसयाइं ।
 तांवाइउ सामरु अमरणाहु ।
 हचं जइ कइ किंकिरँ कहमि तँव ।

५

१०

धत्ता—णियगोत्तहियत्तु पुणु पुणु हियचइ भावियउ ॥

संताणि सडिंभु णरणाहेण णिरुवियउ ॥१०॥

१०

जब उन्होंने नाल सहित कमलमे मकरन्द (पराग) के लोभी भ्रमरको मरा हुआ देखा तो जिन सोचने लगे, लक्ष्मीरूपी रसके लोभी हम लोगोंकी भी भ्रमर जैसी हालत होगी । हो-हो, धन, श्री और धरको धिक्कार, समस्तजन मोहलूपी मदिरासे मतवाला हो रहा है । वह (जन-समूह) क्षणमे नाचने लगता है, क्षणमे स्वरोसे गाने लगता है, क्षणमें रोता है और हावोसे अपने उरको पीटने लगता है । क्षणमे दरिद्र हो जाता है, और क्षणमें वैभवमे स्थित होकर अपने सिर ऊंचा कर गर्वसे चलता है । मैं सुकवि हूँ, मैं सुभट हूँ, मैं त्यागी हूँ, मैं भोगी हूँ । मैं सुभंग हूँ, मैं योगी हूँ । मैं अच्छा हूँ, यह कहता हुआ मृत्युको प्राप्त होता है, और योनिके मुखोंमें रतिपूर्वक भ्रमण करता है । जहाँ-जहाँ उत्पन्न होता है, वहाँ-वहाँ वन्धकी प्राप्त होता है, अज्ञानसे आच्छादित वह अन्धा कुछ नहीं देखता । परिजन और स्वजनका समूह साथ नहीं जाता । संसारमें यहाँ कोई किसीका नहीं है । तब संयम और सम्यक्त्वकी घोषणा करते हुए लौकान्तिक देव वहाँ आये । उन्होंने त्रिलोकनाथको तपके लिए अनुकूलित किया । इतनेमे देवोंके साथ देवेन्द्र आ गया । उसने अभिषेक कर प्रभुकी जिस प्रकार पूजा की मैं जड़कवि उसका किस प्रकार वर्णन करूँ ।

धत्ता—अपने गोत्रके हितका उन्होने मनमें बार-बार विचार किया, और नरनाथने कुल-परम्परामे अपने पुत्रको स्थापित कर दिया ॥१०॥

१०. १. A विट्ठुच मह्यरु मउ सणालि; P मुउ सुणालि । २. A उत्ताणणु जणु गन्वेण जाइ; P खणि उत्ताण-
 णणु गन्वेण । ३. AP णिप्पणु । ४. अण्णत्ति । ५. AP ण कोइ वि कासु एत्थु । ६. A संजय-
 संययाइं; P संजयसंययाइं । ७. A किर कह कहमि ।

११

सुक्कंहि सिवियहि चडिवि चलिड	सुरच्युण जयजय पभणंतु निलिड ।
ओइंण्यु सहेचयवणि महंतु	चरियावरणइं कम्मइं खवंतु ।
माहन्मि मासि विनिरेण कालि	वारहम्मइ दिणि जायंइ विचालि ।
छट्ठोववासु सइइ करेवि	सहुं रायसहासं दिक्ख लेवि ।
५ अवरहि दिणि णहयल्लग्गासिहर	भिक्खाइ पइहु अरिडुणयत ।
णउ एयहु हियवउ सुण्णपडिउ	णउ भक्खइ पइहु णियपत्तपडिउ ।
णउ परिहइ चीवर रंगरिद्धु	बहु का वि भणइ णउ देहि णारि ।
धत्ता—णउ धरइ पिणाउ णउ फणिककणु फुरियकर ॥	

१० हुंकार ण देइ णउ उज्जारइ गेयसत ॥११॥

१२

णउ णडइ ण दावइ उक्कसइहु	बहु का वि भणइ णउ एहु रुद्धु ।
सुरवहुरएण रइयाइं जाइं	वचनाइं णत्थि चत्तारि ताइं ।
णउ कहइ वेउ पसुहणणडंसु	बहु का वि भणइ णउ एहु वंसु ।
बहु का वि भणइ णउ चक्कराणि	ण पडंजइ चाणभयणह्राणि ।
५ णारायणु एहु ण होइ माइ	जाणंमि विक्खायउ भुवणभाइ ।

११

शुक नानकी शिविकामें बहकर बह चले । सुरजन जय-जय कहते हुए इकट्ठे हो गये । चारित्रावरणी कर्मोंका नाश करते हुए वह महात् सहेतुक उद्यानमें उतरे । माघ कृष्ण द्वादशीके दिन, सन्ध्याकालमें श्रद्धासे छत्र उपवास कर एक हजार राजाओंके साथ दक्षिणा लेकर दूसरे दिन लिलके अन्न खिखर आकाशसे लगे हुए हैं, ऐसे अरिष्टनगरमें भिक्षाके लिए गये । (उन्हें देखकर कोई बधू कहती है)—कि इनका हृदय नृत्यसे निर्मित नहीं है, (यह शून्यवादी नहीं हैं), यह अपने पादमें पड़े हुए पल (मांस) को नहीं खाते । रंगसे समृद्ध यह चीवर नहीं पहनते हैं ? कोई बधू कहती है कि यह वृद्ध नहीं हैं । इनके पास तलवार नहीं है, यह कंकाल धारण करनेवाले नहीं हैं, न इनके हाथमें कपाल है और न शरीरमें रजो है ।

धत्ता—यह पिनाक धारण नहीं करते, न नागोंका कंकण और स्फुरित हाथ है ? यह न हुंकार देते हैं और न गीतस्वरका उच्चारण करते हैं ? ॥११॥

१२

न नृत्य करते हैं और उक्का शब्दका प्रदर्शन करते हैं । कोई बधू कहती है कि यह रुद्ध नहीं है । सुरधमू (तिलोत्तमा अप्सरा)के द्वारा जिनकी रचना की गयी है, ऐसे वे चार मुख इनके नहीं हैं, पशुवधके अहंकारवाले वेदोंका कथन भी यह नहीं करते । कोई बधू कहती है कि यह ब्रह्मा नहीं है । कोई बधू कहती है कि यह चक्रपाणि (विष्णु) नहीं है—क्योंकि यह दानवोंके प्राणोंको हानिका प्रयोग नहीं करते हैं, हे माँ, यह नारायण नहीं हैं, मैं इन्हें विख्यात विश्वबन्धु जानती

११. १. AP सुक्कंहइ । २. A ओइंण्यु; P ओइंण्यु । ३. P वारहवइ । ४. A जायत । ५. P सइइ ।

६. P कहु । ७. A णियवत्ति पडिउ । ८. A रिद्धु ।

१२. १. P गहु । २. AP चाणह्राणि । ३. AP चाणिवि ।

अरहंतु भट्टारक दोसमुक्कु
अन्भागायवित्तिवियाणएण
तहु किञ्च भोयणु पोसुयविहीइ
चृवँसिरि कुसुभाइं णिवाइयाइं

घरँप्रंगणि प्रंगणि जाव हुक्कु ।
ता णविवि पुणवसुराणएण ।
चृवँ संपीणिञ्च अक्खयणिहीइ ।
सुरणियँरहिं तूरइं वाइयाइं ।

घत्ता—संवच्छर तिणिण छम्मत्थु जँ महि हिँडियञ्च ॥

१०

विल्लहुं तलि देञ्च चाइचउक्केँ छड्डियञ्च ॥१२॥

१३

तांवायञ्च सुरयणु करइ थोत्तु
जइ तुहुं गोवाँलु णियारिचँडु
जइ पइं कुडिलत्तणु मुक्कु ईस
जइ तुहुं संसारहु णिरु विरत्तु
जइ तुहुं मुक्कञ्च संगग्गहेण
जइ तँइं विद्धंसिञ्च सयलु कामु
जइ तुहुं सामिथ संजमपयासि
तुह णाहासियइं ण जइ पडंति

संभरइ विरुद्धञ्च जिणचरित्तु ।
तो काइं णत्थि करि तुज्झ दँडु ।
तो काइं तुहारा कुडिल केस ।
तो कि तेरँउ इहु अहर रत्तु ।
तो कि तुह तिजगपरिग्गहेण ।
तो कि तुहुं पुणु संपण्णकामु ।
तो कि कसु कमलहु उवरि देसि ।
तो कि एयइं चमरइ पडंति ।

५

हैं। इतनेमे दोषोंसे मुक्त भट्टारक अरहन्त घरोके आंगन-आंगनमे पहुँचे। तब अभ्यागतकी वृत्तिके जानकार राजा पुनर्वसुने प्रणाम कर प्रासुक विधिसे उन्हे भोजन कराया। राजा अक्षय निधिसे प्रसन्न हो गया। राजाके सिरपर कुसुम गिर गये। देवोंके द्वारा तूर्य (नगाड़े) बजाये गये।

घत्ता—तीन वर्ष तक वह छद्मस्थ भावसे घरती पर घूमे फिर बेल वृक्षके नीचे स्वामी वह चार घातिया कर्मोंके द्वारा छोड़ दिये गये ॥१२॥

१३

तव देवसमूह आकर स्तुति करता है और विरुद्धरूपमे (विरोधाभास शैली) जिनचरित्रका स्मरण करता है, “यदि तुम अपने शत्रुके लिए प्रचण्ड (कर्मरूपी शत्रुके लिए प्रचण्ड) गोपाल (ग्वाला, इन्द्रियोंके संयमके पालक) हो, तो तुम्हारे हाथमे दण्ड क्यों नहीं है? हे ईश, यदि तुमने कुटिलताको छोड़ दिया है, तो तुम्हारे वैश कुटिल क्यों हैं। यदि तुम संसारसे एकदम विरक्त हो, तो तुम्हारे अघर अधिक रक क्यों हैं? यदि तुम परिग्रहके आग्रहसे मुक्त हो तो तुम्हें तीनों लोकोंके परिग्रहसे क्या? यदि तुमने समस्त कामको ध्वस्त कर दिया है, तो तुम सम्पन्न काम क्यों हो? हे स्वामी, यदि तुम संयमका प्रकाशन करनेवाले हो तो कमलके ऊपर अपने पैर क्यों रखते हो? हे नाथ, यदि तुम्हारे आश्रित लोगोंका पतन नहीं होता है, तो ये चमर तुम्हारे ऊपर क्यों

४. AP रायहुं घरंपंगणि जाव हुक्कु । ५. AP फासुयं । ६. AP णिव । ७. AP णिवं । ८. A णियरँ । ९. A वेल्लिहि तलि ।

१३. १. P has before it : उप्पायञ्च केवलु जयपयविल्ल, पूसहु चउवसि पढमिल्लपविल्ल । २. A गोवाल ।

३. A P तेरउ अहरग्गु रत्तु । ४. A P पइं । ५. A तो पुणु कि तुह । ६. A P संपण्णकामु । ७. A कम ।

- जै पई जि रवइइं दूसियाइं तो आसणि किं सीहइं थियाइं ।
 १० जइ रयणइं तुह तिणिण वि पियाइं तो तुहुं किर गिरलंकारु काइं ।
 घत्ता—थेणत्तु णिसिद्धु जइ तुहँ तो कंकेलितरु ॥
 अछंरकरसोह हरइ काइं कयदलपसरु ॥१३॥

१४

- तुहुं माणुसु मुचणि पसिद्धु जइ वि माणवियपयइ तुह णत्थि तइ वि ।
 जइ कासु वि पई णव दंहु कहिउ तो किं छत्ततइ फुरइ अहिउ ।
 जइ रुसहि तुहुं सरमग्गणाहं तो किं ण देव कुसुमचणाहं ।
 जइ वारिउ पई परि घाउ एंतुं तो किं हँम्मइ हुंतुहि रसंतुं ।
 ५ जइ पई छड्डिय मंडलहु तत्ति तो किं पुणु भामंडलपचित्ति ।
 कहिं ऐक्कदेसरुहु तुह महेस कहिं बहुजणभासइ मिलिय भास ।
 ण वियाणांवि तेरउ दिव्वचारु सोहम्माहिचइ सणैक्कुमारु ।
 इय वंदिवि वेणिण वि संणिविट्ठु देवेण सिट्ठि णीसेस चिट्ठु ।

घत्ता—एयासी तासु जाया जाणियधम्मविहि ॥

- १० गणहर गणणाह गुरुयण गुरुमाणिककणिहि ॥१४॥

पढ़ते हैं ? यदि रीद्र लोग तुम्हारे द्वारा दूषित कर दिये गये हैं, तो फिर तुम्हारे आसनमें सिंह क्यों है । यदि तुम्हारे तीन (सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र्य) प्रिय हैं, तो तुम अत्यन्त निरलंकार क्यों हो ?
 घत्ता—यदि तुमने चोरीका निषेध किया है तो तुम्हारा अशोक वृक्ष अपने पत्ते फैलाकर अप्सराओंकी क्षोभाका अपहरण क्यों करता है ॥१३॥

१४

यद्यपि तुम विश्वमें प्रसिद्ध मनुष्य हो, फिर तुम्हारी प्रकृति मानवीय प्रकृति नहीं है । यदि तुमने विश्वमें किसीके लिए दण्ड नहीं कहा, तुम्हारे छत्रत्रयमें वह अधिक क्यों चमकता है ? यदि तुम कामदेवके बाणोंसे अप्रसन्न होते हो, तो हे देव, पुष्पोंको पूजासे तुम अप्रसन्न क्यों नहीं होते हो ? यदि तुमने दूधरेपर आघात करना मना कर दिया है तो बजते हुए नगाड़ोंपर आघात क्यों किया जाता है ? यदि तुमने मण्डलों (देशों) में तुसिका परित्याग कर दिया है तो फिर तुममें भामण्डलोंकी प्रवृत्ति क्यों है ? एक देशमें उत्पन्न होनेवाले महेस, तुम कहाँ, और बहुजनोंकी भाषासे मिली हुई तुम्हारी भाषा कहाँ ? हम तुम्हारे दिव्य आचरणको नहीं जानते ।” सौमर्म और सानत्कुमार स्वर्गके इन्द्र, इस प्रकार वन्दना कर दोनों बैठ गये । देव (शीतलनाथ) ने समस्त सृष्टिका कथन किया ।

घत्ता—उनके धर्मविधिको जाननेवाले और गुरुरूपी माणिक्य निधिवाले महात् इक्यासी गणोंके स्वामी गणधर हुए ॥१४॥

८. A' जइ; P जं । ९. A P तो तुह ।

१४. १. A माणसु । २. A P दंतु । ३. A हम्मइ किं । ४. A एकदेस तुहु तुहु महेस; P एकदेस छुहुं तुहुं महेस । ५. A किं बहुजणभासइ; P किं बहुजणभासहि । ६. A P सणैक्कुमार ।

१५

महरिसिहिं महाचरणायराहं
 एककूणसट्टिसहससं सयाइं
 भयसहससं दोसय सावहीहिं
 वारहससइं वेउव्वियाहं
 पंचेव ताइं णयसयजुयाइं
 सयसत्तपमाणुजोइयाहं
 इय एककु लक्खु जायउ जईहिं
 सावयहं लक्ख दो सुहमईहिं
 तेहिं देवहं बुच्चिय केण संख
 भाभासुरु भव्वंभोयमाणु
 सो पुव्वसहासइं पंचवीस
 संमेयसेलि हल्लंतवालि
 सतवप्पहावपरिवियलियासु

चउदहसय पुव्वंगोहराहं ।
 दुइ सिक्खहुं सिक्खोवहि रयाइं ।
 पुणु सत्तसहासइं केवलीहिं ।
 इच्छियइं सरूवइं होति जाहं ।
 मणपज्जयवंतहं संथुयाइं ।
 तहु पंचसहासइं वाइयाहं ।
 लक्खाइं तिण्णि वरसंजईहिं ।
 चत्तारि लक्ख जहिं सावईहिं ।
 संखेज्ज तिरिय हयसंककंख ।
 सहं एत्तिएहिं महि विहरमाणु ।
 अतिवरिसइं उम्मोहेवि सीस ।
 सहं भिक्खुसहासें हरिणवालि ।
 थिउ देहविसग्गें एककु मासु ।

५

१०

घत्ता—आसोइ पवण्णि पुव्वासाहसिर्थट्टमिहि ॥

अवरणहइ सिद्धु थिउ मेइंणियहि अट्टमिहि ॥१५॥

१५

१५

महान् आचरणको धारण करनेवाले और पूर्वांगधारी महर्षि चौदह सौ थे । शिक्षा-विधिमे रत शिक्षक उनसठ हजार दो सौ, अवधिज्ञानी सात हजार दो सौ, केवलज्ञानी सात हजार, इच्छित रूप धारण करनेवाले विक्रिया ऋद्धि-धारक वारह हजार, मनःपर्ययज्ञानके धारक सात हजार पांच सौ, वादी मुनि पांच हजार सात सौ थे । इस प्रकार एक लाख मुनि थे । श्रेष्ठ संयमवाली आर्यिकाएँ तीन लाख थी । दो लाख श्रावक और चार लाख श्राविकाएँ थी । वहाँ देवीकी संख्या कौन जान सका । शंका और आकांक्षासे रहित तिर्यंच संख्यात थे । प्रभासे भास्वर और भव्यरूपी कमलके लिए सूर्यके समान जिन, इन लोगके साथ धरतीपर विहार करते हुए, तीन वर्ष कम, एक हजार पचीस वर्ष पूर्व तक मिथ्यादृष्टि शिष्योंको सम्बोधित कर, आन्दोलित ताल वृक्षांवाले, और मृगोंका पालन करनेवाले वे सम्मेदशिखर पर्वतपर पहुँचे । एक हजार मुनिके साथ, अपने तपके प्रभावसे आद्याओंको गलानेवाले वह, एक माहके लिए प्रतिमायोगमे स्थित हो गये ।

घत्ता—आश्विन शुक्ला अष्टमीके दिन पूर्वाषाढ नक्षत्रमें अपराह्णके समय वे आठवी भूमि (सिद्धशिला) मे जाकर स्थित हो गये ॥१५॥

१५. १. AP पुव्वंगायराहं । २. A सिक्खावह यियाइं; P सिक्खावहि रियाइं । ३. A वारहसयाइं । ४. A पंचेव ताइं णयसजुयाइं; P सत्तेव ताइं वयसंजुयाइं । ५. A reads a as b and b as a । ६. A उम्मोहिय वि सीस । ७. A भिक्खसहासें । ८. A सियछट्टिमिहिं । ९. A मेहणियइ ।

१६

वज्रद्विगुलाघणघडियगेहु	सिहिदेवहिं वड्डड देवदेहु ।
अवरेकाहिं फुल्लइं घल्लियाइं	अण्णहिं कव्वइं उव्वेज्जियाइं ।
अवरेकाहिं किञ्च नयणंदघोसु	अण्णहिं णच्चिञ्च मणणयणतोसु ।
अवरेकाहिं थुड संसारहारि	अण्णहिं हयं झल्लरि पड्ह भेरि ।
अवरेकाहिं पैणमिड मोकखगामि	अण्णहिं वंदिय जिणैसिद्धभूमि ।
अण्णहिं अण्णण्णइं साहियाइं	वाहणइं मेहवहि वाहियाइं ।
गय णियणिलयहु सुर विहवफार	जिणगुणकहरंजियहिययसार ।
गयणयलि चैरंति चवंति एंव	जगि,कम्मवंधु को महइं एंव ।
घत्ता—णिक्किरिउ करिवि मणवयणंगइं परिहरिवि ॥	
थिच सीयलसामि मोकखमहापुरि पइसरिवि ॥१६॥	

१७

पसियव परमेसरु परमंसमणु	अम्हइं वि तहिं जि संभवव गमणु ।
पुणु अक्खइ गणहरु सेणियासु	सम्मत्तरयणरुइसेणियासु ।
गयलेसि परिट्ठिइ णाणसेसि	णिग्वाणु पराइव सीयलेसि ।
तित्थंति वासु विच्छिण्णधम्मु	पसरिव जणवइ रयमइलु कम्मु ।
विणु वत्तारयसोथारयहिं	भव्वेहिं भवण्णवतारएहिं ।

१६

वज्रर्षभनाराच संहननसे गठित शरीरवाले देवके देहको अग्निकुमार देवोने जला दिया । कुछ देवोंने फूलोंकी वर्षा की, कुछ और देवोंने काव्योंका उच्चारण किया । कुछ और देवोंने 'जय' और 'बद्धो'का घोष किया । कुछ और देवोंने मन और नेत्रोंको आनन्द देनेवाला नृत्य किया । कुछ और देवोंने संसारका नाश करनेवाले उनकी स्तुति की । कुछ और देवोंने झल्लरी, पट्ट और नगाड़ोंको बजाया । कुछ और देवोंने मोक्षगामी उन्हें प्रणाम किया, कुछ और देवोंने जिनसिद्ध भूमिकी वन्दना की । दूसरोंने दूसरोंसे कुछ-कुछ कहा और आकाशपथमे वाहनोंको चलाया । वैभवके विस्तारसे युक्त तथा जिनके गुण-कथनसे अपने हृदयको रंजित करनेवाले देव अपने-अपने विमानोंमें चले गये । वे आकाशतलमे चलते हैं और कहते हैं कि विश्वमे कौन इस प्रकार कर्मोंका नाश करता है ।

घत्ता—मन, वचन और शरीरको छोड़कर और निष्क्रिय होकर शीतल स्वामी मोक्षरूपी महानगरीमें प्रवेश करके स्थित हो गये ॥१६॥

१७

परमेश्वर परमअग्रण प्रसन्न हों कि जिससे हमारा भी वहाँ गमन सम्भव हो । पुनः गौतम गणधर सम्यक्त्वरूपी रत्नकी कान्तिपरम्परावाले राजा श्रेणिकसे कहते हैं, "लेश्यासे रहित, ज्ञानघोष शीतलनाथके निर्वाण प्राप्त कर लेने पर उनके तीर्थके अन्तमे वकाओं, ओताओं और संसार रूपी समुद्रसे तारनेवाले भव्योंके विना, धर्मसे विच्छिन्न और पापसे मलिन कर्म फैल गया । जो

१६. १. AP जयणदिवोसु । २. A झल्लरि हय पड्ह । ३. AP कय वहुविहविहइ । ४. AP जिणदेहपइ ।

५. AP चडंति । ६. A मुयइ ।

१७. १. A परमसरणु । २. A अम्हइं । ३. AP अवतरं ।

पुरगामणयरसोहाणिवेसि
पडिवक्खलक्खसंजणियतासु
कालं जंते कुलगयणचंडु
णीहारसरिसजसविमलकंति
अत्थामज्झि उवविट्ठ राय

मलययसुरहिइ तर्हि मलयदेसि।
भहिलेपुरि सिरिभद्दवयासु।
घणरहु णामें जायउ णरिंदु।
तहु सच्चकित्ति णामेण मंति।
पूक्काहि दिणि दाणालाव जाय।

१०

घत्ता—आहासइ रुद्धु भूरिसम्मु जिणधम्मचुउ ॥

सालायणमूडु णामें अण्णु वि जांसु सुउ ॥१७॥

१८

गोदानभूमिदानंतराई
सोवण्णई रयणई अंवराई
हयं गय रहवर पीणत्थणीउ
वरद्वभपवित्तंक्रियकराहं
सो कणयविमाणहिं चिण्हुलोउ
तं णिसुणवि पभणइ सच्चकित्ति
कहिं णिवहु कहिं अंबयफलाइं
कहिं खीरु महुसु कहिं राइथाउ
मग्गइ मंचउ वरभूमि हेसु
सुइ डिंभइ उयरु हणंतु रडइ

कच्चोलइं थालइं मणहराईं।
फलछेत्तइं धवलहरइं पुराईं।
कण्णा कलवीणालाविणीउ।
जो देइ णरेसैं दियसराहं।
संप्रावइ माणइ दिव्णु भोउ।
कहिं कामुउ कहिं परलोयवित्ति।
कहिं खरयरसिल कहिं सयदलाइं।
वंभणमईउ कुविचेइयाउ।
मग्गइ कुमारि मुंजइ सकामु।
अण्णाणिउ भवसंसारि पडइ।

५

१०

पुरी, गाँवाँ और नगरोंकी शोभाका निवेद्य है तथा मलयज सुरभसे युक्त है, ऐसे मलय देशके भद्रिलपुर नगरमे लाखो प्रतिपक्षोंको संत्रास उत्पन्न करनेवाली लक्ष्मी और कल्याणका घर, अपने कुलरूपी गगनका चन्द्रमा घनरथ नामका राजा हुआ। उसका, नीहारके समान यश और विमलकान्ति वाला सत्यकीर्ति नामक नया मन्त्री हुआ। एक दिन जब राजा अपने दरबारमें बैठा हुआ था, उसकी दानके बारेमे बातचीत हुई।

घत्ता—जिन धर्मसे च्युत रौद्रभाव धारण करनेवाला भूरिशर्मा, और उसका शालायन मुण्ड नामका पुत्र, कहता है ॥१७॥

१८

गोदान भूमिदानादि, पानपात्र, सुन्दर थालियाँ, स्वर्ण, रत्न और वस्त्र, फल, क्षेत्र, धवल गृह और पुर, अश्व गज रथवर पीनस्तनी वीणाकी तरह सुन्दर आलाप करनेवाली कन्याएँ, जो अपने श्रेष्ठ दर्भमूद्रिकासे अकित हाथसे, हे राजन्! ब्राह्मणेश्वरको देता है, वह स्वर्णविमानोसे विष्णुलोक जाता है और दिव्य भोगका आनन्द लेता है। यह सुनकर सत्यकीर्ति कहता है—'कहाँ कामुक, और कहाँ परलोक वृत्ति? कहाँ नीम और कहाँ आत्रके फल? कहाँ कठिन शिला, और कहाँ कमलदल? कहाँ सुन्दर खीर, और कहाँ राजिका? ब्राह्मणकी बुद्धि खोटे विवेकसे भरी हुई है। वह मंच, वरभूमि और सोना माँगता है, वह कुमारी माँगता है, और सकाम भोग करता है। पुत्रके मरने पर पेट पीटता हुआ रोता है; और इस प्रकार अज्ञानी संसारमे भ्रमण करता है।

४. AP तासु।

१८. १. P गय ह्य। २. A °लावणीउ। ३. AP णरेसु। ४. AP संवावइ। ५. AP मग्गइ घर मंचउ भूमि हेसु।

गुणवंतर्णिद्विरइं गियक्कुलमयंधाईं दुग्गंधरसभरियणवदेहरंधाईं ।
 मयह्हुच्चिद्विरइं पाणियसउच्चाईं हिंसाइ घड्डियाईं पव्भट्टुसच्चाईं ।
 धरियक्खसुत्ताईं मृगचम्मभूसुसाईं पालासदंडाईं कासायवासाईं ।
 धणधरणिघरपणइणीमोहसूढाईं छक्कम्मगंभीरजरकूवसूढाईं ।
 दुग्गोदुप्पोसपोसणपयट्टाईं सुयसत्थवित्थारविलसियसरहाईं । १०
 आसवमयावेसपसरियविडंवाईं जीवति दीणाईं वंभणकुटुंबाईं ।

घत्ता—गयसीयलदेवि भरहि जाय परपत्तविहि ॥

संपीणइ विप्पु पुप्फदंत पणवंत सिहि ॥२१॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महामव्वमरज्ञाणुमणिणए
 महाकव्वे सीयलणाहणिग्वाणगमणं णाम अट्टेयोल्लोसमो परिच्छेओ समत्तो ॥४८॥

॥ सीयलणोहचरियं समत्तं ॥

है । गोदान और भूदानमें जिनकी तुष्णाएँ बँधी हुई हैं । जो करका अगला भाग आये हुए कृपण की तरह दिखाई देते हैं, गुणवानोंकी निन्दा करनेवाले तथा अपने कुलके लिए जो मदान्ध हैं । जिनकी नवदेह दुर्गन्ध रससे भरित है । मृगकी हृष्टियोंको चाटनेवाले, पानीसे पवित्र होनेवाले, हिंसासे रचित, सत्यसे भ्रष्ट, अक्षसूत्र धारण करनेवाले, मृगचर्मसे भूषित, पलाश दण्ड धारण करनेवाले, और गेरुए वस्त्र पहिननेवाले, धन भूमि धर और प्रणयिनीके मोहसे मूढ़ छह कर्म रूपी गम्भीर पुराने कूपमें पड़े हुए, मधु और मांसके पोषणमें लगे हुए—श्रुत शास्त्रोंके विस्तारमें विलसित अहंकारवाले ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ और यतिके रूपमें जो लोकको प्रवर्चित करनेवाले हैं, ऐसे दोन ब्राह्मण-कुल जीवित रहते हैं ।

घत्ता—शीतलनाथके निर्वाण प्राप्त कर लेने पर भरतक्षेत्रमें दूसरे पात्रोंकी विधि फैल गयी (पुष्पदंत कवि कहता है) कि आगको प्रणाम करता हुआ विभ्र प्रसन्न होता है ॥२१॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुराणोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित महामन्थ भरत द्वारा अनुमत महाकव्यका शीतलनाथ निर्वाण गमन नाम का अट्टतालीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥४८॥

८. A मयह्हुच्चिद्विरइं; P मयह्हुच्चिद्विरइं । ९. A मयचम्म; P मिगचम्म । १०. A दुग्गुदुप्पोस ।
 ११. AP आसवमयावेस । १२. A अट्टतालीसमो । १३. AP omit the line ।

सन्धि ४९

दहमउ गुरु मई तुह कहिउ देउ मोक्खमाणससरहंसु ॥
अवर वि सुणि सैणिय भणमि एयारहमउ जिणु सेयंसु ॥ध्रुवकां॥

१

जासु ण मुक्का मारें भग्गण
जेण ण खंडणु किउ चारित्तहु
जो ण वडिउ संसारसमुदइ
अकयइ णिच्चइ पडिमारुवइ
जो णाणें पेक्खइ णीसेसु वि
जो सुक्खियमहिँम्महु विसहरु
जेण राउ भेल्लविद्य मुयंगय
भालि ण दिज्जइ जसु तिलउल्लउ

जो जाणइ जीवहं गुण मग्गण ।
तवपवभारें णिच्चारित्तहु ।
मुहिउ जेण तिलोउ समुदइ ।
जासु ण रमइ दिट्ठि त्थयंरुवइ ।
पयज्जुयलइ णिवडइ जसु सेसुं वि ।
जो पंविदियविसहरविसहरु ।
जासु ण पत्तावलि वि मुयंगय ।
जो अप्पणु तिहुयणि तिलउल्लउ ।

५

१०

सन्धि ४९

(श्री गौतम गणधर कहते है)—“मैंने तुम्हे दसवें गुरु (तीर्थंकर) शीतलनाथके विषयमे बताया कि जो मोक्षरूपी मानसरोवरके हंस हैं। हे श्रेणिक, और भी सुनो—मैं ग्यारहवें श्रेयांस जिनका कथन करता हूँ ।”

१

जिसपर कामदेवने अपने तीर नहीं छोड़े, जो जीवके गुणस्थानों और मार्गणाओंको जानता है। जिसने चारित्रिका खण्डन नहीं किया, तपके प्रभावसे जो शत्रुभावसे रहित हैं, जो संसाररूपी समुद्रमे नहीं गिरते, जिसने अपनी मुद्रासे त्रिलोकको मुद्रित किया है। जिसकी दृष्टि, अक्लानिम नित्य प्रतिभारूप और स्त्रीरूपमें रमण नहीं करती, जो ज्ञानके द्वारा सब कुछ देख लेते हैं, जिनके चरण युगलमे शेष संसार पड़ता है, जो पुण्यरूपी वृक्षके लिए भेध हैं और पांच इन्द्रियरूपी विषधरों के विषका अपहरण करनेवाले हैं, जिन्होंने रागरूपी विट को छोड़ दिया है, जिसपर टेढ़ी पत्रावली

A has, at the beginning of this Samdhi, the following stanza :—

सया सन्तो वेसो भूषण सुदसीलं
सुसंगुहं चित्तं सव्वजीवेसु भेत्ती ।
मुहे दिव्वा वाणी चारुचारित्तभारो
अहो खण्डस्सेसो केण पुण्णेण जाओ ॥ १ ॥

This stanza is found in P at the beginning of Samdhi L. K. does not give it anywhere ।

१. १. AP सुणु । २. APT तियरुवइ । ३. P adds after this : दूरविमुक्कउ वंघविसेसु वि, सममणु वहुवणेसु णीसेसु वि. । ४. A महिजम्महु ।

जो परिहृइ ण कयाइ वि कंकणु
 णिच्चेलक्क जेण पडिवण्णत्तं
 तो वि णं परिहृइ जो णिण्णेहलु
 तहु देवहु संचियसेयंसहु

१५ घत्ता—पुणु अक्खमि तहु तणिय कह कित्ति वियंभउ महं जगगेहि ॥
 पुक्खरवरदीवंतरइ सुरदिसि मेरुहि पुव्वविदेहि ॥१॥

२

सालतमालतालतरुसंकडि
 कच्छउ देसु देसंसिरिसंकुलु
 कलववडियकल्लवि कयकलयलु
 तहिं खेमउरु काइ वणिज्जइ
 ५ सरु वायरंणि णंवर संधिज्जइ
 णहवणु ण वणु जेत्थु भडभंडणि
 अत्थसमप्पणि जहिं पयविग्गहु
 जहिं णिण्णासिय परमंडलवइ

सीयतरंगिणिपवरत्तरतडि ।
 वियसियकमलकोसरयपरिमलु ।
 दुमफुल्लासियफुल्लंधुयचलु ।
 जहिं पिययमु पणए कलहिज्जइ ।
 तणु विरहेण ण वाहिइसिज्जइ ।
 केसगहणु विवाहरचुंबणि ।
 जंइयणि णउ सावज्जपरिग्गहु ।
 पासवद्ध णं घरमंडलवइ ।

भी नहीं है, जिसके भालपर तिलक नहीं दिया जाता, जो स्वयं त्रिभुवनमें तिलक स्वल्प है, जो कभी भी कंकण नहीं पहनते, जिनका अपना चित्त जल और बीजका स्पर्श नहीं करता, जिन्होंने अचेलकत्व (अपरिग्रहत्व) स्वीकार कर लिया है, यद्यपि वस्त्र पटी (रेशमी वस्त्र) के समान रंगवाला है, तब भी वह नहीं पहनते। जो स्नेह रहित हैं, फिर भी निम्न ऊँच मनुष्यको (स्वर्गादि) फल देते हैं, कल्याणका संचय करनेवाले देव श्रेयांसके चरणोंकी बन्दना कर।

घत्ता—फिर मैं उनकी कथा कहता हूँ कि जिससे विश्वरूपी घरमे मेरी कीर्ति फैले। पुष्करवर द्वीपकी पूर्व दिशासे सुमेरुपर्वतके पूर्व विदेह मे ॥१॥

२

सीता नदीके साल तमाल और ताड़ वृक्षोसे परिपूर्ण विशालतटपर, देश-लक्ष्मीसे व्याप्त कच्छ देश है, जिसमे विकसित कमल-कोशोंका रजमल है। घान्य विशेषके वृक्षोपर बैठे हुए गौरैया-पक्षियोंका कलकल स्वर हो रहा है, जो वृक्षोंके फूलोंपर बैठे हुए भ्रमरोसे चंचल हैं। उसमें क्षेमपुर नगर है। उसका क्या वर्णन किया जाय, जहाँ प्रियतमसे प्रणयमे ही कलह किया जाता है (अन्यत्र कलह नहीं है)। जहाँ व्याकरणमें ही सर (स्वर और सर) का संधान किया जाता है, अन्यत्र सरोंका संधान नहीं किया जाता; जहाँ विरहसे ही शरीर कृश होता है, रोगसे नहीं; जहाँ नखोंके व्रण ही हैं, योद्धाओंकी भिडन्तमे जहाँ व्रण नहीं होते। चिम्बाघरोके चूमने ही में जहाँ केशग्रहण होता है, अन्यत्र केशग्रहण नहीं होता है। जहाँ अर्थों और पदवाक्योंके समर्पण (सम्पादन) से पद विग्रह (पदोंका विग्रह, प्रजाका विग्रह) होता है, अन्यत्र आर्थिक लेन-देनमे प्रजाका क्षगड़ नहीं होता, जहाँ जैनोंमें सावद्य परिग्रह नहीं होता, जहाँ शत्रुमण्डलके राजा इस प्रकार

५. AP सचित्तं । ६. AP तो णवि । ७. A जइ णिण्णेहलु ।

२. १. A देससरिसंकुलु । २. A कल्लेवि; P कल्लवि । ३. P ण पर । ४. A जइयणि तउ सावज्जपरिग्गहु; P णउ परअत्थहरणि कयविग्गहु । ५. P णित्तासिय ।

जहि चोरारिमारिदालिइइं पासंडाईं वि गस्थि रचइइं ।
 तहि राणउ गलिणालयमाणु गलिणप्पहु णामें गलिणाणणु । १०
 घत्ता—भयभीयइं महिणिवडियइं जीयं देव सविणउ जंपंति ॥
 जासु पयावें ताविचइं परणरणाहसयइं कंपंति ॥२॥

३

कलयलंतचलकलकोइलगणि तावैणहिं दिणि सहसंबयवणि ।
 पेच्छिवि जिणु अणंतु वणवालें विणणतउ सिरैगयभुयडालें ।
 तहु तहिं तवसिहिहुयवम्मीसरु गुणदेवहं भवदेवहं ईसरु ।
 परमप्पउ पसण्णै परमेसरु आयउ देउं धम्मचक्केसरु ।
 तं णिसुणेवि तेण तित्थंकरु जाइवि वंदिउ दुरियखयंकरु । ५
 बुब्भिवि धम्मु अहिसालक्खणु चित्तिवि वंधमोक्खविहिलक्खणु ।
 देवि सुपुत्तु महिहिं परिक्खणु सइं रिसि हुयउ राउ वियक्खणु ।
 चरणमूलि जइवरहु अणंतहु चरइ मग्गि दुग्गमि अरहंतहु ।

घत्ता—णीलकिणहलेसउ भुयइ काउलेस दूरें वज्जंतु ॥

सुककलेस मुणिवरु धरइ भीमें तवतावें खिज्जंतु ॥३॥ १०

संत्रस्त और पाशबद्ध है, मानो घरके कुत्ते हो। जहाँ चोर शत्रु मारी और दारिद्र्य और भयंकर पाखण्डो नहीं है। उसमें लक्ष्मीको भोग करनेवाला और कमलके समान मुखवाला नलिनप्रभु नामका राजा था।

घत्ता—जिसके प्रतापसे सन्तप्त होकर, सैकड़ो शत्रुराजा काँप उठते और भयभीत होकर घरतीपर गिरकर 'हे देव आपकी जय हो, विनयके साथ यह कहते हैं ॥२॥'

३

इतनेमें एक दिन, जिसमें चंचल कोकिल-समूह कलकल कर रहा है, ऐसे सहस्राम्ब नामक वनमें अनन्त जिनको देखकर, वनपालने अपनी भुजारूपी डालें सिरसे लगाते हुए, उससे निवेदन किया, "हे देव (उद्यानमें) तपकी आगमें कामदेवको नष्ट करनेवाले गुणदेवो और विश्वदेवोंके ईश्वर परमात्मा प्रसन्न परमेश्वर और धर्मचक्रेश्वर देव आये हुए हैं," यह सुनकर, उसने जाकर पापोंका नाश करनेवाले तीर्थंकरकी वन्दना की। तथा अहिसा लक्षणवाले धर्मको समझकर एवं बन्ध और मोक्षकी विधि तथा लक्षणका विचार कर, अपने पुत्रको भूमिके रक्षण का भार सौंपकर, वह विचक्षण राजा स्वयं ऋषि हो गया। वह, मुनिवर अनन्तनाथके चरणमूलमें दुर्गम चर्यामार्गमें विचरण करने लगा।

घत्ता—वह कृष्ण और नील लेश्या छोड़ देता है, कायकलेशका दूरसे परित्याग करता है। वह मुनिवर शुक्ल लेश्या धारण करता है और भीम तपतापमें वह अपनेको क्षीण करता है ॥३॥

६. A जीव ।

३. १. A तावण्यदिणि । २. A सिरि गयं । ३. AP पसणु । ४. AP देव । ५. AP मुयउ ।

मंदरधीरु वीरु दिहिपरियुक्त
 ण भगण इ सुणइ गिप्रिहं पीरुव
 कोहु लोहु माणुं वि सुसुमूरइ
 चक्खुसोत्तरसफासणघाणइ
 ५ विहुणिवि विवइ गिहं सहुं पपाणं
 ण सरइ पुवकालरइकीलणु
 गहखंडणु सरुवपरिपुंछणु
 हसणु भसणु भूभंगु ससंसणु
 साहिलासु सवियारु वंसणु
 १० णक्खलोडि तणुमोडि ण इच्छइ
 घत्ता—बंधिवि तित्थययुं
 अचुइ पुप्फुत्तणलइ जायव सुरवरु ससहरकंति ॥४॥

आव दुचीससमुहपमाणं
 तहु छम्मासु परिट्टिच जइयहुं
 जंबुदीवि भरहि सीहवरइ

४ इत्थिअत्थनृवथेणकहंतुरु ।
 एयारहवरंगसिरिधारुव ।
 मायाभाउ होतु संचूरइ ।
 जिणइ हणइ दुक्कियसंताणइ ।
 अप्पवं भूसइ रिसि रिसिविणणं ।
 ण करइ दंतपतिपक्खालणु ।
 करयलवट्टि सररीरणियच्छणु ।
 पाणिणंटु परगुणविद्धंसणु ।
 णियडणिसण्णंहरिणसंसंसणु ।
 परमसाहु लिहियंइ इव अच्छइ
 तहिं दंसणसुद्धिइ तोडिवि भंति ॥

५ कौलं गिलियइं दुक्कपमाणं ।
 अक्खइ जक्खहु सुरवइ तइयहुं ।
 धणकणजणगोहणगुणपवरइ ।

४

धैर्य ही जिनका परिग्रह है ऐसी मंदराचलके समान घोर वीर निस्पृह एवं निष्पाप वह, जो भोजन तुप और चौर्य कथाको न सुनते हैं और न कहते हैं, ग्यारह श्रेष्ठ श्रुतांगोंकी शोभाको धारण करनेवाले वह, क्रोध लोभ और मानको भी नष्ट कर देते हैं, चक्षु श्रोत्र जिह्वा स्पर्श और प्राण इन्द्रियोंको जीत लेते हैं, और पापकी शृंखलाको नष्ट कर देते हैं। प्रणयके साथ, वह निद्राको भी नष्ट कर देते हैं, और वह मुनि ऋषिकी विनयसे स्वयंको विभूषित करते हैं, वह पूर्वकालकी रतिक्रीड़ाकी याद नहीं करते, और न दन्तपत्तिका प्रखालन करते हैं, नखोंका खण्डन, अपने स्वरूपका मार्जन, करतल रूपी वृत्तिकासे शरीरको देखना, हँसना बोलना, भ्रूसंग करना श्वास लेना, हाथ हिलाना, परगुणोंका नाश करना, अभिलाषापूर्वक और विकारके साथ देखना, निकट बैठे हरिणोंका स्पर्श करना, नख छोटे करना, शरीर मोड़ना, वह नहीं चाहते। परम साधु चित्रलिखितकी तरह, स्थित रहते हैं।

घत्ता—वहाँ, दर्शन विशुद्धिसे भ्रान्तिको नष्ट कर और तीर्थकर प्रकृतिका बंधकर, अच्युत स्वर्गके पुष्पोत्तर विमानमें वह चन्द्रमाकी कान्तिवाले देव हो गये ॥४॥

५

उसकी आयु बार्हिस सागर पर्यन्त थी। समयके साथ नष्ट होने पर उसका भी अन्त आ पहुँचा। जब उसके छह माह शेष रह गये, तब इन्द्र कुबेरसे कहता है, 'जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें

४. १. A इत्थिअत्तिणिवं and gloss अत्ति भोज्यं; P इत्थिअत्थणिव । २. A P गिप्रिहं । ३. A P मोहु । ४. P गिहं । ५. A पुवकालि । ६. P परिपेच्छणु । ७. A पाणिणइ । ८. A णिसण्णं हरिणं संसणु; P णिसण्णं णवि संसंसणु । ९. P लिहिय इव ।
 ५. १. AP समाणं । २. A कौलं ।

आइदेवकुलसंतइजायच
णंदादेवि तासु घरसामिणि
तणुरुहु तेओहामियदिणयरु
ताहं सुरिचं तुहुं करि भल्लारचं
धणएं पुरुं पविणिम्मिचं तेहं

विट्ठु णाम राणच विक्खायच ।
कामसुहंकरि णं सुरकामिणि ।
एयहं दोहं वि होसइ जिणवर ।
रयणफुरंतु णयरु चउदारचं ।
मणुयहिं वण्णहुं जाइ ण जेहं ।

धत्ता—ता णज्जइ दिणु णिच्च जहिं जा सरैवरि कमलइं वियसंति ॥
वरमणिकिरणहिं तोंतडिय उगय रवियर णच दीसंति ॥५॥

१०

६

तहिं सयणालइ सिरिअइसइयइ
पुण्णचंदसोहियसुहयंदइ
अवरियगलियदाणधारालउ
वालहिसण्हाककुसुरमणहरु
कुडिलणहरु भइरवरुंजणरतु
कण्णतालहयमहुलिहविंदहिं
मालाजुयलु भिंगंपियकेसरु
कलसजुयलु णवकमलु सकोमलु

पच्छिमरयणिहिं णिहंधेइयइ ।
सिविणंपंति अवलोइय णंदइ ।
भमियसिलिम्महोलिसोडालउ ।
सउरहेउ रुइरंजियससरु ।
गिरिगुहणीहरंतु कंठोरतु ।
सिरि सरि सिचिज्जंति करिंदहिं ।
मा णिसिमंडं गु भासुरु णेसरु ।
मीणमिहुंणं जलकीलाचंचलु ।

५

धन जन कण और गोधन और गुणोसे प्रचुर सिंहपुरमें, आदिदेवकी कुल परम्परामे उत्पन्न विष्णु नामका विख्यात राजा है। उसकी गृहस्वामिनो नन्दादेवी है। काममे शुभंकर वह सुरकामिनोकी तरह है। अपने तेजसे दिनकरको तिरस्कृत करनेवाले जिनवर इन दोनोंके पुत्र होंगे। इसलिए तुम शीघ्र रत्नोसे चमकता हुआ चारद्वारों वाला नगर बनाओ। कुबेरने इस प्रकारके नगरकी रचना की कि जिसका मनुष्योके द्वारा वर्णन नहीं किया जा सका।

धत्ता—जहाँ सरोवरमे नित्य ही कमल खिलते हैं इसलिए दिन जान नहीं पड़ता, श्रेष्ठ मणिकिरणोसे मिश्रित ऊगी हुई भी सूर्यकिरणें दिखायो नहीं देती ॥५॥

६

वहाँ श्री से अतिशय भरपूर रात्रिके अन्तिम प्रहरमें ध्यानतलपर नीदमे सोयी हुई नन्दादेवी स्वप्नमाला देखती है। अविरत झरती हुई मदधारासे युक्त और भ्रमण करती हुई भ्रमरपंक्तिवाला महागज, पूँछ गलकम्बल ककुद और खुरोंसे सुन्दर और कान्तिसे चन्द्रमाको रंजित करनेवाला वृषभ, कुटिल नख और भयंकर गर्जन शब्दवाला पहाड़की गुफासे निकलता हुआ सिंह, अपने कानोंके तालोंसे मधुकर समूहको आहत करते हुए गजेन्द्रो द्वारा सिर पर अभिषिक्त श्री; भ्रमर और पीली केशरसे युक्त मालायुगल, लक्ष्मी ? और रात्रिका मण्डन (चन्द्रमा), भास्वर सूर्य, कोमल नवकमलोसे सहित कलशयुगल, जलक्रीड़ासे चंचल मीनयुगल, सरोवर, समुद्र,

३. AP संतर जायउ । ४. A पुव विणिम्मिउ । ५. A सरवरकमलइं ।

६. १. A णिह अइसइयइ । २. AP णिहंधेइ । ३. A सिविणयतइ; T तद पंक्तिः । ४. AP अविरलं ।

५. A भइरवरुंजणरउ । ६. A वंदहिं । ७. A मियु पियं । ८. A मंडलु । ९. AP कलसजयलु ।

१०. A मीणजुयलु ।

२३

- सह सररासि चारुसीहासणु^१ देवालय फणिभवणु फणीसणु ।
 १० माणिकोहु मोहमालाले^२ सिद्धि गहयलि जलंतु चलजाल ।
 घत्ता—एव णिहालिवि चंदमुहि चंदकंति सुहदंसणपंति ॥
 जाइवि भासइ भूवइहि सुंदरि सुविहाणइ विहसंति ॥६॥

७

- महिवइ मेहपोसु णिखप्फलु कहइ महासइहि सिविणयफलु ।
 जसु आणइ हरि अचलइ गच्छइ जो सयरायरु लोच णियच्छइ ।
 जो पर अप्पउं परहु पयासइ जासु दोसु तिलमेत्तु ण दीसइ ।
 सासयसोक्खसरोरुहछप्पउं सो अरहंतु संतु परमप्पउ ।
 ५ तेरइ गम्भइ अम्भउ होसइ ता रोमंच्चिय णच्चिय सा सइ ।
 बुट्ठु कुवेरु देवु णवणिहिहरु जा छम्मास तांवे चाभीयरु ।
 कंतिक्त्तिसिरिहिरिदिहिबुद्धिउ देविउ देविहि कियंतणुसुद्धिउ ।
 आयउ जायउ जणेंउच्छाहउ सग्गउ संचुउ अञ्जथणाहउ ।
 १० घित्तसुरासुरपंकयविद्धिहि जेट्टहु मासहु किण्हंहि छट्ठिहि ।
 सवणि सुरिक्खइ पच्छिमरत्तिहि थिउ उयरंतरि पत्थिवपत्तिहि ।
 जक्खणिहत्तइ दुक्खणिवारइ पुणु णवमांस सिन्तु वसुहारइ ।

सुन्दर सिंहासन, देवलोक, नागराजका नागलोक, मयूखमालासे युक्त माणिक्य-समूह, चंचल ज्वालामौं वाली आकाशमें जलती हुई आग ।

घत्ता—चन्द्रमुखी और चन्द्रमाके समान कान्तिवाली और शुभ दन्तपंक्तिवाली वह यह देखकर, दूसरे दिन सबेरे जाकर हंसती हुई उन्हें राजाको बताती है ॥६॥

७

भेषके समान ध्वनिवाले निश्चल राजा उस महासतीको स्वप्नोंका फल बताते हैं कि जिसकी आज्ञासे इन्द्र बैठता और चलता है, जो सचराचर लोक देख लेते हैं, श्रेष्ठ जो स्वपरका प्रकाशन करते हैं, जिसके तिलके बराबर भी दोष दिखाई नहीं देता, जो शाश्वत मोक्षरूपी सरोवरके भ्रमर हैं वह अरहंत सन्त परमेश्वर तुम्हारे गर्भसे बालक होगे । तब वह सती रोमांचित होकर नाच उठी । जब छह माह रह गये, तो नवनिधियोंको धारण करनेवाले कुबेरने स्वर्णवृष्टि की । देवीकी शरीर-शुद्धि करनेवाली कान्ति, कीर्ति, श्री, ह्रीं, घृति और बुद्धि आदि देवियां आयीं । लोगोंमें उत्साह फैल गया । अच्युत स्वर्गके स्वामी वह स्वर्गसे च्युत हुए । ज्येष्ठमाहके कृष्णपक्षमें जिसने सुरासुरोंमें कमलवृष्टि की है ऐसी छठीके दिन, श्रवण नक्षत्रमें रात्रिके अन्तिम प्रहरमें राजाकी पत्नीके उदरमें वे स्थित हो गये । यक्षके द्वारा की गयी दुःखका निवारण करने वाली धनकी धाराने फिर नौ माह तक सिंचन किया ।

११. A सिंहासणु । १२. A मोह मालाल ।

७. १. A कुबेरदेव । २. A जाम । ३. AP कय । ४ AP जणि उच्छाह । ५. A कण्हयछट्ठिहि । ६. A सवणसुरिक्खइ । ७. AP णवमासु ।

घत्ता—छावट्टिलकखल्लवीसहिं वि वरिससहासहिं रिद्धं ॥
सायरसउ छड्डिवि कोडि गय थक्कउ पुणु पल्लंद्धउ ॥७॥

८

जइयहुं वट्टइ गिण्वुइ सीयलि गट्टउ अरुहधम्मु धरणीयलि ।
तइयहुं तिहिं णाणहिं संजुत्तउ पुण्वजम्मि भावियरयणत्तउ ।
फंगुणि एयारहमे चासरि णिच्चमेव खिज्जंतइ ससहरि ।
विण्हंजोइ उप्पणउ जोइउ मायइ तारहिं णयणहिं जोइउ ।
आवेप्पिणु भत्तिइ तरुणीलहु मेहलविरइयंतारामालहु ।
सिहरकुहरथियखगरामालहु अमरवरेसें णिउ सुरसेलहु ।
णिहियउ पावपडल्लणिण्णासणि पंडुसिलायलि पंचाससणि ।
उत्त मंत विहिं सयल करेप्पिणु खीरंभोणिहिंखीरु लपप्पिणु ।

५

घत्ता—सायकुंभमयकुंभकर एंति गयणि णच्चंति णवंति ॥
खीरवारिधारासयहिं देवदेउ भावेण णहवंति ॥८॥

१०

९

सुरपेक्खिउ णं डोल्लइ मंदरु कलसइं सहसइं लेइ पुहंदरु ।
अल्लिक्कंकारइं सरलइं सदलइं कलसिं कलसिं सणिहियइं कमलइं ।
कमलिं कमलिं आसीणइं हंसइं हंसइं कयकलसरणिण्णोसइं ।

घत्ता—जब सौ सागर और छियासठ लाख लब्बीस हजार वर्ष कम एक सागर प्रमाण समय बीत गया, और जब आधापल्य समय रह गया ॥७॥

८

कि जब शीतलनाथ निर्वाणको प्राप्त हुए थे और अर्हंतधर्म धरतीतल पर नष्ट हो गया था । तब तीन ज्ञानसे युक्त पूर्व जन्ममे रत्नत्रयकी भावना करनेवाले योगी श्रेयांस फागुन माहके कृष्ण पक्षकी एकादशके दिन कि जब चन्द्रमा प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा था, विष्णु योगमे उत्पन्न हुए । उन्हे मां ने अपनी उज्ज्वल आँखोंसे देखा । भक्तिसे आकर इन्द्र उन्हे वृक्षांसि नीले, जिसकी मेखला तारावलयोसे शोभित है, जिसके शिखर-कुहरोंमे विद्याधर स्त्रियां स्थित है, ऐसे सुमेरु-पर्वतकी पापपटलको नष्ट करनेवाली पाण्डुकशिलाके सिंहासनपर उन्हे रख दिया । उक्त समस्त मन्त्रविधि पूरी कर, और क्षीरसमुद्रका जल लेकर ।

घत्ता—स्वर्णमय घड़े हाथमे लिये हुए देव आते है, आकाशमे नाचते और प्रणाम करते है, क्षीर जलकी सैकड़ों धाराओंसे भावपूर्वक देवदेवका अभिषेक करते है ॥८॥

९

देवोंसे प्रेरित मन्दराचल मानो डगमगा उठता है; इन्द्र हजारों कलशोंको लेता है, प्रत्येक कलशपर भ्रमरोसे झंझुत सरल और सदल कमल रखे हुए हैं, कमल-कमलपर हंस बैठे हुए है, हंस

८. A सिद्धउ; P सिद्धउ । ९. A पुण्णट्टउ ।

८. १. A फगुणएयारहमइ । २. AP विण्हंजोइ; T विण्हंजोए ज्येष्ठानक्षत्रे । ३. AP वलइय । ४. A पावपडल्लु । ५. A पंडसिलायलि । ६. A संगलु सासणि ।

९. १. P डोल्लइ ।

- जे कलसर ते किरै वम्महसर
 ५ वम्महसरवरेहि जणु दारिउ
 जिणु सिसु मयणहु अज्जु वि संकइ
 करइ कामु धणुगुणटंकारउ
 वहुएं सेयसेण णित्तत्त
 आणिवि णयर समप्पिउ मायहि
 १० पणवेप्पिणु हुक्खियघणपवणहु
 काले जंत वत्थुपमाणउ
 घत्ता—हेमच्छविहि भट्टारहु जं दिट्ठउ तं णेय रहंति ॥
 तासु असीइसरासणइं गणहर तणुपरिमाणु कंहंति ॥१॥

- एकवीसलक्खइं बालत्ते
 पुणु पुज्जिउ पोलोमीकत्ते
 रज्जु करंतहु कामरसइहं
 एहउ अवसरु जायउ जइयहुं
 दिट्ठउ तं विरपल्लउ वूयउ
 ५ सो णं जालहिं जलइ गिरारिउ
 १० घल्लियाइं वरिसहं खेळत्ते ।
 किउ रज्जाहिसेउ गुणवत्ते ।
 दोचालीसलक्ख गल्लियइहं ।
 णाहें कील्लौवणि तहिं तइयहुं ।
 मयणहुयासहु वीयउ हूयउ ।
 चिरहीयणु ते ताविउ मारिउ ।

भी कलस्वरसे निर्घोष कर रहे हैं, उनके जो सुन्दर स्वर थे वे मानो कामदेवके तीर थे, जो मर्मका भेदन करनेवाले और मनुष्य और देवोंको विदारित करनेवाले थे । जब कामदेवके तीरोंने लोगोंको विदीर्ण कर दिया तो उन्होंने जिनको अपने हृदयमें धारण कर लिया । जिनदेव बालक हैं, तब भी कामदेव आज ही शंकित है, इसी कारण रति अपने स्तनयुगलको नहीं ढकती । कामदेव अपने धनुषकी डोरीकी टंकार करता है, उससे अप्सराकुलमें विकार फैल जाता है । अनेक कल्याणोंसे नियुक्त प्रभुको इन्द्रने श्रेयांस कहा । नगरमें लाकर उसने, उन्हें पुत्रको देखनेसे जिनकी कान्ति विकसित हो गयी है, ऐसी मां को सौंप दिया । पापरूपी बादलके लिए पवन उनको प्रणाम कर इन्द्र अपने विमानमें चला गया । समय बीतनेपर, उपमानसे रहित त्रिलोकके राजा वह नगरमें बड़े हो गये ।

घत्ता—आदरणीय उनकी स्वर्णछविकी जिसने देखा वह रह नहीं सका । गणघर उनके शरीरका प्रमाण अस्ती धनुष प्रमाण बताते हैं ॥९॥

१०

खेल-खेलमें उनकी बाल्यावस्थाकी इक्कीस लाख वर्ष आयु बीत गयी । फिर देवेन्द्रने उनकी वन्दना की और गुणवान् उसने उनका राज्याभिषेक किया । राज्य करते हुए, कामरससे आर्द्र उनके बयालीस लाख वर्ष बीत गये । जब उनका यह अवसर आया तो स्वामीने क्रीडावनमें लाल-लाल पल्लवोंका आश्रवक्ष इस प्रकार देखा, मानो वह कामरूपी अग्निका बीज ही । वह मानो ज्वालाओंसे जल रहा था, इसी कारण उसने विरहीजनको सन्तप्त और आहत

२. A किल से; P ते किल । ३. A णिह्वियुं । ४. P पुल्लोमविसुणु । ५. AP वत्थुवमाणउ;

T वत्थुअम्मोणउ । ६. P तं तं अरहंते । ७. P असीसरासणइं । ८. P कहंते ।

१०. १. AP पणवत्ते । २. AP णाहें कील्लौ वणि तइयहुं ।

पुणु कोइलु कलसइ गज्जइ
रुणुरुणंतु अप्पाणु ण चेयइ
ता परमेसुरु मणि मीमंसइ
काले कंटइयचं अंकुरियचं
फल्लिचं फलावलीहिं णं पणवइ
परिणैमंतु जगु णिविसु ण थकइ

णं वसंतपहु पडहउ वज्जइ ।
महुयरु महु पिऐवि णं गायइ ।
अम्हारुचं वणु अण्णु जि दीसइ ।
पल्लवियचं कुसुमोलिहिं भरियउ ।
एही सयलहु लोयहु परिणइ ।
परिणामहु जहु जीउ ण चुकइ ।

१०

घत्ता—जगु परिणामें दूसियउ णिपरिणाम सिद्ध परमैट्टी ॥
हो हो अथिरेणेण महुं णिच्चल तेत्थु णिरुंभिवि दिट्ठी ॥१०॥

११

ता संपत्त तेत्थु सुरवरगुरु
सो आहंडलु तं सुरमंडलु
आयचं पुणु वि ण्हवणु किचं देवहु
विमैल्ले सिवियाजाणं णिग्गउ
फग्गुणि कसणि एयारसिदियहइ
सवणरिक्खि उवसमियकसायउ
उववासदुट्टुवेण रिसि जायउ
णंदणरिदे एंतु पडिच्छिउ

तेहिं तुरिउ पडिबोहिउ जगगुरु ।
तं अच्छरउलु मणिमयकुंडलु ।
णिट्ठियचरियावरणेविलेवहु ।
णाहु मणोहरु णंदणवणु गउ ।
दियहाहिवि अवरसासंगइ ।
भुवइ सुकभुइभुभायउ ।
सिद्धत्थउ पुरु भिक्खहि आयउ ।
सुद्धपिंडु तहु तेण पयच्छिउ ।

५

किया था । फिर कोयल कलकल शब्दमे गरज उठती है मानो वसन्त राजा अपना नगाड़ा बजा रहे हैं । भ्रमर गुनगुन करता हुआ, स्वयं नहीं चेतता, मानो वह मधु पीकर गा रहा है, तब परमेश्वर अपने मनमें विचार करते हैं कि हमारा वन तो आज दूसरा दिखाई दे रहा है। यह कालसे कंटकित और अंकुरित पल्लवित और पुष्पपंक्तियोसे भरा हुआ है और फलकी कतारोंसे लदा हुआ मानो झुकता है, यही समस्त लोककी परिणति है। परिणमन करता हुआ यह विश्व एक क्षणके लिए नहीं रुकता और परिणामसे यह जड़ जीव एक पलके लिए नहीं चूकता।

घत्ता—यह विश्व परिणामसे दूषित है केवल सिद्ध परमेष्ठी परिणामसे रहित हैं। यह अस्थिरता रहे रहे, मैं अपनी निश्चल दृष्टिको वही अवरुद्ध करूँगा ॥१०॥

११

तब इतने लीकान्तिक देव वहाँ आ गये। उन्होंने तुरन्त वहाँ विश्वगुरुको सम्बोधित किया। वही इन्द्र, वह सुरसमूह, वह मणिमय कुण्डलवाला अप्सरा कुल, वहाँ आया। चारित्रावरण कर्मके अवलोकको नष्ट करनेवाले देवका फिर अभिषेक किया गया। पवित्र चिंकायानामे बैठकर देव निकले और स्वामी सुन्दर नन्दन वनमे पहुँचे। फागुन माहके कृष्णपक्षकी एकादशीके दिन, सूर्यके पश्चिम दिशामें प्रवेश करनेपर श्रवण नक्षत्रमे, जो ऐश्वर्य और धरतीके भावसे मुक्त हैं, ऐसे वह उपवासान्तकपाय राजा दो उपवासोके साथ मुनि हो गये। वह सिद्धार्थ नगरमे आहारके लिये गये।

३. AP पिऐइ । ४. P कंटइयचं कुरियचं । ५. A परिणवंतु । ६. AP परमेट्टिहि । ७. A होही ।

८. A णिच्चल तेपु णिरुंभिवि दिट्ठिहि, P णिच्चलतेपु णिरुंभिवि दिट्ठिहि ।

११. १. A वरणु । २. AP विमल्लि । ३. A भूयइ ।

- दुइ वरिसइं विहरेपिणु महियलि पुण्विज्जइ वणि तुंभुरुतरुतलि ।
 १० माहहु मासहु णिच्चंदइ दिणि छेइल्लइ सवणइ भयलंछणि ।
 अवरणइइ तिरत्तसंजुत्तहु अचलियपत्तलपविचलणेत्तहु ।
 घत्ता—संभूयउं केवलु तहु विमलु णाणु तेणें तेलोक्कु वि दिट्ठु ॥
 पत्तस सामरु अमरवइ जिणु शुणंतु महु भावइ ॥११॥

१२

- तुहुं जि देउ तुह णवइ पुरंदरु तुहुं थिरु तुह पीढुल्लउ मंदेरु ।
 तुहुं तवुंगु तुह बीहइ दिणयरु कतिवंतु तुहुं तुह ससि किंकरु ।
 तुहुं गहीरु वरुणेणार्णदिउ तुहुं अणिहणणिहिं धणएं वंदिउ ।
 ५ तुहुं रयतरुसिहि सिहिणा सेविउ तुहुं जि मंति मंतीसहिं भाविउ ।
 तुह पायग्गहिं वाउ विलग्गउ तो वि ण तुहुं पहु वाएं भग्गउ ।
 तुहुं जमपासवसेण ण वद्धउ जमु तुह सेवाविहिपडिबद्धउ ।
 तुहुं जि कालु कालहु कालुत्तरु तुहुं विवाइ वाइहिं दिणुत्तरु ।
 सव्वु वि जाणसि पेच्छसि जेण जि तुहुं जि सव्वु सव्वाहिउ तेण जि ।

घत्ता—अट्टपाडिहेरयसहिउ अट्टमहाधयपंतिसमेउ ॥

- १० समवसरणि थिउ परमजिणु कहइ समत्थैपयत्थहं भेउ ॥१२॥

नन्द राजाने उन्हे आते हुए देखा, उसने उन्हे विशुद्ध आहार दिया, दो वर्ष तक धरतीपर विहार कर पूर्वोक्त वनमें तुम्बरु वृक्षके नीचे माघ कृष्ण अमावास्याके दिन, अपराह्णमें श्रवण नक्षत्रमें तीन रातके उपवाससे युक्त एवं अविचलित पलक विशाल नेत्रवाले ।

घत्ता—उन्हें विमल केवलज्ञान उत्पन्न हो गया । उससे उन्होंने तीनो लोकोंको देख लिया । इन्द्र देवों सहित आया । जिनको स्तुति करता हुआ वह ढीठ मुझे (कवि को) अच्छा लगता है ॥११॥

१२

देव तुम्ही हो, तुम्हें इन्द्र नमस्कार करता है, तुम स्थिर हो, तुम्हारा पीठ मन्दराचल है । तुम तपसे उग्र हो, तुमसे दिनकर डरता है, तुम कान्तिवाचु हो, चन्द्रमा तुम्हारा किंकर है । वरुणके द्वारा आनन्दित तुम वरुण हो, तुम पापरूपी वृक्षोंके लिए अग्नि और अग्निके द्वारा सेवित हो, तुम्ही बृहस्पति हो, और बृहस्पतियोके द्वारा भावित हो, वायु तुम्हारे पैरोसे लगी हुई है, हे देव तब भी तुम वाए (वायु और बाद) से मग्न नहीं होवे; तुम यमरूपी पाशसे बाबद्ध नहीं हो, यम तुम्हारी सेवाविधिके लिए प्रतिबद्ध है, तुम्ही कालके लिए काल हो और कालसे श्रेष्ठ हो, वादियोके लिए उत्तर देनेवाले तुम विवादी हो, जिस कारणसे तुम सबको जानते और देखते हो, इसी कारण तुम सब, और सबसे अधिक हो ।

घत्ता—आठ प्रातिहार्योंसे युक्त आठ महाध्वजपंक्तियोंसे सहित, समवसरणमे स्थित परम जिन समस्त पदार्थोंके भेदोंका कथन करते है ॥१२॥

४. A omits तेण । ५. A शिडु ।

१२. १. P मंदिर । २. A तवग्गु, P तवंगु । ३. AP मंतु । ४. AP पहु तुहुं । ५. A समत्थु ।

१३

कुंभुपमूह पयणाचियसुरवर
रिसिहिं विणासियघोराणंगहं
अडदोलाई जि सहासइं भिक्खुहं
छहसहास अवहीपरियाणहं
ते च्चिय पंचसयाहिय संतहं
एयारहसहास वैडकिरियहं
पयडियदुम्महवम्महमारिहिं
एक्कु लक्खु वीसेव सहासइं
चललक्खइं देसव्वअधारिहिं
अमर असंख तिरिक्ख गिरिक्खिय
एक्कवीस तहिं वरिसहं लक्खइं
सुरवइरइयइ जणसुइसुइइ

तासु सट्टिसत्तारह गणहर ।
तेरहसयइं धरियपुवंगहं ।
दुसैइए संजुत्तइं सिक्खुहं ।
तेत्तिय भणु मणपल्लवणाणहं ।
केवल्लचक्खुणिहालणवंतहं । ५
पंच वि वाइहिं बहुणयभरियहं ।
संजमचारिणीहिं वरणारिहिं ।
दो लक्खइं सावयहं पयासइ ।
माणवमाणिणीहिं मणहारिहिं ।
सहं संखाइ जिणिदं अक्खिय । १०
विहिं वरिसहिं विरहियइं ससोक्खइं ।
महि विहरिवि अरहंतविहइइ ।

धत्ता—गिरिसमेयहु मेहलहि लंभियकरयलु एक्क जि मासु ।

जिह सो तिह तणु परिहरिवि अवरु वि संठिठ मुणिहिं सहासु ॥१३॥

१४

जीवेप्पिणु कयसिहुयणहरिसहं
पहु सावणपुणिवहि जणिट्टहि

जिणु चउरासीलक्खइं वरिसहं ।
चंदि परिट्टिइ गंपि धणिट्टहि ।

१३

जो सुरवरोके द्वारा प्रणम्य है ऐसे कुंभु प्रमुख, उनके सत्तर गणघर थे, घोर कामदेवका नाश करनेवाले पूर्वांगोंको धारण करनेवाले तेरह सौ मुनि थे, अड्डालोस हजार दो सौ शिक्षक मुनि थे, अवधिज्ञानी छह हजार थे और इतने ही अर्थात् छह हजार मनःपर्ययज्ञानी थे, केवलज्ञानरूपी आँखसे देखनेवाले केवलज्ञानी छह हजार पाँच सौ थे। विक्रिया-त्रुद्धिको धारण करनेवाले ग्यारह हजार मुनि थे। पाँच हजार बहुनयधारक वादी मुनि थे। प्रगट दुर्मद कामदेवका नाश करनेवाली संयमधारण करनेवाली आयिकाएँ एक लाख बीस हजार थीं। दो लाख श्रावक थे। देशत्रत धारण करनेवाली मनुष्योंके द्वारा मान्य सुन्दर श्राविकाएँ चार लाख थीं। देव असंख्य थे और तिर्यंच संख्यात थे, ऐसा जिनेन्द्रने कथन किया है। दो वर्ष कम एक लाख इक्कीस वर्ष तक सुखपूर्वक, इन्द्रके द्वारा रचित जनके शुभ की सूचक अरहन्त की विभूतिके साथ धरतीपर विचरण कर ।

धत्ता—सम्मेदशिखरके कटिबन्धपर हाथ लम्बे कर एक माहके लिए जिस प्रकार वह, उसी प्रकार दूसरे एक हजार मुनि अपने शरीरका परित्याग कर प्रतिमायोगमें स्थित हो गये ॥१३॥

१४

त्रिभुवनको हर्ष उत्पन्न करनेवाले चौरासी लाख वर्ष तक जीवित रहकर, श्रेयांस जिन, श्रावण शुक्ला की लोगोंको आनन्द देनेवाली पूर्णिमाके दिन चन्द्रके धनिष्ठा नक्षत्रमे स्थित होनेपर,

१३. १. A अडदालसहासइ भिक्खुयाह । २. A दुइसइसंजुत्तइं । ३. AP परिमाणहं । ४. A केवल्लिचक्खु ।

५. A वैकिरियहं; P विकिरियहं । ६. A घम्महं वम्महं । ७. AP संजमधारिणीहिं । ८. A समवलइं ।

	णिन्वृत् कम्मपडलपरिमुक्क देहपुज्ज किये दससयणेत्ते	अट्ठमु धरणिवीढु खणि दुक्कउ । करपंजलिघल्लियसयवत्ते ।
५	कल्लु विरसंतिहिं भंभाभेरिहिं - उर्वसिरंभतिलोत्तिमणारिहिं तुंबुरुणारयसुणिङ्गंकारहिं णौणाविहपुप्फाई व धित्तइं दिण्णइं दीवधूव अपमाणइं	णरुचंतिहिं गोरिहिं गंधारिहिं । सुरकामिणिहिं विइण्णविचारहिं । तंहिं पणवंतहिं जलणकुमारहिं । सीयलचंदणजलेण व सित्तइं । णीलीकयअसरंगणजाणहिं । णाइं हुयासकलंक्कु विणिग्गव । सच्चचं भासइ माय सरासइ । जंते जंपिउ सुरसंघाए ।
१०	दीवुं धूमु जो गयणि च लग्गउ जिणंतणुसेवइ पंक्कु पणासइ णविवि णिसिद्धिं भत्तिअणुराए	

घत्ता—भरहि पणट्टउ उद्धरिउ विणिवारिपिणु कुसमयकम्मु ॥

सेयंसं बहुसेययरु कुंदपुप्फदंते जिणधम्म ॥१४॥

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाकहपुप्फयंतविरहए महामब्बभरहाणुमणिणए
महाकब्बे सेयंसणिण्णवणामणं णाम एक्कं णणणासमो परिच्छेओ समत्तो ॥३९॥

॥ १० सेयंसजिणचरियं समत्तं ॥

कर्मपटलसे परिमुक्त वह निवृत्त हो गये । एक क्षणमे आठवी भूमि पर जा पहुँचे । अपने हाथसे जिसने शतपत्र फेंके हैं, ऐसे इन्द्रने उनकी देह पूजा की । सरस बजते हुए, भंभा भेरी आदि वाद्यों के साथ, नाचती हुई गौरी गंधारी उर्वशी रंभा तिलोत्तमा आदि स्त्रियोंको विकार-उत्पन्न करने-वाली कामिनियो, तुम्बर और नारद की ध्वनियोंकी झंकारोके साथ, वहाँ प्रणाम करते हुए अग्नि-कुमार देवोंके द्वारा पुष्पाजलियाँ डाली गयी और शीतल चन्दनसे सिक्त, आकाशके प्रांगणमे स्थित यानोंकी नीला बनानेवाली दीप-धूप दी गयी । दीपका धुँआ आकाशमे इस प्रकार लग गया, जैसा आगका कलंक निकल गया हो । माता सरस्वती ठीक ही कहती है कि जिनवरके शरीरकी सेवा करनेसे पंक नष्ट हो जाता है, भक्तिके अनुरागसे मनुष्यकी सिद्धिको प्रणाम कर, जाते हुए सुर-समूहने उक्त बात कही ।

घत्ता—छोटे सिद्धान्त-और आचरणका निवारण कर, भरतक्षेत्रमे नष्टप्राय बहुश्रेयस्कर जिनधर्मका कुन्द पुष्पके समान दाँतोंवाले श्रेयांस जिनने उद्धार किया ॥१४॥

इस प्रकार अस्रठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महामध्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का श्रेयांस निर्वाण-नामन नामक उक्तासर्वा परिच्छेद समाप्त हुआ ॥३९॥

१४. १. A णिन्वृत् । २. P किय । ३. A उर्वसरंभं । ४. AP तिहि संयुक्तिय । ५. AP omit this line and the following । ६. AP add after this : धित्तइं चदणवंदणकट्टइं; जलियइं णाहइं अंगइं विट्टइं । ७. AP णीलु धूमु गयणंणणि लगव । ८. A P जिणुं तणु । ९. A णितिहि । १०. AP omit this line ।

संधि ५०

तर्हि सेर्यंसहु तित्थि देहमुयचलदप्पिट्ठहं ॥
गिणुणहि सेणियराय रणु ह्यकठतिचिट्ठहं ॥ ध्रुवकं ॥

१

इह जंबूद्वीवि वरभरहखेत्ति	चचल्लौल्लिचंदणामोयवन्ति ।
मयसत्तमहिस्सजुञ्जंविचियमहि	गज्जंतगामगोवालसहि ।
गोडलपयधाराधायपहिइ	मंथौणयमंथियथद्धदहिइ ।
पिच्चंतधण्णसंछण्णसीमि	णिरु णियैडणियडसंकिण्णगामि ।

५

सन्धि ५०

“हे श्रेणिकराज, तुम श्री श्रेयांसके तीर्थकालमे अपने दृढ़ बाहुबलसे गर्वीले अश्वग्रीव और त्रिपृष्ठाका युद्ध सुनो ।”

१

जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रमे मगध देश है जो चंचल भ्रमरोके समान चन्दनवृक्षोंके आमोदसे युक्त है, जो मदमत्त भँसोंके युद्धसे विमर्दित है, जो गरजते हुए ग्रामगोपालोके शब्दोंसे युक्त है, जहाँ गोकुलोकी दुग्धधारासे पथिकजन सन्तुष्ट हैं, जिसमे मथानीसे गाढ़ा दही मथा जा रहा है; जिसकी सीमाएँ पके हुए घान्योसे आच्छादित हैं, जहाँ गाँव पास-पास बसे हुए हैं, जिसमें जी रखानेवाली

Ms. A and P have the following stanza at the beginning of this Saṃdhi :—

भास्वानेककलाधतोऽस्य च भवेद्यन्म तन्मङ्गलं
सर्वस्यापि गुरुर्वृषः कविरय चक्रे धर्मं च क्रमः ।
राहुः केतुरय द्विषामिति दधत्साम्यं ग्रहाणां प्रभुः
संप्रत्योदयमातनोति भरतः सर्वस्य तेजोधिकः ॥ १ ॥

K does not give it anywhere In addition, P has also सया सन्तो वेत्तो भूसणं सुद्धसीलं etc. which in A is found at the beginning of IL for which see page 130. In addition, P has जगं रम्म हम्मं दीवओ चन्दविम्बं for which see page 165 of Vol. I. In addition, P has the following stanza :—

दीनानायधर्मं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवर्नं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।
धारानायनरेन्द्रकोपशिखिना दधं विदग्धप्रियं
वचदानी वसतिं करिष्यति पुनः श्रोपुष्पवन्तः कविः ॥ १ ॥

A gives this stanza at the beginning of LII. K does not give it anywhere ।

१. १. AP विहभुयं । २. AP चललवलिं । ३. AP जुञ्जणविमहि । ४. AP मंथानामंथिइ थद्धदहिइ ।
५. A णियलणियलं ।

जववालिगिरवमोहियकुरंगि
सरिसरवरजलकल्लोलमालि
वसुमइमहिलासोहाणिवेसि
१० रायगिहणयरि पहु विस्सभूइ
पढमहु जइणी मृगणयण भज्ज
पहरमियइ जइणिइ विस्सणंदि
सुय जाया वेणिण वि णवजुवाण
ता रायं ससियरंघवलदेहु

णवगंधसालिणिवलियविहंगि ।
सयदलणिणीभसंलवलणीलि ।
कथुदुग्गहणिग्गहि मगहदेसि ।
तहु लहुयव भाइ विसाहभइ ।
बीयहु लक्खण णामे मणोज्जे ।
जणियउ लक्खणइ विसाहणंदि ।
अच्छंति जाम सुहुं सुंजमाण ।
गयणयलि पलोइचे सरयमेहु ।

१५ घत्ता—णं खलमित्तसणेहु^{१२} सो सहसत्ति विलीणउ ॥
उहु संसारु भणंतु चित्ति^{१३} चवक्खिउ राणउ ॥१॥

२

जंपइ पहु जिणगुण संभरंतु
जिहं णट्टउ पवणं पहु मेहु
होसंति सिट्ठिले संधिप्पएस
होसंति णयण सुहिरुवभंत
५ होसंति सुणिव्वसाय पाय

सत्तंगरज्जसिरि परिहरंतु ।
णासेसइ तिह कालेण देहु ।
होसंति हंसहिमवणण केस ।
होसंति हत्थ णित्थाभवंत ।
सुहक्खहरहु णिग्गेसंइ ण वाय ।

(कृषक बालिका) के शब्दसे हरिण मुग्ध हैं, जिसमें नवगन्धसे युक्त घान्योंपर पक्षी गिर रहे हैं, जो नदियों और सरोवरोंकी लहरोसे युक्त है, जो कमलोंमें व्याप्त भ्रमरकुलसे श्याम है, जो वसुमतीरूपी महिलाकी शोभाका धर है, तथा जो दुष्टोंका निग्रह करनेवाला है, ऐसे मगध देशको राजगृह नगरीमें राजा विश्वभूति और उसका छोटा भाई विशाखभूति है। पहले की कमल-नयनी जैनी पत्नी थी। दूसरे की लक्ष्मणा नामकी सुन्दर स्त्री थी। पतिके द्वारा रमण की गयी पहली जैनी पत्नीने विश्वनन्दीको जन्म दिया, जब कि दूसरी लक्ष्मणाने विशाखनन्दीको। दोनोंके पुत्र नवयुवक हो गये। वे सुखपूर्वक भोग करते हुए रह रहे थे कि राजाने आकाशतलमें चन्द्रमाके समान सफेद शरीर धरदू मेघ देखा।

घत्ता—वह शीघ्र ही इस प्रकार विलीन हो गया, मानो खलजनका स्नेह हो, इस संसारको आग लगे—यह कहता हुआ राजा अपने मनमें चौक गया ॥१॥

२

जिन भगवान्के गुणोंका स्मरण करता हुआ और सप्तांग राज्यश्रीका परिहार करता हुआ वह कहता है कि “जिस प्रकार पवनसे यह मेघ नष्ट हो गया, उसी प्रकार समयके साथ यह शरीर नाशको प्राप्त होगा। जोड़ोंके प्रदेश ढोले हो जायेंगे और बाल हंस तथा हिमकी तरह सफेद हो जायेंगे। नेत्र सुहृदोंके रूपको देखनेमें भ्रान्ति करेंगे। हाथ शक्तिसे रहित हो जायेंगे। पैर व्यवसाय-से रहित होंगे। मुखरूपी कुहरसे वाणी नहीं निकलेगी। हे भाई, तुम राज करो, मैंने (यह) तुम्हें

६. A भसलोलिणीलि । ७. AP विगुणयण । ८. P भज्जा । ९. P मणोज्जा । १०. A संविचय-
वलदेहु । ११. A पलोयउ । १२. P सिणेहु । १३. A वित्त चमविकउ ।

२. १. AP जिम । २. P पमणं । ३. A सिधिलि । ४. A णिगेसइ ।

रक्षेजसि शिष्यकृतविद्यया ।

शिवसंगीतानि विद्यासङ्गम् ।

सहि विद्वेषसाधनं चरन्तु गीतम् ।

सङ्गं मन्वणान्निर्द्वन्द्वं विद्विं सधर्म् ।

पुनरिदं विद्यासङ्गं सुरारं ।

धना—एतद्वर्णना कौतुकिं ह्यङ्गं

पद्यनिर्द्वन्द्वसङ्गं मत्तव यं कति करिणोव ॥२॥

कहिं वि विद्विष्यं जलान्द्विसण्ण

कहिं वि कासु व अस्मिमीह विषवङ्

कहिं वि कर्तुल्लोकाकमलुं हेरुङ्

उद्वेपस्यसिदुस्सुमज्जहमात्ति

दीसइहं कहिं कइरुहं फुरि

क वि वीविषुं पत्तिसिदुस्सुमज्जहमात्ति

कहिं वि वकथसङ्गं विण्णं रथं ।

कहिं वि वेणीहंरिं हेरुं लिख

क वि वीधुं एववनेवणमण्ण

क वि पणयकविषय अण्णो विणवङ्

क वि उंविं सरोवरणींरिं वरुङ् ।

कहिं वि विद्वेकइं णीउइं वमात्ति ।

कहिं वि कुरिं धरिंयव हंरुं हेसवि ।

अवलोइय वडवकविणोससमाण ।

क वि वीविषुं पत्तिसिदुस्सुमज्जहमात्ति

कहिं वि वकथसङ्गं विण्णं रथं ।

१०

५

विद्या, वृत्त अथपे कृतकी कीर्तिजगता रत्नता ।" विद्यालक्ष्यं तस्यै रथय परम्पराम् । वृत्त गण ।
कवये ध्यागववर श्रौषर गुणकी स्तुति करे केशं मय्य राजाजीके सद्य अपनीके महीवतीसे
विश्रुतिव कर विप्रत ही गण । एष र विद्यालक्ष्यं सूदर रत्ना ही गण तया विवन्वती प्रवराज
ही गण ।"

धना—नन्दनवन्दने शीर्ष करि ह्यै कमी वहे पनीके मृणालसे मारता है, मानी भयमव
गण अपनी कृष्ण कृष्ण मृक्षसे द्विषनीकी मार रदा ही ॥२॥
कमी मकरन्दसे लिख करती, कमी जलान्द्विष वसे वीठता, कमी जलके कृतसे वसे
धीवता, कमी नवध्वनिके मधसे वसे दहता, कमी कामके समान कृतकीको कृतपर जालता,
कमी मणयसे कृतित वसे मंगलाती करता । कमी जला कमलका रूप करता,
श्रीर कमी वसे उकर सरोवरके तीरकी पार करता । कमी, जलने मूर्ध श्रीर वन्दनमाकी करणी-
की आच्छादित कर लिप्या है ऐस नीले तमाल वनसे लिप जाता है, कमी वसकी वसकी हृदं
श्रीलिप्या लिखाई देती है, कमी ह्यसे पकड़कर ऊँल मुसकराता है, कमी वहे वहे वके पातीही
पर झौंती है, श्रीर वदवर्षकी पशुणीके समान लिखाई देती है, कमी काम कर लेनेके बाद,
श्रीर कमी जल वसुधयसे आहूत करता है । कमी सहजसे आहूत करता है । कमी सहजसे आहूत
कमी जल वसुधयसे आहूत करता है ।

५. अतिगति । ६. अति । ७. अत्यन्त विद्यासङ्गं धरा, ८. पुनरिदं विद्यासङ्गं धरा ।
८. एतद्वन्द्वं । ९. अप कति ७ ।
३. १. अ कति १ । २. अप विषय । ३. अप जीय । ४. अ कति जीय । ५. अप हेरु ।

तुहुं करहि रज्जु मई दिण्णु भाय
ता थिच संताणि विसाहभूइ
महि चिहवसारु जरतणु गणेषि
सहुं भवणरिदहं तिहिं सएहिं
एत्तहि विसाहभूई सुराठ ।

रखेज्जसु गियकुलकित्तिछाय ।
णिग्गिंवि गच्च काणणु विस्सभूइ ।
जोईसरु सिरिहरु गुरु थुणेवि ।
थिउं अप्पच्च महिचि महन्वएहिं ।
सो विस्सणंदि जुवराठ जाठ ।

१०

धत्ता—णंदणवणि कीलंतु हर्णइ मूणालें धरिणिठ ।।

पसरियदीहकरगु मत्तच्च णं करि करिणिठ ।।२।।

३

काहिं वि भयरंदं करइ तिल्ल
क वि सिंचिये जलंगंडूसएण
काहि वि कामु व कुसुमोहु चिवइ
काहि वि करैलीलाकमल्लु हरइ
छाइयससिसूरमऊहमालि
दीसइ काइ वि कररुह फुरंतु
पारोहइ क वि दोलायमाण
क वि बांधिवि मोत्तियदामएण
साहाररसिल्लवं कणयवत्तु

काहि वि वेल्लीहरि देइ णिल्ल ।
क वि जोयैइ णवजोव्वणमएण ।
क वि पणयकुविय अणुणंतु णवइ ।
क वि लेवि सरोवरणीरि तरइ ।
काहि वि लिहक्कइ णीलइ तमालि ।
काइ वि करि धरियच्च दर हसंतु ।
अवल्लोइय वडजक्खिणिसमाण ।
हय कुवलएण कयकामएण ।
काहि वि तत्तपल्लवु दिण्णु रत्तु ।

५

दिया, तुम अपने कुलकी कीतिछाया रखना ।" विशाखभूति उसकी राज्य परम्परामे बैठ गया । विश्वभूति घरसे निकलकर वनमे चला गया । धरती और वैभव श्रेष्ठको जीर्ण तृणकी तरह समझ कर वह योगीश्वर शोधर मुसकी स्तुति कर सैकड़ों भव्य राजाओंके साथ अपनेको महान्नतोंसे विभूषित कर स्थित हो गया । इधर विशाखभूति सुन्दर राजा हो गया तथा विश्वनन्दो युवराज हो गया ।"

धत्ता—नन्दनवनमे क्रीड़ा करते हुए कभी वह पत्नीको मूणालसे मारता है, मानो मदमत्त गज अपनी फैली हुई सूँड़से हथिनीको मार रहा हो ।।२।।

३

कभी मकरन्दसे तिलक करता, कभी लतागुहमे उसे बैठाता, कभी जलके कुल्लेसे उसे सींचता, कभी नवयौवनके मदसे उसे देखता, कभी कामके समान कुसुमके फूलोंको उसपर डालता, कभी प्रणयसे कुपित उसे मनाता हुआ नमस्कार करता ।-कभी लीला कमलका हरण करता, और कभी उसे लेकर सरोवरके तीरको पार करता । कभी, जिसने सूर्य और चन्द्रमाकी किरणोंको आच्छादित कर लिया है ऐसे नीले तमाल वनमे छिप जाता है, कभी उसकी चमकती हुई अँगुलियाँ दिखाई देती हैं, कभी हाथसे पकड़कर कुछ मुसकराता है, कभी वह वटके प्रारोहों पर झूलती है, और वटवृक्षकी यक्षिणीके समान दिखाई देती है, कभी काम कर लेनेके बाद, मोतीकी मालासे बांधकर कुवलयसे आहत करता है । कभी सहकारके रससे आर्द्र कमलपत्र और कभी लाल वृक्षपत्र देता है ।

५. A गिगगवि । ६. A ठिड । ७. A रज्जेहि विसाहभूई सराठ, P एत्तहि विसाहभूई सुराठ ।

८. P हण्णह । ९. AP करि णं ।

३. १. A काहि मि । २. AP सिंचइ । ३. AP जोइय । ४. A करि लीला । ५. AP लेइ ।

- १० घत्ता—णं वणि णल्लिणि दुरेहु अच्छह णिच्चै पइट्ठ ।
इय सो तेत्थु रच्चतु लक्खणजापं दिट्ठ ।३॥

४

- तओ तं णियच्छेवि राएंगएणं
घरं गंपि सो गोमिणीमाणणेणं
सया चायसंतोसियाण्येयवंदी
वेणं देहि तं मञ्ज रायाहिराया
५ ण देमि त्ति मा जंप णिब्भिण्णकण्णं
णरिंदेण उत्तं वणं देमि णूणं
दुमंतै रमंतो मयच्छीण मारो
खणेण्येय पत्तो समित्तो णवंतो
महं भाळणा णेहवासेण दिण्णं
१० कुलीणा तुमं चेष मण्णंति सारिं
अहं जामि पच्चंतवासाइं धेत्तुं
तओ जंपियं तेण तं मञ्ज पुज्जो
थिराणं करणं पयासेमि सत्तिं
- वणुस्साहिल्लासं गहोरं गएणं ।
पिऊ पत्थिओ पुण्णचंदाणणेणं ।
जहिं कीलए णिच्चसो विस्सणंदी ।
महामंतिसेणावईवंदपाया ।
अहं देव गच्छामि देसंतमण्णं ।
तुमं जाहि मा पुत्त उच्चिग्गाठाणं ।
पुणो तेण कोक्काविओ सो कुमारो ।
पिच्चवेण संबोहिओ णायवंतो ।
तुमं पत्थिओ तुज्ज रज्जं रवण्णं ।
तुमं थाहि सीहार्सणे मुंज भूमि ।
बलुहामथामे रिज्जे पुत्त हंतुं ।
तुमं देव तयाउ आराहणिज्जो ।
अहं जामि गेण्हामि क्रूरारिचित्तिं ।

घत्ता—मानो वनमें कमलिनी और भ्रमर नित्य रूपसे प्रवेश करके स्थित हों । इस प्रकार रमण करते हुए उन्हें लक्ष्मणके पुत्र विद्याखनन्दीने देखा ॥३॥

४

उस समय उस राजपुत्रको देखकर उसके मनमें वनकी गम्भीर अभिलाषा उत्पन्न हो गयी । घर जाकर लक्ष्मीके द्वारा मान्य और पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाले कुमारने अपने पितासे प्रार्थना की, “जिसने अपने त्यागसे अनेक चारणोंको सन्तुष्ट किया है, ऐसा विश्वनन्दी जहाँ नित्य क्रीड़ा करता है, महामन्त्री और सेनापतिके द्वारा वन्दनीय चरण हे राजाधिराज, वह उपवन मुझे दोजिए, ‘मैं नहीं देता हूँ’, कानोंको भेदन करनेवाला ऐसा मत कहो (नहीं तो) हे देव मैं देशान्तर चला जाऊँगा ।” राजाने कहा, “मैं निश्चित रूपसे वन दूँगा । हे पुत्र, तुम खेद जनक स्थानको मत जाओ ।” फिर उसने, भृगुनयनियोंके लिए कामदेवके समान, क्रीड़ा करते हुए कुमारको छोटे विचार से बूलाया । एक क्षणमें अपने मित्रके साथ उपस्थित प्रणाम करते हुए न्यायवान उस पुत्रसे चाचाने कहा, “भाईके द्वारा स्नेहके कारण दिया गया यह सुन्दर राज्य तुम्हारा है । तुम राजा हो । कुलीन लोग तुम्हींको राजा मानते हैं । तुम सिंहासनपर बैठो और धरतीका भोग करो । मैं सीमान्तके निवासियोंको पकड़नेके लिए और सेनाकी उद्दाम शक्तिके, हे पुत्र, शत्रुका नाश करनेके लिए जाता हूँ ।” तब उस कुमारने उससे कहा, “तुम मेरे पूज्य हो । हे देव, तुम तातके द्वारा आराधनीय थे । मैं अपने स्थिर हाथोंकी शक्ति प्रकाशित करूँगा, मैं जाता हूँ और क्रूर राजाओंको वृत्ति ग्रहण करता हूँ ।”

६. A णल्लिणदुरेहु । ७. P णिच्चु ।

४. १. A माणिणीमाणणेणं । २. A वणे देहि । ३. A वरं देवि णूणं । ४. AP सिंहासणे । ५. A रिद्धं पुत्त ।

घत्ता—एवं भणेवि कुमार अप्पजं विणयं भूसिवि ॥

गड पन्चतन्त्रवाहं चरि जांव आरुसिवि ॥४॥

१५

५

ता पट्टणा पणयविमद्दणासु
पइसरहुं ण दंतुं कयंतलीलु
संगाममहोवहिभीममयरु
दह्माहरदधु रत्तंतणेत्तु
अईसंधिवि महुं वणु लइं जेव
वीसासिवि किं हम्मइ पसुत्तु
लक्खणहि सूपु भयभावणडिउ
महिबलयविसट्टणतडयेंदंतु
विवरत्तसप्पचोभैलललंतु
उत्तुंगु अहंगु सुट्टुणिरिक्खु
अच्छोडइ किर महिवीडि जांव
भहु पवणगमणु मग्गाणुलग्गु

दिण्णजं णंदणवणु णंदणासु ।
तेमौरिउ सुहिउज्जाणवाळु ।
आयणिवि पडियाइयउ इयरु ।
भासइ आरुसिवि जइणियुत्तु ।
थिरु एंवहिं भायर थाहि तेव ।
किं पित्तिपण ववसिउं अजुत्तु ।
तं पेच्छिवि दुट्टु कविट्ठि चडिउ ।
भजंतहि मूलहिं कइयडंतु ।
उडुंतहि पक्खिहिं चलयलंतु ।
उम्मूलिउ रिउणा समउं रुक्खु ।
णासंतु दिट्टु पडिक्खु ताव ।
घरणासइ चलयसरियकरगु ।

५

१०

घत्ता—पुणरवि दुग्गु भणेवि आसंधिवि थिउ वइररउ ॥

तेण सुट्टिघाएण खंसु सिलामउ चूरिउ ॥५॥

घत्ता—कुमार इस प्रकार कहकर और अपनेको विनयसे भूषित कर, जबतक सीमान्त राजाओपर क्रुद्ध होकर गया ॥४॥

५

जबतक राजाने प्रणयका नाश करनेवाले अपने पुत्रको नन्दनवन दे दिया। नन्दनवनमें प्रवेश नहीं देनेवाले तथा यमके समान लीलावाले सुधो उद्यानपालको उसने मार डाला। (इत्नेमें) संग्रामरूपी समुद्रका भयंकर मगर दूसरा (विश्वनन्दी) यह सुनकर वापस आ गया। अपने माधे ओठ चवाता हुआ लाल-लाल आँखोंवाले जैनी पुत्र (विश्वनन्दी) क्रोधमें आकर कहता है कि जिस प्रकार कपट करके तुमने मेरा वन ले लिया है, हे भाई, वैसे ही तुम इस समय स्थिर हो जाओ। विश्वास देकर क्या सोते हुए आदमीको मारना चाहिए, चाचाने यह अनुचित काम कैसे किया? लक्ष्मणके पुत्रको भयके भावसे कम्पित देखकर वह दुष्ट कपित्य वृक्षपर चढ़ गया। धरतीवलयके ध्वस्त होनेसे तड़तड़ करता हुआ, टूटती हुई शाखाओंसे कड़कड़ करता हुआ, बिलोंके भीतरके सोंपोंको चोभल (?) (कंचुल) से विलसित, बड़ते हुए पक्षियोंसे चंचल, ऊँचा अखण्ड और अत्यन्त दुर्दर्शनीय वृक्षको उसने शत्रु सहित उखाड़ दिया। जबतक वह उसे धरतीपर पछाड़ता है तबतक उसे शत्रु भागता हुआ दिखाई दिया। वह वीर भी पवनगतितसे उसको पकड़नेकी आशासे हाथमें फैली हुई चंचल तलवार लिये हुए मार्गमें उसका पीछा किया।

घत्ता—फिर भी दुर्गं समझकर, शत्रु उसका (शिलाका) सहारा लेकर बैठ गया। उसने मुट्टीके आघातसे उस शिलालको चूर-चूर कर दिया ॥५॥

६. AP ०णिवाहं ।

५. १. AP दंति । २. A ता मारिउ । ३. AP दट्टाहरोट्टु । ४. A अहिंसंधिवि । ५. A तडयलंतु । ६. A चोभल । ७. A वत्तंग ।

- ६
 पुणु इलिइ खंभि परिगलियमाणु
 पीसासैवेयवद्धियकिलेसु
 अवलोइवि भाइ पलायमाणु
 पभणइ मा णासहि आउ आउ
 ५ जुवरायहु कहइ विसाहभूइ
 इहु जाउ जाउ किं आयएण
 सिलफोडणमुयमाहपवप्प
 जइण्णिददिकल महुं सरणु अज्जु
 वणु मेल्लिवि हरिणु व धावमाणु ।
 पीसत्थहत्थं गिम्मुककेसु ।
 करुणारसि थक्कस सुहडमाणु ।
 तहिं अवसरि पत्तउ तहिं जि राउ ।
 लइ लइ सुंदर तेरी विहूइ ।
 किं कुच्छियपुत्तं जायएण ।
 अइसंघिओ सि महुं खमहि वप्प ।
 परिपालहि तुहुं अप्पणउ रज्जु ।
- घत्ता—बंधवबंधरकरीहि गितिविण्णउ नुवरिद्धिहि ॥
 १० पुत्त पडिच्छहि पट्टु हंउं लग्गामि तवसिद्धिहि ॥६॥

- ७
 खमों मेहें किं गिज्जलेण
 मेहें कामें किं गिह्वेण
 कव्वं णडेण किं णीरसेण
 दव्वं भव्वं किं गिन्वएण
 ५ तोणें कणिसें किं गिक्कणेण
 तरुणा सरेण किं गिप्फलेण ।
 मुण्णिणा कुलेण किं गित्तवेण ।
 रज्जं भोज्जे किं परवसेण ।
 धम्मं राएं किं गिह्वएण ।
 चावें पुरिसें किं गिग्गणेण ।

६
 खमके दूटनेपर, वन छोड़कर गलितमान हरिणके समान दौड़ते हुए, निःश्वासके वेगसे जिसका कलेश बढ़ रहा है, ऐसे वास्त्ररहित हाथवाले और मुककेश भागते हुए भाई को देखकर वह सुभटसूर्य करुणा रसमें डूब गया। वह कहता है—हे भाई, मत भागो, आओ-आओ। उसी अवसरपर वहाँ राजा आया। विशाखभूति युवराजसे कहता है—“हे सुन्दर, तुम अपना ऐश्वर्य ले लो, यह पुत्र पुत्र क्यों हुआ? इस कृतिसत पुत्रके होनेसे क्या। शिला फोड़नेवाली-भुजाओके दर्पवाले हे सुभट, क्षमा करो, तुम्हारे साथ कपट किया। आज मुझे जैन दीक्षा क्षरण है। तुम अपने राज्यका पालन करो।”

घत्ता—इस प्रकार भाइयोंमें शत्रुता उत्पन्न करानेवाली राजाकी ऋद्धिसे वह विरक्त हो गया। हे पुत्र, मैं तपसिद्धिके मार्गमें लगूँगा ॥६॥

७
 बिना पानीके भेघ और खड्गसे क्या? निष्फल (फल और फलक) से रहित वृक्ष और फलसे क्या? द्रवण (क्षरण) रहित भेघ और कामसे क्या? तपसे रहित मुनि अथवा कुलसे क्या? नीरस काव्य अथवा नटसे क्या? परवश राज्य अथवा भोजनसे क्या? निर्वाय (व्यय और व्रतसे रहित) द्रव्य अथवा भव्यसे क्या? गिक्कण (अन्न और बाणसे रहित) बल और तरकस-

६. १. A वणु । २ AP जीसासु । ३. AP हत्थु । ४. A रसथक्कव । ५. वहरकरीहे गितिविण्णउ ।

६. AP गितिविद्धिहि । ७. K हहंउं ।

७. १. A वेम्मं, P वेमं । २. P omits कि ।

हृत्तं गिरगुणु अवह वि मञ्जु तण्ड
वियसियपंकयसंणिहंसुहेण
हो जोवणेण हो उववणेण
हो पट्टणेण सुहवट्टणेण
सहंसु सयणहि जहि संभवइ वइरु
महु जणणे दिण्णी तुञ्जु पुहइ
मइ पुणु जाएवत्तं कहि वि तेत्थु

कवडेण जेहि^३ तुह भग्गु पण्ड ।
पडिजंपिचं जइणीतगुरुहेण ।
हो परियणेण हो हो धणेण ।
हो सीमंतिणिथेणघट्टणेण ।
पित्तिय तहि ण वसमि हत्तं वि सुइरु । १०
जो रुचइ सो तुहं करहि नृवइ ।
णिवसंति दिथंवर विञ्जि जेत्यु ।

घत्ता—तं णिसुणिवि राएण जइ वि चित्ति अवहेरिड ॥
तो वि परायइ कज्जि पुत्तु रज्जि वइसारिड ॥७॥

८

वइसणइ वइट्टु विसाहणांदि
संभूइ सूरि पणोविवि पवित्तु
चिरु कालु चरेप्पिणु चारु चरणु
उप्पण्णु महासुक्काहिहाणि
सहभयभूरिभूसाविहाणि
परमंडलवइवाहिणिहि छइड

सविसाहभूइ गड विस्सणांदि ।
दोहिं वि पडिवण्णत्तं रिसिचरित्तु ।
किं पित्तिएण संणासमरणु ।
मणिमयविमाणि धयधुव्वमाणि ।
सोलहसमुइजीवियपमाणि । ५
एत्तहि वि रायगिहणयरु लइड ।

से क्या ? निर्गुण (गुण और डोरीसे रहित) चाप (धनुष) और पुत्रवसे क्या ? एक तो मैं निर्गुण हूँ, दूसरे कपटके कारण मेरा स्नेह तुमसे भंग हो गया है। तब कमलके समान, जिसका मुखकमल खिला हुआ है, ऐसे उस जैनीपुत्रने प्रत्युत्तर दिया, "श्रीवन रहे, उपवन रहे, परिजन रहे, धन रहे, नगर रहे, सुखवर्तन रहे, सीमन्तिनियोके स्तनोंका संघषं रहे कि जिससे स्वजनोके साथ वैर उत्पन्न होता है, हे चाचा, मैं वहाँ अधिक समय नहीं रहूँगा। मेरे पिताने तुम्हें धरती प्रदान की है, तुम्हें जो अच्छा लगे तुम उसे करो, मैं तो अब वहीं जाऊँगा कि जहाँ विन्ध्याचलमें दिग्म्बर मुनि निवास करते हैं।

घत्ता—यह सुनकर राजाने यद्यपि अपने मनमें इसकी उपेक्षा की तो भी कार्य आ पढ़ने-पर उसने पुत्रको राज्यमें बैठा दिया ॥७॥

८

विशाखनन्दी राज्यमें बैठा। विश्वनन्दी विशाखभूति सहित चला गया। सम्भूति मुनिको प्रणाम कर दोनोने मुनिचरित ग्रहण कर लिया। बहुत समय तक सुन्दर चरित्रका पालन कर चाचाने संन्यासमरण किया। वह ध्वजोसे कम्पित महाशुक्र नामक मणिमय विमानमें उत्पन्न हुआ। अनेक भूषा-विधान उसे साथ-साथ उत्पन्न हुए। उसकी आयुका प्रमाण सोलह सागर पर्यन्त था। शत्रुमण्डलके राजाकी सेनाके द्वारा आच्छादित राजगृह नगर भी यहाँ ले लिया गया।

३. A कवडेण जेण । ४. A^० संमहुयुहेण । ५. P घणयहइणेण । ६. A महु सयणहि जं संभवइ वइरु । ७. AP णिवइ ।

८. १. A वइसणे; P वइसेणइ । २. A पणवेवि चित्तु ।

लक्ष्मणणंदेषु ह्यसिरिविलासु थिञ्ज महुरहि जाइवि कयणिवासु ।
 अणवरयबुद्धिसंधियमणेण जीवइ कासु वि मंतित्तणेण ।
 घत्ता—एत्थु ण किञ्जइ दप्पु लच्छि ण कासु वि सासँय ॥
 १० जे गय गयखवेहिँ ते पुणुँ पायहिँ गयँ ॥८॥

९

मुणि विस्सणंदि ता तहिँ जि कालि मञ्जणहवेलि खरकिरणजालि ।
 कयपक्खमासदीहोबवासु कंकालसेसु गयरुहिरमासु ।
 तं पुरवरु सो चरियहि पइहु अहिणवपसूयगिट्ठिइ गिहँटुठु ।
 णिट्ठाणिट्ठिठ जइवरवरिट्ठु गिवडंतु तेण पिसुणेण दिट्ठु ।
 ५ वेसासउहयलि परिट्ठियण बहुजम्मणमरणकुंठियण ।
 उवहसिउ साहु पत्थिवचरेण पइं रुक्खँ खंभ भग्गा करेण ।
 चिरु एंवहिँ गाइविहट्ठियंगु पडिओ सि विहँडियभाणसिगु ।
 गिग्गुण गिण्ठियण दुञ्जण सगाव खद्धो सि मञ्ज पावेण पाव ।

घत्ता—तं गिसुणिवि सवणेणँ बद्धउं रोसणियाणउं ।

१० आगामिणि भवि तुब्हु हसियहु करमि समाणउं ॥९॥

नष्ट हो चुका है श्रीविलास जिसका ऐसा लक्ष्मणाका पुत्र मथुरामे घर बनाकर रहने लगा । जिसमे अनवरत बुद्धिके सन्धानमें मन रहता है, ऐसा किसीका मन्त्रित्व करते हुए वह जीवित रहता है ।
 घत्ता—इस संसारमें धमण्ड नही करना चाहिए क्योंकि लक्ष्मी किसीके पास शाश्वत नही रहती । जो कभी हाथोके कन्धों पर चलते हैं, वे फिर पैरों चलते हैं ॥८॥

९

जिन्होंने एक पखवाड़ेका लम्बा उपवास किया है, जो कंकालशेष हैं, जिनका शरिर और मांस जा चुका है ऐसे मुनि विश्वनन्दी, उसी समय सूर्यकी प्रखर किरणोंसे युक्त मध्याह्न वेलामें उस नगरमे चयकि लिए प्रविष्ट हुए । उन्हें नयी प्रसूतवती गायने गिरा दिया । तपस्यासे क्षीण उन मुनिवरको वैश्याके सौघतलपर बैठे हुए उस दुष्टने गिरते हुए देखा । अनेक जन्म और मरणोंके लिए उत्सुक उसने साधुका उपहास किया कि भूतकालमे राजाके रूपमें तुमने हाथसे वृक्ष और खम्भोंको नष्ट किया था । इस समय गायके द्वारा विखण्डित शरीर और खण्डित गर्वशिखर तुम पड़े हुए हो । हे निर्गुण, निर्धन, दुर्जन, सगर्व पाप, तुम मेरे पापसे नष्ट हुए हो ।

घत्ता—यह सुनकर श्रमणने क्रोधसे यह निदान किया कि आगामी भवमे मैं तुम्हारी हँसीका समान फल बताऊँगा ॥९॥

३. A णंदण । ४. P सासया । ५. A P ते पुणुरवि । ६. P गया ।

९. १. AP गिहिट्ठु । २. रंक खंभ । ३. AP समणेण ।

कथयच्चवत्त्राणपयासणेण
जहिं तायभाउ जायउ अदीणु
तहिं देहमइ कपि मणोहिरामि
उष्णणउ सल्लहियंतरंगु
ते विणिण वि सुरवर वद्धणेह
ते विणिण वि णिच्चु जि सह वसंति
ते विणिण वि णं तिच्चंसुजोय
ते विणिण वि दिवि अच्छंति जाव
णिन्वेएं उइउ विसाहणंदि
माणिकमऊहोहामियकि

१०

तांविहिं वि मरिवि संणासणेण ।
एहु वि दूसहतवचरणखीणु ।
दहउहजलणिहिवद्दाउधामि ।
क्रमेण ण किल्लइ कासु भंगु ।
ते विणिण वि लायणणुमेह ।
ते विणिण वि तारतुसारकंति ।
ते विणिण वि कथकीलाविणोय ।
एत्तहिं वि अवरु संभवइ तां व ।
जिणतवतावं तावेवि वोंदि ।
संभूयउ सो वि महंतसुकि ।

५

१०

घत्ता—एयहं दोहं वि ताहं देवहं वियलियहरिसइं ॥

थक्कउ आउपमाणु जइयहुं कइवयवरिसइं ॥१०॥

११

तइयहुं वेयड्ढारुडियाहि
अलयाणयरिहि पहु मोरगीउ
देव वि रणरंगि तसंति जासु
जो चिरु विसाहणंदि ति भणिउ

विउज्जाहरउत्तरसेडियाहि ।
थिरथोरवाहु सद्दुलगीउ ।
णीलंजणपह महएवि तासु ।
सो ताइ पुत्तु हरिगीउ जणिउ ।

१०

प्रत्याख्यानका प्रकाशन करनेवाले संन्याससे भृत्यको प्राप्त होकर, जहाँ उसका अदीन चाचा उत्पन्न हुआ था, असह्य तपश्चरणसे क्षीण वह भी शल्यको अपने मनमें धारण कर सोलह सागर आयु प्रमाणवाले सुन्दर सोलहवें स्वर्गमें उत्पन्न हुआ । कर्मके द्वारा किसका नाश नहीं किया जाता । वे दोनों ही देव एक दूसरेके प्रति स्नेहसे प्रतिबद्ध थे । वे दोनों ही लावण्यरूपी जलके मेघ थे । वे दोनों ही प्रतिदिन साथ रहते थे । वे दोनों ही स्वच्छ तुषारकी तरह कान्तिवाले थे । वे दोनों ही सूर्य-चन्द्रमाके समान थे । वे दोनों ही क्रीड़ा विनोद करनेवाले थे । वे दोनों जव-तक स्वर्गमें थे, यहाँ भी तबतक दूसरी घटना हो गयी । विशाखनन्दोको वैराग्य हो गया । वह भी जिनवरके तपतापसे तपकर माणिक्यकी किरणोंके समूहसे सूर्यको तिरस्कृत करनेवाले महाशुक स्वर्गमें देव हुआ ।

घत्ता—इतनेमे इन दोनों देवोंका भी विगलित है हर्ष जिनमें ऐसे कई वर्षोंका आयु प्रमाण रह गया ॥१०॥

११

विजयार्घ नामसे प्रसिद्ध विद्याधरोंकी उत्तरश्रेणिकी अलकापुरी नगरीमे स्थिर और स्थूल बाहु तथा सिंहके समान गरदनवाला मयूरग्रीव नामका राजा हुआ । जिससे युद्धमे देव भी त्रस्त रहते हैं, ऐसे उसकी नीलांजन प्रभा नामकी महादेवी थी । जो पहले विशाखनन्दो कहा गया था,

१०. १. AP दहमि कपि सुमणां । २. A सल्लहयंतरंगु । ३. AP एत्तह वि ।

११. १. P वेज्जाहरं ।

- ५ जाएण तेण णवजोन्वणेण करलालियसिरिरामायणेण ।
 पडिवक्खलक्खलक्खलुम्भहेण । चंद्रक्खिवभीसावणेण ।
 अहिवलयणिलयकंपावणेण भूयोयपुरसंतावणेण ।
 खयरिद्विदकंदावणेण करिणा इव दाणोस्त्रियकरेण ।
 सरणागयजणपविपंजरेण सुहवत्तणजियमणसियसरेण ।
- १० क्राणीणदीणकुलदिहिकरेण
 घत्ता—आसग्गीवें तेण रिच्च ह्य हरिणा इव करि ॥
 असिधारइ तासिच्चि गहिय तिखंड वसुंधरि ॥११॥

१२

- उग्गयपयावरवियरकरालु वसुमइ सुंजंतु पईहु कालु ।
 विद्धंसियवरसुहडावलेतु पैरिवद्धिच सो पडिवासुयधु ।
 तिस्थयरपवित्थित्थिणिरिहि ता पविण्णजंजूदीवभरहि ।
 बहुरमणिरमणसंपण्णचिसइ परिपालियधम्मि सुरम्मि विसइ ।
- ५ पोयणपुरु सुरपुरसोहहारि तहिं वसइ णराहिच दंडधारि ।
 सुवणेक्खणीहु सन्वीवयारि णामेण पयावइ णिज्जियारि ।
 तहु पढमदेवि जयवइ पसण्ण णं विवरविणिग्गय णायकण्ण ।
 अण्णेक्क चारु चित्थिण्णरमण सूर्येणयण मृगावइ भग्गमण ।
 दोहिं वि दीविय महि तिमिरजूर णिसि सिविणइ विट्ठा चंदसूर ।

वह उसका अश्वघ्रीव नामसे पुत्र उत्पन्न हुआ जिसने अपने हाथसे लक्ष्मीरूपी रामाके स्तनोंका लालन किया है। जो प्रतिपक्ष लक्षसेनाका नाश करनेवाला है, जो पृथ्वीवलयरूपी धरको कैंपानेवाला है, जो सूर्य-चन्द्रके बिम्बके समान भीषण है, जो विद्याधर राजाओंको रलानेवाला है, जो मनुष्योंके नगरोको सन्त्रास देनेवाला है, शरणागत मनुष्योंके लिए जो वज्रपंजरके समान है, जो हाथीके समान दानसे (मदजल और दान) आर्द्रकर (गोली सूँड़ अथवा हाथ) है, जो कन्यापुत्रों और दीनकुलोंके लिए भाग्यविधाता है, जिसने अपने शुभ आचरणसे कामदेवके तीरोको जीत लिया है।

घत्ता—ऐसे उस अश्वघ्रीवने उसी प्रकार शत्रुको नष्ट कर दिया है जिस प्रकार सिंह हाथी को नष्ट कर देता है। उसने अपनी तलवारकी धारसे सन्त्रस्त कर त्रिलण्ड धरती ले ली ॥११॥

१२

उदगत प्रताप जो सूर्य किरणोंकी तरह भयंकर है ऐसा वह लम्बे काल तक धरतीका भोग करता हुआ तथा श्रेष्ठ सुभटोंके अहंकारको नष्ट करनेवाला वह प्रतिवासुदेव बन गया। तब तीर्थंकरोंके द्वारा प्रवर्तित तीर्थोंसे जो पवित्र है, ऐसे विशाल जम्बूद्वीपमें भरत क्षेत्र है। वहाँ जिसमें अश्वघ्रीव-पुत्र विषयोंसे परिपूर्ण है, और जिसने धर्मका परिपालन किया है, ऐसे सुन्दर देशमें सुरपुरकी शोभाको धारण करनेवाला पोदनपुर नगर है। उसमें दण्डको धारण करनेवाला, भुवनका एकमात्र सिंह सबका उपकार करनेवाला और शत्रुविजेता प्रजापति नामका राजा था। उसकी प्रथम पत्नी प्रसन्न जयवती थी, जो मानो विवरसे निकली हुई नायकन्धा थी। एक और दूसरी

२. AP add after this : पलयाणलजालाहुसुहेण । ३. A करिणा विय ।

१२. १. AP जा वद्धिच । २. AP विगणयण सिगा ।

गिवडवि अणुहुंजियसुहसयाउ	ते दो वि देव देवासयाउ ।	१०
पित्तियभत्तिल्लय बद्धपणय	संजाया सुंदर ताहं तणय ।	
जइवइहि जाउ हिमसियसरीरु	बल्लहदुदु बालु णं छुइहीरु ।	
णारित्तणगुणघडियहि सईहि	हुउ कणहु जि कणहु मृगावईहि ।	
जयवंतु एक्क तुहि विज्जउ गणिउ	बीयउ पुणु विट्ठु तिविट्ठु भणिउ ।	
घत्ता—वेण्णि वि सह खेळंति भुयबलदूसियंदिगय ॥		१५
भरहदियंतपयासि १ पुप्फदंत णं लगय ॥१२॥		

इय महापुराणे विसद्धिमहापुरिसपुणालंकारे महाकहपुष्पदंतविरहए
महामन्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे बलएववासुदेवउत्पत्ती णाम
पण्णासमो परिच्छेओ समत्तो ॥५०॥

अत्यन्त सुन्दर मृगनयनी, मन्दगामिनी सुन्दर मृगावती थी। दोनों ही मानो धरतीपर अन्धकार-
को नष्ट करनेवाली दीपिकाएँ थीं। उन्होने रात्रिमें स्वप्नमे सूर्यको देखा। जहाँ सैकड़ों सुखोंका
भोग किया है ऐसे देवाश्रयसे वे दोनों प्रणयवद्ध देव (चाचा और भतीजे) उनके सुन्दर पुत्र
हुए। जयवतीके हिमके समान सफेद शरीरवाला बालक बलभद्र हुआ जो मानो बालचन्द्र था।
तथा नारीत्वके गुणसमूहसे घटित सती मृगावतीसे कृष्ण कृष्ण हुए (श्याम वासुदेव हुए)।
जयसे युक्त एकको वहाँ विजय कहा गया और दूसरेको विष्णु त्रिपुण्ड्र।

घत्ता—अपने बाहुबलसे दिग्गजको हूषित करनेवाले वे दोनों साथ-साथ खेलते थे, वे ऐसे
लगते थे मानो दिगन्तको प्रकाशित करनेवाला नक्षत्रसमूह उत्पन्न हुआ हो ॥१२॥

इस प्रकार त्रैसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त
द्वारा विरचित पूर्व महामन्व भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका बलदेव-
वासुदेव उत्पत्ति नाम का पचासवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥५०॥

३. A हिमसयं । ४. AP बलएउ । ५. A छुइहीरु; P छुइइ हीरु । ६. AP मिगावईहि ।
७. P विज्जउ । ८. A भणिउ । ९. A गणिउ । १०. P भुविय । ११. AP पुष्पदंत ।

सन्धि ५१

माणुसई गिलंतु सुयबलविक्रमसारें ॥
पंचाणु भीमु मारिड राचकुमारें ॥ध्रुवकां॥

१

पायणिवायपणावियमहियल	पविमलकमलालंक्रियडरयल ।
पंकयकुलिसकलसलखणधर	राचहंससेविये णं सुरसर ।
पोरिसपवररयणेरयणाचर	सम वडिडय ते विणिण वि भायर ।
जायासीधणुतणु गुणमणिणिहि	असिजालाकैरालखलकुलसिहि ।
धवल कसण सविणयपीणियजण	णावइ सरयससय सवणषण ।
कायकंतिधवलियकालियणह	णं गंगाणइ जइणा जलवह ।
तेहि विहिहिं सो सहइ महीसरु	विहिं पक्खहिं णं पुण्णिमवासरु ।
जांच्छइ हरिवीढि गिसण्णच	देसमहंतउ ता अवइण्णच ।
सो पभणइ चंगल पालियपय	भो णिवसउडकोडिलालियपय ।

सन्धि ५१

बाहुबलके पराक्रममें श्रेष्ठ राजकुमार (छोटे भाई) ने मनुष्योंको खानेवाले (आदमखोर) भयंकर सिंहको मार दिया ।

१

पैरोके निपातसे जिन्होंने धरतीको हिला दिया है, जिनका उरतल पवित्र कमलोसे अलंकृत है, जो कमल वज्र और कलशके लक्षणोंको धारण करनेवाले हैं, जो मानो मानसरोवरकी तरह, राजहंसों (श्रेष्ठ राजाओं, श्रेष्ठ हंसोंसे सेवित हैं) जो पौषष रूपी श्रेष्ठ रत्नोंके समूह हैं, ऐसे वे दोनों बड़े भाई साथ-साथ बढ़ने लगे (बड़े होने लगे) । अस्ती धनुष प्रमाण शरीरवाले वे दोनों गुणसमूहके निधि थे । अपनी तलवाररूपी ज्वालासे वे, शत्रुकुलके लिए अग्निके समान थे । अपनी विनयसे लोगोंको प्रसन्न करनेवाले गीरे और श्याम, वे दोनों जैसे क्रमशः शरद् और श्रावण समयके मेष थे । अपने शरीर की कान्तिसे आकाशको धवल और श्याम बनानेवाले वे मानो गंगा नदी और यमुना नदीके जलपथ थे । उन दोनोंसे वह राजा ऐसा घोषित था मानो दो पक्षों (शुक्ल, कृष्णपक्ष) से युक्त पूर्णिमाका दिन हो । जब वह सिंहासनपर बैठा हुआ था कि एक मन्त्री उसके पास आया । वह बोला—“हे प्रजापालक, सब कुछ ठीक है, राजाओंके करोड़ों मुकुटोंसे ललितचरण हे देव,

A has, at the beginning of this Samdhi the stanza वर्ण रत्नं हनं etc. for which see foot-note on page 139. P and K do not give this stanza here.

१. १. AP पणामिय । २. AP णं सेविय सरवर । ३. A जडिवातकपाल । ४. A खणा । ५. AP विहि मि । ६. A महीहर ।

सेहीरध संजंतुं पदुर्कइ
कंदमाणु खगभयवैविरमणु
तं णिसुणिवि पडिलवइ पयावइ

माणुसु चित्तालिहिण ण जुकई ।
देवदेव खद्धव सयलु वि जणु ।
भो भो मंति चारु तेरी मइ ।

धत्ता—जो ण करइ राउ पयहि रक्ख सो केहउ ॥
खणि णासिवि जाय संझाराएं जेहउ ॥१॥

१५

२

जो गोवालु गाई णउ पालइ
इट्टु महेछी जो णउ रक्खइ
जो मालीरु वेज्जि णउ पोसइ
जो कइ ण करइ मणहारिणि कह
जो जइ संजमंजत्त ण याणइ
जो पदु पयहि पीड णउ फेडइ
जाविं रसंतु सीहु सइ मारविं ।
एवं भणेवि लेवि असि दारुणु
ता पंजलियरु विजउ पर्जपई
दे आपसु देव हउं गच्छमि

सो जीवंतु दुद्धु ण णिहालइ ।
सुरयसोकखु सो कहिं किर चक्खइ ।
सो सुफुल्लु फलु कंठ लहेसइ ।
सो चित्तंतु करइ अप्पइ वह ।
सो णग्गउ णग्गत्तणु माणइ ।
सो अप्पणु अप्पाणउं पाडइ ।
देसहु पडिय मारि णीसारविं ।
जातुट्ठिउ णरिंदु कोवारणु ।
पई कुट्ठेण ताय जउं कंपइ ।
अज्जु मइवहु पलउ णियच्छमि ।

५

१०

एक गरजता हुआ सिंह आता है, जो चित्रलिखित मनुष्यों तकको नहीं छोड़ता । विनाशके भयसे कांपते हुए मनवाले और रोते हुए सब लोगों को, हे देवदेव, उसने खा डाला है ।” यह सुनकर राजा प्रजापति कहता है—“हे मन्त्री, तुम्हारी वृद्धि सुन्दर है ।”

धत्ता—“क्योंकि जो प्रजाकी रक्षा नहीं करता, वह राजा शीघ्र उसी प्रकार नष्ट हो जाता है कि जिस प्रकार संव्या राग नष्ट हो जाता है ॥१॥

२

जो गोपाल गायका पालन नहीं करता, वह जीते जी उसका दूध नहीं देख सकता, अपनी प्रिय पत्नीकी जो रक्षा नहीं करता, वह सुरति क्रीड़ाका सुख कहाँ पा सकता है? जो मालाकार (माली) लताका पोषण नहीं करता वह सुन्दर फूल और फल किस प्रकार पा सकता है, जो कवि सुन्दर कथा नहीं करता वह विचार करता हुआ भी अपनी हत्या करता है । जो मुनि संयमकी मात्रा नहीं जानता, वह नंगा है, और नग्नत्वकी ही सब कुछ मानता है । जो राजा प्रजाको वेदना नष्ट नहीं करता वह अपनेसे अपनी हत्या करता है, इसलिए मैं स्वयं जाता हूँ और गरजते हुए सिंहको स्वयं मारता हूँ । देशमे आयी हुई मारीको बाहर निकालता हूँ । यह कहकर और भयंकर तलवार लेकर क्रोधसे लाल-लाल राजा जब तक उठा, तबतक अंजली जोड़कर विजय बोला, “हे राजन्, आपके क्रुद्ध होनेसे जग काँप जायेगा ? आदेश दीजिए देव, मैं जाता हूँ ?

७ भुजंतु । ८. P पदुर्कव । ९. P चुक्कव ।

२. १. P गोवि । २. AP किर कहि । ३. P मालायार । ४. P सफुल्लु । ५. A अप्पव्वह; P अप्पा-
वह । ६. A संजणु जुत्ति, P संजमजत्ति । ७. A फेडइ । ८. A सो वि रसंतु । ९. A पर्यपइ ।
१०. AP जम् ।

पेसिउ जणणें चञ्जिउ इलहरु ते सहुं चलिउ भाइ दामोयरु ।
 गरकवालकंकालणिरंतरु पत्ता केसरिगिरिकुहरंतरु ।
 घत्ता—भडरोलहु सीहु कुंदच्छवि उद्दाइउ ॥
 भाइहि आवतु णं कयंतजसु जोइहे ॥२॥

५ तिक्खणक्खणिव्खवियमयगलो पयविलग्गमुत्ताहलुज्जलो ।
 रत्तसित्तेकेसरसडालओ सिसुमियंकदाढाकरालओ ।
 महिसमणुयपलकवलभोयणो सिहिफुल्लिगपिगलविलोयणो ।
 कुडिललुलियलंगलचिंधओ णासगहियपडिसुहडगंधओ ।
 कंठरावणिहलियदिकरी एरिसो सरोसेण केसरी ।
 बहुबलक्खमियवीरविक्रमं जांव देइ किर सीरिणो कर्मं ।
 ताव तेण लहुपण भाइणा लोयजीवदानेक्कदाइणा ।
 विसतमालकालिदिकंतिणो करंजुवं पि वामेण पाणिणा ।
 मयंइस्सयरियं बला बलं बैलिविरोहिणो कस्स मंगलं ।
 १० उच्छलंतंतदावलीसियं दाहिणेण हत्थेण पिहयं ।
 ताडिओ मुहे पाडिओ हरी संसिओ महीसेहिं सो हरी ।
 माहवेण कयणिवविदोहंओ उडुदेहिदेहंषिषो हंओ ।

आज मैं सिहका प्रलय देखूंगा ।” पिताके द्वारा प्रेषित बलभद्र चला, उसके साथ भाई दामोदर चला । मनुष्योंके कपाल और हड्डियोंसे परिपूर्ण, सिंह की पर्वत गुफामें वे लोग पहुँचे ।
 घत्ता—स्वर्णके समान कान्तिवाला सिंह योद्धाओंके हलसे दौड़ा । दोनों भाइयोंने उसे आते हुए यम-भय की तरह देखा ॥२॥

जिसने अपने तीखे नखोंसे मदगजोंको आहत किया है, जो झरते हुए मोतियोंसे उज्वल है, जो लाल और श्वेत अयालसे युक्त है, बालचन्द्रके समान दाढ़ीसे जो भयंकर है, महिष और मनुष्योंके मांसका जिसका भोजन है, आगके स्फुल्लिगके समान जिसके नेत्र पीले हैं, जो टेढ़ी और चंचल पूँछकी पताकावाला है, जो प्रतिमुभट (घातु) की गन्ध अपनी नाकसे ग्रहण करनेवाला है, अपने कण्ठके शब्दसे जिसने दिग्गजका शब्द नष्ट कर दिया है, इस प्रकारका वह सिंह क्रोधपूर्वक बहुबलसे वीरोंके पराक्रमको आक्रान्त करनेवाला जबतक श्रीबलभद्रके ऊपर पैर-दे तबतक लोक जीवनदानमें एक मात्र दानी तथा विष तमाल और यमुनाके समान कान्तिवाले उस छोटे भाईने उस सिहके दोनों पैर और अयाल बलपूर्वक पकड़ लिये । बलवानसे विरोध करनेवाले किसका भला हुआ है ? उच्छलती हुई दन्तावलीकी सफेदीको उसने दाँयें हाथसे दलित कर दिया । मुखमें आहत किया । सिंह पीडित हो उठा । राजाओंने वामुदेवकी प्रशंसा की । इस प्रकार माधव, ने, जिसने राजासे विद्रोह किया-है ऐसे दग्ध देहीके देह स्वरूप उस वृक्षको आहत कर दिया ।

११. A कयंतजसु; P कयंतु जसु । १२. P जोविउ ।
 ३. १. AP बहुबलक्कमियं । २. AP add after this : वाहुदंवलतुलिय (A तुडिय) दंतिणा,
 करसहुंमुपविरइयसुवलयं, वामएण चल (A चल) चरणजुयलयं, सुहडसंगल्लूडमाणिणा । ३. AP कर-
 जुयं । ४. A मवइस्स । ५. AP बलविरोहिणो । ६. AP विदोहओ । ७. A हुओ ।

धत्ता—जो पयसंताच पलयसिहि ण्व पलित्तव ॥
सो णिहँउ मयारि लोहियसलिलें सित्तव ॥३॥

४ -

करतलप्पचूरियेदुग्घोदृइ
सुरसीमंतिणिकामुक्कोयणु
आया ते तं पुणरवि पोयणु
पयहिं पडंतवऊहिय ताए
पुणु आउच्छिउ दाणववइरिउं
तं णिसुणेवि तेण अवगण्णिउं
गरुयउ सगुणपसंसइ लज्जइ
एवं ताहं बुहुसंपयसारा
तावेक्कहिं दिणि परमणहारउ
कहइ णरिदहु विणु आयासें
कंठयकडयमउडकुंडलघर
वारवार महं वयणु णिरिक्खइ

णियबलु कसिंवि सीहकसवदृइ ।
लहिवि विजेयलच्छिहि अवलोयणु ।
णं ससहर दिणयर गयणंगणु ।
दोण्णि मेह णं संझाराएं ।
किह केसरिकिसोरु पइं मारिउ ।
णाविउं सीसु ण अप्पउ वण्णिउ ।
ऊणउ गुणथुइमइरइ मज्जइ ।
जंति दियह सुमणोरहगारा ।
कंचणवेत्तपाणि पडिहारउ ।
आयउ एक्कु पुरिसु आयासें ।
ण वियाणमि किं सुरु किं णहयर ।
तुह कर्मकमलालोयणु कंखइ ।

धत्ता—जइ अवसरु अस्थि तां सो पइसारिज्जइ ॥

जं भासइ किं पि तं णरेस णिसुणिज्जइ ॥४॥

धत्ता—प्रजाका सन्तापकारी जो प्रलयकी अग्निकी तरह प्रज्वलित था वह मारा गया सिंह रकरूपी जलसे सिक्क हो उठा ॥३॥

४

हथेलीके प्रहारसे हाथीके चूर कर लेनेपर, सिंहरूपी कसौटीपर अपना बल कसकर, देव-बालाओंको कामोत्कण्ठा उत्पन्न करनेवाला विजयलक्ष्मीका उत्पन्न कटाक्ष प्राप्त कर वे दोनो पोदनपुर नगर आ गये, मानो आकाशमे सूर्य और चन्द्रमा आ गये हो । वैरोपर गिरते हुए उन दोनोका पिताने आलिंगन किया, मानो सन्ध्यारागने मेघका आलिंगन किया हो । फिर उसने दानवराजके शत्रुसे पूछा कि तुमने सिहके बच्चेको किस प्रकार मारा । यह सुनकर उसने उसकी उपेक्षा की, उसने सिर झुका दिया परन्तु अपना वर्णन नहीं किया । महान् या भारी आदमी अपनी गुण-प्रशंसा-से लज्जित होता है, छोटा आदमी गुणस्तुतिकी मदिरासे मतवाला हो जाता है । इस प्रकार प्रचुर सम्पत्तिसे श्रेष्ठ तथा सुन्दर मनोरथसे परिपूर्ण उनके दिन बीतने लगे । इतनेमें एक दिन दूसरेके मनका हरण करनेवाला हाथमे स्वर्णदण्ड लिये हुए प्रतिहारी राजासे कहता है कि बिना किसी आयासके एक आदमी आकाशमागंसे आया है । कण्ठा-कटक मुकुट और कुण्डल धारण किये हुए है, मैं नहीं जानता कि कोई नभचर है या देव । बार-बार मेरा मुख देखता है, और तुम्हारे चरणकमलको देखनेकी इच्छा करता है ।

धत्ता—यदि अवसर हो तो उसे प्रवेश दिया जाये, और वह जो कुछ भी कहता है, हे नरेश, उसे सुना जाये ॥४॥

८. AP णिहय ।

४. १ A दुग्घोदृइ । २ A सजयलच्छिहि । ३ A पडंत विजोहिय; P पडंत विगुहिय; T अवगुहिय आलिङ्गितो । ४. AP वैरिउ । ५. A पसंसण लज्जइ । ६. करकमला । ७. P तो ।

महिणाहेण उक्त पइसारहि
 ता कणइल्ले आणिवि दाविठ
 तहु पणचंतहु गियड्ड असाणु
 इट्ठु भणिचि जाणिलं सुहरायं
 ५ कहि होतठ सुंदरणिक्केयठ
 अक्खइ विर्येयठ पालियत्तोणिहि
 णम्भिकुलणइयलवलयहु णेसरु
 रहणेउरपुरवरपरमेसरु
 चासवेय पिययम लीलागइ
 १० धूय सयंपह कि वण्णिज्जइ

५
 पुरिसु संसामिकज्जरहसारहि ।
 खयर णवंतु अजब्बु विहाविठ ।
 दरिसिंठं मणिनाणकिरणुत्तमासणु ।
 पृथवचणाहि संभासिठ रावं ।
 को तहुं कहँसु कामु कि आयठ ।
 रूपयगिरिवरदाहिणसेणिहि ।
 रिद्धिइ णं सयमेव सुरेसरु ।
 देव जल्लेणजहि णाम खगेसरु ।
 अक्कचिति तणुरुहु णं रइवइ ।
 मुहससिलोणइह चंदु वि खिज्जइ ।

धत्ता—यणैहारें भग्गु जाहि मब्बु किसु सोहइ ॥

णहंपतिपहाइ तारापंति ण रेहइ ॥५॥

६

करकमेयलइं कुमारिहि रत्तइं
 णाहिहि जइ गंभीरिम वीसइ
 भालवट्टु पट्टु व रइरायहु

साहं कुमारसदासइं रत्तइं ।
 तं मुंणिहिं वि गंभीरम्बं णासइ ।
 विहुरकुडिलकोडिल्लु व आयहु ।

५

महीनाथने कहा कि अपने स्वामीके कार्यरूपी रथका निर्वाह करनेवाले उस पुरुषको भीतर प्रवेश दो । तब प्रतिहारीने उसे बलाकर दिखाया । प्रणाम करता हुआ वह विद्याधर सुन्दर दिखाई देता था । प्रणाम करते हुए उसे मणिकिरण-समूहसे आलोकित ध्यायन पास ही दिखाया गया । इष्ट समझकर उसने मुखके भावसे जान लिया । राजाने श्रिय शब्दोंमें उससे बातचीत की कि तुम्हारा सुन्दर घर कहाँ है, तुम कौन हो, किसके हो । यहाँ क्यों आये ? विद्याधर कहता है कि घरतीका पालन करनेवाले विजयार्ध पवतकी दक्षिण श्रेणीमें हे देव, ज्वलनजटी नामका राजा है, जो नमिकुलके आकाशमण्डलका सूर्य है, ऋद्धिमें जो मानो स्वयं इन्द्र है और रथतुर नगरका परमेश्वर है । लीलापूर्वक चलनेवाली उसकी वायुवेगा नामकी प्रियतमा है । और पुत्र लकंकीर्ति है जो मानो कामदेव है । उसकी कन्या स्वयंप्रभाका क्या वर्णन किया जाये ? वह अपने मुखरूपी चन्द्रमाको ज्योत्स्नासे जो चन्द्रमाको भी खिन्न कर देती है ।

धत्ता—स्तनभारसे भग्न जिसका दुबला पतला मध्यभाग नखपंक्तिप्रभासे इस प्रकार शोभित है, मानो तारापंक्ति शोभित हो ॥५॥

६

कुमारीके कररूपी कमल रत्न (लाल) हैं । उनसे हजारों कुमार अनुरक्त हैं । उसकी नामिमें जो गम्भीरता दिखाई देती है, उससे मुनियोंकी भी गम्भीरता नष्ट हो जाती है । उसका

५. १. AP सुजामिं । २. AP पियववणहि । ३. P कामु कहसु कहि । ४. A वइवर । ५. A जडणजहि ।

६. AP वणनारें ।

६. १. AP कमलवइं । २. AP तहि । ३. AP गंभीरिम । ४. A मालवट्टु पट्टु व; P मालवट्टु वट्टु व ।

सुरगरविसहरहिययवियारा
जाहि रूवसिरि णं परपराइय
ताएं धीय वीय णं चंदें
दुम्भयमलकलंकपकखालणि
भो संभिण्ण णिसुयजोइससुय
भणु भणु भव्व मज्जु भवियव्वइं
देहदित्तिणित्तेइयचंदइं
ता संभिण्णं भणिं णिसामहि
दाहिणभरहि सुरम्मइ मंडालि
घत्ता—पोयणपुरि राउ जसु जसु देवहिं गिव्वजइ ॥

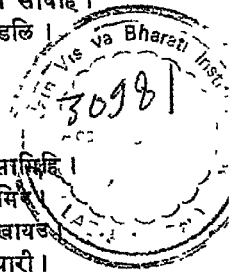
पालियसम्मत्तु जो जिणणय पडिवज्जइ ॥६॥

णयण विसिह णं तासु जि केरा ।
सा फुल्लंति वेल्लि जिह जोइय ।
वोल्लिं सव्वजणणयणाणं ।
मंतिहि अग्गइ मंतिणिहेलणि ।
भणु भणु कासु घरिणि होसइ सुय ।
पइं दिट्ठाइं अणेयइ दिव्वइं ।
केवलणाणघरइं रिसिवंदइं ।
मइं चिरु पुच्छियं संजय सावहि ।
घरसिहरालिणियरविमंडलि ।

७

चिरु पुरुएवहु दिग्गयगामिहि
भरहु जेण सुयदंडहिं भामिउ
पुरिसपरंपराहि तहु जायउ
जयवइ तासु देवि गरुयारी
अचल पवलसुयतोलियगुरुगिरि

जो बाहुवलि पुत्तु जगसासिहि ।
जो जायउ पंचमगइगोमि
णाम पयावइ जो विक्खायउ
अचर भूगोवइ प्राणपियारी ।
ताहं विहिं वि जाया हलहर हरि ।



भालपट्ट कामदेवका पट्ट है । उसके बालोका कुटिल कौटिल्य भी इसीका है । सुर-नर और विषघरों-के हृदयका विदारण करनेवाले उसके नेत्र भी कामदेवके ही तीर हैं । जिसकी रूपलक्ष्मी दूसरोंके द्वारा पराजित नहीं है, वह खिली हुई लताके समान देखी जाती है, पितासे पुत्री ऐसी लगती है जैसे चन्द्रमासे द्वितीया । सज्जनोके नेत्रोको आनन्द देनेवाले राजाने दुर्मद-मल-कलंकका प्रक्षालन करनेवाले मन्त्रणाघरमे मन्त्रियोसे कहा, “हे ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन करनेवाले संभिन्न (मन्त्री), बताओ-बताओ यह कन्या किसकी गृहिणी होगी । हे भव्य, तुम मेरा भवितव्य बताओ, तुमने अनेक दिव्य शरीरकी कान्तिसे चन्द्रमाको कान्तिहीन कर देनेवाले केवलज्ञानधारी ऋषि-समूह देखे हैं ।” तब संभिन्न मन्त्रीने कहा “सुनाता हूँ, मैंने बहुत पहले संजय नामक अवधिज्ञानी मुनिसे पूछा था । (और उन्होंने कहा था), दक्षिण भरतक्षेत्रके सुन्दर देशमे जिसमे कि गृहसिखरो-से सूर्यमण्डल आर्लिगत है,

घत्ता—पोदनपुर नगरमे राजा है, जिसका यश देवोके द्वारा गाया जाता है । सम्यक्त्वका पालन करनेवाला जो जिननयको स्वीकार करता है ॥६॥

७

प्राचीन समयमे पुरुदेवके दिग्गजगामी विश्वस्यामो (ऋषभदेव) का जो बाहुवलिदेव पुत्र था, जिसके द्वारा भरतदेव अपने भुजदण्डोंके द्वारा धुमा दिया गया था, और जो मोक्षगामी हुए थे, उसीकी पुत्र परम्परामे उत्पन्न प्रजापतिके नामसे विख्यात राजा है । जयवती उसकी बड़ी पत्नी है और दूसरी प्राणप्यारी मृगावती है । उन दोनोंसे, अपने प्रबल बाहुओसे मन्दराचल-

५. A शवर पराइय । ६. A णिसुणि जोइससुय, P णिसुणि जोइयसुय । ७. A णित्तेयइं । ८. A षरियरिसिं । ९. AP पुच्छिउ ।

७. १ AP सामिउ । २. A जइवय । ३. AP मिगावइ पाणं ।

विजय तिविह्व गाम णिह्वरैकर एह् तुरंगगळु रिचं तह् केरव एत्थुपण्णत्त पुण्णविवाए भुयहिं कोडिसिल संचालेवी १० परिणसयणहं तुट्ठि जणेवी उहयसेठ्ठिच्चिज्जाहरराए एव देव हियवइ संचारिउ	समरभारैकिणकसणियकंधर । आसि विसाहणंहि विवरेरउ । भारेवउ म्मगवइयहि जाएं । वसुइ तिखंड तेण पालेवी । अण्णु तुहारी सुय परिणेवी । पइं होएव्वचं तासु पसाएं । संभिण्णे संबंधु विचारिउ ।
---	--

घत्ता—ता महं णाहेण वंधुसिणेह् गवेसिउ ॥

हचं णामे इंदु तुम्हहं दूयउ पेसिउ ॥७॥

८

अवरु वि पहु तेरउं पहुटाणउं रिसइहु कच्छमहाकच्छाहिव तिह् सिह्जिउडि रचिकित्ति तुहारा तं णिसुणिवि णरवइ रोमंचिउ ५ सीरिं पुण्णं सन्व पोमाइय पुणु सो दूयउ पहुणा पुज्जिय	अम्हाराउं पाइक्कणिवाणउं । जिह् भरहहु णविचिणमि खगाहिव । जिव सुहिं जिं व पुणु पेसणमारा । आणंवे परिवारु पणच्चिउ । हरिणा णियभुयदंड पलोइय । तेण वि तक्खणेण गँउं सज्जिउ ।
---	--

को तौलनेवाले और अचल बलभद्र और नारायण उत्पन्न हुए हैं। विजय और त्रिपुष्ट नामके वे कठोरकर और समरभार उठानेके कारण श्याम कन्धेवाले हैं। यह अश्वग्रीव तुम्हारा शत्रु है; जो विपरीत करनेवाला विशाखनन्दी था। अपने पुण्यके विपाकसे वह यहाँ उत्पन्न हुआ है, जो मृगावतीके पुत्र (त्रिपुष्ट) के द्वारा मारा जायेगा। वह अपने बाहुओंसे कोटिशिलाका संचालन करेगा, और उसके द्वारा त्रिखण्ड घरतीका पालन किया जायेगा। वह परिजन और स्वजनको सन्तोष देगा और तुम्हारी पुत्रीसे विवाह करेगा। उसके प्रसादसे तुम दोनों श्रेणियोंके विद्याधर राजा होगे।^१ इस प्रकार देवके हृदयमें यह संचारित किया, और फिर संभिन्नने सम्बन्धका विचार किया।

घत्ता—तब मेरे स्वामीने बन्धुके स्नेहकी खोज की और मैं इन्दु नामका दूत तुम्हारे पास भेजा गया ॥७॥

८

और भी हे प्रभु, तुम्हारा प्रभुस्थान है और हमारा पाइक्क (पदाति सेवक) के रूपमें निर्माण (रचना) है। जिस प्रकार ऋषभनाथके कच्छ और महाकच्छ राजा थे, जिस प्रकार भरतके नमि और विनमि विद्याधर राजा थे, उसी प्रकार उवलनजडी और अर्ककीर्ति तुम्हारे हैं। जिस प्रकार वे सज्जन हैं उसी प्रकार आज्ञा करनेवाले हैं। यह सुनकर राजा रोमांचित हो गया। आनन्दसे परिवार नाच उठा। बलभद्रने सबकी प्रशंसा की। नारायण (त्रिपुष्ट) ने अपने भुजदण्डको देखा। राजाने उस दूतका आदर सत्कार किया। और उसने भी तत्काल अपने जाने

४. A णिह्वरै । ५. A भारकसणिकियकंधर । ६. A तुरंगकंडु । ७. A omits रिउ । ८. AP मिगवइयहि । ९. AP उभय । १०. AP सणेहु ।

८. १. AP णमि । २. A पुण्णसत्ति; P पुण्ण सत्त । ३. A गउ; P गमु ।

भृगोयरहुं गयणु कर्हि गोयरु
संताणारायणयययासउ

इय चित्तिवि णरणाहिं सायरु ।
तासु जि हत्थि दिण्णु संदेसउ ।

घत्ता—खंग सुर सिञ्जति कामवेषु धरि दुब्भइ ॥
जं दूरु दुसञ्जु तं जग्गि पुण्णं लब्भइ ॥८॥

१०

९

इंदद्वयवयणइं आयण्णिवि
सहुं तणपं तणयाइ पसण्णइ
उद्धचलंतचमरचित्थारें
ओसारियरवियरसंताणहिं
महुरसवसरुणुंरंठियमहुरियरि
मंदमंदमार्यदावलिघणि
जायवेयज्जि एक्कहिं वासरि
जिणपयपंकयपणवियसीसहु
आयउ इहु सुहु उक्कंठिउ
पहु मंडलियणिसेविउ चलिउ
अवरोप्परहुं वे वि गय संसुह
मिलिय वे वि दीहरपसरियकर

बंधुसणेहु सहियवइ मण्णिवि ।
अहिणवमुग्गमणोहरवण्णइ ।
विहवगहीरें सहुं परिवारें ।
आवेप्पिणु चिमाणजंपाणहिं ।
कौरकुररसिहिपियमाइविसरि ।
पोयणपुरबाहिरणंदणवणि ।
थिउ चिल्लापहावविरइयधरि ।
इंदं जाइवि कहिउं महीसहु ।
तं णिसुंणिवि सहुं सुयहिं ण संठिउ ।
इथरेण वि खगादप्पु पमेत्थिउ ।
णाइ तरंगिणिणाह सुहारुह ।
वेण्णि वि सज्जण णं दिसकुंजर ।

५

१०

को तैयारी को । मनुष्योंके लिए आकाश किस प्रकार गम्य हो सकता है, यह विचार कर राजा प्रजापतिने सादर परम्परासे आगत प्रणयको प्रकाशित करनेवाला सन्देश उसके हाथमे दिया ।

घत्ता—विद्याधर और देव सिंह हो जाते हैं कामवेषु धरमे दुही जाती है, जो दूर और असाध्य है, वह विश्वमे पुष्यसे पाया जा सकता है ॥८॥

९

इन्दु दूतके वचन सुनकर और अपने हृदयमे बन्धुके स्नेहको मानकर, अपने पुत्र और प्रसन्न अभिनव भृगुके समान वर्णवाली कन्याके साथ जिसके ऊपर चलते हुए चमरोंका विस्तार है, ऐसे वैभवसे गम्भीर परिवारके साथ, जिन्होंने सूर्यकी किरणपरम्पराको हटा दिया है ऐसे विमान और जपानोके द्वारा आकर, ज्वलनजटी विद्याधर, एक दिन, जिसमे मधुरसके वशसे मधुकर गुनगुन कर रहे हैं, जिसमे कीर कुरर मयूर और कोकिलोका स्वर है, जो मन्द-मन्द आन्नवृक्षावलीसे सघन है, और जिसमे विद्याके प्रभावसे धर बना लिये गये हैं, ऐसे पोदनपुरके बाहर नन्दनवनमे ठहर गया । जिसने जिनपद-क्रमलोमें अपना सिर नत किया है, ऐसे राजा प्रजापतिसे जाकर इन्दु दूतने कहा कि (तुम्हारा) इष्ट अत्यन्त उत्कृष्ट होकर आया है । यह सुनकर, वह अपने पुत्रोंके साथ संस्थित नहीं रहा । अपनी मण्डलीसे सेवित राजा चला । दूसरेने भी अपना विद्याधर होनेका अहंकार छोड़ दिया । वे दोनों, एक दूसरेके सामने गये, मानो समुद्र और चन्द्रमा हों । अपने दोनों लम्बे हाथ फैलाकर वे मिले । वे दोनों ही सज्जन थे मानो दिग्गज हो ।

४. P खंग सुर ।

९१. A मगमणोहरं । २. A रणुसंठियमहुरि; P रणुसंठियं । ३. A णिसुणि सहुं ।

घत्ता—गियजगणविङ्गणु परियाणिवि भूमंगडं ॥

रायहु रविकिसि णविउ पणावि वि अंगडं ॥९॥

- १०
- | | |
|----------------------------|--------------------------------|
| हरिचलेहिं ससुरउ जयकारिउ | तेण सिणेहसाहि वड्डारिउ । |
| भुयभूसणकरमंजरिपिगिहै | साळउ गाढंगाहु आळिगिउ । |
| हरिसंसुयजलेहिं संसित्तउ | सयल गिसणण सुमंतु पत्तत्तउ । |
| दिणयरु तवइ खवइ जिणु कम्मइं | वम्महु सल्लइ वाणहिं वम्मइं । |
| ५ सायर गिलइ सयलसरिसोत्तइं | ससहरु पीणइ जणवयणेत्तइं । |
| भंजणसत्ति महंत समीरहु | वलु अइअतुलु तिविट्ठुकुमारहु । |
| एत्थु ण किं पि बप्प कोळहलु | णहँचवेडचप्पियकुंजरकुलु । |
| एवं सीहु को करहिं णिपीळइ | कोडिसिलायलु जइ संचाळइ । |
| तो जाणहुं होसइ पुण्णाहिउ | हरि हरिवंदियणौणहिं साहिउ । |
| १० आसग्गीवजीवउड्डावणु | ध्रुवुं माणेसइ तरुणिहि जोवणु । |

घत्ता—महियर खयरिंद एहु मंतु विरएप्पिणु ॥

जहिं तं सिलरण्णु तहिं गय कणहु लएप्पिणु ॥१०॥

घत्ता—अपने पिताके द्वारा किये भ्रूमंगको जानकर अर्ककीर्तने राजाको प्रणाम कर अपना सिर झुका लिया ॥९॥

१०

नारायणकी सेनाने ससुरका जय-जयकार किया । उससे उनका स्नेहलुपी वृक्ष बढ़ गया । बाहुओके आभूषणोंकी किरण-मंजरीसे पीले सालेका प्रगाढ़ आलिंगन कर लिया । हर्ष के आसुओंके जलसे सीचे गये सब लोग बैठ गये । (यह) सुमन्त्र कहा गया कि दिनकर तपता है, जिन कर्मका नाश करते हैं, कामदेव, बाणसे भर्मको छेदता है । समुद्र, समस्त नदियोंके स्रोतको अपनेमे समो लेता है । चन्द्रमा जनपदके नेत्रोको प्रसन्न करता है । पवनमें बहुत बड़ी भंजन शक्ति है, त्रिपुष्ट कुमारमे अतुल बल है, हे सुभट, इसमे जरा भी कुतूहलकी बात नहीं । अपने नखोंकी चपेटसे गजकुलको चोपनेवाले सिंहको कौन अपने हाथसे निष्पीडित कर सकता है ? यदि यह कोटिशिलातलको संचालित कर सकते हैं, तो हम लोग जानेंगे कि इन्द्रके द्वारा बन्धित ज्ञानियोंके द्वारा कथित नारायण पुण्याधिक होंगे । अश्वघोवके जीवको उड़ानेवाले यह निश्चयसे तरुणिके यौवन मानेंगे ?

घत्ता—मनुष्य और विद्याधर यह मन्त्र रचकर, जहाँ वह शिलारत्न था वहाँ नारायणको लेकर गये ॥१०॥

१०. १. AP सणेह । २. A षिगउ । ३. AP गाहु गाहु । ४. तहो ववेड । ५. AP तो । ६. AP णाणहि ।
७. AP ध्रुवु । ८. P सिलरम्म ।

गिद्ध अङ्गजोयगविस्त्रिण्णी
जिणपयसेवा इव फलभाइणि
पुण्ण पवित पावखयगारी
कहिं वि दंतिदंतगहिं खंडिय
कहिं वि पलिप्पइ जालावळणं
कहिं वि जक्खिपयधुसिणं लिप्पेइ
कहिं वि णीलगळणियरहिं णीलिय
कहिं वि फुरइ घणतिमिरविमुक्कहिं
कहिं वि भमियमृगणाहिमओहें
कहिं वि वियंभिय सुइसुहगारव
सा परिचचेप्पिणु अंचेप्पिणु

घत्ता—पुणु भणित्ठ अणंतु पेक्खंहुं सिल षण्णावहिं^१ ॥
ह्यकंठकयंतु होसि ण होसि व^{१२} दावहिं ॥११॥

१२

ता सिल उच्चार्यवहु कणहहु
पवरकरिकरायारहिं वाहहिं

दुज्जणदेहविचारणतणहहु ।
पाहाणुट्टियभूसणरेहहिं ।

११

स्निग्ध आशे योजन विस्तीर्ण, तरह-तरहके वनवृक्षोसे आच्छन्न, जिनपदको सेवाके समान फलकी भाजन, अनेक लाखो मुनियोंको मोक्ष-सुख देनेवाली । पुण्यसे पवित्र और पापका क्षय करनेवाली । वह शिला ऐसी दिखाई देती है मानो सिद्धिरूपी भट्टारिका हो । कहींपर वह हाथियोंके दाँतोंके अग्रभागसे खण्डित थी, कहींपर सिंहोंके नखोंसे च्युत मोतियोंसे अलंकृत थी । कहींपर ज्वालाके जलनेसे प्रज्वलित थी, कहींपर सुअरकी दाढ़ोंके संघर्षणसे उत्पन्न ज्वालासे, कहींपर यज्ञिणीके पैरोकी केशरसे रजित है, और चन्द्रकान्त मणिकी जलधारासे धुली हुई है, कहींपर मयूरोंके समूहसे नीली, और द्वावागिनके घुएँसे काली । कहींपर सघन अन्धकारसे मुक्त, सपके फनसमूहके माणिक्योसे चमकती है । कहींपर धूमते हुए कस्तूरीमृगके मदसमूहसे सुरभित है और भ्रमर समूहसे सेवित है, कहींपर पवित्रता, सुख और गौरव फल रहा है और किन्नरोंके द्वारा गाये वेणु और वीणाके शब्द हैं । उसकी परिक्रमा और पूजा कर और राजाओंके द्वारा अक्षत लेकर—

घत्ता—नारायणसे फिर कहा गया हम देखे, तुम शिला उठाओ और बताओ कि वह अश्वघोषके लिए यम होगी या नहीं होगी ? ॥११॥

१२

जिसे दुर्जन देहके विदारणकी तृष्णा है, ऐसे तथा शिलाको उठाते हुए कृष्णकी, प्रवर गजकी सूँडेके समान तथा पत्थरपर लिखी गयी भूषण-रेखाओंवाली दाह्रुओंसे हरिण उरतलपर गिर पड़े ।

११. १. AP अङ्गजोयणं । २. A फलभाविणि, P फलभाविणि । ३. AP जळणं । ४. A लिपइ । ५. A णीलमणिणियरहिं । ६. P वणदव । ७. AP मृगणाहिं । ८. AP सुरहियसेविय । ९. A गारड । १०. वीणारड । ११. A उच्चारवहिं, P ओचारवहिं । १२. A दावहिं ।

५ चरयलि णिवड्डियाइं सारंगइं
पतिणिवड्डइं कंसिणइं अरुणइं
दिट्ठइं णायवलाइं चळंतइं
गेरुयवाणिउं चियलिउं रत्तउं
हंसपंति णहमंडलि धावइ
भमरामेलउ णीलउ लोलइ
दलियइं मलियइं वेल्लीभवणइं
१० णट्ठइं कीलासुराणिउरुवइं

दसदिसि वहिवि गयाइं विहंगइं ।
णं रिउकामिणिउठाहरणइं ।
णं अरिअंतइं लंबलळंतइं ।
रहिरि णाइ वइरिहि णिगंतउं ।
पडिभडडिमाळा इव भौवइ ।
रोसहुयासधूमु णं घोळइ ।
णावइ खलयणपट्टणभवणइं ।
णिग्गायाइं णं सत्तुकुडुवइं ।

षत्ता—उद्दंडकरेहं सिल केहं उच्चाइय ॥

पडिसत्तुषरिउत्ति हरिवि णांइ दक्खालिय ॥१२॥

१३

उच्चाइय सिल सोहइ तहु करि
जं चालिय सिल सिरिरमणीसं
संथुउ अवरु पयावइ रापं
संथुउ लंगलहररविकित्तिहिं
५ एंवहिं तुहं जि देव महिराणउ

अट्टमभूमि व सुवणत्तयसिरि ।
तं सो संथुउ जलणजडीसं ।
संथुउ बहुमदिवइसंधापं ।
संथुउ सुरणरविसहरपत्तिहिं ।
तुब्बु पुरिसु जगि णत्थि समाणउ ।

विहंग डरकर दसों दिशाओंमें भाग गये । पंक्तिवद्ध काले और लाल वे ऐसे मालूम होते थे मानो शत्रुकामिनियोंके कण्ठाभरण हों । चलते हुए नागकुल ऐसे दिखाई दिये, मानो शत्रुओंकी चंचल आँतें हों । गिरता हुआ लाल-लाल गेरूका जल ऐसा मालूम होता है मानो शत्रुका निकलता हुआ खून हो । हंसोंकी कतार आकाशमण्डलमें उड़ती है मानो शत्रु योद्धाओंकी अस्थिमाला हो, नीला भ्रमरसमूह इस प्रकार मँडराता है, मानो क्रोधरूपी आगका धुआँ व्याप्त हो रहा हो । लताभवन चूर्ण-चूर्ण होकर मैले हो गये, मानो दुष्टजनोंके नगर और भवन हो । क्रीडासुरोंके समूह इस प्रकार नष्ट हो गये मानो शत्रुओंके कुटुम्ब निकल पड़े हो ।

षत्ता—कृष्णने अपने ऊँचे हाथोंसे शिलाको उठा लिया जैसे उसने प्रतिशत्रुकी धरतीका हरण कर दिखाया हो ॥१२॥

१३

उठायी गयी शिला उसके हाथमें ऐसी दिखाई देती है जैसे भुवनत्रयके सिरपर मोक्षभूमि हो । जब लक्ष्मीरूपी रमणीके पति नारायणने शिलाको चलायमान कर दिया तो ज्वलनजटीने उनकी स्तुति की, बलभद्र और सूर्यके समान कीर्तिवाली सुर-नर और विषधरोंकी पंक्तिने स्तुति की—“हे देव, इस समय तुम्हीं पृथ्वीके राजा हो, जगमें तुम्हारे समान दूसरा पुरुष नहीं है, तुम पुरुषोत्तम हो, तुम धरतीकी धारण करनेवाले हो, गिरते हुए भाइयोंके लिए तुम आधारस्तम्भ ही,

१२. १. AP किसिणइं । २. AP वाणिइ । ३. AP रहिरि । ४. णावइ । ५. AP उदंड । ६. AP

कण्ठेणुच्चालिय ।

१३. १. AP विसहरपत्तिहिं ।

तुहं पुरुसोत्तमु तुहं धरणीहर
 तुहं इक्खोत्तवंसवरधयवडु
 साहु साहु तुह सोहइ विक्रमु
 एम भणंतहं घोसगहीरइं
 परिमलवहलइं वण्णविचितइं
 चंडहिं भुयदंडहिं पडिपेत्तय
 मालालंकिइ मवडि पसत्थइ

घत्ता—खगमहिचइणाह वणु मेत्तिवि पडिआइय ॥

हरिवलसंजुत्त पोयणणयरु पराइय ॥१३॥

णिवडंतहं वंधहुं लम्गणतर ।
 तुह पडिमल्लु णत्थि तिहुवणि भडु ।
 अण्णहु एहउ कासु परक्कमु ।
 कउ कलयलु दिण्णइं जयतूरइं ।
 अमरहिं पंजलिकुसुमइं चित्तइं ।
 पुणु सिल माहवेण तहिं वल्लिय ।
 कालभवित्ति णाइ रिचमत्थइ ।

१०

१४

अहिबंदिय द्दिअक्खयसेसइं
 मंदिरि मंदिरि मंगलकलयलु
 मंदिरि मंदिरि छडरंगावलि
 मंदिरि मंदिरि कलस सवप्पल
 ता तहिं जंपइ पुरणारीयणु
 का वि भणइ इहु राउ पयावइ
 का वि भणइ इहु सो संकरिसणु
 का वि भणइ इहु सो णारायणु

पुरि पइसंतहं ताहं णरेसहं ।
 णच्चइ कामिणि घुम्मइ मइल्लु ।
 बन्ल्लइ तोरणु चित्तधयावलि ।
 णिहिय वयणविलुलियपल्लवदल ।
 सुहयालोयणपयडियवणथणु ।
 पहु खगाहिउ रहणेउरवइ ।
 हलहरु हलि अंकरंतु वि करिसणु ।
 जेण सयंपहाहि हित्तं मणु ।

५

तुम इक्ष्वाकुकुलके श्रेष्ठ ध्वजपट हो, तुम्हारे समान प्रतिभट त्रिभुवनमें नहीं है। साधु-साधु, तुम्हें पराक्रम शोभा देता है। और दूसरे किसका ऐसा पराक्रम हो सकता है?" इस प्रकार कहते हुए उनका कलकल शब्द होने लगा, गम्भीर घोषतुर्य बजा दिये गये। परिमलोसे प्रचुर रंगविरंगी कुसुमांजलियां देवो द्वारा छोड़ी गयीं। प्रचण्ड बाहुदण्डों द्वारा प्रेरित उस शिलाको माधव (त्रिपुठने) वही इस प्रकार रख दिया, मानो मालासे अंकित मुकुट और प्रशस्त शत्रु मस्तकपर मानो काल—भवित्तव्यता हो।

घत्ता—विद्याधरों और मनुष्योंके राजा वन छोड़कर वापस आ गये और त्रिपुठकी सेनासे संयुक्त वे पोदनपुर पहुँचे ॥१३॥

१४

वही, अक्षत और निर्माल्यसे नगरमें प्रवेश करते हुए उन नरेशोंकी अभिवन्दना की गयी। घर-घरमें मंगल कलकल होने लगता है। कामिनी नृत्य करती है। मृदंग बज उठता है। घर-घरमें पडरंगावली होने लगती है, तोरण और रंगविरंगी ध्वजमाला बाँधी जाने लगती है। घर-घरमें, जिनके मुखपर पल्लवदल मंदित हैं, ऐसे कमल सहित कलश रख दिये गये हैं। तब वहाँ, सुन्दरके अवलोकनमें जिसके सधन स्तन प्रकट हुए हैं, ऐसा पुरनारीजन कहता है। कोई कहती है कि यह राजा प्रजापति है। यह विद्याधर राजा रथनूपुरका स्वामी है, कोई कहती है, हे सखी, यह वह हलधर (बलभद्र) है जो कर्षण नहीं करते हुए भी हलधर (किसान) है। कोई कहती है कि यह वह

२. A इक्खाकवंसं; P इक्खाववंसं । ३. A परिक्कमु । ४. °कियमवडपसत्थइ ।

१४. १. A पुरपयसंतह; P पुरि पयसंतहं । २. A संवल्लु । ३. AP पहुं । ४. AP अकरंतउ करिसणु ।

५. P सयंपयाहि ।

- जेण सिलायलु णहि संचालिउ जेण जसेण गोत्तु उज्जालिउ ।
 १० दीसइ रूवे वम्महु जेहउ पइ पुण्हिं जइ लब्भइ एहउ ।
 घत्ता—तं पुरु पइसिवि विरइयपणयपसायहिं ॥
 चट्टारिउ णेहु खगवइमहिउइरायहिं ॥१४॥

१५

- विहिं वि विवाहु तेहिं पारद्वउ कउ मंडउ रयणंसुसिणिद्वउ ।
 खंभि खंभि पज्जलियपईवहिं लंविचमोत्तियदामकलावहिं ।
 पवणुद्धुयचिंधपम्भारहिं मरगयमालातोरणदारहिं ।
 वजंतहिं पडुपडहहिं संखहिं णाणावाइत्तेहिं असंखहिं ।
 ५ कामिणिकरयलघल्लियसेसहिं दियवरदेवदिण्णआसोसहिं ।
 वियसियसयदलसरलदलच्छे गियसुहिउच्छलेण सिरिवच्छे ।
 पंरिणिय सुंदरेण सा सुंदरि गउ चउ जाहिं णिवसइ जगकेसरि ।
 राउ मऊरगीव णिवतगुरुहु खयरमउडचुंविउपयसररुहु ।
 अद्धचक्कि चक्कंकिउकरयलु ददभुयजुयअंदोलियपरवउ ।
 १० भणिउ तेण महिकामिणिमाणैणु भुयणवणंतवासिपंचाणैणु ।
 देव तुरंगगीव बुह्णिरसिउं गिसुणि गिसुणि सिहिजडिणा विलसिउं ।

नारायण है कि जिसने स्वयंप्रभाके मनका हरण कर लिया है । जिसने शिलातलको आकाशमें घुसा दिया, जिसने अपने यशसे गोत्रको उज्ज्वल किया, जो रूपमें कामदेवके समान है, यदि पुण्योंसे इस प्रकारका पति पा लिया जाये ।

घत्ता—उस नगरमें प्रवेश कर जिन्होंने प्रणय-प्रसार किया है ऐसे विद्याधर-राजा और मनुष्य-राजामें बहुत बड़ा स्नेह हो गया ॥१४॥

१५

उन दोनोंने विवाह प्रारम्भ किया । उन्होंने रत्नकिरणोंसे स्निग्ध मण्डपकी रचना की । खम्भे-खम्भेपर प्रज्वलित प्रदीपों, लटकती हुई मुक्कामालाओंके समूहों, हवासे उड़ती हुई ज्वलके प्रभारों, मरकत मालाओंके तोरणदारों, वजते हुए पटुपटहों-खोंकी और असंख्य नाना वाद्यों, कामिनियोंके करतलों द्वारा डाले गये निर्माल्यों, द्विजवर देवोंके द्वारा दिये गये आशीर्वादोंके साथ, जिनकी आंखें विकसित कमलके समान सरल हैं ऐसे, तथा अपने सुधीजनोंके प्रति वत्सल सुन्दर नारायणने उस सुन्दरीसे विवाह कर लिया और दूत वहाँ गया जहाँ विश्वकेशरी, मयूरग्रीव राजाका पुत्र, जिसके चरणकमल विद्याधरोंके मुकुटोंसे चूमित हैं, ऐसा चक्रसे अंकित करतलवाला और दृढ़ बाहुबलसे शत्रुसेनाको आन्दोलित करनेवाला अर्ध चक्रवर्ती राजा (अश्वघ्रीव) रहता था । भूमिरूपी स्त्रीके द्वारा मान्य और संसाररूपी जनके भीतर निवास करनेवाले उससे उसने कहा, "हे देव अश्वघ्रीव, ज्वलनजटीकी पण्डितोंके द्वारा निरस्त चेष्टा सुनिए । आप जैसे विद्याधर राजाको

१५. १. A रयणंसुसिनिद्वउ; P रयणसुसिनिद्वउ । २. AP परणिय । ३. A माणण । ४. A पंचाणण ।

५. P बुह्णिरसिउ ।

पई णह्यरणरणाहु पमाइवि
सामण्णहु विचलियगुणगियरहु

पोयणपुरवइपुत्तहु जाइवि ।
कण्णारयणु दिण्णु भूमियरहु ।

घत्ता—अह सो सामण्णु भणहुँ णँ जाइ खगाहिच ॥

जे मारिच सीहु चालिय सिल वसिकय णिव ॥१५॥

१५

१६

तं णिसुणिवि णरणाहु विरुद्ध
धगधगधगधगंतु चंचलसिहु
रत्तणेत्तरुइरावियदसदिसु
णं जंजं तिहुयणगिलणकयायर
चवइ सरोसु भिचडिभँडभीसणु
अज्जु जलणजडि मारिवि संगरि
सहुँ जावाएँ देवि दिसावलि
तहिँ अवसरि पालियचूवसासणु
ते णव पेसई सइं संचल्लिच
जो मयवइजीविचं वहालइ
सो सामण्णु ण होइ निरुत्तचं

णं केसरि गयगंधविलुद्ध
घयधारहिँ सित्त णं हुयवहु ।
पुप्फयंतु णं फणिँ आसीविसु ।
परिसिरिहर असिवरपसरियकरु ।
करतलप्पताडियरयणोसणु ।
घिवमि कयंतवयणविवरंतरि ।
मुक्खइ भग्गच घर्तु पावच कलि ।
रायसहासहिँ मरिगच पेसणु ।
पहु हरिमस्समंति^१ बोल्लिच ।
कोडिसिलायलु जो संचालइ ।
तुन्हहुँ अप्पणु जाहुँ ण जुत्तचं ।

५

१०

छोड़कर तथा जाकर पोदनपुर नगरके राजाके अत्यन्त सामान्य, गुणसमूहसे रहित, पुत्रको मनुष्य होते हुए भी कन्यारत्न दे दिया ।”

घत्ता—अथवा उस सामान्यका हे राजन्, वर्णन नहीं किया जा सकता कि जिसने सिंहको मार डाला, शिलाको चला दिया और राजाको अपने वशमें कर लिया ॥१५॥

१६

यह सुनकर नरनाथ (अश्वघोष) विस्मय हो उठा मानो हाथी को गन्धका लोभी सिंह हो, धक-धक-धक जलती हुई चंचल शिखावाली, घृन धाराओंसे सीची गयी मानो आग हो, लाल-लाल नेत्रोंकी कान्तिसे दसों दिशाओंको रंजित करनेवाला आशीष, पुष्पके समान दांत-वाला मानो नाग हो, जो मानो त्रिभुवनको निगलनेमें आदर रखनेवाला, दूसरेकी श्रीका अपहरण करनेवाला, असिवरसे हाथ फैलाये हुए यम हो । वह क्रोधमें आकर भौंहोंसे भटोंके लिए भयंकर हाथके प्रहारसे सिंहासनको प्रताडित करनेवाला वह कहता है कि मैं आज युद्धमें उत्रलन जटीको मारकर, यमके मुखदिवरके भीतर डाल दूँगा और दामादके साथ उसको दिशाबलि दूँगा । भूखसे नष्ट यम तृप्ति प्राप्त कर लेगा । उस अवसरपर नृपशासनका पालन करनेवाले उससे हजारों राजाओंने आज्ञा माँगी । परन्तु उसने नहीं भेजा, वह स्वयं चला । हरिश्मश्रु मन्त्रीने उससे कहा कि जो सिंहके जीवका नाश करता है, जो कोटिशिलाको चलाता है, वह निश्चय ही सामान्य व्यक्ति नहीं है । इसलिए तुम्हें स्वयं जाना उचित नहीं है ।

६ AP पोयणपुरिवइ । ७. P omits ण ।

१६. १. AP रत्तणेत्तु । २. AP जमु । ३. A सिरहर । ४. AP भिचडिभयं । ५. P मयणासणु ।

६. AP कयंतवंतविवरंतरि । ७. AP जामाएँ । ८. A घव, P घच । ९. AP णिवसासणु । १०. AP पेसिय । ११. P हरिमंसुसुमंतिहिँ बोलिच, P हरिमस्ससुमंतिहिँ बोलिच ।

घत्ता—ह्यकंठे उत्तु विस्स ण किं पि विवापं ॥

किं सूरहु को वि वड्डिसु वीसइ तेए ॥१६॥

१७

मञ्जु वि पासिचं को ^२ जगि सूरउ	को महिवइ वरवीरविचारउ ।
रयणमाल चट्ठी मंडलगलि	हचं अवगण्णउ जाइवि महियलि ।
जेण कण्ण दिण्णी भूगमणहं	सो पइसरउ सरणु सिहिपवणहं ।
सो पइसरउ सरणु देविंदहु	सो पइसरउ सरणु धरणिंदहु ।
५ सो हचं कंढुडि वि अज्जु जि फाडमि	वइवसपुरवरपंथे धाडमि ।
सवणायणियपावरसहे	सिल चालिज्जइ किं ण बलहे ।
सीहु सीहु सोढे सोसिज्जइ	एयहिं साहसेहिं लज्जिज्जइ ।
तरुणीमगगणचाडुयवते	किं वेहाविच सो वरइत्ते ।
मणिकुंडलमंडियगंडयलइं	दोहं वि तोडमि रणि सिरकमलइं ।
१० एंव चवेवि धीरु हुंकारि वि	णिग्गउ मंतिमंतु अवहेरि वि ।
संदाणियविमार्णेपरिवाडिहिं	परिवारिउ विज्जाहरकोडिहिं ।
ओरुंजंतिहिं आहवभेरिहिं	जुयखेइ णाइ रसंतिहिं मारिहिं ।
णं सायरु मज्जायविमुक्कउ	महिहरमेहल हंभिवि थक्कउ ।

घत्ता—अश्वघोष बोला, हे विद्वान्, विवादमें कुछ भी नहीं है, क्या तेजमें कोई भी सूर्यसे बड़ा दिखाई देता है ॥१६॥

१७

मेरी तुलनामें संसारमें कौन बड़ा है? कौन राजा वरवीरोंका विदारण करनेवाला है? कुत्तेके गलेमें रत्नोंकी माला बांध दी गई, और मेरी उपेक्षा की गयी। धरतीतलपर जाकर जिसने भूमिपर चलनेवालोके लिए कन्या दी है, वह आज पवन और आगमें प्रवेश करे, वह देवेन्द्रकी धारणमें जाये, वह धरणेन्द्रकी धारणमें प्रवेश करे, उसे मैं खींचकर आज ही फाड़ डालूंगा और यमपुरके मार्गपर भेज दूंगा। जिसने अपने कानोंमें प्रावृट्-शब्द सुना है ऐसे बेलके द्वारा चिल्लाका संचालन क्यों न किया जाये? सीह और सोधु (सिंह और मछ) का बोधण शौंड (मछप और गज) के द्वारा किया जाता है; इन साहसोंके द्वारा लज्जा आती है, युवती-मांगनेके लिए चापसूती करनेवाले वरदत्तने इस प्रकारकी गर्जना क्यों की? जिसके गण्डतल मणिकुण्डलोसे मण्डित है, ऐसे दोनों सिर-कमलोंको तोड़ूंगा। यह कहकर और हुंकारकर वह धीर मन्त्रीके मन्त्रीकी अवहेलना करके गया। प्रदर्शन किया गया है विमानोंकी परम्पराका जिसमें ऐसी विद्याधरोकी श्रेणियोंके द्वारा वह घेर लिया गया। बजते हुए युद्धके नगाड़ोंके साथ, युगसयमे जैसे बजती हुई मारियोंके साथ मानो समुद्र मर्यादाहीन हो उठा हो। और मानो महीधरकी मेखलाको रुद्ध कर बैठ गया हो।

१७. १. AP पासि । २. P. को वि. जगि । ३. A कडडमि. । ४. AP विवाण । ५. A जुगलइ ।

घत्ता—इह दाहिणभरहि वणि जैलंततणुसारइ ॥
आवासिचं सेणु पुष्पदंतकरवारइ ॥१७॥

१५

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महासव्वमरदाणुमणिय महाकइपुष्पदंतविरइय
महाकवे तिविट्ठिसिंघमारणकोटिसिल्लुच्चायणं गाम पक्कवण्णासमो
परिच्छेओ समत्तो ॥५१॥

घत्ता—इस प्रकार दक्षिण भरतक्षेत्रके वनमे जिसमे कि तृणसमूह जल गया है, तथा सूर्य-
चन्द्रमाकी किरणोंको रोकनेवाले वनमें उसने सैन्यको ठहरा दिया ॥१७॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एवं महासव्व मरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का त्रिष्टुप्के द्वारा
सिंघमारण और कोटिशिला उच्चाकन नामक इक्यावनवाँ परिच्छेद
समाप्त हुआ ॥५१॥

६. A जलतणकणसारइ; P जलवणकणसारइ । ७. AP कोटिसिलासंचालणं तिविट्ठिविवाहकल्लाणं
गाम ।

संधि ५२

दलियारिंदकरि रूसिवि हरि खगकुलभवणपईवहु ॥
चिरभववइरवसु आलद्धमिसु मिडिच गंपि ह्यगीवहु ॥ध्रुवकां॥

१

दुवई—खुहियखगिद्विदेकिंकररवगज्जियगंधसिंधुरो ॥
जाव तिखंडखोणिपरमेसरु चक्षिच तुरयकंधरो ॥

- | | | |
|---|---|--|
| ५ | तावेत्तहि पोयणणामणयरि
पणवियसिरेण मत्तलियकरेण
भो खगवइ णिरु अण्णायवट्टि
आरुइउ कण्णकारणेण
तं सुंणिवि पयावइ तेण भणित्त
१० सो उट्टिच एवहि बलमइंतु
असिजीहापल्लवल्ललळंतु
उवसमइ जेण सो क्रूरचित्तु | भूगोयरवइघरैवसियखयरि ।
सिहिल्लडिहि सिट्ठु जाइवि चरेण ।
तुल्लुप्परि आयेंच चक्कवट्टि ।
जं एव समासिच चारणेण ।
अन्हहिं सुंहुं सुत्तच सीहु व्रंणित्त ।
धणुलंगूलच सरणहरचंतु ।
मंतिअइ एवहिं सो जि मंतु ।
ता ^१ सस्सुएण सहसत्ति च्तु । |
|---|---|--|

सन्धि ५२

शत्रुगजोंका नाश करनेवाले नारायण और बलभद्र पूर्वभक्तके बैरके वशीभूत होकर और
बहाना पाकर क्रोधपूर्वक विद्याधरकुल बलयके प्रदीप अश्वघ्रीवसे जाकर भिड़ गये ।
घटा—क्षुब्ध विद्याधरेन्द्र-समूहके अनुचरोंके शब्दसे जिसका गन्धहाथी गर्जित है, ऐसा
त्रिलण्ड धरतीका स्वामी अश्वघ्रीव जबतक चला—

१

तबतक, यहाँ जिसमें मानवराजाके घर विद्याधर बसे हुए हैं, ऐसे पोदनपुर नगरमें सिरसे
प्रणाम करते हुए और हाथ जोड़कर दूतने ज्वलनजटीसे जाकर कहा—“हे विद्याधरराज,
अत्यन्त अन्यायी चक्रवर्ती राजा तुम्हारे ऊपर आया है । कन्याके कारण वह तुमसे क्षुब्ध है ।”
जब दूतने इस प्रकार संक्षेपमे कथन किया तो उसने (ज्वलनजटीने) प्रजावतीसे कहा कि “हमने
सुखसे सोते हुए सिंहको घायल कर दिया है, बलसे महात् इस समय घतुष जिसकी पूँछ है और
जो तीररूपी नखीसे युक्त है, ऐसा वह अपनी तलवाररूपी जिह्वाको लपलपाता हुआ उठ खड़ा
हुआ है, इस समय वही मन्त्र करना चाहिए जिससे क्रूरचित्त वह शान्त हो जाये । आप वही

A gives, at the beginning of this Samdhi, the stanza दीनानाथमनं etc. for
which see page 139. P gives it at L, K does not give it anywhere.

१. १. AP^० वंदे । २. AP^० संघुरो । ३. AP^० धरि वसिय^० । ४. A सो खगवइ । ५. अण्णायवत्ति ।
६. A आवइ । ७. A तं णिगुणि । ८. A सुहि । ९. A सुणित्त; P वणित्त । १०. A सुम्पण ।

तइ जलइ जलणु जइ णस्थि वारि जइ णस्थि संति तो पडइ मारि ।
 भो आणइ मरणु पहाणवइरु ११ भो एत्थु ण णिज्जइ कालु सुइरु ।
 पहु लहु दीसइ जुजेवि सामु ता विहसिचि भासइ पडमरोसु । १५
 घत्ता—सज्जणु उवसमइ खलु किं खमइ बोल्लंतहुं १३ सुइमिट्ठवं ।
 घिउ हुँयवहमिलिउं जललवजलिउं वप्प किं ण पईं विट्ठवं ॥१॥

२

दुवई—मित्त तिचिट्ठि रुट्ठि गिरिधीर-वि एंति ण वइरिणो रणं ॥
 किं विसहंति दंति हरिणाहिचखरकररुहविचारणं ॥
 जइयहुं अहिवलयविलंबमाण वणि उच्चाइय सिल इलसमाण ।
 मई जाणिसं तइयहुं कैहिं वि कालि देवहुं पेक्खंतहं भडवमालि ।
 तोडेसइ ह्यकंधरहु सीसु रत्तच्छिवत्तुं भूभंगभीसु । ५
 को हालाहलु जीहाइ कलइ को करयलेण हरिक्कलिसुं दलइ ।
 को गयणि जंतु अहिमयरु खलइ को णियवलेण धरणियलु तुलइ ।
 को कालु कयंतहु माणु मलइ को जलणि णिहिचु वि णाहिं जलइ ।
 को फणिवइफणमणणियरु हरइ को पडिय विज्जु सीसेण धरइ ।
 को भंडइ सहुं महुं भायरण तो जंपिउ मंति सायरण । १०

जलती है जहाँ पानी नहीं होता, जहाँ शान्ति नहीं होती तो वहाँ आपत्ति आती है, प्रधानका वेर, मृत्युको लाता है, अरे यहाँ बहुत समय नहीं बिताना चाहिए । हे प्रभु, मिलनेसे शीघ्र साम दिखाई देगा ।” (यह सुनकर) तब प्रथम राम (बलभद्र विजय) ने हँसकर कहा—

घत्ता—सज्जन शान्त होता है, कानोंको भीठा लगनेवाला बोलनेपर भी क्या दुष्ट क्षमा करता है ? हे सुभट, आगसे मिला हुआ (जलता हुआ) और जलकणोंसे मिला हुआ भी क्या तुमने नहीं देखा ? ॥१॥

२

हे मित्र, त्रिपृष्ठके क्रुद्ध होनेपर भी पहाड़की तरह घोर वैरी रणमे नहीं आते । सिंहके द्वारा तीखे नखोंसे विदारणका क्या गज उपहास करते हैं ? जब सर्पमण्डलसे अवलम्बित पृथ्वी जैसी शिलाको उसने उठाया था, तभी मैंने जान लिया था कि देवोंके देखते हुए, योद्धाओंके कोलाहलके बीच किसी भी समय वह अश्वप्रोवके लाल-लाल आँखोंवाले तथा भ्रूभंगसे भयंकर सिरको तोड़ेगा ? विषको जीभसे कौन छूता है ? करतलसे इन्द्रके वज्रको कौन चूर-चूर कर सकता है; आकाशमे जाते हुए सूर्यको कौन स्वलित कर सकता है ? कौन अपनी शक्तिसे पृथ्वीको तोल सकता है ? कौन काल और यमके भानको मिला कर सकता है ? कौन आगमे रखे जानेपर भी, नहीं जलता ? नागराजके फनके मणिसमूहका अपहरण कौन कर सकता है ? गिरती हुई विजलीको कौन धारण कर सकता है ? मेरे भाईके साथ कौन युद्ध कर सकता है ? तब सागर मन्त्री बोला—“हे बलभद्र और चन्द्रमाके समान कान्तिवाले, आपने जैसा जो जाना है, उसमे जरा भी

११. AP धुउ । १२. A पडमु रामु । १३. A वोल्लंतहो । १४. A हुँयवहमिलिउ; P हुँयवहि मिलिउ ।
 २. १. A विलंबमाणे । २. A समाणे । ३. AP तहिं । ४. AP रत्तच्छिवत्तु । ५. A कुट्ठिउ । ६. A फणिवइफणमणु । ७. AP तो । ८. A मंतं सायरण ।

भो सीराहह तुहिणयरकंति	जं पइं जाणिं त्तिह तं ण भंति ।
लइ तो वि देव किंजइ परिक्ख	उवइसहु कुमारहु मंतसिक्ख ।
वीयक्खराइं मणि संभरंतु	आसीणु सत्तरत्तं तुरंतु ।
जइ साहइ विज्जादेवयाउ	तो करइ परहं मरणावयाउ ।
१५ विज्जासाहणविहिभैयभिण्णु	ता ससुरएण उवएसु दिण्णु ।
थिउ झाणारूढउ हलि उविहु	सत्तमदिणि कंपाविउ फण्हिहु ।
घत्ता—विज्जाजोइणिउ वरदाइणिउ हरिरामंहुं पणवंतिउ ॥	
रिउजमंदूइयउ खणि आइयउ देहु णियसु पभणंतिउ ॥२॥	

३

दुचई—गारुडविज्ज पुज्जं संसाहिय हरिणा भुवणखोहिणी ॥

अवरं महंतसत्तुसंचूरणि पँवर वि णाम रोहिणी ॥	
खगंथंभणी	वलणिसुंभणी ।
गयणचारिणी	तिमिरकारिणी ।
५ सीहवाहिणी	वइरिसोहिणी ।
वेयगामिणी	दिण्वकामिणी ।
विवरवासिणी	णायवासिणी ।
जलणवरिसिणी	सल्लिसोसंणी ।
धरणिदारणी	कुडिलमारणी ।
१० वंधमोयणी	विविहरुविणी ।
मुक्ककोतला	लोहसंखला ।
छइयदसदिसी	कालरक्खसी ।

भ्रान्ति नहीं। तब भी हे देव, लो, परीक्षा कर लीजिए; कुमारके लिए मन्त्रशिक्षाका उपदेश दीजिए; वह तुरन्त सात रात तक बैठकर बीजाक्षरोंका ध्यान करता हुआ यदि विद्यादेवियाँ सिद्ध कर लेता है, तो वह दूसरोंके लिए मरणरूपी आपत्ति कर सकता है।” तब ससुरने विद्यासाधनकी निधिके रहस्यसे परिपूर्ण उपदेश उसे दिया। बलभद्र और नारायण ध्यानमें लीन होकर बैठ गये। सातवें दिन नागराज कम्पायमान हो उठा।

घत्ता—वर देनेवाली विद्यारूपी योगिनियाँ बलभद्र और नारायण (विजय और त्रिपुण्ड्र) को प्रणाम करती हुई शत्रुके लिए यमदूतीकी तरह, ‘आदेश दो’ कहती हुई आयी ॥२॥

३

नारायणने संसारको क्षुब्ध करनेवाली पूज्य गारुडविद्या सिद्ध कर ली। एक और दूसरी महात् शत्रुको चूर करनेवाली रोहिणी नामकी महात् विद्या सिद्ध कर ली। खड्गस्तम्भिनी, वननिशुंभिनी, आकाशगामिनी, अन्धकारकारिणी, सिंहवाहिनी, वैरोमोहिनी, वेगगामिनी, दिव्यकामिनी, विवरवासिनी, नागवासिनी, ज्वलनदविणी, सलिलशोषिणी, भूमिविदारिणी, कुटिलमारिणी, बन्धमोचनी, विविधरूपिणी, मुक्तकुन्तला, लोहश्रृंखला, दसदिशा-आच्छादिनी,

- १. AP सत्तरत्तिउ । १० A हरिरायहो । ११. P इइओ ।

३. १. A पूंज । २. A सयल महंत सत्तं; P सयलमहंतु सत्तुं । ३. AP अवर वि । ४. AP वंभिणी ।

५. AP णिसुंभिणी । ६. AP सोसिणी । ७. P दारिणी । ८. AP विविहकुत्तला ।

वयणपैसला	विजयमंगला ।	
रिक्खमालिणी	तिक्खमूलिणी ।	
चंदमचलिणी	सिद्धमालिणी ।	१५
पिंगलोचना	धुणियफणिफणा ।	
थेरि थुरुहुरी	घोरैघोसिरी ।	
भीरुभेसिरी	पळयदंसिरी ।	
इय सणामहं	दिण्णकामहं ।	
घत्ता—पांच समागतइं विज्जहं ^{१०}	सयइं दक्खवंति सवसित्तणु ॥	२०
	तोसियवासवहं बलकेसवहं धरि करंति दासित्तणु ॥३॥	

४

दुवई—विज्जागमणमुणिइ हरिपोरिसि पसरियसिरिविलासए ॥	
णिह्य पयाणभेरि जगभइरव वियलिइ सयणसंसए ॥	
विज्जाहरमहिहरणाइ वे वि	जळणजडि पयावइ धुरि करेवि ।
चलियइं सेण्णइं रिचरणमणाइं	बळएववासुएवहं तणाइं ।
णहु कंपइ कंपंतहिं धपहिं	महि हल्लइ गच्छंतहिं गपहिं ।
रह चिक्खवंत चॅल चिक्करंति	पडिक्खमरणु णं वज्जरंति ।
जाएं हरिखुरधूलीरण	धूसरिड सूरु दूरंगएण ।
भडरोलें सुत्तुट्टिड कर्यंतु	छत्तहिं संछण्णइं दहदियंतु ।
जोइय जणैण परवीरजूर	सोमुगदेह णं चंद सूर ।

कालराक्षसी, वचनपेशला, विजयमंगला, ऋक्षमालिनी, तीक्ष्णभूलिनी, चन्द्राच्छादिनी, सिद्धपालिनी, पिंगलोचना, फणीफणध्वननी, स्यविरा, स्थूलधरा, घोरघोषिणी, भीहभीषिणी, प्रलयदर्शिनी इन नामोंवाली और कामनाओंको प्रदान करनेवाली—

घत्ता—एक सौ पांच विद्याएँ अपनी अधीनता उसके लिए दिखाती हैं । और इन्द्रोंको सन्तुष्ट करनेवाले बलभद्र और नारायणके घर दासता करती हैं ॥३॥

४

विद्याओंके आगमनसे नारायणका पौरुष ज्ञात होनेपर तथा लक्ष्मीका विलास फेलेपर और स्वजनोका संशय दूर होनेपर विश्वभयंकर प्रयाण-भेरी बजा दी गयी । दोनों विद्याधरराजा और महीधरराजा ज्वलनजटी और प्रजापतिको आगे कर शत्रुसे युद्ध करनेका मन रखनेवाली बलदेव और वासुदेवकी सेनाएँ चली । कांपती हुई ध्वजाओंसे आकाश कांप उठता है, गर्जोंके चलनेपर धरती कांप उठती है । रथके चिक्कार करनेपर धरती चीत्कार कर उठती है, मानो शत्रुपक्षकी मृत्युको घोषित कर रहे हो । दूर तक गयी हुई, घोड़ोंके खुरोंकी धूलिजसे सूर्य घूसरित हो गया । योद्धाओंके शब्दसे सोया हुआ यम उठ बैठा । दसो दिशाएँ छत्रोंसे आच्छन्न हो गयी । शत्रुवीरोंको सतानेवाले उन्हें लोगोंने इस प्रकार देखा, मानो सौम्य और उग्रदेहवाले चन्द्र-सूर्य हों;

१. AP^० घोषिणी । १०. A विज्जइं सयइं ।४. १. P^० गमणु मुणिइ । २. A सद्धणसंसए । ३. A जहणजडि । ४. P वर ।

- १० षं अट्टहास वहलंधयार षं इवसभरस सिंगारैभार ।
गच्छंतवारणारूढदेह हलहर हरि षं सियअसियमेह ।
हल्लरिमुइंगकाहलरवेण दियहेहि गंपि सवरुच्छवेण ।
कुमुमियपियालककोलपलि तहि थक्क संदणावत्सेलि ।
घत्ता—पवणचलंतियहिं घयपंतियहिं णहु षं इप्परि सुलियउं ॥
- १५ षण्चियनृवण्ठिहिं पिहुपडकुडिहिं खोणीयलु चित्तलियउं ॥४॥

५

- तुवई—चिचिणिचारचूयचवचंपयचंदणबद्धकुंजरे ॥
थिइ पैडिअलि तुरंगहिलिहिलिरवे सयडावत्तगिरिवरे ॥
- जोपचि सिचिर षवघणसरेहिं विण्णविड षवेप्पिणु चरणेरहिं ।
अरिपुरवरघरसंदिण्णडाहु विज्जाहरभूयरभूमिणाहु ।
५ आढत्तव जिणु वम्महसरेहिं आढत्तव आहंडलु षरैहिं ।
आढत्तव खल्लजोएहिं भाणु आढत्तव तरुणियरं किसाणु ।
आढत्तव केसरि जंतुएहिं आढत्तव जैउं जीवियनुएहिं ।
आढत्तव गयवरु गहहेहिं आढत्तव मंतुगंमु गहेहिं ।
आढत्तव रइवइ कइयवेहिं आढत्तव मोक्खु वि जइत्तवेहिं ।
१० भो देवदेव संघियसरेहिं आढत्तव तुहुं षियकिंकरेहिं ।

मानो अट्टहास और सघन-अन्वकार हों, मानो शान्तरस और शृंगारभार हो, चलते हुए गजोपर आरूढ शरीर बलभद्र और नारायण ऐसे मालूम होते हैं, मानो सफेद और काले मेघ हों । इल्लरो मूदंग और काहल्लोके शब्दोंसे और युद्धके उत्साहके साथ कुछ दिनों तक चलकर वे, जिसमें प्रियाल अशोक और एला वृक्ष खिले हुए हैं, ऐसे स्यंदनावर्त पर्वतपर वे उठर गये ।
घत्ता—हवासे चलती हुई ध्वजपंक्तियोंसे मानो ऊपर आकाश घूम उठा और नीचे नाचती हुई राजनर्तकियों और विद्याल पटकुटियोंसे धरतीतल रंग-विरंगा हो उठा ॥४॥

५

जिसमें, चिचिणी चार आत्र घौ चम्पक और चन्दन वृक्षोंसे हाथो बंधे हुए हैं और घोड़ोंके हिनहिनानेका शब्द हो रहा है, ऐसे शकटावर्त पहाड़पर शत्रुसेना उठर गयी । नवघनके समान स्वरवाले चर मनुष्योंने शिविर देखकर, प्रणामकर राजासे निवेदन किया—“जिसने शत्रु नगरोंके धरोंको आग लगा दी है और जो विद्यावर मनुष्योंकी भूमियोंके स्वामी हैं, ऐसे हे देवदेव, कामदेवके वाणोंने जिनवरको आक्रान्त किया है, मनुष्योंने इन्द्रको आक्रान्त किया है, जुगुनुअोंने सूर्यको आक्रान्त किया है, तरुसमूहने आगको आक्रान्त किया है, सियारोंने सिहको आक्रान्त किया है, जीवनसे च्युत लोगोंने यमको आक्रान्त किया है, गधोंने गजवरको आक्रान्त किया है, ग्रहोंने मन्त्रके उद्गम-को आक्रान्त किया है, कपटोंने कामदेवको आक्रान्त कर लिया है, जड़तपस्वियोंने मोक्षको आक्रान्त किया है, जिन्होंने अपने तीरोंका सन्धान कर लिया है ऐसे अपने ही अनुचरोंने तुम्हें

५. A सिंगारहार । ६. P समर । ७. AP णिवण्ठि ।
५. १. A चारुववव ; P चारुववव । २. A पडिबल्लतुरं । ३. AP जमु । ४. A पत्तंगु । ५. AP कइवएहिं । ६. P कइववेहिं ।

रहणेउरवइ णरवइ सबंधु सहं णंदणेण चंदाहिचिंधु ।
 अणेक्कु पयावइ पोयणेसु आरुंदु सुटु खयकालवेसु ।
 अणेक्कु सुसलि तहिं कसणवासु अणु वि जो दिट्टु पियवासु ।
 किं अक्खमि पडुसामत्थु तासु देव वि संकाइ णवंति जासु ।
 घत्ता—गिसुणिवि तुह चळणु खलयणमळणु देवयाउ साहेप्पिणु ॥ १५
 वळइयधणुवलय णं खयजलय थिय महिहरि आवेप्पिणु ॥५॥

६

दुवई—चवइ खगिंदचंडु करवालविहंडियतुरयकरिसिरे ॥
 रत्ततरंतमत्तरयणीयरि णिहंणवि रिचं रणाइरे ॥
 ता कहइ मंति णामें चिहाउ जगडिंभहु एवहिं तुहुं जि ताउ ।
 जइ आणालंधणु कयउ तेहिं सुय दिणु पडिच्छिय पत्थिवेहिं ।
 एहउ आयाउ णराहिवाहं पेसिउजउ दूयउ को वि ताहं । ५
 सो दूयउ जो भासापवीणु सो दूयउ जो पंडिउ अदीणु ।
 सो दूयउ जो अहिमाणि दाणि सो दूयउ जो मियमहुरवाणि ।
 सो दूयउ जो गंभीर धीरु सो दूयउ जो णयवंतु सूरु ।
 सो दूयउ जो परचित्तलक्खु सो दूयउ जो पोसियसपक्खु ।
 सो दूयउ जो बुज्झियविसेसु सो दूयउ जो सुविसिट्टवेसु । १०

आक्रान्त किया है। रथनपुरका स्वामी अपना बन्धु राजा (ज्वलनजटी), तथा पुत्रके साथ, चन्द्रमाके समान चञ्चल सर्पध्वजवाला एक दूसरा पौडनपुरका स्वामी प्रजापति क्षयकालके रूपमें तुमपर अत्यन्त क्रुद्ध है। एक ओर विजय बलभद्र नीलवस्त्रोवाला है और दूसरा जो पीले वस्त्रों-वाला दिखाई देता है, मैं उसकी प्रभुसामर्थ्यका क्या वर्णन करूँ? देव भी शंकासे उसे नमन करते हैं।

घत्ता—तुम्हारे दुश्जनोंका मर्दन करनेवाले प्रस्थानको सुनकर, विद्यादेवियोको सिद्ध कर, जिन्होंने घनुषकी प्रत्यंघाओंको तान लिया है, ऐसे वे, मानो क्षयकालके मेघोके समान पर्वतपर आकर ठहर गये हैं ॥५॥

६

तब विद्याधर राजा कहता है, 'जिसमे घोड़ों और हाथियोके सिर तलवारसे खण्डित होते हैं, तथा रक्तमे निशाचर तैरते हैं, ऐसे युद्धप्रांगणमे, मैं शत्रुको मारूँगा।' इसपर विद्याता नामका मन्त्री कहता है, 'इस समय विश्वरूपी बालकके तुम पिता हो, यदि उन राजाओंने आज्ञाका उल्लंघन किया है और दी हुई कन्याको स्वीकार कर लिया है, तो महाधिपोका यही आचार है कि उनके पास कोई दूत भेजा जाये। दूत वह है जो भावामे प्रवीण हो, वह दूत है जो विद्वान् और अदीन हो, वह दूत है जो स्वाभिमानी और दानी है, वह दूत है जो मधुर वाणी बोलनेवाला है, वह दूत है जो गम्भीर और धीर है, वह दूत है जो नीतिवाच् और शूर है। वह दूत है जो दूसरे-के मनका ज्ञाता है, वह दूत है जो अपने पक्षका समर्थन करनेवाला है, वह दूत है जो विशेषको

७. A चंदाहचिंधु, T चंदाहविंधु चन्द्रनागविवाः । ८. A आरुहु ।

६. १. A खगिंदचंडु । २. A णिहणिवि । ३. A मियमहुरवाणि । ४. A अहिमाणि दाणि । ५. A साउ ।

६. A सुविसिट्टवेसु ।

सो दूयच जो कथसंधिणामु	सो दूयच जो वज्जरियसामु ।
सो दूयच जो णिद्धिदुमंतु	सो दूयच जो कुलजाइवंतु ।
सो दूयच जो उवइदुदंडु	सो दूयच जो संगार्मचंडु ।
सो दूयच जो रिचहिययसूलु	सो दूयच पेसिच रयणचूलु ।
१५ णिवसंतगरुयखंधारोलु	तं गच्छिवि गिरिगहणंतरालु
पणवेवि तेणं पालियविसिट्ठु	अस्थाणि णिविट्ठु तिविट्ठु दिट्ठु ।
घत्ता—दूर्ध्वं वज्जरिचं पट्टु विप्फुरिच दिव्वपुरिसंयुणजाणत्तु ॥	
गुणिगहणुज्जि तुहं अणुहंजि सुहं पेक्खु णवेपिणु राणत्तु ॥६॥	

७

दुवई—जा मंगिय णिवेण खगसुंदरि सा तुह होइ सामिणी ॥	
देवि खमंसणिज्ज सा कामहि किं कामंध कामिणी ॥	
मा रसच काच चप्पिवि कवालु	भक्खंतु म गिद्ध भडंतजालु ।
मा सरसयणीयलि सुयच ताव	मा पोयणपुरवरु खयहु जाव ।
५ मा उट्ठ चरुहचूरणणिहाव	भज्जंतु म चामरलत्तकेव ।
दीसच मा सयणहं मरणेहव	रसवससमुद्धकंकालसेव ।
मा रुद्धि कालवेयालु पियच	मा सूरकिच्चि जमकरण णियच ।
मा करच मृगावइ पुत्तदुक्खु	मा छिज्जेव हलहरकप्पस्खु ।

जाननेवाला है, वह दूत है जो विदिष्ट वेदावाला है, वह दूत है जो सन्धान करना जानता है, वह दूत है जो 'साम'का कथन करनेवाला है, वह दूत है जिसने दण्डका उपदेश दिया हो, वह दूत है जो कुलीन और जातिवाला हो, वह दूत है जो युद्धमें प्रचण्ड हो, वह दूत है जो शत्रुके लिए हृदयका काँटा हो। ऐसा वह रत्नचूड़ नामका दूत भेजा गया। जिसमें निवास करते हुए स्कन्धावारका भयंकर शब्द है, ऐसे उस गिरिके गहन अन्तरालमें जाकर, उसने प्रजाका पालन करनेवाले दरबारमें आसनपर बैठे हुए त्रिपुष्टको देखा।

घत्ता—दूतने कहा—“हे प्रभु, विकसित दिव्य पुरुषके गुणगणके ज्ञाता गुणी व्यक्तिको ग्रहण करनेमें ओजस्वी तुम सुखका भोग करो और प्रणाम कर राजासे मिल लो ॥६॥

७

और जो राजा (अश्वघोष) ने विद्याधर सुन्दरी मांगी है, वह तुम्हारी स्वामिनी होती है। जो देवी तुम्हारे द्वारा नमन करने योग्य है, उस स्त्रीको हे कामान्ध तू क्यों चाहता है? तुम्हारे सिरपर बैठकर न बोले, योद्धाओंके आँतोंके जालकी गीध न खायेँ, तुम्हारे पिता तीरोंके शयनीय-तलपर न सोयेँ, पोदनपुर नगर क्षयको प्राप्त न हो, रथोंके चूर्ण होनेका शब्द न हो, चमर-छत्र और ध्वज नष्ट न हों, स्वजनोंके मरणका कारण रस और मज्जाके समुद्रमें कंकाल सेतु दिखाई न दे, कालरूपी बेताल रुधिर न पियेँ, द्यूरकी कीर्तिको यमके अनुचर न देखें। मृगावती पुत्रके दुःख-

७. P उवइदुदंडु । ८. P संगामि चंडु । ९. A ते वि । १०. A °गुरिसु । ११. AP गुणिगहणिणु ।
 ७. १. A मंगिय खगेण णिवसुंदरि । २. AP मरणमेव । ३. A संगरसमुद्ध । ४. AP विणावह ।
 ५. A छिज्जइ । ६. AP हलहर ।

पहुदोहबहलधूमोहमलिणि जलणजडि पडव मा पलयजलणि ।
 रायदु डोयहि सौ तुहुं कुमारी मा हकारहि णियगोत्तमारी १०
 घत्ता—जाणियणयणिवहु कयवइरिवहु संतबलु वि जो बुझइ ॥
 जेण तिखंडर्धर जिय ससुरणर तेण समरं को जुवझइ ॥७॥

८

दुवई—म करि कुमार किं पि रोसुंभंडवयणे वलिसमप्यणं ॥
 करगयकर्णयवलयपविलोयणि हो किं णियहि दप्यणं ॥
 तं सुणिवि भणिं विट्ठरसवेण भो चारु चारु भासिं णिवेण ।
 अण्णाणु हीणु मज्जायचत्तु भग्गंतु ण लज्जइ परकलत्तु ।
 भरहहु लिंगिवि रिद्धीसमिद्धु रायत्तु कुलि अम्हइं पसिद्धु । ५
 सो घईं पुणु जायव विहिवसेण विणडिच परणारीरइरसेण ।
 संताणागय महुं तणिय धरणि किं णक्खत्तं जइ तवइ तरणि ।
 दप्पिद्धु दुद्धु नृवणायभदुद्धु मरु मारिवि धिवमि तुरंगकंठु ।
 तं णिसुणिवि दूरं बुचु पंघ पावसि कार्लविणि रसइ जंघ ।
 किं वरिसइ सुवणु भरंति तेंघ वोळंसु ण संकहि वप्प कंघ । १०

को न करे, बलभद्रका कल्पवृक्ष नष्ट न हो, स्वामी द्रोहके प्रचुर अन्वकारके समूहसे मलिन प्रलयामिने ज्वलनजटी न पड़े, इसलिए वह कुमारी तुम राजाके लिए दे दो, अपने गौत्रके लिए तुम आपत्तिका आह्वान मत करो ।”

घत्ता—जिसने नयसमूहको जान लिया है, जिसने शत्रुका वध किया है और जो मन्त्र-बलको भी जानता है, जिसने तीन खण्ड धरती जीत ली है, देवों और मनुष्यों सहित, उससे युद्ध कौन कर सकता है ॥७॥

८

“हे कुमार, क्रोधसे उद्भट मुखवाले उसके लिए बलि समर्पण मत करो, हाथमे स्थित कनकवलयको देख लेनेपर तुम दर्पण क्या ले जाते हो ?” यह सुनकर बलभद्रने कहा—“अरे, राजाने बहुत सुन्दर कहा । अज्ञानों नीच और मर्यादाहीन उसे, परस्त्रीको मांगते हुए, लज्जा नहीं आती । भरतसे लेकर ऋद्धिसे समृद्ध राज्यत्व हमारे कुलमें ही प्रसिद्ध रहा है । विधिके विधानसे, परनारीके रतिरसके कारण प्रवर्चित वह (अश्वप्रीव) फिर उत्पन्न हुआ है । कुलपरम्परासे धरती हमारी है । जबतक सूर्य तपता है, नक्षत्रोंसे क्या ? दपिष्ठ दृष्ट और नृप न्यायसे भ्रष्ट अश्वप्रीवको मैं मारकर फेंक दूँगा ।” यह सुनकर दूतने इस प्रकार कहा, “पावस ऋतुमें जिस प्रकार कादम्बिनी (मेघमाला) गरजती है, क्या वह उसी प्रकार बरसकर विश्वको भर देती है । हे सुभट, तुम्हें बोलते हुए संकोच क्यों नहीं हो रहा है ?

७. AP तुहु सा । ८. A घरा ।

८. १. A रोसुंभंडवयणावलिसमप्यणं; P रोसु भंडवयणि । २. P कणयवलय । ३. A विट्ठुरसवेण ।

४. A रायत्तयकुलि । ५. AP पइ, but K घईं and gloss पावपुरणार्थे । ६. AP जायव पुणु ।

७. AP णिवणाय ।

घत्ता—अग्गइ घणर्थणिहिं सीसंतिणिहिं^१ रणु बोळंतहुं चंगं ॥
अच्छळ असि अवरु पडुकरपहरु तुह ण सहइ^२ लळियंगं ॥८॥

९

दुवई—भासइ विस्सेणु भो जाहि म जंपहि चप्पलं जणे ॥
तुह पंणो महं पि दीसेसइ वाहुवलं रणंगणे ॥

तं णिसुणिवि दूयळ गळ तुरंतु कोवसिगजालमालाफुरंतु ।
हयगीवहु कहइ अहीणमाणु परमेसर रिळ पोरिसिगिहाणु ।
५ अहिणव विसट्टकंदोदुणेत्तु ण समप्पइ तं परिणिं कलत्तु ।
संधाणु ण इच्छइ गरुडकेळ दीसइ भीसणु णं धूमकेळ ।
जिह सक्कइ तिह विज्जावलेहिं भिहु सुसलहिं सूळहिं सव्वलेहिं ।
ता पभणइ पडु पीडियकिवाणु एवहिं हचं सोहमि जुञ्जमाणु ।
किंकर णिहणंतहं णत्थि छाया मा को वि भणेसइ हय वराय ।
१० अविहेयविहंढणि कवणु दोसु उग्घोसहु लहुं रणरहसघोसु ।
दुदमदणुं दणुपविमदणेण एत्तहिं वि मृगावडणं दणेण ।
अवलोयहुं अवलोयणिय विज्ज पेसिय खंगपुंगव वंदणिल्ल ।
भडयडगयधडरहंसंपळणु आइय जोइवि पडिवकखसेणु ।

घत्ता—सघन स्तनोंवाली स्त्रियोंके सम्मुख युद्ध बोलते हुए अच्छा लगता है, तलवार रहे, स्वामीके कर का प्रहार तुम्हारा सुन्दर शरीर नहीं सहन कर सकता” ॥८॥

९

तब त्रिपुलने कहा, “अरे तू जा, लोगोंको चपलता की बात मत कर । तुम्हारे राजा बीर मेरा बाहुबल युद्धके आँगनमे दिखाई देगा ।” यह सुनकर दूत क्रोधको ज्वालमालासे तमतयाता हुआ तुरन्त गया । वह अववन्धीवसे कहता है कि शत्रु अधिक मानी बीर पौरुषका निधान है । अभिनव विकसित कमलके समान नेत्रोंवाला वह, उस अपनी विवाहिता पत्नीको समर्पित नहीं करता । वह गरुडध्वजी सन्धि नहीं चाहता । वह भीषण दिखाई देता है, मानो धूमकेतु हो । जिस तरह सम्भव हो, उस प्रकार विद्याबलों, मूसलों, शूलों और सब्बलोंसे लड़िए । तब अपनी तलवारको पीड़ित करता हुआ राजा कहता है कि इस समय मैं युद्ध करता हुआ शोभित होता हूँ । अनुवरोंको मारनेमें कोई यश नहीं है, कोई यह नहीं कहे कि दीनहीनोंको मार दिया गया । अविनीतोंको मारनेमें कोई दोष नहीं । शीघ्र ही युद्धका हर्षवर्षक घोष करो । दुर्दम दानवोंके दर्पको कुचलनेवाले मृगावतीके पुत्रने भी यहाँपर, विद्याधर श्रेष्ठोंके द्वारा बन्दनीय अवलोकित्ती विद्याको देखनेके लिए प्रेषित किया । भडघटा, गजघटा और रथोंसे सम्पूर्ण प्रतिपक्ष सैन्यको देखनेके लिए वह आयी ।

८. A^० थणिहे । ९. A सीसंतिणिहे । १०. AP सहइ ।
१. १. AP वीससेणु हो । २. P^० दणुदणु । ३. AP मिगावई । ४. P खनपुंगम । ५. AP^० खहण-

पडणु ।

घत्ता—कणहहु देवयहिं पुण्णारायहिं गुणपणामसंपण्णं ॥
सँत्ति अमोहसुहिं तूसवियसुहिं धणु सारंगु विड्णणं ॥९॥

१५

१०

दुवई—आणिवि सुरवरेहिं चिरु रक्खित्त मंगलल्लुणिणिणाइओ ॥
जलयरु पंचयण्णु कोत्थुहमणि असि हरिणो गिवेइओ ॥
अण्णु वि गय हय गंय दिण्ण तासु कोसुइ णामें दामोयरासु ।
वलपवहु लंगलु सुसल्लु चारु गय चंदिमँ णामें हत्थियारु ।
दसँदिसवह्वाइयकिरणजाल दिण्णी उरि घोळइ रयणमाल । ५
कंचणकवयंकिउ धवलदेहु णं संझाराएं सरयमेहु ।
गुण्णविउ सरासणु धरिउ कंच सुट्ठिहि माइउं सुकलत्तु जेव ।
सेयइं चिधइं उप्परि चळति णं कित्तिवेल्लिपल्लव लळति ।
छत्तइं णं जयजसससिपचाइं णं गोमिणिपोमिणिपंकयाइं ।
धरियइं पाइकहिं पंडुराइं विणिवारियदिवसाहिक्कराइं । १०
दीहरदाढावियडाणणेहिं रहरु कड्ढिउ पंचाणणेहिं ।
पक्खरिय सत्ति हिलिहिलिहिलंत कैयसारिसेज्ज गय गुल्लुगुलंत ।
हणु हणु भणंत मच्छरविमीस संणद्ध सुहड पणवियहलीस ।
रणत्तरसहासइं ताडियाइं कुलगिरिवरसिहरइं पाडियाइं ।

घत्ता—पुण्यसे आयो हुई देवियोने प्रत्यंचाके नमनसे युक्क बलवान् धनुष और सज्जनोको सन्तुष्ट करनेवाली अमोघमुखी शक्ति कृष्ण (नारायण त्रिपुष्ट) को प्रदान की ॥९॥

१०

देवोने विरकालसे सुरक्षित तथा मंगल ध्वनिसे निनादित पांचजन्य शंख, कौस्तुभ मणि और तलवार नारायणके लिए निवेदित की। और भी गदा, हाथी, घोड़े और कौमुदी नामका शस्त्र उन दामोदरके लिए दिया। जिसकी किरणोका जाल दसो विशाओमे फैल रहा है ऐसी दो हुई रत्नमाला उनके ऊपर पड़ी हुई है। सोनेके कवचसे अंकित धवल शरीर वह ऐसे मालूम होते हैं, मानो सन्ध्यारागसे नारद भेष शोभित हो। प्रत्यंचासे झुका हुआ धनुष उन्होंने इस प्रकार रखा, मानो जैसे मुट्टीसे सुकलत्रको माप लिया हो। श्वेत तिल्ल उनके ऊपर चलते हैं, मानो कीर्तिरूपी लताके पत्ते शोभित हो। जयशरूपी चन्द्रके स्थानभूत छत्र ऐसे मालूम होते हैं मानो पृथ्वीरूपी लक्ष्मीके कमल हों; सूर्यकी किरणोका निवारण करनेवाले उन सफेद छत्रोको अनुचरोने उठा लिया। लम्बी दाढ़ीसे विकट मुखवाले सिंहेने रथवरोको खींच लिया। कवच पहने हुए सप्ताश्व हिनहिना लठे, पर्याणसे सज्जित गज चिंगाड़ने लगे। मत्सरसे भरे हुए और 'मारो-मारो' कहते हुए तथा जिन्हीने बलभद्रको प्रणाम किया है, ऐसे योद्धा तैयार होने लगे। युद्धके हजारों नगाड़े बजाये जाने लगे तथा कुलगिरियोके शिखर टूटकर गिरने लगे।

६. AP सपुण्णत्त । ७. AP सत्तियमोहसुहि ।

१०. १. A हररह दिण्ण । २. AP चवियणामें । ३. A वहदिहहवघाहियं; P वहदिविवहवाइय । ४. P गुणणमित्त । ५. A P कय सज्ज सारि । ६. P वाडियाइ ।

- १५ घत्ता—गोज्जावलिमुहलि रंजियँभसलि अरि करिँदपसरियकरि ॥
अविर्यगलियमइ हरि मत्तगइ चडिच सीहु णं महिहरि ॥१०॥

११

दुवई—थको धयवडम्मि पक्खुगयपवणुद्धुवियपडिणिवो ॥

चलचंचेलेचुंचुवियचंदकधरो खगाहिवो ॥

- संगद्धु पयाचइ दीहवाहु असितडिहरु णं खयसलिलवाहु ।
 उँच्चारिवि जिणवरणाममंतु संणाहु लइइ मणि जिगिजिगंतु ।
 ५ हुयवहजडि हुयवहफुरणविवु तंहु तणुरुहु सुयबलगाहियगन्वु ।
 पहरणइ लेंतु रणदारुणाइ दिव्वइ वीयव्वं वारुणाइ ।
 संचोइइ कुंजरु गज्जमाणु णच गेणहइ विण्णं देहताणु ।
 "णिच्चिचुंचे रोमंचण कपाविय रिडकपियघण ।
 भड्डु को वि ण खग्गहु वेइ हत्थु परपहरणहरैणि सया समत्थु ।
 १० भड्डु को वि ण लावइ पुसिणु अंगि रावेसइ तणु रिडरुहिरु अंगि ।
 घत्ता—हरिसँ को वि णरु थिरथोरकरु धर्णुहरु जं जं णावइ ॥

पीडिडं कडयडइ मोडिवि पडइ तं तं थावेहुँ णावइ ॥११॥

घत्ता—जो गलेके आभूषणसे मुखर है, जिसपर भ्रमर गूँज रहे है, धनु गजवरपर जिसको सूँड़ प्रसरित है, जिससे अविरत मदजल गिर रहा है; ऐसे मत्त गजपर नारायण त्रिपुष्ट चढ़ गया मानो सिंह पहाड़पर चढ़ गया हो ॥१०॥

११

जिसके पंखोसे उत्पन्न पवनसे शत्रुनृप उड़ चुके है, जिसने अपने चंचल मुखसे सूर्य और चन्द्रमाके विमानोको छू लिया है, ऐसा गरुड ध्वजपटपर स्थित हो गया। दीर्घ बाँहोवाला प्रजापति तैयार होने लगा मानो तलवाररूपी बिजली धारण करनेवाला प्रलय मेघ हो। जिनवरके नामरूपी मन्त्रका मनमें उच्चारण कर जिगजिगाता हुआ (चमकता हुआ) कवच ले लिया। अग्निके स्फुरणके समान तीव्र उबलनजटी, अपने बाहुबलमे गर्व रखनेवाले उसके पुत्र अर्ककीर्तिने युद्धमें दारुण दिव्य वायव्य और वरुण, अस्त्र ले लिये। उसने गरजते हुए हाथीको प्रेरित किया। उसने दिया गया देहनाण (कवच) नहीं पहना। नित्य ऊँचे रहनेवाले रोमांच और कांपते हुए ध्वजसे उसने शत्रुको काँपा दिया। कोई योद्धा तलवारपर हाथ नहीं देता, क्यों वह शत्रुके हथियार छीननेमे सदा समर्थ रहता है। कोई सुभट अपने शरीरपर केशर नहीं लगाता, वह युद्धमें शत्रुके खूनसे अपने शरीरको रंजित करेगा।

घत्ता—कोई मनुष्य हर्षसे धनुषको धारण करनेवाले अपने स्थिर और स्थूल हाथको जिस-जिसपर धनुष क्षुकाता है वह पीड़ित होकर कड़कड़ कर उठता है, टूटकर गिर पड़ता है, वह शक्ति सहन नहीं कर पाता ॥११॥

७. A रंजियभसलि । ८. AP अविरल° ।

११. १. AP चंचेलेचुंचुविय° । २. A चंदकधरो । ३. A उच्चाहवि । ४. AP वायव्वइ ।

५. A णिच्चेचुंचे रोमं ; P णिच्चिचुंचे सररोमं° T णिच्चिचुंचे निरस्तरम् । ६. AP हरणु सया ।

७. AP लावइ । ८. P घणहव । ९. A कडयलइ । १०. P थावहु ।

१२

दुवई—विहसिवि सुहदु भणइ लइ गच्छमि दारियकरिवरिंदहो ॥

काई सरासणेण किं खगो महं रणवणि मईदहो ॥

भडु को वि भणइ जइ जाइ जीठ	तो जाठ थाठ लुडु पहुपयाड ।	
भडु को वि भणइ रिं संतु चंडु	मई अल्लु करेवंच खंडखंडु ।	
भडु को वि भणइ पविलंविचंति	मई हिंदोलेवैचं दंतिदंति ।	५
भडु को वि भणइ हलि देइ णहाणु	सुइदेहें दिज्जइ प्राणदाणु ।	
भडु को वि भणइ किं करहि हासु	णिग्गवि सिरेण रिणु पस्थिवासु ।	
भडु को वि भणइ जइ सुंडु पडइ	तो महं रुंडुं जि रिं हणवि णडइ ।	
भडु पिचहि सरंसु वज्जरइ कामि	हचं रणदिक्खिच सरु मोक्खगामि ।	
भडु को वि भणइ असिषेणुयाहिं	जसदुदुधु लेमि णरसंशुयाहिं ।	१०
भडु को वि भणइ हलि छिणु जइ वि	महं पाठ पडइ रिंसचंहुं तइ वि ।	
भडु को वि सरासणदोसु हरइ	सरपत्तइं उज्जुय करिवि धरइ ।	
भडु को वि वद्धतोपीरजुयलु	णं गरुडसमुद्धुयपक्खपडलु ।	
भडु को वि भणइ कलहंसवाणि	महं तुहुं जि सन्धिख सोहग्गखाणि ।	
वत्ता—परवल अग्निमडिवि रिडसिरु खुडिवि जइ ण देमि रायहु सिरि ॥		१५
तो दुक्खियहरणु जिणतवचरणु चरावि घोरु पइसिवि गिरि ॥१२॥		

१२

कोई सुभट हंसकर कहता है कि लो, मैं जाता हूँ । जिसने करिवरेन्द्रोको विदारित किया है, ऐसे मुझ मृगेन्द्रको युद्धरूपी वनमे धनुष और तलवारसे क्या ? कोई योद्धा कहता है कि यदि जीव जाता है तो जाये, यदि प्रभुका प्रताप स्थिर रहता है । कोई सुभट कहता है, मैं आज आते हुए प्रचण्ड शत्रुको खण्ड-खण्ड कर दूँगा । कोई सुभट कहता है कि जिसमे आंतें लटक रही हैं, ऐसे हाथीके दांतपर मैं झूलूँगा । कोई सुभट कहता है—हे सखी, जल्दी स्नान दो । मैं पवित्र शरीरसे प्राणदान दूँगा ? कोई सुभट कहता है कि तुम हँसी क्यों करती हो, मैं अपने सिरसे राजाके ऋणका शोधन करूँगा । कोई सुभट कहता है कि यदि मेरा सिर गिर जाता है, तो मेरा घड़ ही शत्रुको मारकर नाचेगा । कोई कामी सुभट अपनी प्रियासे यह सरस बात कहता है कि मैं युद्धमें दीक्षित मोक्षगामी सर (स्मर और तीर) हूँ । कोई सुभट कहता है कि मैं लोगोंके द्वारा संस्तुत असि रूपी धेनुका (छुरी) से यशरूपी दूध चूँगा । कोई सुभट कहता है कि हे सखी, यदि मैं छिन्न भी हो जाता हूँ तब भी मेरा पैर शत्रुके सम्मुख पड़ेगा । कोई सुभट अपने धनुषका दोष दूर करता है, और तीरोंके पत्रोको सीधा करके धारण करता है । बांध लिया है तूणीरयुगल जिसने, ऐसा कोई सुभट ऐसा जान पड़ता है, मानो गरुडको दोनों पक्षपटल निकल आये हों । कोई योद्धा कहता है कि हे कलहंसके समान बोलनेवाली और सीभाग्यकी खान, तुम मेरी गवाह हो ।

वत्ता—शत्रुसेनासे भिड़कर, शत्रुशिर काटकर यदि मैं राजाकी लक्ष्मी नहीं देता, तो मैं घोर वनमे प्रवेश कर पापको हरण करनेवाले जिनवरका तपश्चरण करूँगा ॥१२॥

१२ १. P करेव्व । २. P हिंदोलिज्व । ३. A P सुइदेहं । ४. A P पाणदाणु । ५. A P तुंडु ।
६. A सस्सु । ७. A P रिडसमुहं । ८. A P गरुड ।

१३

दुबई—लुहि लोयणाई मुद्धि मा रोवहि हलि भत्तारबच्छले ॥

बंधवि तुह हयारिकरिमोत्तियकंठिय कंठकंदले ॥

- पंडिविट्टुविट्टुणिन्वाहणाहं संगञ्जंतहं बिहिं साहणाहं ।
 बहु कासु वि देइ ण दहियतिलव अहिलसइ वइरिदहारेण तिलव ।
 ५ बहु कासु वि धिवइ ण अक्खयाव खल्लवइ करिमोत्तियअक्खयाव ।
 बहु कासु वि करइ ण धूवधूसु भग्गइ पडिसुहडमसाणधूसु ।
 बहु कासु वि णप्पइ कुसुभमाल इच्छइ ललंति पिसुणंतमाल ।
 बहु कासु वि ण थवइ हत्थि हत्थु तुह लग्गउ गयंघडणारिहत्थु ।
 बहु का वि ण झुणइ सुमंगलाई आवेक्खइ अरिसिरमंगलाई ।
 १० बहु कासु वि णउ दावइ पईसु भो कंत तुहुं जि कुलहरपईसु ।
 बहु कासु वि पारंभइ ण णट्टु संचितइ सत्तुकबंधणट्टु ।
 बहु का वि ण जोयइ किं सिरिइ पिययमु जोएवउ जयसिरिइ ।
 घत्ता—बहु पभणइ भणमि हउं पइं गणमि वो तुहुं महं थण पेल्लहि ॥
 भग्गइ णिययवलि जइ भडतुमुलि खग्गु लेवि रिउ पेल्लहि ॥१३॥

१४

दुबई—वालालुंचि करिवि जुज्जेज्जसु विसरिसवीरगोंदले ॥

अरिकरिदंतसुसलि पव देप्पिणु देज्जसु कुंभमंडले ॥

१३

हे मुरधे, आंखे पॉल लो, रोओ मत । हे पतिप्रिया सखी, मैं मारे गये शत्रुगजके मोतियोंकी कण्ठमाला तुम्हारे गलेमें बाँधूँगा ? इस प्रकार वासुदेव और प्रतिवासुदेवका निवहि करनेवाली तैयार होती हुई सेनाओंमेंसे वधूँ किसीको दहीका तिलक नहीं देती, वह शत्रुके रक्तसे तिलककी इच्छा करती है । वधूँ किसीके ऊपर अक्षत नहीं डालती, वह गजमुकारूपी अक्षतोंकी अभिलाषा करती है, वधूँ किसीके लिए धूपका धुआँ नहीं करती, वह शत्रु सुभटोंके भरघटका धुआँ माँगती है । वधूँ किसीके लिए सुमनमाला अर्पित नहीं करती, वह दुष्टोंकी आँतोंकी झूलती हुई माला चाहती है । कोई वधूँ मंगलाका उच्चारण नहीं करती, वह शत्रुओंके सिररूपी मंगलोंकी अपेक्षा करती है । वधूँ किसीको दीपक नहीं दिखाती (वह कहती है) हे स्वामी, तुम्हरी कुलधरके प्रदीप हो । किसीकी वधूँ नृत्य प्रारम्भ नहीं करती, वह शत्रुके धड़के नृत्यकी चिन्ता करती है । कोई वधूँ देखती तक नहीं है कि श्रीसे क्या ? प्रियतम विजयलक्ष्मीके द्वारा देखा जायेगा ?

घत्ता—वधूँ कहती है कि अपनी सेना नष्ट होनेपर यदि तुम सैनिकोंकी भीड़में तलवार लेकर शत्रुको पीड़ित करते हो, तो मैं कहती हूँ कि मैं तुम्हे मानती हूँ और तुम मेरे स्तनोंकी पीड़ित कर सकते हो ॥१३॥

१४

असामान्य वीरोंके उस युद्धमें तुम खूब भिड़कर युद्ध करना । शत्रुगजके दाँतरूपी मूसलपर

१३. १. P पडिविट्टु । २. AP कंधइ but K खलवइ and gloss अभिलपति । ३. A ललंत । ४. A गयघडि । ५. AP कासु वि ण कुणइ मंगलाई ।

कुंजरघडघल्लियमुहवडाई
 कुंकुमचंदणचक्षियमुयाई
 करलुहियगहियवहुपहरणाई
 कापीणदीणढोइयधणाई
 विलुलंतचित्तणेत्तंचलाई
 चलचरणचारचालियधराई
 ढलहलियधुलियवरविसहराई
 झलझलियवलियसायरजलाई
 पयहयरयलइयणहंतराई
 करिवाहणाई सपेसाहणाई
 औयई अणणणहु संसुहाई

वंसग्गविल्लियधयवडाई ।
 परिहियमणिकंचणकंचुयाई ।
 णियसामिकल्लि णिल्लयमणाई ।
 भडकलयलवहिरियतिहुवणाई ।
 अहिणदियकलसजलुप्पलाई ।
 डोह्लावियगिरिविवरंतराई ।
 भयंतसिररसियधणवणयराई ।
 जलजलियकालकोवाणलाई ।
 अणलक्खियहिमयरदिणयराई ।
 हरिहरिणीवाहिवसाहणाई ।
 असिदाढालई णं जंजंमुहाई ।

५

१०

घत्ता—संचोइयगयई वाहियहयई रणरसहरिसविसट्टई ॥
 दूरुच्छियभयई उच्छियभयई वे वि वलई अल्लिमट्टई ॥१४॥

१५

दुवई—वेणिण वि दुद्धराई दुणिरिक्खई कयणियपहुपणामाई ॥
 कण्णाहरणकरणरणल्लग्गई जयसिरिगहणकामाई ॥

पैर देकर कुम्भमण्डलपर पैर रखना । जिसमे हस्तिघटापर मुखपट डाल दिये गये हैं मानो बांसोंके अग्रभागपर ध्वजपट अवलम्बित हैं, भुजाएँ केशर और चन्दनसे अंचित हैं, जिन्होंने मणियों और सोनेके कंचुक पहन रखे हैं, जिन्होंने साफ किये हुए बहुत-से हथियार हाथमें ले रखे है, अपने स्वामीके कार्यमें जो निश्चितमन हैं, जिनमें कानीनो और दौनोंको धन दिया गया है, जिन्होंने योद्धाओं की कलकल ध्वनिसे त्रिभुजनको बहरा कर दिया है, जिनमें चित और नेत्राचल उपमदित हैं, और कलश जल तथा कमल अमिनन्दित हैं, चंचल चरणोंके संचरणसे धरती चलायमान कर दी गयी है, पहाड़ोंके विवरान्तोंको हिला दिया गया है, जिनमें बड़े-बड़े साँप गिरकर चक्राकार घूम रहे है, भयसे श्रत धनवनचर चिल्ला रहे हैं, समुद्रका जल झलझलाकर मुड रहा है, कालरूपी कोपाग्नि प्रज्वलित हो उठी है, पैरोसे आहुत धूलसे आकाशका भाग आच्छादित है और जिसमे सूर्य और चन्द्रमा दिखाई नही दे रहे हैं, जिनमे प्रसाधनोसे सहित हाथियोंके वाहन हैं, ऐसे नारायण और अश्वप्रीव राजाके सैन्य एक दूसरेके आमने-सामने आ गये जो मानो तलवाररूपी दाढ़ोंसे यममुखों के समान थे ।

घत्ता—गज चला दिये गये, अश्व हाँक दिये गये, उत्साह और हर्षसे विशिष्ट, भयको दूरसे ही मुक ध्वज ऊपर उठाये हुए दोनों सैन्य आपसमें भिड गये ॥१४॥

१५

दौनों ही दुर्घर दुर्दरौनीय और अपने स्वामीको प्रणाम करनेवाले थे, कन्याके अपहरण

१४. १. A °कज्जणिल्लय° । २. AP हल्लहलिय° । ३. AP भयरसियतसिय° । ४. AP °वल्लिय° । ५ P सुपसाहणाई । ६. P आयहं । ७. AP °दाढा ध्व । ८. AP जममुहाई ।

१५. १. AP °रण लग्गं ।

२९

	णरचरणचारचारियगयाइं	हरिखरखुरैवडणुगयरायाइं ।
	अम्भिलिय सुहड गय कायराइं	रवपूरियदिसगयणंतराइं ।
५	वाचल्लभल्लक्षससल्लियाइं	सोणियजलधाराऐरिल्लियाइं ।
	लुल्लियंतकोतैभिण्णोयराइं	करवालखलणखणखणसराइं ।
	चल्लेमुक्कचक्कदारियचराइं	ल्लेड्डीहयचूरियरहधुराइं ।
	णिवडतल्लत्तधयचामराइं	नृवकडयमउडमणिपिजराइं ।
	कयखगविमाणसंधट्टणाइं	किकिणिमालादल्लवट्टणाइं ।
१०	विज्जाहरविज्जावारणाइं	सरपूरियमारियवारणाइं ।
	जंपाणकवाडविहट्टणाइं	मंडलियमाणणिल्लोट्टणाइं ।

धत्ता—दिण्णाळिणणइं कयतणुवणइं दंतंपंतिवट्टोट्टइं ॥

लुंअियकोतल्लेइं विण्णि वि वल्लइं जिह मिहुणइं तिह विट्टइं ॥१५॥

१६

दुवई—तो हरिगीवरायसेणावइ धूमसिहो पधाइओ ॥
सिरिहरिमस्सुवीरसैहिउ हरिसेणं जगे ण माइओ ॥

तेण धाइयं महिणिवाइयं ।

विलुल्लियंतयं पडियइंतयं ।

५

पहरजज्जरं लमाभयजरं ।

करनेके युद्धमे लगे हुए, और विजयश्रीको पानेकी कामनावाले थे। जिसमे मनुष्योंके चरणोंके संचारसे गज चलाये जा रहे हैं, जिसमे घोड़ोंके तीव्र खुरोंके पतनसे धूल उड़ रही है। सुभट आपसमें भिड़ गये, और कायर भाग गये। शब्दसे दिशाएँ और गगनांतर भर गये। जो वावल्ल, भाले और झसेसे पीड़ित है, रक्तरूपी जलधाराओसे सराबोर हैं, जिनमे आँतें कटी हुई हैं, और भालोसे पेट फाड़ दिये गये हैं, लाठियोंके प्रहारोसे रथधुराएँ चकनाचूर कर दी गयी हैं, जिनमे छत्र-ध्वज और चमरोंका पतन हो रहा है, जो राजाओंके कटक और मुकुटमणियोंसे पीले हैं, जो विद्याधर विमानोसे टकरानेवाले हैं, जिनमे किकिणियाँ और मालाएँ चकनाचूर हो रही हैं। विद्याधरोके द्वारा विद्याओंका निवारण किया जा रहा है, तीरोंसे पूरित महागज मारे जा रहे हैं, जंपाणोंके किवाड़ नष्ट कर दिये गये हैं, और माण्डलीक राजाओंका मान नष्ट हो रहा है।

धत्ता—जिन्होने एक दूसरेको आलिंगन दिया है, एक दूसरेके शरीरोंपर धाव किये हैं, जो दाँतोकी पंक्तियोंसे अपने आँठ चबा रहे हैं, बाल नोंच रहे हैं, ऐसे दोनों सैन्य उसी प्रकार लड़ रहे हैं जिस प्रकार मिथुन ॥१५॥

१६

तब राजा अश्वघोषका सेनापति धूमशिल दौड़ा। श्रीहरिश्मश्रु नामक वीरसे सहित वह हर्षके कारण संसारमे नहीं समा सका। उसने आघात किया। धरतीपर गिरा दिया, आँखें छिन्न-

२. P^० खुरखणणु । ३. A^० भल्लसरसल्लियाइं; P^० भल्लरससल्लियाइं । ४. A^० कंतभिण्णो^० । ५. A^० वरमुक्क^० । ६. P^० लउडियहयचूरैरहं । ७. AP^० णव^० । ८. A^० विज्जाकारणइं । ९. AP^० कुतं^० ।
१६. १. A^० ता ह्यगोव; P^० तो ह्यगोव^० । २. A^० धूमसिहोववाइओ । ३. A^० P^० मस्सुवीररससहित ।
४. A^० हरिसं जगे ण माइओ ।

दारिभोयरं	छिण्णगालछिरं ।	
रत्ततंविरे	चम्मलंविरे ।	
विहि विणिदिरे	कलुणकंदिरे ।	
धित्तचामरं	वुट्टपक्खरं ।	
फुट्टमवलं	सुक्ककौतलं ।	१०
विहुरवेभलं	गिग्गयं वलं ।	
वद्धमच्छरं	तोसियच्छरं ।	
कडुयजपिरे	धीरैकंपिरे ।	
हंडणचिचरे	कुंत्तखंचिरे ।	
भडवियारणं	कुंभिवारणं ।	१५
मिडियवारणं	सिरणिखूरणं ।	
सुहलकलयलं	गहियहुलहुलं ।	
चम्ममिदिरे	गत्तछिदिरे ।	
कवयसंजुयं	णियवि संजुयं ।	
सुरपसंसिरे	धुणिर्यगयसिरे ।	२०
भग्गरहंवरं	पडियह्यवरं ।	
खग्गखणखणं	दारुणं रणं ।	
पक्खिसंकुलं	रक्खसाउलं ।	
दंतिदंतयं ^{१३}	^{१४} छिण्णछत्तयं ।	

घटा—माहवचवलवड्ढणा कयरणरद्दणा णिययसेण्णु साहारिउं । २५

कुलु विहिविण्डियउं दिसिविहडियउं पुत्तण व उद्धारिउं ॥१६॥

भिन्न हो गयी । दाँत गिर पड़े (टूट गये) । लोग प्रहारसे जर्जर हो उठे, भयज्वरसे पीड़ित पेट फाड़ दिया गया; गले और सिर काट दिये गये । रक्तसे लाल हो उठे, चर्म लटक गये, विषिकी निन्दा करने लगे, करुण विलाप होने लगा, चमर फेंक दिये गये, कवच टूटने लगे, मुद्ङ्ग फूल गये, केश बिखर गये, कष्टसे विह्वल सैन्य निकल पड़ा । ईर्ष्या करनेवाला, अप्सराओंको सन्तुष्ट करनेवाला, कट्टु बोलनेवाला, चैर्यको कॅपानेवाला, घड़ोको नचानेवाला, भालोको खीचनेवाला, योद्धाओंका विदारक, हाथियोंको विदीर्ण करनेवाला, गजोंसे लड़नेवाला, सिरोंको काटनेवाला, सुभटोंके कलकलसे युक्त, सूत्रोंको हाथोंमें लेनेवाला, चर्मका भेदन करनेवाला, शरीरको छेदनेवाला, कवचसे सहित, देवोंसे प्रशंसित, छिन्न गज सिरवाला, भग्गरथवरोवाला, धिरे हुए अश्ववरो सहित, तलवारोंसे खनखनाता हुआ, पक्षियोंसे संकुल, राक्षसोंसे आकुल, गजदंतोंसे युक्त छिन्नछत्र दारुण रण देखकर ।

घटा—युद्धसे रति करनेवाले माघवके सेनापतिने अपने सैन्यको ढाँढस बंधाया, जैसे भाग्यसे प्रवंचित और दिशाओंमें विभक्त कुटुम्बका पुत्रने उद्धार किया हो ॥१६॥

५. P चम्मलंविरे । ६. P भिग्गयं । A K write in margin the portion beginning with वद्धमच्छर down to छिण्णछत्तयं । ७. P धीरैकंपिरे । ८. P कुतयंचिरे । ९. A धुणिवि गयसिरे । १०. AP^० रहमरं । ११. A भग्गखणखणं; P खग्गखणखणं । १२. P घण । १३. P दंतिदंतयं । १४. A छिण्णछिण्णयं, P adds विहुरविमलं, भग्गयं च (व ?) लं ।

१७

दुवई—भीमपरक्रमेण भीमेण वि पासियभीमवईरिणा ॥

पञ्चारिय भिडंत भड वेणिण वि सुरवहुहिययहारिणो ॥

- हरिमस्स काइं पइं मंतु दिट्ठु किं मगिच परत्तरयणु इट्ठु ।
 हक्कारिच किं गियप्रौणणासु एवहि पइसेसहु सरणु कासु ।
 ५ क्कइ तिचिद्धि भुवणेकसीहि तळितरैलदीहकरवळजीहि ।
 ता धूमसिहं भासिच सरोसु घरदासि हूरंतहुं कवणु दोसु ।
 पहिलळं पहुणा मुत्ती मणेण पच्छइ तुम्हहुं दिण्णी अणेण ।
 सिहिजडिणा सामिचिरोहणेण किं एणं जडसंवोहणेण ।
 दरिसावमि तुह जमरायथत्ति लइ पहर पहर जइ अत्थि सत्ति ।
 १० ता वे चि लग्ग ते सेण्णणाह वेणिण वि सुरकरिकरसरिसवाह ।
 वेणिण वि चालियदिच्चक्कवाल वेणिण वि जयकारियसामिसाल ।
 वेणिण वि आमेल्लियक्कलिसकंड ।
 बाणेहिं बाण पहयलि खलंति तंणिणहसणरुह हुयवह जलंति ।
 पुणु भीमै सुक्कव अद्धयंदु धूमसिहहुं णं अट्टमउ चंदु ।
 १५ रिचवेहमेहिं सो पइसरंतु दिट्ठु सुहिणयणहु तसु करंतु ।
- घत्ता—मारिचि धूमसिह्णु खयकालणिहु खणि हरिमस्सु णिहत्तं ॥
 णवर करंतु कलि भड दंतु वलि असणिघोसु संपत्त ॥१७॥

१७

भीम पराक्रमवाले, तथा भयंकर शत्रुओंको नष्ट करनेवाले, तथा सुरवधुओंके हृदयका अपहरण करनेवाले भीमने लड़ते हुए दोनों सुभटोंको पुकारा, "हे हरिमश्रु, तुमने यह कौन-सा मन्त्र देखा ? तुमने इष्ट परस्त्रीरत्न क्यों मांगा ? अपने प्राणोंके नाथको तुमने क्यों पुकारा ? इस समय तुम, भुवनके एकमात्र सिंह, बिजलीके समान लम्बी करवालरूपी जीभवाले त्रिपुण्डके क्रुद्ध होनेपर किसकी क्षरणमें जाओगे ?" तब धूमशिखने गुस्सेमे आकर कहा, कि गृहदासीके अपहरणमे क्या दोष ? पहले राजाने इसका मनचाहा उपभोग किया । फिर उसने यह तुम्हें प्रदान की । स्वामी विरोधी ज्वलनजटोके द्वारा इस मूर्खतापूर्ण सम्बोधनसे क्या ? मैं तुम्हे यमराजकी स्थिरता दिखाऊंगा, यदि तुममे शक्ति हो तो शीघ्र प्रहार करो," तब दोनों सेनापति आपसमें लड़ गये । वे दोनों ही हाथीकी सूँडके समान बाहुवाले थे, वे दोनों ही दिक्ककरूपी मण्डलकी बलानेवाले थे, दोनों अपने स्वामी श्रेष्ठकी जय बोल रहे थे; दोनोंने ही अपने चापदण्ड उठा लिये थे, दोनों ही वज्रतीर छोड़ रहे थे । आकाशमे तीरोसे तीर स्वलित हो रहे थे, उनके संघर्षणसे उत्पन्न आग जल रही थी, फिर भीमने अपना अर्धेदु तीर फेंका, जो मानो धूमशिखके लिए आठवां चन्द्र हो, शत्रुके शरीरकी भेधाभे. प्रवेश करता हुआ वह, सुधीजनोंके नेत्रोंमें अन्धकार उत्पन्न कर रहा था ।

घत्ता—धूमशिखको मारकर, एक क्षणमे क्षयकालके समान हरिमश्रुको आहत कर दिया । तब केवल अशनिवैग युद्ध करता हुआ और सुभटोंकी दिशा बलि देता हुआ वहाँ पहुँचा ॥१७॥

१७. १. A ° वहरिणो । २. A ° हारिणो । ३. A P हरिमस्सु । ४. A P परत्तिय° । ५. A P णणणाट्टु ।
 ६. A ° तरड° । ७. A ° हणंतहुं । C. A P पहिली पहुणा । ९. A सं णिहिसिचि णर हुववह । १०. A P णिहिचड ।

१८

दुवई—सो जियसत्त णाम धरणीसें जममुहकुहरि ढोइओ ॥
सरविसहरणिरुद्धुं चरपरिमैलु चंदणतरु व जोइओ ॥

तओ कंपणेसो	समुप्पणरोसो ।	
महेणं महंतो	णहंतं पिहंतो ।	
कराइहैचावो	महाभीमभावो ।	५
सदप्पं चवंतो	सरोहं सवंतो ।	
धए णिल्लुणंतो	गइधे हणंतो ।	
हए कप्परंतो	णरे चप्परंतो ।	
जवेणं चरंतो	रैणे वावरंतो ।	
परं णिक्खिवेणं	जएणं णिवेणं ।	१०
खुरुप्पेण भिण्णो	कयंतस्स दिण्णो ।	
जयस्सावलुद्धो	जैमो णं विरुद्धो ।	
रसहारिमहो	पहू खेयरिदो ।	
पियारत्तचित्तो	सरं झ त्ति पत्तो ।	
मरुद्धयचिधो	सत्तोणीरखंधो ।	१५
दिसालग्गकित्ती	तहिं अक्ककित्ती ।	
थिओ अंतराले	भडणं वमाले ।	

धत्ता—तेण ससामियहु गयगामियहु रुसिवि दिण्णउ उत्तर ॥
देव पराइयहि कारणि वृथहिं किं आढत्तउ संगरु ॥१८॥

१८

भूमिके स्वामीने जितशत्रु उसे यमके मुखरूपी कुहरमे डाल दिया। सररूपी विषधरोसे निरुद्ध, श्रेष्ठ परिमलवाला वह चन्दन वृक्षके समान दिखाई दिया। उस समय उत्पन्न हुआ है क्रोध जिसे ऐसा इन्द्रसे भी महात् अकम्पन नामका राजा आकाशको आच्छादित करता हुआ, हाथमे घनुष खीचता हुआ महाभयंकर भाववाला, सदर्प बोलता हुआ, तीरसमूह गिराता हुआ, ध्वजोंको काटता हुआ, हाथियोंको मारता हुआ, अश्वोंको काटता हुआ, मनुष्योंको पराजित करता हुआ, वेगसे चलता हुआ, युद्धमे व्यापार करता हुआ (आया)। परन्तु उसे जय नामक कठोर राजाने खुरपेसे काट डाला और यमको दे दिया। मानो यमका लोभो यम ही विरुद्ध हो उठा हो। भयंकर शत्रुओका मर्दन करनेवाला राजा, प्रियामें अनुरक्त चित्त विद्याधरेन्द्र राजा (अश्वश्रीव) स्वयं शीघ्र पहुँचा। तब जिसका ध्वजचिह्न हवामे उड़ रहा है, जिसके कन्धे तूणीर सहित हैं, जिसको कीर्ति दिशाओंसे जा लगी है, ऐसा अर्ककीर्ति वहाँ योद्धाओंके कोलाहलपूर्ण अन्तरालमे स्थित हो गया।

धत्ता—उसने गजगामी अपने स्वामीको उत्तर दिया कि हे देव, परायीस्त्रीके कारण आपने युद्ध क्यों प्रारम्भ किया ? ॥१८॥

१८. १. A P^o णिरुद्ध । २. A^o परिमल । ३. AP कराइहै । ४. AP सरोसं वहुंतो । ५. A omits this foot. । ६. P जमो णाविरुद्धो । ७. P सत्तोणीरकंधो । ८. AP तियहे ।

१९

दुवई—लज्जिज्जइ रणेण णित्तेएं दुज्जसमल्लिणकारिणा ॥

ओसरु जाहि राय किं एपं पुरिसगुणोहहारिणा ॥

	ता भणित्ठ समरभरधुरमुपण	णीलंजणपहद्वीसुपण ।
	रे अक्ककित्ति गुरुसिक्खवंतु	लज्जहि ण कंवे विप्पिच चवंतु ।
५	तुह ताएं अवरु वि पइं सदप्प	जं आणालंघणु कयचं वप्प ।
	तहु लग्गउ हचं णियपरिहवासु	सस तेरी पुणु मणु हरइ कासु ।
	वा रविकिचित्ति दीवियदियंतं	सुपिसक्क सुक्क धगधगधंगंत ।
	खगणाहहु खंडिच चावदंडु	गुणवंतु तो वि किच खंदेखंडु ।
	अण्णेक्कु सरासणु झत्ति लेवि	राएण तासु बाणें हणेवि ।
१०	चूडामणि पाडिच विप्फुरंतु	णं गहयल्लि णिवडिच रवि तवंतु ।
	मारुथचलंतचलमयरकेउ	तावंतरि थक्कउ कार्मदेउ ।
	बंधंतु ठाण संघंतु बाणु	तेणक्ककित्ति भारिज्जमाणु ।
	रक्खियउ पयावइराणण	धणुवेयविवेयवियाणण ।
	केसरिणा णं तासिउं कुरंगु	किउं पाराउट्टउ तें अणंगु ।
१५	ससिसेहरेण पहु पोयणेसु	मेहें पच्छाइउ णं दिणेसु ।
	अंतरि पइसिदि तिणयणु तिसूलि	सिहिज्जडिणा गिज्जिउ चंदमउलि ।

१९

अपयश और मलिनताके कारणभूत, तेज रहित युद्धसे तुम्हें लज्जित होना चाहिए। हे राजन्, तुम हट जाओ। पुरुषके गुणसमूहका अपहरण करनेवाले इस युद्धसे क्या? तब यह सुनकर, युद्धका भार उठानेमें समर्थभुज नीलांजना और प्रभादेवीके पुत्रने कहा, "हे महाद शिखावाले अर्ककीर्ति, प्रिय बोलनेवाले तुम्हें लज्जा क्यों नहीं आती? हे सुभट, तुम्हारे पिता और तुमने जो धमण्डपूर्वक आज्ञाका उल्लंघन किया है, उससे अपने पराभवसे आहत हुआ हूँ। तुम्हारी बहन फिर किसका मन अपहरण करती है। तब अर्ककीर्तिने दिशाओंको बीपत्ति करनेवाले धकधक करते हुए तीर छोड़े।" उसने विद्याधर राजाके धनुषको खण्डित कर दिया। गुणवाद (डोरी सहित) भी उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। तब राजाने शीघ्र एक और धनुष ले लिया, और तीरसे आहत कर नमकता हुआ चूडामणि इस प्रकार गिरा दिया, मानो आकाशतलमें तपता हुआ सूर्य हो। जिसका हवासे चलता हुआ चंचल मकरध्वज है, ऐसा कामदेव इतनेमें बीचमें आकर स्थित हो गया। लक्ष्य बांधता हुआ, सरसन्धान करता हुआ, उसके द्वारा मारा जाता हुआ अर्ककीर्ति धनुर्वेदके विवेकको जाननेवाले प्रजापति राजाके द्वारा ऐसे बचा लिया गया, मानो सिंहके द्वारा श्रुत हरिण बचा लिया गया हो। उसने कामदेवको पराङ्मुख कर दिया। चन्द्रशेखरने पोदनपुर राजाको उसी प्रकार धेर लिया जिस प्रकार भेषने सूर्यको आच्छादित कर लिया हो। ज्वलजटोने भीतर प्रवेश कर त्रिनयन त्रिशूलधारी चन्द्रशेखरको जीत लिया।

१९. १. AP धुरमुपण । २. A °दियंति । ३. A °वगंति । ४. AP खंडु खंडु । ५. AP बाणें हणेवि ।
 ६. A गहयल्लिणवडिच । ७. A reads a as b and b as a । ८. AP कामएउ । ९. A बंधंतु
 तोणु । १०. P पारिज्जमाणु । ११. AP पासिउ । १२. A विच पारडिउ गउउ अणंगु ।

पत्ता—किंकर^{१३} ह्यगलहु पालियछलहु कोवें कहि वि ण माइव ॥
पामें पीलरहु णं कूरगहु अवर खयर उद्धाइव ॥१९॥

२०

दुवई—पभणइ चावपाणि रे सिहिजडि जं पइं दुक्कयं कंठं ॥
तं ह्यगीवदेवपयपंकयदोहफलं समागयं ॥

हो किं बोझमि	मारमि घल्लमि ।	
एवं चवेप्पिणु	भुय त्रिहुणेप्पिणु ।	
आउहु दावइ	धावइ पावइ ।	५
किंकरि किंकरि	कुंजरि कुंजरि ।	
खरखुरखयधरि	हरिवरि हरिवरि ।	
णयणाणंदणि	संदणि संदणि ।	
चप्पिवि लमगइ	रंवाइ गिगइ ।	
थामें वगगइ	भंडणु म्गगइ ।	१०
पइसइ दूसइ	रुंजइ रुसइ ।	
हिंसइ तासइ	दीसइ णासइ ।	
दुक्कइ हक्कइ	कोक्कइ थक्कइ ।	
रिचं पखारइ	चूरइ जूरइ ।	
खलइ णिवारइ	दारइ मारइ ।	१५
करिकरचंडिहिं	लालोपिंडिहिं ।	
दंतादंतिहिं	कोताकोतिहिं ।	
णरकिलिंविंडिहिं ।		

पत्ता—तब छलका कपट करनेवाले अश्वघ्रीवका (एक और) अनुचर क्रोधसे कहीं नहीं जा सका । नामसे नीलरथ वह मानो क्रूरग्रह हो, एक और विद्याधर दीड़ा ॥१९॥

२०

हाथमे धनुष लिये हुए वह कहता है—“हे ज्वलनजटो, तूने जो पाप किया है, अश्वघ्रीव देवके चरणकमलोके द्रोहका वह फल तेरे पास आ गया है । अरे मैं बोलता क्या हूँ, मैं मारता हूँ, फँकता हूँ, यह कहकर अपने बाहु ठोंककर वह आयुष दिखाता है, दौड़ता है, उछलता है । अनुचर अनुचरपर, गज गजपर, तीव्र खुरोंसे क्षय धारण करनेवाले अश्ववर अश्ववरपर । नेत्रोंके लिए आनन्ददायक स्पन्दन स्पन्दनपर । चाँप कर लगता है, चलता है, निकलता है, स्थैर्यसे क्रुद्ध होता है, युद्ध मार्गता है, प्रवेश करता है, दूषित करता है, गरजता है, रुठता है, हिंसा करता है, अस्त करता है, दिखाई देता है, छिप जाता है, कठिन काम करता है, हकारता है, पुकारता है, ठहरता है, शत्रुको ललकारता है, चूर-चूर करता है, पीड़ित करता है, स्खलित करता है निवारण करता है, विदीर्ण करता है, मारता है, हाथीकी सूँडके समान प्रचण्ड, गजमुखोके अग्रिमकाष्ठों, दाँतों,

१३. A किंकर ।

२०. १. AP दुक्कयं । २. AP मारिवि । ३. A भंजइ । ४. A णायभुवर्द्धहि । ५. A किलिंविदिहि ।

६. AP add after this । दडादंदिहि ।

	केसाकेसिहिं	पासपासिहिं ।
२०	उवलाउवलिहिं	मुसलामुसलिहिं ।
	इय सो जुञ्जिउ	भीमुहउञ्जिउ ।
	दुंदुहिसई	ता बलहई ।
	अरि हक्कारिउ	दइवें प्रेरिउ ।
	सो वि पराइउ	चावविराइउ ।
२५	णं णवजलहरु	विद्धउ हलहरु ।
	तेण उरत्थलि	उट्टियकलयलि ।
	कंपियणियबलि	हरिसियपरवलि ।
	बाहुसहाए	जयवइजाए ।
	सीरे ताडिउ	उट्ट जि फाडिउ ।
३०	णीलरहाहिवि	हइ कइ जयरवि ।

घत्ता—णाणाणहयरहिं संधियसरीहं सहर्यहिं सगयहिं सरहहिं ॥
वेढिउ जिन्वहरु दूसहपसरु वल्लुं चित्तंगयपमुहहिं ॥२०॥

२१

दुवई—मायासोहणाई मयवंतहं माणियपहुपसायहं ॥

एक्कं हलहरेण रणिं जित्तइं सत्तसयाइं रायहं ॥

	सुंयरिवि पहुदिण्णी तुप्पैधार	केण वि विसहिय रिउखग्गधार ।
	सिरु छिण्णउं गिग्गय रत्तधार	गय एंव वप धाराइ धार ।
५	केण वि सुंयरिवि पहुअग्गोविडु	इच्छिउ पडंतु णियमासपिडु ।
	केण वि सुंयरिवि पहुचीरु रम्मु	मण्णउ लंबंतु सदेहचम्मु ।

भालों, मनुष्यकी भुजाओं-भुजाओं (मह किलिंविडिहिं), बालों-बालों, नागपाशों-नागपाशों, उपल-उपलो, मूसल-मूसलोसे, भयरहितमुख वह नीलरय इस प्रकार लड़ा। दुन्दुभि-शब्दसे बलभद्रने शत्रुको ललकारा। देवसे प्रेरित और धनुषसे शोभित वह भी आ गया। उसने हलधरको उरस्थलमें विद्ध कर दिया, जैसे नवजलधर ही। कल-कल होने लगा। अपनी सेना काँप उठी। शत्रुसेना हर्षित हो उठी। तब जिसकी बाहु सहायक हैं, ऐसे जयावतीके पुत्रने हलसे ताड़ित कर उसे आधा फाड़ दिया। इस प्रकार नीलरथाधिपके आहत होनेपर और जय शब्द करनेपर—

घत्ता—अपने सरोंका सन्धान किये हुए अश्वों, गजों और रथोंके साथ चित्रांगद प्रमुख नाना विद्याधारोंने असह्य प्रसारवाले सैन्य और बलभद्रको घेर लिया ॥२०॥

२१

अकेले बलभद्रने मायावी सेनावाले, अहंकारी प्रभुका प्रसाद माननेवाले सात सौ राजाओं को युद्धमे जीत लिया। प्रभुके द्वारा दी गयी घोकी धाराकी याद कर किसीने शत्रुको खड्गधारा-की सहन कर लिया। सिर छिन हो गया। रक्तकी धारा बह निकली। कितने ही बेचारे भट धारा-धारामे ही चले गये। किसीने प्रभुके प्रथम आहारपिण्डको समझकर गिरते हुए अपने ही

७. A भीउहउञ्जिउ । ८. A सयलहिं । ९. A चलचित्तंगय ।

२१. १. P साहणेहिं । २. A सुमरिवि; P सुअरिवि । ३. A रप्पधार । ४. A सुअरिउ; P सुअरिवि ।

५. A.P अग्गपिडु । ६. A सुमरिवि, P सुअरिवि ।

केण वि सुयरिवि पहुदिण्णु गौंळं
 केण वि सुयरिवि पहुचामराइं
 पहुसुक्किभरहु वंकेवि वयणु
 केण वि सुयरिवि पहुल्लत्तछाहि
 केण वि सुमरिवि पत्थिवपसाळ
 केण वि सुयरिवि पहुपालियाइं
 दुव्वारवइरिमगणविहत्तु
 कासु वि रणसंदिरेसौमिणीइ

छंडुं पियजीवियभूयगौंळं ।
 सलहियइं पक्खिपक्खंताराइं ।
 केण वि पड्डिवण्णं वणसयणु ।
 आसंघिय घणसरपुंखछाहि ।
 चक्खिउ अरिवीरपहारसाव ।
 मयगलकुंभयलइं फालियाइं ।
 भल्लारउं धीरउं रायरसु ।
 हियवउं लइयउं सिवकामिणीइ^{१३} ।

घत्ता—कासु वि सिरकमलु ओट्टुउंउंदलु गिद्धु सचंचुइ चालइ ॥ १५
 परितोसियजणहु महिवइरिणहु णं मोल्लवणु णिहालइ ॥२१॥

२२

दुंबई—ता सहस ति पत्तु हरिकंधरु पभणइ तसियवासवो ॥
 भो भो कहसु कहसु कहि अच्छइ सो महु वइरि केसवो ॥
 ता त्तु कण्हेण भो मेइणीराय सोहं रिउ केसवो एहि णिण्णाय ।
 जाणिज्जए अल्ल दोण्हं पि रूसेवि को हणइ सिरु लुणइ रणरंगि पइसेवि ।
 कुट्ठेण सिरिकुमुइणीपुण्णयंवेण अलयाउरीसेण खयरणरिंवेण ।
 संगामराभारइच्छाणिउत्तेण तं सुणिवि पड्डिलविउं सिहिगीवपुत्तेण ।

मांसबिन्दुको इच्छा को । किसीने सुन्दर प्रभु वस्त्रकी चिन्ता कर लटकते हुए अपने ही देहचर्मको बहुत माना । किसीने स्वामीके द्वारा दिये गये गांवकी याद कर अपने जीवन और इन्द्रियोंका गांव छोड़ दिया । किसीने स्वामीके चमरोंकी याद कर पक्षियोंके पक्षान्तरोंकी सराहना की । प्रभुके पुण्यसे भरे हुए मुखको टेढ़ा कर किसीने वाणोंका शयन स्वीकार कर लिया । किसीने स्वामीकी छत्रच्छायाकी याद कर सचन तीरोंकी पुंख-छायाका आश्रय ले लिया । किसीने राजाके प्रसादकी याद कर शत्रुके वीर प्रहारके स्वादको चख लिया । किसीने प्रभुके द्वारा पालित और स्फारित भैगल गजोके कुम्भस्थलोकी याद कर दुर्निवार शत्रुके तीरोसे विभक्त राजामे अनुरक्त धैर्यको अच्छा समझा । किसीके हृदयको रणरूपी मन्दिरको स्वामिनी शिवा(शृगालिनी)रूपी कामिनीने ले लिया ।

घत्ता—किसीके सिररूपी कमल और ओष्ठपुटरूपी दलको भीष अपनी चोंचसे चालित करता है, मानो जनोको परितोषित करनेवाले राजाके ऋणके मूल्यको देख रहा है ॥२१॥

२२

तब सहसा अश्वघ्रीव वहाँ पहुँचता है, और इन्द्रको सतानेवाला वह कहता है कि और बताओ-बताओ, वह-वह मेरा दुश्मन नारायण कहाँ है ? तब नारायणने कहा, 'हे पृथ्वीराज, वह मैं तुम्हारा शत्रु केशव हूँ । हे न्यायहीन, आज यह जाना जायेगा कि हम दोनोंके छठनेपर कौन युद्धरंगमें प्रवेश कर मारता है और सिर काटता है ?' तब लक्ष्मीरूपी कुमुदिनीके पूर्ण चन्द्र अलकापुरीके स्वामी विद्याधरराजा, संग्रामरूपी स्त्रीसे रमणकी इच्छा रखनेवाले मयूरश्रोवके

७. A गाड; P गामु । ८. A उइडिउ । ९. A °गाड; P °गामु । १०. A सुअरिउ; P सुअरिवि ।
 ११. A पालियाइं । १२. A °सामिणीहि । १३. A कामिणीहि । १४. A उट्टुउंउंदलु ।
 २२. १. AP पुण्णइवेण ।

- कण्णोमुहालोयसुहृदिणराएण
रत्तो सि कि मूह गयणैयरबालाहि
णवकंदकालिदिभसलललकालेण
१० जन्मंतरावद्धवइराणुंयंवेण
परदविणपरधरणिपरधरिणिकंखाइ
एवं पजंपंत कंपचियैमहिचट्ट
दप्पिट्टु णिरु रुद्ध दट्टोद्ध भडजेद्ध
ते वे वि मणिमवडकंडलसुसोहिल्ल
१५ ते वे वि णं सीह लंबवियलंगूल
ते वे वि विस्विससम ते वे वि तद्धितरल ते वे वि मरुचवल ते वे वि कुलधवल ।
घत्ता—वेणिण वि दाणणिहि सिरितोसविहि मयपरवस उच्चियभय ॥
वेणिण वि दीहकैरं गंभीरसर रणि लम्भो णं दिग्गय ॥२२॥

२३

दुवई—वेणिण वि अच्चररच्छिचिच्छोहंणियच्छियवद्धमच्चररा ॥
वेणिण वि णं जलंतपलयाणल वेणिण वि णं सणिच्छररा ॥

पुत्र (अश्वघोष) ने कहा कि हे मित्र, जिसमें कन्याके मुखालोकसे शुभ राग दिया गया है, ऐसी अभिनव वरकी बातसे क्या तुम भ्रम हो गये हो ? हे मूर्ख, विद्याधर बालामे तुम क्यों अनुरक्त हुए, तुम हट जाओ, तुम खड्गरूपी आगकी ज्वालामे मत पड़ो । (इसपर) आषण मेघ, यमुना और भ्रमरकुलके समान क्रुण्ण, तथा क्रोधसे अरुण आँखोंवाले, टेढ़े भालवाले, तथा जन्मान्तरके देवे हुए वैरके अनुबन्धसे युक्त और चंचल गरुडध्वजवाले नारायण त्रिपुत्रने प्रतिक्रुण्ण (अश्वघोष)से कहा—“दूसरेके घन-धरती और स्त्रीकी आकांक्षा है जिससे, ऐसी चोरसिखा द्वारा हे पापिण्ड, तू क्यों प्रतारित है ?” यह कहते हुए और महीपूच्छकी कंपाते हुए हाथीके दाँतोसे संवर्षित भुजदण्डोंसे प्रबल दर्पसे भरे हुए अत्यन्त क्रुद्ध, ओठ चबाते हुए योद्धाओमे बड़े वे दोनो प्रति-नारायण अश्वघोषसे भिड़ गये । वे दोनों ही मणिमय मुकुट और कुण्डलोसे शोभित थे, वे दोनों ही धनुषमण्डलसे विलास करनेवाले थे । वे दोनों ही मानो लम्बो पूँछवाले सिंह थे । वे दोनों ही इस प्रकार युद्धमें लग गये मानो गरजते हुए सिंह हों, वे दोनों विपसे विषम और विजलीको तरह तरल थे, वे दोनों ही कुलधवल थे ।

घत्ता—वे दोनों ही दानकी निधि, श्री और सन्तोषके विधाता, मदके वशीभूत और भयसे रहित थे । वे दोनों ही लम्बे हाथवाले गम्भीरस्वर रणमें इस प्रकार भिड़ गये मानो दिग्गज हों ॥२२॥

२३

वे दोनों ही देवांगनाओंके नेत्रोंकी चपलताकी देखनेके लिए ईर्ष्या धारण करनेवाले थे । वे

२. A कण्हो महा । ३. P गयणयलबालाहि । ४. AP ०णुंयंवेण । ५. A पडिलवड । ६. कंभय महिपट्ट । ७. A पविहट्ट । ८. P वदकुत्त । ९. A रुजंतसह्ल । १०. A दीहरकर ।

११. A लग णं ।

२३. १. P ०विच्छोहा णियच्छिय ।

रिचणा ण णिडुविच	कण्हेण पडुविच ।	
जहिं सप्पु तहिं गरुलु	जहिं अग्गि तहिं सल्लु ।	
जहिं सिहरि तहिं कुल्लिं	जहिं तुरच तहिं महिसु ।	५
जहिं विडवि तहिं जल्लु	जहिं मेहु तहिं पवणु ।	
जहिं रत्ति तहिं दियहु	जहिं सीहु तहिं सरहु ।	
जहिं कारुं सोढालु	तहिं कुडिलुं दाढालु ।	
केसरि पवित्थरइ	णहरिं वत्थरइ ।	
जहिं भीमु वेवालु	तहिं मंतु असरालु ।	१०
जुंजेवि कोवेण	गोविद्वेवेण ।	
रिचणो णिहिताळ	विज्जाळ जिताळ ।	
जुब्बेवि भूवेहिं	पडिवक्खरूवेहिं ।	
घत्ता—बहुंरूपिणिए सुरकामिणिए खगवइ भणिए ण सकमि ॥		
हलहरसिरिहरहं पहरणकरहं माणु मंतु चवकमि ॥२३॥		१५

२४

दुवई—अपिचं ह्यचगलेण किं केण वि तिहुयणि धीरु हीरए ॥

महं णियवाहुदंडधिरसहैयर यई किर काई कीरए ॥

तेणेव भणेपिणु मुक्क सत्ति

मेहें चलविज्जु व धगधगंति ।

गयणयलि एंति वरयलि धुंलंति

चल पलयकालजौल व जलंति ।

विप्पुरिय धरिय दामोचरेण

संकेयागय णारि व णरेण ।

५

दोनों ही जलती हुई प्रलयान्न थे । वे दोनों ही मानो शनिस्वर थे । नारायण त्रिपूष्णे जो तीर प्रेषित किया, शत्रु उसे नष्ट नहीं कर सका । जहाँ साँप है, वहाँ विष है, जहाँ आग है, वहाँ जल है, जहाँ पर्वत है, वहाँ वज्र है, जहाँ अश्व है, वहाँ महिष है, जहाँ वृक्ष है, वहाँ आग है, जहाँ मेघ है, वहाँ पवन है, जहाँ रात है, वहाँ दिन है, जहाँ सिंह है, वहाँ श्वापद है, जहाँ मतवाला कृष्णगज है, वहाँ ऋर दाढ़ीवाला सिंह फेलता है और नखीसे सखलता है । जहाँ भीम वेताल है वहाँ विशाल मन्व है । क्रोधसे युक्त गोविन्ददेव (त्रिपूष्ण) ने शत्रुके द्वारा फेंकी गयी विद्याको, प्रतिपक्षरूप (अश्वम्रीवरूप) राजाअसि युद्ध कर जीत लिया ।

घत्ता—देवविद्या बहुरूपिणीने विद्याधर राजासे कहा कि हाथमे अस्त्र लेनेवाले बलभद्र और नारायण (विजय और त्रिपूष्ण) का मैं कुछ नहीं कर सकती, उनका मान मर्दन करते हुए चौकती हूँ ॥२३॥

२४

अश्वम्रीवने कहा, “क्या त्रिभुवनमे किसीके द्वारा घैर्यका अपहरण किया जा सकता है, मेरे बाहुरूपी दण्डको स्थिर सहचरी तुम्हारे द्वारा यह क्या किया जा रहा है ?” उसने यह कहकर शक्ति छोड़ी जो मेघके द्वारा चंचल बिजलीकी तरह धकधक करती हुई, आकाशतलमे आती हुई उरतलपर व्याप्त होती हुई, चंचल प्रलयकालकी ज्वालाकी तरह जलती हुई, विस्फुरित वह,

२. A कुल्लि । ३. A कोलु । ४. AP कुडिल । ५. A मंति । ६. A जुंजेवि; P जं जं वि । ७. P has पुणु before वहुं । ८. AP मलंति चमं ।

२४. १. P सहयरए अवरि काइं । २. AP पडंति । ३. AP जालेव पडंति ।

चंदणचच्चियकुसुमंचियंगु
 उग्गमित्ताणं जैगखइ खयक्कु
 षोक्खियत्त पयावइपुत्तु एम्ब
 गोवालवाल अचिवेयभाव
 १० इय भणिवि तेण चक्खित्त्त रहंगु
 तं देवि पयाहिण पहायतासु
 गहगहियदिवायरलील वहइ
 आयासहु णिवडित्त पुप्फवासु
 संभरु तुहं जिणवरणाहचरणु
 १५ ता भणइ सुहइ रणरंगडुक्कु

परिमलमिलंतगुमुगुभियभिन्गु ।
 पुणु पडिचक्खे करि लेवि चक्कु ।
 एवहिं पइं णत्त रक्खंति देव ।
 दे देहि कण्ण मा मरहि पौव ।
 तं पेक्खिवि केण ण दिण्णु भंगु ।
 चडियत्त दाहिणकरि केसवासु ।
 णं हरिसुहमहिरुहकुसुमु सहइ ।
 रित्त कण्हि पवोल्लित्त सो सहासु ।
 अहवा लंइ महुं पइसरहि सरणु ।
 हत्तं मण्णमि एत्तं कुलालचक्कु ।

घत्ता—पइं पुणु मणि गणितं चंगत्त भणितं भिक्खयागयहु ससंकहु ॥
 तिन्वत्तुहामहणु गरुयत्तं गहणु तिलखलखंडु वि रंकहु ॥२४॥

२५

दुवई—अज्ज वि सिमुमयच्छि महु अप्पिवि करि घणपेणइसंधणं ॥
 मा पावहि कुमार तरुणत्तणि ताडणभरणवंधणं ॥
 असहंतेणं रित्तणा दिण्णं ससवणसूलं दुन्वयणं ।
 कात्तं वयणं डसियाहरयं भूमंगुरत्तं विरणयणं ।

दामोदरके द्वारा उसी प्रकार पकड़ ली गयी, जिस प्रकार संकेतसे आयी हुई स्त्री मनुष्यके द्वारा पकड़ ली जाती है। तब शत्रुने हाथमे चक्र उठा लिया, जो चन्दनसे चंचित और फूलोसे अंचित था, जिसके सौरभसे मिलकर भ्रमर गुनगुना रहे थे, जो ऐसा लगता जैसे विद्वके क्षयके लिए प्रलय सूर्य हो। और उसने प्रजापतिके पुत्रसे कहा—“इस समय देव भी तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकते। हे अविचारशील गोपाल बालक, कन्या दे दे, हे पाप, स्वयं मत मर।” यह कहकर उसने चक्र छोड़ दिया। उसे देखकर किसने खण्डन नहीं दिया (कौन आहत नहीं हुआ), वह चक्र त्रासको आहत करनेवाले केशव (त्रिपृष्ठ) के हाथपर प्रदक्षिणा देकर चढ़ गया। वह राहुसे शस्त सूर्यकी लीलाको धारण करता है, मानो नारायणके सुखरूपी कल्पवृक्षके कुसुमकी तरह बोधित है, आकाशसे पुष्पवर्षा हुई। कृष्ण (त्रिपृष्ठ)ने हँसीपूर्वक शत्रु (अश्वश्रीव) से कहा, तुम या तो जिनवरनाथके चरणोंका स्मरण करो, अथवा लो मेरो शरणमें आओ। तब युद्ध उत्साहसे भरा हुआ वह सुभट कहता है, मैं इसे कुम्हारका चक्र मानता हूँ।

घत्ता—तुमने इसे मणि समझ लिया, ठीक ही कहा है कि भिक्षाके लिए आये हुए सशंक दरिद्र व्यक्तिके लिए भूखका नाश करनेवाला तिलखलका टुकड़ा भी भारी और दुर्लभ होता है ॥२४॥

२५

आज भी तुम शिशुमृगनयनी मुखे सौंपकर प्रगाढ़ स्नेह सन्धि कर लो। हे कुमार, तुम सारुण्य (यौवन) मे ताडन-भरण और बन्धनकी प्राप्त मत करो। इस प्रकार शत्रुके द्वारा दिये गये,

४. A जुगल्लयल्लयंक्कु; P जुगल्लइ लयल्लकु । ५. A जाव । ६. A पहयराहु; P पहययासु । ७. A लहु ।
 २५. १. AP पणयसंधणं ।

हरिणा दित्तं ^१ धित्तं चक्रं सहसाराधाराजलियं	५
हयगलमलकंदलयं दलियं बहलं कीलालं गलियं ।	
कुंडलकिरणं फुरियकवोलं कं कुंभिणिवलयइ पडियं	
णं सरसं तामरसं सदलं कालभरालाहिवखुडियं ।	
कामिणिकारणि कलहसमत्तो परणरकरसरहयगतो	
आसगगीवो वियलियजीवो सत्तमणेरयं तं पत्तो ।	१०
णहयरविसहरमहिमणुएहिं सामि भणेपिणु संगहिओ	
जयजयरवपूरिच भुवणेहिं हरि हलहरसहिओ महिओ ।	
हिडिचि दाहिणमरहत्तिखंडे णरवइ सवसं को ण णिओ	
मागहदेवो वरतणुणामो अवि य पहासो तेण जिओ ।	
दिणयरकित्तिं हुयवहजडिणा हलिणा तस्स पयावइणा	१५
वद्धो पट्टो विवले भाले मंगलविलसियजणरइणा ।	
पउरपयावाकंपियमुवणो असिवरदूसियकूरमई	
णियकुलकुवलयकुवलयवंधू जाओ कणहो चक्रवई ।	
उहसेढीणं रायं काउं जलणजडिं समुरं खयरं	
आओ गुरुयणपणवियसीसो पुणरवि तं पोयणणयरं ।	२०
घत्ता—लइ दीसइ पवरु एउ वि अवरु णिच्छयणियमणित्तत्तं ॥	
इह सुपुरिसचरिउं बहुगुणभरिउं जगि आदत्तु समत्तत्तं ॥२५॥	

अपने कानोके लिए त्रिशूलके समान दुर्वचनोंको सहन नहीं करते हुए, तथा अपना मुख दक्षिणाधरों एवं भौहोसे भंगुर और लाल आँखीवाला कर नारायण दीप्त हजारो आराओंकी धाराओंसे प्रज्वलित चक्र छोड़ दिया। अश्वश्रीवका गला और कपाल कट गया। प्रचुर रक्त वह गया। कुण्डलकी किरणोवाला स्फुरित कपोलवाला उसका मस्तक भूमण्डलपर इस प्रकार गिर पड़ा मानो कालरूपी हंसराजके द्वारा तोड़ा गया सदल सरस रक्तकमल ही। स्त्रीके लिए कलहसे मतवाला, शत्रु मनुष्यके हाथके चक्रसे आहत, नष्टजीव अश्वश्रीव सातवें नरक गया। विद्याधरों, नागो और मनुष्योंने स्वामी कहकर उस (त्रिपृष्ठ) को स्वीकार कर किया। विद्वानोंने जयजय शब्दसे पूरित तथा बलभद्र सहित हरिकी पूजा का। दक्षिण भरतखण्डमे भ्रमण कर उसने किस राजाको अपने वशमे नहीं किया ? वरतनु नामका मागधदेव और प्रभासको भी उसने जीत लिया। दिनकरके समान कीर्तिवाले ज्वलनजटी, बलभद्र और प्रजापति तथा जिसमे मंगलके कारण लोगोंकी रति विलसित है ऐसे अर्ककीर्तिने उसके विशाल भालपर पट्ट बाँध दिया। जिसके प्रचुर प्रतापसे भुवन प्रकम्पित है, जिसके असिवरसे क्रूरमति दूषित कर दिया है, जो अपने कुलरूपी कुमुद और पृथ्वीमण्डलका बन्धु है, ऐसा वह त्रिपृष्ठ चक्रवर्ती हो गया। अपने समुर विद्याधर ज्वलनजटीको विजयार्थकी दोनो श्रेणियोंका राजा बनाकर गुरुजनोंके प्रति अपना सिर झुकानेवाला वह फिर उस पोदननगर पहुँचा।

घत्ता—लो यह दूसरी बात भी महान् दिखलाई देती है कि निदचयरूपसे अपने मनमे कहा गया बहुगुणोसे भरित जगमें आदृत सुपुरुष-चरित समाप्त हो गया ॥२५॥

२. A वित्तं दित्तं वित्तं । ३. P कलह । ४ A णरए तं पत्तो । ५ AP पूरिय । ६ A पवरं ।
७. A कूरमई; P कूरमई । ८. AP णियकुलणहयलं । ९. A राउं काउ । १०. A पणमियं ।

२६

दुवई—मणहरमहलक्खणायारहं गहयेल्लमगकुंमहं ॥

दोचालीसलक्ख मायंगहं अरि करिबरणिसुंमहं ॥

- तेत्तिथ रह रणमरजोत्तिथाउ पायालहु कोडिउ तेत्तिथाउ ।
जलयलमयणंतरजंगमाहं णैवकोडिउ जाइतुरंगमाहं ।
५ जंभारिपीलुलीलागईव महएविउ अट्ट महासईउ ।
णिरु पीणपीवरुण्णचथणीहिं सोलह सहास सीमंतिणीहिं ।
सोलह सहास देसंतराहं सोलह सहास णौडयवराहं ।
सोलह सहास धरि पत्थिवाहं सोलह सहास खेडाहिवाहं ।
तेह णव सहास मेच्छाहिवाहं पण्णास सहस दोगासुदाहं ।
१० चउवीस सहस वरपट्टणाहं सत्तेव सहस संवाहणाहं ।
छत्तीस सहस साहिय पुराहं वसुसमसहास जक्खामराहं ।
पच्चंतणिव्वासहं णिवइ णयैइं पण्णास णिवत्तइं तिण्णि सयइं ।
गिरितरुजलवाहिणिसंगमाहं चउदह वपहुमाइं दुग्गमाहं ।
गामहं कोडिउ अब्बाल जासु किं अब्बमि संपथ वप्प तासु ।
१५ जा णाम सयंपह इट्टणारि जा णहयरणाहहु हुइय मारि ।

धत्ता—वहि परमेसरिहि रइरससरिहि हरिणा हरिसरवण्णा ॥

पहिलउ सिरिचिजउ वीयउ विजउ तणय दोगिण ल्पण्णा ॥२६॥

२६

जो सुन्दर भद्रलक्षण धारण करनेवाले हैं, जिनके कुम्भस्थल आकाशतलसे लगते हैं, और जो अनुगर्जना नाश करनेवाले हैं, ऐसे दो लाख चालीस हजार हाथी उसके पास थे। उतने ही युद्धभारमे जोते हुए रथ थे। पैदल सैनिक भी उतने ही करोड़ थे। जल, थल और आकाशमें चलनेवाले नौ करोड़ घोड़े थे। ऐरावतकी चालकी तरह चलनेवाली आठ महासती देवियाँ थीं। अत्यन्त स्थूल और उन्नत स्तनवाली सोलह हजार स्त्रियाँ थीं। सोलह हजार देशान्तर, सोलह हजार नाटकवर, सोलह हजार गृह पाथिव ? सोलह खेडाधिपति, नौ हजार म्लेच्छ राजा, पचास हजार द्रोणमुख, चौबीस हजार उत्तम पट्टन, सात हजार संवाहन, छत्तीस हजार और यक्ष अमरोंके आठ हजार नगर कहे गये हैं। तीन सौ पचास सीमान्त राजा उसके प्रति नत थे। गिरितरुओं और नदियोंसे युक्त चौदह दुर्गम वन हुए थे। जिसके पास एक करोड़ अड़तालीस गाँव थे, मैं अकिंचन कवि उसका क्या वर्णन करूँ ? जो उसकी स्वयंप्रभा नामकी प्रिय पत्नी थी, वह विद्याधरोंके लिए मारो सिद्ध हुईं।

धत्ता—रतिरूपी रसकी नदी उस परमेश्वरीसे हृवसे सुन्दर हरि (त्रिपुठ) को दो पुत्र उत्पन्न हुए—पहला श्रीविजय और दूसरा विजय ॥२६॥

२६. १. A गहयरमं । २. A णव भणियउ जाइ । ३. P णडणयवराहं । ४. AP तहो । ५. A णिवइ णियइं । ६. A संगमाहं । ७. दुग्गमाहं ।

२७

दुर्घई—ता सिहिजडि सपुत्तु परिपुच्छिवि हरि हलहर पयावई ॥
गठ रहणेउरम्मि दढं जिणगुणसुमरणसमियदुम्मई ॥

सो तर्हि ए पस्थु वसंति जांव	बहुकालहिं णेहरु दुक्कु तांव ।	
सो पुच्छिउ हरिताएण कुसलु	सुँहुं अच्छइ जिणपयपोमभसलु ।	
असहायसहेज्जउ सच्चसंधु	खयराहिउ गुणि महु परमवंधु ।	५
तं सुणिवि तेण खयरेण उत्तु	मेल्लिवि खगणिवचक्केसरत्तु ।	
थिरु धरिवि पंचपरमेद्धिसेव	महिवइ ससुरउ पावइउ देव ।	
पयइ वयणइं आयणियाइं	सज्जणचरियइं मणि मणियाइं ।	
ता एण सहहि संसं णियाइं	इंदियसुहाइं अवगणियाइं ।	
सणएण पयावइपस्थिवेण	आउच्छिय तणुरुह वे वि तेण ।	१०
अणुहुत्तउं इच्छिउं पुत्तसोक्खु	एवंहिं संसाहमि परमसोक्खु ।	
लइं जामि रणुं पावज्ज लेमि	वयसंजमंभारहु खंधु देमि ।	
हरिहलहरमउदणिरुद्धपाउ	पस्थिउ थिउ कंउ वि णाहिं ताउ ।	
णिम्मुक्कमाणमायामएहिं	णरणाहइं सहं सत्तहिं सएहिं ।	
परिसेसिवि मंदिरमोहवासु	वउ लइउं पासि पिहियासवासु ।	१५

२७

तब ज्वलनजटी अपने पुत्र नारायण, बलभद्र और प्रजापतिसे पूछकर, जिनके गुणोंके स्मरणसे जिसकी दुर्मति शान्त हो गयी है, ऐसा वह राजा अपने रथनूपुर नगर चला गया। जब वह वहाँ और ये यहाँ इस प्रकार रह रहे थे तो बहुत समयके बाद एक विद्याधर वहाँ आया। नारायणके पिताने उससे कुशल समाचार पूछा कि जिनवरके चरणकमलोका भ्रमर असहायोंकी सहायता करनेवाला, सत्यप्रतिज्ञ, गुणी विद्याधर राजा मेरा श्रेष्ठ बन्धु सुखसे तो है। यह सुनकर उस विद्याधरने कहा कि विद्याधरराज और चक्रेश्वरत्व छोड़कर पंचपरमेष्ठोकी स्थिर सेवा स्वीकार कर वह ससुर राजा है देव, प्रव्रजित हो गये है। राजाने ये वचन सुने और सज्जनके चरित्रोंको उसने माना। उसने सभामे इसकी प्रशंसा की तथा इन्द्रिय सुखोंकी निन्दा की। उस न्यायशील राजा प्रजापतिने अपने दोनो पुत्रोंसे पूछा कि मैंने इच्छित पुत्रसुखका अनुभव कर लिया है, इस समय अब परम सुखकी साधना करूँगा। लो मैं प्रव्रज्या लेकर बनमे जाता हूँ। तथा व्रत और संयमके भारको मैं अपना कन्धा दूँगा। बलभद्र और नारायणके मुकुटोंसे जिसके पैर अवरुद्ध हैं, ऐसा वह राजा और पिता किसी भी प्रकार रुका नहीं। मान-माया और मदसे रहित सात सौ राजाओंके साथ धरके मोहवासका परित्याग कर उसने पिहिताश्रव मुनिके पास व्रत ग्रहण कर लिया।

घत्ता—थिउ परिहरिचि जणु पैयसेवि वणु णिञ्चमेव णिञ्चलमइ ॥

अट्ट वि णिद्धुणिवि^१ कम्मइं जिणिवि गउं सिवपयहु पयावइ ॥२७॥

२८

दुवई—एतहि णिसियविसमअसिधारातासियणरवरिंदहो ॥

चउरासीदि लम्ब गय वरिसहं तहिं पुरवरि उविंदहो ॥

दीहासीचावपमाणगत्तु

अण्णहिं दिणि भोयसुहें अत्तिट्टु ।

णिद्धम्मचित्तु णिल्लुत्तणाणु

वड्हंतमहंतैरवड्ढाणु ।

५ जिह सुत्तउ तेंव जि कणहलेसु

सुउ कणहु जमहु किर को णै वेसु ।

उप्पणउ तमतमपहि तमोहि

पंचविहदीहदूसहदुहोहि ।

तेत्तीससमुद्दपमाणु आउ

पंचसयसरासणतुंगकाउ ।

जायउ णारउ णारयहं गम्मु

भणु कैवणु ण मारइ भीमकम्मु ।

सईं रुयइ सयंपह कंत कंत

अतुलबल देव ह्यगलकयंत ।

१० उट्टुट्टि णिहालहि सुहिसुहाई

दीहइ णिहइ सुत्तो सि काईं ।

बलएवहु धाहारुणपण

लोय वि रुथंति कारुणणण ।

णिसुणेवि साहुवयणाभयाई

णिञ्जाइवि जिणपयपंकयाईं ।

पियविरहें हुयवह पइसरंति

चारेवि सयंपह अणुमरंति ।

घत्ता—लोगोंका परिस्थाय कर निश्चल और निश्चित मति वनमें प्रवेश कर प्रजापति
आठों ही कर्मोंको नष्ट कर और जीतकर शिवपदको प्राप्त हुआ ॥२७॥

२८

यहाँपर पैनी और विषम असिधारासे जिसने नरवर राजाओंको त्रस्त किया है, ऐसे उस
उपेन्द्र त्रिपुष्के उस नगरमें चौरासी लाख वर्ष बीत गये । उसके शरीरका प्रमाण अस्सी धनुष था ।
एक दिन वह भोगसुखसे अतृप्त हो उठा, धर्मसे रहित चित्त और ज्ञानसे द्रुप्त उसका रौद्रध्यान
निरन्तर बढ़ रहा था । जैसे ही वह सोया वैसे ही कृष्णलेश्यावाला वह कृष्ण (नारायण त्रिपुष्क)
भर गया । यमका दृष्य कौन नहीं होता । वह पाँच प्रकारके दीर्घ दुखोंके समूह अन्धकारसे भरे
तमतमप्रभा नगरमें उलपन्न हुआ । उसकी आयु तैत्तीस सागर प्रमाण थी । पाँच सौ धनुष प्रमाण
ऊँचा उसका शरीर था । नारकियोंके लिए गन्ध वह नारकी हुआ । बताओ भीमकर्म किसको
नहीं मारता । स्वयंप्रभा स्वयं, 'प्रिय-प्रिय' कहकर रोती है कि हे अतुलबल देव, अश्वप्रीव ! उठो-
उठो मुधीजनोके मुखोंको देखो, तुम लम्बी नींदमें क्यों सोये हुए हो ? बलमद्रके दहाड़ मारकर
शैतसे कृष्णके कारण लोग भी रो पड़ते हैं । फिर साधु वचनानुगतको सुनकर जिणवरके चरण-
कमलोंका ध्यान कर प्रिय विरहके कारण आगमें प्रवेश करती हुई तथा अनुशरण (पतिके बाद

१. AP पइसरंति वणु । ६. A णिद्धुविदि ।

२८. १. AP चउरासी वि । २. AP वड्हंतमहंतैरवड्ढाणु । ३. P को ण दोसु । ४. A विहंपंचदीह^०

५. AP केम ण मारइ । ६. A संरुयइ । ७. P पियविरहए ।

सिरिविजयहु बंधिवि रायपट्टु वणु रांयसहासहिं सहुं पयट्टु ।
 गुरु करिवि महारिसि कणयकुमु तव चिण्णउ सीरि रईणिसुमु । १५
 घत्ता—गव मोक्खहु विजव जिणधम्मघउ तेएं भरहु मडारउ ॥
 सोसियमोहरसु भुवणंतजसु पुप्फयंतसरवारउ ॥२८॥

इय महापुराणे विसट्टिमहापुरिसिण्णालंकारे महामव्वभरहाणुमणिण्ण
 महाकहपुप्फयंतविरह्प महाकव्वे विजयविविह्वहयगीवकहंतरे
 णाम दुवण्णसमो परिच्छेओ समत्तो ॥५२॥

मरण) करती हुई स्वयंप्रभाको मनाकर, श्रीविजयको राजपट्ट बांधकर, एक हजार राजाओंके साथ वह वनमें चला गया । रतिका नाश करनेवाले महाऋषि कनककुम्भको अपना गुरु बनाकर बलभद्रने तप ले लिया ।

घत्ता—जिनघर्म दृढ़ तेजसे नक्षत्रोंको ढकनेवाला, आदरणीय मोहरसका शोषण करने-वाला, भुवनकी सीमाओं तक यशवाला, कामदेवके बाणोंका नाश करनेवाला विजय मोक्षके लिए गया ॥२८॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित पंचं महामव्व भरत द्वारा अनुभूत इस महाकाव्यका वाचनवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥५२॥

संधि ५३

पणविचि देवहु णेयंतणिअंजियदिट्ठिहि ॥
वासवपुज्जहु सिरिवासुपुज्जपरमेट्ठिहि ॥ ध्रुवकं ॥

१

५	जो कल्लाणसयालओ हरिणवंदपहुआसणो कणयरकविलणिवारणो दुविहकम्मकयणिज्जरो जो णिण्णासियभैयजरो जैस्स अणंतं वीरियं जो ण महइ दियवइरियं	मायाभावसयालओ । कुणयकुहंगाहुयासणो । अल्लुणवारिणिवारणो । सुहयावयवो णिज्जरो । दाणालो जिणकुंजरो । अवि णै हणइ णियवइरियं । मज्जे जेण ण ईरियं ।
१०	सुत्तं जस्स ण मंसए अरइयरइणिठ्ठाणओ वारहसो तित्थं करो जो जम्मंबुहिपोयओ बुद्धियवत्थुवियप्पयं	पाए जस्स णमंसए । ईसकैऊ णिठ्ठाणओ । पणयार्णं तित्थं करो । वसिकयहरिकरिपोयओ । तं णमिअं परमप्पयं ।
१५	भणिमो तस्स महाकहं	चिण्णं तेण तवं कहं ।

सन्धि ५३

जिनको दृष्टि एकान्तमें नियुक्त नहीं है, और जो इन्द्रके द्वारा पूज्य हैं, ऐसे श्री वासुपूज्य देवको मैं प्रणाम करता हूँ ।

१

जो कल्याण परम्पराओं के शोभन घर है, जिनमें मायाभाव सदाके लिए लय हो गया है, जिनके आसनमें सिंह है, कुणयरूपी वृक्षोंके लिए जो अग्नि हैं, जो कणयर और कपिलका निवारण करनेवाले और श्वेत छत्रको धारण करनेवाले हैं, जिन्होंने दो प्रकारके कर्मोंकी निर्जरा की है, जो सुन्दर शरीरावयववाले और जरासे रहित हैं, जिन्होंने भयरूपी ज्वरका नाश कर दिया है, जो दानके घर और श्रेष्ठ जिन है, जिनके पास अनन्तवीर्य है, फिर भी जो अपने शत्रुका हनन नहीं करते, जो ब्राह्मणोंके वेदोंका सम्मान नहीं करते, जिनका सिद्धान्त न सदिरामें है और न मांसमे, जिसने रतिसुखकी रचना नहीं की है, जो बाण रहित है, ऐसा कामदेव जिनके चरणोमे नमस्कार करता है, जो प्रणतोंके लिए तीर्थ बनानेवाले हैं, जो बारहवें तीर्थकर है, जो जन्मरूपी समुद्रके लिए जहाज हैं, जिन्होंने अश्व-गजादिके समूहको वशमे कर लिया है, जिन्होंने पदार्थोंके भेदको

१. १. भवजरो । २. AP जस्साणंतं । ३. A णिहणइ । ४. AP जसकेओ ।

कुलबलजाईसामयं मोत्तुं जम्मं सामयं ।
काचं देहं खामयं जिह लद्धं मोक्खामयं ।
घत्ता—तिह हृदं भासमि सुणिय सेणिय किं सिरिगावें ॥
जिणगुणचित्तइ चंडालु चि मुच्चइ पावें ॥ १ ॥

२

पुक्खरवरदीवद्धए मणुत्तरगिरिरुद्धए ।
तडवगयसुरदारुणो इंददिसासियमेरुणो ।
पुण्वविदेहे जणरई पीणियखगउलसंतई ।
तत्थे वारिमंथरयाई सीया णाम महाणई ।
पायवसुरहिसभीरए तीए दाहिणतीरए ।
संतोसियणरवरमई वरदेसो वच्छावई ।
घरसिरकयणहसाइयं उच्छवपडहणिणाइयं ।
धुयधयमालाराइयं रयणवरं रयणाइयं ।
तेहिं राओ पच्चमुत्तरो जो सीलेण जगुत्तरो ।
देवी तस्स मयच्छिया णामेणं घणलच्छिया ।
दोण्हं जणियाणंगओ दीहो कालो णिग्गओ ।
तल्लतमालतालीघणे आसीणो पुरडववणे ।
सत्तुमित्तसमचित्तओ अरुहो तित्थपवत्तओ ।

समझ लिया है, ऐसे उन परमात्माको मैं नमस्कार करता हूँ। उनकी महाकथाको मैं कहता हूँ कि किस प्रकार उन्होंने तप स्वीकार किया। किस प्रकार कुल-बल-जाति और लक्ष्मीके मद और व्याधिसहित जन्मको छोड़कर और शरीरको कृश बनाकर मोक्षरूपी अमृत उन्होंने प्राप्त किया।

घत्ता— उस प्रकार मैं कहता हूँ, हे श्रेणिक ! लक्ष्मीके गर्वसे क्या, जिनके गुणोंका चिन्तन करनेसे चाण्डाल भी पापसे मुक्त होता है ॥१॥

२

मानुषोत्तर पर्वतसे अवरुद्ध पुष्करार्ध द्वीप है। जिसके तटपर देवदारु वृक्ष उगे हुए हैं ऐसे पूर्वदिशामें आश्रित पूर्वदिशके पूर्व विदेहमें लोगोंको अच्छी लगनेवाली, पक्षिकुलकी परम्पराको सन्तुष्ट करनेवाली, जलसे मन्द-मन्द बहनेवाली सीता नामकी नदी है। उसके वृक्षोंसे सुरभित पवनवाले, दक्षिण तीरपर नरश्रेष्ठोंकी मत्तिको सन्तुष्ट करनेवाला वत्सकावती देश है। उसमें रत्नपुर नामका नगर है, जो गृहरूपी सिरोंसे आकाशका आस्वाद करनेवाला है, जिसमें उत्सव नगाड़ोंकी शब्द हो रहा है, जो हिलती हुई पताकाओंसे शोभित है और रत्नोंसे विजटित है। उसमें पयोत्तर नामका राजा था जो शीलमें विश्वमें श्रेष्ठ था। मृगके समान नेत्रवाली उसकी धनलक्ष्मी नामकी देवी थी। कामदेवको जाननेवाले उनका बहुत-सा समय बीत गया। तल, तमाल और ताली वृक्षोंसे सघन नगर-उपवनमें विराजमान, शत्रु और मित्रमें समान चित्त रखनेवाले तीर्थ-

२. १ A जणरई । २. A खगउलसंतई । ३. AP तैत्थु । ४. P तहिं मि राउ पच्चमुत्तरो ।

१५	धम्मसल्लिसिंचियधरो मुणिओ वत्थुविमैयओ दाचं परिपालियखमं सह णिवेहिं साहियमणो जाओ राजो मुणिवरो चरइ तवं सो जेरिसं	महिओ तेण जुयंधरो । उप्पण्णड णिवैयओ । घणमित्तस्स कुलक्कमं । समसण्णियतणकंचणो । गिरिगहणे लंविक्करो । को किर वण्णइ तेरिसं ।
----	---	--

२० घत्ता—णिरु णिप्पिहमइ परमेसरु पंधहु लग्गच ॥
जिह देहे रिसि चित्तेण वि तिह सो णग्गच ॥ २ ॥

५	माणसे असक्कयाइं बुच्चिचं सुयंगयाइं ईदिथाइं पीडिऊण अज्जिऊण चारु वित्तु भाविऊण संतणाणु उच्चिऊण ख्याणु पाणु णिग्गओ सरीरयाउ जम्मसायरे पढंतु चंदकंतकंतिमुक्कि १० सोलसण्णवप्पमाउ	३ पंच पंच एक्याइं । सैविचं णियंगयाइं । हुक्कियाइं साडिऊण । तित्थणाहणामु गोत्तु । झाइऊण धम्मझाणु । तेण सुक्कु झ त्ति पाणु । णं रईसरीरयाउ । हुक्खविग्गभमे घडंतु । जायओ महंतमुक्कि । पोमलेसु सुब्भतेउ ।
---	---	--

प्रवर्तक धर्मरूपी जलसे धरतीको सिंचित करनेवाले अरहन्त युगन्धरकी उसने पूजा की। पदार्थके भेदको उसने समझा। उसे निर्वेद उत्पन्न हो गया। जिसमें पृथ्वीका परिपालन किया जाता है, ऐसी कुलपरम्परा (कुलराज्य) अपने पुत्र (धनमित्र) को देकर, राजाओके साथ अपने मनको साधते हुए, तृण और स्वर्णको समान मानते हुए वह राजा मुनिवर हो गया। गहन वनमें अपने हाथ लम्बे कर वह जिस प्रकारके तपका आचरण करता है, उसका वैसा वर्णन कौन कर सकता है ?

घत्ता—अत्यन्त निस्पृह-मति वह परमेश्वर अपने मार्गपर लग गये। जिस प्रकार वह शरीरसे ऋषि (नंगे) थे उसी प्रकार मनसे भी ॥२॥

अचिन्तित पांच प्राणों और इन्द्रियोंको एक किया। श्रुतांगोंको समझा। अपने अंगोंको सन्तप्त किया। इन्द्रियोंको पीड़ित कर, दुष्कृतोंको नष्ट कर, सुन्दर विचित्र तीर्थकर नामका गोत्र अर्जित कर, अपने मनमें ज्ञानकी भावना कर, धर्मध्यानका ध्यान कर, खान-पान छोड़कर उसने शीघ्र प्राणोंका त्याग कर दिया। शरीरसे इस प्रकार निकला मानो रतिरूपी नदीके वेगसे निकला हो। जन्मरूपी सागरमें पड़ता हुआ, दुःखोंके विलासमें होता हुआ, चन्द्रकान्तकी कान्तिके समान सफेद महाशुक्ल विमानमें उत्पन्न हुआ। सोलह सागर प्रमाण आयुवाले उसकी पञ्चलेश्या थी, और वह

५. A देहेण ।

३. १ A ताविओ ।

हारदोरसोहमाणु अट्टअट्टहत्थमाणु ।
 अट्टअट्टपक्खेसासु पुण्णचंदसंगिहासु ।
 चोत्थभूयलंतलक्खु सद्दजायकामसोक्खु ।
 घत्ता—सोलहसहसहं गय वरिसहं एकसु भुंजइ ॥
 जो सो सुरवरु बुह्हियवळं कि णठ रंजइ ॥ ३ ॥

१५

४

लेसमासजीवियम्मि दिव्वपुंगमे थियम्मि ।
 जक्खणाहु भासुरेण वोल्लिओ सुरेसरेण ।
 जंबुंदीवि भाणुभासि भारहम्मि अंगदेसि ।
 दोक्खलक्खलोट्टणम्मि चंपणामपट्टणम्मि ।
 अत्थि दव्वपुज्जरात्त सत्तुसीसदिण्णपात्त ।
 तस्स पत्ति कामवित्ति वल्लहा जयावइ त्ति ।
 ताहं होईदिदियारि अंगओ अहम्महारि ।
 जाहि देवै सोक्खजुत्ति ता धणाहिवेण झ त्ति ।
 णिम्मियं पुरं वरेहिं मोत्तिएहिं कच्चुरेहिं ।
 कंजछण्णवावियाहिं दीहियाहिं खाइयाहिं ।
 फुल्लेगुंछवच्छएहिं कूवएहिं कच्छएहिं ।
 तीरिणीतलायएहिं चित्तदारभायएहिं ।
 हट्टिट्टचच्चरेहिं गामगोहडुच्चरेहिं ।

५

१०

शुभ्र तेजवाला था । हार-दोरसे शोभित चार हाथ प्रमाण शरीर, आठ-आठ पक्षमें स्वास लेनेवाला और पूर्णचन्द्रके समान मुखवाला । चौथी नरकभूमिके अन्त तक देखनेवाला (अवधिज्ञानसे); उसे शब्दमात्रसे कामसुख मिल जाता था ।

घत्ता—जो, जब सोलह हजार वर्ष निकल जाते तो एक बार भोजन करता, वह देववर पण्डितोके हृदयका रंजन क्यों नहीं करता ? ॥३॥

४

जब दिव्यशरीरमे स्थित उसका छह माह जीवन शेष रह गया, तो भास्वर देवेन्द्रनाथने यक्ष-नाथसे कहा कि 'सूर्यसे प्रकाशित जम्बूद्वीपके भारतमे अंगदेशके लाखों दुःखोंको नष्ट करनेवाले कम्पा नामक नगरमें शत्रुओंके सिरपर पैर रखनेवाला वसुपूज्य नामका राजा है, उसको पत्नी (प्रिया) जयावती कामवृत्ति है । उन दोनोंके इन्द्रियोंका शत्रु और अघर्मका हरण करनेवाला पुत्र होगा । इसलिए सुखयुक्तिवाले हे देव, तुम जाओ ।' तब कुबेरने शीघ्र जाकर श्रेष्ठ चित्र-विचित्र मोतियोंसे नगरकी रचना की । कमलोसे आच्छादित वापियों, लम्बी-लम्बी खाइयों, फूलोंके गुच्छेवाले वृक्षों, कूपों, कच्छों (कछारों), नदियों, तालावों, चित्रित द्वारभागो, बाजारों, झूतगुहों, चौराहों, ग्राम्य-

२. P^० पक्खमासु ।

४. १. जंबुद्वीवभाणुभासि । २. A होहि इदियारि; P होहिदिदियारि । ३. A देहि सोक्ख^० । ४. AP फुल्लगोच्छं ।

- १५ दीहरत्थमन्गाएहि वीममंगलग्गाएहि ।
धूवगंधसुंदरेहि सत्तभूमिभंदिरेहि ।
घत्ता—एहउ सोहइ जं पुरु तहि घरि सुहुं सुत्तइ ॥
सिचिणयसंतइ पविलोइय पंकयणेत्तइ ॥ ४ ॥

- ५ हत्थि दाणवारिवाहेरत्तमत्तल्लप्पओ गोवई विसाणघायभमासालिवप्पओ ।
केसरी मयंधगंधकुंभिकुंभदारणो णक्खल्लोण्हियामिलंतमोत्तिर्यसुवारणो ।
हंसकामिणीहिं सेवियारविद्ववासिरी पुंडरीयवामणेहिं सिचिया महासिरी ।
पारियायपोमपौभळ परायसंसुयं मत्तभिगसंगयं लळंतमालिथाजुयं ।
५ णासियंधयारओ बरो विहावरीवई कंजबंधवो सरम्मि दिण्णपोमिणीरई ।
पैमंभंभला चला णिरंतंरं वियारिणो क्रीलमाणया महासरंतरे विसारिणो ।
वैरिवारपूरियं सरोरुहेहिं अंचियं कुंभजुम्मयं पबित्तचंदणेण चच्चियं ।
पंकयायरो चळंतल्लच्छणेउरारवो णीरघुन्मिरो तरंगभंगुरो महण्णवो ।
सीहंभंडियासणं रणंतकिंकिणीसरं इंदसंदिंरं वरं महाफणीसिणो घरं ।
१० पुंजओ मणीण दित्तिरंजियावणीयलो धूमचत्तओ पलित्तओ सिहाचलोणलो ।

प्रमुखोंके लिए चलनेमें कठिन लम्बी गलियों और मार्गों और आकाशमार्गसे लगे हुए घूप-गन्धसे सुन्दर सातभूमिवाले घरोंसे—

घत्ता—वह नगर शोभित था। वहाँ घरमें सुखसे सोती हुई कमलनयनी जयावती स्वप्न-माला देखती है। ॥४॥

मदजलके प्रवाहमें अनुरक्त मत्त भ्रमर जिसपर है, ऐसा हाथी जिसने सीगोंके आघातसे क्षेत्रखण्डको खोद डाला है, ऐसा गोपति (बैल); मदान्ध गन्ध गजके कुम्भस्थलका विदारण करनेवाला तथा नखोंकी ज्योतिसे मिलती हुई मोतियोंकी किरणोंका निवारण करनेवाला सिंह, हंसिनियोंके द्वारा सेवित, कमलोंमें निवास करनेवाली, पुण्डरीक और वामन दिग्गजोंके द्वारा अभिषिक्त महालक्ष्मी; पारिजात और कमलोंसे मिश्रित, परागकी भूमि, मतवाले भ्रमरोंसे युक्त विलसित पुष्पमाला युग्म; जिसने अन्धकारका नाश किया है ऐसा श्रेष्ठ चन्द्रमा, सरोवरमें जिसने कमलिनियोंको कान्ति दी है ऐसा कमलबन्धु (सूर्य); प्रेमसे विह्वल, चंचल निरन्तर विचरण करनेवाली क्रीडा करती हुई महासरोवरमें मल्लियाँ, जलसमूहसे पूरित, कमलोंसे अंचित, पवित्र चन्दनसे चंचित कुम्भयुगल; जिसमें चलती हुई लक्ष्मीके तूपुरोंका शब्द हो रहा है ऐसा सरोवर तरंगोंसे भंगुर और जलसे आलोकित समुद्र; सिहोंसे अलंकृत आसन (सिंहासन); जिसमें किंकिणियोंका स्वर है ऐसा इन्द्रविमान और महानागका श्रेष्ठ घर। जिसने अपनी दीप्तिसे अवनतलकों रंजित किया है ऐसा मणियोंका समूह; धूमसे रहित, शिखाओंसे चंचल प्रदीप्त आग।

५. AP वीममंगलग्गाएहि । ६. A सुहि सुत्तइ ।
५. १. A रंतमत्त । २. A हिमाहिवो णिसावई । ३. A पिमविचला । ४. AP तारवारिपूरियं ।
५. A सीहवीडियं रणंत ।

घत्ता—सिचिणय जोइवि देविइ गियणाहहु भासिं ॥
तेण वि तर्फळु णिच्चफळु तहि उवएसिं ॥ ५ ॥

६

पाणचक्खुणा जो गिरिक्खए	जो जयं असेसं पि रक्खए ।
पोसए पिए दुव्वसामिए	सुंदरी हले मञ्जखासिए ।
सो तुमम्मि होही जिणेसरो	भव्वजीवराईवणेसरो ।
सक्कपेसिया देविया सिरी	कंति कित्ति बुद्धी सई हिरी ।
आगया घरं देहसोहणं	ताहिं तम्मि तिस्सा कयं घणं ।
तिण्णि तिण्णि मासे घणी वसो	बुद्धओ सुवण्णंभपाउसो ।
मेहुजाललीलापयासए	पावणम्मि आसाढमासए ।
छट्टए दिणे कण्हंपक्खए	तित्थणाहसंखम्मि रक्खए ।
चरणकमलजुयणवियपण्णओ	गन्धकंजकोसे णिसण्णओ ।
पुणु पयत्थसममासमेरओ	णिच्च सवइ कणयं कुवेरओ ।

५

१०

घत्ता—चउसंखाहिइ जलणिहिपण्णासइ ढलियइ ॥

पल्लहु विज्झइ भायम्मि धम्मि परिगलियइ ॥ ६ ॥

७

गइ सेयंसइ	सिचसरहंसइ ।
मासइ फग्गुणि	पक्खइ तमघणि ।
कंपियतिहुवणि	चउदहमि दिणि ।

घत्ता—स्वप्नोको देखकर देवीने अपने स्वामीसे कहा और उसने भी उसे उसका नित्यफल-वाला-फल बताया ॥५॥

६

जो ज्ञानरूपी आँखसे देखते हैं, जो अशेष जगकी रक्षा करते हैं, हे द्वंबकी तरह श्यामांगी, कृशोदरी सुन्दरी, पोषण देनेवाली प्रिये, ऐसे वह भव्य जीवरूपी कमलके सूर्य जिनेश्वर तुमसे उत्पन्न होगे । इन्द्रके द्वारा प्रेषित देवियाँ श्री, कान्ति, कीर्ति, बुद्धि, सती और ह्रीं घर आयी, और उन्होंने उसका उसी समय खूब देह बोधन किया । मेघजालकी लीलाको प्रकाशित करनेवाले, पवित्र आपाढ़ माहके कृष्णपक्षके छठीके दिन, चौबीसवें शतभिषा नक्षत्रमें जिनके चरणकमल युगलको नाग प्रणाम करता है, ऐसे वह गन्धरूपी कमलकोशमे स्थित हो गये । फिरसे कुबेरने नौ माहकी अवधि तक नित्य धनकी वर्षा की ।

घत्ता—यौवन सागर समय बीतनेपर, अन्तिम पत्यके तीसरे सागरमे धर्मका उच्छेद होने पर—॥६॥

७

शिवरूपी सरोवरके हंस श्रेयांसके चले जानेपर, फागुन माहके कृष्णपक्षमे, जिसमे त्रिभुवन

६. A त फळु णिच्चफळु ।

६. १. A सुवण्णंभुपाउसो । २. A कण्हंपक्खए ।

७. १. P सिचभर ।

	दुरियविओयइ	वारुणजोयइ ।
५	उप्पणो इणु	वारहसो जिणु ।
	हरिसोस्त्रियसणु	पत्तो सुरयणु ।
	चंपापुरेवरं	णविळणं चैरं ।
	णिज्जियसयदलि	जणणीकरयलि ।
	बुद्धिणिमुंभयं	मायाहिंभयं ।
१०	गहिळणं पहुं	रइभिसिणीविहुं ।
	सक्केणं तड	कुं भंणिणं गड ।
	लगणमेरुणो	सिहरं मेदणो ।
	नंतुं गयंमलि	पंडुसिळाचलि ।

घत्ता—णाहु थवेप्पिणु जियतारहारणीहारहिं ॥

१५ णहविड सुरिंदहिं षडवियलियचंदिंदधारहिं ॥ ७ ॥

८

पुज्जिवि चंदिवि तिजगगुरुणिवराणियहि	खेयर विसहर सुरेरमणिसंमाणियहि ।
तणयालोचणतुट्टियहि तुच्छोयरिहि	आणिवि देइ समप्पियड करि भावरिहि ।
इंदे रंदाणंदवसु तिह णच्चियडं	जिह महिचळणं फणिललु विंभियळ्ळं चियडं ।
पणविचि परमं परमपरं णैहि चलियधओ	सहुं परिवारंे सगवई सुरलोड गओ ।
५ अण्णहु पासि ण सत्थविही कत्थइ सुणइ	सववड कळड सलक्खणड अप्पणु सुणइ ।

कम्पित है, ऐसे चतुर्दशके दिन, पापसे विमुक्त चारणयोगमें बारहवें जिनवर (सूर्य) उत्पन्न हुए । वर्षसे उल्लसित मन देवसमूह वहाँ पहुँचा, और चम्पापुर वर तथा धरको प्रणाम कर कमलकुलको जीतनेवाले जननीके करतलमें, बुद्धिको भ्रममें डालनेवाले मायावी बालकको रखकर, रतिलपी कमलिनीके लिए सूर्य प्रभुको लेकर, इन्द्र 'कुं' कहकर गजको प्रेरित कर आकाशको छूनेवाले सुमेरु पर्वतके शिखरपर जानेके लिए चला । मलरहित पाण्डुक शिलातलपर—

घत्ता—स्वामीको स्थापित कर, स्वच्छ हार और नीहारोंको जीतनेवाली घड़ोंसे गिरती हुई चाँदनीके समान धाराओंसे सुरेन्द्रने उनका अभिषेक किया ॥७॥

८

उनकी पूजा और वन्दना कर; त्रिजगके श्रेष्ठ राजाकी रानी, विद्याधर, विषधर और देवस्त्रियोंके द्वारा सम्माननीय पुत्रको देलकर सन्तुष्ट होनेवाली कुशोदरी माताके हाथमें लाकर देवको दे दिया । इन्द्रने विशाल आनन्दके वशीभूत होकर इस प्रकार नृत्य किया, कि जिससे धरती कांपनेके कारण नागकुल विस्मयसे संकुचित हो गया । परमश्रेष्ठ जिनको प्रणाम कर, चंचलध्वज स्वर्गपति (इन्द्र) अपने परिवारके साथ इन्द्रलोक चला गया । वह किसो दूतके पास कही भी

२. A पुरवरे । ३. A वरे । ४. A तं भणियो; P कुं भणियो । ५. A गयणते । ६. A has ता before णहु ।

८. १. A सुररमणो; सुरवररमणो । २. A छडओयरिहि; P तुच्छओयरिहि । ३. AP विवयं । ४. A णहचलिय ।

वरिसि विसुद्धवृद्धिसहिइ ह्यदुद्रुमइ
काले वैडहंतहु गुणेहिं जाणियमणुहि
कुंअरत्ते परमेसरहो कोलाणिरय

सावयसीलि परिट्टियउ गम्भट्टमइ ।
जायइ माणु सरासणइं सत्तरि तणुहि ।
अट्टारह संवच्छरहं तहु लक्ख गर्यं ।

घत्ता—णवघुसिणञ्जवि करणुन्धियणाणपहायरु ॥

णिव कुलमहिहरे उग्गंठ णं वालदिवायरु ॥ ८ ॥

१०

९

एक्कहिं दिणि णिव्वेयउ भासइ तउ करमि
लोचंत्तियसुरवंदहिं लहु संबोहियउ
फुल्लियफलियमहीरुहरंजियसउयणहु
कयचउत्थु मञ्जत्थु महत्थु महंतमइ
फेणुणि कसणि चउत्तिसिदिणि विरएं लइउ
तेण समउ संसारहु णिव्विण्णइं वरइं
तिक्खु चरित्तु चरते पाउ गलत्थियउं
कामहु पंच वि चंडइं कंडइं खंडियइं

जेण पुणु वि संसारि असारि णं संसरमि ।
माणवदाणवदेवहिं ण्विचि पसाहियउ ।
सिवियाजाणारूढउ गउ मणहरवणहु ।
मणपल्लवपरियाणियमाणुसमणविगइ ।
संयभिसहइ सायणहइ सो सइं पावइउ । ५
सयइं णिवहं पावइयइं छहछाहंत्तरइं ।
मोहसमुहु रउहु सुहुंम्महु मंथियउ ।
इंदियदुट्टेकुडुवइं मुणिणा दंडियइं ।

शास्त्रविधि नहीं सुनते, लक्षण सहित समस्त कलाओंका स्वयं विचार करते हैं। गर्भसे आठवें वर्षमें विद्युद्ध शुद्ध बुद्धिसे सहित, दुष्ट बुद्धिका नाश करनेवाले वह श्रावकधर्ममें दीक्षित हुए। समयके साथ गुणोंसे बढ़ते हुए, मनःपर्ययज्ञानको जाननेवाला उनका शरीर सत्तर धनुषके मानका हो गया। उन परमेश्वरके कौमार्यमें क्रौडामे रत अठारह लाख वर्ष बीत गये।

घत्ता—नवकेशरके समान छविवाले, तथा इन्द्रियोंसे रहित ज्ञानरूपी सूर्यवाले वह, हे राजन् (श्रेणिक), कुलरूपी पवंतपर मानो बाल दिवाकरके रूपमे उत्पन्न हुए ॥८॥

९

एक दिन विरक्त होकर वह कहते हैं कि मैं तप करूँगा जिससे मैं इस असार संसारमें संसरण न करूँ। लौकान्तिक देवोंने तत्काल सम्बोधित किया और मानवों तथा दानव देवोंने अभिषेक कर उनका प्रसाधन किया। शिविकायानपर आरूढ होकर जहाँ पृथित और फलित वृक्षोपर गंजन करते हुए भ्रमर हैं, ऐसे मनोहर उद्यानमें वह गये। जिन्होंने मनःपर्ययज्ञानसे मनुष्य और भ्रमणकी चेष्टाओंको जान लिया है, ऐसे महार्थ मध्यस्थ और महामति, एक उपवास कर फागुन माहके कृष्णा चतुर्दशीके दिन, विरक्तसे परिपूर्ण, उन्होंने सार्यकाल शतभिषा नक्षत्रमें प्रव्रज्या ले ली। उनके साथ संसारसे विरक्त छह सौ छिहत्तर राजाओंने दीक्षा ग्रहण कर ली। तीव्र तपका आचरण करते हुए उन्होंने पापको नष्ट कर दिया, और अत्यन्त दुर्मंद भयंकर मोह-समुद्रका मत्थन कर डाला। कामके पाँचों प्रचण्ड तीरोंको उन्होंने नष्ट कर दिया। मुनिने दुष्ट

५. A वट्टे । ६. A कुमरत्ते, P कुवरत्ते । ७. AP णिरया । ८. AP गया । ९. A णं उगग ।

१०. १. A ण पइसरमि । २. A सिवियाजाणइ रुडउ । ३. P माणविगइ । ४. A फागुणकत्तणचउत्तिसिदिणं ।

५. AP सविवाहइ । ६. A चरइ । ७. A छाहंत्तर । ८. A सुसंमहु । ९. P कुहुंम्मइ ।

- चंगलं सुतु धरेप्पिणु मणपुरवरु थविचं दिहिपायाहे^१ रएप्पिणु रिचबलु^२ विहविचं ।
 १० विसयकसायहं चोरहं कुहिणिल दूसियल रयणत्तयभाभारं लोच पयासियल ।
 घत्ता—बीयइ वासरि पइसरिचि महाणयंरंतरि ॥
 भिक्खहि कारणि परिभमइ जईसरु धरि धरि ॥ ९ ॥

१०

- आवंतु भडारउ भावियउ सुंदरराएं पारावियउ ।
 तहु मंदिरि सहसा वित्थरिउं पंचविहु वियंथिउं अळरिउं ।
 थिउ एळु चरिसु रिसि तिन्वतवि णिल्लरियभवसंभंविभवि ।
 णिद्धाडियमाडियमोहरइ ससहरि विसाहणक्खत्तगइ ।
 ५ माहन्मि सुद्धबीयहि बल्लिउ घणघाइचउक्कु विणिइल्लिउ ।
 उववासिएण वासरि गमिइ दिणयरि वोरुणदिसि संकमिइ ।
 पुन्विळ्ळइ वणि चवचूयचलि उप्पायउ णाणु कयंवतलि ।
 णियगोमिणिगारव संखरव घंठारव हरिरव पडहरव ।
 महिविवर गयण वण सग्ग धर णहि धाइय आइय बहु अमर ।
 १० विज्जाहर आइय कुमुमकर भूगोयर कपाविय सधर ।

घत्ता—तं परमप्पउं ललियक्खरलद्धविसेसहिं ॥

बंदइ सुरवइ णाणाविहयोत्तसहासहिं ॥१०॥

इन्द्रियरूपी कुटुम्बकी दण्डित किया तथा अच्छी तरह सोते हुए मनरूपी पुरवरको पकड़कर स्थापित किया । धैर्यरूपी प्राकारकी रचना कर शत्रुबलको खण्डित किया । विषयकषायरूपी चोरोकी गल्लोको दूषित कर दिया, रत्नत्रयकी प्रभाके भारसे लोकको प्रकाशित कर दिया ।

घत्ता—दूसरे दिन महानगरके भीतर प्रवेश कर वह यतीश्वर आहारके लिए घर-घर परिभ्रमण करते हैं ॥९॥

१०

सुन्दर राजाने आते हुए आदरणीयकी पूजा की और पारणा करायी । उसके प्रासादमें शीघ्र ही पांच प्रकारके विस्तृत आश्चर्य उत्पन्न हुए । वह महामुनि एक वर्ष तक जिसमें संसारमें जन्म लेनेकी सम्पत्ति नष्ट हो गयी है, ऐसे तीव्रतपमें स्थित रहे । जिन्होंने मोहरज उखाड़कर नष्ट कर दिया है ऐसे, वह माघ माहके शुक्लपक्षके द्वितीयाके दिन विशाखा नक्षत्रमें चार घन घातिया कर्मोंका नाश कर देते हैं । उपवाससे दित वितानेपर और सूर्यके पश्चिम दिशामें ढलनेपर, धव और आम्रवृक्षोसे चंचल पूर्वोक्त उद्यानमें कदम्ब वृक्षके नीचे ज्ञान उत्पन्न हो गया । अपती लक्ष्मीके गौरवसे युक्त शंखशब्द, घण्टाशब्द, हरिशब्द और पठह शब्द, धरतीके विवरों, गगन, ज्वन, स्वर्ग और धरतीमें फैल गये । बहुतसे देव आकाशमें दौड़े और वहाँ आये । हाथमें कुसुम लेकर विद्याघर आये । पृथ्वी सहित भूगोचर काँप उठे ।

घत्ता—सुन्दर अक्षरोसे जिन्होंने विशेषता प्राप्त की है, ऐसे नानाविध स्तोत्रोंसे इन्द्र जग परमात्माकी वन्दना करता है ॥१०॥

१०. P पावार । ११. रिचबलु ।

१०. १. A परावियउ । २. P विहवि । ३. A वासवदिसि । ४. P चवचूयचलि । ५. P कलंबयलि ।

६. AP आइय धाइय । ७. AP विज्जाहर वियसियकुमुमकर । ८. A लद्धहिं सेसहिं ।

११

जीह समीहइ भोयणं	दिट्टि वि महिलालोयणं ।	
कण्णहि इच्छिड गेयरसु	णासु गुणाहियगंधवसु ।	
फासु वि मउसयणइं महइ	करणइं पंच जीउ बहइ ।	
ताइं मणेण जि पट्टवइ	विसयहं उवरि परिट्टवइ ।	
पसरियविविहसुहालसउ	मोहमइरमयपरवसउ ।	५
कुप्पइ तप्पइ णीससइ	णडइ रडइ गायइ हसइ ।	
णाणाजम्महिं आइयउ	पेम्मपिसाएं लाइयउ ।	
कुलवलविहवगव्वगहिउ	गुरुयणकहियसीलरहिउ ।	
उम्मग्गेण जि संचरइ	पइं ण भड्डारा संभरइ ।	
तुहं तिहुयणअन्मुद्धरणु	तुहं जि देव विउसहं सरणु ।	१०
तुहं जिण गुणमाणिक्कणिहि	तुहं घोरपावकंतारसिहि ।	
तुहं जणमणवेर्यौलहर	अच्चुयसुहहलतियसतर ।	
जो पइं पणवइ सुद्धमई	सो पावइं णिठवाणगई ।	

घत्ता—वाईसरिवइ रिदुसद्धिसमं जसु गणहर ।।

वारहसयमिय पुठ्वंगधारि तह मुणिवर ॥११॥

१५

११

“जीभ भोजनकी इच्छा करती है, दृष्टि स्त्रीको देखना चाहती है, कानोंके द्वारा गीत-रस चाहा जाता है, नाक गुणोंसे अधिक गन्धके अधीन होती है, स्पर्श भी मृदु शय्याओंको महत्त्व देता है, इस प्रकार पांच इन्द्रियोंकी जीव धारण करता है। मनके द्वारा उनको प्रेरित करता है, और विषयोंमें उन्हे प्रवृत्त करता है, प्रसरित बहुसुखोमे वह (जीव) आसक्त होता है, तथा मोहरूपी मदिराके मदके अधीन हो जाता है। वह क्रुद्ध होता है, सन्तप्त होता है, निःश्वास लेता है, व्याकुल होता है, रोता है, गाता है, हँसता है, नाना जन्मोमे आया हुआ (यह जीव) मोहरूपी पिशाचसे अभिभूत होता है। क्रुल, बल और वैभवके अहंकारसे गृहीत गुरुजनोंके द्वारा कहे गये शीलसे रहित वह छोटे मार्गसे ही चलता है। हे आदरणीय, वह तुम्हारा स्मरण नहीं करता। आप त्रिभुवनका उद्धार करनेवाले हैं, हे देव, आप ही विद्वानोंकी शरण हैं, हे जिन, आप गुणरूपी माणिक्योंकी निधि हैं, आप भयानक पापरूपी कान्तारके लिए आग हैं, आप जनमनके अन्धकारको दूर करनेवाले हैं, आप अच्युत सुखरूपी फलके लिए कल्पवृक्ष हैं, जो शुद्धमति तुम्हें प्रणाम करता है, वह निर्वाणगति प्राप्त करता है।”

घत्ता—जिनके छियासठ गणवर थे और बारह सौ पूर्वांगके धारी मुनिवर थे ॥११॥

११. १. A अट्टवइ । २. A नेहमयरमय; P मोहमइरामय । ३. A पेमविसाएं । ४. A वेयण्हव ।
५. P adds लह after पावइ ।

१२

पंचतीस चउसहसइं दुइसय सिक्खुयहं पंचसहस जलणिहिसय सावहिभिक्खुयहं ।
 छहसहास सव्वण्हुइं दह वैउण्वियहं लेसासमइं सहासइं मणपज्जयवियहं ।
 सायरसहसइं दोसय वाइहिं णयधरहं एव हीति बाहत्तरिसहसइं जइवरहं ।
 एक्क लक्खु छहसहसइं संजमधारिणिहिं लक्ख चयारि समासिय धरवयचारिणिहिं ।
 ५ दोणिण लक्ख गुणवंतहं संतहं सावयहं संखेज्ज गणु घोसिउ काणणसावयहं ।
 जिणवरवयणणिहालणणिहयभवोवयहं संख णत्थि तहिं आयहं देवहं देवियहं ।
 चउपण्णास जि लक्खइं वरिसविहीणाइं वरिसहं विहरिवि महियलि भवसमरीणाइं ।
 हरिकयकणयकुसेसयउयरिविइण्णपउ संबोहेप्पिणु भव्वइं चंपाणयरु गर ।

घत्ता—णिज्जियणियरिउ वरधम्मचक्कि मुणिराणउ ।

१०

पलियंकासणु अंतिमंझाणम्मि णिलीणउ ॥१२॥

१३

भव वयहु सुसैयभिसहहि सेयचउहसिहि तिण्णि वि अंगइं गलियइं वासु महारिसिहिं ।
 अवरण्हइ चउणवइहिं रिसिहिं समेउ जिणु जायउ सिद्धु भडारउ ववगयजम्मरिणु ।
 सक्कि अनिगकुमारहिं जयजयकारियउ अंगु अणंगीहूयहु तहु सक्कारियउ ।
 आहंउलधणुमंडलमंडियघणघणइ कहइ पुरंदर देवहं जंतु णहंगणह ।

१२

उनतालीस हजार दो सौ शिक्षक मुनि थे । पाँच हजार चार सौ अवधिज्ञानी मुनिवर थे ।
 छह हजार केवलज्ञानी और दस हजार विक्रियाच्छदिके धारी मुनि थे । छह हजार मनःपर्ययज्ञानी,
 चार हजार दो सौ वादीश्वर मुनि थे । इस प्रकार (उनके साथ) बहुतर हजार मुनिवर थे ।
 एक लाख छह हजार संयम धारण करनेवाली आर्थिकाएँ थीं । गृहस्थ धर्मका पालन करनेवाली
 श्राविकाएँ चार लाख थीं । गुणवान् श्रावक दो लाख थे । व्रतसहित तिर्यक संख्यात कहे गये हैं ।
 जिनवरके मुखको देखने मात्रसे जिन्होंने संसारकी आपत्तियोंका नाश किया है ऐसे वहाँ आनेवाले
 देवी-देवताओंकी संख्या नहीं थी । एक वर्ष कम चौवन लाख संसारभ्रमसे होन वर्षों तक धरती-
 तलपर विहार कर, इन्द्रके द्वारा रचित स्वर्णकमलके ऊपर पैर देकर चलनेवाले वह भव्योंका
 सम्बोधन करनेके लिए चम्पानगर गये ।

घत्ता—जिन्होंने अपने शत्रुको जीत लिया है, ऐसे श्रेष्ठ धर्मचक्रवर्ती मुनिराज पर्यंकासनमें
 स्थित अन्तिम ध्यानमें लीन हो गये ॥१२॥

१३

भाद्र शुक्ला चतुर्दशीके दिन उन महाऋषिके तीनों ही शरीर गल गये । अपराह्णमें चौरानवे
 मुनियोंके साथ, जन्मरूपी ऋणसे रहित आदरणीय वह जिन सिद्ध हो गये । इन्द्र और अनिगुमार
 देवोंने उन्हें जयजयकार किया, अर्चनीभूत हुए उनके शरीरका दाह-संस्कार कर दिया गया ।
 इन्द्रधनुष मण्डलसे भेजवाले आकाश के प्रांगणमें जाता हुआ इन्द्र देवोंसे कहता है कि प्रभु

१२. १. A गुण । २. A भवावहहं । ३. P देवयहं । ४. AP °ज्ञाणे ।

१३. १. A सविसाहहे कसणं; P सुविसाहहे कसणं; K records a p as in AP । २. P महासिहि ।

पहु वाहचरि बच्छरलम्बइ अछिछयउ एवहिं हूयउ गिक्खु इह ण णियच्छियउ । ५
 एम भरइ को पंडियपंडियवरभैरणु जेण ण पुणु वि पयट्टइ वहुभवसभैरणु ।
 हउं वि एउं संचितमि जइ णरभतु लहमि तो खरतवमंथारणे कम्मदहिउं महमि ।
 अप्पउ णामे चोप्पहु तं छिण्णउं करमि वासुपुज्जपरमेट्ठिहि मग्गे संचरमि ।

घत्ता—भरहुहु हौंतउ जिणचरियइं तियसहं संधिवि ॥

गउ हरि सग्गहु णहि पुप्फदंत बल्लंधिवि ॥१३॥

१०

इति महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसिगुणालंकारे महासन्वभरहाणुमणिणु
 महाकइपुप्फयंतविरहए महाकव्हे वासुपुज्जणिव्वाणगमणं
 णाम तिवण्णासमो परिच्छेओ समत्तो ॥५३॥

वहूत्तर लाख वर्ष रहै, इस समय जाकर वह मुक्त हुए, तुमने यह नहीं देखा । इस प्रकार पण्डितोंमें महापण्डित-भरण कौन भरता है कि जिससे दुबारा जीव संसारकी अनेक जन्म-परम्परामें नहीं पड़ता । मैं भी यही सोचता हूँ कि यदि मैं मनुष्य जन्म पा सकूँ तो तीव्रतपरूपी मथानीसे कर्मरूपी दहीका मन्थन करूँगा, और ज्ञानसे जो आत्मा तथा स्निग्धत्व (रागतत्त्व) है उसे छिन्न करूँगा, तथा वासुपूज्य परमेष्ठीके मार्गपर चलूँगा ।

घत्ता—इस प्रकार भरतसे लेकर जिनचरितोंको इन्द्रसे कहकर इन्द्र आकाशमें नक्षत्रोंको लाँघकर स्वर्ग चला गया ॥१३॥

इस प्रकार श्लेषठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभग्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका वासुपूज्य निर्वाण गमन नामका तिरपनवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥५३॥

संधि ५४

सिरिवासुपुल्लजिणतिथि तर्हि चिरपरिह्वथारुद्धु ॥
करि लुद्धन्न णं हरि हरिचरहु तारच भिडिउ टुविहट्टु ॥ध्रुवकं॥

१

दुवहँ—इह दीवन्मि भरहि वरविंझपुरन्मि महारिसारणो ॥
णरवइ विंझसत्ति विंझो इव पालियमत्तवारणो ॥

- ५ मयणाहीमंडणु तणु मयलइ जहिं कप्पूररेणु णहु धवलइ ।
जहिं कामिणि चामरु संचालइ जहिं देवंगु वत्थु परिघोलइ ।
जहिं भूसणमणिकिरणावलियं दसदिसासु वहुवण्णउ घुलियं ।
तर्हि अत्थाणि णिसण्णउ राणउ इंदफणिंदखणिंदसमाणउ ।
ता संपत्तउ चरु सुमहुरगिरु सो पमणइ पयजुयपणमियसिरु ।
- १० मत्तचित्तगोमहिंसीपउरइ एत्थु जि भरहखेत्ति कणयउरइ ।
तुहँ सुहि गुणविसेसतोसियमइ जाणहि कि ण सुसेणु महीवइ ।
तासु वेस णामे गुणमंजरि णं सरच्चयकुसुममयमंजरी ।
रुवु ताहि मइं दिट्ठं जेहं चण्वसिरंमहं टुक्करु तेहं ।

संधि ५४

श्री वासुपुत्रके तीर्थकालमे पूर्वजन्मके परामवसे कृद्ध हरिवर द्विपुष्टसे तारक भिड़ गया,
मानो क्षुब्ध सिंह गजवरसे भिड़ गया हो ।

१

इस जन्मद्वीपके भरत क्षेत्रमें श्रेष्ठ विन्ध्यनगरमें बड़े-बड़े शत्रुओंको मारनेवाला विन्ध्य-
शक्ति नामका राजा था जो विन्ध्याचलके समान बड़े-बड़े मतवाले हाथियोंका पालन करनेवाला
था । जहाँ कस्तूरी शरीरको मलिन करती है (वहाँके लोगोंका चरित्र मलिन नहीं होता), जहाँ
कपूरकी घूल आकाशको धवल बनाती है, जहाँ स्त्री चामर दोरती है, जहाँ देवांग वस्त्र पहने जाते
हैं, जहाँ भूषणमणियोंकी रंग-विरंगी किरणावलियाँ दसों दिशाओंमें व्याप्त हैं, वहाँ दरबारमें इन्द्र-
नागेन्द्र और विद्याधरेन्द्रके समान राजा बैठा हुआ था । वहाँ अत्यन्त मधुर वाणीवाला दूत पहुँचा ।
दोनोके चरणोंमे प्रणाम करते हुए उसने कहा—“अन्न-धन-नाय और भँसोंसे प्रचुर इस भरत
क्षेत्रमे कनकपुर है । अपने गुणविशेषसे सन्तुष्टमति सुधी राजा सुषेणको क्या तुम नहीं जानते ?
उसकी गुणमंजरी नामकी वैश्या है, जो मानो कामदेवरूपी आश्रवृक्षकी कुसुममय मंजरी है ।
उसका जैसा रूप मैंने देखा है, वैसा रूप सर्वशो और रम्भाके लिए भी कठिन है ?

१. १. AP महलइ । २. AP^० खणिंदफणिंद । ३. P तुहँ ।

घत्ता—णव मयकलंकपडलें मलिणु ण धरइ खयवकत्तणु ॥
सुहुं सुद्धहि चंदें समु भणमि जइ तो कवैणु कहत्तणु ॥१॥

१५

२

दुवई—मत्तकरिदमंदलीलागइ णरमणणलिणगोमिणी ॥
किं वण्णमि णरिंद सा कामिणि कामिणियणसिरोमणी ॥

दिस विवाहरंगें रावइ	कररुहपत्ति पईवहिं दीवइ ।	
कंचियकेसहं कंतिइ कालइ	माणिणि माणवमहुयरमालइ ।	
सुल्लियवाणि व सुकइहि केरी	जहिं दीसइ तहिं सा भन्नारी ।	५
पढइ चारु पोसियपत्थावउ	गायइ सुंदरि कण्णसुहावउ ।	६
णच्चइ वहुसरभावणित्तउं	सा जइ लहहि कह व मईं वुत्तउं ।	
तो संसारहु पईं फलु लद्धउं	सयलु वि तिहुवणु तुब्बु जि सिद्धउं ।	
ससिजोणहाहीणें कि गयणें	णासाविरहिण कि वयणें ।	
लवणजुत्तियिलेण व भोज्जे	ताइ विवज्जिएण कि रज्जे ।	१०

घत्ता—तं गिसुणिवि राएं मंतिवरु देवि उवायणु पेसियैउ ॥

घरु जाइवि तेण सुसेणपहु पियवायइ संभासियउ ॥२॥

घत्ता—वह मृगलाञ्छनके पटलसे मलिन नहीं होती, वह क्षय और वक्रताको धारण नहीं करती, फिर भी यदि मैं उस मृगधाके मुखको चन्द्रमाके समान कहता हूँ तो इसमें कौन-सा कवित्व है ? ॥१॥

२

मतवाले करीन्द्रकी मन्दलीलाके समान गतिवाली वह कामिनी मनुष्यके मनरूपी कमलकी शोभा और कामिनी-जन की शिरोमणि है। उसका क्या वर्णन करूँ ? उसके बिम्बाघरोंके रंगसे दिशा अनुरंजित होती है, नख पंक्तिके प्रदीपोंसे आलोकित होती है, धुँधराले बालोंकी कान्तिसे काली होती है। वह मानवरूपी मधुकरोंकी मालासे मानिनी है, वह सुकविकी सुन्दर वाणीके समान है, वह जहाँ-जहाँ दिखाई देती है वही कल्याणमयी है। वह सुन्दर सुभाषित युक्तियोंको पढती है, वह सुन्दरी कानोको सुहावना लगनेवाला गाती है। अनेक रसों और भावोंसे परिपूर्ण नृत्य करती है। यदि उसे तुम किसी प्रकार पा सकते हो, तो मैं कहता हूँ कि तुमने संसारका फल पा लिया और समस्त त्रिभुवन सिद्ध हो गया। चन्द्रमाकी ज्योत्स्नासे रहित आकाशसे क्या ? नाकसे रहित मुखसे क्या ? लवणयुक्तिसे रहित भोजनसे क्या ? इसी प्रकार उस सुन्दरीसे रहित राज्यसे क्या ?”

घत्ता—यह सुनकर, राजाने मन्त्रीवरको उपहार देकर भेजा। उसने घर जाकर प्रियवाणीमें राजा सुषेणसे सम्भाषण किया ॥२॥

४. AP सह । ५. AP कमणु ।

२. १. AP कामिणिणणं । २. AP फलु पईं । ३. AP पेसिय । ४. AP संभासिय ।

३

दुवई—जो तुहं विंक्षसत्ति सो दोहं मि भेउ ण लक्खिओ मए ॥
इहु कल्लोलणिवहु इहु जलणिहि केण विहत्तओ जए ॥

एक्कु जीउ विहिणा गंभीरइं	पर रइयइं भिण्णाइं सरीरइं ।
जं तहु केरउ तं तुम्हारउं	जं तेरउ तं तासु जि केरउं ।
५ एत्थु ण किञ्चइ चित्तु अधीरउं	णेहणिबंधणु वंजुहि सारउं ।
णिरुवयारु तं णासइ सुंदरि	देहि समित्तहु तुहं गुणमंजरि ।
ता पहुणा दूयव णिउभच्छिउ	एहउ बंधु वप्प कहिं अच्छिउ ।
वेरि सीमंतिणीउ जो मग्गइ	अवसें सो घणपाणहु लग्गइ ।
६ दरिसियरइरसकरणाळिगण	जाहि ण दूयै देमि पणयंगण ।
१० तें वयणें पुरु गंभि तुरंतउ	णियक्कुलसामिहि कइइ महंतउ ।
हंसवंसवीणारवभासिणि	देव ण देइ सुसेणु विलासिणि ।

घत्ता—आयण्णवि दूयहं जंपियइं णेहु चिराणउ भंजिवि ॥
अब्भिट्ठु सुसेणहु विंक्षपुरणरवइ सीहु व हंजिवि ॥३॥

४

दुवई—वेणि णि चरणरेहिं संचालिय वेणि णि ते महाबला ॥
वरणारीकएण गणियारिरया इव भिदिय मयगला ॥

३

“जो तुम हो, वही विन्ध्यशक्ति है दोनोंमें मैंने कोई भेद नहीं देखा ? यह लहरोंका समूह है और यह जलनिधि है, जगमें कौन उसे विभक्त कर सकता है ? एक ही जीव है, परन्तु विधाताने गम्भीर विभिन्न शरीरोंकी रचना की है। जो उसका है, वह तुम्हारा है और जो तुम्हारा है, वह उसीका है। इसमें किसी प्रकार अपने चित्तको अधीर नहीं बनाना चाहिए। बन्धुओंका स्नेह निबन्धन ही सार है। अनुपकार उस स्नेहका नाश कर देता है। इसलिए सुन्दरी गुणमंजरी तुम अपने मित्रके लिए दे दो।” तब राजा सुषेणने दूतकी भर्त्सना की—“हे सुमट, यह बन्धु कहाँ है, जो घरकी स्त्री माँगता है, वह अवश्य ही (बादमें) धन और प्राणोंसे भी लग सकता है। जिसने रत्न-रस उत्पन्न करनेवाले आलिंगनोंको प्रदर्शित किया है, ऐसी प्रणयांगना नहीं दूँगा, हे दूत, तुम जाओ।” इन वचनोंसे दूत शीघ्र नगर जाकर अपने स्वामीसे कहता है कि हे देव, हंस-वंश और वीणाके शब्दके समान बोलनेवाली विलासिनी गुणमंजरीको सुषेण नहीं देता है।

घत्ता—दूतोंके कथनोंको सुनकर और अपने पुराने स्नेहको भंग कर विन्ध्यपुरका राजा सिंहके समान गरजकर सुषेणसे भिड़ गया ॥३॥

४

दोनों ही दूत पुरुषोंसे संचालित थे। वे दोनों ही महाबल थे। श्रेष्ठ नारीके लिए हयिनीमे

३. १. A पररइयं । २. AP कीरइ । ३. P वंचहे । ४. A घरसीमंतिणि । ५. AP देमि इव ।
४. १. संचारिया ।

दोहूं वि साहणाई आलग्नाई	चालियचक्रई तोलियखगई ।	
खलियरहंगई मलियतुरंगई	दलियधुरगई दसियमगई ।	
मोडियवंडई लुयधयसंडई	खंडियमुंडई णक्षियरंडई ।	५
जूरियपत्तई चूरियछत्तई	दारियगतई गिगययरत्तई ।	
लूरियताणई हयजंपाणई	उड्डियप्राणई कयसिरदाणई ।	
हुंकारंतई हंकारंतई	उरगयकोतई चललुडियंतई ।	
मगगणभिण्णई तिलु तिलु छिण्णई	सेयवसिण्णई रत्तकिलिण्णई ।	
विरसु चवंतई वम्मु छिवंतई	संक मुयंतई संकु धिवंतई ।	१०
हृथिणिसुंभई फाडियकुंभई	जोहंणिरुंभई जयजसुंलंभई ।	
घत्ता—ता सरिवि सुसेणें सरिचबलं सरहिं णिरंतसु भिण्णं ।		
जमदूयहं भूयहं भुक्खियहं णाहं दिसावलि दिण्णं ॥४॥		

५

दुवई—ताव सुसेणमुक्कयाणावलि विहडियणि विडगयघळं ॥	
हरिसंचलणदलेणणिहुरखुरफोडियधवलघयघळं ॥	
छंडियकिवाणु	गलियाहिमाणु ।
लवंतकेसु	जणजणियहासु ।
पत्तावमाणु	दिसि धावमाणु ।
धयछत्तछणु	पेच्छवि संसेणु ।
पडिभडकयंतु	धाइउ वुरंतु ।

५

अनुरक्त मतवाले हाथियोंके समान भिड़ गये। दोनोंकी सेनाएँ भिड़ गयी, चक्र चलाती हुई और खड्ग तोलती हुई। चक्र स्थलित हो गये, अश्व दलित होने लगे। घुराग्रभाग चूर-चूर होने लगे। मार्ग दूषित होने लगे। दण्ड मुड़ने लगे। ध्वजसमूह कटने लगे। मुण्ड कटने लगे। घड़ नाचने लगे। वाहन पौडित हो उठे। छत्र चूर-चूर हो गये। शरीर विदीर्ण हो गये, रक्त बह निकला। अश्व और जंपाण त्राण (कवच) रहित हो गये। प्राण बड़ने लगे। सिरोका दान किया जाने लगा। हुंकारते हुए, हुंकारते हुए। भाले उरमे घुसने लगे। चंचल आँतें लुठकने लगी। तीरोसे छिन्न-भिन्न होकर तिल-तिल कटने लगा। पसीनेसे भींग गये, रक्तसे लिप्त हो गये। विरस दोलते हुए, कवच छेदते हुए, बाँका छोड़ते हुए, अस्त्र ग्रहण करते हुए, हाथियोंको नष्ट करते हुए, कुम्भस्थलोंको फाड़ते हुए, योद्धाओंको रोकते हुए, जय और यशको पाते हुए।

घत्ता—तव सुषेणने तीरोसे शत्रुसेनाको लगातार छिन्न-भिन्न कर दिया, मानो उसने भूखे यमदूतो और भूतोंको दिवाबलि दी हो ॥ ४ ॥

५

तबतक सुषेणके द्वारा छोड़ी गयी वाणावलीसे सघन गजघटा विघटित हो गई। अश्वोंके संचालन और दलनके कारण कठोर खुरोंसे धवल ध्वजपट फाड़ दिये गये। जिसने तलवार छोड़ दी है, जिसका अभिमान खण्डित हो चुका है, केश बिखर चुके हैं, जिसने लोगोंमें हास्य उत्पन्न

२. AP जोहणिसुंभई । ३. AP जयजसुंलंभई; P adds aftr this कित्तिवियंभई । ४. AP वलु
५. १. AP वलण । २. AP फालिय । ३. A ससेणु ।

	बलपवलसन्ति रिड भणिड तेण दे वेहि णारि सहुं परिखणेण तं सुणवि सत्तु गुणणिहियवाणि को रमइ तरुणि जो हरिहि हरइ इय जंपमाण विंधंति वीर फणिवइपमाण णहि पडिखलंति धय णिल्लुणंति हय कप्परंति हणु हणु भणंति सहसा मिलंति पडिबलिंवि णंति ता गयचिंलासु	भडु विंझसन्ति । रे रे णिहीण । भा गिल्लव मारि । पइं रणि खणेण । इयरेण जुत्तु । मइं जीवमाणि । कमि पंडिय हरैणि । सो झ त्ति मरइ । वेणिण वि समाण । पुलइयसरोर । वाणेहिं वौण । छत्तिहिं पंडंति । सारहि हणंति । पुणु चप्परंति । अंगइं वणंति । विहडेवि जंति । थिर गिरि व थंति । विंझाहिवासु ।
१०		
१५		
२०		
२५		

धत्ता—संधाणु ण लक्खहुं सक्खियं चवळसरावलि देवहु ॥

गड णासवि तासु सुसेणु रणि णं वम्महु अरहंतहु ॥५॥

किया है, जो वाहनोसे अप्रमाण है, दिशामे दौड़ रहा है, जिसके ध्वजछत्र छिन्न हो चुके हैं, ऐसा अपना सैन्य देखकर वायुयोद्धाके लिए क्रुतान्त तथा बलसे प्रबल शक्तिवाला विन्ध्यशक्ति तुरन्त दौड़ा। उसने शत्रु सुपेणसे कहा, “रे नीच, नारी दे दे, तुझे परिजनोके साथ एक क्षणमें कही मारि न खा ले।” यह सुनकर दूसरेने कहा, “जिसकी डोरीपर बाण है, ऐसे मेरे जीवित रहते हुए कौन उस रमणीका भोग कर सकता है, जो पैरोंपर पड़ी हुई हरिणीको सिंहसे छोनता है, वह शीघ्र ही मृत्युको प्राप्त होता है।” इस प्रकार कहते हुए वे दोनों ही समान (योद्धा) पुलकित शरीर होकर एक दूसरेको देखते हैं। नागराजके समान बाणोंसे बाण आकाशमें स्थलित होते हैं, छत्रोसे छत्र गिर पड़ते हैं, ध्वज कट जाते हैं, सारथि मारे जाते हैं, बश्व काटे जाते हैं, पुनः आक्रमण किये जाते हैं, मारो-मारो कहते हैं, अंगोंको घायल करते हैं, सहसा मिलते हैं और विषटित होकर जाते हैं। मुड़कर आते है, स्थिर गिरिके समान स्थिर होते हैं। गत विलास होकर—

धत्ता—सन्धानको लक्षित करनेमे समर्थ नहीं हो सका। चंचल तीरोंकी आवली देते हुए उससे युद्धमें सुपेण उसी प्रकार नष्ट हो गया, जिस प्रकार अरहन्त देवसे कामदेव नष्ट हो जाता है ॥५॥

४. AP बडिय । ५. P हरिणि । ६. AP पमाणु । ७. AP बाणु । ८. P adds after this: रोत्तं जलंति । ९. A छंति ।

६

दुवई—बधुविओयसोयमलिणाणण पइपरिहवविवेइया ॥
तेण णिवेण धरिय गुणसंजरि गुणमहुयरणिसेविया ॥

इहं वरभरहखेति विक्खायउ
मित्तु सुसेणहु सत्तोसियमणु
णिसुणेपिणु णियइट्टु पलाणउ
घणरहणामहु वसुमइ देपिणु
सुव्वयजिणह पासि वउ लेपिणु
प्राणयकपि सक्कु सो हूयउ
तासु जि गुहहि पासि उवसंतं
वारहविहसवतावणक्षीणे
मेरुतुंगमाणुणणइ ढालिय
जइ तवतरुवरहलु पाईसमि
एव सरंतु सरंतु जि णिट्ठिउ
वरवंदारयवंदविणूयउ

खत्तियधम्मधुरंधर जायउ ।
राउ महापुरि मारुयसंदणु ।
हिमहयकमलसरु व विहाणउ ।
कोहु लोहु मउ मोहु सुपपिणु ।
मुउ काळं संणासु करेपिणु ।
वीससमुइजीवि वररुवउ ।
दुद्धरु संजममारु वहतं ।
वद्ध णियाणु अणेण सुसेणं ।
जेणं मञ्जु माणिणि उहालिय ।
तो वं पुरिमंजन्मि मारेसमि ।
सकलुसमइ संलेह्णि संठिउ ।
तेत्थु जि सग्गि सो वि संभूयउ ।

घत्ता—रमणीयहि मंदरमेहलहि णीलरुन्मिगिरिकंदरि ॥

गयणयलि सयंभूरमणजलि ते रमंति सरिसरवरि ॥६॥

१९

६

बन्धु-वियोगके शोकसे मलिनमुखी और पतिके पराभवसे कम्पित तथा गुणरूपी मधुकरों-
से सेवित गुणमंजरीको उस विन्ध्यवासि राजाने पकड़ लिया। इस श्रेष्ठ भरत क्षेत्रमे क्षात्रधर्ममे
धुरन्धर और विख्यात, सन्तोषित मन, सुषेणका मित्र, महापुरीका राजा मासतस्यन्दन था।
वह अपने मित्रका पलायन सुनकर हिमसे आहत कमल सरोवरके समान खिन्न हो गया।
घनरथ नामक अपने पुत्रको घरती देकर क्रोध, लोभ, मद, मोहको छोड़कर, मुन्नत जिनके पास
व्रत ग्रहण कर, समय आनेपर संन्यासके साथ भरकर, वह प्राणत स्वर्गमे इन्द्र हुआ। सुन्दर रूपवाला
वीस सागर पर्यन्त जीनेवाला। उसीके गुरुके पास उपशान्तभाव धारण करते हुए, कठोर संयम-
भावका आचरण करते हुए वारह प्रकारके तप-तापसे अत्यन्त क्षीण इस सुषेणने यह निदान बाँधा
कि "जिसने मेरी सुमेरुपर्वतके समान ऊँचे मानवाली उन्नतिका पतन किया और पत्नीका अपहरण
किया, यदि मैं तपरूपी वृक्षका फल पाऊँ, तो मैं अगले जन्ममें उसको मारूँगा।" यह स्मरण
करते-करते वह निष्ठासे लग गया। सकलुषमति वह संलेखनामै स्थित हो गया। श्रेष्ठ देवीके
समूहके द्वारा संस्तुत वह भी उसी स्वर्गमे उत्पन्न हुआ।

घत्ता—रमणीय मन्दराचलकी मेखला और नीलरुक्मी पर्वतकी कन्दरा, आकाशतल,
स्वयम्भूरमण समुद्रके जल और सरित सरोवरमें वे दोनों क्रीड़ा करने लगे ॥६॥

६. १. AP इय । २. AP पाणय । ३. AP सग्गि । ४. AP पावेसमि । ५. A पुरिसु । ६. AP
तेत्थु जि सो सग्गि संभूयउ ।

- ५ लंगलमुसलसंखकर दुद्धर ते भिडंति जहि केसरिकंधर ।
 तहि थरहरइ मरइ रिच ण सरइ करु असिवरहु कया वि ण पसरइ ।
 अण्णु वि अत्थि वइरिज्जुरावणु गंधहत्थि णावइ अइरावणु ।
 ताहं लील दीसइ विवरेरी णउ गणंति ते आण तुहारी ।
 भग्गा सइं सुहडत्तणवायं तं आयण्णिवि जंपिउ राएं ।
 १० संगरु करिवि हूरमि करिरयणइ गलियंसुयइ सुहइहि णयणइं ।
 लुहउ वंसु हयपुत्तविओएं डब्बउ सोसिउ दूसहसोएं ।
 मइं विरुद्धि जगि को वि ण जीवइ जैं वि मरणु समरंगणि पावइ ।

घत्ता—महं कमकमलाई ण संभरइ जो रायत्तणु मग्गइ ॥

सो ससयण परियणपरियरिउ जमपुरपयें लगइ ॥९॥

१०

दुवई—हय गज्जंतु राउ णिजेमंतिहि बोझिउ हो ण जुज्जए ॥

किं कलहेण तांव पडिवक्खहं मदिहइ दूउ दिज्जए ॥

सो गंधपीलुं

सुरदंतिसीलुं ।

सिद्धां जाई

रयणां ताई ।

५

सो दिव्बु संखु

तं धणु असंसु ।

जइ तुब्बु देति

पेसणु करंति ।

तो ते जियंति

णं तो भरंति ।

यमको भीहोके भंगुरभाववाले दिव्य धनुष सिद्ध हैं। दोनोके पास रत्नोंसे स्फुरित गदा है और व्याज्ञा माननेवाली देवियाँ है। दोनोके हाथमें हल-भूसल और शंख हैं, दोनो कठोर हैं। सिंहके समान कन्धेवाले वे दोनों जहाँ लड़ते हैं वहाँ शत्रु थरा जाता है, मर जाता है, सामना नहीं कर पाता। असिवरपर-उनका हाथ कभी नहीं जाता। एक और उनके पास शत्रुओंकी सतानेवाला गन्धहस्ती है, जो मानो ऐरावत है। उनकी लीला तुम्हारे विरुद्ध दिखाई देती है, वे तुम्हारी व्याज्ञाकी परवाह नहीं करते। अपने सुभटत्वकी हवासे वे स्वयं भग्न हैं।" यह सुनकर राजाने कहा, "मे युद्ध करके गजरत्नोंका हरण करूंगा।" सुभद्राके गलिताश्रु नेत्रोंकी ब्रह्मा पीछे, मृतपुत्रके वियोगसे वह जले, और असह्य शोकसे शोषित हो। मेरे विरुद्ध होनेपर संसारमे कोई जीवित नहीं रहता, यम भी युद्धमें मुझसे मृत्युको प्राप्त होता है।

घत्ता—जो मेरे चरणकमलोकी याद नहीं करता और राजत्व चाहता है वह स्वजनों सहित परिजनोंसे विरा हुआ यमपुरके रास्ते लगता है ॥९॥

१०

इस प्रकार गरजते हुए राजासे मन्त्रियोंने कहा—“यह युक्त नहीं है; कलहसे क्या? शत्रुओंके पास दूतको भेज दीजिए। ऐरावतके शीलवाला वह गन्धहस्ति, और जितने रत्नसिद्ध हुए हैं वे, वह दिव्य शंख, वह असंख्य धन, यदि वे तुम्हें देते हैं और आज्ञा मानते हैं, तभी वे जीवित रहते

३. A हरेवि; P हरेमि । ४. P जणु । ५. A सो सयणसपरियणं; P सो सयणपरियणं ।

१०. १. AP णियमंतिहि । २. AP गंधपीलु । ३. AP लीलु ।

तो दिण्णु दूव	कल्लाणभूव ।	
दारावईसु	भीमारिभीसु ।	
जाएवि तेण	मउलियकरेण ।	१०
कुलकुसुयचंडु	दिट्टुव उर्विदु ।	
दूएण उत्तु	सुणुं मंतसुत्तु ।	
सुयबलविसालु	कुलसामिसालु ।	
संभरहि देव	रायाहिराउ ।	
गिरितुंगमाणु	ताराहिहाणु ।	१५
भडवरवरिट्टु	उहुं भो दुविट्टु ।	
मेळ्ळिवि दुआलि	मा करहि रौलि ।	
तुहईपिएण	सह सामिएण ।	
खयरिंद जासु	वक्कंति पासु ।	
इच्छति सेव	असितसिय देव ।	२०
तहु कवणु मल्लु	मुइ रोससल्लु ।	
दोइवि करिंदु	पवणहि णरिंदु ।	

घत्ता—ता भणिउं दुविट्टे रुट्टएण सामि महारउ हलहरु ॥
अण्णहु सामण्णहु माणुसहु हउं होसमि किं किंकरु ॥१०॥

११

दुवई—जो मइं भणइ भिबं परु दुस्मइ दूयय तासु सीसयं ॥

तोडमि रणि तड त्ति मणिकुंडलमंडियगंडएसयं ॥

कायकंतिओहामियससहरु

तहिं अवसरि भासइ जिग्वाहरु ।

हैं नहीं तो मारे जाते हैं।" तब उसने कल्याणभूति नामक दूतको भीम शत्रुबोके लिए भयंकर द्वारावतीके राजाके पास भेजा। उसने जाकर और अपने दोनो हाथ जोड़कर अपने कुलरूपी कुमुदके चन्द्र उपेन्द्रसे भेट की। दूत बोला, "आप मन्त्रसूत्र सुनिए। हे देव, बाहुबलसे विशाल कुलके स्वामीश्रेष्ठ गिरिके समान उन्नतवान तारक नामके राजाधिराजकी आप याद करे और योद्धावरोंमें श्रेष्ठ हे द्विपृष्ठ, तुम भी खोटी चाल छोड़कर पृथ्वीके प्रिय स्वामीके साथ झगड़ा मत करो। विद्याधरराजा, जिसका सामीप्य चाहते हैं, जिसकी तलवारसे त्रस्त देव उसकी सेवाकी इच्छा करते हैं, उसका प्रतिमल्ल कौन है? तुम क्रोधकी शल्य छोड़ दो। करिवर ले जाकर तुम राजाको प्रणाम करो।"

घत्ता—तब द्विपृष्ठने क्रुद्ध होते हुए कहा, "मेरे स्वामी बलभद्र है। क्या मैं किसी दूसरे सामान्य मनुष्यका अनुचर हो सकता हूँ? ॥१०॥

११

जो मुझे भृत्य कहता है, हे दूत, वह मेरा दुश्मन है; मैं युद्धमें मणिकुण्डलोसे मण्डितगण्ड देश-वाले उसके सिरको तड़ करके तोड़ डालूंगा।" अपनी शरीरक्रान्तिसे चन्द्रमाको पराजित करनेवाले

४. A ता । ५ A सुणि । ६. AP मेल्लहि । ७ P राहि ।

११. १. AP भिन्दु ।

	प्रहरणरुक्खराइसंछण्णसं	णिवकामिणिवडजक्खिरवण्णसं ।
५	लंबललंतचिंधिकोमलदलु	चलचामरहंसावलिअविरलु ।
	करिगिरिवरु लोहियजंलणिञ्जरु	उगयचित्तल्लंतइंदीवरु ।
	सुहडंतवलिविसहरचुंभलु	गयणविलग्गकौतवंसत्थलु ।
	दूय राउ जइ मग्गइ कुंजरु	तो पइसउ सो समरवणंतरु ।
	रड्डुविट्टसीहसरणक्खहं	तहिं णउ चुकइ लुंक्कविवक्खहं ।
१०	इहु वारणु तहु जीवियवारणु	अयगारउ वच्छयलवियारणु ।
	घत्ता—तं णिसुणिवि दूयं जंपियंलं महुं एहउ मणि भावइ ॥	
	हरि तारयसरहहु कमि पडिउ अचल चलंतु ण जीवइ ॥११॥	

१२

	दुवई—जासु तसंति एंति पणवंति थुणंति वि देवदाणवा ॥	
	तासु ण गहणु किं पि तुस्हारिस विवल वरायमाणवा ॥	
	तो कण्हें जंपिंलं पेसुण्णलं	जाहि दूय मा जंपहि सुण्णलं ।
	तं णिसुणिवि दूयउ णिग्गलं गउ	कहइ ससामिहिं णउ अप्पइ गउ ।
५	दुडु दुचिदु विट्टु रणु कंखइ	तंबच्छिहिं करवालु णिरिक्खइ ।
	सेव ण करइ ण सो पइ मण्णइ	णियसंसुहं सिरिच्छिइ सण्णइ ।
	भणइ ण अयवसेण वसि होसमि	चाउ दंति करि वरु दोएसमि ।

बलभद्र उस अवसरपर कहते हैं, "हे दूत, जो प्रहरणरूपी वृक्षराजियोंसे आच्छन्न है, नृपकामिनियों-रूपी वट-यक्षिणियोंसे सुन्दर है, जिसपर लम्बे और हिलते हुए ध्वजरूपी कोमल पत्तें हैं, जिसपर अविरल चलचामरोंकी हंसावली रहती है, जिसमें रवतरूपी जलका निक्षर है, उठे हुए विचित्र छत्ररूपी कमल हैं; जो सुभटोंकी आंतोरूपी हंसावलीसे बीभरस है, जिसका सुन्दर वंशस्थल आकाशको छूता है, ऐसे हाथीको यदि हे दूत, वह राजा मांगता है तो उसे तुम समररूपी वनान्तरमें भेज दो। क्रुद्ध द्विपुष्टरूपी सिंहके तीररूपी शत्रुओंको लुप्त करनेवाले बाणोंसे वह नहीं चूकेगा। यह वारण (गज) उसके जीवनका वारण करनेवाला है, अयकारक और वक्षस्थलका निवारण करनेवाला है।"

घत्ता—यह सुनकर दूतने कहा, "भेरे मनमें यह आता है कि नारायण, तारकरूपी श्वापदके चरणोंमें पड़ा हुआ, हे अचल, चलता हुआ जीवित नही रहेगा" ॥११॥

१२

देव और दानव जिससे अस्त होते हैं, आते हैं, प्रणाम करते हैं और स्तुति करते हैं, उसको कोई भी नही पकड़ सकता। तुम जैसे बलहीन बेचारे मानवोंकी क्या ?" यह सुनकर नारायणने कठोर बात कही कि "हे दूत, व्यर्थ बकवास मत करो, तुम जाओ।" यह सुनकर दूत निकलकर चला गया। उसने अपने स्वामीसे कहा कि वह अपना हाथी नहीं देता। दुष्ट और ढीठ द्विपुष्ट युद्धकी आकांक्षा रखता है, अपनी लाल-लाल आँखोंसे तलवारको देखता है, न वह तुम्हारी सेवा करता है और न तुम्हे मानता है; अपने सामने श्रीरूपी पुंश्चलीका सम्मान करता है, मदके वशमें

२. चित्तल्लु । ३. AP लुक्कु । ४. P जंपिंलं ।

१२. १. A तो । २. AP हउ गउ णिग्गलं । ३. A छेछइ ।

वृत्तसुसलजुयलं पैल्लावमि
रायत्तणु महु पुणु संकरिसणु
अण्णु राव जइ होइ कुसुंभइ
अण्णु राव अहरहु तंवल
हृत् किं वेप्पमि अण्णे राए

एम हत्थि हृत्तं तहु राणि दावमि ।
अह व करइ पियवंसुं सुवरिसणु ।
अण्णु राव संझापारंभइ ।
अण्णु राव छिंदैमि करवालं ।
ता पड्डिजंविचं तारयैराए ।

१०

घत्ता—हरिकरिमडलोहियकयलडइ दूय ण वड्डिमं बोझमि ॥
रणरंगि कुचिट्टुह अट्टियइं पिट्टु करैपिणु वल्लमि ॥१२॥

१३

दुवई—एम भणंतु चलिच्च हयगयरहणरभरणैमिचधरयलो ॥
हयसंगामत्तूरवहिरियदिसवहलुच्छल्लियकलयलो ॥

हरिखुरखयधूलीरयलाहृत्
थिच दारावइणियल्लज जावहिं
सकरि सगरुड्ढांविध रहसुंभइ
गयमलधवल्लकमलकज्जलगिह
खयरणारासरसेविथपयजुय
रयणमालकोत्थुहजलयरधर

दसदिस्सु खंवावाह ण माइत्त ।
गिग्गय सज्जणहृरिचल तावहिं ।
सइरि गिरिंदधोर सुंमहाभड ।
कायतेयणिल्लियखयसिद्धिसिह ।
दंतिदंतणिमूलणखमसुय ।
सीरसरासणामुरपहरणकर ।

५

होकर यह नहीं कहता कि मैं वधमे हो जाऊँगा, हाथमे धनुष लेकर हाथीके ऊपर पहुँचूँगा । दांतके समान मूसलजुयलसे उसे प्रेरित कलंगा, इस प्रकार मैं उसे युद्धमे हाथी दिखानेगा । राज्यत्व तो केवल मेरा बलभद्र करेगा, अथवा फिर सुदर्शनीय प्रिय शत्रु करेगा । यदि कुसुंभ वधमे दूसरा राग (रंग) होता है, यदि सन्ध्याके प्रारम्भमे दूसरा राग होता है, यदि पान खानेसे अघरोपर दूसरा राग होता है; इसी प्रकार यदि मेरा अन्य राग (राजा) होता है तो मैं तलवारसे उसे काट दूँगा । क्या मैं दूसरे राजाके द्वारा ग्रहण किया जाऊँगा ?” तब तारक राजा कहता है—

घत्ता—“हे हृत्, मैं बड़ी बात तो नहीं करता, परन्तु जिसमे घोड़ा, हाथी और योद्धाओंके द्वारा लाल-लाल छटा की गयी है, ऐसे रणरंगमे मैं द्विपृष्ठकी हृष्टिधोको पीसकर फेंक दूँगा” ॥१२॥

१३

इस प्रकार कहता हुआ जिसने घोड़ा, हाथी, रथ और मनुष्योंके भारसे धरतीको नमित कर दिया है, ऐसा वह चला । युद्धके नगाहोके आहत होनेपर दिशाओंको अत्यन्त बहिरा बनाता हुआ कलकल शब्द होने लगा । घोड़ोके खुरोसे आहत धूलरजसे आच्छादित सैन्य वसो दिशाओंमें कहीं भी नहीं समा सका । जबतक वह द्वारावतीके निकट ठहरता है, तबतक सञ्जन नारायणका सैन्य बाहर निकला, हाथियों, गधहृष्यज चिल्लोंके साथ और हृषीसे उद्भूट; और अश्वोंके साथ । गिरीन्द्रके समान धीर मलरहित धवल कमल और काजलके समान, शरीरकी कान्तिसे प्रलयानि-को ज्वालाओंको जौतनेवाले, जिनके पैर विद्याधर, नर और देवी द्वारा पूजित हैं, जो महापत्नीके दांतोंको उखाड़नेमे सक्षम बाहुओंवाले हैं; जो रत्नमाला, कोस्तुभ और शंखकी धारण करनेवाले

५. AP पियवंसु । ५ AP छिण्णमि । ६. A तागवराए । ७. AP बड्डिमु ।

१३ १. AP णविचं । २. A समहाभड ।

- भद्रसुभद्रववायाणं दण
 १० जिह जिह तारण अवलोइय
 चलपवभारं मेइणि हल्लइ
 घत्ता—करिकारणि तारयमाहवहं सेणणइं संमुहुं दुक्कइं ॥
 लभगइं पक्कलपाइक्कमुहुसुक्कहक्कल्लक्कइं ॥१३॥

१४

- दुवई—दसदिसिवहपयासिजसल्लुद्धइं सुहमरुभभियभैमरयं ॥
 धणुगुणसुक्कमंदसरजालइं कयसुरणियरडभैरयं ॥
 जायघायलोहियभरियंगइं
 भडवाडियपाडियमायंगइं
 ५ वज्जमुट्टिफोडियसीसक्कइं
 दंडदलियवियलियपासुलियइं
 पित्तसंभसोणियजलणहायइं
 मोडियकडिचैलकोप्परठाणइं
 संधारियसामंतसहासइं
 १० परिपोसियसिववायसगिद्धइं
- आइरंगरंगंततुरंगइं ।
 झसतिसूलकरवालपसंगइं ।
 णीसारियमत्थयमत्थियक्कइं ।
 चलियइं चल्ललियइं पडिचलियइं ।
 असिणिहसणसिहिसिहवमु आयइं ।
 विहडियवैहसंधिसंठाणइं ।
 भैयमंडलियमवडभाभासइं ।
 सिरिमहिरामारमणपल्लुद्धइं ।

हैं; जो हल, धनुष तथा देव-अस्त्र जिनके हाथमें हैं, दुर्दम दानवसमूहका दमन करनेवाले हैं, ऐसे कल्याणी सुभद्रा और उषाके पुत्रोंको जैसे-जैसे तारकरने देखा, वैसे-वैसे उसकी मति आश्चर्यपथमें चकरा गयी। सेनाके भारसे धरती हिल उठती है, विपथर त्रस्त होता है, चिल्लाता है और विष छोड़ता है।

घत्ता—हाथीके लिए तारक और माघवकी सेनाएँ आमने-सामने पहुँची। प्रगल्भ भृत्योके मुखसे बोले गये हकारने और ललकारनेके शब्दोंसे युक्त वे दोनों लड़ने लगी ॥१३॥

१४

जो दसों दिशापथोंमें प्रकाशित यज्ञकी लोभी हैं, जो मुखको हवासे भ्रमरोंको उड़ा रही हैं, जो धनुष-बोरोसे मन्द सरजाल छोड़ रही हैं; जिन्होंने देवसमूहके साथ युद्ध किया है, जिनके अंग धावसे उत्पन्न रक्तसे भरे हुए हैं, जिसमें अब्व युद्धके उत्साहमें चल रहे हैं, योद्धाओंसे ताड़ित गज गिर रहे हैं, जो झस-त्रिशूल और करवालसे युक्त हैं, जिनमें वज्जमुट्टियोसे शिरस्त्राण तोड़े जा रहे हैं, जहाँ मस्तकोसे मस्तक निकाले जा रहे हैं, जहाँ दण्डसे दलित और विगलित पशुरियाँ चलती हैं, गीली होती है और मुड़ती हैं। पित्त, श्लेष्मा और क्षोणित जलमें स्नात वे तलवारोंकी रगड़से उत्पन्न अग्निकी ज्वालाके वशीभूत हो गयी है। जिनके कटितल और हाथका मध्यभाग-स्थान मुड़ गया है, वेहके सन्धिस्थान विघटित हो गये हैं, सामन्तोंके सहायक मारे जा चुके हैं, जो मरे हुए माण्डलीक राजाओंके मुकुटोंको कान्तिसे भास्वर हैं, जिन्होंने श्रृंगाल-वायस और गिद्धोंको सन्तुष्ट किया है, जो लक्ष्मी, मही और स्त्रीके रमणके लोभी हैं।

३. AP-सुभद्रावायां । ४. AP-विदं । ५. AP-रसइ तसइ ।

१४. १. AP-भमरइं । २. AP-डमरइं । ३. A-कडयलं । ४. A-मुयं ।

घता—अरिहरितोयतण्हायतणु पक्खिहिं पक्खल्लडप्पियं ॥
उम्मुच्छिउ को वि महासुदुडु लग्गव वड्ढिहिं विप्पियं ॥१४॥

१५

दुवई—परिफुडकरडगलियमयधारालालसभसलसइए ॥

को वि करिंददंतजुयसयणइ सुत्तव मरणणिइए ॥

लद्धवीरभंडणमहोमिसे	धारचंचुभक्खियणरामिसे ।	
उच्छलंतवीसडवसौरसे	कालदूयरक्खसमहाणसे ।	
पहरभग्गयभीरुमोणुसे	हम्ममाणभडभमियतामसे ।	५
पुणववइरसवंधदारुणे	वणगलंतवणरुहवणारुणे ।	
खयररायसंधायमारणे	तारण हरि कोक्किओ रणे ।	
कंतदंतगिरिभित्तिदारुणे	जेम वप्प दिण्णो ण वारणो ।	
बंधुकणकडुयं सुविप्पियं	जेम दूयपुरओ परंपियं ।	
अज्ज बाल किं णेव ज्जुहसे	संतमंतिमंतं ण ज्जुहसे ।	१०
धरणिणाहजयलच्छिधारिणा	भणिउ महिवई दाणवारिणा ।	
दीण पंचभूयहं ण लज्जसे	मम पुरो तुमं काइं गज्जसे ।	
रायबायगण्वेण वग्गसे	परहणाई किं मुक्ख मग्गसे ।	
इय भणेवि मुक्का तिणा सरा	पुंखलग्गहुंकारवरसरा ।	

घता—शत्रुके श्विररूपी जलसे आर्द्रशरीर, पक्षियोंके द्वारा पंखोंसे आक्रान्त तथा शत्रुओंसे दूरी तरह लड़ता हुआ कोई सुभट मूर्च्छित हो गया ॥१४॥

१५

स्पष्ट रूपसे गण्डस्थलसे क्षरती हुई मदधाराकी लालसासे जिसमें भ्रमरशब्द हो रहा है, ऐसे नींदमें कोई सुभट हाथीदाँतीकी शय्यापर सो गया। जिसमें बीरोके युद्धका बहाना ढूँढ लिया गया है, जिसमें गौधोंकी चौकोसे मनुष्योंका मांस खाया जा रहा है, जिसमें वीसड ? वसा और रस उछल रहा है, जो कालदूतरूपी महाराक्षसका रसोईघर है, जिसमें प्रहारसे भग्न होकर भीरु मनुष्य चले गये हैं, आक्रमण करते हुए थोड़ा रौद्रभावसे घूम रहे हैं, जो पूर्व वैरके सम्बन्धसे अत्यन्त दारुण है; जिसमें धावसे रक्करूपी जल वह रहा है, जिसमें विद्याधर राजाओंके समूहकी हिंसा की जा रही है, ऐसे युद्धमें तारकने हरि (द्विपृष्ठ) को ललकारा, “हे सुभट, अपने कान्तदाँतीसे पहाड़की दीवारके भेदनमें दारुण गज तुमने जिस प्रकार नहीं दिया, तथा जिस प्रकार तुमने भाईके कानोंको कट्टे लगनेवाले अप्रिय कथन दूतके सामने किया; हे मूर्ख, उसी प्रकार तुम क्या नहीं युद्ध करते, शान्तिके मन्त्रिमन्त्रको क्यों नहीं समझते ?” तब पृथ्वीनाथकी विजयलक्ष्मीको धारण करनेवाले दानवोंके शत्रु (द्विपृष्ठ) ने राजासे कहा, “हे दीन, पाँच महाभूतोंसे शर्म नहीं आती, तुम भेरे सामने क्यों गरजते हो। राज्यरूपी वातके गर्वसे तुम धमण्ड करते हो। रे मूर्ख, तुम पराया धन क्यों माँगते हो ?” यह कहकर उसने पुखके साथ जिसमें हुंकारका स्वरवर लगा हुआ है ऐसे

१५-१. AP पडिकरि; K पडिकरि but corrects it to परिफुडं । २. AP महारसे । ३. AP रखा-
वसे । ४. AP माणसे । ५. A दारणो । ६. A जेण । ७. AP तेम । ८. AP पहरणाई, K पहरणाई
but corrects it to परहणाई ।

१५ एतं तारणं चियारिया वइरिबाण बाणेहिं वारिया ।
गाईं पाय पायहिं कयफंगा लोहवन्तं पिसुण व्व गिग्गुणा ।
घत्ता—पडिकण्हें कण्हहु पट्टविच्च अलयइच्च उहामच्च ॥
अइदीहरु कालच्च पंचफहु भीयरु मारणकामच्च ॥१५॥

१६

दुवईं—सो गरुडेण हणेवि खणि घैल्लिच्च पडिच्चल्लणवारिणा ॥
मायातिमिरपडल्लु ता पेसिच्च तहु हुंकरिच्च वइरिणा ॥
तं पि विचक्खल्लक्खखयकालें हरिणा णासिच्चं रविथरजालें ।
इय दिग्वावहंपंतिच्च छिण्णच्च बहुयच्च लक्खकोडिसयगण्णच्च ।
५ पुणु बहुरुविणिच्चिज्जपहावें जुल्लिच्च पडिहरि कुडिलसहावे ।
सा वि पणट्टु जण्हणपुण्णें सिरिमइत्तणएं अंज्जणवण्णें ।
लेवि चक्कु करि भामिच्चि च्चुत्तं देहि हत्थि मा मरहि णिरुत्तं ।
ता पडिल्लविच्च उवायापुत्तें किं ससहरु जिप्पइ णक्खत्तें ।
जइ ण धरमि रंहंगु सइं हत्थें तो पइसमि हुयवैहु परमत्थें ।
१० मरु को मरइ संढ तुह धाएं मुक्कु चक्कु तो तारयराएं ।

तीर छोड़े। आते हुए उन तीरोंको तारकने विदारित कर दिया। शत्रुके बाणोंका उसने बाणोंसे निवारण कर दिया, जैसे नागोंके द्वारा फन उठाये हुए नाग हों। वे तीर लोहवन्त (लोहेसे बने, लोभयुक्त) और दुष्टकी तरह, निर्गुण (डोरी रहित—गुणरहित थे)।

घत्ता—प्रतिकृष्ण तारकने द्विपृष्ठके ऊपर उहाम अत्यन्त दीर्घ काला पांच फनका भयंकर मारनेकी इच्छावाला जलसर्प फेंका ॥१५॥

१६

उसे द्विपृष्ठने शत्रुबलकी ज्वालाके लिए जलके समान गरुड़ बाणसे एक क्षणमे नष्ट कर दिया। तब दुश्मनने हुकार करते हुए उसके ऊपर मायावी (कृत्रिम) अन्धकारका पटल फेंका। उसे भी विपक्षके लक्ष्यके लिए क्षयकालके समान सूर्यकिरण जालसे नारायणने नष्ट कर दिया। इस प्रकार सैकड़ो लाख करोड़से गुणित बहुत-सी दिव्य आयुधपक्तियां छिन्न हो गयीं। फिर प्रतिनारायण बहुरूपिणी विद्याके प्रभावसे और अपने कुटिल स्वभावसे लड़ता रहा। वह विद्या भी जनार्दनके पुण्य और श्यामवर्ण श्रीमतीके पुत्र द्वारा नष्ट कर दी गयी। तब उसने अपना चक्र हाथमे लेकर और घुमाकर कहा कि “हाथी दे दो, निश्चय ही तुम मत् मरो।” इसपर द्विपृष्ठने प्रत्युत्तर दिया, “क्या नक्षत्रके द्वारा चन्द्रमा जीता जा सकता है; यदि मैं तुम्हारे चक्रको अपने हाथमे ग्रहण नहीं करता, तो मैं वास्तवमें अनिनमें प्रवेश करूंगा। मूर्ख नपुंसक, तुम्हारे आघातसे कौन मरता है।” तब तारक राजाने चक्र छोड़ा।

१. A. एति. १०. P. लोहवन्ता ।
१६. १. A. सो घल्लिच्च । २. A. तहि पेसिच्च । ३. A. हववहि ।

घत्ता—रक्खंतहं गियवइणिग्भयहं पहरणेहिं पहरंतहं ॥
तं आयउ सयलहं पत्थिवहं झ त्ति घरंत घरंतहं ॥१६॥

१७

दुवई—देवासुरणरिंदफणिखेयरकिणरदप्पहारयं ॥

भुयणुज्जोयकारि माणिकमउहविराइयारयं ॥

माणुविदु णं किरणहिं जंडियउं	वासुएवकरणियडइ पडियउं ।	
धरिवि तेण करि जंपिउं एहउं	एवहिं तुज्जु सरणु कहिं केहउं ।	
करहि केर बलएवहु केरी	अणुहुंजहि संपय गरुयारी ।	५
ता पडिसत्तु चवइ विहसेप्पिणु	मंडाखेंड भिक्खुं पावेप्पिणु ।	
जिह णञ्चइ संतोसं देसिउ	तिह तुहुं एण रहं गे हंरिसिउं ।	
रासहु होइवि हत्थिहिं लग्गइ	वायसु होइवि गरुडहु विग्गोहिं ।	
पत्थरु होइवि मेरु व मण्णहि	अप्पउ वारु वारु किं वण्णहि ।	
रे गोवालवाल णउ लज्जहि	महुं अग्गं भडवाएं भज्जहि ।	१०

घत्ता—लइ रक्खउ तेरउ सीरहरु एवहिं मारमि लग्गउ ॥

किं चुक्कइ काणणि केसरिहिं दिट्ठिंपंथि णिज्जवडिउ मउं ॥१७॥

घत्ता—अपने स्वामीको निर्भय बनानेवाले रक्षकोंके अस्त्रोंसे प्रहार करते हुए और समस्त राजाओंके पकड़ते हुए भी वह चक्र आया ॥१६॥

१७

देव, असुर, नरेन्द्र, नाग, विद्याधर और किन्नरोंका दर्प हूरण करनेवाला, विश्वको आलोकित करनेवाला, माणिक्य किरणोंसे शोभित धाराओंवाला, किरणोंसे विजडित सूर्यविम्बके समान वह चक्र वासुदेवके हाथके निकट आकर ठहर गया। उसने उसे हाथमें लेकर यह कहा कि “बताओ इस समय तुम्हारी शरण कौन है? तुम बलभद्रकी आज्ञा मानो और अपनी भारी सम्पत्तिका भोग करो।” तब प्रतिशत्रु तारक हंसकर कहता है, “अपूपखण्ड भीखमें पाकर देशी आदमी जैसे सन्तोषसे नाच उठता है, वैसे ही तुम इस चक्रसे प्रसन्न हो रहे हो, गये होकर तुम सिंहासे लड़ते हो। कौआ होकर गरुड़से युद्ध करते हो, पत्थर होकर अपनेको मेरु समझते हो, अपने आपको रोक-रोकी, स्वयंका क्या वर्णन करते हो? रे-रे ग्वाल बच्चे, धर्म नहीं आती। मेरे आगे सुभट हवा भग्न करना चाहता है।

घत्ता—ले तू अपने बलभद्रको बचा, इस समय लड़ते हुए उसे मारता हूँ। क्या जगलमें सिंहके वृष्टिपथमें आया हुआ मृग बच सकता है?” ॥१७॥

१७. १. A जलियउ । २. A भिक्खु । ३. P रहसिउ । ४. AP वग्गहि । ५. AP णिवडिउ । ६. AP गउ ।

१८

दुवर्द्ध—एव भणेवि धोर विसविसमविसणवणिसियअसिवरं ।।

अरि करिकुंभकलियधवलुज्जलमोत्तियपंतिदंतुरं ।।

यक्कउ करयलेण उग्गामिवि	ता सिरिरमणे णहयलि भामिवि ।
मुक्कु चक्कु दुक्कउ रिउकंठहु	णावैइ अत्थसिहरिउवकंठहु ।
५ जाइधि दिणयरविंवु णिमैण्णउं	लोहियलित्तउं लोहियवण्णउं ।
ससयणसडयणदिण्णसुहेल्लिहि	फुल्लु णाडं हरिसाहसवेल्लिहि ।
हसिय्येपुसियेपरणरवइरायहु	पड्डिउ सीसु तारयणरणाहहु ।
खग्गे वसिकिउ लोउ असेसु वि	मागहु वरतणु जित्तु पहासु वि ।
जिह भहि सिद्धी अद्दु तिविद्धहु	तिह हूई णिवैरिद्धि दुविद्धहु ।
१० उंत्तंगत्ते धणु सो सत्तरि	जीविउं वरिसलक्ख बाहत्तरि ।
पावे पाविउ सत्तमु महियलु	तहि अवसरि णियमणि चिंतइ बलु ।
जहि पड्डिकेसउ तहि गउ केसव	काले णड्डियउ णिवडइ वासवु ।
एस भणेपिणु पासि तिगुत्तहु	व्रउ लइयउं समत्थुं ^१ समचित्तहु ।
बहुरिसिवंवे समउ समाहिउ	केवलणाणसिरीइ ^२ पैसाहिउ ।

१८

इस प्रकार कहकर वह धीर विषके समान विषम जलवाले, समुद्रके समान पैनी और शत्रुगजोंसे स्वलित धवल उज्ज्वल भोतियोंकी पंक्तिकी दांतोंवाली तलवार हाथमे उठाकर स्थित हो गया। इतनेमें नारायणने आकाशमे घुमाकर चक्र छोड़ा। वह शत्रुकण्ठपर इस प्रकार पहुँचा, मानो जैसे अस्ताचलके निकट जाकर दिनकरका विम्ब निमग्न हो गया हो, लोहित (लालिमा और रक्त) से लिस लाल-लाल रंगका। जैसे वह स्वकीय जनरूपी भ्रमरोको सुख देनेवाली नारायणके साहसरूपी लताका फूल हो, जिसने शत्रुराजाओंका उपहास और नाश किया है, ऐसे तारक राजाका सिर गिर पड़ा। नारायणने तलवारसे अशेष लोगोंको अपने वशमें कर लिया, उसने मागध, वरतणु और प्रभासको भी जीत लिया। जिस प्रकार त्रिपृष्ठके लिए बाधो धरती सिद्ध हुई थी, उतनी ही नृप ऋद्धि द्विपृष्ठकी भी हुई। ऊँचाईमें वह सत्तर धनुष था और उसका जीवन बहत्तर लाख वर्षका था। पापसे उसे सातवें नरक जाना पड़ा। उस अवसर बलभद्र अपनेमे विचार करते हैं कि जहाँ नारायण गया, वही प्रतिनारायण गया। कालसे प्रतारित इन्द्रका भी पतन होता है। यह कहकर उसने समचित्त त्रिगुप्त मुनिके पास समर्थ व्रत ग्रहण कर लिया। बहुत-से मुनिसमूहके साथ सावधान वह केवलज्ञानरूपी लक्ष्मीसे प्रसाधित हो गया।

१८. १. AP °गलिय° । २. A णं रवि अत्थ° । ३. A णिवण्णउ । ४. P हसिउ पुसिय° । ५. A पुसिउ ।
६. A णिव ऋत्ति दुविद्धहु । ७. AP उत्तुगत्ते । ८. AP चिंतइ णियमणि बलु । ९. AP वउ ।
१०. A समत्तु णियचित्तहु । ११. AP °रिसिविधहि । १२. P पहासिउ ।

घत्ता—गत्त मोक्खहु अचलु अकंपे^३इ भरहणरेसरवंदिउ ॥
जोइसविमाणवासियपवर^१ पुप्फदंतसयवंदिउ ॥१८॥

१५

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणाळंकारे महाभव्वरहाणुमणिए महाकहपुप्फयंतविरइए
महाकव्वे अचलहुविट्टतारयकहंतरं णाम चउवण्णासमो
परिच्छेओ समत्तो ॥५४॥

घत्ता—अकम्पित बुद्धि भरतेश्वरके द्वारा वन्दित अचल मोक्षके लिए गया, ज्योतिष
विमानोमे निवास करनेवाले प्रवर नक्षत्रोंके द्वारा वन्दनीय ॥१८॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुराणोंके गुणाळंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त
द्वारा विरचित एवं महामन्व्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका अचक द्विपृष्ठ
तारक कथान्तर नामका चौवनवों परिच्छेद समाप्त हुआ ॥५४॥

संधि ५५

तवसिरिराइयहु मुणिझाइयहु सयमहमहियपैयावहु ॥
वंदिवि कमजभलु गिज्जियकमलु विमलहु विमलसहावहु ॥ध्रुवकां॥

१

	णरल्लमहिलं	वज्जियमहिलं ।
	जेण विरइयं	भोयविरइयं ।
५	सत्थं सारं	वयणंसारं ।
	जस्स गहेउं	हिंसाहेउं ।
	णह्मसमोहं	वड्ढियमोहं ।
	काउं समयं	मयमाणमयं ।
	पत्ता णरयं	जे ताणरयं ।
१०	मुवणमहीसं	कह लहिही सं ।
	पइं परिहीणं	जिण पडिही णं ।
	णारयविवरे	णविए विवरं ।
	णासइ गरयं	जणियंगरयं ।
	ण हु उल्लुहंते	सरणमहं ते ।
१५	देव पइट्ठो	तं महं इट्ठो ।

सन्धि ५५

जो तपरूपी लक्ष्मीसे शोभित है, मुनियोंके द्वारा जिनका ध्यान किया गया है, जिनका प्रताप इन्द्रके द्वारा पूजित है, जो विमल स्वभाववाले है, ऐसे विमलनाथके कमलोंको पराजित करनेवाले चरणकमलोंकी मैं वन्दना करता हूँ ।

१

जिन्होंने नरकुलोंको पृथ्वी प्रदान की है, जो महिलासे रहित है और जिन्होंने भोगसे विरहित परमार्थभूत सार्थक वचनांशवाले शास्त्रकी रचना की है । जो हिंसाके कारणभूत समता-समूहके नाशक मोहवर्धक शास्त्रको ग्रहण कर तथा मान और मद बढ़ानेवाले शास्त्रकी रचना कर उसमे अनुरक्त होते है, वे नरकको प्राप्त होते है । जो विश्व, बुद्धिविहीन है वह सुख कैसे प्राप्त कर सकता है । हे जिन, आपसे रहित यह विश्व निश्चित रूपसे नरकमें पड़ेगा, गरुडके द्वारा कामभाव-को उत्पन्न करनेवाला विष ध्वस्त नहीं किया जा सकता । उल्लुओंके हन्ता कौओंके निकट भेरी शरण नहीं है । हे देव, मैं तुम्हारी शरणमें हूँ, वही मुझे इष्ट है । गृहेन्द्रोंको त्रस्त करनेवाला महेंद्र

१. १. A सिरिरायहु । २. AP पहावहु; K पहावहु but corrects it to पयावहु । ३. AP जुवलु ।

४ A जे ताणरयं; P जेताणरयं । ५. A महु ।

इय शुद्धायं	करइ सुवायं ।
तसियगहिंदो	जस्स महिंदो ।
तं गुणविमलं	णविदं विमलं ।
हयमोहंगं	तस्स कहंगं ।
भणिमो सरसं	वारियसरसं ।

२०

घत्ता—तेरहमउ अवरु जणसंतियरु सुत्तगोफसोमालइ ॥
अचमि णरहियइ खयविरहियइ जिणु कव्वुप्पलमालइ ॥११॥

२

धादइसंडइ परिभमियहरि
तहि पुव्वविदेहि तरंतकरि
तहि दाहिणकूलि कलंबहरि
फलरंसववह रुक्खसोक्खसयरि
पहु पडमसेणु पडमारमणु
कयलीदलवीयणसीयरइ
संदाणिलचालियकुसुमरइ
वयणुगयधीरघम्मंज्जुणिहि

पुव्वामरगिरिगंभीरदरि ।
सीयां णामे अत्थि सरि ।
णवसत्तकळयल्लाइयैमिहिरि ।
रम्मयवइदेसि महाणयरि ।
णवजोवणु रमणीमणदमणु ।
दिसिउगयसरसरसीयरइ ।
अण्णहि दिणि वणि पीडंकरइ ।
पार्यति थ सव्वगुत्तमुणिहि ।

५

जिन विमलनाथकी इस प्रकार शोभन स्तुति वचनोंकी रचना करता है, ऐसे गुणोंसे पवित्र उनको मैं नमन करता हूँ । तथा मोहको नष्ट करनेवाले, सरस परन्तु काम सुखसे रहित उनके कथांगका कथन करता हूँ ।

घत्ता—जनशान्तिके विधाता तेरहवें जिनवर विमलनाथकी मैं कवि पुष्पदन्त मनुष्योंका हित करनेवाली सुन्दरतम उक्तियोंसे रचित, क्षयसे रहित काव्यरूपी कमलमालासे अर्चना करता हूँ ॥११॥

२

जिसमें सूर्य परिभ्रमण करता है ऐसे धातकीखण्डमें पूर्व सुमेरुपर्वतकी गम्भीर घाटी है । उसके पूर्वविदेहमें, जिसमें गज तैरते हैं ऐसी सीता नाम की नदी है । उसके दक्षिण किनारेपर कदम्ब वृक्षोंको धारण करनेवाला जिसमे नव सप्तपर्णी वृक्षोंसे सूर्य आच्छादित है और जो फलरसके प्रवाहवाले वृक्षोंके कारण सुखदायक है ऐसे रम्यकवती देशमें महानगरी है । उसमे राजा पद्मसेन था । लक्ष्मीसे रमण करनेवाला वह नवयुवक और रमणियोंके मनका दमन करनेवाला था । एक दूसरे दिन, जो कदली वृक्षोंके पत्तोंके पंखोंसे शीतल है, जिसमें सरोवरोंके शीतल जलकण दिशाओंमें उड़ रहे हैं, जिसमे मन्द पवनसे कुसुमपराग आन्दोलित हैं, ऐसे पीतंकर नामके वनमें, जिनके मुखसे धीर घर्मध्वनि निकल रही है ऐसे सर्वगुप्ति नामके मुनिके चरणोंमें अपने पुत्र

६. AP °गुंफसोमालइ, T गोंफ° ।

२. १. AP अवरविदेहि । २. AP सीओया । ३. P °मिहरि । ४. A °रिसवद्धमववसोक्खसयरि; °रसवद्ध-
रुक्खसोक्खसयरि । ५. P घम्मु ङुणिसि । ६. A सव्वगुत्ति° ।

संपयपइ पत्रमणाहु करिवि । आरंभइंभविहि परिहरिवि ।
 थक्कच रिसिदिवखइ दिक्खियच । एयारह अंगईं सिक्खियच ।
 घत्ता—मल्लु उड्ढावियच समु भावियच पंकयसेणं घणघणु ॥
 पक्खि व पंजरइ हुक्किंयविरइ धम्मज्झाणि धरिउं मणु ॥२॥

३

सुक्किउ भववासकिलेसहर । आवज्जिवि तित्थयरत्तयर ।
 सुउ मुक्काहार विसुद्धमइ । हुउ सहसोरइ सहसारवइ ।
 अट्टारहजलहिपेमाउधरु । चउरयणिसरीरु अरोयजरु ।
 णवमासहिं एक्कसु सो ससइ । परमाणुय वर मणेण गसइ ।
 ५ णवणवसहंसहिं संवच्छरहं । सुहुं जणइ णिण्वि सुहुं अच्छरहं ।
 जावंजणमहि ता णाणगइ । तहु गुण किं चण्णइ खंडकइ ।
 ते दीहु कालु दिवि संचरिउं । जइयहुं अयणंतरु उववरिउं ।
 तइयहुं पढमिदं लक्खियउं । सहस ति कुबेरहु अक्खियउं ।
 इह भरहखेत्ति कंपिल्लपुरि । पुरुदेववंसि विम्हवियंसुरि ।
 १० कयवम्मु राउ तहु धरणि जय । णं विहिणा वम्महवित्ति कय ।
 घत्ता—ताहं महाराणुहं वेण्णिं वि जणहं होसइ भवणि भट्टारउ ॥
 कम्ममणोरहहं अट्टारहहं णियदोसहं खयगारउ ॥३॥

पद्मनाथको सम्पत्तिके स्थानपर नियुक्त कर, आरम्भ और दम्भकी विधिको छोड़कर स्थित हो गया। मुनिदीक्षासे दीक्षित उसने ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया।
 घत्ता—पद्मसेनने मलका नाश किया, समताका सघन चिन्तन किया। पिंजड़ेमे स्थित पक्षीकी तरह पापसे विरत धर्मध्यानमें उसने मन लगाया ॥२॥

३

संसारवासके क्लेशको दूर करनेवाले पुण्य और तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध कर निराहार विशुद्धमति वह मर गया तथा सहस्रार स्वर्गमे इन्द्र हुआ। उसकी आयु अट्टारह समुद्र प्रमाण थी। ज्वर और रोगसे रहित उसका चार हाथ शरीर था। नौ माहमे एक बार, वह सांस लेता। अट्टारह हजार वर्षमें मनसे परमाणुओंका भोजन करता, अप्सराओंका मुख देखनेसे उसे सुख उत्पन्न हो जाता। जहाँ तक अंजनाभूमि (नरकभूमि) है वहाँ तक उसके ज्ञानकी गति है। यह खण्डकवि पुष्पदन्त उसके गुणोका क्या वर्णन करता है। वह लम्बे समय तक स्वर्गमें संचार करता रहा। जब उसके छह माह शेष बचे तब प्रथम स्वर्गके इन्द्रने जान लिया और अचानक कुबेरसे कहा, "इस भरत क्षेत्रके कापिल्य नगरमें देवोंको विस्मित करनेवाले पुरुदेव वंशमे कृतवर्मा नामका राजा है, उसकी गृहिणी जया है जो मानो विधाताने कामदेवकी वृत्ति बनायी हो।
 घत्ता—महाराणुवाले उन दोनोंके घरमे आदरणीय जिन उत्पन्न होंगे, कर्मके मनोरथो और अट्टारह अपने दोषोंका क्षय करनेवाले ॥३॥

७. AP धरियउ ।

३. १. P जलहिपरमाउं । २. A चउरयण । ३. A परमाणुवरसुमणेण । ४. A सहसइं । ५. A त ।

६. AP विमह्यसुरि । ७. AP दोहं मि ।

जम्बूहादिषु तुरियवं जाहि तुहुं
ता पुरवरु णिहिणाहें विहिचं
दहिक्कुट्टिमयलजियसरयधणु
वणरुक्खराइसुरहियपवणु
सयणागमहरिसियपवरयणु
धणु दिज्जइ जैंहि बहुदैसियहं
सियसिहरवद्धधयपाडलिचं
ललियंगपसाहियकामियणु

घत्ता—णरणियराउलइ तहिं राउलइ जयदेविइ सुहुसुत्तइ ॥

सिवाणावलि णिसिहिं उगयदिसिहिं दीसइ कोमलगत्तइ ॥४॥ १०

करि दाणजलोज्जकवोलयलु
पंचाणणु रुइहयहारमणि
दुइ सुमणालउ मालउ खयलि
त्तिमि दोण्णिं रमंतं तरंतं जलि
दो कलस ससलिलं सकमल सदल

करि पुरु वरि चित्तिं भोयसुहुं ।
णं सग्गखंडु धरणिहि णिहिचं ।
गयणग्गलगमणिमयभवणु ।
वणरुहुसररयकलहंसयणु ।
रयणंसुजालजियतियसधणु ।
सियरहियहं णिच्चपवासियहं ।
पाडलपूर्यफलदुमललिचं ।
कामियणपरोप्परदिण्णमणु ।

५
देकंतुं वसहु जियवसहवलु ।
अरविदणिलय माहवरमणि ।
हिमयर अहिमयरुगय विउलि ।
संणिहिय मणोरम धरणियलि ।
णलिणालय मयरालय विमल ।

४

हे यक्षराज, तूम शीघ्र जाओ और धरतीपर नगर और चिन्तित सुख उत्पन्न करो ।” तब कुबेरनाथने पुरवरकी रचना की मानो स्वर्गखण्डको ही धरतीपर रख दिया गया हो । जिसमें स्फटिक मणियोके तल द्वारा शरद मेघ जीत लिया गया था, जिसके मणिमय भवन गगनतलको छूते थे, जहाँ वनवृक्षराजिसे पवन सुरमित था, जिसके कमलसरोवरोमे कलहंससमूह रत हैं, जहाँ स्वजनोके आगमसे प्रचुर जन प्रसन्न होते हैं, जहाँ रत्नोके किरणजालसे देवोका धन जीत लिया गया है, जहाँ बहुतसे देशी लोगो तथा धन रहित नित्य प्रवासियोको धन दिया जाता है, जहाँ श्रीशिखरो पर रंगबिरंगी पताकाएँ है, जो पाटल पूगफल (सुपाडो) वृक्षोसे सुन्दर है, जहाँ कामिनीजन सुन्दर अगोसे प्रसाधित है, जहाँ कामी लोग एक दूसरे पर मन देते हैं—

घत्ता—मनुष्य समूहसे संकुल उस राजकुलमे सुखसे सोयी हुई कोमल देहवाली जयदेवी प्रभातके समय रात्रिमे स्वप्न देखती है ॥४॥

५

मदजलसे आर्द्र कपोलतलवाला हाथो, वेलोका बल जीतनेवाला गरजता हुआ हाथी, अपने कान्तिसे हारमणिको तिरस्कृत करनेवाला सिंह, कमलधरवाली लक्ष्मी, आकाशतलमे दो पुष्पमालाएँ, आकाशमे उगे हुए चन्द्रमा और सूर्य, जलमें तैरती और क्रीड़ा करती हुई दो मछलियाँ, दल, कमल और जलसे सहित धरतीपर रखे हुए सुन्दर दो कलश, स्वच्छ सरोवर और समुद्र,

४. १. AP वर । २. A चितियभोयसुहुं । ३. A^० सिरियवलहसगणु । ४. AP तहिं । ५. A पाडल-पूर्यफल । ६. AP सुहुं सुत्त ।

५. १. A टिकंतु । २. A दोण्ण । ३. AP तरंतं रमंतं । ४. P कलस सलिल ।

आसंदी हरिणरायधरिय
गाइगिगिजंतगेयमुह्लु
मगिरासि सिहाहिं फुरंतु सिहि

अमरिंदवसहि पहपरियरिय ।
गाइंदहु केरंडं सउहयलु ।
सिविणोलि गिहालिय द्विणदिहि ।

धत्ता—सा सीमंतिणिय पीणत्थणिय दंसणु दइयहु भासइ ॥

१० देउं गराहिवइ पडिबुद्धमइ तं फलु ताहि समासइ ॥५॥

६

पयपुंडरीयजुयणविचिसुव
मयरद्धयधयणिल्लूरणव
इंदापसं गिम्मच्छरउ
जयदेविहि देहु पसंसियउ ।
५ छम्मासु हेमधाराधरहिं
जेठ्ठुं मासहु तमदसमिदिणि
रयणेहिं सुरेहिं संशुयचरिउ
णिहिंकेलससविककं पयडियउं
जइयहुं सायरसम तीस गय
१० पल्लतपणट्टइ धम्मि वरि
कंचणचूलालिहियंनुहरि

अरहंतु अणंतु तिलोयगुरु ।
परमेसरि होसइ तुह तणउ ।
एत्थंतरि आयउ अच्छरउ ।
गळभासयदोसु विहंसियउ ।
वरिसिउ जक्खहिं णं जलहरहिं ।
उत्तरभहवयइ हिमकिरणि ।
करिरुवें गळिभ समोयरिउ ।
णवमास पुणु वि वसु णिवडियउं ।
मिच्छतें दूसिय सयल पय ।
१० णिवुइ बारहमइ तित्थयरि ।
तइयहुं कयवम्महु तणइ धरि ।

सिंहके द्वारा धारण की गयी बैठक (सिंहासन), प्रभासे आलोकित देवविमान, नागिनीके द्वारा गये गये गीतसे मुखर नागका भवनतल, रत्नराशि और ज्वालाओंसे जलती हुई आग । इस प्रकार भाग्यशाली स्वप्नावली देखी ।

धत्ता—पीनस्तनोंवाली वह सीमन्तिनी अपने पतिसे कहती है । प्रतिबुद्धमति नरराज देव उसका फल उसे बताते हैं ॥५॥

६

जिनके चरणकमलोंमें देव नमन करते हैं ऐसा अरहन्त अनन्त त्रिलोकगुरु कामदेवका नाश करनेवाला पुत्र, हे परमेश्वरी, तुम्हारे उत्पन्न होगा । इसी बीच इन्द्रके आदेशसे मत्सरसे रहित अप्सराएँ वहाँ आयीं । उन्होंने जयादेवीकी प्रशंसा की और गर्भाशयके दोषको दूर किया । जलधरोकी भाँति यक्षोंने छह माह तक स्वर्णमेघोंकी वर्षा की । ज्येष्ठ माहके शुक्ल पक्षकी दसमीके दिन, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमे चन्द्रमाके रहनेपर, रत्नों और देवों द्वारा संस्तुत चरित्र, देव हाथीके रूपमे गर्भमे अवतरित हुए । (कुबेरने) निधिकलशोंमें अपना विक्रम प्रकट किया और नौ माह तक और धनकी वर्षा हुई । जब बारहवें तीर्थंकरके निर्वाण कर लेनेपर तीस सागर, प्रमाण समय बीट गया तब समस्त प्रजा मिथ्यात्वसे दूषित हो गयी । एक पत्य पर्यन्त धर्मके नष्ट होनेपर कृतवर्माके स्वर्णशिखरोंसे मेघोंको छूनेवाले धर्म तब—

५. P ताव ।

६. १. AP °णमिय° । २. A °कलसविमुक्कउ । ३. A धम्मवरि ।

घत्ता—माहचर्त्तियहि वैडिद्वयससिहि सिवजोयइ जिणु जायन ॥
संदणहयगयहिं लंविधययहिं चउदिसु सुरयणु आइच ॥६॥

७

मायासिसु मायहि डोइयउ
कर मउल्लिचि पणविचि परमपरु
करि पेज्जिउ चञ्जिउ गयणयलि
उंघेविणु रविससिमंडलइं
गउ तेत्तहिं जेत्तहिं पंडुसिल
मंदरगिरिसिरि विरइउं णहवणु
पंडुरि ससहरकरासिहरि
सिसु संसिचि जय चिरु सुकयतव
कालेण पवडिद्वर जिणुं तरुणु
सहंसहुत्तरमियलक्खणइं
वणणेण वि सहइ सुवणणणिहु
परमेसहु माणियवालवय
पणु सयमहेण पणविचि णहविच

सकें जिणवयणु पलोइयउ ।
पणु भत्तिइ लेविणु तित्थयरु ।
पडुपडहभेरिदक्कासुहलि ।
णं णहयललच्छिहि कुंडलइं ।
णिरु णिम्मल णायइ सिद्धइल ।
तहु देवहिं पुज्जिय दिव्वतणु ।
आणेपिणु णिहियउ जणंणिवरि ।
गय णञ्चिचि णायहु णायभव ।
गरुयारउ हूयउ सट्ठिधणु ।
तहु दिट्ठइं बहुयइं वेजणइं ।
हो किं मइं वणिणज्जइ अरिहु ।
वरिसहं पणारह लक्ख गय ।
रायत्तणि तिजगराउ थविच ।

५

१०

घत्ता—माघशुक्ला चतुर्थीके दिन शिवयोगमें जिनका जन्म हुआ । अपने लम्बे ध्वजों तथा रथों और गजोंके द्वारा चारों दिशाओंसे देव आये ॥६॥

७

इन्द्रने मायावी बालक माताको दे दिया और जिनवरका मुख देखा । हाथ जोड़कर, परमश्रेष्ठको प्रणाम कर फिर भक्तिसे तीर्थंकरको लेकर, वह हाथीको प्रेरित कर, पट्ट-पट्ट-भेरी और ढक्काओंसे मुखर आकाशमें चला । आकाशरूपी लक्ष्मीके कुण्डलोके समान सूर्यचन्द्रको लाँघकर वह वहाँ गया जहाँ पाण्डुक शिला थी, अत्यन्त निर्मल जैसे सिद्धशिला हो । मन्दराचल पर्वतके शिखरपर अभिषेक किया गया । देवोंने उनके दिव्य तनकी पूजा की । चन्द्रमाकी किरण-राशिका हरण करनेवाले माताके ध्रुव धरमे लाकर उनकी स्थापित कर दिया । “हे सुकृततप, चिरकाल तक तुम्हारी जय हो” इस प्रकार शिशुकी प्रशंसा कर देवता लोग अपने-अपने स्वर्गमें चले गये । समयके साथ जिन भगवान् बढ़ने लगे । तरुण जिन साठ धनुष प्रमाण हो गये । एक हजार आठ लक्षण और बहुते-से व्यंजन (सूक्ष्म चिह्न) उनके शरीरपर दिखाई दिये । वर्णमें वह स्वर्णके समान शोभित थे । अरे मैं अरहन्तका क्या वर्णन करूँ । परमेश्वरके द्वारा भुक्त बालकपन-की आयु पन्द्रह लाख वर्ष बीत गयी । पुनः इन्द्रने प्रणाम कर उनका अभिषेक किया और उन्हें

४. A °चउदिसिहि, P चउदिसिइ । ५. AP वट्टियं ।

७. १. P मत्ति । २. देवुं । ३. AP जणणिहरि; K जणणिकरे but corrects it to जणणिवरि ।

४. A जिण तरुणु । ५. A अट्टोत्तरसयमियं; P सट्टोत्तरसयमियं । ६. A तहु णवसयसंखइं;

P तहु तवसयसखइं ।

- वरिसहं वसिहृई द्विष्णकरा तित्थणियदहलकखइं मुत्त धरा ।
 १५ घत्ता—सुह्णिणविणिग्गमणि मह्हुआगमणि तीरोसैरियजलालत्त ।
 रविकिरणहिं ह्णिणिवि हिमकण पुणिवि गिंभे जित्तु सियालत्त ॥७॥

८

- अवलोइवि सो दलवद्वियत्त कालेण कालु पल्लद्वियत्त ।
 पहु चित्तइ अणुदिणु परिणवइ जणु तो वि ण जुंजइ धम्ममइ ।
 चिरु चित्तु दुच्चित्तहु णीणियत्तं दिवि दिव्वभोगसुहुं माणियत्तं ।
 पुणु जीवित्त जम्मणु आणियत्तं तिहिं णाणहिं तिहुवणु जाणियत्तं ।
 ५ इंदियवसेण ण विचेइयत्तं हा मइं वि ण अप्पत्तं चेइयत्तं ।
 धणैपुत्तकलत्तहिं मोहियत्तं मयत्तं द्दयवाणहिं जोहियत्तं ।
 अत्तइ ण णियत्तमि किं पि किहं अण्णमणु अण्णु अण्णाणु जिहं ।
 ता संवोहियत्तं लोयत्तियहिं अहिसित्तत्तं सुरवरपत्तियहिं ।
 कित्त देवयत्तसिवियारुहणु गत्तं सत्तं सहेत्तयणाम वणु ।

- १० घत्ता—माहचत्तियियहिं ससहरसियहिं छावीसमि णत्तत्तत्तइ ॥
 सहं सहसं णिवहं इच्छियसिवहं थित्तं जिणु जइणचरित्तइ ॥८॥

राज्यगद्दी (राज्यत्व) पर स्थापित किया । तीनगुना दस—अर्थात् तीस लाख वर्ष उन्हीने धरती-का भोग किया ।

घत्ता—हेमन्तके निर्गमन और वसन्तके आगमनपर श्रीष्म-ऋतुमे सूर्यकिरणोसे हिमकणो-को नष्ट कर जिसके तीरसे जल समूह हट गया है ऐसे शीतकालको जोत लिया ॥७॥

८

उस (शीतकाल) को ध्वस्त देखकर प्रभु विचार करते हैं कि “कालके द्वारा काल बदल दिया गया । मनुष्य प्रतिदिन बदलता रहता है फिर भी वह धर्ममत्तिसे युक्त नहीं होता । पहले मैंने चित्तको दुराचरणसे निकाला था, तथा स्वर्गमें दिव्यभोगोंका उपभोग किया । फिर जोवन जन्मको प्राप्त हुआ । ज्ञानसे त्रिभुवनको जान लिया । लेकिन इन्द्रियोंके वशीभूत होकर मैंने विवेकसे काम नहीं लिया । हा, मैंने स्वयंको नहीं चेतया । मैं धन, पुत्र और कलत्रसे मोहित हूँ, कामदेवके वाणोंके द्वारा देखा गया हूँ । किसी भी वस्तुको मैं किसी प्रकार विद्यमान (स्थिर) नहीं देखता हूँ । अज्ञानीके समान भ्रान्त चित्त मैं अन्य हूँ ।” तब लौकान्तिक देवोंने सम्बोधित किया और देवोंकी पंक्तियोने अभिषेक किया । उन्हीने देवदत्ता नामक शिविकापर आरोहण किया और वह शीघ्र ही सहेत्तुक नामक उद्यानमें पहुँचे ।

घत्ता—माघशुक्ला चतुर्थीके दिन छव्वीसवें उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें शिवकी इच्छा रखनेवाले एक हजार राजाओंके साथ वह जिन जैनचरित्रसे स्थित हो गये ॥८॥

७. A तीरोसरित् ।

८. १. AP परिणमइ । २. AP घम्मे मइ । ३. AP वणमित्तं । ४. A किहा । ५. A जिहा । ६. A वावीसमि and gloss श्रवणनक्षत्रे । ७. A जइचारित्तइ ।

तर्हि दिणि जयवैइ उववासियउ
वीयइ दिणि आयउ गंदरुंरु
झाणाणलहुयवम्मीसरहु
मणिपुंजें ढंकिउ तासु गिहु
छडमत्थें मेइणियलु भमिवि
दिक्खावणि जंबूरुक्खयलि
छट्टइ दिणि दिवसभाइ अवरि
देवे केवलु उप्पाइयउं
गयणगल्लग्गमाणिक्कसिहु
छाइयणहमंडलु पंचविहु

९

मणपज्जवणाणें भूसियउ ।
णंदिण णमंसिउ पुरिसुंपुरु ।
आहारु दिणु परमेसरहु ।
तर्हि चोज्जु वियंभिउं पंचविहु ।
संवच्छर तेण तिणिण गमिवि ।
माहम्मि मासि ससियरधवलि ।
छैन्वीसमि जायइ उडुपवरि ।
तियसउलु ण कत्थइ माइयउं ।
संपत्तउ दहविहु अट्टविहु ।
सोलहविहु तेत्थु वि तं तिविहु ।

५

१०

घत्ता—थुणइ सुराहिवइ कुसुमइं धिवइ अरुहहु उप्परि पायहं ॥

जिण तुहुं गयमलिणि हियवयणलिणि वसहिं रिसिहिं हयरायहं ॥९॥

१०

वत्तीसहं इंदहं तुहुं हियइ
तुहुं चंडु ण चंडु विमलवहणु
तुहुं सरहि ण सरहि वि खारजहु

तुहुं संसेविउ सासयसियइ ।
तुहुं सूरु ण सूरु वि णिडुहणु ।
तुहुं हरु णउ हरु वि पमत्तु णहु ।

९

उसी दिन जगत्पतिने उपवास किया और मनःपर्ययज्ञानसे विभूषित हो गये । दूसरे दिन वह नन्दपुर गाँव आये । उन श्रेष्ठ पुरुषको नन्दने नमस्कार किया । ध्यानकी अग्निमें कामदेवको भस्म करनेवाले परमेस्वरको उन्होंने आहार दिया । रत्नसमूहसे उसका घर आच्छादित हो गया । वहाँ पाँच आश्चर्य प्रकट हुए । छद्मस्थ रूपमें घरतीमें विहार कर उन्होंने तीन साल बिता दिये । माघ शुक्ला षष्ठीके दिन, दीक्षावनमें ही जम्बूवृक्षके नीचे दिनके अन्तिम भागमें, छम्बीसवें उत्तराभाद्र नक्षत्रमें देवको केवलज्ञान उत्पन्न हो गया । देवकुल कहीं भी नहीं समा सका । जिनके माणिक्योकी शिखाएँ आकाशतलको छू रही हैं, ऐसे आठ प्रकार और दस प्रकारके देव आये । और आकाशमण्डलको आच्छादित करनेवाले पाँच, सोलह और तीन प्रकारके देव वहाँ आये ।

घत्ता—देवेन्द्र स्तुति करता है, और अरहन्तके चरणोके ऊपर पुष्प वर्षा करता है कि “हे जिन, तुम मुनियोके द्वारा रागको नष्ट करनेवालोके मलसे रहित हृदयरूपी कमलमें बसते हो” ॥९॥

१०

तुम वत्तीसो इन्द्रोके हृदयमें हो, तुम शाश्वत श्रीके द्वारा सेवित हो, तुम चन्द्र हो, चन्द्रमा विमलवाहनवाला नहीं है । तुम सूर्य हो, जलनेवाला सूर्य सूर्य नहीं । तुम समुद्र हो, खारे जलवाला

९. १. AP जइवइ । २. AP णदिउर । ३. AP पुरिसवर । ४. A छम्मत्थें । ५. A वावीसमि; P छावी-समि । ६. AP छाइउ णहमंडलु । ७. A गयरायहं ।

१०. १. A पमत्तणहु ।

- पद्मं पद्मं तेहृत् जं कहमि
 ५ जहिं अरुच्छद्द तिजगु परिद्वियं
 संचलद्द जेणं जे परिणवद्द
 जं वण्णगंधरसफासधरु
 पद्मं दिट्ठद्द दीसद्द तं सयलु
 पद्मं दिट्ठे मुच्चद्द चउगद्दहि
 १० तुह सुहि संपावद्द परसु सुहं
 तुहं पुणु दोहं मि मज्झत्थमणु
 चत्ता—चेईहरवणहिं बहुतोरणहिं धयपंतिहिं पिहियंके ॥
 परिहागोवरहिं सालहिं सरहिं समवसरणु किं सक्के ॥१०॥

११

- तहिं जाया पीसरंतणुगिहिं
 गजंतमेहगंभीरसर
 छत्तीससहस पुणु पंचसय
 चत्तारि सहस अडसयवरहं
 ५ पणसहसद्दं अचरु वि पंचसय
 केवलिहिं रिसिहिं मणपज्जयहं
- पण्णास पंच गणहरमुगिहिं ।
 प्यारहसयमिय पुव्वधर ।
 तीसुत्तर सिक्खुयं मुणियणय ।
 अणगारहं सन्वावहिहरहं ।
 घोसंति साहु संजय विमय ।
 णवसहसद्दं वेत्तवणवयहं ।

समुद्र समुद्र नहीं है। तुम शिव हो, नृत्य करनेवाला और प्रमत्त शिव शिव नहीं है। उनको जो तुम जेसा मैं कहता हूँ तो मैं पण्डित समाजमें हास्यका पात्र बनता हूँ। जहाँ त्रिलोक प्रतिष्ठित है। जिसके द्वारा वह रुद्र और निश्चल रूपसे संस्थित है, जिससे चलता है और परिणमन करता है, जिससे नित्यरूपसे वह चेतनाको धारण करता है। जो वर्ण-गन्ध-स्पर्श और रूपको धारण करता है; और भी जो दूसरा चर-अचर है, तुम्हें देखनेपर वह समस्त दिखाई देता है, और दृढ मोह-शृंखलाएँ टूट जाती है। तुम्हें देखनेसे जीव चार गतियोंसे छूट जाता है, हे स्वामी, मुझे पाँचवीं गति प्राप्त हो। तुम्हारा सुख परम सुख प्राप्त करता है, और तुम्हारा शत्रु निरन्तर तीव्रतम दुःख प्राप्त करता है। लेकिन तुम दोनोंके प्रति मध्यस्थ मन रहते हो, लोग अपने हृदयमें इस आश्चर्य-को धारण करते हैं।

घत्ता—सूर्यको ढकनेवाले इन्द्रने चैत्यगृहवनों, बहुतोरणों, ध्वजपकितियों, परिखा और गोपुरों, शालाओं और सरोवरोंके द्वारा समवसरणकी रचना की ॥१०॥

११

वहाँ उनके जिनसे ध्वनि खिर रही है, ऐसे पचपन गणधर मुनि हुए। गरजते हुए मेघके समान गम्भीर ध्वनिवाले ग्यारह सौ पूर्वधारी, छत्तीस हजार पाँच सौ तीस शिक्षक मुनि। चार हजार आठ सौ पूर्ण अवधिज्ञानवाले मुनि, पाँच हजार पाँच सौ साधु संयत विमद केवलज्ञानी कहे जाते हैं। पाँच हजार पाँच सौ मनःपर्ययज्ञानी थे। नौ हजार विक्रिया-ऋद्धि धारण करनेवाले

२. A जेण जं परि । ३. A वदरिउ ण परि । ४. P इह । ५. A पिहियंकाहि । ६. A सक्किहि ।
 ११. १. A सिक्खिय ।

सहसाइं तिग्णि लेसासयइं वाइहिं विद्धंसियपरममइं ।
 संजइयहुं लक्खु तिसहससहिउं सावयहं लक्खजुयलउं कहिउं ।
 परिआणियजिणगुणपरिणइहिं चत्तारि लक्ख तहु सावयहिं ।
 तियसेहिं असंखाहिं वंदियउ संखेज्जतिरियअहिणंदियउ ।
 तिवरिसरहियइं णडियच्छरहं पण्णारह लक्खइं संवच्छरहं ।
 महिं हिडिचि लोयतिमिरु लुहिचि समेयहु सिहरु समावहिचि ।

१०

घत्ता—आसाढट्टमिहि कसणहि तमिहि परमप्यउ णिक्कलु हुउं ॥
 भरहमहीवइहिं फणिसुरवइहिं विमैलु पुप्फदंतहिं शुउं ॥११

इति महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महामन्वभरहाणुमण्णिप
 महाकइपुष्पर्यतविरहए महाकव्जे विमलणाहणिव्वाणगमणं
 गाम पंचवण्णासमो परिच्छेओ समत्तो ॥५५॥

थे । तीन हजार छह सौ परमतका विध्वंस करनेवाले वादी मुनि थे । एक लाख तीन हजार संयमको धारण करनेवाली आर्यिकाएँ थीं । दो लाख श्रावक कहे गये हैं । जिनवरके गुणोंकी परिणतिको जाननेवाली चार लाख श्राविकाएँ थीं । असंख्यात देवोंके द्वारा वह वन्दनीय थे । और संख्यात त्रियंबसमूह द्वारा वह अभिनन्दनीय थे । तीन वर्ष रहित, णडियच्छर (जिनमें अप्सराएँ नृत्य कर रही हैं, या जो अप्सराओंको वंचित करनेवाली हैं ?) पन्द्रह लाख वर्ष धरतीपर परिभ्रमण कर लोकान्धकार नष्ट कर सम्मेद सिखरपर आरूढ होकर—

घत्ता—आषाढ माहके शुक्लपक्षकी अष्टमीके दिन, (उत्तराषाढ नक्षत्र मे) भरतकी भूमिके राजाओं, नागराजाओं, देवेन्द्रो और नृक्षत्रों द्वारा स्तुत वह विमल निष्कल परमात्मा हो गये ॥११॥

इस प्रकार त्रैसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त, महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचिन एवं महामन्व भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका विमलनाय निर्वर्ण गमन नामका पचपनवों परिच्छेद समाप्त हुआ ॥५५॥

संधि ५६

सुरवंदहु विमलजिणिंदहु तिस्थि भीसु पाळियळलु ॥
रणि अबिभडियठ अमरिसि चडिठ महुहि सयंसु महाबलु ॥ध्रुवकां॥

१

दुवई—अवरविदेहि जंजुदीवासिइ सिरिउरि पिसुणदूसणो ॥

महिवइ णंदिमित्तु मित्तो इव णियकुलकमलभूसणो ॥

- ५ सो चित्तइ णियमणि णरवरिंदु खइ सव्वु लोच णं पुण्णिमिदु ।
धणु सुरधणु जिह तिह थिरु ण ठाइ पणइणि पुणु अण्णहु पासि जाइ ।
भायर णियभायहु अवयरंति कुलभवणि कुलहु कलयलु करंति ।
किंकर चहुयम्मु रयंति तेव सव्वस्सु पयच्छइ पुरिसु जेव ।
पोसंति णियंति सिसुं ण्हवंति मायाउ थणु आसौइ देंति ।
- १० भइणिउ बंधव बंधव भणंति ता जाम उयरपूरणु लहंति ।
सिरिलंपडु घरदन्वावहरणु तणुदहु वि पडिच्छइ तायमरणु ।
जगि कासु वि को वि ण एत्थु अत्थि मयगंधवसिं भमरेण हत्थि ।
गाइ वि सेचिज्जइ वच्छएण रंभासई दुद्धहु कएण ।

सन्धि ५६

देवोके द्वारा वन्द्य विमलनाथके तीर्थकालमे संग्राम प्रिय भीम और महाबली स्वयंभू
अमर्षसे भरकर युद्धमे मधुसे भिड गये ।

१

जम्बूद्वीपमें स्थित अपर विदेहके श्रोपुर नगरमें दुष्टोंके लिए दूषण नन्दीमित्र नामका राजा था जो मित्रके समान और अपने कुलरूपी कमलका भूषण था । वह श्रेष्ठ राजा अपने मनमें सोचता है कि विनाशकालमें समस्तलोक मानो पूर्णचन्द्रके समान है । जिस प्रकार इन्द्रधनुष, उसी प्रकार धन स्थिर नहीं रहता, कामिनी भी दूसरेके पास चली जाती है, भाई अपने भाईका अनादर करते हैं और कुलभवनमें अपने ही कुलसे कलह करते हैं । अनुचर इस प्रकार चापलूसी करते हैं कि जिससे पुरुष (मालिक) सब कुछ उन्हे दे डालता है । माताएं आशासे बच्चेको देखती हैं, स्नान कराती हैं, पोषण करती हैं और अपना दूध पिलाती हैं । बहनें तभी तक भाई-भाई करती हैं कि जबतक उनकी उदरपूर्ति होती रहती है । लक्ष्मीका लम्पट पुत्र भी घरके धनका अपहरण और पिताके मरणकी इच्छा करता है । इस संसारमे किसीका कोई नहीं है । जैसे मदनन्धके वशासे अमरके द्वारा हाथीकी ओर रंभाते हुए बछड़ेके द्वारा दूधके लिए गायकी सेवा

१. १. A omits रणि । २. A पुण्णिमिदु । ३. A कुलु भवणु कलहकलयलु; P कुलभवणि कुलहकलयलु ।

४. A सुसंहवंति । ५. P आसाउ ।

जणु इच्छइ सयलु सकज्जकरणु जीवहु पुणु जिणवरधम्मु सरणु ।

घत्ता—इय वोल्लिवि रँज्जु पमेल्लिवि सोसिर्थभीमभवण्णउ ॥ १५

जियकामहु सुव्वयणामहु पासि तेण लइयउं वउ ॥१॥

२

दुवई—जायउ सो भरेवि संणसें वम्महज्जणपावसेो ॥

पंचाणुत्तरम्मि तेत्तीसमहोवहिदीहराउंसेो ॥

भासइ गोत्तमु णियगोत्तसुरु

पंचिदियैरिउसंगामसुरु ।

सुणि सेणिवं कहमि मणोहिरासु

पइ पइ वसंति पुरणंगरगामु ।

गोजूहच्चिण्णसुहँरियतणालु

इह भरेहि देसु णामें कुणालु ।

तहि सावत्थी पुरि वसणहेउ

णिवसइ णरिंदु णामें सुकेउ ।

अवरु वि वलि तेत्थु जि अक्खकील

पारदु विहिं मि जूयारलील ।

चरंगमणछेज्जकड्डणपवंचु

वरंघायदायधरहरणसंचु ।

जाणिवि रँवंति किर वे वि जाम

एक्कं उट्ठिउं णियरज्जु ताम ।

हारंतउ सपुरु सकोसु देसु

थिउ एक्कलउ काणीणवेसु ।

१०

की जाती है इसी प्रकार सब लोग अपने कामकी इच्छा करते हैं। केवल जिनवरधम ही जीव-
की शरण है।

घत्ता—यह कहकर और राज्य छोड़कर उसने कामको जीतनेवाले सुव्रत नामक मुनिके
पास भीषण संसाररूपी समुद्रको जीतनेवाला व्रत ग्रहण कर लिया ॥१॥

२

कामरूपी ज्वालाके लिए पावसके समान वह संन्यासपूर्वक मरकर पांचवें अनुत्तर विमानमें
तैत्तीस सागर प्रमाण लम्बी आयुवाला देव हुआ। गौतम मुनि कहते हैं—अपने गोत्रके लिए
सूर्य, पांच इन्द्रियरूपी शत्रुके लिए शूर है श्रेणिक, मैं सुन्दर कथा कहता हूँ, सुनो। इस
भरत देशमें कुणाल नामका देश है, जहाँ पग-पगपर पुर, नगर और ग्राम हैं। जहाँ गाथोंका झण्ड
सुरमित तृणोका आस्वाद लेता है। वहाँ आवस्ती पुरी है। उसमें जुआ आदि खेलनेवाला सुकेतु
नामका राजा रहता था। एक और जुआ खेलनेवाला वलि नामका मनुष्य था। दोनोंने पासे
खेलना शुरू किया। चर (दूसरेकी गोट मारना), गमन (अपनी गोटकी रक्षा करते हुए,
दूसरेके धरसे अपने धरमें ले आना), छेज्ज (छेच) दूसरेकी गोट मारना, कड्डन प्रवंच (दूसरोसे
बचाकर अपनी गोट ले आना), उत्तम घात और दाय ? देना, धरहरण (दो-तीन गोटोंसे दूसरेके
घरको स्वीकार कर लेना, सच (दूसरेकी गोटके प्रवेशको रोकना) आदिको जानकर वे लोग तब-
तक खेले कि जबतक एकने अपना राज्य खो दिया। सुकेतु अपना पुर, कोश और देश हारकर
अकेला दोनरूपमें रह गया।

६. P इउ । ७. AP मेदणि वेल्लिवि । ८. A सोसीय^० ।

१ । AP पाउसो । २. AP जो इदिय^० । ३. A सेणि कहमि । ४. A णयर^० । ५. A सुरहिय^० ।

६. A भरहदेसि । ७. P वरणमण । ८. A वरदायघाय^० ; P परदायघाय^० । ९. P रमति ।

१०. A केउं उट्ठिउं ।

घत्ता—णउ हय गय णउ संदण घय एकु जि वसणे णडियउ ॥
वारंतहं गुरुहं महंतहं रायविलासहु पडियउ ॥२॥

३

दुवई—जे ण करंति देवगुरुभौसिंउ दुहमगवपरवसा ॥

ते णिवडंति एंव णिवरा मुवि दुज्जसमसिमलीमसा ॥

- मायाविणीइ विब्भमहरीइ सेज्जातबोलसुहं करीइ ।
आजाणुविलंबियेसाडियाइ वरं खज्जउ भाणउ चेडियाइ ।
५ णीसेससोक्खणिट्ठाडियाइ खणि खणि आयइ ण वराडियाइ ।
जूएण ण कासु वि कुसलु एत्थु गउ सो सुकेउ होइवि अवत्थु ।
वंदेवि सुदंसणु सुक्कवत्थु णाणेणालोइयसयलवत्थु ।
तउ लेप्पिणु थिउ लंबंतहत्थु चित्तवइ अट्टेणोण गत्थु ।
जइ अत्थि फलु वि तवतिव्वकम्मि तो मारेसमि आगमियजम्मि ।
१० पाडेसमि मत्थइ तासु वज्जु बलि जेण महारउ जित्तु रज्जु ।
इय संभरंतु संणासणेण मुउ जायउ भूसिउ भूसणेण ।
लंतवि सुरु सुक्कियसोहमाणु चउदहससुइजीवियपमाणु ।

घत्ता—णीसंगं जिणवरलिंगे बलि देवत्तु लहेप्पिणु ॥

असरालं जंतं कालं सुरणिलयाउ चवेप्पिणु ॥३॥

घत्ता—न उसके पास अश्व-भाज थे और न स्यन्दन-ध्वज । वह अकेला था । महान् गुरुओंके मना करनेपर भी उसका राज्यविलाससे पतन हो गया ॥२॥

३

दुर्दमनीय अहंकारके वशीभूत होकर जो देव और गुरुका कथन नहीं करते, संसारमें अपयशरूपी स्याहीसे मैले उन राजाओंका पतन हो जाता है । मायासे विनित, विभ्रमको धारण करनेवाली शय्या और ताम्बूल लिये अत्यन्त शुभंकारी, घुटनों तक लटकती हुई साड़ीवाली दासीके द्वारा मनुष्य खा लिया जाये, यह अच्छा है, परन्तु क्षण-क्षणमे इस बराटिका (कौड़ी) के द्वारा नहीं । इस संसारमे जूएमें किसीकी कुशलता नहीं है । वह सुकेतु निर्वस्त्र होकर चला गया । दिग्म्बर तथा जिन्होंने ज्ञानसे समस्त वस्तुओंको देख लिया है, ऐसे सुदर्शन मुनिकी वन्दना कर तप ग्रहण कर, हाथ लम्बे कर आर्तध्यानसे श्रुत वह विचार करता है कि यदि तपके तीव्रक्रमका कुछ भी फल है तो मैं आगामी जन्ममे उस बलिको मारूंगा, उसके मस्तकपर वज्र गिराऊंगा, कि जिसने मेरा राज्य जीत लिया है । इस प्रकार स्मरण करता हुआ वह संन्याससे मर गया और भूवणोसे अलंकृत तथा पुण्योंसे शोभमान वह लान्तव देव हुआ चौदह समुद्र पर्यन्त जीवनके प्रमाणवाला ।

घत्ता—अनासंग जिनवर दीक्षासे देवत्व पाकर बलि भी प्रचुर समय बीतनेपर देवविमानसे च्युत होकर— ॥३॥

३. १. AP^० गुरुनिपलं । २. P^० विडंबियं । ३. P वरि । ४. AP मुक्क वत्थु । ५. AP चोदं ।
६. AP^० पवाणु । ७. P णीसंगं ।

४

दुवई—इह भरहम्मि रयणपुरि णरवइ णामें समरकेसरी ॥	
वीणाकलपलावसंणिहङ्गुणि धरिणी तत्स सुंदरी ॥	
सो ताहं विहिं मि दिग्गयणिणाउ	लक्खणलक्खं कियदिब्बकाउ ।
सुउ जायउ मयरद्वयसभाणु	महु णामें णं उग्गामिउ भाणु ।
विसयल महि णिज्जिय तेण क्वं	णिहिघडधारिणि धरदासि जेवं ।
तहिं कालि गहीरत्तें ससुद्धु	दारावइपुरवरि राउ रुद्धु ।
महएवि तासु णामें सुहैइ	अण्णेक पुहइ पुहइ व्व भइ ।
तहिं पढमइ जणियउ पढमपुत्तु	अहम्मिदु देउ सो णंदिमित्तु ।
वीयइ लंतवचुउ रिद्धिहेउ	संजणियउ णंदणु सो सुकेउ ।
ते वेणिण वि धम्मसयंमुणाम	ते वेणिण वि ससिरविसरिसधाम ।
ते वेणिण वि रामसुसामदेह	ते वेणिण वि गरुणिवद्धणेह ।
ते वे वि सिद्धविज्जासमत्थ	ते वे वि दिव्वपहरणविहत्थ ।
ते वे वि विणिग्गयमलविलेव	ते वे वि सीरहर वासुएव ।
घत्ता—गुणवंतहिं तेहिं सुपुत्तहिं दोहिं मि उज्जालियउ कुलु ॥	
पहंवंतहिं गयणि वहंतहिं णं ससिसूरहिं महियलु ॥४॥	१०

५

दुवई—वेणिण वि ते महंत बलवंत महाजस घोयदसदिसा ॥
वे वि मइंदगरुडवाहिणिवइ वे वि अचितसाहसा ॥

४

इस भारतके रत्नपुर नगरमे समरकेशरी नामका राजा हुआ । उसकी वीणाके सुन्दर आलापके समान सुन्दर ध्वनिवाली सुन्दरी गृहिणी थी । वह (बलि) उन दोनोंका दिग्गजके समान निनादवाला लाखो लक्षणोसे अंकित दिव्य शरीर, कामदेवके समान सुन्दर मधु नामका पुत्र हुआ मानो सूर्य उगा हो । तीन खण्ड धरतीको उसने इस प्रकार जीत लिया जैसे वह निधिघट धारण करनेवाली गृहदासी ही । उसी समय द्वारावतीमे गाम्भीर्यमें समुद्रके समान रत्न राजा हुआ । उसकी सुभद्रा नामकी महादेवी थी, एक और पृथ्वी देवी थी जो पृथ्वीकी तरह कल्याणी थी । वहां पहलीसे वह नन्दिमित्र अहमिन्द्र देव पहला पुत्र हुआ, दूसरीका वह सुकेतु ऋद्धिका हेतु लान्तवदेवसे अमृत हीकर पुत्र हुआ । वे दोनों क्रमशः धर्म और स्वयम्भू नामवाले थे । वे दोनों ही चन्द्रमा और सूर्यके समान शरीरवाले थे । वे दोनों ही राम और श्यामके समान देहवाले थे । वे दोनों ही भारी स्नेहसे निबद्ध थे । वे दोनों ही मलविलेपसे विनिर्गत थे । वे दोनों ही बलभद्र और वासुदेव थे ।

घत्ता—उन दोनों गुणवान् सुपुत्रोने कुलको उज्ज्वल कर दिया, मानो आकाशमे जाते हुए प्रभासे युक्त चन्द्र-सूर्यने धरतीतलको आलोकित कर दिया ही ॥४॥

५

वे दोनों ही महान् बलवान्, महायशस्वी और दसो दिशाओंको धोनेवाले थे । दोनों ही गज

४. १. AP^० लवर्षकित । २. AP सुभद् । ३. लंतवि चुउ । ४. AP पवहंतहिं ।

- जयसिरिरामाङ्कठिएण
जणविंभयभातुप्पायणेण
५ अवलोड्ड चिधचलंतमयरु
पुच्छिच संमंति भणु कासु सिमिरु
दुव्वसणविसेसकयंतएण
रमणीयपैयसपुराहिवेण
भीएण देव परिहरिवि दप्पु
१० मायंग तुरय मणि दिव्व चीहें
असिकरकिकररक्खल्लमाणु
- घरसत्तमभूमिपरिद्विएण ।
एकहिं वासरि गारायणेण ।
पुरवाहिरि दूसावासणियरु ।
दीसइ भूसणरुइरहियतिमिरु ।
तं गिसुणिवि वुत्तु महंतएण ।
मंडलियपं ससिसोमें णिवेण ।
महुणरणाहहु पेसियच कप्पु ।
कंकणकडिसुत्तयहारिहार ।
ओहच्छइ पत्थु णिवद्धठाणु ।

घत्ता—विहसंतं भणितं अणते पालियैचाववणणहु ॥

जीवतहु महु पेक्खंतहु जाइ कप्पु किं अणणहु ॥५॥

६

दुव्वई—जिम लंगलि गरिंदु जिम पुणु हचं पुहविहि अवरु को पहु ॥

णिच्छउ चिवमि कुद्धकालाणणि पिकव महु व सो महु ॥

- ता मंतं वुत्तउ भो कुमार
महुराउ भणहि महुघोट्ट काइं
५ भयवंत णरेसर णिहिल वहिय
- किं गज्जसि किर परतत्तियार ।
हा ण वियाणहि तुहं तहु कयाइं ।
महि जेण तिखंड वलेण गहिय ।

और गरुड़ सेनाके अधिपति थे । उन दोनोका साहस अचिन्तनीय था । विजय-श्रीरूपी रमणीके लिए उत्कण्ठित घरकी सातवी भूमिपर बैठे हुए, जिसे लोगोमे विस्मयका भाव उत्पन्न करनेकी इच्छा हुई है, ऐसे नारायणने एक दिन नगरके बाहर जिसमे ध्वजसमूह हिल रहा है, ऐसा तम्बुओका समूह देखा । उसने अपने मन्त्रीसे पूछा कि यह किसका शिविर है कि जो भूषणोको कान्तिसे अन्धकार रहित है । यह सुनकर दुर्व्यसन विशेषके लिए यमके समान मन्त्रीने कहा कि रमणीक प्रदेशके अधिपति शशिसोम नामक भयभीत माण्डलीक राजाने हे देव, दर्प छोड़कर मधु राजाके लिए 'कर' भेजा है । गज, तुरग, मणि, दिव्य वस्त्र, कंकण, कटिसूत्र और सुन्दर हार । जिनके हाथोंमें तलवारें हैं, ऐसे अनुचरोंके द्वारा रक्षित वह शिविर अपना स्थान बनाकर ठहरा हुआ है ।

घत्ता—तव नारायणने हंसते हुए कहा—“चानुर्वर्ष्यका पालन करनेवाले मेरे जीवित रहते और देखते हुए क्या किसी दूसरेके लिए कर जा रहा है ? ॥५॥

६

जिस प्रकार हलधर राजा है और जिस प्रकार मैं राजा हूँ, उसी प्रकार पृथ्वीपर और कौन राजा है ? मैं निश्चय ही उस मधुको पके हुए मधुकी तरह क्रुद्ध कालके मुखमे फेंक दूँगा ।” इसपर मन्त्री बोला—“दूसरोकी तृप्ति करनेवाले हे कुमार, आप क्यों गरजते हैं ? तुम राजा मधुको मधुका घूंट क्यों कहते हो ? अफसोस है आप उसके किये हुएको नहीं जानते ? उसने मदवाले सारे

५. १. AP एककम्मि दिवहि । २. A सुमंति । ३. AP रमणीयवेस । ४. A चाव । ५. A परिपालियं
with पर in the margin.

पिण्डिय विज्जाहर जक्ख जेण
तं गिसुणिवि णीलणियासणेण
महु भाइहि रणि देव वि अदेव
पुरिसंतरु ण सुणहि णिव्विवेय
रणि हणिवि जिणिवि ससिसोममंति
आणिय मायंग तुरंग करह

आह्वि को जुञ्झइ समरुं तेण ।
पडिवयणु दिण्णु संकरिसणेण ।
तुहुं वण्णहि अरिवरु वप्प केव ।
ता पेसिय किंकर जगतेय ।
हंघिवि वंघिवि णं विद्ददति ।
सोवण्णैहार वरवसह सरह ।

१०

घत्ता—आहरणइं पसरियकिरणइं कण्हहु अगगइ धित्तइं ॥
पडिणेत्तइं वण्णविचित्तइं णं रिचअंतइं पित्तइं ॥६॥

७

दुवई—ससिसोमेण देव जं पेसिव तं खल्लदुक्खदाइणा ॥

हित्तवं तुब्ब दन्नु औवंतव रुद्धसुएण राइणा ॥

इय गिसुणवि चरवयणाच्च वयणु
पटुचित्त वओहरु गउ तुरंतु
किं भग्गच्च वसुमइणाहमाणु
किं खल्लिव गयणि दिणयरु भमंतु
हा हे विवुद्धि धगधगधगंतु
किं तोडिव कैसरिकेसरगु
आहवभावु परिहरहि दोसु

किउ राएं सुहुं रत्तंतणयणु ।
धरणीतणयहु वल्लरइ मंतु ।
किं हित्तु हेसु आगच्छमाणु ।
आमंतिव किं मुक्खिव कयंतु ।
उच्चोल्लिहि अंगाल्लं च णिहित्तु ।
किं महिवइआणापसर भग्गु ।
पटुवहि ससामिहि सन्नु कोसु ।

५

राजाओको समाप्त कर दिया, और जिसने बलपूर्वक तीन खण्ड धरती जीत ली है, उससे युद्धमें कौन लड़ सकता है ?” यह सुनकर नीलवस्त्रोवाले बलभद्रने उत्तर दिया—“मेरे भाईके लिए युद्धमें देव भी अदेव है । हे सुभट, तुम शत्रुवरका किस प्रकार वर्णन करते हो । ऐ निर्विचार, तुम पुरुषान्तरको मत गिनो ।” तब उग्र तेजवाले अनुचर भेज दिये गये । रणमें शशिसोम मन्त्रीको मारकर जीतकर विन्ध्यदन्तिकी तरह रौधकर और बांधकर हाथी, घोड़े, तुरंग, ऊँट, स्वर्णहार, श्रेष्ठ वृषभ और सरभ ले आये गये ।

घत्ता—जिनकी किरणें प्रसरित हो रही हैं ऐसे आभरणोंको कृष्णके आगे डाल दिया गया, जो मानो रंगोसे विचित्र शत्रुके नेत्र, या उसकी आतें या पित्त हों ॥६॥

७

“शशिसोमने जो कुछ भेजा था आता हुआ वह सब तुम्हारा द्रव्य है देव, खलोको दुःख देनेवाले खद्रपुत्र राजा (स्वयम्भूने) छोड़ लिया ।” इस प्रकार द्रुतके मुखसे वचन सुनकर राजा (मधु) ने मुख और आँखें लाल कर ली । उसने द्रुत भेजा । वह तुरन्त गया । और पृथ्वीदेवीके पुत्रसे वह मन्त्रकी बात कहता है, “तुमने धरतीके स्वामीके मानको भंग क्यों किया ? आते हुए धनको तुमने क्यों छोना ? आकाशमें भ्रमण करते हुए दिनकरको स्खलित क्यों किया ? तुमने भूखे कृतान्तको आमन्त्रित क्यों किया ? हे निर्वुद्धि, तूने धकधक जलते हुए जँगारे को कटिवस्त्रमें क्यों रख लिया ? तुमने सिंहके अयालके अग्रभागको क्यों तोड़ा ? तुमने राजाकी आज्ञाके प्रसारको

६. १. A णीलणियासणेण; P णीलणियंसणेण । २. A सोवण्णभार ।

७. १. AP खल्ल दुक्ख । २. AP आपंतव । ३. P रत्तंतणयणु । ४. A हंगाल्ल ।

- १० ता चवइ उविदुप्यणरोसु दक्खालमि तहु असिबरु विकासु ।
जइ लोहिउ णउ पायमि पिसाय तो छित्ता लइ मइं धम्मपाय ।
ता दूयहु मुहि णीसरिय वाय जिह जंपइ तिह को धिवइ घाय ।

घत्ता—कहजोगाइ महिलहुं अगगइ सयलु वि गज्जइ गिययवरि ।
जससंगहि जीवियणिग्गहि विरलउ पहरइ संगरि ॥७॥

८

- दुवई—एवं चवंतु दूउ गउ रायहु कहियउ तेण चइयरो ॥
देव ण देइ कप्पु वसुहासुउ गलगज्जइ भयंकरो ॥
ता वासुएयस्स पडिवासुएवस्स ।
हुंहुहिणिणायइं रणभूमिआयाइं ।
संणाहवद्धां गिहयइं कुद्धां ।
सेण्णां जुञ्जंति वीरेहिं रुञ्जंति ।
खग्गेहिं छिज्जंति कौंतेहिं भिज्जंति ।
चम्माइं लुम्मंति रत्तेण तिम्मंति ।
चम्माइं फुट्टंति अट्टियइं तुट्टंति ।
वूहाइं विहडंति मंडलिय गिवडंति ।
अंतेहिं गुप्पंति खेयर समप्पंति ।
वड्डंतसमरट्टि गयदंतसंघट्टि ।
गरुलेस मट्टुराय उक्खित्त णाराय ।
चिरवइरियालग्ग धणुवेयकयमग्ग ।

क्यों रोका ? युद्धभावके दोषको छोड़ो, अपने स्वामीके सब धनको भेज दो ।” तब उत्पन्नरूप नारायण कहता है—“मैं उसे कोश (म्यान) रहित तलवार दिखाऊंगा, यदि मैंने उस लोभी पिशाचका पतन नहीं किया, तो लो मैंने बलभद्र धर्मके पैर छुए ?” इसपर दूतके मुखसे यह बात निकली कि जिस प्रकार कोई बात करता है, उस प्रकार वह आघात कहाँ दे पाता है ?

घत्ता—कथाके योगमें (प्रसंगमे) अपने घरमे महिलाओके आगे सभी गरजते हैं । लेकिन जिसमें यशका संग्रह और जीवनका निग्रह है, ऐसे युद्धमे विरला ही प्रहार कर पाता है ॥७॥

८

इस प्रकार कहता हुआ दूत चला गया । उसने सारा वृत्तान्त राजासे कहा कि हे देव, वह कर नहीं देता । पृथ्वीरानीका बेटा भयंकर गरज रहा है । तब वासुदेव और प्रतिवासुदेवकी सेनाएँ आग्ने-सामने आ गयी । उनमे नगाड़ोकी ध्वनि हो रही थी, दोनों युद्धभूमिमे उपस्थित थी, कवचोसे सन्नद्ध थी, निर्दय और क्रुद्ध थी । सेनाएँ लड़ती हैं, वीरोके द्वारा अवरुद्ध कर ली जाती हैं, खड्गोंसे खण्डित होती हैं, भालोंसे भिद्यती हैं, कवच लुप्त होते हैं, रक्तसे आर्द्र होते हैं, चर्म फूटता है, हड्डियाँ टूटती हैं, ब्यूह विघटित होते हैं, मण्डलाकार सेनाएँ गिरती हैं, आँतोंसे उलझते हैं, विद्याधर समर्पण करते हैं । जिसमे गजदन्तोंका सघट्टन है, ऐसे उस बढ़ते हुए समरमें, जो

पंचाससरहेहिं	मायंगसीहेहिं ।	१५
फणिपक्खिरापहिं	मेहेहिं चाएहिं ।	
पहरंति ते वे वि	ता चक्कु करि लेवि ।	
महुणा पजंपियं	किं दविणु महुं हियं ।	

घत्ता—किं धम्मं गयभडकम्मं जो पहरणु णावेक्खइ ॥
मईं कुद्धइ जयसिरिखुद्धइ एमहिं को पईं रक्खइ ॥८॥

२०

९

दुवई—ता दामोदरेण रिच हुंछिच धम्मपहाणुआरिणा ॥
एण रहंगएण दारेव्वं तुहुं मईं कित्तिकारिणा ॥

तं सुणिवि	भुय धुणिवि ।	
मणहरिहि	सुंदरिहि ।	
विचसयण-	कयवयण-	५
विणुएण	तणुएण ।	
खयकरणु	रहचरणु ।	
रणि सुक्कु	खणि दुक्कु ।	
णहि चलिं	जलजलिं ।	
समियक्कु	करि थक्कु ।	१०
अहिणवहु	केसवहु ।	
तं धरिवि	छलु भरिवि ।	
दीहरेण	मच्छरेण ।	
विप्फुरिवि	हुंकरिवि ।	
माहवैण	घणरवैण ।	१५
तणु गणिं	अरिभणिं ।	

चिरकालीन बैरसे लिप्त है, और जिन्होंने धनुर्वेदमे प्रवृत्ति प्राप्त की है, ऐसे गरुडेग और मधुराजने तीर फेंके । सिंह-खरभ तीरो, गज-गह तीरों, नाग-गह तीरों और भेष वायु तीरोंसे वे दोनो प्रहार करते हैं । इतनेमे चक्र हाथमे लेकर मधु बोला—तुमने मेरे धनका अपहरण क्यों किया ?

घत्ता—जो अस्त्रको नही देखता, उस धर्म और गजयोद्धा कर्मसे क्या ? यशरूपी श्रीके लोभी मेरे क्रुद्ध होनेपर इस समय कौन तुम्हारी रक्षा करता है ? ॥८॥

९

तब दामोदरने दुश्मनको फटकारा कि धर्मपथका अनुकरण करनेवाले और कीर्तिकारी इस चक्रसे मैं तुम्हे मारूंगा ? यह सुनकर, अपनी भुजाएँ ठोककर, मनहरी—सुन्दरीके पुत्र, विद्वज्जनों द्वारा शब्दोंसे संस्तुत मधुने विनाश करनेवाला चक्र छोड़ा । वह एक क्षणमे पहुँचा । आकाशमें चला चमकता हुआ । शान्त सूर्यकी तरह अभिनव केशवके हाथमें स्थित हो गया । उसे धारण कर, साहस कर, भारी मत्सरके साथ विस्फुरित होकर, हुंकार कर, भेषके समान शब्दवाले माधव

१. १. दामोदरेण । २. P पहाणुरायणा । ३. A जले जलिच ।

रायमहारिसि मुक्कवियारठ
जाइ जणित सा घण्णी गिव सइ
नेहिणि भव्व सव्वसिरि णामें
संजयंतु अण्णेक्क जयंतत्त
सारसमिहुणसरालवणंतरि
एक्कहिं दिणि दक्खवियरहंतहु
धम्मं अहिंसावंतु सुणेप्पिणु
चइजयंतणामहु सदेप्पिणु
ते तिचिहें णिद्वेएं लइय
आमेळ्ळियणियसुल्लियजाया
इय तवविहिहि णिति किर के वल्लु

घत्ता—तहिं आयहु देवहु फणिवइहि रूवु णिहालिचि हिययहरु ॥

णिञ्जायइ लुद्धु जयंतु सुणि जइ फलु देसइ सुत्तवत्त ॥२॥

३

तो मच्चु वि एहउं लापणउं
एव णियणणिविंधेणचंधउ
मुच जयंतु संपत्तइ कालइ

होज्जउ भवि सोहग्गाइणउं ।
जणु तिहिं सल्लहिं सयल्लु वि खट्ठउ ।
जायउ विसहरिंदु पायालइ ।

२

उसमे विकारोसे मुक्त, राजाओमे प्रधान, शास्त्र तथा न्याय-अन्यायका विचार करनेवाला राजा वैजयन्त निवास करता है। जिस सतीने उसे जन्म दिया, वह धन्य है। उसकी भव्य सर्वश्री नामकी गृहिणी थी। शूम परिणामसे उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए, संजयन्त और जयन्त, जो अपने अनाहत यशसे तीनों लोकोंको घवलित करनेवाले थे। एक दिन जिसमे सारस दम्पतिका शब्दरूपी जल है, ऐसे अशोक वनमें, अन्तरायका अन्त दिखानेवाले अरहन्तके, शोकको नष्ट करनेवाले पद्मयुगलको वन्दना कर, अहिंसामय धर्म सुनकर अपने हृदयको मुनिमार्गमे लगाकर, संजयन्तके पुत्र वैजयन्तको बुलाकर उसे घरती देकर वे तीनों (पिता वैजयन्त, संजयन्त और जयन्त) वैराग्यको प्राप्त हुए। मोह-लोभरूपी दुर्लताको काटनेके लिए अपनी सुन्दर पत्नियाँ छोड़कर पिता और दोनों पुत्र, तीनों ही मुनि हो गये। कितने लोग ऐसे हैं कि जो तपके द्वारा बलको प्राप्त होते हैं। वहाँ पिताको केवलज्ञान प्राप्त हो गया।

घत्ता—वहाँ थाये हुए देव, नागराजका सुन्दर रूप देखकर लोभी जयन्त मुनि अपने मनमे विचार करता है कि (उसका), सुतपरुषी वृक्ष यदि फल देता है— ॥२॥

३

तो वह आगामी जन्ममें मेरा सौभाग्यसे व्याप्त ऐसा लावण्य हो। इस प्रकार निदानके बन्धनसे बंधा हुआ मनुष्य तीनों शल्योसे विनाशको प्राप्त होता है। समय पूरा होनेपर जयन्त

२. १. AP^०तिजयंतहु । २. A जिणमणि । ३. T सुणेप्पिणु सुधु, नीत्वा । ४. AP दुल्लिय ।

५. A वप्पहं ।

३. १. AP^०वट्टउ ।

संधि ५७

पुणु भासइ गोत्तसु सेणियहु दुद्धरदुक्खकिलेसमह ॥
सिरिविमलणाहजिणगणहेरहं मंदरमेरुहुं तणिय कह ॥ध्रुवकं॥

१

जंघुदीवइ अबरविदेहइ	माणवमिहुणयवद्धियणेहइ ।	
मंदचूयचवच्चिणिचारड	सीओयाणइउत्तरतीरइ ।	
देसु गंधमालिणि जाणिज्जइ	गाइहिं कंगुकणिसु जहिं चिज्जइ ।	
भमरहिं वियलंतचं महु पिज्जइ	पक्खिहिं कलरतु जहिं विरइज्जइ ।	५
जहिं माहिसु सरसल्लिज्जभंतरि	ण्हाइ पंउरपंकयरयपिज्जि ।	
अहिणवपल्लववेर्ल्लाभवणइ	गोच सुवंति पुप्फपत्थरणइ ।	
गंधसालिपरिमल्लु दिस वासइ	पूसउं कं धुणंतु जहिं वासइ ।	
णिइवि छेत्तवाल्लिणिइ मुहुल्लचं	जहिं पंथिय चवंति सरसुल्लउं ।	१०
दहिल्लउ जहिं कूरकरंउ	पवहि पवहि जिम्मइ अवंउ ।	

धत्ता—तहिं देसि रवण्णु सुवण्णमउ णहविल्लगमंदिरसिहइ ॥
परिहापायारहिं परियरिउ वीयसोउ णमं णयरु ॥१॥

सन्धि ५७

पुनः श्री गौतम, श्रेणिकसे श्री विमलनाथ जिनके गणधरों—मन्दर और मेरुको दुर्धर दुखो-
को नष्ट करनेवाली कथा कहते हैं ।

१

जम्बूद्वीपमे जहाँ मानव जोड़ोंका स्नेह बढ रहा है, जहाँ मन्द आन्न चव चिचिणी और चारके वृक्ष हैं, ऐसे अपरविदेहमें सीता नदीके उत्तर तटपर गन्धमालिनी देश जाना जाता है । जहाँ गायोंके द्वारा कंगु और कणिस (अनाज) खाया जाता है । भ्रमरोंके द्वारा झरता हुआ मद पिया जाता है, और पक्षियोंके द्वारा कलरव किया जाता है । जहाँ महिपगण प्रचुर पंकजरसे पिज्जित सरोवरोंके जलमें नहाता है । अभिनव पल्लव और लताओंके भवनोंमें श्वाले पुष्पशय्याओंपर सोते हैं । गन्धसे श्रेष्ठ पराग जहाँ दसों दिशाओंको सुवासित करता है । जहाँ सुआ 'कं' शब्द कहता हुआ निवास करता है । जहाँ क्षेत्रको रक्षा करनेवाली कृषक वालिकाओंके मुख देखकर पथिक मधुर और सरस गीत गान करते हैं । जहाँ भातसे मिला हुआ अत्यन्त खट्टा दही प्रत्येक प्याळ पर खाया जाता है ।

धत्ता—उस देशमें सुन्दर स्वर्णमय मन्दिर शिखरोसे आकाशको छूनेवाला तथा परिखाओ और प्राकारोंसे घिरा हुआ वीतशोक नामका नगर है ॥१॥

१. १. AP चूयचवि° । २. A गंधमालिणि । ३. A पूसउ कण चुणंतु; P पूसउ कणु चुणंतु ।

२

रायमहारिसि मुक्कवियारड
जाइ जणिस सा धण्णी णिव सइ
गेहिणि भन्व सन्वसिरि णामे
संजयंतु अपणेक्कु जयंतत
सारसमिहणसरालवणंतरि
एक्कहिं दिणि वन्खवियरहंतहु
धम्म अहिंसारवंतु सुणेप्पिणु
वइजयंतणामहु सइप्पिणु
ते तिचिहें णिन्वेणं लइय
आमेल्लियणियसुल्लियजाया
इय तवचिहिहि णिति किर के वलु

धत्ता—तहिं आयहु देवहु फणिवइहि रूवु णिहालिवि हिययहरु ॥
णिज्झायइ लुद्धु जयंतु मुणि जइ फलु देसइ सुतवत्त ॥२॥

३

तो मज्जु चि एहं चं लाएण्णं
एव णियाणणिबंधेणबंधड
सुच जयंतु संपत्तइ कालइ

होज्जड भवि सोहग्गाइण्णं ।
जणु तिहिं सल्लहिं सयलु चि खद्धड ।
जायच विसहरिंदु पायालइ ।

२

उसमे विकारोसे मुवत, राजाओमें प्रधान, शास्त्र तथा न्याय-अन्वयका विचार करनेवाला राजा वैजयन्त निवास करता है । जिस सतीने उसे जन्म दिया, वह धन्य है । उसकी भव्य सर्वश्री नामकी गृहिणी थी । शुभ परिणामसे उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए, संजयन्त और जयन्त, जो अपने अनाहत यशसे तीनों लोकोको धवलित करनेवाले थे । एक दिन जिसमे सारस दम्पतिका शब्दरूपी जल है, ऐसे अशोक वनमे, अन्तरायका अन्त दिखानेवाले अरहन्तके, शोकको नष्ट करनेवाले पद्मयुगलकी वन्दना कर, अहिसामय धर्म सुनकर अपने हृदयको मुनिमार्गमें लडाकर, संजयन्तके पुत्र वैजयन्तको बुलाकर उसे घरती देकर वे तीनों (पिता वैजयन्त, संजयन्त और जयन्त) वैराग्यको प्राप्त हुए । मोह-लोभरूपी दुर्लताको काटनेके लिए अपनी सुन्दर पत्नियाँ छोड़कर पिता और दोनो पुत्र, तीनों ही मुनि हो गये । कितने लोग ऐसे हैं कि जो तपके द्वारा बलको प्राप्त होते हैं । वहाँ पिताको केवलज्ञान प्राप्त हो गया ।

धत्ता—वहाँ आये हुए देव, नागराजका सुन्दर रूप देखकर लोभी जयन्त मुनि अपने मनमे विचार करता है कि (उसका) सुतपरूपी वृक्ष यदि फल देता है— ॥२॥

३

तो वह आगामी जन्ममें मेरा सौभाग्यसे व्याप्त ऐसा लावण्य हो । इस प्रकार निदानके बन्धनसे बंधा हुआ मनुष्य तीनों शक्तियोंसे विनाशको प्राप्त होता है । समय पूरा होनेपर जयन्त

२. १. AP^०तिजयंतहु । २. A जिणमग्गि । ३. T सुणेप्पिणु सुष्ठु नीत्वा । ४. AP दुल्लल्लिय ।

५. A वप्पहं ।

३. १. AP^०बद्धड ।

५ जेण वएण मोक्खु पाविज्जइ
मोहें मोहिउ लोउ ण थाणइ
सवरुल्लउ किं भोत्तिउं जुज्जइ
आहिंउत्तंसरइपंचाणणि
णिल्लियरापं वञ्जियकाएं

तें संसार केंव मग्गिज्जइ ।
काणणि कायाणंतिउ वीणइ ।
मिच्छाइद्विहि दिदि ण सुज्जइ ।
तावेकहिं दिणि भीसणकाणणि ।
संजयंतु थिउ पडिमाजोएं ।

धत्ता—मुणिमारउ धीरउ दुइरिसु दूसहु गुणसंणिहियसर ॥

१०

णियभामइ सामइ रामियउ ण रइरामइ कुसुमसर ॥३॥

५ णहयलि विज्जदाहु विजाहरु
सुरहरु रिसिहि उवरि ण पयइइ
ताव तेण अवलोइउं महियलु
सुमरिवि पुंभवइरु मुइ ठोइउ
आणिउ तुंगसाहिसंघायइ
हरिवइ करिवइ चामीयरवइ
एयंउ मिलियउ जहिं तहिं पेत्थिउ
देसु असेसु तेण संचालिउ
णग्गइ णिग्घिणु वसणोवायउ

विहरइ असिवरु वसुणंदयकरु ।
दुज्जणमणु, व णं जाव विसइइ ।
दिट्ठउ मुणिवरु मेरु व णिक्खलु ।
विज्जासामत्थेणुच्चाइउ ।
भारहवरिसंपुंभवदिसिभायइ ।
कुसुमवइ वि चंडवेर्याणइ ।
पंचमहासरिसंगमि घल्लिउ ।
अच्छइ एत्थुं एक्कु मलमइलिउ ।
तुम्हइं रक्खसु मक्खहुं आयउ ।

मरकर पाताल लोकमें विषघरराज होता है। जिस ब्रतसे मोक्ष पाया जा सकता है, उससे संसार क्यों मांगा जाता है? इस बातको मोहसे मोहित जन नहीं जानता। जंगलमें भोल गुंजाकी प्रार्थना करता है, क्या वह मोतीको समझता है? मिश्रादृष्टिके लिए दृष्टि नहीं दिखाई देती। जिसमें सरम और सिंह भ्रमण करते हैं, ऐसे भयंकर जंगलमें एक दिन, जिसमें रागको जीत लिया गया है और शरीरका त्याग कर दिया गया है ऐसे प्रतिमायोगमें संजयन्त मुनि स्थित थे।

धत्ता—मुनिको मारनेवाला धीर, दुदर्शनीय, असत्य डोरीपर तीर चढ़ाये हुए, अपनी पत्नी क्यामासे इस प्रकार रमण करता हुआ मानो काम रतिके साथ रमण कर रहा हो ॥३॥

जिसके हाथमें वसुनन्दक नामकी श्रेष्ठ तलवार है, ऐसा विद्युददंष्ट्र विद्याधर आकाशतलमें बिहार कर रहा था। उसका देव-विमान मुनिके ऊपर नहीं जा सका। दुर्जनके मनकी तरह जबतक उनका विमान विघटित नहीं हुआ, तबतक उसने धरतीतलको देखा, उसने भेरुके समान, मुनिवरको अचल देखा। अपने पूर्व वैरकी याद कर उसने विद्याकी सामर्थ्यसे उसे उठा लिया तथा बाहुओंपर धारण कर लिया और उसे जो ऊँचे-ऊँचे वृक्षोंसे आच्छादित है, भारतवर्षके ऐसे पूर्वदिशा भागमें जहाँ हरिवती, करीवती, चामीकरवती, कुसुमवती और चण्डवेगा नदियाँ मिलती हैं, वहाँ फेंक दिया और इस प्रकार पाँच महानदियोंके संगमपर डाल दिया तथा अशेष देशमें यह बात फैला दी कि यहाँ एक मलसे मैला निर्दय दुःखजनक नंगा राक्षस तुम लोगोंको खानेके लिए

२. A कायाणणिय । ३. A मिच्छाहिद्विहि । ४. P आहिंउत्त सरह ।

४. १. A विज्जदाहु । २. AP जाव ण । ३. A ०वरिसि पुंभव । ४. A कुसुम-इइ व पाणइ; P कुसुमवइ वि चंडवियाणइ । ५. A जहिं एयउ मिलियउ तहिं पेत्थिउ । ६. AP एक्कु एत्थुं ।

दुम्भुह दुष्टवुद्धि विवरेरच हणह कुण्ह जइ भंतु महारच । १०
 ता मणुयहिं मुणिदु कयरोसहिं ताडिब उबलहिं दंडसहासहिं ।
 घत्ता—थिहँ सत्तु भित्तु समभावि थिउ सुकझाणसरुद्धमणु ॥
 सो खवब १० खवयसेडिहि चडिउ तिणु वि ण मणणइ गिययतणु ॥४॥

५

साहु भीसु उवसगु सहेप्पिणु तिकलेवरणिबंधु भेल्लेप्पिणु ।
 गउ तहिं जैहिं गउ पुणरवि णावइ मुणिवरलील तिजगि को पावइ ।
 मारिजंतु वि वइरिसमूहें जे कया वि घिप्पंति ण कोहें ३ ।
 ताहँ मि जणु पहरणु किं धारइ जडु अप्पेणु अप्पाणउं मारइ ।
 सहँ देवहिं भवभावणिसुंभइ तहिं णिन्वाणपुञ्जपारंभइ । ५
 आयउ सो जयंतु उरैजगउ पेच्छिवि चिरवंघुहि पडियंगउ ।
 फुक्कारुड्डावियणहयंदे आरुसेप्पिणु खणि धरणिदें ।
 माणवणिबहु णिवद्धउ णायहिं विणिहँउ णीससंतु कसघायहिं ।
 अवरहिं वुत्तु फणिद वियारहिं अम्हइं काइं भडारा मारहिं ।
 उक्खयखगं मच्छरगाढे एउं सव्णु विलसिउं तडिदाढें । १०
 परियणसयणहिं सहँ थरहरियउ ता णासंतु सत्तु सो धरियउ ।

आया है। यदि तुम हमारी बात मानते हो तो दुर्मुख, दुष्टवुद्धि, विपरीत इसे बार डालो। तब क्रोध करते हुए मनुष्यों ने उन मुनीन्द्रको परथरों और हजारों डण्डोंसे ताड़ित किया।

घत्ता—वह मुनि शत्रु-मित्रमे समभाव रखकर स्थित हो गये। शुक्लध्यानमे उन्होने अपना मन संरुद्ध कर लिया। उस क्षणक (मुनि)ने क्षणक श्रेणीपर चढ़कर अपने शरीरको तिनकेके भी बराबर नहीं समझा ॥४॥

५

वह महासाधु उपसर्गको सहनकर, तीन शरीरके निबन्धनको छोड़कर वहाँ चले गये, जहाँसे जीव फिर लौटकर नहीं आता। तीनों लोकोमे मुनिवरकी लीलाको कौन पा सकता है? शत्रुसमूहके द्वारा मारे जाते हुए भी जो कभी भी क्रोधके द्वारा अभिभूत नहीं होते ऐसे मुनियोके ऊपर जन हथियार क्यों उठाता है? वह मूर्ख अपनेसे अपनेको मारता है। वहाँ देवोंके साथ संसारके भावका नाश करनेवाली निर्वाणपूजा प्रारम्भ की गयी। वह जयन्त धरणेन्द्र भी वहाँ आया। अपने चिरबन्धुके शरीरको पड़ा हुआ देखकर, फुत्कारसे जिसने आकाशके चन्द्रमाको उड़ा दिया है, ऐसे धरणेन्द्रने एक क्षणमे क्रुद्ध होकर नागोंसे मानव समूहको बाँध लिया और स्वांस लेते हुए वन्हे कशाघातोंसे मार डाला। दूसरोंने कहा—'हे धरणेन्द्र, विचार करिये। हे आदरणीय, आप हमे क्यों मारते हैं? जिसने तलवार उठा रखी है तथा जिसमे प्रगाढ़ मत्सर है, ऐसे विद्युद्दंष्ट्रने यह सब चेष्टा की है।' तब परिजनो और स्वजनोके साथ थर-थर काँपते और भागते हुए शत्रुको उसने पकड़ लिया।

७. P कुणाह । ८. A दुष्टसहासहि । ९. AP थिउ । १०. AP खवयसेडिहि ।

५. १. A मलेप्पिणु । २. AP जहिं सो गउ पुणु णावइ । ३. A मोहें । ४. AP अप्पाणउं अप्पणु । ५. AP उरजंगमु । ६. A वणि हउ ।

घत्ता—किर बंधिवि धिवइ समुद्रजलि ता फणिवइ दुम्मियहियउ ॥
आइच्चपहावें सुरवरिण करुण करेपिणु पत्थियउ ॥५॥

६

पायराय पहए किं आएं लज्जिजइ णिहएण वराएं ।
मुइ मुइ किं किर कलुससहावें पावयम्मु सई खज्जउ पावें ।
एत्थु ण को वि बंधु णउ वइरिउ पिमुणु ण होइ एहु उवयारिउ ।
जेण सुशीलवंतु संताविउ मोक्खु तुहारउ भायरु पाविउ ।
५ किर मुणि तवदुक्खि तणु तावइ अणुं किउ तं तेहु णिरु भावइ ।
इहु हिंसइ इहु धम्मि पयट्टइ चउजम्मंतुरु दोहं वि वट्टइ ।
तं णिसुणेवि रोमु मेत्थेपिणु चवइ अहीसरु सिरु विहुणेपिणु ।
दारणमारणविहिविच्छिण्णउं भणु किह विहिं मि वइरु संपण्णउं ।

घत्ता—तं णिसुणिवि दरुदरिसियदसणदित्ति जगु धवलउं करइ ॥
१० कइ देवदिवायराहु फणिहि बहुरसभावहि वज्जरइ ॥६॥

७

भारुहगोत्तखेत्तरक्खणवइ सीहसेणु सीहउरि महीवइ ।
सयलकळाविण्णाणवियक्खण रामयत्त तहु देवि सलक्खण ।

घत्ता—हाथ बांधकर घरणेन्द्र पीड़ित हृदय उस विद्याधरको जबतक समुद्रजलमे फेंके,
तबतक आदित्यप्रभ नामक सुरवरने करुणा करके उससे प्रार्थना की ॥५॥

६

“हे नागराज, इसको मारनेसे क्या ? इस बेचारेको मारनेसे आपको लज्जा आनी चाहिए ।
इसे छोड़ो, कलुषित परिणामसे क्या ? वह पापकर्मा स्वयं अपने पापसे ख़ाया जायेगा । इस संसारमें
न तो कोई भाई है और न कोई शत्रु । फिर यह दुष्ट नहीं है । यह उपकारी है कि जिसने
सुशीलवन्तको सताया और उससे तुम्हारा भाई मोक्ष पा गया ? मुनि तपके दुःखसे अपने शरीरकी
स्वयं तपाते हैं, यदि कोई दूसरा दुःख पहुँचाता है तो वह उन्हें अच्छा लगता है । यह हिंसा करता
है और यह (मुनि) धर्ममें प्रवर्तन करता है । लेकिन देहत्याग द्वारा जन्मान्तर दोनोंका होता है ।”
यह सुनकर, और क्रोध छोड़कर नागराज सिर हिलाकर कहता है—छेदन, मारण और भाग्यसे
बिछोह करानेवाला यह वैर दोनोंमें किस प्रकार हुआ ।

घत्ता—यह सुनकर अपने दांतोंकी दौंसिसे वह जगको धवल करते है और आदित्यप्रभ
देवकी कथा अनेक रसभावसे नागराजको बताते हैं ॥६॥

७

सिंहपुरमे भरतके गोत्र और क्षेत्रका रक्षणपति राजा सिंहसेन था । उसकी समस्त कलाओं

७ AP^० आइच्चपहाइ । ८. A कणु; P करणु ।

६. १. P चउजम्मं तर देहविषट्टइ । २. A उल्लण्णउं । ३. AP दरुदरिसिय^० । ४. A देवदिवायरु तहो;

P देउ दिवायराहु ।

७. १. AP भारुहवेत्ति खेत्त^० । २. A रामवत्त ।

पढसु मंति सिरिभूइ विणीयउ
विहसियँसरलसरोरुहणेत्तउ
वहु भेहिणिहि सुमित्तिहि हूयउ
हिँडतें जाएण जुवाणें
तेण किरणसंताणसिणिद्धैँ
देसिएण सीहचरि वसंतें
तकरभीएँ रुइविच्छिण्णइँ

सँचघोसु अवरु वि तहिँ वीयउ ।
पडमसँडपुरि सेट्टि सुदत्तउ ।
भइमित्तु सिमु णिरुवमरुवउ ।
देसंतरु लंघिवि पहरीणें ।
रयणदीवि वररयणइँ लद्धइँ ।
सुद्धसहावें बहुगुणवंतें ।
सच्चघोसमंतिहि करि दिण्णइँ ।

घत्ता—गव अप्पणु पुणरवि णियधरहु लेवि सहायसमागयउ ॥
जा मग्गइ रयणइँ णिहियाइँ ताव लुद्धु लोहें हयउ ॥७॥

१०

८

देह ण मंति तासु पियरयणइँ
वणिक्वर धरि धरि फुड्डु पुकारइ
पुच्छिउ राएँ कालउ तंबउ
दीणु रुयंतउ णिण्णु जि दीसइ
घोसहि सच्चघोस किं जुत्तउँ
हउँ वि तुहुँ वि जइ चोरु णिरुत्तउ

णाइँ विरत्तउ विडयणु णयणइँ ।
खलु लच्छीमएण अवहेरइ ।
हिँत्तउ काइँ वत्थुणितरुवउ ।
पइँ दूसइ अण्णाउ पघोसइ ।
ताँ विहसेप्पिणु विप्पें जुत्तउँ ।
जणणि गिलइ जइ डिभउ सुत्तउ ।

५

और विज्ञानोमि विलक्षण और अच्छे लक्षणोंवाली रामदत्ता नामकी देवी थी। उसका प्रथम मन्त्री विनीत श्रीभूति था और दूसरा सत्यघोष था। सरल कमलसमूहका उपहास करनेवाले नेत्रोंवाला सुदत्त पद्मखण्ड पुरीका सेठ था। उसकी गृहिणी सुमित्रासे अनुपम रूपवाला भद्रमित्र नामक बालक हुआ। युवक होनेपर घूमते हुए देशान्तरको लाँघकर पथसे थके हुए उसने रत्नद्वीपमें किरण-परम्परासे स्निग्ध उत्तम रत्न प्राप्त किये। सिंहपुरमें निवास करते हुए दूसरे देशसे आये हुए गुणवान् और शुद्ध स्वभाववाले उसने चोरोंके भयसे कान्तिसे चमकते हुए वे रत्न सत्यघोष मन्त्रीके हाथमे दे दिये।

घत्ता—वह स्वयं चला गया और अपने घरसे सहायक लेकर आ गया। और जबतक वह रखे हुए रत्नको याचना करता है तबतक वह लोभी सत्यघोष लोभसे आहत हो गया ॥७॥

८

मन्त्री उसके प्रिय रत्नको नहीं देता, जैसे विरक्त विटजन अपने नेत्र नहीं देता। वह वणिक्वर घर-घर जाकर जोर-जोरसे पुकारता, लेकिन लक्ष्मीके मदसे वह उसकी उपेक्षा कर देता। एक दिन राजाने पूछा कि इसके काले-नीले रत्नोंका समूह क्यों हर लिया गया है? यह दीन नित्य रोता हुआ दिखाई देता है। यह तुम्हे दोष लगाता है और अन्यायकी घोषणा करता है। वताओ सत्यघोष कि ठीक बात क्या है? कि यह सुनकर ब्राह्मण मन्त्रीने हँसते हुए कहा—यदि मैं और तुम दोनों निश्चित रूपसे चोर हैं और यदि मैं अपने सोते हुए बच्चेको स्वयं खा लेती है तो

३. A सो चिचय सच्चघोस पुणु भणियउ; P सोत्तिय सच्चघोसु तहिँ भणियउ । ४. AP वियसियँ;
K वियसियँ but corrects it to विहसिय । ५ AP सणिद्धैँ ।

८. १. A वणि वरु पुडरीउ पुकारइ । २. AP राएँ वणिउ चवंतउ । ३. P तो ।

- तो किं जियइ को विं सुवणंतरि एहु लयउ चोरेहि वणंतरि ।
हिंडइ दण्वपिसाणं भुत्तउ जंपइ जं जि तं जि अवचित्तउ ।
एहु चोर चित्तं गहियउ ता राएण विंउं सहहियउं
- १० घत्ता—वणि डिंभसहसहिं परियरिउ भमइ णयरि परिसुक्कसरु ॥
आरडइ करणु सूरुगमणि णिर्वघरणियडइ चडिचि तरु ॥८॥

- मई दिहिबंतइ सीलविसुद्धइ ता महपविइ वुत्तु विरुद्धइ ।
परवंचणगुणतग्गयचित्तिहिं महिवइमइ भामिज्जइ धुत्तिहिं ।
णिरणुट्ठाणु दीणु दालिहिउ अप्पणु जइ वि होइ सोहहिउ ।
तहु जंपिउ ण को वि आयण्णइ राउ वि णिद्धणवयणु ण मण्णइ ।
- ५ णिवै सुह मंहिरि चोरहं षण्णइ पासाहलउ पासि संणहियउ ।
एम चवेप्पिणु सुंदरु विहियउं आउ महंतु तहिं जि वइसारिउ ।
परहिं पडंतु संतु हकारिउ देविइ भल्लउं उत्तरु लद्धउं ।
दोहिं मि अक्खजूउ पारद्धउं तुल्लु विं सुत्तइ वियवरवेसइ ।
मज्झु जाइ णीसेसहु देसहु अवरु वि सुद्धं मणितेइल्लहिं ।
- १० चामीयरसोहासोहिल्लहिं रायाणियइ छइल्लइ जित्तइं ।
विण्णि चि एयइं भूसियगत्तइं सववीयउ सहं अंगुत्थलियइ ।
महियंगुलियइ वज्जुज्जलियइ

क्या कोई इस संसारमें जीवित रह सकता है ? यह वनके भीतर चोरोंके द्वारा लूट लिया गया है और द्रव्यपिशाचसे सताया हुआ यहाँ घूमता है। वह जो कुछ भी कहता है वह उद्भ्रान्त चित्तका कथन है। विचार करते हुए राजाने इसे सुन्दर समझ लिया और उसका विश्वास कर लिया।

घत्ता—हजारों बालकोंसे घिरा हुआ उन्मुक्त स्वरवाला वह वणिकु नगरमें घूमता फिरता। सूर्योदय होनेपर राजाके घरके निकट पेड़पर चढ़कर वह करुण स्वरमें चिल्लाता ॥८॥

तब भाग्यशालिनी शीलसे विशुद्ध महीदेवीने कृपित होकर मुझसे कहा, “दूसरोंको ठगनेके गुणमें दत्त-चित्त घृत्तोंके द्वारा राजाकी बुद्धि धुमा दी जाती है। जो निरुद्यम, दीन और दरिद्र है चाहे वह खुद कितना ही स्नेहयुक्त हो उसके कहेको कोई नहीं सुनता। राजा भी निर्धनके वचनको नहीं मानता। हे राजा, तुम्हारे घरमें चोरोंकी उन्नति है।” यह सुनकर उसने एक सुन्दर बात की। वह धूतफलकके पास बैठ गयी। पैरोंपर पड़ते हुए उसने मन्त्रीको पुकारा और आये हुए मन्त्रीको उसने वही बैठा लिया। दोनोंने अक्षद्यूत प्रारम्भ किया। देवीने भी भला उत्तर पा लिया कि मेरे समस्त देश और तुम्हारे द्विजवर वेशके जनेऊ और स्वर्णशीभासे शोभित मणितेजसे युक्त अंगूठीका खेल (जुआ) होगा। शरीरको भूषित करनेवाली ये दोनों चीजें चतुर रानीने जीत ली—बिजलीकी तरह चमकती हुई बहुमूल्य अंगूठीके साथ जनेऊ।

४. A omits वि । ५. A चोर । ६. AP चित्तते । ७. A सहासिं । ८. AP णिवरि णियडउं ।
९. १. P तहिं । २. A adds this line in second hand; P omits it । ३. AP जि । ४. AP मुद्धि । ५. AP विज्जुज्जलियइ; but gloss in T हीरदीप्या ।

घत्ता—तं गिण्णमईहिं समप्पियत्तं धाइहिं हियवत्तं हरिसियत्तं ॥
अहिण्णाणु महांमत्तिहिं तणत्तं भंढायारिहिं हरिसियत्तं ॥१५॥

१०

पप्फुल्लियसुवत्तसयवत्तइ
अच्छइ गुरु रात्तलि अवलोयहि
तो कोसाहिवेण सामुग्ग
गय सा तं लेप्पिणुं खणि तेत्तहि
ज्यूवपवंचु पहुहि वज्जिरियत्त
ता रापं पायावलिज्जियत्तइ
पडिहारं आहूयत्त वणिक्कर
भणिंत्तं णरिंत्तं वणित्तं णिरिक्कत्तइ
लइयत्त तेत्थु तेणं णियमणिणणु
दिण्णत्तं पुरमहल्लसेट्टित्तणु
भंतिणिरिक्कु हुक्कु अवमाणहु
सीसि तीस खरट्ठकरघायहिं

विंधु पदंसि वि वुत्तत्तं वुत्तइ ।
भदमित्तमाणिक्कइं ठोयहि ।
अप्पिच्च धाइहि वत्थुसमुग्गत्त ।
अच्छइ सणिक्कंणिवाणी जेतहि ।
वसुविसेसु कुडिल्ले अवहरियत्त ।
अण्णत्तं रथणत्तं तहिं तौत्तियत्तं ।
लइ गियमाणिक्कइं पसरहिं करु ।
णियधणु किं ण को वि ओलक्कत्तइ ।
जिह मणिणणु तिह् णरणाहहु मणु ।
पावइ को ण सुइत्तं कित्तणु ।
कंसथालि खावाविच्च छाणहु ।
ताडिच्च मल्लहिं कूचियकायहिं ।

५

१०

घत्ता—कसपहरपरंपरसुद्धियत्तणु वरवेयणवत्तइयत्तणु ॥

सुत्तं रायहु उप्परि कुवियमणु हुत्तं वसुवासइ विसंहरत्त ॥१०॥

घत्ता—वे चीजें उसने अपनी निपुणमति धायको साँप दी। वह मनमे हर्षित हुई।
महामन्त्रीको इन पहचानोको मैं भण्डारीको दिखाऊँगी ॥१॥

१०

खिले हुए मुखकमलवाली उस घृतांने पहचान बताकर कहा कि "गुरु राजकुलमें हैं, (यह) देखो, और भद्रमित्रके माणिक्य दे दो।" तब कोषके अध्यक्षने रत्नसे पूर्ण पिटारा उसे दे दिया। वह उसे लेकर एक क्षणमे वहाँ गयी जहाँ उसके राजाकी रानी थी। उसने जुएका प्रपंच राजाको बताया और कुटिलतासे अपहृत किया गया धन भी। तब राजाने किरणावलिसे विजडित और दूसरे रत्न उसमे मिला दिये। प्रतिहारने वणिक्कर को बुलाया। "लो अपने रत्न ले लो।" राजाने कहा। वणिक्क उन्हें देखने लगा। अपने धनको कौन नहीं पहचानता। उसने वहाँ अपने मणिगण ले लिये। जिस प्रकार उसने अपना मणिगण ले लिया, उसी प्रकार उसने राजाका मन भी जीत लिया। उसने उसे नगरके महाश्रेष्ठीका पद दिया। पवित्रतासे संसारमे कौन नहीं कीर्ति पाता? चोर मन्त्री अपमानको प्राप्त हुआ। काँसेकी थालीमें उसे गोबर खिलाया गया। संकुचित शरीर मल्लोके तीव्र टक्करके आघातोसे तीस बार सिरपर उसे ताडित किया गया।

घत्ता—कोड़ेके आघातकी परम्परासे शून्यशरीर तथा अत्यधिक वेदनासे जिसे ज्वर बढ़ रहा है ऐसा वह सत्यघोष मन्त्री राजाके प्रति कुपित मन होकर भाण्डागारमे साँप हुआ ॥१०॥

६. A महिवद्धहियत्तं । ७. P भढायारिहे ।

१०. १. P सो । २. A साचग्गत्त; P सामग्गत्त । ३. P लेप्पिणु तंखणि । ४. P सणिक्कंणिवाणी । ५. P adds वि after वेण । ६. A पावइ को ण सइत्तं; P पावइ किं ण सुइत्तं । ७. A सीस तीस खरट्ठकर; P सीसि तीस खरट्ठकर । ८. A वणवेयण; P वणवेयण । ९. A विसहत्त ।

मीनु अगंधणकुलि संभूयत्
सिसुससिसरिसैविसमदाढागणु
कज्जलैकण्हलतविरल्लोचणु
फुक्करंतु दुम्मुहु अहि अल्लइ
५ ता राएण रिद्धिपरिच्छणत्तं
असणवणत्तरि कंठारायलि
सुणिवि धम्मु संसारहु संकिड
णियलणणिइ छुहियइ उवलद्धइ
सरिवि महावलु पडिबलमंदणु
१० सीहँचंडु पहिलारत्त भासिड
रामयत्त विहि पुत्तहि राहिय
अण्णहि दिणि कुलकमलदिपेसर

११

णं जनरासत्तं णं जसद्वयत्तं ।
अण्णिहिक्कलस्यवल्लयणियवणु ।
कोइलमसलकसणु नरुमोचणु ।
ईहर कालु जाव चहि गच्छइ ।
संतिचणु अन्मिह्णु दिण्णत्तं ।
अन्मंणानसुणिवरपयल्लुवत्तलि ।
महम्मिनु जिणवरदिच्छांकिड ।
गहग्गि सुमित्तावग्गिइ लद्धइ ।
नयवइसेणहु जायत्तं गच्छणु ।
पुण्णयंहु तहु अणुत्तं पयसिड ।
णं पुण्णिन रविस्सिहि पसाहिय ।
वविग्गमार णिच्छंतु परेसर ।

धत्ता—जो सबधोलु चिर संविचरु दद्धवइरु हुत्तं रूपु धरि ॥

तं रुसिवि लद्धिं भोसणिण णल्लोचरणु करैवि करि ॥११॥

११

अगंधण कुलमें पैदा हुआ मीन वह नामो यमका पाया या हुत था । उसका मुल शिष्ट-
चन्द्रमाके समान और विषम दाढ़ोंवाला था । घन और निषिकलशोसि अरने मरुत्तको लपेटे हुए
था । उसके नेत्र कज्जलके समान काले और लाल-लाल थे । वह कोयल-अनरके समान स्थान था ।
हुवा उसका भोजन था । वह दुम्मुख साँप फूत्कार करता हुआ वहाँ रहता है । उसका लम्बा सनद
वहाँ बीच जाता है । राजाके द्वारा ऋद्धिसे परिपूर्ण मन्त्रिपद धर्मिल ब्राह्मणको दिया गया । असना
नामक वनमें विषल कान्ठार पर्वतपर धर्म नामक मुनिवरके चरणकमलोंके तलमें धर्म सुनकर
भद्रमित्र संसारसे अंकित होकर जिनवरकी दीक्षामें दीक्षित हो गया । वह अग्रतो नूखी नाँ सुनिवा
वाग्गिन द्वारा पा लिया गया और वह उसे छा गया । वह मरकर तिहसेनका शत्रुसेनाका नरक
करनेवाला महाबली पुत्र हुआ । उसमें सिंहचन्द्र पहला कहा गया और दूसरा पूर्णचन्द्र उसका
अनुल प्रकाशित हुआ । माँ रामदत्ता अपने दोनों पुत्रोंसे शोभित थी, नामो पुण्णिमा दूर्य और
चन्द्रमासे प्रसाधित थी । किसी दूसरे दिन कुलकमलका सूर्य अपना कोमलप देख रहा था ।

धत्ता—जो सत्यधोष प्राचीन मन्त्रीवर वैर वांघकर धर्ममें साँप हुआ था, मीषण, लसने
रुठकर और हाथमें नकुलकरण कर उसे काट छाया ॥११॥

११. १. P° सरित्तसविसवावा° । २. A कज्जलकण्हिरत्तैरि°; P कज्जलकण्हिरत्तैरि° । ३. A° उन्मिह्णु-
लद्धइ । ४. P सीहँचंडु । ५. AP पुण्णचंडु । ६. AP ससिरविहि । ७. AP णिच्छंतु । ८. P तं
रुसिवि । ९. AP अंकिड ।

१२

मुञ्च सल्लइवणि जायउ करिवरु
णवर ससामिमरणि कुञ्जंतें
गारुडदण्डपण गोरुडिणं
भणित काइं भहुं वयणु णियच्छहु
ता पइसरिवि जैल्लणि अहि णिग्गय
पचारियउ इयर मंतीसैं
एवहिं एम काइं अच्छिज्जइ
ता चिंतइ कुंभीणसु णियमणि
वसिगल्लिउ विसु केम गिल्लिज्जइ

असणिघोसु णामें दीहरकरु ।
मंतसारु सयलु वि बुद्धंतें ।
फणि आवाहिय मच्छरचैडिणं ।
दीतुं धरेप्पिणु णिलयहु गच्छहु ।
अकयदोस जे ते सयल वि गय ।
राउ महारउ मक्खिवि रोसैं ।
जिम सिहि खज्जइ जिम विसु छिज्जइ ।
अम्हइं जाया गोत्ति अंगयणि ।
कुलसामत्थु केम मइल्लिज्जइ ।

घत्ता—मैरणि वि संपणणइ गरुयगरु कुलछलु माणु ण भेल्लियउ ॥
जालावलिजलियइ विसहरिण अप्पचं हुयवहि वल्लियउ ॥१२॥

१३

अट्टब्बानमैरहुं सो मुञ्च
खंति हिरण्णवई वणि वंदिवि
रामयत्त पियदुक्खें भग्गी
सिंहचंडु चिर रज्जु करेप्पिणु

कालवणंतरि हुयउ चमरीमउ ।
दुक्खिउ पुणु पुणु णिंदिविं गरहिवि ।
पंचमहक्वयचरियहि लग्गी ।
पुरु धरित्ति णियमायहु देप्पिणु ।

१२

वह मरकर सल्लकीवनमे करिवर हुआ, अशनिघोष नामका लम्बी सूँडवाला । अपने स्वामीके मरनेसे क्रुद्ध होकर और समस्त मन्त्र रहस्य जानते हुए गारुडदण्ड नामक गारुडीने मत्सरसे भरकर सर्पोंका आह्वान किया (बुलाया) और कहा, "भैरा मुख क्या देखते हो, दीप धारण कर धरसे चले जाओ ।" तब आगमे प्रवेश करते हुए सभी साँप चले गये, जिन्होंने दोष नहीं किया था वे सभी गये । तब मन्त्रीशने कहा, "तुमने क्रोधसे हमारे राजाको काट खाया । अब इस समय तुम्हे क्या यहाँ रहना चाहिए, जिस तरह आग क्षय करती है उसी प्रकार विष भी क्षीण करता है ।" इसपर वह साँप अपने मनमे सोचता है कि हम अगन्धन कुलमे उत्पन्न हुए हैं । उगले हुए विषको हम किस प्रकार खा सकते हैं ? अपने कुल-सामर्थ्यको क्यों, किस प्रकार मलिन करें ?

घत्ता—मृत्युको प्राप्त होनेपर भी उसने महान् कुलगर्ब और मान नहीं छोड़ा । साँपने अपने-आपको ज्वालावलीसे जलती हुई आगमे डाल दिया ॥१२॥

१३

आर्तव्यानसे मरकर वह साँप कालवनमे चमरीमूग पैदा हुआ । प्रियके विरहसे भग्न होकर रामदत्ता वनमे हिरण्यवती नामकी आर्थिकाकी वन्दना कर और पापको बार-बार निन्दा और गर्हा कर पाँच महाव्रतकी चर्यामें लग गयी । सिंहचन्द्र भी चिरकाल तक राब्य कर और फिर

१२. १. A गारुडियइ । २. A चडियइ । ३. A चिन्नु धरेप्पिणु । P दीठ धरेप्पिणु । ४. P जल्लिणि ।

५. A चिज्जइ । ६. AP उणिगलियउ । ७. AP ते मरणे वि होतए गवयवर कुलुच्छलु ।

१३. १. A ज्ञानमरणेण य सो मुञ्च । २. AP गरहिवि णिंदिवि । ३. AP सीहचंडु ।

- ५ पुण्यचंद्र भयवंतु षैवेष्णिणु
जायत इंदियदप्पवियारणु
रामयत्तदेवीइ मणोहरि
वंदिच्च वंदणिञ्जु णियमायइ
कुच्छि सलम्बण एक महारी
अञ्ज वि अच्छइ काई रमारच
१० तं णिसुणेष्णिणु भणइ भट्टारच
घत्ता—कोसलविसयंतरि घणभरिच बुद्धगाचं वइपरियरिच ।
तहिं आसि मृगायणु विप्पवरु महुरइ वंभणीइ धैरिच ॥१३॥

१४

- सज्जनमोहणि णावइ वारुणि
मरिवि मयार्यणु पुरि साकेयइ
सुमईदेविहि गन्धि समायच
धीय हिरणवइ त्ति य जायच
५ पोयणपुरवरि रूवरवण्णी
जा चिरु महुर सा जि तुहं हुई
भइमित्तु सुच तुह उप्पणच
वारुणि पुण्यचंद्रु जाणिञ्जसु
- धीय विहिं मि उप्पणी वारुणि ।
अइवलणामणरिंदणिकेयइ ।
पुरिसु वि थौलिंत्तु आयच ।
सुवणि विर्यंभइ कम्मविचायच ।
पुण्यचंदणरणाहु दिण्णी ।
रामयत्त दोहं मि सिरिदुई ।
सीहैइंदु हचं णेहिं भिण्णइ ।
अम्मिइ मोहु हचंतु खमिच्चसु ।

घरती अपने भाइयोंको देकर ज्ञानवान् पूर्णचन्द्रकी वन्दना कर, प्रवर दिग्म्बर दीक्षा ग्रहण कर, इन्द्रियोंके दर्पका विदारण करनेवाला मनःपर्ययज्ञानी और आकाशचारी हो गया। रामदत्ता देवीने सुन्दर ललित लतागूहमे उसे देखा। उनकी अपनी माताने वन्दनीय उनकी वन्दना की और अत्यन्त मधुर वाणीमे पूछा, “हमारी कोखसे एक तुम सुलक्षण हुए थे, जो संसारका शत्रु हो गया। लेकिन तुम्हारा भाई (पूर्णचन्द्र) आज भी लक्ष्मीमे अनुरक्त है। तुम्हारा भाई धर्म ग्रहण क्यों नहीं करता ?” यह सुनकर वह आदरणीय कहते हैं कि अपने जनका भव विस्तार सुनो।

घत्ता—कोशल देशमे वृत्तिसे घिरा हुआ घनसे भरा हुआ वृद्ध गांव है। उसमे मृगायन नामका ब्राह्मण है, जो मधुरा नामकी ब्राह्मणीके द्वारा वरित था ॥१३॥

१४

उन दोनोंको वारुणी नामकी कन्या उत्पन्न हुई जो सज्जनोंको मोहनेवाली जैसे वारुणी (सुरा) थी। वह विप्रवर मृगायण भरकर, साकेत नगरीमे अतिबल नामक राजाके घरमे सुमति देवीके गर्भमें आया। वह पुरुष होते हुए भी स्त्रीलिंगमे आया। वह हिरण्यवती नामकी कन्याके रूपमे विख्यात हुआ। कर्मका विपाक संसारको बढ़ाता है। रूपसे सुन्दर वह पौदनपुरमे पूर्णचन्द्र नामक नरनाथको दी गयी। जो पहले मधुरा थी वही तुम इस समय रामदत्ता हुई हो, तुम दोनों ही लक्ष्मीकी दूती हो। भद्रमित्र तुम्हारा पुत्र उत्पन्न हुआ और स्नेहसे भिन्न मैं सिंहचन्द्र हूँ।

४. A णएष्णिणु । ५. A समहुरं । ६. AP मिगायणु । ७. AP वरिच ।
१४. १. P मिगायणु । २. AP सुम्मइदेविहि । ३. A थौलिंत्तु । ४. P पुण्यचंद्रं । ५. AP सीहचंद्रो ।
६. AP खवेज्जसु ।

पुष्पचंदु जो पोयणसामिह
जो वुह जणणु तुज्जु गुरु जायउ
ताउ महारउ कंतु तुहारउ
कूरतिरियजम्मं संभोहिउ

घत्ता—ओसरु गयवर मयररयभमर मा दूसहु दुक्किउ करहि ॥
किं णिहणहि णंदणु अप्पणउं सीहयंतु णउ संभरहि ॥१४॥

१५

ता जाईभंरु जायउ कुंजरु
झायइ इहु रिसि तणुरुहु मेरउ
जो चिरु भुंजंतउ रस णव णव
जो चिरु सेवंतउ वरणारिउ
जो चिरु चंदणकुंजुमलित्तउ
जो चिरु सुहुं सोवंतउ तूलिहि
जो चिरु दंतउ दाणु सुदीणहं
जो चिरु जाणंतउ छग्गुण्णउं
डज्जंउ देव एय तिरियत्तणु

दुद्धरु गिरिवरगोरुयपिंजरु ।
हउं जायउ वणि करि विवरेरउ ।
सो एवहि भक्खमि तरुपल्लव ।
तहु एवहिं हुक्खुं गणियारउ ।
सो एवहिं कइमि पंगुत्तउ ।
सो एवहिं हउं लोलमि घूलिहि ।
सो एवहिं महुयरसंताणहं ।
तं किह पुत्तं णिहणु पडिषण्णउं ।
ता मइ भणिउं मुणेप्पिणु तहु मणु-

५

वारुणिको तुम पूर्णचन्द्र जानोगी । हे मां, होते हुए मोहको आप क्षमा कीजिए । पूर्णचन्द्र जो पोदनपुरका स्वामी था, उसे भद्रबाहु गुरुने शान्त कर दिया है । तुम्हारे जो पिता तुम्हारे गुरु हैं देवोके द्वारा पूज्यपाद वह मेरे भी गुरु हैं । मेरे पिता तुम्हारे स्वामी हैं । वह वनमे दुर्वार वारण हुए है । क्रूर तिर्यच जन्मसे भीहित मारनेकी कामनावाले उसे मैंने सम्बोधित किया है—

घत्ता—जिसके मदमे भ्रमररत है, ऐसे हैं गजवर, दूर हटो, तुम असह्य पाप मत करो । तुम अपने पुत्रको क्यों मारते हो ? क्या तुम सिंहचन्द्रको याद नहीं करते ? ॥१४॥

१५

तब गिरिवरकी गेरुसे पीले कुंजरको जाति स्मरण हो गया कि यह मेरा पुत्र मुनि होकर ध्यान करता है, मैं वनमे विपरीत गज हुआ हूँ, जो पहले मैं नव-नवका भोग करता था वह मैं अब इस समय वृक्षके पत्ते खा रहा हूँ । जो पहले उत्तम नारियोंका सेवन करता था उसके पास इस समय हथिनी पहुँची है । जो पहले चन्दन और कुंकुमसे लिप्त होता था, वह इस समय मैं कीचड़में फँसा हुआ हूँ । जो पहले रईपर सुखसे सोता था, वह मैं इस समय घूलमें लोटता हूँ । जो पहले अत्यन्त दीनोको दान देता था, वह मैं इस समय मधुकर सन्तानको दान (मदजल) देता हूँ । जो मैं पहले पद्मगुण राजनीति जानता था, हे पुत्र, उसने इस निर्धनत्वको कैसे स्वीकार कर लिया । हे देव, इस स्त्रीत्वमे आग लगे । तब मैंने उसके मनको जानकर कहा—

७. AP पुञ्जियसुरपायउ । ८. A मयरसममर ।

१५. १. A जाईसव; P जाएभर; K जाईसरु but corrects it to जाईभर । २. P omits this line.
३. A P भुंजंतउ । ४. A दुक्कहि । ५. A कइमहि । ६. A सो एमहि लोलिमि तणु; P सो एमहि लोलिमि तणु । ७. A तं किह णिहणु पुत्त पडि; P तं किह णिहणु पुत्त पडि । ८. A डज्जंउ देव एह; P डज्जंउ एउ देव ।

१० घत्ता—मा णिहणहि पडिकरि गिरितरु वि जीव णिहालिवि पच धिवहि ॥
गय भक्खहि णिवडियदुमदलइं परकलुसिच पाणिच पियहि ॥१५॥

१६

मारंतउ वि अणुणु मा मारहि अप्पउ संसारहु उत्तारहि ।
ता कुंभत्थलणवियमुणिं दें थिरु ऋउं पालिचं तेण गइं दें ।
बंभचेरु दिहुं^३ णिच्चलु धरियउं जिणपायारविंदु संभरियउं ।
खविउ कलेवरु कायकिलेसें परियहुंतें कालविसेसें ।
५ केसरितीरिणितडेंगउ जइयहुं खुत्तउ दुइमि कइमि तइयहुं ।
णवैरि चमरिजम्मंतरमुक्के पिमुणे अवरभवंतरदुक्के ।
कुंभारोहणु करिवि सद्धपे भक्खिउ गयवइ कुक्कुडसपे ।
मुउ हउ उवैसमेण सोक्खावहि सहसारइ सुरभवणि रविप्पहि ।
सिरिहरु देउ काइं वणिणउजइ एहउं जाणिवि धम्मु जिं किज्जइ ।
१० हउ धम्मिलु वाणरु रोसुकुड मारिउं तेण रणे सो कुक्कुड ।
णिययावें पंकप्पहि पत्तउ अणुणु वि एव जि जाइ पमत्तउ ।

घत्ता—जणु जिणवरवथणु ण पत्तियइ खाइ भासु मारिवि पसु ॥

संतावइ साहु समंजस वि णिवडइ णरइ सकम्मवसु ॥१६॥

घत्ता—तुम प्रतिगजको मत मारो, गिरितरु और जीवको भी ड्रेखकर पैर रखो । हे गज,
गिरे हुए द्रुमदलोको खाओ और दूसरोंके द्वारा कलुषित पानो पियो ॥१५॥

१६

दूसरेके मारनेपर भी तुम मत मारो, संसारसे अपना उद्धार करो । तब जिसने अपने कुम्भस्थलसे मुनीन्द्रको नमस्कार किया है, ऐसे उस गजने स्थिर व्रतका पालन किया । उसने दृढ़ ब्रह्मचर्यको धारण कर लिया और जिनवरके चरणकमलोंका स्मरण किया । कायक्लेशसे अपने शरीरको क्षीण कर डाला । समयविशेष आनेपर जब वह केसरी नदीके तटपर गया तो दुर्दम कीचड़में फँस गया । चमरीमृग जन्मान्तरसे मुक्त, दूसरे जन्ममें पहुँचे हुए दुष्ट कुक्कुट सर्पने कुम्भपर चढ़कर गजपतिको काट खाया । मरकर वह उपशम भावसे, जो सुखोकी सीमा है, रविके समान जिसकी प्रभा है ऐसे सहस्रार स्वर्गमें उत्पन्न हुआ । उस शीघर देवका क्या वर्णन किया जाये, यह जानकर हमे धर्म करना चाहिए । धर्मिल वानर हुआ और उसने युद्धमें क्रोधसे उत्कट उस सर्पको मार डाला । अपने पापसे वह पंकप्रभा नरकमें पहुँचा । दूसरा प्रमत्त जीव भी इसी प्रकार जाता है ।

घत्ता—लोग जिनवरके वचनका विश्वास नहीं करते, पशु मारकर मांस खाते हैं । योग्य साधुको सताते हैं और अपने कर्मके वश नरकमें जाते हैं ॥१६॥

१६. १. AP तो । २. AP वउ । ३. AP विह । ४. P °उहु गउ । ५. AP णवर । ६. A दमसमेण ।
७. A वि । ८. A मारिउ रणिण तेण सो; P °मारिउ तेण रणिण सो ।

१७

गयमोत्तियइं दंतजुयसहियइं
वणिय सत्थवाहहु हिमवण्णइं
सीहसेणतणयहु जसधामहु
कारिय तेण तमीयरकंतिहिं
णियसीमंतिणियैहिं रुहरिद्धइं
हो केत्तिउ संसारु कहिञ्जइ
मोहमहंतइ णिइइ मुत्तउ
जाहि अस्मि तुह वयणें जगइ
णियणंदणमुणिवरवयणुल्लउ
गय मायरि तहिं जहिं तं पट्टणु

वंणि सिगालभिल्लें संगहियैइं ।
पुरसेट्ठिहिं वणमिच्चहु विण्णइं ।
धणमित्तेण वि छणससिणामहु ।
णियमंचयहु पाय गयदंतहिं ।
मोत्तियाइं कोट्ठिणि णिबद्धइं ।
जं चितंतहं मइ दुम्मिञ्जइ ।
अच्छइ सुहि णं मुच्छिउत्तउ ।
पुण्णयंदु जिणधम्महु लग्गइ ।
तं आयणिवि सवणसुहिल्लउ ।
जहिं सो राणउ वइरिविहट्टणु ।

५

१०

घत्ता—पणवंतहु पुत्तहु परियणहु अब्जइ सुसहुरु साहियचं ॥
जिह राएं जाएं मयगलिण णिञ्जणु गहणु पसाहियचं ॥१७॥

१८

जं धणमित्तें आणिव आयउ
तं दियसुसलज्जुवल्लु तहु केरउ

पल्लंकरहं पयजोगगउ जायउ ।
मुत्ताहलणिवरुंउउ सारउ ।

१७

वनमे श्रुगाल नामक भीरुने दोनों दांतोंके साथ गजमोतियोंका संग्रह कर लिया और वणिक् सार्थवाह नगर सेठ धनमित्रको सफेद रंगके मोती और हाथीदांत दे दिये । धनमित्रने भी वे सिंहचन्द्रके पुत्र यशके घर पूर्णचन्द्रको दे दिये । उसने भी चन्द्रमाके समान कान्तिवाले गजदन्तोंसे अपने पलंगके पाये बनवा लिये तथा कान्तिसे समृद्ध मोतियोंको अपनी पत्नीके गलेमे लगा दिये । अरे संसारका कितना कथन किया जाये ? जिसका चिन्तन करते हुए बुद्धि पीड़ित हो उठती है ? मोहकी महान् निद्रासे भुक्त सुधीजन स्थित है, मानो मूर्च्छित या सोया हुआ हो । हे मां, तुम जाओ । तुम्हारे वचनोंसे पूर्णचन्द्र जागेगा और जिनधर्मसे लगेगा । 'अपने पुत्र मुनिवरके कानोको सुखद लगनेवाले वचन सुनकर वह माता वहाँ गयी जहाँ वह नगर था और जहाँ शत्रुओंका नाश करनेवाला वह राजा था ।

घत्ता—प्रणाम करते हुए पुत्र और परिजनसे आर्थिकाने सुमधुर वाणीमे कहा कि किस प्रकार राजाने मैगल गजके रूपमे गहन वनका सेवन किया ॥१७॥

१८

जो धनमित्रने लाकर दिया और जो पलंगके पाये बने वह हाथीके दोनों दांतरूपी मूसल हैं तथा श्रेष्ठ मुक्ताफल समूह उसका (गजका) है जिसे तुम प्रणयिनीके गलेमे देखते हो । हे पुत्र, तुम श्रावक व्रतोका पालन करो । हे पुत्र, यह संसार बड़ा विचित्र है । हे पुत्र, राजा भी कर्मरत

१७. १. AP सिगालभिल्लें गहियइ । २. A सीमंतिणिपहुरहरिद्धइं । ३. AP कंठिणि । ४. A मुच्छियुत्तउ ।

५. A पुण्णयंदु । ६. A अब्जिए । ७. A णिञ्जणयहणु ।

३९

पण्डिणिकंठेइ णिहिच णिहालहि	पुत्तय सावयवय परिपालहि ।
पुत्तय णिरु विचित्त संसारउ	पुत्तय पडु वि होइ कम्मरउ ।
ता हियवउ पिउणेहे भियणउं	दंतिदंतु अवउडिबि रुणउं ।
पुत्ते परिवारेण वि सोइउ	कुसुमहि अंचिवि हुयवहि डोइउ ।
उवसमेण हूई पविमलमइ	थिउ चैरि धम्मणिरउ सो णरवइ ।
रामयत्त सणियाण मरेप्पिणु	कप्पु महंतु सुक्कु पावेप्पिणु ।

१० घत्ता—मंदारदामसोहियमउडु रयणाहरणवियारधरुं ।
सा हूई रविसंणिहणिलइ रविभोभासुरु सुरपवरुं ॥१८॥

१९

पुणु फणिरायहु गुब्बु ण रक्खइ	आइबाहु कहंतुरु अक्खइ ।
काले जंते सुक्खियलीइ	वरवेहलियविमाणि विसालइ ।
पुण्णयंदु पुण्णे उप्पणउ	वेरुलियप्पहु तहि संपणउ ।
विसमविसमसरवाण णिवारिवि	दंसणणाणचरित्तइ धारिवि ।
संभूयउ संतहि णिरवज्जहि	सोहचंदु उवरिमगेवज्जहि ।
इह रयथायलि दाहिणसेडिहि	धरणितिल्लयपुरु रुडउ रुडिहि ।
पइ अइवेउ पुरंधि सुलक्खण	रामयत्त जो चिरु सेवियवण ।
सा सग्गाउ ढलिय पंकयकर	सुय उप्पण्णी णामे सिरिहर ।

होता है। तब पूर्णचन्द्रका हृदय अपने पिताके स्नेहसे भर गया। वह उन हाथीदांतोंका आँगलन कर खूब रोया। पुत्र और परिवारने इस प्रकार शोक मनाया तथा फूलोंसे उनकी पूजा कर उन्हें आगमें डाल दिया। उपशम भावसे उसकी बुद्धि निर्मल हो गयी। राजा अपने ही घरमें धर्ममें स्थित हो गया (धर्मका आचरण करने लगा), रामदत्ता निदानपूर्वक मरकर महात् शुक्र स्वर्गमें गयी।

घत्ता—सूर्यके समान देवविमानमें जिसका मुकुट मन्दार पुष्पमालासे शोभित है, जो रत्नाभरणोंका विचार करता है, तथा सूर्यकी आभाकी तरह भास्वर है, ऐसा देववर हुई ॥१८॥

१९

वह दिवाकर देव धरणेन्द्रसे फिर भी छिपा नहीं रखता और उससे कथान्तर कहता है— समय बीतनेपर, जिसमें पुण्यलीला है, ऐसे विशाल वैदूर्य विमानमें वह पूर्णचन्द्र अपने पुण्यसे देव उत्पन्न हुआ। कामदेवके विषम बाणोंका निवारण कर तथा दर्शन, ज्ञान और चारित्रको धारण कर, सिंहचन्द्र घान्त निष्पाप उपरि प्रवेयकमें उत्पन्न हुआ। इस भरतक्षेत्रके विजयार्ध पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमें परम्परासे धरणीतिलकपुर नगर है। उसका राजा अतिवेग और राती सुलक्षणा थी। पहले जिसने वनमें साधना की थी, ऐसी जो रामदत्ता थी, वह स्वर्गसे च्युत होकर कोमल

१८. १. A कंठहो । २. A पियणेहे ३. A धरधम्मि णिरउ । ४. AP^०वियारहइ । ५. A रविभाभासुरु;

P रविभासासुरु ।

१९. १. A^०विमाणविसालइ । २. A पुण्णइदु । ३. P तहि जि संपणउ । ४. AP^०तिलयपुरि । ५. A जा

सेविय चिरु वण । * भास्कर विमानमें ।

दिष्णी पिचणा दरिसियणामहु अलयाणाहहु वड्ढियकामहु ।

घत्ता—सो पुण्णयंदु दिवि देवसुहुं माणिवि हयंविहलत्तणं ॥ १०
णियकम्मविवाएं णिवड्ढियउ पुणु पत्तउ महिलत्तणं ॥१२॥

२०

दरिसियराएं हूईं दुहहर
दिष्णी ताएं कामासत्तहु
सोहसेणु करि सिरिहेरु भणियउ
रस्सिवेउ णंदणु संमाणिवि
आदरिसेण पासि हयंदंदहु
तइयहुं सिरिजसहरउ विणीयउ
मुणिचरणारविंदरइमइयहि
पवणुदुधूयधवलधयमालउं
थावरजंगमविरइयमेत्तिइ
तहिं हरिचंदु भडारउ पेक्खिवि

सिरिहराहि सुय णामें जसहर ।
दिणयराहपुरि सुरावत्तहु ।
जो सो एयहिं दोहिं भि जणियउ ।
सिरि ढोइवि सिरिकलसहिं ण्हाणिवि ।
लइयउ वउ जइयहुं सुंणियंदहु । ५
पावइयउ तहिं मायाधीयउ ।
पासु वसंतियाहिं गुणमइयहि ।
सिद्धसिहरु णामेण जिणालउं ।
किरणवेउ गउ वंदणहत्तिइ ।
थिउ अप्पउ रिसिदिक्खइ दिक्खिवि । १०

घत्ता—सो आयहिं सिरिहरजसहरहिं दोहिं वि गिरिगरुयंगु गुणि ॥

गुहकुंहरि णिसण्णु णिरिक्खियउ पलियंकेण णिसण्णु मुणि ॥२०॥

करवाली श्रीधरा नामकी कन्या हुई । पिताने उसे, जिसकी कामनाएँ बढ़ी हुई हैं ऐसे अलकापुरीके राजाको दे दिया ।

घत्ता—वह पूर्णचन्द्र स्वर्गमें देवसुख मानकर, च्युत होकर अपने कर्मविपाकसे जिसने दारिद्र्यको नष्ट कर दिया है, ऐसे स्त्रीत्वको पुनः प्राप्त हुआ ॥१२॥

२०

वह राजा दशकसे श्रीधरा नामकी दुःखहरण करनेवाली यशोधरा नामकी कन्या हुई । वह सूर्याभपुर (पुष्करपुर) के काममें आसक्त राजा सूर्यावतको दी गयी । जो सिंहसेन (राजा) श्रीधर कहा गया, वह इन दोनोंसे रश्मिवेग नामका पुत्र हुआ । रश्मिवेगका सम्मान कर, उसे सिरपर उठाकर एवं श्रीकलशसे अभिषेक कर राजा दशकने द्वन्द्वोंका नाश करनेवाले मुनिचन्द्रके पास जब संन्यास ले लिया, तो माँ और बेटी विनीता श्रीधरा और यशोधराने भी मुनियोंके चरणारविन्दमें जिनकी बुद्धि तीव्र है, ऐसी गुणमती वसन्तिका आर्थिकाके पास प्रत्रय्या ग्रहण कर ली । जिसपर पवनसे धवल ध्वजमालाएँ आन्दोलित हैं ऐसा सिद्ध सिखर नामका जिनालय था । स्थावर और जंगम प्राणियोंके प्रति जिसमें मित्रताका भाव है ऐसी बन्दनामिकाके लिए रश्मिवेग वहाँ गया । वहाँ आदरणीय हरिश्चन्द्रको देखकर वह स्वयं मुनिदीक्षा लेकर स्थित हो गया ।

घत्ता—गिरिकी तरह अत्यन्त ऊँचे तथा पर्यकासनमें आसीन गिरिगुहामें बैठे हुए उन मुनिको इन दोनों श्रीधरा और यशोधराने देखा ॥२०॥

६. A विहवविहत्तणं ।

२०. १. P सिरहए । २. A आदरसेण । ३. P हयंदंदहु । ४. AP मुणिचंदहु । ५. A कुहरणिसण्णु ।

२१

बंदि वि खरतवतावें खीणच
 छुड्डु कम्मक्खयवयणु पयच्छिउ
 ता सो तंबचूलफणि पारच
 दीह्णु कालु संसारु सरोप्पिणु
 ५ जायउ अजयरु विसमखथालइ
 सुह्विससिहिमैसिकयसारंगच
 फणैताडणफोडियधरणीयलु
 वेइवसदंडु चंडु अवलोइवि
 मरणि वि धीरत्तेण ण मुक्कई
 १० अहिणा दढदाढहिं णिह्लियइं
 हेमणिवासविसेसवरिड्डइ

ताउ तासु णियडइ आसीणच ।
 रयणत्तयहु कुसलु फुड्डु पुच्छिउ ।
 णरयहु णीसरेवि हिंसारच ।
 अपणणणइं अंगाइं धरेप्पिणु ।
 फुल्लियवउलकलंबतमालइ ।
 मोडियविडवुड्डुवियविहंगच ।
 वयणारंधघल्लियवणमयगलु ।
 खणि आहारु सरीरु पमाइवि ।
 तिण्णि वि पावइयइं थिरु थक्कई ।
 कसमसंति चावतें गिलियइं ।
 उप्पणणइं मरेवि काविट्टइ ।

घत्ता—तहिं रुययविमाणि मणोरमणि जायउ अमर वरकपहु ॥
 सो अजयरु चोत्थइ णरयबिलि णिवडिउ मुणिवररइयवहु ॥२१॥

२२

चकउरइ जयलच्छिसहायहु

णयवंतहु अवराइयरायहु ।

२१

तीव्र तपतापसे क्षीण उन मुनिको वन्दना कर वे उसके निकट बैठ गयी । शीघ्र ही उसने 'कर्मक्षय हो' ये शब्द कहे तथा रत्नत्रयकी कुशलताका प्रश्न पूछा । तब वह हिंसारत नारकी कुक्कुट सर्प नरकसे निकलकर लम्बे समय तक संसारमें परिभ्रमण कर, भिन्न-भिन्न शरीरको धारण करता हुआ, जिसमे बकुल-कदम्ब और तमाल वृक्ष खिले हुए हैं ऐसे विषम क्षयकाल वनमें अजगर हो गया । जिसने अपने मुखकी विषज्वालासे हरिणोंको काला कर दिया है, जिसने वृक्षोंको मोड़ दिया और पक्षियोंको उड़ा दिया है, अपने फनोकी मारसे धरणीतलको फोड़ दिया है, जिसने अपने मुखरत्नमें वनके भैरव गजोंको डाल लिया है, ऐसे यमके दण्डकी तरह प्रचण्ड उसे देखकर तथा एक क्षणमें शरीरके आहारकी कल्पना कर, परन्तु उन लोगोंने मरणमें भी धीरत्वको नहीं छोड़ा । वे तीनों संन्यास लेकर स्थित हो गये । अजगरने अपनी मजबूत दाढ़ीसे उन्हें निर्दलित कर दिया और कसमसाते हुए उन्हें चबाकर निगल लिया । वे लोग हेमनिवास विशेषसे वरिष्ठ कापिस्थ स्वर्गमें मरकर उत्पन्न हुए ।

घत्ता—वहाँ सुन्दर रूप्यक विमानमें सूर्यप्रस देव हुआ । मुनिवरका वध करनेवाला वह अजगर चौथे नरकमें गया ॥२१॥

२२

जित भगवान्के गुणगणका स्मरण करता हुआ वह सिंहचन्द्र श्रेष्ठ उपरिमग्नैवेयकसे अवतरित

२१. १. AP तंबचूलु । २. P संसारि । ३. AP सिहिसिहहयसारंगच । ४. A फलताडण । ५. P वणययपलु । ६. A मुक्कउ । ७. P पवइयइं थक्कई । ८. A थक्कउ । ९. A उप्पण्णाइं । १०. अमरवरकपहु ।

आयस जिणगुणगौ सुयरंतस
 सीहचंदु णं ह्व कसुमाचहु
 चित्तमाल तहु पियरायाणी
 ताहं विहिं मि णं पुण्णविहोयस
 जो चिरु रस्सिवेअजयरहस
 णामे वज्जावहु जयलंपहु
 पुहईतिलइ णयरि रचितेयहु
 सिरिहर काविदुहु पवमट्टी
 दिण्णी कुलिसावहु सण्णेहे

घत्ता—कीलंतहं पेम्मपरव्वसहं ताहं तेत्थु पर्यड्डियपणस ॥

सा जसहर सगगहु ओयरि वि रयणाचहु हूई तणस ॥२२॥

२३

पिहियासस णवेवि अवराइस
 रज्जु करेवि सुइरु चक्काचहु
 तेण कयसं भीसणु वम्महरणु
 दूरुञ्जियपरमहिलापरधणु
 दंसणणाणचैरिति अमंतस

तस चरंतु संतत्तु पराइस ।
 गस ढायहु जि सरणु वियसियसुहु ।
 चरमदेहु जाणइ विहिविहरणु ।
 सिरि मुंजिवि तेत्तिस पविपहरणु ।
 वप्पहु पासि पुत्तु णिक्खंतस ।

५

होकर चक्रपुरमे विजयरूपी लक्ष्मीके सहायक न्यायवान् अपराजित राजाकी पत्नी सुन्दरी देवीका चक्रायुध नामका पुत्र हुआ, जो मानो कामदेव था । चित्रमाला उसकी प्रिय रानी थी, जो मानो कामदेवके बाणोंकी नसेनी थी । उन दोनोंसे सूर्यप्रभ देव पुण्यविभागकी तरह उत्पन्न हुआ । तथा अजगरसे आहत जो पुराना रश्मिवेग था, वही मनुष्य जन्ममे आया हुआ विजयका लम्पट वज्जायुध है, जो युद्धके प्रांगणमे गजघटाकी धराशायी कर देता है । जिसका तेज सूर्यके समान है ऐसे प्रियकारिणीके पति मतिवेगसे पृथ्वीलिलक नगरमे कापिष्ठ स्वर्गसे च्युत होकर श्रीधरा रत्नमाला नामकी कन्या होते हुए देखी गयी । वह वज्जायुधको दी गयी । फिर कालप्रवाहके बहनेपर—

घत्ता—जिसने विनय प्रकट की है, ऐसी वह यशोधरा स्वर्गसे अवतरित होकर क्रीड़ा करते हुए और प्रेमके वशीभूत उन दौनो (वज्जायुध और रत्नमाला) के रत्नायुध नामसे उत्पन्न हुई ॥२२॥

२३

अपराजित पिहितासवको नमस्कार कर तपका आचरण करते हुए शान्तिको प्राप्त हुए । चक्रायुध भी बहुत समय तक वहाँ राज्य कर, विकसित मुख वह भी अपने पिताकी धारणमें चला गया । उसने भीषण तप किया । चरम शरीरी वह चारित्रको जानता था । जिसने परस्त्री और परधन छोड़ दिया है ऐसे वज्जायुध भी उतनी ही लक्ष्मीका भोगकर तथा दर्शन-ज्ञान और

२२. १. A गुणगुण । २ A पुण्णणिहायस । ३. A एहु जो सो । ४. AP णरजम्मि समागस । ५. AP पियकारणे । ६. P सणाहं । ७. A पयलियपणस ।

२३. १. A तित्तिस; P तित्तस । २. P चरित्तहं मत्तस ।

खवइ पुराइइ कम्मु गयालसु
माणइ सोक्खु ण तिप्पइ भोए
जायवेउ णं तरुपळभारें

तहु सुउ रयणाउहु रइलालसु ।
णं मयैरहरु तरंगिणितोएं ।
अइरारिउ वित्थरइ वियारें ।

घत्ता—अण्णहि दिणि पवरुज्जाणहरि गिरिसरिखेत्तविहूसिषउ ॥

१०

सिरिचज्जदंतसुणिगा जणहु तिहुयणमाणु पयासियउ ॥२३॥

२४

विजयमेहु णामें कुंभीसरु
तं णिसुणिवि सुणिभासिउ कंखइ
मंतिविज्ज आउच्छइ राणउ
ताव तेहिं अवलोइउ जाइवि
५ जंगलकवलु णिवद्धु ण ढोइउ
सो कवलिउ करिणा करु देत्तें
मत्थेयण वंदिवि सुणिपुंगसु
कहइ महारिसि जियवम्मीसरु
पीयैभइ णामें णं वम्महुं

णिवकल्लाणकारि जलहरसरु ।
दिणु वि मासगासु ण वि भक्खइ ।
महु तंवेरसु कि विहाणउ ।
लक्खिउ तणु गुणदोस पेलोइवि ।
पयघियकुरपिंडु संजोइउ ।
वज्जदंतु पुच्छिउ महिवंत्तें ।
मासु ण खाइ कइं तंवेरसु ।
एत्थु भरहि उत्तउरि णरेसरु ।
सइदेवीवइ णावइ सयसुहुं ।

१०

घत्ता—पीइकरु पुत्तु पसिद्धु जइ मंतिवि जाणिउं चित्तमइ ॥

कमला इव कमलात्तासु पिय तणुरुहु ताहं विचित्तमइ ॥२४॥

चारित्रसे अत्रान्त पुत्र भी पिताके पास द्रोक्षित हो गया । आलस्यसे रहित पूर्वोक्त कर्मको वह नष्ट करता है, उसका रतिकी लालसा रखनेवाला पुत्र रत्नायुध खूब सुख मानता है; भोगसे तृप्त नहीं होता, जैसे समुद्र नदियोंके जलसे तृप्त नहीं होता, जैसे वृक्षसमूहसे भाग अत्यन्त उद्वीस होकर फेल जाती है ।

घत्ता—एक दूसरे दिन प्रवर उद्यानगृहमे श्री वज्रदन्त मुनिने गिरि, नदी और क्षेत्रसे विभूषित त्रिभुवन-विभाग लोगोंको बताया ॥२३॥

२४

राजाका विजयमेघ नामका जो कल्याणकारी और मेघके समान स्वरवाला गजराज था, यह सुनकर मुनिके कथनको चाहने लगता है और दिये हुए मांसके कोरको नहीं खाता । राजा मन्त्रियों और वैद्योंसे पूछता है कि मेरा हाथी दुबला क्यों हो गया है । तब उन लोगोंने जाकर देखा और गुणदोष देखकर उसकी परीक्षा की । उसे बैधा हुआ मांसका कोर नहीं दिया गया, दूध, घी और भातका आहार दिया गया । सूँड़ देते हुए हाथीने उसे खा लिया । राजाने सिरसे प्रणाम करते हुए मुनिश्रेष्ठ वज्रदन्तसे पूछा कि यह हाथी मांस क्यों नहीं खाता । कामदेवको जीतनेवाले महामुनि कहते हैं, इस भरतक्षेत्रके छत्रपुरमे प्रीतिभद्र नामका राजा था, जो मानो कामदेव था । (वह वैसा ही था) जैसे इन्द्राणीका पति इन्द्र ।

घत्ता—जगमें उसका प्रीतिकर नामका प्रसिद्ध पुत्र था और मन्त्री भी चित्रमति था । उसकी पत्नी कमला कमला (लक्ष्मी) के समान थी । उन दोनोंका पुत्र विचित्रमति था ॥२४॥

३. A मयहरु । ४ AP अवरहि दिणि ।

२४. १. A णवकल्लाण । २. पलोयवि, P पलाइवि । ३. A पीइभइ; P पाइभइ ।

२५

धीर धम्मरुइ सिरिगुरु भण्णिवि
भणि पड्विज्जि वि गुत्तिउ तिण्णि वि
गंय रिसिउउ लेप्पिणु साकेयहु
खौरैरिद्धि उप्पण्णी जेट्टहु
चंदसूर णावइ गयणगणि
वहुइववासरीणमुणिपंथिय
थाहु भणत्तियाइ पणवेप्पिणु
कामिणीइ अप्पाणउ गरहिउं
पुच्छइ लहुयउ साहु ससंसउ

धम्मु अहिंसिज्जउ आयण्णिवि ।
पीईकरु विचित्तमइ विण्णि वि ।
सत्तभूमिसउहावल्लिसेयहु ।
णिल्लियणियजीहिदियचेट्टहु ।
वेण्णि वि चड्डिय छुड्ड जि धरंअंगणि । ५
ते धीसेणइ वेसइ पत्थिय ।
ण थिय भडारा विगय वलेप्पिणु ।
किं जीविउ मुणिदानं विरहिउं ।
कि आयो से ण गहियउ गसउ ।

धत्ता—गुरु अक्खइ महमासासियहं णिण्णिह कयपरलोयकिसि । १०
अविणीयहं रायहं कामिणिहिं दिण्णु वि पिड्डु ण लेत्ति रिसि ॥२५॥

२६

तहि विचित्तमइ सुमरइ रामहि
मयणसरोहें हियवउं भिण्णउं
गउ सहाउ तहु मेल्लिवि मंदिरु

गीओलंबियमोत्तियदामहि ।
जंपंतहं हुंकारइ सुण्णउं ।
णं इंदीवरासु इंदिविरु ।

२५

धीर-धर्मरुचि श्री गुरुको मानकर तथा अहिंसा लक्षण धर्म सुनकर, मनमें तीन गुमियाँ स्वीकार कर, प्रीतिकर और विचित्रमति दोनों मुनिदीक्षा लेकर, सात भूमिवाले प्रासादोंसे युक्त साकेत नगरके लिए गये। अपनी जिह्वेन्द्रियकी चेष्टाको जीतनेवाले जेटे (प्रीतिकर) को क्षीणासव ऋद्धि उत्पन्न हुई। उन दोनोने धरके आंगनमे उसी प्रकार प्रवेश किया, जैसे सूर्य-चन्द्रने आकाशमे प्रवेश किया हो। अनेक उपवासोंसे क्षीण उन मुनिभागियोंको बुद्धिसेना नामकी वेद्याने, 'ठहरिए' कहते हुए और प्रणाम करते हुए प्रार्थना की। परन्तु आदरणीय वे मुड़कर ठहरे नहीं चले गये। उस वेद्याने अपनी निन्दाको कि मुनिदानके बिना जीवनसे क्या? छोटे सामुझे उसने अपने संन्यायकी बात पूछी कि वे क्यों आये और आहार नहीं लिया।

धत्ता—गुरु कहते हैं—“मघू-मांस खानेवालोंसे विरक्त तथा परलोककी खेती करनेवाले मुनि अविनीत राजाओंकी स्त्रियोंके द्वारा दिये गये आहारको ग्रहण नहीं करते” ॥२५॥

२६

जिसकी गर्दनपर भोक्तियोंकी माला अवलम्बित है ऐसी उस रामा (वेद्या) को विचित्रमति याद करता है। कामके तीरोसे उसका हृदय विदोर्ण हो गया। बोलनेवालोसे खाली हुंकार कर

२५ १. AP सतिदिउ पंच धरेप्पिणु विण्णि वि; A adds a new line after this . पीईकरु विचित्तमइ वेण्णि वि in second hand. २. A रिसि गयउउ । ३. A क्षीणरिद्धि । ४. AP पंगणि । ५. A ते विसणीयइ; P वेवेसिणीयइ । ६. A कि आयहो धरे गहिय ण गसउ; P कि आयहे धरे गहिय ण गसउ । T supports the reading of K ।

२६. १. सुवरइ । २. AP छिण्णउं । ३. AP मेल्लिवि तहि ।

- सिसुमृगार्णयण इ पीवरार्णयण इ
 ५ दिग्णत तासु भोज्जु जं चंगलं
 सरसवयणु तर्हि तेण णिउंजिउं
 रत्तु सुणेवि ताइ अवहेरिउ
 तो गुणवंतु ताम गहैयत्तणु
 णिग्गळ गळ परिहेप्पिणु राउल्लु
 वंदिउ सो पडिगाहिउ गणियइ ।
 विडसाहुहि संपीणित्थं अंगलं ।
 दड्डहं चरियधणु जं पुंजिउं ।
 णारिहिं भुवणि को णाकिर मारिउ ।
 जाम ण लग्गइ मणसियमग्गणु ।
 विसयाल्लुद्ध जायउ आउल्लु ।

- १० घत्ता—पलपाएं जाएं सिद्धुएण सूयारउ णिवमणि चड्डि ॥
 कय कामिणि दविणं तेण वस रिसि चारित्तहु परिवड्डि ॥२६॥

२७

- मरिवि तुहारउ जायउ कुंजरु
 एहु एवहिं जोउ जाइंभरु
 ता रयणौउहेण णियतणयहु
 ५ तामु जि गुरुहि पांसि तउ चिण्णलं
 विण्णि वि संतइं मायापुत्तइं
 अजयंरु पंकप्पहरणयंतहु
 दारुणभिल्लहु सुउ अइदारुणु
 तेण पियंगुद्धुग्गि अवलीइउ
 महु भासंतहु तिहुवणपंजरु ।
 तुहुं वि बप्प अप्पाणउ संभरु ।
 रज्जु समप्पिउ पयडियपणयहु ।
 तहु मायाइ तं जि पडिबण्णं ।
 अच्चुइ अणिमिसत्तु संपत्तइं ।
 णीसरियउ कइ कइ व कयंतहु ।
 मंगिहि सवरिहि हुउ करिमारणु ।
 तउ तवंतु वज्जाउ घाइउ ।

देता । अपने मित्रको छोड़कर वह उसके घर गया, मातो भ्रमर कमलपर गया हो । शिशुमृग-
 नयनी स्थूल स्तनोवाली उस वेश्याने उसकी वन्दना की, पड़गाहा और जो अच्छा भोजन था वह
 उस साधुको दिया । उस कपटी साधुका शरीर पीड़ित हो उठा । उसने उससे सरस शब्दोंमें बात
 की और जो संचित चारित्र्य धन था उसे खाकर कर दिया । उसे अनुरक्त देखकर वेश्याने उसकी
 उपेक्षा की । स्त्रियोंके द्वारा संसारमे कौन नहीं मारा जाता ? मनुष्य तभी तक गुणवान् है और
 उसका बड़प्पन है कि जबतक उसे कामदेवके बाण नहीं लगते । वस्त्र पहनकर वह निकल गया
 और राजकुलके लिए गया ! विषयोंका लोभी वह आकुल हो उठा ।

घत्ता—मीठा मांस पकानेके कारण वह रसोइया राजाके मनमें चढ़ गया । धन देकर उस
 वेश्याको वशमें कर लिया, और वह मुनि चारित्र्यसे भ्रष्ट हो गया ॥२६॥

२७

वह मर कर तुम्हारा हाथी हुआ । मेरे द्वारा त्रिलोकका ढाँचा बताये जानेपर इसको इस
 समय जाति स्मरण हुआ है । हे सुभट, तुम भी अपनी याद करो । तब विनय प्रकट करनेवाले
 अपने पुत्रको रत्नायुधने राज्य सौंप दिया, और लन्ही गुरुके पास तप ग्रहण कर लिया । उसकी
 माताने भी तप ग्रहण कर लिया । दोनों शान्त माता और पुत्र अपलकमात्रमे अच्युत स्वर्ग पहुँच
 गये । अजगर भी पंकप्रभा नरकमें युद्ध करते हुए, नरकभवका अन्त करते हुए दारुण भील और
 मंगी भीलनीसे हाथियोंको मारनेवाला अत्यन्त भयानक पुत्र हुआ । उसने प्रियंगु द्रुमके नीचे तप

४. AP भिमणयणइ । ५. AP वणिइ । ६. A ताह । ७. AP गुवयत्तणु । ८. A सिद्धुएण ।
 २७. १. APT जाईसव । २. A रयणाहिवेण । ३. AP पासु । ४. AP अजगर ।

सुख सन्वत्थसिद्धि संपत्तञ्च सवरु वि पावै गरइ णिहित्तञ्च ।
 सत्तमि तमतमपहि भीसावणि पंचपयारदुक्खदरिसावणि । १०
 घत्ता—धादइसंडइ सुरवरदिसहि मेरुहि परविदेहि सरइ ॥
 गंधिल्लदेसि उज्झाडरिहि णरवइ अरुहदासु वसइ ॥२७॥

२८

कामहुयासहु णं कालंबिणि सुव्वय्य णामे तासु णियंबिणि ।
 अवरु वि तहु जिणयत्त घरेसरि अमरमहामयरहरहु णं सरि ।
 अच्चुयच्चुय तेणं णं दिणयर रयणमाल रयणाउह सुरवरु ।
 बिहि वि वेणिण संजणिय तणूरुह विजय विहीसण णवपंकयमुह ।
 ते वेणिण मि णं^३ छणससिसायर ते वेणिण वि बलकेसव भायर । ५
 वीयहु णरयहु गयत्त विहीसणु दुद्धरु तत्त करेवि संकरिसणु ।
 लंतवि जायत्त देव महामहु आइच्चाहु हत्तं जि सो सुहवहु ।
 सम्महंसणसासणि लग्गाउ मइ संबोहिउ णरयहु णिग्गाउ ।
 जंबुदीवपरावयत्तउज्झहि सिरिवम्महु सीमहि तणुमज्झहि ।
 सो केसत्तु दुहुं सुंजिवि आयत्त लच्छिधामु णामे सुत्त जायत्त । १०
 रिसिद्धि विणासियच्चम्महलीलहु चिरु पावइयत्त पासि सुसीलहु ।
 पत्तत्त बंभकपि मेल्लिवि तणु अट्टगुणट्टिबंतु देवत्तणु ।

करते हुए वज्रायुधको देखा और उसे मार डाला । वह मरकर सर्वार्थसिद्धि पहुँचे । वह भूल भी मरकर, भयंकर पाँच प्रकारके दुःखोंका प्रदर्शन करनेवाले तमतमप्रभा नामक सातवें नरकमें डाल दिया गया ।

घत्ता—घातकीखण्डमें पूर्वदिशामें सुमेरुपर्वतके अपर विदेहमें गन्धिल देशकी अयोध्या नगरीमें भोगयुक्त राजा अर्हुददास रहता था ॥२७॥

२८

कामदेवकी अग्निको शान्त करनेवाली मेघमालाके समान उसकी सुव्रता नामकी पत्नी थी और भी उसकी जिनदत्ता नामकी गृहेश्वरी थी, जो भानो क्षीरसमुद्रके लिए नदी हो । अच्युत स्वर्गसे च्युत होकर और तेजमें भानो दिवाकरके समान रत्नमाल और रत्नायुध सुरवर भाग्यसे दोनोके पुत्र हुए—नवकमलके समान मुखवाले विजय और विभीषण नामसे । वे दोनो ही पूर्णचन्द्रमा और समुद्र थे, वे दोनो ही बलभद्र और नारायण थे । विभीषण दूसरे नरक गया और बलभद्र दुर्धर तपकर महाभादरणीय लान्तव देव हुआ । सुखावह वही मैं आदित्य नामका देव हूँ । मेरे द्वारा सम्बोधित होनेपर सम्यग्दर्शनके शासनमें लगकर वह नरकसे निकला और जम्बूद्वीपके ऐरावतक्षेत्रकी अयोध्या नगरीमें वह केशव दुःख भोगकर आया और श्रीवर्माकी कृशोदरी पत्नी सीमासे श्रीधर नामका पुत्र हुआ । कामदेवकी लीलाका नाश करनेवाले सुशील मुनिके पास उसने दीक्षा ली । और शरीर छोड़कर ब्रह्म स्वर्गमें आठ गुणोंमें निष्ठा करनेवाले देवत्वको प्राप्त हुआ ।

२८. १. AP सुव्वइय । २. AP अवरु वि । ३. A णंदण ससिसायर ।

घत्ता—वज्राब्हु सव्वत्थहु चविवि संजयंतु जिणतवि णिरउ ॥

तुहुं हुउ जयंतु बंभाउ चुउ रिसि णियाणसत्त्लेण मुउ ॥२८॥

२९

पायराउ जाओ सि भयंकक
अहमणिबद्धाउसु अहगारउ
पुणु बालुंथपहि बालु णिमण्णउ
तसथावरतिरिक्खभवजालइ
५ पविउलअइरावइ णइतीरइ
गोसिंमो धरिणिहि संखिणियहि
तावसेण संजणियउ तावसु
दिव्वतिलैयपुरि खेयरराणउ
णाम सुमालि णिबंध णिवद्धउ
१० खगधरणीहरि उत्तरसेणिहि
विज्जादाहु खगु पिय विज्जुप्यह
ताहं जिहि मि हियइच्छियरुवउ
विज्जादाहु णामे दढयरमुउ

इयरु वि पाउ मुणिदखयंकक ।
अहि ह्यउ अंतिममहिणारउ ।
दुक्खपरंपराइ अहण्णउ ।
णिवद्धिउ हिंउभाणु गायकालइ ।
भूयरमणि काणणि गंभीरइ ।
संखुब्भेउ समुहसंखिणियहि ।
पंचहुयासणु सहइ सतामसु ।
जोइवि जंतउ सक्कसमाणउ ।
अण्णाणे णियतवहलु लद्धउ ।
णहयलवज्जाहपुरि सुहजोणिहि ।
सुहससियरधवलियदसदिसिवह ।
हरिणसिगु मुउ मुउ संभूयउ ।
जगदूयाणुरूउ भडसंथुउ ।

घत्ता—इहु भाइ तुहारउ गरुययरु मेरुधीरु परिचत्तभउ ॥

१५

एणं जम्मंतरवइरिइण हउ परमेसरु भोक्खगउ ॥२९॥

घत्ता—वज्रायुध सर्वाथिसिद्धिसे च्युत होकर जिनतपमे निरत संजयन्त हुआ । और ब्रह्म स्वर्गसे च्युत होकर तुम निदान शाल्यसे मरकर जयन्त हुए ॥२८॥

२९

मुनिका घात करनेवाला दूसरा भी भयंकर नागराज हुआ, पापकर्मसे आयु बाँधनेवाला, पाप करनेवाला नाग (सत्यघोष) सातवें नरकमे उत्पन्न हुआ । फिर दुःख परम्परासे विदारित वह मूर्ख बालुकाप्रभ नरकमे निमग्न हुआ । अस, स्थावर और तिर्यचोकी जन्मपरम्पराके जालमे पड़ा हुआ वह धूमता रहा । समय बीतनेपर विशाल ऐरावती नदीके किनारे भूतरमण नामक गम्भीर जंगलमे गोश्रृंग तपस्वीकी भाग्यहीन शोखिका पत्नीसे मृगशंख नामका तपस्वी हुआ । सतामस वह पंचाग्नि तप सहन करता है । दिव्य तिलकपुरमें इन्द्रके समान जाते हुए सुमालि नामक विद्याधरको देखकर उसने निदान बाँधा और उस अज्ञानीने अपने तपका फल पा लिया । विजयार्ध पर्वतकी सुखयौनी उत्तर श्रेणीमे विद्युददंष्ट्र विद्याधर और उसकी प्रिया विद्युत्प्रभा थी, जो अपने मुखरूपी चन्द्रमासे दसों दिशापथ धवलित करती थी । वह मृगश्रृंग मरकर उन दोनोंसे मनचाहे रूपवाला पुत्र हुआ । विद्युददंष्ट्र नामका दृढतर बाहुओंवाला, योद्धाओंके द्वारा संस्तुत और यमदूतके समान—

घत्ता—यह महान् मेरुके समान धीर और परित्यक्त-भय तुम्हारा भाई, पूर्वजन्मके शत्रु इसके द्वारा आहत होकर परमेश्वर होकर मोक्ष गया है ॥२९॥

२९. १. A अहमु । २. P बाल्य । ३. A भयजालइ । ४. A हरिणसिगु ह्यउ तवसिणियहि; P संखु व भवसमुहसंखिणियहि । ५. A पुरखेयर । ६. A वज्जदाहु । ७. A विज्जप्यह । ८. P विज्जुदाहु ।

३०

एहह भवसंबंधु वियारिउ एत्थु केण किर को णउ मारिउ ।
 म करहि तुहं जिणधम्मविरुद्धं णियमहि हियवचं रोसाइद्धं ।
 तं णिसुणिवि पडिजंपइ उरयरु तुह वयणेण ण मारमि खेयरु ।
 पइं जिणमग्गु मच्चु वज्जरियउ भवकइमि पढंतु उद्धरियउ ।
 तइ वि साहु उवसग्गंणिरुंभणु लइ कीरइ खलदप्पेणिसुंभणु ।
 एयहु कुलि सिञ्चंतुं म विञ्चउ पुरिसहं दुद्धरंविहुरसहेज्जं ।
 णारिहिं सिञ्चिहिंति णियमालइ संजयंतपडिमापयमूलइ ।
 मागहमंडलकुवलयचंदहु इंदभूइ पुणु कहइ णरिदहु ।
 हिरिवंणैणियणियखयरिंदहु णामु करिवि हिरिमंतु गिरिंदहु ।
 सुइवि णिवद्धवइरंधंदिग्गहु लहु णीसल्लु चविवि सपरिग्गहु ।
 गउ फणि संजयंतु सुणि वंदिवि रविआहउ सुरवरु अहिणंदिवि ।
 सुरु जाइवि सुहि संठिउ लंतवि आउमाणि बोलीणि सबच्छवि ।
 घत्ता—इह भरहखेति उत्तरमहुरि पुरि अणंतवीरिउ णिवइ ॥
 लायणरुवसोहग्गणिहि णारि मेरुमालिणिय सइ ॥३०॥

३०

यह संसार-सम्बन्ध विदारित हो गया । यहाँ किसके द्वारा कौन नहीं मारा गया । इसलिए तुम जिनधर्मके विरुद्ध आचरण मत करो, रोपसे भरे हुए अपने मनका नियमन करो । यह सुनकर अजगर उत्तर देता है कि तुम्हारे शब्दोंसे मैं इस विद्याधरको नहीं मारूँगा । तुमने मुझे जिनमार्ग बताया है । संसारकी कीचड़मे डूबते हुए मेरा उद्धार किया है । तो भी उपसर्गका रोकना जरूरी है । छो, इस दुष्टके दर्पका विनाश किया जाता है । इसके कुलमे विद्या सिद्ध नहीं होगी । इसके कुलमे लोगोके कठोर दुःख सहन करना होगा । परन्तु स्त्रियाँ नियमके घर संजयन्त मुनिकी प्रतिभाके चरणोंमें विद्या सिद्ध करेंगी । मागधरूपी मण्डलके कुलचन्द्र इन्द्रभूति गणधर पुनः राजा श्रेणिकसे कहते हैं कि विद्याधरोंको लज्जाके बन्धनमे रखनेके कारण, पहाड़का नाम ह्रीमन्त रखकर तथा बाँधे हुए शत्रुसमूहके बँधनोको मुक्त कर, तुम निःशल्य रहो—यह कहकर अपने परिग्रहके साथ सजयन्त मुनिकी वन्दना कर, दिवाकर देवका अभिनन्दन कर धरणेन्द्र चला गया । सज्जन देव जाकर लान्तव स्वर्गमे स्थित हो गया । उत्सवोंके साथ आयुका मान समाप्त होनेपर—

घत्ता—इस भरतक्षेत्रकी उत्तर मथुरा नगरीमे अनन्तवीर्य राजा था, उसकी लावण्य-रूप और सौभाग्यकी निधि मेरुमालिनी नामकी सती स्त्री थी ॥३०॥

३०. १. AP उवसग्गु । २. AP^० दण्णणिसुंभणि । ३. A सिज्जंतु । A ४. दुद्धरं विहुरं ; P दुद्धरिं विहुरिं ।

५. A हरिवद्धणि पयलियं, P हरिवद्धणि पयलियं ।

३१

आइञ्चाहु मोहमयमद्दणु	हूयच मेरुणासु तहु णंदणु ।
णियकुलसंतइवेज्जिवराहें	असयवईहि तेणं णरणाहें ।
हुच सपुण्णविहवेणुद्दामें	धरणु चविवि सुच मंदरु णामें ।
आयण्णह विरएप्पिणु अंजलि	एयहं सयलहं भणमि भवावलि ।
५ सीहसेणु करि सिरिहच सुरवर	रसिसचेउ रचितेउ वरामरु ।
वज्जाउहु अहमिदु पियारउ	संजयंतु दय करउ भडारउ ।
महुर रामदत्त वि जाणिज्जइ	भक्खराहु पुणु देउ भणिज्जइ ।
सिरिहर पुणु वसुसमदिवि अणिमिसु	रयणमाल अञ्जयसुरु सहरिसु ।
पुणु विजयंकु वि आइञ्चाहच	जाउ मेरु पुणु मुण्णिगणणाहच ।
१० वारुणि छणविहु वेहंलियप्पहु	जसहर काविट्टइ रुयेंप्पहु ।
रयणाउहु अञ्जयउ विहीसणु	सक्खरवसुमइणारउ भीसणु ।
सिरिधामउ सुवे वंभणिवासउ	णिव जयंतु फणिवइविवरासउ ।
पुणु मंदरगुण्णिगणसंजुत्तउ	सिरिभूइ वि फणि चमरि पत्तुत्तउ ।

घत्ता—कुवकुडफणि चोत्थयणरथरुहु अजयउ पंकप्पहुट्टुहि ॥

१५ समरुल्लव सत्तमपुहविभउ अहि पुणु सर्यलहुक्खगहिउ ॥३१॥

३१

मोहमदका मर्दन करनेवाला दिवाकर नामका देव उसका मेरु नामका पुत्र हुआ। और वह धरणेन्द्र च्युत होकर अमृतवती रानीसे, अपनी कुलसन्ततिरूपी लताके श्रेष्ठ वर तथा सम्पूर्ण वैभवसे उद्दाम उस राजाका मन्दर नामका पुत्र हुआ। (आप लोग) अंजलि जोड़कर इन सबकी भवावलिको सुनिए। सिंहसेन हाथी, श्रीधर सुरवर, रक्षिमवेग अर्कप्रभवदेव (रक्षितेज), वज्रायुध सर्वाथसिद्धिमे प्यारा अहमेन्द्र और संजयन्त आदरणीय (गणधर) दया करें। मधुराको वज्रायुध सर्वाथसिद्धिमे प्यारा अहमेन्द्र और संजयन्त आदरणीय (गणधर) दया करें। मधुराको रामदत्ता जाना जाये, फिर उसे भास्कर देव कहा जाता है, फिर श्रीधरा, फिर आठवें स्वर्गमें देव, रत्नमाला सहस्रार स्वर्गमें अच्युतदेव, विजयसे युक्त वीतभय और आदित्यप्रभ देव, तथा मेरु नामका गणधरोका स्वामी हुआ। वारुणीका जीव, पूर्णान्द्र वैदूर्यदेव यशोधरा, कापिष्ठ स्वर्गमें रुचकप्रभ रत्नायुध अच्युत विभीषण, दूसरी शर्करा भूमिका भीषण नारकी, श्रीधर्मा, ब्रह्मस्वर्गका देव, जयन्त, धिवरोमे आश्रित रहनेवाला धरणेन्द्र, फिर गुणियोकि गणोसे संयुक्त मन्दर गणधर हुआ। श्रीभूति भी (सत्यधोष) सर्प चमर कहा गया।

घत्ता—कुवकुट सर्प, चौथे नरकका नारकी, अजगर, पंकप्रभानरकका नारकी, शवर, सात नरकका नारकी, साँप, फिर समस्त दुःखोको ग्रहण करनेवाला ॥३१॥

३१. १. AP अणमिसु । २. A विजयंतु वि । ३. A वेहंलियं । ४. A सूयप्पहु । ५. AP सुह । ६. अण्णमणियण; P मंदरि मुणियण । ७. A चउत्थइ णरइ तुहु । ८. A सम्बुक्खल ।

५८. ३२. १०]

महाकवि पुष्पदन्त विरचित

हिंडिवि भवेसंसारि परवसु
 विज्जदाह् युगिमारणदुज्जणु
 महमित्तु पुणु कैसरिससह
 चकाउहु सासयगईगामिउ
 णविचि विसलवाहणु तित्थंकर
 गणहर गंणु परिपालिवि गीरय
 मह पसियंतु देतु गुणदितइं
 णिञ्चल होउ फुरियणहविसलइं

३२
 पच्छइ हरिणिसिगुं हुउ तावसु।
 हो डञ्जल दुक्कम्मवियंभणु।
 पुणरवि उवरिसगोवज्जामरु।
 देव समाहि मञ्जु रिसिसोमिउ।
 तेरहमउ परमेड्ढि सुहंकर।
 मोक्खइ वे वि मेरु मंदर गय।
 सुद्धइं दसणणाणचरितइं।
 भत्ति सबंतवारिकमकमलइ।

१०
 चत्ता—कह णिसुणिवि मेरुहि मंदरहु विभियं भरहणराहिवइ ॥३२॥
 थिय जिणवरपयसंणिहियमइ पुष्पदंतकरसरिसरइ ॥३२॥
 इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाभवमरहाणुमणिय
 महाकइपुष्पदंतविरहए महाकव्ये संजयंतमेरुमंदरकहंतरे
 णाम सत्तवैण्णसमो परिच्छेओ समतो ॥५७॥

३२
 फिर परवच समस्त संसारमें परिभ्रमण कर बादमें मृगशृंग तापस हुआ। फिर मुनियोंको
 मारनेवाला दुर्जन विद्युत्दंष्ट्र हुआ। अरे, दुष्कर्मके विस्तारसे आग लगे। भद्रमित्र (सेठ)
 सिंहचन्द्र, फिर उपरिमप्रेथेयकका देव, फिर शाश्वतगतिगामी चक्रायुध ऋषिस्वामी देव मुखे समावि
 प्रदान करें। ब्रूम करनेवाले परमेष्ठी तेरहवें तीर्थकर विमलनाथको प्रणाम कर, गणधर गुणका
 परिपालन कर निष्पाप मेरु और मन्दर दोनों मोक्ष चले गये। वे मुझपर प्रसन्न हों, तथा गुणोसे
 प्रदीप्त बुद्ध दर्शन, ज्ञान और चारित्र्य मुझे दें। स्फुरित आकाशके समान निर्मल तथा संसारका
 अन्त करनेवाले उनके चरणकमलोमें मेरी निश्चल भक्ति हो।
 चत्ता—मेरु और मन्दरकी कहानी सुनकर भरत राजा विस्मित हुए। नक्षत्रोकी किरणोके
 समान कान्तिवाले तथा जिनवरके चरणकमलोमें अपनी बुद्धि रखनेवाले वह स्थित रह गये ॥३२॥

इस प्रकार त्रैलोक्य महापुराणके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त
 द्वारा विरचित एवं महामन्त्र भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका संजयन्त मेरु
 मन्दर कथान्तर नामका सत्तावनत्रों परिच्छेद समाप्त हुआ ॥५७॥

३२. १. A संसार । २. A सिगसुउ । ३. AP विज्जुदाह् मुणिमारणु । ४. A सासयगयं । ५. P
 सासिउ । ६. A गुण । ७. A विभिव । ८. AP पुष्पदंत । ९. A कहंवरवण्णणं । १०. AP
 सत्तावण्णा ।

संधि ५८

जेणेकें कम्मविमुक्के जगु तं तेहचं लक्खिचं ॥

कयडंमहि हरिहरवंमहिं जं जम्मि वि णं सिक्खिचं ॥ ध्रुवकं ॥

१

जो ण महइ जीवहं सासणासु	जं होंते मेझइ सासणासु ।
सुञ्जइ सम्मत्तं खाइएण	युवइ देवोहं खाइएण ।
५ णौयंदणमंसियसासणासु	तहु णित्तदिव्वभासासणासु ।
जम्मंतंरि भावियभावणासु	संखोहियवित्तभावणासु ।
समद्विट्ठिट्ठिदुक्कचणतणासु	तवजलणददुदुक्कियतणासु ।
णौणंतणिवेसियसिहुवणासु	दिहि वइपरिरिक्खियवयवणासु ।
उत्तमियसियायवत्तयासु	एक्काहियवरवत्तयासु ।
१० पवयणवारियपेसियसुरासु	कमकमलणौचियदेवासुरासु ।

संधि ५८

कर्मसे विमुक्त जिस एकने उस वैसे संसारको देख लिया कि जिसे (देखना) दम्भ करनेवाले विष्णु, शिव और ब्रह्मा जन्म लेकर भी उसे देखना नहीं जीव सके ।

१

जो जीवोंके प्राणोंका नाश नहीं चाहता, परन्तु जिसके होनेसे जीव लक्ष्मी और चंचलता छोड़ देता है, उसे क्षायिक-सम्यक्त्व दिखाई देने लगता है । आकाशसे आकर देवता जिसको स्तुति करते हैं, जिनका शासन नागेन्द्रके द्वारा नमनीय है, जिनके शब्द सर्वभाषात्मक होते हैं, जिन्होंने जन्मान्तरमें सोलह भावनाओंका चिन्तन किया है, जिन्होंने व्यन्तर और भवनवासी देवोंको क्षुब्ध किया है, जो अपनी सम्यक् दृष्टिसे स्वर्ण और तृणको समान समझते हैं, जिन्होंने तपकी आगमें दृष्टतल्पी तृणोंको जला दिया है, जिनके ज्ञानमें तीनों लोक निवेशित हैं, जिन्होंने वैयंरूपी चागड़से व्रतल्पी वनकी रक्षा की है, जिनके ऊपर श्वेत आतपत्र उठे हुए हैं, जो एकसे अधिक वरचातसे आशाओंको तृप्त करनेवाले हैं, जिन्होंने अपने प्रवचनोंसे मांस-मदिराके सेवनका निषेध किया है, जिनके चरण-कमलोंमें देव और असुर नमन करते हैं ।

A has, at the beginning of this samdhi, the following stanza:—

संजुहियणाणुकोप्परगोवाकडिक्खणावयवो ।

अणुहवइ वेरियं तुक्ख जं पावइ लेहयो दुक्खं ॥ १ ॥

P and K do not give it anywhere !

१. १. P लक्खिचं । २. AP ण वि सिक्खि । ३. P सिक्खिचं । ४. A देवोहं; P देवोहं । ५. AP णाइइ । ६. A जम्मंतरमियं । ७. PT णाणंति णिवं । ८. PT पेसीसुरासु । ९. AP णमियं ।

घत्ता—ह्ययं वंतहु गुणवंतहु अणिमिसकेउकयंतहु ॥
भयवंतहु अरहंतहु पणविचि पयइ अणंतहु ॥१॥

२

पुणु कहमि कहाणं कामहारि
धाइसंडहु पच्छिमदिसाइ
परिहाणियपरिभैमियमयरि
पठमावल्लहु पठमरहु राठ
आणियसंमाणियदुल्लणाइ
अचिणीयइ धणमयवंभलाइ
वहुकवडडविडणिवरंजियाइ
महिबइलच्छिइ एयइ खलाइ
वद्धु हं णिवसमि एथु काइं
सिरि ढोर्यमि तणयहु घणरहासु
इय चित्तिवि पासि सयंपहासु

तहु केरं ससायसोखकारि ।
विस्थिणिं मेरुपुत्तिवल्भमाइ ।
मणितोरणवंति अरिदुणयरि ।
तहु एक्कु दिवैसु जायच विराच ।
णीणियअवमाणियसज्जणाइ ।
पवणाइयतणजल्लवचलाइ ।
भंगुरभावं णं लजियाइ ।
मणवारणवंधणसंखलाइ ।
अणुसरमि सत्तत्त्वाइं ताइं ।
संसारइ सरणु ण को वि कासु ।
वच लइयच छिदिनि मोहपासु ।

५

१०

घत्ता—अविहंगइ धरिचि सुयंगइ एयारह जिणदिट्टइं ॥
कयवसणइ इंदियपिसुणइ जिणिचि पंच दप्पिट्टइं ॥२॥

घत्ता—ऐसे अन्धकारको नष्ट करनेवाले, गुणवान्, कामके लिए यम, ज्ञानवान् अनन्तनाथ अरहन्तके चरणोंको प्रणाम करता हूँ ॥१॥

२

और फिर कामको नाश करनेवाली उनकी शाश्वत सुख देनेवाली कथाको कहता हूँ । घातकीखण्डकी पश्चिम दिशामे विस्तीर्ण मेरुके पूर्वभागमें अरिष्ट नगर है, जिसके परिखाजलमें मगर परिभ्रमण करते हैं और जो मणितोरणोंसे युक्त है । उसमें पद्मादेवीका प्रिय राजा पद्मरथ था । उसे एक दिन विराग हो गया । जिसमे दुर्जनोंको लाया और सम्मानित किया जाता है, तथा सज्जनको निकाला और अपमानित किया जाता है, जो अविनीत और धनके मदसे विह्वल है, जो पवनसे आहत तृण और जलकणोंको तरह चंचल है, जो अत्यन्त कपटपूर्ण दृढविटोसे राजाका रजन करती है, जो अपने कुटिलभावसे दासीके समान है, मनरूपी हाथीको बाँधनेके लिए शृंखलाके समान है, ऐसी इस दुष्ट राज्यलक्ष्मीसे वैधा हुआ मैं यहाँ क्यों निवास करता हूँ, मैं उन सात तत्त्वोंका अनुसरण करता हूँ । अपने पुत्र धनरथको वह लक्ष्मी देता हूँ । संसारमे कोई किसीको शरण नहीं है । यह विचार कर उसने स्वयंप्रभ मुनिके पास जाकर मोहरूपी बन्धनको काटनेके लिए व्रत ग्रहण कर लिया ।

घत्ता—जिनके द्वारा उपदिष्ट ग्यारह श्रुतांगोंको धारण कर और दुःख उत्पन्न करनेवाले दपिष्ट इन्द्रियरूपी दुष्टोंको जोतकर—॥२॥

१०. A भयवंतहु गुणं । ११. A ह्ययं वंतहु अरं ।

२. १. AP पावहारि । २ A विस्थिणयेकं । ३. A भावि । ४. A वाणियं । ५. P परिस्मियं ।

६. AP दिवसि । ७ A कवडणिविडमइरजियाइ; P कवडणिविडरंजियाइ । ८. P दोहवि ।

३

बंधिवि तित्थंकरणौमगोत्तु
सो पंकयसंदणु णरवरिदु
वावीसमहोवहिपरिमियात्त
पुंफंतरपवरविमौणवासि
वावीसहिं पक्खहिं कहिं वि ससइ
जाणवि तेत्तियहिं जि वच्छरेहिं
अवहीइ रुविवित्थारु तांम
किं वण्णमिं सुरवइ सुकलेसु
जइयहुं तइयहुं धम्मोवयारि
१० इह भरहखेत्ति साकेयणाहु
इक्खात्तवसुं कूरारिकाहु

संणारसें मुत्ते जइवइ पवित्तु ।
सोलहमइ दिवि ह्ययत्त सुरिदु ।
तिकरद्वपाणिपरिमाणु कात्त ।
तणुत्तेओहासियदुद्धरासि ।
हियण्ण देत्त आहारु गसइ ।
सेविज्जइ अमरहिं अच्छरेहिं ।
पेच्छइ छट्ठं णरयंतु जार्म ।
तहुं जीविच्च थिच्च छम्माससेसु ।
वज्जरइ कुबेरहु कुलिसधारि ।
पहुं सीहसेणु थिरथोरवाहु ।
जयसामासुंदरिसामिसालु ।

घत्ता—लहु एयहुं दिणयरतेयहुं करहि धणय पुरवरु धरु ॥

तं इच्छिवि सिरिण पडिच्छिवि चलिच्च जक्खु पंजलियरु ॥३॥

४

उज्झालरि क्कणएं कहिं वि पीय
कत्थइ हरिणीलमणीहिं काल

कत्थइ ससिचंतजलेहिं सीय ।
णं महियलि णिवडिय मेहमाल ।

३

तीर्थंकर नाम-भोजका बन्ध कर वह पवित्र मुनिवर मृत्युको प्राप्त हुए । वह पधारथ श्रेष्ठ राजा सोलहवें स्वर्गमे राजा हुआ । उसको आयु बाईस सागर प्रमाण थी । साढ़े तीन हाथ ऊँचा उसका शरीर था । वह पुष्पोत्तर विमानका निवासी था, अपने शरीरके तेजसे दुग्धराशिको तिरस्कृत करनेवाला था । बाईस पक्षमे कभी साँस लेता था और उतने ही वर्षोंमे जानकर मनसे वह देव आहार ग्रहण करता था । वह देवों और अप्सराओंके द्वारा सेवनीय था । अवधिज्ञानके द्वारा छठे नरकके अन्त तक जहाँ तक रूपका विस्तार है, वहाँ तक वह देखता था । सुक्ललेश्यावाले उस देववरका मैं क्या वर्णन करूँ ? जब उसका जीवन छह मास शेष रह गया तो धर्मका उपकार करनेवाला इन्द्र कुबेरसे कहता है कि इस भरतक्षेत्रके अयोध्या नगरमे स्थिर और स्थूल बाहुवाला साकेतका राजा सिंहसेन है । वह इक्ष्वाकुवंशीय क्रूर शत्रुके लिए कालके समान, जयश्यामा सुन्दरीका स्वामी श्रेष्ठ है ।

घत्ता—दिनकरके समान तेजवाले इनके लिए हे कुबेर, तुम पुरवर और धर बनाओ । उसे अपने सिरसे चाहकर और स्वीकार कर कुबेर हाथ जोड़कर चला ॥३॥

४

वह अयोध्या नगरी कहीं स्वर्णसे पीली और कहीं चन्द्रकान्त मणियोंसे शीतल है । कहीं

३ १. A °णामु; P °णाउं । २. AP युवठ । ३. A तिकरद्वपाणिपरिमाणकात्त; P तिकरद्वपाणियपरिमाणकात्त । ४. AP पुष्फुत्तर° । ५. AP विवाण° । ६. A रुठ विवाह । ७. A जाम । ८. ताम । ९. A जीविच्च तहु । १०. A °वसकूरारि° ।

कथइ थिय मरगय पोमराय
कथइ हल्लइ चिर्षेहि चलेहि
णं गायइ भमरहिं रुणुणंति
पुरि अक्खइ सुत्तउ कामबाणु
जा णिन्मिय पालियणिहिघडेण
तण्णयरीसहु पियगेहिणीइ
हिमहासकाससंकासवासि

घत्ता—सुहं सुत्तइ पुण्णपवित्तइ रयणिहि पच्छिमजामइ ॥
अवल्लोइय मणि पोमाइय सिविणावलि जयसामइ ॥४॥

करडगलियमयधारओ
वसहो सण्हासोहिओ
पविणिहणहुरुक्केरओ
णवपंकयसरसामिणी
सुसुगुमंतमहुयरचलं
पुण्णो लच्छिसहोयरो
कीलाए उड्ढोणया
वयणसमपियसयदला

णं आहंढलघमुदंढलाय ।
णं णच्चइ कामिणि करयलेहि ।
पारावयसदं णं कंणंति ।
दरिसइ व कुसुमधूलीवियाणु ।
सा मइ वण्णिणल्लइ किं जडेण ।
सोहमगमहाजलवाहिणीइ ।
णिह्वायंतिइ तल्लिमप्पएसि ।

करि गिरिमित्तिवियारओ ।
सुरलंगूलपसाहिओ ।
विसंमो सीहकिसोरओ ।
गयवरण्हविया गोमिणी ।
दामजुयं सुहपरिमलं ।
गयणे उड्ढ दिवायरो ।
सरमभिरा पाढीणया ।
कलसा दोणिण ससंगला ।

हरे और नोले मणियोंसे काली है, मानो धरतीपर मेघमाला आ पड़ी हो। कहीं मरकत और पद्मरागमणि थे, मानो इन्द्रधनुषके दण्डकी कान्ति हो। कहींपर चंचल ध्वजोंसे आन्दोलित थी, मानो कामिनी अपने चंचल हाथोंसे नाच रही हो, मानो गुनगुनाते हुए भ्रमरोके बहाने गा रही हो, मानो कवूतरोके शब्दोंसे शब्द कर रही हो, मानो वह नगरी लगे हुए कामबाणको बता रही हो, मानो कुसुम परागके विज्ञानको दिखा रही हो। जिसका निर्माण निधिकलशोंकी रक्षा करनेवाले कुवेरने किया हो, उसका वर्णन मुख जैसे जड़ कविके द्वारा कैसे किया जा सकता है? सौभाग्य-महाजलकी नदी, उस नगरीके राजा की प्रिय गृहिणी, हिम हास कांसके समान पलंगपर निद्रामें ऊँघती हुई—

घत्ता—पुण्यसे पवित्र उसने सुखसे सोती हुई रात्रिके अन्तिम प्रहरमें स्वप्नावली देखी और मनमें प्रसन्न हुई ॥४॥

गण्डस्थलसे मद झरता हुआ और गिरिमित्तिका विदारण करनेवाला गज, गल कम्बलसे शोभित और खुर तथा पूँछके प्रसाधित वृषभ, वज्रके समान नखोंके समूहवाला विषम सिंह किशोर, नवकमलोंके सरोवरकी स्वामिनी और गजवरोंके द्वारा अभिषिक्त लक्ष्मी, जो गुनगुन करते भ्रमरोंसे चंचल है ऐसा शुभपरिमलवाला मालायुग्म, पूर्ण लक्ष्मीसहोदर (चन्द्रमा), आकाशमें उगा हुआ सूर्य; क्रीडामें उड़ता हुआ और जलमें धूमनेवाला मत्स्ययुगल ।

२. A चेंबें । ३. P कुणंति । ४. P णच । ५. A सुहसुत्तइ ।

५. १. AP विसमव ।

४१

- वियसियतामरसायरो मयकरिल्लो सायरो ।
 १० गरुयं गयरिउआसणं सुरसउहं तमणासणं ।
 णिद्धं^२ गायणिहेलणं काओयरकयकीलणं ।
 दिसिवहपत्तमऊहओ चंचिररयणसमूहओ ।
 पसरियजालाणियकरो विमलो मारुयसहैयरो ।
- घत्ता—फलु बालहि सिविणयमालहि पुच्छंतिहि धवलच्छिहि ॥
 १५ पइ भासइ तणुरुहु होसइ तिजगणाहु तुह कुच्छिहि ॥५॥

६

- रायहु घरु सयमहपेसणेण कंचीणिवद्धकिंणिसणेण ।
 आगय सिरि हिरि दिहि कंति बुद्धि विरइय जयसामहि गन्भसुद्धि ।
 माणिककिरणपसरियवियार छम्मास पडिय घरि कणयधार ।
 कत्तियपडिवयदिणि चंदैसुक्कि^३ रेवइणवखत्ति मलोहमुक्कि ।
 ५ गयरुवै गंगापंडुरेण कयसुकयमहीरुहफलभरेण ।
 अवइणु सुराहिउ गन्भवासि चउभेयदेवपुंजाणिवसि ।
 अहिसिउचं मायापियरयाइ मंगलकलसहिं जिणगुणरयाइ ।
 तिहुवणवइगुरुहि गुरुत्तणेण समलंकियाइ सुपहुत्तणेण ।
- घत्ता—णच्चंतहिं मउ गायंतहिं करहयतूरणिणायहिं ॥

- १० घरपंगणु दिसि गयणंगणु छायाउ अमरणिकायहिं ॥६॥

जिनके मुखोंपर कमल समर्पित हैं ऐसे मंगल सहित दो कलश, विकसित कमलवाला सरोवर; मगररूपी हाथियोंसे भरा समुद्र। भारी सिंहासन, अन्धकारको नष्ट करनेवाला सुरविमान, स्निग्ध नागभवन कि जिसमें साँप क्रीड़ा कर रहे हैं, जिसकी किरणें दिशापथोंमें व्याप्त हो रही हैं ऐसा रंग-बिरंगा रत्नसमूह। जिसका ज्वाला समूह फैल रहा है ऐसा विमल अनल।

घत्ता—स्वप्नमालाके फलको पूछनेवाली धवलाक्षिणी बालासे पति कहता है कि तुम्हारी कोखसे त्रिजगत्स्वामी पुत्र होगा ॥५॥

६

इन्द्र की आज्ञासे करधनीमें बँधे हुए किंकिणियोंके शब्दोंके साथ श्री, ह्री, वृत्ति, कान्ति और बुद्धि देवियाँ आयी और उन्होंने जयश्यामाकी गर्भशुद्धि की। माणिक्य किरणोंसे जिसका विकार प्रसरित हो रहा है, ऐसी स्वर्णधारा छह माह तक धरमे बरसी। कार्तिक कृष्णा प्रतिपदाके दिन, मल समूहसे भुक्त रेवती नक्षत्रमे गंगाके समान सफेद गजरूपमे, किये गये पुण्यरूपी वृक्षके फलके भारके कारण वह सुरराज, चार प्रकारके देवोंके पूजा-निवास उस गर्भवासमे आया। जिनवरके गुणोंमें रक्त माता-पिताका मंगल कलशोंसे अभिषेक किया गया। तथा त्रिभुवनपतिके पिताको गुरुत्व और सुप्रभुत्वसे अलंकृत किया गया।

घत्ता—नाचते हुए, कोमल गाते हुए, हाथोंसे बजाये गये तुर्योंके निनादोवाले अमरनिकायोंसे गृह-प्रांगण, दिशाएँ और आकाशरूपी प्रांगण आच्छादित हो गया ॥६॥

२. P दिद्धं णाय^० । ३. P सहोयरो ।

६. १. A जयसामहो । २. A चंदमुक्कि । ३. AP^० पुजजापवैसे ।

७

पुणु वसुवरिसणविहवें गयाई
गइ विमंलरिसीसरि दीहराई
जइयहुं अंतिमपल्लहु तिपाय
तइयहुं भैवभूरुहसत्तइइ
जेट्टहु मासहु तमकसँणपक्खि
त्तप्पणत्त तिहुवणसामिसालु
दावियसुरकामिणिणट्टलीलु
परिअंचिचि तं पुरवरु विसालु

घन्ता—उत्तंगहु रुम्ममयंगहु सूयरखद्धकसेरुहि ।

गच सुंदरु देव पुरंदरु णाहु लएप्पिणु मेरुहि ॥७॥

१०

८

भावाल्ल गच्चंतहिं णडेहिं
अहिसिन्नु भडारत्त भावणेहिं
वइभाणिणहिं वीणाहरेहिं
भूसिउ परिहाविउ अरुहु संतु
आणेप्पिणु पुणु पुरवरु पसण्णु
पणविचि सुरवइ गउ णिवविमाणु

खीरोयखीरधाराघडेहिं ।
वणंसुरवरेहिं जोइसगणेहिं ।
गायत्त वंदित्त मत्तलियकरेहिं ।
गाणें अणंतु कोक्खिउ अणंतु ।
देविदे देविहि देव दिण्णु ।
वड्डहइ सिस्सु णं सिस्सुसेयमाणु ।

५

७

पुनः घनकी वषट्कि वैभवसे नौ माह बीतनेपर, जब विमल ऋषीश्वरको (निर्वाण प्राप्त हुए) नौ सागर समुद्र समय हो गया और जब अन्तिम पत्न्यके भी जिसमे निर्दया (हिंसा) के द्वारा घमंकी छाया नष्ट हो गयी है, ऐसे अन्तिम भागमे संसाररूपी वृक्षके लिए आग, तीन ज्ञानके घारी और महाविवेकशील त्रिभुवन श्रेष्ठ, श्रेष्ठ वृक्षलाकी निर्विघ्न द्वादशीके दिन उत्पन्न हुए । आकाशका अन्तराल सुरवरसे आच्छन्न हो गया । जिसने देवकामिनियोंकी नृत्य-लीलाका प्रदर्शन किया है, ऐसा इन्द्र ऐरावतपर चढ़कर और नीचे आकर उस विशाल पुरवरकी प्रदक्षिणा कर, मायावी बालक माताको देकर—

घन्ता—और स्वामीको लेकर, “जिसमे सुअरों द्वारा अलकंक (कसेरु) खाया जाता है, ऐसे ऊँचे स्वर्गमय सुमेरु पर्वतपर गया ॥७॥

८

भावपूर्ण नृत्य करते हुए नटो और क्षीरोदकके क्षीरधारा-घटोके द्वारा भवनवासी देवों, व्यन्तर देवों, ज्योतिषदेवों, वैमानिकदेवों और वीणा धारण करनेवालो (किन्नरो) ने हाथ जोड़े हुए अभिषेक किया, गायी और वन्दना की । शान्त अरहन्तको भूषित किया और वस्त्र पहनाये । ज्ञानसे अनन्त होनेके कारण उनका नाम अनन्त रखा गया । पुनः नगरमे आकर देवेन्द्रने

७. १. P विमल रिस्सी । २. A भूहल्लेत्तहेउ । ३. A कसिण । ४. AP अवयरिउ । ५. A कवडवाडु ।

६. A भम्ममयंगहु ।

८. १. P omits वणं ।

जोग्हालच गिहिलकलाच लेंतु
कामगिताववित्थर हरंतु

सुहदंसणु कुवलयदिहि करंतु ।
अकलंकु अखंड पसणकंतु ।

घत्ता—जिणु घरिसहं कयजणहरिसहं माणियइच्छियसोकखई ॥

१०

जैहि कुर्वैरत्तणि थिच सिमुकीलणि तहिं सत्तद्ध जि लक्खई ॥८॥

पुणु तहु कइ पत्ती मयणताच
सिंचिय अहिसेयवेळंनुएहिं
उट्टिय लहु सत्तंगई घुणति
णियपरियणणिवसणु संवरंति
अवल्लोइय णाहहु खेचं देंति
पुज्जिच सूहच इंदाइएहिं
मुजंतहु संपयसुहसयाई
पण्णाससरासंण देह तुंगु
णाणामहिवालयकुलसमगि

सिरि मुच्छिय चमरहिं दिण्णु वाच ।
सच्चेयण कय मइवरणंएहिं ।
अरि सुहि मज्झैत्थु बि मणि मुणतिं ।
मिलियहं मंडलियहं मणु हरंति ।
चच्छयलि विउलि लीलइ वसंति ।
सीसेण णमंसिच दाइएहिं ।
पणदहसमाहं लक्खई गयाई ।
तवणीयवण्णु णं णवपयंगु ।
सो रयणिहि थिच अत्याणमगि ।

१०

घत्ता—तहिं राएं भविचिसहाएं उक्क पडंति गिरिक्खिय ॥

गय चंचल जिह सा सयदल तिह णररिद्धि बि लक्खिय ॥९॥

प्रसन्न देवको मालाके लिए दे दिया । इन्द्र प्रणाम करके अपने विमानमें चला गया । बालक इस प्रकार बढ़ने लगा मानो ज्योत्स्नाका घर पूर्ण कलाओंको ग्रहण करता हुआ शुभदर्शन कुवलय (पृथ्वीमण्डल—कुमुद समूह) को सौभाग्य देता हुआ बालचन्द्र हो । कामाग्निके तापका विस्तार करते हुए अकलंक अखण्ड एवं प्रसन्नकान्त—

घत्ता—जिनभगवात् जोगोंको हर्ष प्रदान करते, इच्छित सुखोंको भोगते तथा चिन्तुकीड़ा करते हुए जब कुमारवस्थामे रह रहे थे तो साढ़े सात लाख वर्ष बीत गये ॥८॥

९

फिर उनके लिए प्राप्त राजलक्ष्मी भदन्से तापको प्राप्त हुई । सूच्छित उसे चमरोसे हवा दी गयी, अभिवेकके घटजलसे उसे अभिषिक्त किया गया, मन्त्रीवरोंके द्वारा सचेत किया गया । वह शीघ्र उठी (राज्यलक्ष्मी) और अपने सात अंगोंको (स्वामी अमात्यादि) को घुनती है, शत्रु सुधी और मध्यस्थका अपने मनमें ध्यान करती है, अपने परिजनरूपी वस्त्रका संवरण करती है, मिले हुए माण्डलीक राजाओंका मनहरण करती है, देखनेपर जो खेद वेती है, ऐसी वह उन स्वामीके वक्षस्थलपर निवास करती है उस सुभगके इन्द्रादिकोने पूजा की तथा देवाने नमस्कार किया । इस प्रकार सम्पत्तिके सैकड़ों सुख भोगते हुए उनके पन्द्रह लाख वर्ष बीत गये । उनका शरीर पचास घनुष ऊंचा था । स्वर्णके समान रंगवाले मानो नवसूर्य हो । जो नाना प्रकारके राजाओंके कुलोंसे परिपूर्ण हैं, ऐसे दरवारमे रात्रिके समय वह बैठे हुए थे ।

घत्ता—वहाँ भव्यसहाम राजा अनन्तने एक दूटते हुए तारको देखा । जिस प्रकार व चंचल तारा सौ टुकड़े होकर चला गया, उसी प्रकार उन्होंने मनुष्यके वैभवको देखा ॥९॥

२. P पसण्णु कंतु । ३. A omits जहिं । ४. AP कुमरत्तणि ।

९. १. AP° धडंमएहिं । २. AP° वरणरैहिं । ३. A° भज्जत्थइं । ४. P° सरासणु ।

१०

ता तणुद्धरंजियछणससीहिं
 गहवणाइउं पोमासंगमेहिं
 अप्विवि अणंतविजयहु सधामु
 महुरञ्जुणिकिणिगिळवमाणु
 छट्टेण जेह्मासंतरालि
 वरुणासाधुलिइ खरंसुजालि
 पहु पंचमुट्टि सिरि लोउ देवि
 बोयइ दिणि दिणयरकरफुरंति
 राएं विसाहभूएं अणंतु
 दिण्णउं ते' तहु आहारदाणु

संबोहिउ दिव्वमहारिसीहि ।
 कल्लाणु कयउं सुरपुंगमेहिं ।
 णीसेसु रेञ्जु धणुं साहिरामु ।
 आरुडउ सायरदत्तजाणु ।
 बारसिवासरि णित्तरवालि ।
 उज्जाणि सहेउइ घणतमालि ।
 सहसेण णिवहं सहुं दिक्ख लेवि ।
 हिंउंतु देउ उज्जाहरंति ।
 जयकारिवि धरिउ महीमहंतु ।
 पंचविहु वियमिउ चोळ्ठाणु ।

५

१०

घत्ता—णियमत्थहु वसदिसिवत्थहु खरतवचरणसमत्थहु ॥

तुइ अइइं ठुरियविमहइं गयइं तामु छम्मत्थहु ॥१०॥

११

मासम्भि पहिल्लइ महूपमत्ति
 पुविमल्लइ वणि आसत्थमूलि
 संभूयउं लोयालोघगामि
 आइय वत्तीस वि सुरवरिंद

णिउंइइ दिणि मासंतपत्ति ।
 पंचमउ णाणु ह्यधाइमूलि ।
 थिउ अरुहावत्थहि भुवणसामि ।
 गह तारा रिक्ख खरंसु चंद ।

१०

तव जिन्होने अपने शरीरकी कान्तिपोसे पूर्णचन्द्रको रंजित किया है ऐसे दिव्य—महा-
 ऋषियों (लौकान्तिक देवों) ने उन्हें सम्बोधित किया । लक्ष्मी सहित देवश्रेष्ठोंने अभिषेक कर
 दीक्षा कल्याणक किया । अनन्तविजयके लिए अपना घर, समस्त राज्य और सुन्दर धन देकर,
 मधुर ध्वनिवाली किंकिणियोसे शोभित सागरदत्ता नामकी शिविकामे चढ़कर ज्येष्ठ कृष्णा
 द्वादशीके दिन (जबकि चन्द्रमा उदित नहीं हुआ था), सूर्यके पश्चिम दिशामे ढलनेपर, सहेतुक
 उपवनमे पांच मुट्टियोसे केश लौच कर एक हजार राजाओके साथ स्वामीने दीक्षा ले ली ।
 दिनकरकी किरणोसे चमकते हुए दूसरे दिन अयोध्या नगरीमे विहार करते हुए धरतीमे पूज्य
 अनन्तनाथको राजा विशाखभूतिने जयजयकार कर रोक लिया । उसने उन्हे आहार दान दिया ।
 वहाँ पांच आश्चर्यके स्थान हुए ।

घत्ता—नियमोमें स्थित दिगम्बर तीव्रतर तप करनेमें समर्थ और छद्मस्थ उनके पापोंको
 नाश करनेवाले उनके दो वर्ष वीत गये ॥१०॥

११

मधुसे प्रमद चैत्रकृष्ण अमावस्याके (चन्द्रविहीन) दिन पूर्वोक्त वन (सहेतुकवन) में
 अश्वत्थ वृक्षके नीचे चार घातिया कर्मोका नाश करनेपर उन्हे पांचवाँ ज्ञान उत्पन्न हुआ । वह
 लोकालोकको देखनेवाले हो गये तथा भुवनस्वामी अर्हत्-अवस्थामे स्थित हो गये । वत्तीसों

१०. १. AP देसु । २. A घणसाहिरामु । ३. AP सायरदत्तु । ४. AP °फुसिइ । ५. A विसाहभूइं ;
 P वसाहभूइ । ६. A तं तहु । ७. AP चोज्जु ।

- ५ तडि मेह सुवर्णय दिसग्गिणाय मरु जलणिहि थणियासुरणिहाय ।
किंणर किंपुरिस महोरगाय गंधव जक्ख रक्खस पिसाय ।
संपत्त भूय भत्तिल्लभाव सयल वि थुणंति जय देव देव ।
जय जय सामासुय जय अणंत जय मिहिरमहाहिय गुणमहंत ।
जय जणणणिहणमयरहरसेउ जय सिव सासयैसिवलच्छिहेउ ।
- १० घत्ता—जिणणामे भत्तिपणामे पावमहेताह भज्जेइ ॥
गयगव्वहं सव्वहं भव्वहं भावमुद्धि संपजइ ॥११॥

१२

- अंतरियउं जं महिसुरहरेहिं जं सुहमुं ण याणिउं जगि परेहिं ।
जं केण वि णउ दिट्ठउं सुदूहं तं पइं पयडिउं तुहं भावसूह ।
धणपुत्तकलत्तइं अहिलसंति भोयासइ तावस तउ करति ।
तुहं पुणु संसाह जि संपुंसंतु संचरहिं महामुंणि चरिउं संतु ।
५ दिणि अच्छइ घरि वावारलीणु णिसि सोवइ जणु समदुक्खरीणु ।
तुहं पुणु रिसि अहेणिसु जग्गमाणु दीसहिं परिमुक्खमायठाणु ।
वाहिरत्तवेण पइं अंतरंगु रक्खिउं णीसेसु वि मुइवि संगु ।
तवतावे पइं ताविउं णियंगु विइविउं पइं दुइसु अणंगु ।

सुरवरेन्द्र उसमें आये । ब्रह्म, तारा, नक्षत्र, सूर्य और चन्द्रमा भी, विद्युत्, मेघ, यक्ष, दिग्गज, पवन, समुद्र, गरजता हुआ असुर-समूह, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और पिशाच और भक्तिभावसे भरे भूत वहाँ पहुँचे । सभी देव स्तुति करते हैं, 'हे देव ! आपकी जय हो । हे श्यामपुत्र अनन्त, आपकी जय हो । सूर्यसे भी अधिक तेजवाले और गुणोंसे महान् आपकी जय हो । हे जन्म-मृत्युके समुद्रके लिए सेतुके समान आपकी जय हो । हे शाश्वत मोक्षरूपी लक्ष्मीके कारण आपकी जय हो ।

घत्ता—भक्तिसे प्रणम्य जिननामके द्वारा पापरूपी वृक्ष खण्डित हो जाता है और सर्वसे रहित समस्त भव्योंकी भावशुद्धि हो जाती है ॥११॥

१२

जो धरती और देव विमानोंसे अन्तर्हित है, जो सूक्ष्म है और जगमें दूसरोंके द्वारा नहीं जाना जाता, जो इसना दूर है कि किसीने नहीं देखा, उसे हे भावसूर्य, तुमने प्रकट कर दिया । तापस लोक वन, पुत्र और कलत्रकी इच्छा करते हैं और भोगकी आशासे तप करते हैं, लेकिन आप संसारका सम्मार्जन करते हुए चलते हैं । हे महामुनि, आप शान्त चारित्रका आचरण करते हैं । जन दिनमें घरमें व्यापारमें लीन रहता है, और रात्रिमें श्रमके कष्टसे थककर सो जाता है । आप ऋषि हैं, आप दिनरात जागते रहते हैं और प्रमादके स्थानसे आप मुक्त दिखाई देते हैं । समस्त परिग्रहको छोड़कर आपने बाह्य तपसे अन्तरंगकी रक्षा की है । तपतापसे आपने अपने शरीरको तपाया है और आपने दुर्दम कामदेवका दमन किया है ।

११. १. A °मत्तिल्लभाय । २. P °णिहलं । ३. AP °जयलच्छि । ४. P महाभव । ५. A भजइ । ६. AP

भव्वहं सव्वहं ।

१२. १. P सुहमु । २. A सव्वह । ३. A संपुंसंतु । ४. AP महामुणि संचरित्तु । ५. A अहणिसि ।

धत्ता—अणुसंकुलु हृत्थर्यलामलु जिह तिह गिहिल्लु गिरिक्खिउं ॥

मयमत्तं मयणासत्तं तिहुवणु पर्हु पइं रक्खिउं ॥१२॥

१०

१३

णिम्मुककसाय जिणेसरासु
पुवंगधराहं सहासु वुत्तु
चाळीससहस एक्कूण भणमि
चत्तारि सहस तिण्णि जि सयाइं
वयसहसइं केवलदंसणाहं
तेत्थियइं जि मयविद्वावणाहं
अट्टेव सहासइं एक्कू लक्खु
सावयहं लक्ख दो चव भणति
गयसंख तिर्यसगण वंदणिज्ज
समेयहु सिहरु समासहेवि
विच्छिण्णं किरियाज्जालु सयलु
गव मोक्खहु अमवासोणिसियहि
रिदुसमसहसाइं सर्त्तराइं

जाया गणहर पण्णास तासु ।
तं तिउणउं वाइइं दुसयजुत्तु ।
पंच जि सयाइं भिक्खुयैहं गणमि ।
अवहीहराहं पालियवयाइं ।
मणपल्लवणाणमहागुणाहं ।
वसुसमयइं सिद्धविउव्वेणाहं ।
संजमधारिहि सण्णोणचक्खु ।
सावइहिं महाकइ किर गणति ।
संखेज्ज तिरिक्ख गमंसणिज्ज ।
छेइल्लु ज्ञाणु ददयरु धरेवि ।
ओसारिचि देउ तिदेहणियलु ।
गुरुजोयवभासें तहिं जि दियहि ।
सिद्धाइं रिसिहिं पणमामि ताइं ।

५

१०

धत्ता—अणुओसे व्याप्त यह समस्त संसार हे प्रभु, आपने जिस प्रकार हाथपर रखा हुआ
आँवला, उसी प्रकार समस्त संसारको देखा है और मदमत्त तथा काममें आसक्त त्रिभुवनकी
रक्षा की है ॥१२॥

१३

उन जिनेश्वरके कषायसे रहित पचास गणधर थे। पूर्वांगधारी एक हजार कहे गये हैं,
तीन हजार दो सौ वादी कहे गये हैं। उनतालीस हजार पाँच सौ भिक्षु थे, चार हजार तीन सौ
ब्रतोंका पालन करनेवाले अवधिज्ञानधारी थे। केवलज्ञानी पाँच हजार, मनःपर्ययज्ञानी महागुणसे
युक्त पाँच हजार। विक्रियाद्द्विसे सिद्ध मुनि आठ हजार थे। संयम धारण करनेवाली
और ज्ञाननेत्र आधिकार्य एक लाख आठ हजार थी। महाकवि श्रावक दो लाख गिनते हैं और
श्राविकाएँ चार लाख। वन्दनीय देवगण असंख्यात था और नमन करने योग्य तिर्यच संख्यात
थे। सम्मेद शिखरपर-आरोहण कर तथा वृद्धतासे अन्तिम ध्यान धारण कर उन्होंने समस्त
क्रिया-जालको विच्छिन्न कर दिया। देव तीन शरीरोंकी शृंखलाको हटाकर, चैत्र कृष्ण
अमावस्याके दिन, गुरुयोगमे छह हजार एक सौ मुनियोंके साथ सिद्धिको प्राप्त हुए, मैं उन्हें
प्रणाम करता हूँ।

६ A हृत्थरलं । ७, AP सयलु । ८, AP पइं पडु ।

१३. १. A सहासेक्कूण । २. AP सिक्खुयह । ३. A वसुसहस सिद्धं ; P वसुसहस सिद्धं । ४. AP वेउ-
व्वणाहं । ५ A सणाणचक्खु । ६. P omits गण । ७. A अमवासो गिसाहे, P अमवासोणिसीहि ।
८. A सदुत्तराइं ।

१५ घत्ता—तमहारहिं जलणकुमारहिं जिणसररी संकारिउं ॥
णीसल्लहिं घल्लियफुल्लहिं अमरिंदहिं जयकारिउ ॥१३॥

१४

संयण्णदुवालसतवविहूइ पुणु भासइ गणहरु इंदभूइ ।
अवरु वि समदमसंजमपसत्थि वित्तचं अणंतजिणणाहत्तिथि ।
सुप्पहपुरिसुत्तमगुणणिहाणु सुणि मागहेसहरिबलपुराणु ।
पंचसयधणुणयमणुयदेहि इह जुंजुदीवि सुरदिसिविदेहि ।
५ उत्तंगुं काउ दिण्णायणाउ णंदरि महाबलु णाम राउ ।
पयपालहु अरिहहु पय णवेवि रिसि जायउ तणयहु रज्जु देवि ।
मइं णउ रुद्धी सल्ले अणेण तणुचाउ करिवि सल्लेहेणेण ।
उत्पण्णउ कयदहैविहवियपि सुर सहसारइ सहसारकपि ।
अट्टारहसायरपरिमियाउ किं वण्णमि सुरवरु सुद्धभाउ ।
१० घत्ता—इह भारहि पयडियसुहवहि पोयणपुरि चिरु हौतउ ॥
वसुसेणउ त्थयमणयेणउ णरवह वइरिकयंतउ ॥१४॥

घत्ता—तमका नाश करनेवाले अग्निकुमार देवोंने जिन शरीरका संस्कार किया । निःशल्क तथा पुष्पवर्षा करते हुए देवोंने उनका जय-जयकार किया ॥१३॥

१४

सम्पूर्ण द्वादश प्रकारके तपकी विभूति इन्द्रभूति गणघर कहते हैं, शम-दम और संयमसे प्रशस्त अनन्तनाथ तीर्थकरके तीर्थमें एक और वृत्तान्त हुआ । सुप्रभ और पुरुषोत्तमके गुणसमूहसे युक्त, नारायण और बलभद्रका पुराण हे मागधेश, सुनो । इस जम्बूद्वीपमें जहाँ मनुष्यके शरीरकी ऊँचाई पाँच सौ धनुष है ऐसे पूर्वविदेहके नन्दपुरमें दिग्गजकी तरह नादवाला उत्तुग शरीर महाबल नामका राजा था । वह प्रजापाल (नामक) अर्हत्के चरणोंमें प्रणाम कर, अपने पुत्रको राज्य देकर मुनि हो गया । किसी भी प्रकार (किसी भी मूल्यपर) उसने मतिको शल्यसे अवरुद्ध नहीं होने दिया । सल्लेखनाके द्वारा शरीरका त्याग कर, जिसमें दस प्रकारके कल्पवृक्ष हैं, ऐसे सहस्रार स्वर्गमें देव हुआ । उसको आयु अठारह सागर प्रमाण थी । उस शुद्धभाववाले देवका मैं क्या वर्णन करूँ ?

घत्ता—इस भारतवर्षमें, पहले जिसमें शुभपथ प्रकट है ऐसा पोदनपुर नगर था । उसमें स्त्रीके मनको चुरानेवाला और शत्रुओंके लिए यमके समान राजा था ॥१४॥

१. A सक्कारिउ ।

१४. १. P has before this: जिणतणु पणवेण्णिणु गउ सुरिदु, धरणंदु णरिदु खगिदु चंदु; K gives it in margin in second hand । २. A संणुणु । ३. AP उत्तुग काउ । ४. AT मइ णावरुद्ध ।

५. AP दहवियवियपि । ६. AP तियमण ।

१५

सुहृद्दोहामियसरयचंद
रहरहसपसाहियजोग्वाहं
तामायच जियपढिवक्खंदंइ
अइरावयकरथिरथोरबाहु
वसुसेणं मण्णिउ परममित्तु
अवलोइवि णंदहि चारु वयणु
अवलोइवि णंदहि खीणु मब्बु
विडु सहंहुं ण सक्खि मयणवाणु
वसुसेणं दइयविओइएण
वउं लइउ पासि णासियसरासु
अप्पचं दंडिउ छंडिउ ण माणु

महएवि तासु णामेण णंद ।
अच्छति जाम विण्णि वि जणाहं ।
णामेण चंडसासणुं पयंडु ।
राणउ सुहृद्वर्गणि मलयणाहु ।
तहु कंतहि लग्गउ तासु चित्तु ।
विडु जूरइ ओहूल्लंतवयणु ।
विडु कुप्पइ तप्पइ हिययमब्बु ।
अवहरिचि णंद गउ णिययठाणु ।
असमत्थं विहिणित्तेइएण ।
सेयंसणामजोईसरासु ।
संमोहजणणु वद्धउं णियाणु ।

घत्ता—तवचरणहु खंचियकरणहु हउं फलु एत्तिउं मग्गमि ॥
पर्यारिउ सो खलु वहरिउ मारिचि परभवि वग्गमि ॥१५॥

१६

तहु वहरिवारिधाराइ जैव
इय वंधिचि दुहु णियाणसल्लु
संभूयउ तहि सहसारसग्गि

परिहवपडु धोवमि होउ तेव ।
सुउ सो कालं मोहंहुगिल्लु ।
जिणतवहलेण माणियसमग्गि ।

१५

अपने मुखचन्द्रसे शरदचन्द्रको पराजित करनेवाली उसकी नन्दा नामकी महादेवी थी । जिनका यौवन रतिरससे प्रसाधित है, ऐसे वे दोनों जबतक वहाँ थे तब जिसने शत्रुपक्षके दण्डको जीत लिया है, ऐसा चण्डयासन नामका राजा आया । ऐरावतकी दूँके समान स्थिर और स्थूल हाथोंवाला तथा सुभटोंमें अग्रणी वह मलय देशका राजा था । वसुषेणने उसे अपना मित्र मान लिया । उसकी पत्नीसे उसका चित्त लग गया । नन्दाका सुन्दर मुख देखकर अवन्ततमुख वह दुष्ट पीड़ित ही उठता है । नन्दाका क्षीण मध्य भाग देखकर, उसके हृदयका मध्यभाग क्रुद्ध और सन्तप्त होता है । वह विट कामवाणको सहन करनेमें समर्थ नहीं हो सका, वह (चण्ड) नन्दाका अपहरण कर अपने स्थानपर चला गया । पत्नीसे विद्युक्त, असमर्थ और भाग्यसे निस्तेज वसुषेणने कामदेवका नाश करनेवाले श्रेयांस नामक योगीश्वरके पास व्रत ग्रहण कर लिया । अपनेको दण्डित किया । परन्तु मान नहीं छोड़ा । उसने मोह उत्पन्न करनेवाला निदान बाँधा ।
घत्ता—“इन्द्रियोंको दमित करनेवाले तपश्चरणका मैं इतना ही फल माँगता हूँ कि दूसरे जन्ममें परस्त्रीका अपहरण करनेवाले उसे मारकर मैं नृत्य करूँ ।” ॥१५॥

१६

जिस प्रकार उसकी रक्तरूपी जलबारामे मैं अपने पराभवके पटको घोंसकूँ, वैसे ही वह दुष्ट यह निदान-शाल्य बाँधकर और मोहप्रस्त होकर समय जानेपर मर गया । जिन तपके

१५ १. AP सुहृदंदा । २. A पढिवक्खवुडु; P पढिवक्खदंइ । ३. A चंडसासणपयंडु । ४. A सुहृद्वर्गमि ।

५ AP क्षूरइ । ६ A ओहूल्लंमवयणु; P उहुल्लुल्लवयणु । ७. A सहिचि । ८. AP वउ ।

१६. १. A मोहघगिल्लु but T मोहजलारं ।

५ तर्हि विद्वज्ज तेण महाबलेण
बद्धज सणेहु कीलाविसालु
तर्हि कालि सदिवि पाणाकिलेसु
इह भारहि कासीणामदेसि
पुहईसरु तर्हि णामें विलासु
एयहं दोहं मि लक्खणणित्तु

देवेण भव्वज्जणवक्खलेण ।
सहवासं दोहं मि गल्लिज कालु ।
परिभमिन्नि चंडसासणु भवेसु ।
वाणेरसिपुरि वरि घरणिवेसि ।
गुणवह्णामें महएवि तासु ।
महसूयणु णामें जाज पुत्तु ।

१० घत्ता—रणि मिलियहं परमंडलियहं भुयवळु पवळु विजित्तं ॥
तं सुहयरु रूपयगिरिवरु धरिवि महीयळु भुत्तं ॥१६॥

१७

जर्हि वरिसहं लक्खइं णिद्धियाइं
तहु भुंजंतहु लक्खीविलासु
दारावइपुरि णं वससयक्खु
तहु जयवइ अवर वि अत्थि वीय
५ कालेण भुवणि किर को ण गसिठ
पढमाइ महाबळु पुत्तु जणिठ
सुप्पहु पुरिसुत्तसु णामधारि
ते वेण्णि वि पंडुरकसणवण्ण

जर्हि वरिससयाइं जि संठियाइं ।
तर्हि अवसरि सुणि अवरं वि पयासु ।
सोमप्पहु पहु णवपडमचक्खु ।
लहुई पणइणि णामेण सीय ।
सुरवरु सहसारविर्माणलहसिठ ।
वीयइ जो चिरु वसुसेणु भणिठ ।
ते वेण्णि वि हलहरदाणवारि ।
ते वेण्णि वि उणयपुण्णधण्ण ।

फलस्वरूप वह मान्य सामग्रीसे युक्त सहस्रार स्वर्गमे उत्पन्न हुआ। वहाँ उसे भव्यजनोके लिए वत्सल महाबल देवने देखा। उसका स्नेह हो गया। इस प्रकार साथ-साथ रहते हुए कौड़ासे विशाल उनका समय बीत गया। उसी समय नाना क्लेशोंको सहन कर और जन्म-जन्मान्तरोंमें भ्रमण कर चण्डशासन राजा इस भारतके काशी नामक देशके, जिसमे सुन्दर धरोकी रचना है, ऐसे वाराणसी नगरमें विलास नामका राजा था और उसकी गुणवती नामकी पत्नी थी। इन दोनोंके लक्षणोंसे परिपूर्ण मधुसूदन नामका पुत्र हुआ।

घत्ता—युद्धमें आये हुए शत्रुराजाओंके प्रबल भुजबलको उसने जीत लिया। उसने शुभकर विजयार्थ गिरिवरको अपने अधीन कर धरतीतलका भोग किया ॥१६॥

१७

जहाँ लाखों वर्ष ऐसे बीत जाते हैं कि जैसे सैकड़ों वर्ष बीते हो। वहाँ उसके लक्ष्मी-विलासका भोग करते हुए उस अवसरपर दूसरा प्रकाश (महिमा या प्रसंग) सुनिए। द्वारावती नगरीमें नवकमलके समान आँखोंवाला सोमप्रभ नामका राजा था जो भानो इन्द्र था। उसकी जयावती और दूसरी छोटी सीता नामकी प्रणयिनी थी। इस संसारमे समयके द्वारा कौन नहीं ग्रस्त होता। वह सुरवर सहस्रार विमानसे च्युत होकर पहली रानी (जयावती) से महाबल नामका पुत्र हुआ। दूसरीसे जो वसुषेण नामका राजा था, वह सुप्रभ नामका धारी पुरुषोत्तम

२. A^० देसु । ३. A^० पुरधरवरविसेसु; P^० पुरिधरवरविसेसु । ४. AP महसूयणु । ५. A तं सुहयरु ।
१७. १. AP तर्हि । २. AP अवस । ३. P णव पडम । ४. AP विवाण । ५. P वीयड ।
६. AP पुणवण्ण ।

ते त्रेणि वि साहियसिद्धिजिज्ज ते त्रेणि वि खयरामरहं पुज्ज ।
 घत्ता—हरिकंधर धवलधुरंधर जोइवि कलहपियारत्त ॥ १०
 महिरायहु दावियघायहु जाइवि अक्खइ णारत्त ॥१७॥

१८

भो भो महसूयण सुहडमीह समरंगणि को तुह लुइइ लीह ।
 सुंदर सोमप्पहवेहजाय मइं दिह्हा सुणि रायाहिराय ।
 दारावइपुरवरि दोणि भाय सक्कु वि णत्त पावइ ताहं छाय ।
 णं तुहिणंजणमहिहर महंत थिर तीसैवरिसलक्खात्तवंत ।
 पण्णाससरासणवेहमाण संगामरंगणिव्वूडमाण । ५
 तहिं कालैसलोणत्त भणइ एत्तव भो सुप्पह महिवइ तुहुं जि देव ।
 को अण्णु रात्त मइं जीवमाण को जीवइ गुणसंणियिवाणि ।
 आरुसोप्पिणु तुंस्मियमणेण ता दूत्त दिण्णु महसूयणेण ।
 पडिवक्खपसंसियविक्रमात्तु गत्त तात्तु पात्ति पुरिसुत्तमात्तु ।
 पभणितं भो भो लहु देहि कप्पु अविक्खणु किं किर करहि दप्पु । १०
 घत्ता—पहु मण्णहि कलि अवगण्णहि करि उत्तवं महु केरत्तं ॥
 महसूयणि भिडिय महारणि ण रेमइ खग्गु तुहारत्तं ॥१८॥

हुया । वे दोनो क्रमशः बलभद्र और नारायण थे । वे दोनो ही धवल और कृष्ण वर्णके थे, वे दोनों ही उन्नत पुण्यरूपी धान्यवाले थे । उन दोनोने विद्याएँ सिद्ध की थी । वे दोनों ही विद्याधरों और अमरोंके द्वारा पूज्य थे ।

घत्ता—वृषभके समान कन्धोंवाले और धवल धुरन्धर उन दोनोंको देखकर कलहप्रिय नारद जाकर आघात करनेवाले धरतीके राजसे कहता है ॥१७॥

१८

“हे सुभटोंमें सिंह मधुसूदन, युद्धके प्रांगणमें तुम्हारी रेखा कौन पोछ सकता है ? हे राजाधिराज, सुनिए—सुन्दर, सोमप्रभके शरीरसे उत्पन्न द्वारापुरीमें मैंने दो भाई देखे हैं । उनकी कान्तिको इन्द्र भी नहीं पा सकता मानो वे महान् हिम और नीलांजनके पहाड़ हैं, स्थिर और तीस लाख वर्षकी आयुवाले हैं, उनके शरीरका प्रमाण पचास धनुष है, दोनो समरके प्रांगणमें निर्वाह करनेवाले हैं ।” तब उनमें जो श्याम वर्णका सुप्रभ नामका (पुत्र) राजासे कहता है कि तुम्हो एकमात्र देव हो, मेरे जीते हुए दूसरा कौन राजा हो सकता है ? मेरी प्रत्यंवापर बाण चढानेपर कौन जीवित रह सकता है । तब क्रुद्ध होकर मधुसूदनने पीडित मन होकर अपना दूत भेजा । जिसने शत्रुकी विक्रमांशुको संशयमें डाल दिया है, ऐसे उस पुरुषश्रेष्ठके पास गया और बोला, “अरे-अरे, शीघ्र कर दो । हे अज्ञानो, तुम घमण्ड क्यों करते हो ।

घत्ता—तुम राजाको मानो, कलहकी उपेक्षा करो, मेरा कहा हुआ करो । मधुसूदनके महायुद्धमें लड़ते समय तुम्हारा खड्ग नहीं ठहरेगा ॥१८॥

१८. १. A लहइ । २. AP तीसलक्खवरिसात्तवंत्त । ३. AP काले । ४. AP हूमियं । ५. A वरत्त; K वरत्त but corrects it to रत्त ।

१९

तं गिसुगिचि भासइ सीरधारि
 अम्हारउ करु मग्गइ अयाणु
 अम्हारउ करु सहुं धणुंहरेण
 अम्हारउ करु चक्केण फुरइ
 ५ अम्हारउ करु तहु कालवासु
 तं सुगिचि महंतउ गउ तुरंतु
 ण समिच्छइ संधि ण देइ वन्वु
 तं गिसुगिचि मणि उप्पण खेरि
 संगद्ध सुहउ हणु हणु भणंति
 १० आरोहचरणचोइयसयंग
 धाइय रहवुर धयधुवमाण
 णिगउ आरुसिचि राउ जाम
 आयउ रिउ हय दुंदुहिणिगाउ

ओ दूय म कोकउ गोत्तमारि ।
 किं ण मरइ रेणि सो हम्मसाणु ।
 अम्हारउ करु सहुं असिवरेण ।
 अम्हारउ करु तहु जीव हरइ ।
 जिणु मेळ्खिचि अम्हइं भिषु कासु ।
 विण्णवइ ससामिहि पय णमंतु ।
 पर चवइ रासु केसउ सगव्वु ।
 हय रसमसंति संगहाभेरि ।
 वट्ठोदु कूडु वट्ठेमुय धुणंति ।
 धीरासंवारवाहियतुरंग ।
 गयणयलि ण साइय खगविमाण ।
 चरपुरिसहिं कंहियउं हरिहि ताम ।
 थिउ रणभूमिहि वड्ढियकसाउ ।

धत्ता—तं गिसुगिचि णियमुय धुंणिचि केसउ जंपइ कुद्धउ ।

१५

मरु मारमि पलउ समारमि रिउ बहुकालहुं लद्धउ ॥१९॥

१९

यह सुनकर बलभद्र कहते हैं, "हे दूत, अपने कुलका नाश करनेवाली बात मत करो। हे अज्ञान, जो हमसे कर मांगता वह मारे जानेपर युद्धमें क्यों नहीं भरता। हमारा 'कर' धनुर्बरेके साथ, हमारा कर असिवरके साथ, हमारा हाथ चक्रके साथ स्फुरित होता है, हमारा कर उसके जीवका अपहरण करता है, हमारा हाथ उसके लिए कालपाषा है, जिनवरको छोड़कर हम और किसके दास हो सकते हैं?" यह सुनकर दूत तुरन्त गया और अपने स्वामीके चरणोंमें प्रणाम करता हुआ निवेदन करता है—'हे देव, न तो वह सन्धिको इच्छा करता है और न धन देता है, परन्तु राम केशव सगर्व केवल बकवास करता है।' यह सुनकर उसके मनमें वैर उत्पन्न हो गया। घोड़े हिनहिना उठे। भेरी बज उठी। सुभट तैयार होने लगे, मारो मारो कहने लगे, ओठ चबाते हुए अपने दूढ़ बाहु धुनने लगे। महावतके पैरोंसे हाथी प्रेरित हो उठे। धीर धुइसवार घोड़ोंको हँकने लगे। ध्वजोंसे प्रकम्पित रथ दौड़ने लगे, आकाश-तलमें विद्याधरोंके विमान नहीं समा सके। जबतक राम (बलभद्र महाबल) निकलते हैं तबतक दूत पुरुषोंने नारायणसे कहा कि दुन्दुभि-निनादके साथ शत्रु आया है और बड़े हुए क्रोधसे युद्धभूमिमें ठहरा है।

धत्ता—यह सुनकर अपने बाहु ठोकते हुए नारायण क्रुद्ध होकर सुप्रभसे कहता है, लो मारता हूँ, प्रलय मचाता हूँ। बहुत समयके बाद दुश्मन मिला है ॥१९॥

१९. १. AP सो रणि । २. AP घणहरेण । ३. AP भुयबलि । ४. P धारासवार । ५. A रह रणिषयं ।

६. AP साहिं । ७. AP विहगिचि ।

२०

हरिवाहिणिखगवाहिसमेय
 रह तुरय हुरय णररवररुह
 चलचमरल्लत्तघयल्लणसेणुं
 दसदिसिर्वहभरिय ण कर्हि मि माइ
 फणि तेण भरेण ण केमं मरइ
 णरभोयणकइ रोमच्चियाइं
 विणिण मि सेणणइं समुहागयाइं
 जयगोमिणिमेइणिलंपडाइं
 घत्ता—दग्धिदुइं वेणिण मि दिट्ठइं सेणणइं समरि भिडंतइं ।
 हल्लसूलइं ^{१०} क्षंसकरवालहिं पहरंताइं पडंतइं ॥२०॥

णिग्गाय वेणिण वि हिमगरल्लतेय ।
 मज्जायविवजिय णं समुह ।
 उग्गायधूलोरैयकविल्लवणुं ।
 महि वज्जघडिय विहडिडि ण जाइ ।
 धुयफडकडणु थरहरइ सरइ ।
 सुपहूयइं भूयइं णच्चियाइं ।
 आलगाइं तासियदिग्गयाइं ।
 मुसुमूरियचूरियभडथडाइं ।
 घत्ता—दग्धिदुइं वेणिण मि दिट्ठइं सेणणइं समरि भिडंतइं ।
 हल्लसूलइं ^{१०} क्षंसकरवालहिं पहरंताइं पडंतइं ॥२०॥

२१

पवरसववारवेडियरहोहि
 जोहंविदेलियमंडलियमचडि
 विचडियकवाडसंदोहणीडि
 मोढामहग्घजुज्झंतवीरि

रहसंकडि णिवडियविचिहओहि ।
 मत्तडुल्लंतमणिकिरणविचडि ।
 णीडाहिरुढसुरवरसमीडि ।
 वीरंगगलियकीलालणीरि ।

२०

नारायणकी सेना और विद्याधरकी सेनाके साथ धवल और श्याम रंगवाले वे चले । रथ-
 तुरग-गज-नरवरोंसे भयंकर वह सैन्य ऐसा मालूम होता, मानो मर्यादासे रहित समुद्र हो । चंचल
 चमर छत्रध्वजसे आच्छन्न तथा उड़ती हुई धूलिरजसे कपिलवर्ण सेना दसों दिशाओमें फैलती
 हुई कहीं भी नहीं समा सकी । वज्रसे रचितके समान भूमि किसी प्रकार विघटित नहीं हो रही
 थी और इसलिये उसके भारसे किसी प्रकार मरता नहीं, कांपते हुए फनोंके समूहसे वह थर-थर
 कांपता हुआ चलता है । मनुष्योंके भोजनके लिए बहुतसे भूत नाच उठे । दोनों ही सैन्य आमने-
 सामने आ गये और दिग्गजोंको पीड़ित करते हुए एक दूसरेसे भिड़ गये । दोनों विजयरूपी लक्ष्मी
 और धरतीके लम्पट थे, दोनों भट समूहको मसलने और चूरित करनेवाले थे ।

घत्ता—दोनों सैन्य दपसे भरे हुए युद्धमें लड़ते हुए, हल्ल-मूसल-शष और करवालोसे प्रहार
 करते और गिरते हुए दिखाई दे रहे थे ॥२०॥

२१

जिसमें बड़े-बड़े घुडसवारोंसे रथोंके समूह घिरे हुए हैं, रथों ऐसा जमघट है, जिसमें विविध
 योद्धा गिर रहे हैं, जिसमें योद्धाओंके पैरोंसे माण्डलीक राजाओंके मुकुट नष्ट हो रहे हैं, जो मुकुटों-
 से उछलती हुई मणि किरणसे विनष्ट है, जिसमें नष्ट कपालोंके समूहके घर हैं, और उनपर लक्ष्मी
 और बुद्धिसे युक्त देववर बैठे हुए हैं, जिसमें ऐश्वर्य और बुद्धिसे महान् वीर युद्ध कर रहे हैं और

२०. १. AP णरवररुह । २. AP मज्जायमुक्क णं चल समुह । ३. A सेणुं । ४. A धूलोरव । ५. A
 वणु । ६. A दिसवह । ७. AP कह व । ८. A वण but corrects it to णर in second
 hand ९. P समुहं गयाइं । १०. A हल्लसूलिहि । ११. AP वरकरवालहिं ।

२१. १. A जोहोहदलिय ।

- ५ गीरेरुहसममुहपंकपण पंकयणाहें दृपंकपण ।
 कयहलणित्तेइयकयखलेण खलु दुच्छिखे दुद्धमभुयवलेण ।
 वलएवहु पइसरु सरणु अब्जु अब्ज वि णर णासइ भित्तकब्जु ।
 कब्जु वि मइं अक्खिख उत्तुं सारु सारुइ मुइ अवर वि हत्थियारु ।
 आरुहसु म जमसासणु अजाण जाणेण जाहिः सुक्काहिमाण ।
 १० माणहि मा महं रणि घाणविट्ठि विट्ठि वै भीसण तुह हणइ तुट्ठि ।
 घत्ता—पडिकणहें भणितं संतणहें फलवज्जिउ कि गज्जहि ।
 धनुदंढे डिंभैय कंढे रे कुमार मइं तज्जहि ॥२१॥

२२

- दे देहि कप्पु कि जंपिएण दुण्णयवंतें सुइविपिएण ।
 तुहं किंकरु हवं तुहं परमणाहु कि वद्ध विहलु पट्टगाहु ।
 इय भणिवि विसमभडघाइणीइ जुब्धिख विज्जइ वहरुविणीइ ।
 सीयासुएण भग्गइ अणीइ वहरुविणि जिय पडिरुविणीइ ।
 ५ ता रिब्बणा घज्जिउ फुरियधारु रहचरणु चवेलु सहसौरफारु ।
 गिरिधरणिबलयचालणवलेण तं हरिणा धरियउ करयलेण ।
 सो रेहइ तेण सुणिम्मलेण णवमेहु व रविणा णित्तलेण ।
 णियैरुवपरज्जियणित्तणेण अलियंजणसामें पत्तलेण ।

वीरोंके शरीरोसे रककी जलघारा बह रही है, ऐसे उस युद्धमे कमलके समान मुखवाले, दर्पसे अंकित, जिसने हलसे खलको निस्तेज कर दिया है, ऐसे दुदंम बाहुबलवाले दुष्टकी पंकजनाभने खूब भर्त्सना की और कहा—‘अरे तुम बलदेवकी शरणमे चले जाओ, मित्रके कामको तुम आज भी नष्ट मत करो । मैंने तुमसे सारकी बात कह दी है । तुम उसे करो । दूसरा हथियार छोड़ दो, हे अजाण, तू यमके शासनपर अधिरोहण क्यों करते हो । अभिमानसे मुक्त होकर तुम यानसे जाओ, युद्धमे मेरी बाणवृष्टिको मत मानो, वह वर्षाकी तरह भोषण तुम्हारे आनन्दको नष्ट कर देगी ?’

घत्ता—सतृष्ण प्रतिक्रमणने कहा, “बिना फलके तुम क्यों गरजते हो, हे बालक कुमार, तुम धनुषदण्ड और बाणसे मुझे धमकते हो ॥२१॥

२२

तुम कर दो, दुर्विनीत और कानोके लिए अप्रिय कहनेसे क्या ? तुम मेरे अनुचर हो, मैं तुम्हारा परम स्वामी हूँ । तुमने विफल प्रभुत्व यश क्यों बाँधा ?” यह कहकर विषम थोड़ाओंको मारनेवाली बहुरूपिणी विद्यासे बह लड़ा । सीतापुत्र नारायणके द्वारा सैन्यके नष्ट होनेपर प्रति बहुरूपिणी विद्याके द्वारा बहुरूपिणी विद्या जीत ली गयी । तब शत्रुने चमकती हुई धारवाला चपल हजारों वाराओंवाला चक्र छोड़ा । पहाड़ और पृथ्वीमण्डलको चलानेके बलवाले हरि (सुप्रभ) ने करतलसे उसे धारण कर लिया; उस निर्मल चक्रसे वह ऐसा शोभित होता है जैसे निर्दोष सूर्यसे नवमेघ शोभित हो । अपने रूपसे मनुष्यत्वको पराजित करनेवाले भ्रमर और

२. AP दोच्छिख । ३. A वि । ४. AP सयण्हें । ५. AP डिभियकंढे
 २२. १. A बहुरूपिणि । २. तरणु । ३. AP सहसार फार । ४. AP णित्तणेण । ५. A omits 8a ।

पुणु भणिव बहरि रे सुप्पहासु करि केर म जाहि कयंतवासु ।
 पालियतिखंडमंडियधरेण पंडिजंपिंषं पडिदामोचरेण । १०
 उहुं सुप्पहु विणिण वि मञ्जु दास को गन्तु रहंगे रे हयास ।
 सरसलिलि रहंगसयाई अत्थि किं तेहि धरिज्जइ मत्तहत्थि ।
 मरु मरु मारंतहु णत्थि खेव संभरहि को वि णियइद्रुदेव ।
 घत्ता—असमिच्छिवि पुणु णिन्मच्छिवि चक्के रिचसिण वोडिच ॥
 हरिहंसं लद्धपसंसं णं रणतरुहलु साडिच ॥२२॥ १५

२३

मंहरिक्खसि खद्धणिमासखंड पुरिसुत्तमेण मुत्ती तिखंड ।
 पत्थिव पसु गिलइ ण कहिं मि धाइ ओहच्छइ केण वि सह ण जाइ ।
 कालेण कण्हु गव अवहिठायु हल्लिणा चित्तिउ रिसिणाहणायु ।
 णिल्लुं चियकुंतलु करिविसीसु जायव मोमप्पहुगुरुहि सीसु ।
 परिसेसिवि भवसंसरणवित्ति चिच भूसिवि सोक्खमहावरित्ति । ५
 जहिं मुक्खु णत्थि आहारवरयु जहिं णिइ ण मंदिरु सयणवग्गु ।
 जहिं कामिणि कासु ण रोसु वोसु जहिं दोसइ एक्क वि णाहि दोसु ।
 जहिं चाहि ण विञ्जु ण मलु ण ण्हायु जहिं अप्पे अप्पं जाणमाणु ।

अंजनसे श्याम दुबले-पतले बलभद्रने शत्रुसे कहा, "हे सुप्रभास, सेवा करना स्वीकार कर लो, शमवासके लिए मत जा ।" तब तीन खण्डोसे अलंकृत धरतीका पालन करनेवाले प्रतिनारायण मधुसूदनने कहा—"तुम और सुप्रभ दोनों मेरे दास हो । हे हताश, चक्रका क्या गर्व करता है ? पानीमे सैकड़ों रथाय (चक्रवाक) होते हैं, क्या उनसे मतवाला हाथी पकड़ा जा सकता है ? मर-मर, अब तुझे मारनेमे देर नहीं है, अपने किसी इष्टदेवको याद कर ले ।"

घत्ता—इस प्रकार नहीं चाहते हुए भी उसने शत्रुको ललकारकर चक्रसे उसका सिर तोड़ दिया मानो प्रवांसा प्राप्त करनेवाले हरिरूपी हंसने रणरूपी वृक्षके फलको तोड़ दिया हो ॥२२॥

२३

जिसने मनुष्यमांसका खण्ड खाया है, ऐसी धरतीरूपी राक्षसीका पुच्छोत्तमने भोग किया । वह राजा और पशुको निगल जाती है, कहीं भी नहीं जाती । यही रहती है, किसीके साथ नहीं जाती । समयके साथ नारायण सुप्रभ सातवें नरक गया । बलेभद्रने ऋषभनाथके ज्ञानका चिन्तन किया । अपने सिरको बालोसे रहित कर सोमप्रभ मुनिका शिष्य हो गया । संसारमें भ्रमण करनेकी वृत्ति को नष्ट कर मोक्षरूपी महाभूमिको भूषित कर स्थित हो गया । जहाँ भूल नहीं है, न आहारवर्ष है, जहाँ न निद्रा है, न धर है और न स्वजन समूह है । जहाँ न कामिनी है, न काम है, न रोष है और न तोष है । जहाँ एक भी दोष दिखाई नहीं देता । जहाँ न व्याधि है, न विद्या

६. AP^० मंडलवरेण । ७. A तो जंपिच पडि^०; P वा जंपिचं पडि^० । ८. A महु मारंतहु । ९. AP णिन्मच्छिवि । १०. P णं णवसररुह पाडिच ।

२३ १. AP have before this- बहुवाउ करिवि बहुभोयवत्तु, तमतमि पत्तव पडिलच्छिकंतु । २. AP सयणमग्गु । ३. AP अप्पइ अप्पं जाणमाणु ।

१० इच्छेद् पेच्छद् पीसेसु ताम त्रिहुयणु अणंतु आयासु जाम ।
संतेण समियफुल्लाउंहेण चसथेण तेण सीराउहेण ।

धत्ता—वचगयरद् भरहेरावद् जं णरेहि आराहिउं ॥
तं सिद्धं सिवसुहुं लद्धं पुप्फदंतजिणसाहिउं ॥२३॥

इय महापुराणे तिसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महामग्गमरहाणुमण्णिप महाकइपुप्फयंतविरदप
महाकब्बे अणंतणहसुप्पहपुरिस्सुत्तममहसूयणकहंतरे णाम
अट्टवण्णासमो परिच्छेओ समत्तो ॥५८॥

है, न मल है और न स्नान, जहाँ आत्माके द्वारा आत्माको जाना जाता है । वह समस्त विश्वको वहाँ तक इच्छा करता है और देखता है, जहाँ तक अनन्त त्रिभुवन और आकाश है । शान्त कामदेवका शमन करनेवाले उन चौथे बलभद्रने—

धत्ता—रतिसे रहित भरतश्रेष्ठकी जो मनुष्योंके द्वारा आराधना की जाती है, पुष्पदन्त जिनके द्वारा वह कथित सिद्ध शिवसुख उन्होंने प्राप्त किया ॥२३॥

इस प्रकार वेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचित एवं महामग्ग भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका अनन्तनाथ सुप्रम पुरुषोत्तम और मधुसूदन कथान्तर नामका अट्टावणवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥५८॥

४. AP अच्छद् । ५ A पुल्लाउहेण । ६. AP चोत्थेण । ७. AP तं लद्धं सिवसुहुं सिद्धं ।
८. AP पुरिसोत्तमं । ९. AP अट्टावण्णां ।

संधि ५९-

जिणु धम्मु भदारु तिहुवणसारु मइं जडेण किं गज्झइ ।
चवलुकुलियायु भरियउ सायु किं कुडुवेण भविज्झइ ॥ध्रुवकां॥

१

लच्छीरामालिगियवच्छं	उणायसिरिवच्छं ।
दिव्वह्मणिं उत्तत्तयवंतं	कंतं मयवंतं ।
भामंडलरुइणिज्जियचंदं	भव्वकुमुयचंदं ।
अमरमुक्ककुसुमंजलिवासं	देवं दिव्वासं ।
बुद्धं बहुसंघोदियसुरवं	जयहुंदुदिसुरवं ।
वरकंठीरवपीढारुद्धं	मीमंसारुद्धं ।
पंचिदियभडसंगरसूरं	मुवणणल्लिणसूरं ।

५

संधि ५९

त्रिभुवनमें श्रेष्ठ आदरणीय जिनधर्मका मुझ जड़के द्वारा क्या वर्णन किया जाये? चंचल लहरोका समूह सागर क्या कुतुपसे भापा जा सकता है?

१

जिनका वक्षःस्थल लक्ष्मीरूपी रमणीके द्वारा आलिगित है, जो अशोक वृक्षके समान उन्नत है, जो दिव्यध्वनि और तौन छत्रोंसे युक्त है, जो ज्ञानवान् और सुन्दर है, जिन्होंने भामण्डल की कान्तिसे चन्द्रमाको जीत लिया है, जो भव्यरूपी कुमुदोंके लिए चन्द्रमाके समान हैं, जिनपर देवेन्द्रोंने कुसुमांजलियोंकी वर्षा की है, जो देव दिग्म्बर बुद्ध हैं, जिनका शब्द (दिव्यध्वनि) अनेक जनोको सम्बोधित करनेवाला है, जो जय दुन्दुभिके शब्दसे युक्त हैं, जो सिंहासनपर आरूढ हैं, जो मीमांसामें प्रसिद्ध हैं, जो पंचेन्द्रिय योद्धाओसे संग्राम करनेमें शूर हैं, जो विश्वरूपी कमलके

All Mss., A, K and P, have, at the beginning of this samdhi, the following stanza:—

अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा—

मर्थालंकृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः ।

किं चान्यथविद्वास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते

द्वावेतौ भरतेषुपुण्यदशनी सिद्धं ययोरीदृशम् ॥ १ ॥

K reads ते चार्थनिर्णीतयः for तत्त्वार्थ^०; देवेतौ for द्वावेतौ, and भारताख्यं for भरतेषु; P reads देवेतौ भरते तु पुण्यं । K has a gloss on देवेतौ as देवत्वं इतो प्राप्नो देवेतौ ।

१. १ A जिणधम्मु । २. P किं तं ।

- १० मंदरहिधीरं सवरहियं रायरोसरहियं ।
 दूरुच्छियमायाविरहंसं सुणिमणसरहंसं ।
 एयाणोयचियप्पविवायं मोहमेहवायं ।
 पायपोमपाडियगिन्वाणं उगयगिन्वाणं ।
 दिसिणासियदुण्णयसारंगं हयवसुसारंगं ।
 १५ तवहुयवहहुयवम्महधम्मं णमिळ्ळणं धम्मं ।
 भणिमो तस्स चरित्तं चित्तं रंजियपरचित्तं ।

धत्ता—जिह अक्खइ गोत्तमु उत्तमु णित्तमु सत्तमु सेणियरायहु ॥

तिह हं दुक्कियहरु कहंमि कहंतरु भरहहु भव्वसहायहु ॥१॥

२

- धादइसंडइ पुव्वदिसायलि पुव्वविदेहइ अंक्रुपल्लवसोहियपायचि माहवगेहइ ।
 सीयातीरिणिदाहिणतीरइ वच्छयदेसइ पुरिहि सुसीमहि दूसरहु राणजयसिरिसेसइ
 सुपसाहियसिरु वुहयणवच्छलु णिवसंइ केहइ चाएं भोएं चिहवें रुवें वम्महु जेहइ ।
 रयणिसमागमि गिलियउ छणससि अन्नमपिसाएं खीरामेळउ णावइ णाएं दिट्ठउ राएं ।
 ५ चित्तिउ णियमणि सच्छसहावें वियलियदुप्यं अमयकलायरु जेम गिसायरु गसिउ विडप्यं ।
 तेम गसेव्वइ जीउ पुसेव्वंउ कूरकयंतं णिव्वयवंतं कारिमजंतं काइं जियंतं ।

लिए सूर्य, मन्दराचलके समान धीर, शवरहित (स्व-परसे रहित, शवरके हितस्वरूप) हैं, जो राग-रोषसे रहित है, जिन्होंने माया और विरहके अंशोंको दूर कर दिया है, जो मुनियोंके मन-सरोवरके लिए हंस हैं, जो एक-अनेक विकल्पोसे विवाद करनेवाले हैं, जो मोहखपा मेघके लिए पवनके समान हैं, जिन्होंने देवोंको अपने चरणकमलोंपर झुकाया है, जो उन्नतश्रीव हैं, जिन्होंने दिशाओंसे दुर्नयस्वपी हरिणोंको भगा दिया है, जिन्होंने द्रव्यके अनुरागको नष्ट कर दिया है, जिन्होंने तपकी ज्वालामे कामदेवको बाहत कर दिया है, ऐसे धर्मनाथको प्रणाम कर, उनके परचित्तोंको रंजित करनेवाले विचित्र चरित्रको कहता हूँ ।

धत्ता—जिस प्रकार उत्तम तमरहित और प्रशस्त गौतम गणधर राजा अ्रेणिकसे कहते हैं, उसी प्रकार मैं पापको हरनेवाला कथान्तर भव्योंके सहायक भरतसे कहता हूँ ॥१॥

२

धातकीखण्डके पूर्व मेरुतलमें पूर्वविदेहमे, जो वृक्षों, अंकुरों और पल्लवोंसे शोभित है, जिसमे धनपतिश्योंके घर हैं, ऐसे सीता नदीके दक्षिण तटपर स्थित वत्सदेवकी सुसीमा नगरीमे राजा दशरथ था । जिसका सिर विजयश्रीकी पुष्पमालासे प्रसाधित है, ऐसा पण्डितजनोके प्रति वत्सलभाव रखनेवाला वह राजा इस प्रकार निवास करता था, मानो त्याग भोग वैभव और रूपमे कामदेव हो । निशाका आगमन होनेपर बादलरूपी पिशाच (राहु) के द्वारा निगला गया पूर्णचन्द्रमा राजाने इस प्रकार देखा, मानो नागके द्वारा क्षीरसमुद्र निगल लिया गया हो । स्वच्छस्वभाव और विगलित गर्व उस राजाने अपने मनमें विचार किया कि “जिस प्रकार राहुने

३. A P णविल्लणं । ४. P omits चित्तं । ५. A कहवि । ६. P सयायहु ।

२. १ A सिरि । २. P णिवइ स । ३. A गसेवव । ४. A पुसेवव ।

एव चवेपिणु रज्जिथवेपिणु अइरह्णं वणु
पडिच सुयंगई सो एयौरह्णं गिदुइ क्षिज्जिवि
पावविणारसें सुच संणारसें गच सव्वत्थहु
जं तसणाडिहि लहुयच गरुयउ काई वि अच्छइ
सो तिहि तीसई पक्खहि गलियहि सासु पलंजइ
सुकलेसु ससिसुक्खणु सुई णिप्पडियारउ
तेणं तितीससमुद्दमाणु परमारसु भुत्तं
पेसणु पढमें सयमहिण जक्खिदहु सिट्ठं

चत्ता—सुणिं^{१०} जंबूदीवइ

ससिरविदीवइ भरहखेत्ति जणपठेरइ ॥ १५

महराउ परसरु सुरकरिकरक अत्थि जक्ख रयणवरइ ॥२॥

३

पुरंधि तस्स सुप्पहा

जणेदिही जिणेसरं

सई अणंगमापहा ।

रईणिसादिणेसरं ।

अमृतके समान किरणोवाले चन्द्रमाको भ्रसित कर लिया, दुष्ट यमके द्वारा उसी प्रकार जीव पकड़ लिया जायेगा और नष्ट कर दिया जायेगा, अतः ब्रतरहित शरीरसे जीनेसे क्या ?” यह कहकर और राज्यमे पुत्र अतिरथको स्थापित कर, परिग्रह छोड़कर तथा तप ग्रहण कर वहाँ गया, जहाँ निर्जन वन था । उसने ग्यारह श्रुतागोका अध्ययन किया और निष्ठापूर्वक ध्यान कर त्रिभुवनको क्षुब्ध करनेवाला तीर्थंकरत्वका पुण्य अजित कर, पापको नाश कर तथा संन्याससे मरकर सर्वार्थसिद्धिमें गया । धर्मसे समर्थ जीवके लिए संसारमे कुछ भी दुर्गम दिखाई नहीं देता । त्रसनाद्धोमे जो भी लघु और भारी है, उसे वह अपने एक ज्ञानसे हस्तगतके समान जानता और देखता है । वह वहाँ (सर्वार्थसिद्धिमे) तीस पक्ष गलनेमे सांस लेता है, उतने ही हजार वर्ष अर्थात् तैंतीस हजार वर्षोंकी संख्या क्षीण होनेपर आहार ग्रहण करता है, शुक्ललेक्ष्यासे युक्त चन्द्रमा और शुकके रगवाला पवित्र निष्पीडाकारक इन्द्रचन्द्र उस आदरणीयका क्या वर्णन किया जाये ? उसने वहाँ तैंतीस सागर प्रमण आयुका भोग किया । यह जानकर कि निश्चयसे छह माह आयु शेष बची है, प्रथम सौधर्म इन्द्रने कुबेरको आदेश दिया—“परमागममे देखे गये जिनपूजा विधानको करिए ।

चत्ता—हे यक्ष सुनो, सूर्यचन्द्रमाके द्वीप जम्बूद्वीपके जनप्रचुर भरतक्षेत्रके रत्नपुरमें ऐरावतकी सूँडके समान हाथोवाला राजा भानु है ॥२॥

३

उसकी रानी सुप्रभा सती कामश्रीके समान है । वह, रतिरूपी निशाके लिए सूर्यके समान

५. AP read this line as पडिच सुयंगई सो अविहगई एयारह्णं वणु, P adds after this: सरिवि सुहंगई दहवम्मगई सोसिवि णियत्तणु, AP adds after this: छत्तीस वि गुणसहिए तवणिट्ठइ (A तवणिट्ठविएँ क्षिज्जिवि । ६. P एक । ७. A सो तैतीसहि । ८. A सुहं । ९. A तिणि तैतीस । १०. A पुण जंइ, P सुणि जंइ । ११. P जणे पठेरइ; K जणपवरइ but corrects it to जणपठेरइ । १२. A मेहराउ; P महाराउ ।

३. १. AP जणेइही ।

	पुरं णिवद्धतोरणं	घरं समैत्तवारणं ।
	करेहि तं तथा तुमं	कुलकमागयं इमं ।
५	णमंसिउं सुराहिबं	तओ गओ धणी मुबं ।
	णवप्पसं डिधीयलं	अणेयखाइयाजलं ।
	अणेयवण्णसालयं	अणेयणइसालयं ।
	अणेयकेचछाइयं	अणेयतूरणाइयं ।
	अणेयदारदावणं	अणेयचल्लरीवणं ।
१०	अणेयसुंदरावणं	अणेयतित्थपावणं ।
	कयं पुरं महासरं	तहिं चि रायमंदिरं ।
	घत्ता—तहिं पच्छिमरयणिहि सुत्तइ सयणिहि दीसइ देविइ कुंजरु ।	
	पसुवइ पंचाणणु विप्फुरियाणणु मयमारणणहपंजरु ॥३॥	

४

	अवरं चि सिरिदामइं दिट्ठिहि सोम्मइं ढोइयइं
	णहि पंडुरत्तवइं ससिरविच्चिवइं जोइयइं ।
	दुइ मीण रईणढ दुइ मंगलघड सरयसरु
	जलणिहि जलभीसणु सेहीरासणु सक्कघरु ।
५	सरगिंदणिहेलणु णाणामणिगणु सत्तसिइ
	सुद्धइ अवलोइउ मणि संमाइउ भणिउ पडु ।
	मइं दिट्ठा सिविणैय सोलह सिविणय दंतु सुहुं

जिनेश्वरको जन्म देगी । अतः तोरणोसे निबद्ध नगर और वारणों सहित वर तुम वहाँ इस प्रकार बनाओ कि जिस प्रकार कुलकमागत हो ।" तब देवेन्द्रको नमस्कार कर उस समय कुबेर मनुष्य-लोकके लिए गया । उसने महासरोवरसे युक्त नगर और राजभवन बनाया, जो नवसुवर्णसे पीला था, जिसमें अनेक खाइयोंका जल था, जिसमें अनेक रगके परकोटे थे, अनेक नृत्यशालाएँ थी, जो अनेक पताकाओंसे आच्छादित था, अनेक तूर्योंसे निनादित था, अनेक द्वारों और दावण (पशुओंको बाँधनेकी रस्सी) से युक्त था, जिसमें अनेक सुन्दर बाजार थे जो अनेक तीर्थोंसे पवित्र था ।

घत्ता—वहाँ शय्यापर सोती हुई देवी रात्रिके अन्तिम प्रहरमे देखती है—हाथी, बैल, विस्फारित मुखवाला तथा हरिणोके मारनेसे पीले नखोंवाला सिंह ॥३॥

४

और भी दृष्टिके लिए सौम्य श्रीमालाएँ देखी, आकाशमें सफेद और लाल चन्द्रमा तथा सूर्यके बिम्ब देखे । रतिये नृत्य करते हुए दो मीन, दो मंगलकलश, शरदका सरोवर, जलसे भय-कर समुद्र, सिंहासन, इन्द्रघर (देव विमान), नागभवन, नाना रत्नराशि, अग्नि । उस मुग्धाने स्वप्नोंको देखा, मनमें उनका सम्मान किया और अपने स्वामीसे कहा कि मैंने सोलह स्वप्न

२. P सम्मत् । ३. A तहिं च राय ।
४. १. AP अवव । २. AP सुविणय ।

फलु ताहं भडारा णरवरसारा कहहि तुहुं ।	
पइ कंतहि अक्खइ गुब्भु ण रक्खइ सुयणगुरु	
तुह होसइ तणुरुहु णवसररुहुसुहु गुणपउरु ।	१०
तं णिसुणिवि राणी णं सहुँसाणी घणरविण	
णच्चइ सिंगारें रसचित्थारें णवणविण ।	
हेमुञ्जलभित्तिहिं उग्गयदित्तिहिं जियतवणि	
वोलाविथे अयणइं पडियइं रयणइं णिवभवणि ।	
वइसाहइ मासइ तेरैसिठिवसइ ससिघवलि	१५
थिउ गन्धि जिणेसरु अहमभरेसरु गलियमलि ।	
रेवइणक्खत्तइ णँविउ पविउत्तइ सुरवरहिं	
आयहिं दिहिकंतिहिं सिरिहिरिकित्तिहिं अञ्छरहिं ।	
चउसायरमेत्तइ सिद्धि अणंतइ मयमहणु	
अंत्तिमपल्लद्धइ धम्मविसुद्धइ गइ णिहणु ।	२०
माहन्मि रवण्णइ धण्णपउण्णइ जणियसुहि	
ओसाकणसंकुलि णवतणकोमलि तुहिणवहि ।	
सियपक्खहु अवसरि तेरसिवासरि दिण्णदिहि	
उप्पण्णउ जगगुरु सिरिसेवियउरु णाणणिहि ।	
गुरुजोइ सुरिंदिहिं ण्हविउ फणिंदिहिं सुरगिरिहि	२५
आणिवि पियवाइहि अप्पिउ मायहि सुंदरिहि ।	

देखे हैं, हे नरवर-श्रेष्ठ आप उनके फल बतायें। पति अपनी कान्तासे कहता है, वह कुछ भी छिपाकर नहीं रखेगा, तुम्हारा गुणोसे प्रवर, नवकमलमुख पुत्र विश्वगुरु होगा। यह सुनकर रानी नवशृंगार और रसविस्तारसे इस प्रकार नृत्य करती है, मानो भेषज्वनिसे मयूरी नाच उठी हो। स्वर्णके समान उज्ज्वल भित्तियोंके समान निकलती हुई किरणोंके द्वारा एक अयन (छह माह) बीतनेपर स्वर्णके जोतनेवाले राजाके भवनमे रत्नोकी वर्षा हुई। वैशाख माहके शुक्ल पक्षकी तेरसके दिन वह अहमेन्द्र जिनेश्वर मलसे रहित गर्भमे देवती नक्षत्रमे आकर स्थित हो गया है। धृति-क्रान्ति-श्रो-ह्री-क्रीति आदि अप्सराओने उन्हे नमन किया। अनन्त भगवान्के सिद्ध होनेपर चार सागर प्रमाण समय बीतने और अन्तिम पत्यके आधे समयके धर्म विशुद्धिसे रहित होनेपर, धान्यसे प्रपूर्ण, सुख उत्पन्न करनेवाले ओसकणोसे व्याप्त, नवतृणोसे कोमल तथा हिमपथसे युक्त माघ शुक्ल त्रयोदशीके दिन पुण्य नक्षत्रमे भाग्यविधाता विश्वगुरु तथा लक्ष्मीके द्वारा जिनका वक्ष सेवित है ऐसे ज्ञाननिधि उत्पन्न हुए, देवेन्द्रो और नागेन्द्रोने सुमेर

३. A णवससरहरमुहु । ४. A सहसीणी; P सुहसाणी । ५. P बोल्लाविय । ६. A अट्टमिदिवसइ । ७. AP णववि । ८. A धम्मपउण्णइ । ९. P उंसा । १०. A गुरुजोय ।

गउ सक्कु सुहम्महु पणविधि धम्महु^१ पैणइसिह

बड्डइ परमेसर रुवे जियसर महुरगिरु ।

घत्ता—पणयालसुचोवइ उवजुयभावइ गरुपं तणु तुंगत्ते ॥

३०

तेलोक्कहु सारं अरुहकुमारं जणु रंजिठ धणु वंते ॥४॥

५

ताव कुंअंरत्तणे

देवकयकित्तणे ।

लक्खजुयसंजुयं

अद्धलक्खं गर्यं ।

वच्छरंविसेसहं

अच्छरसुरेसहं ।

विरइय अंणिदओ

जसविडविकंदओ ।

५

इंदकयणहाणओ

जायओ राणओ ।

वयसमोलक्खहं

गयहं कयसोक्खहं ।

चंदिमाकंतिया

उक्क णिवडंतिया ।

तेण अवलोइया

विहियणिवेइया ।

सइ जि उम्मोहिओ

पुणु वि संवोहिओ ।

१०

वरंकुसुमहत्थहिं

दिव्वरिसिसत्थहिं ।

हरिहिं अहिसिचिओ

वंदिओ अंचिओ ।

सिहरलिहियंवरं

णाघयत्तं वरं ।

सिचियमारोहिं

वम्महं जोहिं ।

मंदिरा णिग्गओ

सालवणमुवगओ ।

१५

माहि तेरहमप

दियहि समियंकप ।

पर्वतपर अभिषेक किया, और लाकर प्रिय शब्दोंसे सुन्दरी माताको सौंप दिया। प्रणत शिर इन्द्र धर्मानाथको प्रणाम कर सौधर्म स्वर्ग चला गया। अपने रूपसे कामदेवको जीतनेवाले मधुरवाणी परमेश्वर रूपमे बढ़ने लगे।

घत्ता—उनका शरीर कँचाई और गुस्त्वमे सरल पैतालीस धनुष था। त्रैलोक्यमे श्रेष्ठ अहंत् कुमारने धन देकर लोगोंका रंजन किया ॥४॥

५

जिसका देवोंने कीर्तन किया है ऐसे कौमार्यकालके दो लाख पचास हजार विशेष वर्ष उनके बीत गये। अप्सराओं और इन्द्रोंने जिनके आनन्दकी रचना की है, जो यशरूपी वृक्षके अंकुर हैं, इन्द्रके द्वारा जिनका अभिषेक किया गया है, ऐसे वह राजा हो गये। सुख उत्पन्न करनेवाले उनके पाँच लाख वर्ष बीत गये। उन्होंने चन्द्रमाके समान कान्तिवाली, वैराग्य उत्पन्न करनेवाली एक गिरती हुई उल्का देवी। वह स्वयं ही विरक्त हो गये, फिर भी उन्हें श्रेष्ठ कुसुम जिनके हाथमे हैं, ऐसे दिव्य मुनिसमूहके द्वारा सम्बोधित किया गया। वह देवैन्द्रके द्वारा अभिसिंचित और अचित हुए। अपने शिखरसे आकाशको छूनेवाली श्रेष्ठ नागदत्ता

११. AP पणयसिह । १२. A सत्तावइं ।

५. १. AP कुमरत्तणे । २. P^० विसेसेहिं । ३. P^० सुरेसेहिं । ४. AP विरवाणंदओ । ५. A वयसमलक्खहं; P वयसमलुक्खहं । ६. A णवकुसुम^० । ७. A समयंकप ।

पूसि सायणहृए	रहिय रइतणहृए ।	
छट्टववासओ	करिचि णिहिर्वासओ ।	
णिवसइससंजुओ	मुणिवरिंदो हृओ ।	
खंतिकंतापिओ	तुरियणार्णकिओ ।	
पुंरि घरविचित्तए	पांडलीवत्तए ।	२०
भमिउ पिंडस्थिओ,	विणयणविओ थिओ ।	
धणसेणालए	ढोइयं कालए ।	
भोयणं फासुयं	सव्वदोसच्चुयं ।	
जायपंचब्भुयं	दाणमसरत्थुयं ।	
सहइ तवतावणं	करइ गुणभावणं ।	२५

वत्ता—उवसंतइ मच्छरि गइ संवच्छरि खाइयभावहु आइउ ॥
 फुल्लंतपियालउं तुंगतमालउं तं सालवणु पराइउ ॥५॥

६

तहि सत्तच्छयतरुहि तलि	खगसलमहुलि ।	
छट्टववासालंकियहु	अविसंकियहु ।	
पूसरिक्खि छणससिदिवसि	इइ कम्मरसि ।	
अवरणइ हृयउ सयलु	केवलु विमलु ।	
आयउ तुरियं सतियसयणु	दससयणयणु ।	५

शिविकामे बैठकर, कामको जीतकर घरसे निकल गये और शालवनमे पहुँचे। माघ शुक्ला त्रयोदशीके दिन सायंकाल पुष्यनक्षत्रमे रतिकी तृष्णासे रहित कर्मकी सामर्थ्यका नाश कर, छठा उपवास कर एक हजार राजाओके साथ दीक्षित हो गये। क्षान्तिरूपी कान्तिके प्रिय चार ज्ञानोसे अंकित वह धरोसे विचित्र पाटलिपुत्र नगरमे आहारके लिए घूमे। शिष्टतासे नञ्ज वह राजा अन्वेषणके प्रासादमे पहुँचे। उस अवसरपर उन्हे प्रासुक तथा सब प्रकारके दोषोंसे च्युत भोजन दिया गया। पाँच प्रकारके आश्चर्य हुए। वह दान देवोंके द्वारा संस्तुत था। वह तपसे सन्तप्त उनकी श्रद्धा करता, गुणोंकी भावना करता है।

वत्ता—ईर्ष्याभाव समाप्त होने और एक साल बीतनेपर वह क्षायिक भावपर स्थित हो गये। जिसमे प्रियाल वृक्ष खिले हुए हैं और जिसमे ऊँचे-ऊँचे तमालवृक्ष हैं, ऐसे शालवनमे वह पहुँचे ॥५॥

६

वहाँ पक्षि-समूहसे मुखरित सप्तपर्ण वृक्षके नीचे, छठे उपवाससे शोभित, विशंकाजोंसे रहित, पूष शुक्ल पूर्णिमाके दिन, कर्मकी सामर्थ्य नष्ट होनेपर अपराह्णमे विमल समस्त केवलज्ञान

८. A पिहियासवो । १ A पुरघर । १०. AP गडलीपुत्तए । ११. AP पासुयं ।

६. १. AP^०मुहलि । २. AP add after this देवं सयरायव मुणियं, जगु जाणियं (A omits जगु जाणियं), खणि जाइय (A जाइयव) देवत्रायणु, छण्णइ (A सुण्णयं) गयणु; पाणाविहहि पढाइयहि, अवराइयहि; संयुउ देउ सुराधुरहि, मअलियररहि, K gives these lines but scores them off, ३ A तुरिउ ।

शुणइ शुणंतु गहीरझुणि	जय परममुणि ।
धम्मु ण णहयलि गिरिगुहिलि	णव धरणियलि ।
धम्मु ण णहाणि ण पसुर्गंसणि	ण सुरावसणि ।
तुहुं जि धम्मु जिणधम्ममज्ज	कयजीवदज्ज ।
१० णरयपडंतहं दिण्णु करु	तुहुं दुरियहरु ।
हँरु तुहुं संकरु परमपरु	तुहुं तित्थयरु ।
बुद्धु सिद्धु तुहुं मँहु सरणु	हयजरभरणु ।
जिहं मणु धावइ णारियणि	वत्तुगथणि ।
जिह मणु धावइ भवणि धणि	णियवंधुयणि ।
१५ तिह जइ धावइ तुह पयहं	गयभवभवयहं ।
तो संसारि ण संसरइ	ण हवइ मरइ ।
जाइ जीव विहुवणसिरहु	तहु सिवपुरहु ।
एवं शुणेच्चि पुरंदरिण	वीणासरिण ।
समवसरणु णिमिच्च विचल्लु	तहिं जीवचल्लु ।
धम्मचक्रपहुंणा जिणिण	संबोहियचं ।
२० इंदियविसयकसायवसु	सुणिरोहियचं ।

घत्ता—तहु वल्लियल्लम्महु देवहु धम्महु तवभरधरदहयरभुय ॥

चालीस मणोहर जाया गणहर विहिं गणणाहहिं संजुय ॥६॥

उत्पन्न हो गया । इन्द्र तुरन्त देवजनोंके साथ आया । स्तुति करते हुए गम्भीर ध्वनि वह कहता है—“हे परममुनि, तुम्हारी जय हो । धर्म न तो आकाशतलमें है और न गिरिगुहामें । धर्म न स्नानमें है और न पशुओंके खानेमें, और न मदिरा पीनेमें । जीवदया करनेवाले जिनधर्ममय आप धर्म हैं, नरकमें गिरते हुके लिए तुमने अपना हाथ दिया है, तुम पापका हरण करनेवाले हो, तुम शिव-शंकर और परमश्रेष्ठ हो । तुम तीर्थंकर हो; तुम बुद्ध-सिद्ध मेरी शरण हो, जरा और मृत्युका नाश करनेवाले हो । जिस प्रकार मन ऊँचे स्तनोवाली स्त्रियोंमें जाता है, जिस प्रकार मन दौड़ता है, भवन-धन और अपने बन्धुजनमें उसी प्रकार यदि वह भवबन्धसे रहित तुम्हारे चरणोंमें दौड़े तो वह संसारमें परिभ्रमण न करे, न पैदा हो और न मृत्युको प्राप्त हो, और जीव त्रिभुवनके सिरपर स्थित शिवपुरमें जाता है ।” वीणाके स्वरमें इस प्रकार जिनकी स्तुति कर इन्द्रने विशाल समवसरणकी रचना की । उसमें धर्मचक्रके स्वामी जिनभगवान्ने जीवकुलको सम्बोधित किया । इन्द्रियों और कषायोंकी अधीनताका उन्होंने विरोध किया ।

घत्ता—वहाँ उनके छह मद्योसे रहित, धर्मनाथ देवके तपका भार उठानेमें दृढतर भुजा-वाले, विभिन्न गणनाथोंसे युक्त चालीस सुन्दर गणधर हुए ॥६॥

४. A पसुवहणे । ५. P has तुहुं before हरु । ६. A मह सुणु । ७. P omits this line.

८. A धावइ भवणि धणि; P धावइ णियभवणि धणि । ९. P तिहिं ।

७

णवसयइं पुष्पपारयरिसिहिं
 चालीससहस्र सत्तसयइं
 रिदुसयइं तिण्णि सहसइं परहं
 चडसहस्र पंचसय केवलिहिं
 भयसहसइं विकिरियाइयहं
 सहसाइं सट्ठि चडसयजुयइं
 दोलकखइं भणियइं सावयाहं
 गिन्वाण मिलिय संखारहिय
 पणवत्ति जासुं को तेण सहं
 गिंभागमि अट्टणवुत्तरहिं
 चोत्थिइ पच्छिमपरहइ णिसिहि
 संपण्णी धम्महु परमगाइ

संदरिसियमोक्खमग्गदिसिहिं ।
 सिक्खुयहं णसंसियगुरुपयइं ।
 अबहिंज्ञहं संजमभरधरहं ।
 मणपज्जयाहं तइं मणवलिहिं ।
 दोसहसइं वसुसयवाइयहं ।
 अज्जियहं मोहवासहु चुयइं ।
 दुगुणाइं त्थर्यहं पालियवयाहं ।
 संखेज्ज तिरिक्ख दिक्खसहिय ।
 उवमिज्जइ हूई चित महुं ।
 सह जइसएहिं कयसंवरहिं ।
 संभेयसिहुरि अरिहहु रिसिहि ।
 महुं देव भट्टारउ सुद्धमइ ।

घन्ता—वंदारयवंदहु देहुं जिण्णिदहु पुज्जिवि ह्यभवपासहु ॥

पहजियरविमंडलु गच्च आहंडलु गय अवर वि णियवासहु ॥७॥

८

धम्मवारिविहरणवोहित्ये

असिं परमधम्मजिणित्तिथे ।

७

पूर्वागोमे पारंगत और मोक्षमार्गकी दिशा बतानेवाले मुनि नौ सौ थे। जिन्होंने अपने गुरुपदोको नमस्कार किया है, ऐसे शिक्षक चालीस हजार सात सौ थे। संयमके भारको धारण करनेवाले शेष अवधिज्ञानी तीन हजार छह सौ। केवलज्ञानी चार हजार पांच सौ। मनःपर्यय ज्ञानधारी मुनि भी चार हजार पांच सौ। विक्रिया-ऋद्धिधारी सात हजार थे। वादी मुनि दो हजार आठ सौ। मोहवाससे रहित आर्यिकाएँ साठ हजार चार सौ। श्रावक दो लाख और व्रतोंका पालन करनेवाली श्राविकाएँ चार लाख। देवता वहाँ संख्यारहित सम्मिलित हुए। दीक्षा सहित संख्यात तिर्यंच प्रणाम करते हैं। मुझे यह चिन्ता है कि उनको उपमा किससे दी जाये? ग्रीष्मकाल आनेपर संवर धारण करनेवाले आठ सौ नौ मुनियोंके साथ (ज्येष्ठ शुक्ला) चतुर्थीके दिन रात्रिके अन्तिम प्रहरमे अरहन्त मुनिको सम्मेल शिखरपर धर्मकी परमगति (मोक्ष) प्राप्त हुई। आदरणीय वह मुझे शुभमति प्रदान करें।

घन्ता—जिन्होंने जन्मपाशको नष्ट कर दिया है ऐसे देवोंके द्वारा बन्दनीय जितेन्द्रकी पूजा कर प्रभासे रविमण्डलको जीतनेवाला इन्द्र तथा दूसरे भी देव अपने-अपने निवासके लिए चले गये ॥७॥

८

धर्मरूपी जलमे विहार करनेके लिए जहाजके समान परम धर्मनाथके इस तीर्थमे हे

७. १. P भिक्खुयहं । २. A जिह केवलिहिं । ३. AP तियहं । ४. AP जायु सो केण सहं । ५. A अट्टणवुत्तरहिं । ६. A देवजिणिदहु ।

८. १. A अस्स ।

सेणिय हलहरचक्रहराणं
णवसासंविद्यवसुमद्देहे
णिवसद्द परवद्द परदुन्विसहो
५ सो संसारजायणिवेयव
कावं तवचरणं जिणदिहं
पत्तो णिरसणविहिणा सग्गं
अट्टारहजलणिहिपरिमाणं
जइया तइया इह रायणिहे
१० णाम सुमित्तो अप्पडिमल्लो
जुज्जे सो भुयबलमयमत्तो
ताम तेण परिमबलियणेत्ते

णिसुणहि चरियं णरपवराणं ।
जंजूदीवे अवरविदेहे ।
वीयसोयणयरे णरवसहो ।
दमवरपासे सुद्धिसंमेयव ।
विसहिचकेसालुं चणणिट्ठं ।
तं सहसारं भोयसमग्गं ।
तस्सेयारहमे वोलोणे ।
णयरे घरसिरणच्चियवरिहे ।
दुज्जणहियवप्पाइयसल्लो ।
रायसीहराएण णिहित्तो ।
परिभवदुक्खपरंपरच्छित्तं ।

घत्ता—णियरब्जु सुपप्पिणु तणयहु देरिपणु जुण्णवं तणु व गणेप्पिणु ॥

चिण्णवं व्रवे दूसहु कयवम्महवहु कणहसूरि पणवेप्पिणु ॥८॥

९

णवर पमाए	माणकसाए
भीमै रुद्ध	हियवद्द कुद्ध
खरतवल्लीणव	सासु अयाणव
पथइ तवहलु	होज्जव भुयवलु
५ आगामिणि भवि	भडैरवि रवरवि ।

श्रेणिक, हलहर और चक्रवर्ती नरश्रेष्ठोंका चरित्र सुनो। जिसकी भूमिरूपी देह नवधान्योसे अंचित है, ऐसे जम्बूद्वीपके अपर विदेहके वीतशोक नगरमें शत्रुको सहन नहीं कर सकनेवाला राजा नरवृषभ निवास करता था। संसारसे वैराग्य उत्पन्न होनेपर शूद्रि सहित वह दमवर मुनिके पास, जिसमे केशलोचकी निष्ठाको सहन किया जाता है, ऐसा जिनके द्वारा उपदिष्ट तपको कर उससे अनशन विधिके मार्गसे भोगसे परिपूर्ण सहस्रार स्वर्ग प्राप्त किया। उसकी अठारह सागर प्रमाण आयुमेंसे जब ग्यारह सागर आयु निकल गयी तो जिसके गृहविखरोंपर मयूर नृत्य करते हैं, ऐसे राजगृह नगरमें अप्रतिमलल और दुर्जनोंके हृदयमें शल्य उत्पन्न करनेवाला सुमित्र नामका राजा हुआ। भुजबलसे प्रमत्त वह युद्धमे राजसिंह राजके द्वारा पराजित कर दिया गया। तब पराभवकी दुःख-परम्परासे अभिभूत अपनी आँखें बन्द किये हुए वह—

घत्ता—अपना राज्य छोड़कर और पुत्रके लिए देकर जीर्ण तृणकी तरह समक्षकर जिन्होंने कामदेवका नाश कर दिया है, ऐसे कृष्णसूरि मुनिको प्रणाम कर उसने असह्य व्रत स्वीकार कर लिया ॥८॥

९

परन्तु नहीं, वह भोषण मान कषायसे रुद्ध अपने हृदयमें क्रुद्ध हो उठा। अत्यन्त तपसे क्षीण वह अज्ञानी साधु यह तपफल माँगता है कि आगामी भवमे मेरा ऐसा बाहुबल हो, जिससे

२. P णरवासहो । ३. P ससारद्द जाय^० । ४. ^० सम्मेयव । ५. A रायहरे । ६. A वद; P तव ।
९. १. AP अजाणव । २. AP भडयणि ।

जेण विचारमि	सो रिउ मारमि ।	
इय णिञ्जाइवि	देहु पमाइवि ।	
सल्लकिलेसैं	सुच संणासैं ।	
थिलैं सुरविंदइ	हुच माहिंदइ ।	
जाउ मणोरमि	अणुवमतणुरमि ।	१०
आउअणिंदइ	सत्तसमुदइ ।	
जहि जिणगीर्येइ	अच्छरिगीयइ ।	
जहि सवणिज्जइ	सुइरमणिज्जइ ।	
जे चिइ जित्तउ	राउ सुमित्तउ ।	
सो पत्थिवहरि	णं मत्तउ करि ।	१५
हिडिचि भववणि	विह्वरावलिषणि ।	
फलियधरायलि	इह कुरुजंगलि ।	
पंडुरगोउरि	हूयउ गयउरि ।	
राउ कुसीलउ	सो महुकीलउ ।	
घत्ता—करयलकरवालें भिउडिकरालें पुहइ तिखंडें पसाहिय ॥		२०
मंडलिय मउद्धर जेम धुरंधर तेम तेण घरि वाहिय ॥१॥		

१०

रञ्जु केषिणसुहसारउं अणैहुतिहिं णियउं
 कइवइ वरिसइं जइयहुं तहु जीविउं थियउं ।
 तइयहुं खगउरणाहहु सीहसेणणिवहु
 इक्खाउहि सुपसिद्धहु इह भरहुउभवहु ।

मैं भटकोलाहलसे भयंकर युद्धमें विदीर्ण कर शत्रुको नष्ट कर सकूँ यह ध्यान कर और अपना शरीर छोड़कर, शत्रुके क्लेश और संन्याससे मरकर वह देवसमूहवाले माहेन्द्र स्वर्गमें उत्पन्न हुआ । वह सुन्दर अनुपम तारुण्यमें जन्मा । उसकी अनिन्द्य आयु सात सागर प्रमाण थी । जहाँ जिनवरसे सम्बन्धित गीत और अप्सराओके सुचिर मनोज्ञ गीत सुनाई देते हैं । और जिसने पहले राजा सुमित्रको जीता था, वह श्रेष्ठ राजा राजसिंह मानो मत्तगज ही । कष्टसे भरपूर संसाररूपी वनमें भ्रमणकर, जिसमें स्फटिकका घरातल है, ऐसे कुरुजांगलमें सफेद गोपुरोवाले गजपुर (हस्तिनापुर) में खोटी चेष्टावाला मधुकीइ नामका राजा हुआ ।

घत्ता—जिसकी भृकुटिवाँ भयंकर हैं ऐसे उसने हाथमें तलवार लेकर तीन खण्ड धरती सिद्ध कर ली । मदसे उद्धत माण्डलीक राजाओंको वह वैलोकी तरह अपने घर हाँक लाया ॥१॥

१०

समस्त सुखोंसे श्रेष्ठ राज्यका अनुभोग किया और जब उसका जीवन कुछ वर्षोंका रह गया तभी खगपुरके स्वामी इक्ष्वाकुकुलके सुप्रसिद्ध भरतराजके अंकुर सिंहसेन राजाकी

३. A थिय । ४. P णिणगेहहं । ५. A अच्छरिगीयइ । ६. A तिखंडें वाहिय । ७. AP मउद्धर । १०. १. A कसण । २. AP अणुहुजिवि । ३. A गोउरणाहहु; K गोउरं but corrects it to खगउरं ।

- ५ विजयादेविहि गन्मइ उप्पण्णत्त धवल्लु
सो णरव्वंसहचरामरु भुयजुयवैल्लपवल्लु ।
सुहिहिं सुदंसणु कोक्किउ कुलसरहंसवरु
तहिं अवसरि माहिंदहु णिवडिच्चं सइं इयरु ।
अहरविवरुइणिज्जियणवरविंविचियहि
१० सो सुमित्तु सुउ जायत्त उर्यइ अंविचियहि ।
पुरिससीहु हक्कारिउ लहुयत्त वंधवर्हिं
पहु पमाणु संपत्तत्त थणयथण्णंघुयहिं ।
ते^४ वेण्णि वि ससियरहिंमकज्जलगरलण्हि
वेण्णि वि ते सुरगिरिवरसंण्हिमाणसिह ।
१५ वेण्णि चि ते बल केसव वासवविहियभय
ते विण्णि चि नृवसिरमणिकिरणारुणियपय ।
ते विण्णि मि संसेविय विज्जाजोइणिहिं
समलंकेय हरिवाहिणिगारुलवाहिणिहिं ।
ते तेहा^५ आयण्णिचि परसिरिअसहणत्त
२० महुकीलत्त आरुदुत्त रणि जुज्झणमणत्त ।
पेसियदूए^६ जाइवि बोळ्ळिय रायसुय
किं तुम्हइं ण कयाइ वि एही वत्त सुय ।

घत्ता—खोणीयलपालहु जो महुकीलहु कप्पु देइ सो जीवइ ॥

हलहर सुइभायण^७ सुणि णारायण अवरु जमाणु पावइ ॥१०॥

विजयादेवीके गर्भसे वह धवल बाहुबलसे प्रबल देव उत्पन्न हुआ । सुघीजनोने कुलरूपी सरोवरके हंस उसे सुदर्शन कहकर पुकारा । उसी अवसरपर माहेन्द्र स्वर्गसे अवतरित दूसरा देव, स्वयं जिसने अधरबिम्बोंकी कान्तिसे नव रविबिम्बोंको जीत लिया है, ऐसी अम्बिका नामकी दूसरी रानीके उदरसे वह सुमित्र पुत्र हुआ । छोटे भाइयोंने पुरुषसिंह कहकर पुकारा । वह प्रभु शीघ्र बालकों और तरुणोंमें प्रामाणिकताकी प्राप्त हो गये । वे दोनों ही चन्द्रमा, हिम, काजल और गरलके समान रंगवाले थे । वे दोनों ही सुमेरुपर्वतके समान मानसे श्रेष्ठ थे । इन्द्रको भय उत्पन्न करनेवाले वे दोनों बलभद्र और नारायण थे । जिनके पैर राजाओंके शिरोमणिकी किरणोंसे अरुण हैं, ऐसे थे । वे दोनों ही विद्याओं और योगिनियोंके द्वारा सेवित थे । वे दोनों हरिवाहिनी और गरुडवाहिनियोंसे अलंकृत थे । उनको इस प्रकारका स्तनकर दूसरेकी लक्ष्मीके प्रति असहिष्णु युद्धकी इच्छा करनेवाला मधुकोइ युद्धमें क्रुद्ध हो उठा । उसके द्वारा भेजे गये दूतने राजपुत्रोंसे जाकर कहा—

घत्ता—हे शुभभाजन हलधर और नारायण सुनिष्ट, जो राजा मधुकोइको कर देगा वही जीवित रहेगा । दूसरा यमाननको प्राप्त करेगा ॥१०॥

४. A णरवसह । ५. A पबलवल्लु । ६. A णिवडिच्च सो इयरु । ७. P अवरइ । ८. A यण्णययण-
चुवहिं; P थणययण्णघुवहिं । ९. AP वेण्णि मि ते । १०. AP णिव । ११. AP तहा ।
१२. AP बोळ्ळिय जाइवि । १३. AP णिसुणि णारायण ।

११

भगणरिंदो	ता गोविंदो ।	
माणमहंतो	भणइ हसंतो ।	
भुवि जो संदो	मैं सच्छंदो ।	
मगइ कप्यं	तमहं भप्यं ।	
करमि अदप्यं	किं माहप्यं ।	५
अत्थि पराणं	खगकराणं ।	
दोण्यसुक्कं	मोत्तूणकं ।	
लंगलपाणिं	को पहु दाणिं ।	
मई जीवत्ते	वइरिकयत्ते ।	
वयणं चंडं	सुइवहकंडं ।	१०
तं सोऊणं	चारु अदीणं ।	
विगओ हूओ	हरिसियभूओ ।	
कुंजरगइणो	तेण सवइणो ।	
कहिया वत्ता	कुरे रणजत्ता ।	
ण करइ संघी	लच्छिपुरंधी- ।	१५
लोलो रामो	कण्हो भीमो ।	

घत्ता—तत्कल्पणि संपणद्धल उब्भियधुयधउ रोसें कहि वि ण माइइ ।
हयत्तूरगहीरे सहं परिवारे महुकीडल उद्धाइइ ॥१॥

१२

रसणीदमणइं	रिजआगमणइं ।
जूरियसयणइं	णिसुणिवि वयणइं ।

११

तब जिसने राजाओको नष्ट किया है ऐसा वह मानसे महान् गोविन्द हंसता हुआ कहता है—इस धरतीपर जो मूर्ख और स्वच्छन्द मुझसे कर मांगता है मैं उसको भस्म करता हूँ और दर्पहीन बनाता हूँ । जिनके हाथमे तलवार है, ऐसे शत्रुओंका क्या माहात्म्य । दुर्नयसे रहित एकमात्र बलभद्रको छोड़कर इस समय कौन स्वामी है ? शत्रुओके लिए कृतान्त भेरे जीते हुए । कानोके लिए तीरके समान उन सुन्दर अदीन प्रचण्ड वचनोंको सुनकर जिसको भुजा हृषित है, ऐसा वह दूत चला गया । हाथीके समान चलनेवाले अपने स्वामीसे उसने यह बात कही कि युद्धके लिए प्रस्थान कीजिए । हे देव, वह सन्धि नहीं करता, लक्ष्मी और इन्द्राणी स्त्रियोके लिए चंचल कृष्ण बहुत भयंकर है ।

घत्ता—मधुक्रीड तत्काल सन्नद्ध हो गया, आन्दोलित ध्वज वह कही भी नहीं समा सका । बजते हुए नगाडों और परिवारके साथ मधुक्रीड दौड़ा ॥११॥

१२

स्त्रियोका दमन करनेवाले शत्रुआगमन और स्वजनोको सतानेवाले वचनोंको सुनकर,

११. १ A तो । २. भमइ सछवो । ३. A मंगइ । ४. A कणणाजुत्ता । ५. AP महुकील्ल ।

	जोइयमुयचल	णिग्गय हरि चल ।
	शङ्करि चज्जइ	दुंदुहि गज्जइ ।
५	संचक्खिय चमु	हुउ महिविचममु ।
	चक्खयखग्गाइं	सेण्णइं लग्गाइं ।
	भडकडवइणि	मोडियसंदणि ।
	फाडियधयचडि	तोडियगँयगुडि ।
	पहरणसंकडि	विहडावियघडि ।
१०	सुरवरदारुणि	णवकोवारुणि ।
	देइचियारणि	खेयरमारणि ।
	सुयजंपाणइ	खलियविचाणइ ।
	कुरयंधारइ	धणुटंकारइ ।
	धाइयवाणइ	लुयतंणुताणइ ।
१५	रुहिरञ्जलझलि	णरवरगोदलि ।
	मारियवारणि	तहिं पइसिवि रणि ।

घत्ता—पडिसँत्तुं वुत्तं एउं अज्जुत्तं जं महं सहुं रणि जुज्जहि ॥
तहुं भिञ्चु कुलीणउ हचं तुह राणउ एत्तं कज्जु ण बुज्जहि ॥१२॥

१३

दे देहि कप्पु	मा कालसप्पु ।
पइं गिल्लउ अज्जु	अणुहुंजि रज्जु ।
ता भणिउं तेण	दामोयरेण ।

अपना बाहुवल देखते हुए नारायणकी सेना निकली । झल्लरी बज उठी, दुन्दुभि गरजी । सेनाने कूच किया । मतिभ्रम होने लगा । तलवार उठाये हुए सेनाएँ भिड़ गयीं । जिसमे योद्धाओंका कचूमर हो रहा है, रथ मोड़े जा रहे हैं, ध्वजपट फाड़े जा रहे हैं, हाथियोंके कवच तोड़े जा रहे हैं, हथियारोंका जमघट हो रहा है, गजघटा विघटित हो रही है, जो सुरवरोंसे भयंकर है, नवकोपसे अरुण है, जो शरीरका विदारण करनेवाला और विद्याधरोको मारनेवाला है, जिसमे जवान च्युत हो रहे हैं, विमान स्खलित हो रहे हैं, पृथ्वीकी धूलसे अन्धकार हो रहा है, जिसमे धनुषकी टंकार हो रही है, बाण दौड़ रहे हैं, शरीरके कवच काटे जा रहे हैं, रुधिर चमक रहा है, नरवरोकी हर्षध्वनि हो रही है, जिसमे गज मारे जा रहे हैं, ऐसे उस रणमे प्रवेश कर—

घत्ता—प्रतिशत्रुने कहा, “यह अनुचित है कि जो तुम मेरे साथ युद्धमे लड़ते हो । तुम भृत्य हो, मैं कुलीन । मैं तुम्हारा राजा हूँ, तुम इतना काम भी नहीं समझते ॥१२॥

१३

तुम कर दे दो, कहीं तुम्हें आज कालसर्प न निगल ले । तुम राज्यका भोग करो ।” तब

१२. १. A जोइवि । २. AP. ० मइणि । ३. P पाडिय । ४. P ० हयगुडि । ५. AP अलिखंकारइ ।

६. A ० वणताणइ । ७. A पडिसत्तं ।

१३. १. P गिल्लइ ।

को एखु सामि	कहु तणिय भूमि ।	
कुलभूसणम्मि	सिरिसासणम्मि ।	५
मणु लिहिय कासु	बलु जासु वासु ।	
इय वज्जरंत	असरिसैफुरंत ।	
आबहईं लेवि	अन्निभट्ट वे वि ।	
ते वरणरिंद	पडिहरिउविंद ।	
कथरोलियाउ	दाढालियाउ ।	१०
पिंगच्छियाउ	धीहच्छियाउ ।	
फणिकंकाणउ	लंविचयणउ ।	
उक्केसियाउ	रिउपेसियाउ ।	
बहुक्खविणीउ	सुरकामिणीउ ।	
कण्हे हयाउ	णासिवि गयाउ ।	१५
परणिकिवेण	करिउरणिवेण ।	
चालिवि गुरुक्कु	उम्मुक्कु चक्कु ।	
आरालिफुरिउं	कण्हेण धरिउं ।	
दाहिणकरेण	णं गहवरेण ।	
कसणेण तंबु	णवभाणुविंबु ।	२०
पुणु भणिउ पिसुगु	महुक्कील णिसुणु ।	

घत्ता—रे रे रिउकुंजर दढदीहरकर सीरिहि सरणु पढुक्कहि ॥

एवहिं असिजीहहु महुं णैरसीहहु कमि पँडियउ कहिं चुक्कहि ॥१३॥

उस दामोदरने कहा— “यहाँ कौन स्वामी है, और किसकी भूमि है ? वंताओ कुलभूषण किसके श्री-शासनमे धरती लिखी हुई है ? जिसके पास बल है, धरती उसकी । (जिसकी लाठी उसकी सैस),” यह कहते हुए तथा अमर्षसे विस्फुरित होते हुए नारायण और प्रतिनारायण वे दोनों श्रेष्ठ नर हृदियार लेकर लड़ने लगे । जिसने भयंकर शब्द किया है, जो दाढ़ीसे युक्त है, जो पीली और भयंकर आँखोवाली, नागो, बलय पहने हुए लम्बे स्तनोवाली तथा उठे हुए बालोवाली । शत्रुके द्वारा प्रेषित, ऐसी वह बहुक्खविणी देवविद्या कामिनी, नारायणके द्वारा आहूत होकर भाग गयी । तब शत्रुके लिए निर्दय, गजपुरनरेश मधुक्कोड़ने चलाकर भारी चक्र छोड़ा । आरामोसे स्फुरित उस चक्रको कृष्णने अपने दायें हाथसे इस प्रकार पकड़ लिया मानो काले ग्रहवरने (राहुने) लाल-लाल नव-भागुविम्ब पकड़ लिया हो । नारायणने कहा—“हे दुष्ट मधुक्कीड़, सुन ।

घत्ता—हे दूढकर शत्रुगज, तुम बलभद्रकी शरणमे आ जाओ । इस समय तलवार जिसकी जीभ है, ऐसे मुख जैसे नरसिंहके चरणोमें पड़े हुए तुम कैसे बच सकते हो” ॥१३॥

२. A अमरिसु । ३. AP दोहच्छियाउ । ४. A उक्कोसियाउ । ५. AP परिसुक्कु । ६. P वरसीहहु ।

७. A कमपडियउ ।

इय भणिवि सयडंगु अणेण पमेस्त्रियडं
दो वि पंचचालीसधनुणयदेहधरे
ते हलहरहैरिराणा मंगलभासिणिइ
खयकाले सुसुमूरिउ पुरिससीहु गहिरि
५ भाइपैउ सकारिवि सीहसेणतणउ
छट्टमउववासहिं दसमदुवालसहिं
रुक्खमूलवहि सयणहिं रवियरतावणहिं
मुवणत्तयसिहरंगहु मोक्खहु णिक्कलहु
मुणिगैण्णिदु आहासइ गोत्तमु विप्पसुउ

१० घत्ता—मागहणिव मण्णहि पुणु आयण्णहि चरितं चक्केणयारहं ॥
संगामसमत्थहं तइयचउत्थहं भवेवैसणाइकुमारहं ॥१४॥

१५

पडिवइरिइ इइ णिवडिइ तमतमधरणियलि
गिद्धखद्धमणुअंतइ वित्तइ भट्टतुमुलि ।

१४

यह कहकर नारायणने चक्र चला दिया, तथा शत्रुके विशाल उरतलको भेदकर डाल दिया। पैंतालीस धनुष ऊँचे शरीर धारण करनेवाले वे दोनों ही (नारायण और बलभद्र) सुख-पूर्वक दस लाख वर्षों तक धरतीका भोग करते रहे। वे दोनों ही बलभद्र और नारायण राजा मंगल-भाषिणी (सरस्वती) तथा विजयविलासिनी (विजयलक्ष्मी) के द्वारा आलिङ्गित थे। क्षयकालके द्वारा मसला गया पुर्षासिंह गम्भीर भयंकर तथा युद्धके कोलाहलसे परिपूर्ण सातवें नरकके बिलमे गया। सिंहसेनके पुत्र (बलभद्र) ने भाईके शवका संस्कार कर राम सुदर्शन (बलभद्र) धर्मनाथकी शरणमे चले गये। छह, आठ, दस और बारह उपवासों, नमक रहित दूसरोंके द्वारा दिये गये आहारों, वृक्षोंके मूल पथपर शयनों, सूर्योत्तरणके तपनी और मुनिगणको भावनाओंके द्वारा कर्मरूपी अंकुरको नष्ट कर वह भुवनत्रयके सिखरके अग्रभागमें स्थित, निष्पाप, कषाय और रागसे रहित और शरीर रहित मोक्षके लिए चले गये। मुनिगणनाथ विप्र, पुत्र, नाग, किन्नर, विद्याधरगण और गन्धर्वोंके द्वारा संस्तुत गौतम कहते हैं—

घत्ता—“हे मगधराजा, तुम संग्राममें समर्थ तोसरे और चौथे चक्रके स्वामी भववा और सनत् कुमारके चरितको सुनी और फिर विश्वास करो” ॥१४॥

१५

प्रतिशत्रु (प्रतिनारायण मधुक्लीड) के मारे जाने और तमतमप्रभा धरणीतलमे पतन होने-पर, जिसमें गिद्धके द्वारा मनुष्यकी जाँतें खायी गयी हैं, ऐसी भटभिडन्त समाप्त होनेपर, अयंकर

१४. १. A देहवर । २. A सुहवह । ३. A हरिणामि । ४. A रणयविणिवडिउ । ५. A भाइदेहु । ६. A णिवकसाउ णीराउ सुदंसणु णिक्कलहु । ७. A गणिमुण्णिदु । ८. AP विज्जाहरवर । ९. P गंधयुउ ।
१०. P भववासणईकुमारहं ।

दासोयरि गइ णरयहु भीमरहंगकरि
 मारविथारणिवारइ णिब्बुइ सीरधरि ।
 दीहकाल बोलीणइ णरणिर्याराइहरि ५
 धम्मणाहतिथंतिरि वुह्यणसंतियरि ।
 सुणि जे जाया भारहि भासुरचक्कवइ
 वेणिण सयलइलपीलय जिणकमणिहियमइ ।
 एत्थु खेत्ति महिमंडलि णयरि^५विचित्तधरि
 मोरकीरक्करराइलि सीमारामसरि । १०
 तिस्थि वासुपुज्जेसहु दुद्धर वय धरिवि
 णरवइ णामं राणउदुक्करु तउ करिवि ।
 हुउ मच्चिमगेवज्जहि अहममराहिवइ
 जिणधम्मं पाविज्जइ सासयसोक्खगइ ।
 कवणु गहणु देवत्तणु परियत्तणसहिउं १५
 एउं वप्प मइं जाणिउं लोएहिं वि कहिउं ।
 सत्तवीससायरखइ जायउं मरणु सुरि
 सउहावलिसिहरुम्भडि सिरिसाकेयपुरि ।
 इह सुमित्तणरणाहहु सुहिसंमाणियहि
 हंसवंसकलसइहि भदाराणियहि । २०
 मघउ णाम हूयउ सुउ सुयणाणंदयर
 असियरपसमियरिउत्तमु भमिउ णिवदिवसयर ।

चक्रको हाथमे रखनेवाले नारायणके नरक जानेपर, कामदेवके विकारका निवारण करनेवाले बलभद्रके निर्वाण प्राप्त कर लेनेपर, नरसमूहकी आयुका क्षय करनेवाले तथा बुधजनोंको शान्ति प्रदान करनेवाले धर्मनाथके तीर्थकालका लम्बा समय बीतनेपर भारतमे जो चक्रवर्ती हुए उन्हें सुनो । वे दोनो ही धरतीका पालन करनेवाले और जिनवरके चरणोमें अपनी मति रखते थे । इसी भरत क्षेत्रके महीमण्डलमे विचित्र, घोकी नगरी थी जो मोर, कीर और कुरर पक्षियोंके शब्दोसे व्याप्त और सीमोचानों तथा नदियोंसे युक्त थी । वासुपुज्यके तीर्थकालमें नरपति नामका राजा कठोर व्रत धारण कर और दुष्कर तप कर मध्यम श्रैवैयक विमानमे अहमेन्द्र देव हुआ । जिनधर्मसे शाश्वत सुख गति पायी जा सकती है, फिर परिवर्तनशील देवत्वको ग्रहण करनेसे क्या ? इस बातको मैं चेचारा जानता हूँ और लोगोंने भी यही कहा है । सत्ताईस सागर समय बीतनेपर देवकी मृत्यु हुई । सीधावलियोंके शिखरोसे उद्भट श्री साकेतपुरीमे राजा सुमित्रकी सज्जनोके द्वारा सम्माननीय, हंसकुलके शब्दवाली भद्रा नामकी रानोसे सुजनोंको आनन्द देनेवाला मघवा नामका पुत्र हुआ । वह अपनी तलवाररूपी किरणसे शत्रुरूपी अन्धकारको शान्त करनेवाला धूमता हुआ नव दिनकर था ।

१५. १. AP सीरहरि । २. A दीहकालु; P दीहकालि । ३. P^०णिरयाउं । ४. A धम्मदेवतित्यकरि; P धम्मदेवतित्थंतिरि । ५. AP^०इलवालर्यं । ६. A विचित्तधरि । ७. P णामे । ८. P भमिउ जि दिवसयर ।

घत्ता—जिउ भागहु वरतणु सुरखेयरगणु षट्माहितुहिणामरु ॥

वसिकिय मंदाइणि साहिबि मेइणि पुणरवि आयउ गिययघरु ॥१५॥

१६

दोचालीससुद्धधनुतुंगं	कणयच्छवि णं मंदिरेसिंगं ।
अंगं तस्स सुलक्खणवंतं	कामिणिमणसंखोहणवंतं ।
पंचलक्खवरिसह वद्धाउ	णिच्चं सिद्धसमीहियघाउ ।
दिग्बकामभोरं भोत्तूणं	चक्खट्टिरिद्धिं मोत्तूणं ।
५ प्रियमित्तहु पुत्तहु दाऊणं	सठवं जिणतत्तं पाऊणं ।
मणहरउजाणं गंतूणं	अभयवोसदेवं थोत्तूणं ।
गहिउं दिक्खं सहिउं दुक्खं	जिणिउं तणहं णिहं सुक्खं ।
मघवंतो पयणयमघवंतो	रयपरिचत्तो मोक्खं पत्तो ।

घत्ता—जहिं कामु ण कामिणि दिणु णउ जामिणि ताराणाहु ण षेसरु ॥

१० जहिं वसइ ण सज्जणु भसइ ण दुज्जणु तहिं थिउ सवन्नसहेसरु ॥१६॥

१७

काले जंते अवरु जिह	रुत्तु उप्पणउ कहमि तिह ।
चिधचौरचुं वियखयलि	इह विणीयपुरि छुहधचलि ।

घत्ता—उसने मागध वरतनुको जीत लिया । देव-विद्याधर-गण, नृत्यमाल और हेमन्त-कुमारको जीत लिया । मन्दाकिनीको अपने वशमे कर लिया । इस प्रकार धरतीको सिद्ध कर वह पुनः अपने घर आ गया ॥१५॥

१६

उसका शरीर साढ़े चालीस धनुष ऊँचा था स्वर्णकी छविवाला, मानो मन्दराचलका शिखर हो । उसका शरीर सुन्दर तथा अच्छे लक्षणोंसे युक्त था, यह कामिनीके मनको क्षुब्ध करनेवाला था । उसकी आयु पाँच लाख वर्ष की थी और नवनिघानरूप स्वर्णादि धातुएँ उसे नित्यरूपसे सिद्ध थी । दिव्य कामभोग भोगकर, चक्रवर्तीकी ऋद्धिको छोड़कर, अपने पुत्र प्रियमित्रको देकर, समस्त जिनतत्त्वको जानकर, मनहर उद्यानमें जाकर, अभयघोष देवकी स्तुति कर उसने दीक्षा ले ली, दुःख सहा, तृष्णा, निद्रा और भूल जीत ली । जिसके चरणोमे इन्द्र प्रणत है, ऐसा मघवा चक्रवर्ती कर्मरजसे परित्यक्त होकर मोक्ष गया ।

घत्ता—जहाँ न काम है और न कामिनी । न दिन है और न यामिनी । न चन्द्रमा है और न सूर्य । जहाँ न दुर्जन रहता है, और न सज्जन बोलता है । मघवा महेश्वर वहाँ निवास करता है ॥१६॥

१७

समय बीतनेपर जिस प्रकार एक और राजा हुआ, मैं उसी प्रकार उसकी कथा कहता हूँ ।

१. A मागहवरं । १०. P °मालिख तुहिणामरु । ११. AP वसिकिय ।

१६. १. A मंदरेसिंगं; P मंदरेसिंगं । २. A रिद्धी मोत्तूण । ३. AP पियमित्तहु ।

१७. १. A णिव; P णिव ।

सूरवंसणहृदिगयरु	धीरु पयपालणगिरु ।	
पहु अणंतवीरिउ वसइ	तहु महपैवी घरिणि सइ ।	
हरि करि विसवइ कुमुयपिउ	जोइवि सिविणय णँलिणहिउ ।	५
अच्चयकपहु ओरैरिउ	सुरेसिसु चयरि ताइ धरिउ ।	
किणरवीणारवहु णिउ	पुणु णवमासहिं संज णिउ ।	
विरइयणामकरणचिहिं	सणकुमारु कोक्किउ सुहिं ।	
तेण समुइणियंसणिय	चउदहरयणविहूसणिय ।	
घणणंदणवणकोतलियै	गंगाजलचेलंचलियै ।	१०
बहुणरिंदकोइवणिय	गरुयगिरिंदसिहरथणियै ।	
लकखंड वि महि जित्त किह	णिहिघडधारिणि दासि जिह ।	
पुनवभणियधणुसुंगयरु	तिणिण लकख बरिसाउधरु ।	
घत्ता—बत्तीससहासहिं मउडविहूसहिं णरणाहहिं पणविजइ ॥		
जो सयलमहीसरु णरपरमेसरु तामु काइं वणिणजइ ॥१७॥		१५

१८

रंभापारंभियतंडवइ	तावेक्कहिं दिणि मणिमंडवइ ।
अत्थाणि परिट्टिउ सकु जहिं	आलाव जाय सुरवारहिं तहिं ।
भो अत्थि णत्थि किं सुहरुइ	णरलोइ रूउ कासु वि णरहु ।
तं णिसुणिचि भणइ सुराहिवइ	जो संपइ वट्टइ चक्कवइ ।

जिसके ध्वजपटोसे आकाश चुम्बित है ऐसे चूनेसे सफेद विनीतपुरमें सूर्यवंशरूपी आकाशका दिनकर, धीर, प्रजापालनमे लीन राजा अनन्तवीर्य निवास करता था। उसकी गृहिणी महादेवी सती थी। स्वप्नमे सिंह, गज, बैल, चन्द्रमा और सूर्य देखकर उसने अच्युत स्वर्गसे अवतरित देव-शिशुको अपने उदरमें धारण किया। और फिर नौ माहमे किन्नरोंके वीणारवसे ध्वनित पुत्रको उसने जन्म दिया। नामकरण-विधि करनेवाले सुधियोने उसे सनत्कुमार कहकर पुकारा। उसने, समुद्र जिसका वसन है, चौदह रतन जिसके विभूषण हैं, सघन नन्दनघन जिसके कुन्तल हैं, गंगाजल जिसका वस्त्रांचल है, जो अनेक राजाओंको कुतूहल उत्पन्न करनेवाली है, भारी गिरीन्द्र शिखर, जिसके स्तन है, ऐसी छह खण्ड धरती उसने इस तरह जीत ली मानो निधिघट धारण करनेवाली गृहवासी हो। उसका शरीर पूर्वोक्त धनुषो (साढे चालीस धनुष) के बराबर ऊँचा था। वह तीन लाख वर्ष आयुको धारण करनेवाला था।

घत्ता—वह मुकुट धारण करनेवाले बत्तीस हजार राजाओंके द्वारा प्रणाम किया जाता था। जो समस्त महीश्वर और मनुष्य परमेश्वर था, उसका क्या वर्णन किया जाये ? ॥१७॥

१८

एक दिन मणिमण्डपमे जब रम्भा अप्सरा ताण्डव नृत्य कर रही थी और इन्द्र दरवारमे बैठा हुआ था, तब देववरोंमे आपसमे बातचीत हुई कि “अरे क्या किसी भी शुभकर मनुष्यका नरलोकेमे सुन्दर रूप है या नहीं है ?” यह सुनकर इन्द्र कहता है कि “इस समय जो चक्रवर्ती हैं,

२. A महदेवी। ३. P णलिणहिउ। ४. A अववरिउ। ५. P सुइ सिसु। ६. AP कोतलिया। ७. AP चलिया। ८. A कोडावणिया; P कोडावणिया। ९. AP षणिया।

- ५ सुरणरकामिणियणणलिणरवि सो सणकुमार किं दिट्ठ णैवि ।
 माणुसु णवैत्थि रूउज्जलउं जेणेहउं भासिउं मोकलउं ।
 ता झ स्ति समागय तियस तर्हि अच्छइ वसुहेसरु भवणि जर्हि ।
 अबलोइवि णरवइ सुरवरर्हि अहिणंदिउ विहुणियसिरकरर्हि ।
 रूवें तेल्लोकरूवविजइ एहउ सुरिट्ठु दुकरु हवइ ।
 १० जिणणाहु वि जर्हि संसइ चडइ तर्हि अवरु रूउ किर कर्हि घडइ ।
 घत्ता—पयडैवि सरूवइ सोम्मँसहावइ विहसिवि देवर्हि भासिउं ॥
 जइ मरणु णं हौतउ तो पज्जत्तउ एउ जि रूउ सुहासिउं ॥१८॥

१९

- ता जरमरणसेइ आयणिणवि मणिणवि तणु व महियलं ।
 देवकुमारणामे सुइ अप्पिवि सतुरंगं समयगलं ॥१॥
 णिच्चत्तिशुत्तिगुत्तसिवगुत्तमहामुणियायपंकयं ।
 तेणासुं धिउण पक्खालिय बहुभवपावपंकयं ॥२॥
 ५ गहियं वीरपुरिसचरियं चित्तं तडिदं चंचलं ।
 रुद्धं चंडकुसुमसरकंडाडवरडमरविभलं ॥३॥
 ससिडिंडीरपिंडपंडुरर्यैरहिमपडलइयदेहयं ।
 वसियं बाहिरम्मि परिसेसियघरपंगुरणणेहयं ॥४॥

सुर-नर-कामिनियोके नेत्ररूपी कमलोंके लिए सूर्यके समान उस सनत्कुमारको देखा या नहीं।" तब रूपसे सुन्दर मनुष्य है या नहीं, स्वच्छन्द रूपसे जिन देवोंने यह कहा था, वे शीघ्र वहाँ आये जहाँ अपने भवनमें वह पृथ्वीश्वर था। सुरवरोने उसे देखा, और अपने सिर और हाथ हिलाते हुए उसका अभिनन्दन किया। रूपसे त्रिलोकके रूपकी विजयमें यह देवेन्द्रके लिए दुष्कर होगा, इसके रूपको देखकर जिनेन्द्रके रूपमें सन्देह होने लगता है तब वहाँ दूसरा रूप कहीं गढ़ा जा सकता है ?

घत्ता—तब अपने सौम्य-स्वभाव रूपको प्रकट करते हुए देवोंने हँसकर कहा कि यदि मरण न हो, तो यह सराहनीय रूप पर्याप्त है ॥१८॥

१९

तब जरा और मरण शब्द सुनकर और महीतलको तृणके समान समझकर, देवकुमार नामके पुत्रको अश्व और मैगल सहित धरती देकर, नित्य तीन गुप्तियोंसे गुप्त शिवगुप्त महामुनिके चरणकमलोंकी शरणमें जाकर उसने अनेक जन्मके पापोंका प्रक्षालन किया तथा वीर पुरुषके चरितको स्वीकार कर लिया, बिजलीकी तरह चंचल तथा प्रचण्ड कामके बाणोंके आडम्बरके भयसे विह्वल चित्तको रोक लिया। चन्द्र फेन समूहवत् अति धवलवर्ण हिम पटलको कान्तिके

१८. १. P जेवि । २. A णयत्थि । ३. A चडइ । ४. AP सोम । ५. A ण हंतउ ता; P ण हु तउ तो ।
 १९. १. AP मरणघोसु । २. AP अप्पिवि । ३. A कंडंडंवर । ४. A पंडुरपरहिम ।

चलतद्वयद्वियपद्वियसोयामगिताद्वैणविहद्वियायलं ।
 सहियं पावसस्मि वणतहतलि विसरिसजलञ्जलञ्जलं ॥५॥ १०
 महिहरविच्येदकद्वयचिचलविचलयलसिलायलणिहियकाङ्गं ।
 सूरस्सहिम्मुद्देण सूरैण वरेण विमुक्कराङ्गं ॥६॥
 सोढुं गिभयालरविकिरणकलावर्खरविच्यंभियं ।
 दुइमकोहमोहददलोहमयं गियलं गिसुंभियं ॥७॥
 सहसा दिट्टसयलसयरायरकेवलविमललयणो । १५
 देल सणक्कुमारु जइ सुहमइ जायल सो गिरंजणो ॥८॥
 घत्ता—मइलिउ^{१०} भोक्खत्तं कइधिदुत्तं काइं कइतणु पोसइ ॥
 भरहाइणरिंदहं चरिचं अणिदहं पुप्फयंतु जइ चोसइ ॥१९॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभवमरहाणुमणिए
 महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्ये धम्मपरमेट्ठिपुदंसणपुरिससोह-
 महुकीलयमभवसणक्कुमारकहंवरं णाम एक्कुणसट्ठिमो
 परिच्छेओ समत्तो ॥५९॥

समान देहवाले वह घर और वस्त्रका मोह छोड़कर बाहर निवास करने लगे । पावस ऋतुमें वह वनवृक्षके नीचे, चंचल तड़-तड़ कर गिरती हुई विजलीसे जिसका अयाल विघटित है, ऐसी असामान्य जलधाराको सहन करते हैं । जिसने महीधरोके विकट कटकोके समान विपुलसे विपुलतर शिलातलपर अपना शरीर रखा है, ऐसे रागसे मुक्त उस श्रेष्ठ वीरने सूर्यके सम्मुख होकर, ग्रीष्मकालकी रविकिरण-समूहके प्रखर विस्तारको सहकर, दुर्दम क्रोध-मोह और दृढ़ लोभमय शृंखलाको नष्ट कर दिया । जिससे सकल सचराचर देख लिया जाता है ऐसे केवलज्ञान-रूपी नेत्रवाला शुभमति वह सनत्कुमार निरंजन देव हो गया ।

घत्ता—मूर्खता और कवि की धृष्टतासे मलिन कवित्वका पोषण क्यों किया जाता है कि जब पुष्पदन्त कवि अनिन्द्य भरत आदिका चरित घोषित करता है ॥१९॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुराणोंके गुणालंकारोंसे युक्त, महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचित एवं महामन्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यमें धर्मनाथ परमेश्वरी सुदर्शन पुरुषसिंह मधुकीर्ण, मधवा और सनत्कुमार कथान्तर नामका उनसठवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥५९॥

५. P^० शाडणविणण-विहद्वियां । ६. AP^० वियलं । ७. A सूरसिहिमुद्देण, P सूरराहिमुद्देण ।
 ८. A खरं वियंभियं । ९. AP जाओ । १०. AP मूषत्तं ।

सन्धि ६०

	दुःक्रियपसरणिवारओ मोहमहारिषमारओ	जो दीणेषु किवारओ ॥ जो सासयसिवमारओ ॥द्रुवकां॥
		१
५	पंचमचक्रहरो णरईसो सोलहमो परमेहि पसण्णो तत्तसमुज्जलकंचणवण्णो केवलणामहामयमेहो भूसणभारविज्जियकण्णो जो छणयंदकरावलिकंतो भत्तजणत्तिहरो भयवंतो	जेण णिओ समणं ण रईसो । सुत्तणिसेहियपेसिपसण्णो । णायणिउत्तन्वउत्तिवहवण्णो । भव्वसमूह्णिरुविचयमेहो । पंगणणच्चियखेयरकण्णो । संतसद्दावो उच्चियकंतो । जो गिरिधीरो णो भयवंतो ।
१०	फुल्लियकोमलपंकयवत्तो संतियरो भुवणुत्तमसत्तो घत्ता—सो भवसायरतारओ णियसुकइत्तु पयासमि	घत्थकुत्तित्थ सुत्तित्थपवत्तो । बुद्धदयो परिरिक्खियसत्तो । पणविचि संतिभट्टारओ ॥ तासु जि चरिउं समासमि ॥१॥

सन्धि ६०

जो पापके प्रसारका निवारण करनेवाले और दीनोंमें कृपारत हैं । जो मोहरूपी महाशत्रुका नाश करनेवाले और शाश्वत शिवलक्ष्मीमें रत हैं ।

१

जो पाँचवें चक्रवर्ती हैं, मनुष्योंके ईश जिन्होंने कामको अपने मनके पास नहीं फटकने दिया, जो प्रसन्न सोलहवें तीर्थकर हैं । जिन्होंने अपने सूत्रों (सिद्धान्तों) से मदिरा और मांसका निषेध किया है, जो तत्त्वसे समुज्ज्वल और स्वर्ण वर्णवाले हैं, जिन्होंने चारों वर्णोंको न्यायमें नियुक्त किया है, जो केवलज्ञानरूपी महामेघजलवाले हैं, जिनके द्वारा भव्यजनोकी मेधा (बुद्धि) का निरूपण किया गया है, जिनके कान भूषणोंके भारसे विवर्जित हैं, जिनके प्रांगणमें विद्याधर-कन्याएँ नृत्य करती हैं, जो पूर्ण चन्द्रकी किरणावलीके समान सुन्दर हैं, जो भक्तजनोंकी पीड़ा दूर करनेवाले हैं, जो ज्ञानवान् हैं, जो पर्वतकी तरह धीर हैं, जो भययुक्त नहीं हैं; जिनका मुख खिले हुए कोमल कमलके समान है, जो कुतीर्थोंको ध्वस्त करनेवाले और सुतीर्थोंका प्रवर्तन करनेवाले हैं, जो शान्ति करनेवाले और भुवनमें सर्वश्रेष्ठ हैं, जो दयामें बृद्ध और प्राणियोंकी रक्षा करनेवाले हैं ।

घत्ता—ऐसे भवसमुद्रसे तारनेवाले शान्ति भट्टारकको प्रणाम कर, अपने सुकवित्त्वका प्रकाशन करता हूँ और उनके चरितका संक्षेपमें कथन करता हूँ ॥१॥

२

जंबूदीवि भरहि विजयाचलु
जहि सुरणारिहिं गेयपवीणहिं
जहिं रिसिवसइ अछिचु अहंसै
जहिं जं भूसिज्जइ सरैकंके
जहिं केवलि णिव्वाणपयं गउ
फलिहसिलायलि जहिं मायंगहिं
दाहिणसेदिहिं तहिं रहणेउरु
देत्थु जलणजडि णिवसइ खगवइ
णियजसेण कंतहु चंदाहहु
तासु सुहइदेवि पियराणी

वत्ता—वाहं विहिं मि सुय हूई
चाउवेय सा एयहु

अहिणवचंद्गचंपयपरिमलु ।
सकै सुम्मइ वज्जंतहि वीणहि ।
जसु मेहल सेविज्जइ हंसै ।
णिम्मलु तं वणिणज्जइ कं के ।
जहिं मणियरहि ण दिहु पयंगउ ।
सुंहु दिज्जइ जोइयणिययंगहिं ।
पुरु णारियणरणियपयणेउरु ।
विणुओणयसिह णारइ खगवइ ।
तिलयणयरणाहहु चंदाहहु ।
णं आसीस पुन्वपियराणी ।

णं रइणाहहु दूई ॥
दिण्णी दिणयरतेयहु ॥२॥

३

असिहिंजडिणामहु जयसिरिधामहु
अक्कफित्ति सुउ जायउ केहउ
अवर वि चंदसरीरइ णं पह

रूउंइमहु णिज्जियकामहु ।
खत्तधम्मु णरवेसं जेहउ ।
उत्पण्णी सुय णाम सयंपह ।

२

जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमे अभिनव चन्दन और चम्पक परिमलसे युक्त विजयार्ध नामका पर्वत है जहाँ गीतमें प्रवीण सुरनारिणी और वज्रती हुई वीणाका स्वर सुना जाता है। जहाँ ऋषियोंकी वस्ती है और जो पापांशसे अछूता है, जिसकी मेखला हंसके द्वारा सेवित है। जहाँ जो जल जलबकसे भूषित है निर्मल उस जलका मैं क्या वर्णन करूँ ? जहाँ केवलियोंने निर्वाण प्राप्त किया। जहाँ मणिकरणोंके कारण सूर्य दिखाई नहीं देता। जिन्होंने अपने शरीरका प्रतिबिम्ब देखा है ऐसे हाथी जहाँ स्फटिक शालाग्रोंपर अपना मूँह देखते हैं। उस पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमे रथनूपुर नगर है, जिसमे नारीजनोंके तूपुरोंकी रुनझुन सुनाई देती है। उसमे ज्वलनजटो नामका विद्याधर निवास करता था। अपने यशसे कान्त चन्द्रके समान आभावाले तिलकनगरके राजा चन्द्राभकी सुभद्रादेवी नामकी प्रिय रानी थी, जो मानो पूर्वजोंका आशीर्वाद थी।

वत्ता—उन दोनोंके एक पुत्री हुई जो मानो कामदेवकी दूती थी। वह वायुदेगा (कन्या) दिनकरके समान तेजवाले इसे (ज्वलनजटो) को दी गयी ॥२॥

३

विजयश्रीके घर कामको जीतनेवाले और रूपमे उत्कृष्ट ज्वलनजटोका अर्ककीर्ति नामका ऐसा पुत्र हुआ, जो मनुष्यके रूपमे जैसे छात्रधर्म हो। और भी उसे चन्द्रमाके शरीरसे प्रभाके

२. १. A सुह । २. A सर कंके । ३. A मणिणियरहिं । ४. AP मह । ५. A णारीयण । ६. A विणउणयं ।

३ १. A सिंहजडिं । २. A रूवोदामहु ।

५ देसि^३ सुरम्भइ पंकयणेत्तहु
विजयाणुयहु महाहवपवलहु
सुसुमूरियकंठीरवकंठहु
जणित् वाइ सिमु सिरिविजयंकञ्ज
उत्तरसेडिहि वसियंतेउरि

१० षत्ता—परिहावल्यसुदुग्गामि
पंचवण्णघयसोहणि

पोयणणयरि पयावइपुत्तहु ।
कोडिसिलासंचालणधवलहु ।
दिण्णी पढमहु हरिहि तिचिदुहु ।
विजयभदुहु कंतीइ ससंकञ्ज ।
पुरि सुरिंदकंतारि सुगोउरि ।

रयणदीवणासियतमि ॥
देवदेविमणमोहणि ॥३॥

४

खयरु मेहवाहणु पीणत्थणि
जुइभाला णामें सुय वल्लह
परिणिय पुत्तु तेण तहि जायउ
धीय सुतार तारवरलोयण
५ ताएं पोढत्तणि कयपणयहु
अमियतेउ भल्लारउ भाविउ
भुत्तञ्जं तेण णिबद्धं णियाणञ्जं
सिरि सिरिविजयहु देवि हियत्तं
विजयं तञ्जं लइयञ्जं आयणिवि

णाम मेहमालिणि तहु पणइणि ।
ढोइय रविकित्तिहि परदुल्लह ।
अमियतेउ णामें विक्खायउ ।
सुंदरि मुणिहिं वि कामुकोयण ।
दिण्णी सिरिविजयहु ससतणयहु ।
जुइवह सुय कण्हें परिणाविउ ।
पत्तउ कालं अबंहियठाणउ ।
कामभोयपरिभारचिरत्तं ।
चित्तु कलत्तु वि तिणैसमु मणिवि ।

समान स्वयंप्रभा नामकी कन्या उत्पन्न हुई। सुरम्य देशके पोदनपुर नगरमें कमलके समान नेत्रोंवाले, प्रजापतिके पुत्र विजयके छोटे भाई महापुद्गेमें प्रबल, कोटिशिला संचालनमें श्रेष्ठ सिहोंकी गरदनोकी मरोड़नेवाले प्रथम नारायण त्रिपुष्टको वह कन्या दी गयी। उससे श्रीविजयोंक पुत्र उत्पन्न हुआ। और कान्तिमें चन्द्रमाके समान दूसरा विजयभद्र। विजयार्घ पर्वतकी उत्तर श्रेणीमें जिसमें अन्तःपुर हैं, ऐसा सुन्दर गोपुरवाला सुरेन्द्रकान्तर नगर है।
षत्ता—जो परिखा बल्यसे अत्यन्त दुर्गम है, जिसमें रत्नद्वीपोंसे अन्वकार नष्ट हो गया है, जो पंचरंगे ष्वजोसे शोभित है तथा देव और देवियोंका मन मुग्ध कर लेता है ॥३॥

४

उसमें मेघवाहन नामका विद्याधर राजा था। उसकी प्रिय गृहिणी पौन स्तनोंवाली मेघमालिनी थी। उसकी ज्योतिर्माला नामकी प्रिय पुत्री थी, शत्रुओंके लिए दुर्लभ जो अर्ककीतिके लिए दी गई। उसने उससे विवाह कर लिया। वहाँ अमिततेज नामका पुत्र हुआ। स्वच्छ और श्रेष्ठ आँखोंवाली सुतार नामक कन्या हुई। वह सुन्दरी मुनियोंको भी कामकुपुहल उत्पन्न करनेवाली थी। प्रौढ़ होनेपर पिताने प्रणय करनेवाले अपनी बहनके लड़के श्रीविजयको उसे दे दिया। अमिततेज बहुत भला था। नारायणने ज्योतिप्रभा उसे व्याह दी। इस प्रकार उसने अपने बाँधे हुए निदानका भोग किया, और समय आनेपर नरकभूमिमें पहुँचा। कामभोगके परिभारसे विरक्त हृदय विजयने लक्ष्मी श्रीविजयको देकर तप ले लिया है, यह सुनकर घन और

३. A देससुरम्भइ ।

४. १. AP तेण पुत्तु । २. AP णिबद्धु । ३. A-अवहियट्ठाणउ; P अवहिट्ठाणित् । ४. P वउ । ५. AP तिणसर्वं ।

अमियतेज गियरज्जि थवेप्पिणु भत्तिइ तव तिव्वयरु तवेप्पिणु । १०
 अक्कफित्ति जइवइ गच मोक्खहु सुक्कउ भवसंसरणहु दुक्खहु ।
 विजयभद्दु सिरिविजयहु वच्छलु जिह तिह अमियतेज गिरु गेइलु ।
 पाहुडगमणागमणपवाह जाइ कालु वंघुहं उच्छाहे ।
 घत्ता—जा तावेक्कु सुसोत्तिच तहि आयउ गिम्मिच्चिह ॥
 सत्तमि दिणि जं होसइ तं सिरिविजयहु घोसइ ॥४॥ १५

५

अरिपुरवरणिवसावयवाहहु तद्धि गिवडेसइ पोयणणाहहु ।
 तद्धयडंति सिरि^१ द्रत्ति भयंकरि सहसा दहविहप्राणंखयंकरि ।
 विजयभद्दु पमणइ रे वंभण गिहय सल्लणहियणिमुंभण ।
 जइ रायहु सिरि विञ्जु पडेसइ तो तुहुं सिरि भणु किं गिवडेसइ ।
 तं आयणिणवि तणुविच्छायहु दियवरु आहासइ जुवरायहु ।
 पत्थिव महु मत्थइ मल्लमुक्कइ गिवडिहिंति णाणामाणिक्कइ ।
 मरणवयणवाए विहाणउ तहि अवसरि सइ उच्छइ राणउ ।
 को तुहुं कासु पासि केहिं सिक्खिउ केमं भविस्सु वप्प पइं लक्खिउ ।
 अक्खइ सुत्तकंठु पुहईसहु हचं पव्वइयउ समउं हलीसहु ।
 गउ विहरंतु देसि पुरु कुंडलु णं महिणारिहि परिहिउ कुंडलु । १०

कलयको तृणके समान समझकर, अमिततेजको अपने राज्यमे स्थापित कर, भक्तिसे तीव्रतम तप तपकर यतिपति अर्ककीर्ति मोक्ष गया और इस प्रकार संसारके दुःखसे दूर हो गया । जिस प्रकार श्रीविजयका प्रिय विजयभद्र, उसी प्रकार और स्नेही अमिततेज, उपहारोके आने-जानेके प्रवाह और उत्साहसे दोनो बन्धुओंका जब समय बीतने लगा—

घत्ता—तब एक ज्योतिषी ब्राह्मण वहाँ आया, और सात दिन बाद जो होनेवाला था, वह उसने श्रीविजयको बताया ॥४॥

५

“शत्रुनगरके राजारूपी स्वापदके लिए व्याधा पोदनपुरनरेशके सिरपर तड़तड़ करती हुई सीधे और अचानक दसों प्राणोका अन्त करनेवाली भयंकर विजली गिरेगी ।” इसपर विजयभद्र कहता है—“हे निर्दय, सज्जनोंके हृदयको चूर-चूर करनेवाले ब्राह्मण, यदि राजाके सिरपर वज्र गिरेगा, तो तू बतल तेरे सिरपर क्या गिरेगा ?” यह सुनकर द्विजवर शरीरसे कान्तिहीन युवराजसे कहता है—“हे राजन्, मेरे सिरपर मलसे रहित नाना मणि गिरेंगे ।” उस अवसरपर मरण शब्दकी हवासे झुंझ राजा स्वयं प्रूछता है—“तुम कौन हो, किसके पास तुमने कहाँ यह सीखा है ? हे सुभट, तुमने किस प्रकार भविष्य देख लिया ?” ब्राह्मण राजासे कहता है कि “वलभद्रके साथ मैं प्रव्रजित हुआ था । देशमे विहार करते हुए मैं कुण्डलपुर पहुँचा, जो ऐसा लगता था

६. AP गेमिच्चि ।

५. १. A सिरि द्रत्ति; P सिरि दत्ति । २. AP पाण । ३. AP वायइ । ४. AP किरि । ५. P वेम इहु भविस्सु ।

दूसहविसैयपरीसहभरगड
घत्ता—अंतरिक्षसुणिमित्तइं
भउसु वि खत्तपमाणं

काइं मि जीवियवित्तिहि लग्गड ।
सिक्खिउ गहणक्खत्तइं ॥
अंगं अंगणिव्वाणं ॥५॥

५ सरु गंभीरु इयरु उवलक्खिउ
लक्खणाइं कमलाइं पसत्थइं
वक्खणाणिं जं जिह सिक्खिणंतुरु
तं हं सिक्खिवि अट्टपयारं
केसरिरहहु पुरोहिउ सुरगुरु
वंदिवि आयउ पोमिणिवेडहु
सोमसम्मु णियजणीभायरु
मेलाविउ हं तेण सँदुहियहि
ससुरयद्विणु दवु सुजंतहं
१० हं पर केवलु पडमि णिमित्तइं
सामसमपिउ कंचणु णिट्ठिउ
महुं कडियलि लग्गं कोवीणं

६ विजणु पुणु तिलयाइं सिक्खिउ ।
जाणमि मूसयच्छिण्णं वत्थइं ।
पावइ जेण सुहासुहु णरवरु ।
इय एहउ णिमित्तु सवियारं ।
तासु वि सीसु विसारउ महुं गुरु ।
फलिहालंकियकुलिसकवाडहु ।
मइं दिट्ठु तहिं कयपरमायरु ।
लोमंजणियहि ससँहरमुहियहि ।
दोहं मि गलिउ कालु कोलंतहं ।
किं पि वि णिव ण समज्जमि वित्तइं ।
घरि दालिदु रउदु परिट्ठिउ ।
तो वि ण भासमि कासु वि दीणं ।

मानो महोरूपो नारीने कृण्डल पहन लिया हो । असह्य विषय-परिषहसे भग्न होकर मैं किसी प्रकार जीविकावृत्तिमें लग गया ।

घत्ता—मैंने अन्तरिक्ष-निमित्त विद्या सीखी और ग्रह-नक्षत्रोंकी विद्या सीखी । क्षेत्र प्रमाण सहित भूमिविद्या अंगकी रचनासे सम्बन्धित अंग-निमित्त सीखा ॥५॥

६

और दूसरा गम्भीर स्वर निमित्त सीखा, तिल आदिके द्वारा व्यंजन निमित्त सीखा । कमलादि प्रशस्त लक्षण निमित्त सीखा । चूहों आदिके द्वारा काटे गये वस्त्रोंसे सम्बन्धित छिन्न निमित्त मैं जानता हूँ । स्वप्नान्तरमें जो जैसा है उसका व्याख्यान करता हूँ कि जिससे नरवरको शुभागुण फल प्राप्त होते हैं । इस प्रकार इन विचारपूर्ण आठ प्रकारके निमित्तोंको सीखकर, सिंहरथके पुरोहित वृहस्पति, उनका शिष्य विशारद मेरा गुरु है । उनकी वन्दना कर, स्फटिक-मणियोंसे अलंकृत वस्त्र किवाड़वाले पद्मिनोखेट नगरसे आया हूँ । सोमशर्मा मेरी माँका भाई है, अत्यन्त आदर करनेवाले उससे मैं मिला । उसने अपनी कन्या हिरण्यलोमासे मेरा मिलाप करवा दिया (विवाह कर दिया) । समुरका दिया हुआ धन खाते हुए और क्रीडा करते हुए हम दोनोंका समय बीत गया । मैं केवल निमित्तशास्त्रका अध्ययन करता रहता, मैं विलकुल भी धनका अर्जन नहीं करता । समुरके द्वारा दिया गया धन नष्ट हो गया और घरमें भयंकर दारिद्र्य प्रवेश कर लिया । मेरी कमरमें केवल लँगोटी बची । तब भी मैं किसीसे दान वचन नहीं कहता था ।

६. AP °विसहपरीसह° ।

६. १. A छिन्नइं; P छित्तइं । २. P सुदुहियहि । ३. A लोमंजणियहि । ४. AP ससयर° । ५. A सुसुरय° ।

घत्ता—घरिणिइ पसरियदुक्खइ महुं डब्बंतहु मुक्खइ ॥
भुंजहि भणिवि विसालइ चित्त वराडय थालइ ॥६॥

७

तुहुं महुं दइवें दिण्णउं वंभणु
उज्जउ करहि ण भरहि कुहुंउचं
एम जाम घरणीइ पवोल्लिउ
अइणियडउं जि जलणु पज्जालिउ
तक्खणि सिहिफुल्लिणु उच्छलियउ
हउं थिउ तं जोर्यनु सइत्तउ
उत्तरु महुं ण देसि जंपंतिहि
जं इंगालउ पडिउ वरालइ
जं पइ पाणिण अहिंसिचिउ
सा^१ जंपइ पइ बुद्धिहि भुल्लउ

घत्ता—डब्बउ णिद्धणजंपिउं
परु जणउच कि बुच्चइ^२

एत्तिउं तेरउं अच्छइ कुलहणु ।
ल्लोयणजुयलु करिवि आयंउचं ।
ता महुं हियउच णं झसंउल्लिउ ।
इंधइ इंधणु केण वि चालिउ ।
आभिवि जल्लयि ररुयइ चिवियउं । ५
ता कंतइ सिरि सल्लिं सित्तउ ।
मैइं दर विहसिचि भासिउं पतिहि ।
तं तडि पंडिही पोयणपालइ ।
तं जाणहि हउं रयणहिं अंचिउ ।
चप्पलु^३ झंखइ चंदगहिउल्लउ । १०

महुरु वि कण्णहं विप्पिउं ॥
कुलघरणिहिं वि ण रउइ ॥७॥

घत्ता—जिसका दुःख बढ़ रहा है ऐसी गृहिणीने भूखसे जलते हुए मुझपर, 'खा लो' कहकर बढ़ी-सी थालीमे कौड़ियां डाल दो" ॥६॥

७

देवने तुम जैसा ब्राह्मण मुझे दिया । तुम्हारा कुल धन इतना ही है, उद्यम कर अपने कुटुम्बका पालन नहीं करते ही—अपनी दोनों आँखें लाल-लाल करते हुए जब इस प्रकार स्त्रीने कहा तो मेरा हृदय प्रज्वलित हो उठा । मेरे अत्यन्त निकट जलती हुई आग थी । किसीने चूल्हेमे आग चला दी । तत्क्षण आगकी चिनगारी उचटी और आकर विशाल कौड़ीपर गिर पड़ी । मैं सावधान होकर उसे देखता हुआ स्थित था । तब पत्नीने सिरपर उसे सींच दिया । (बोली) "बोलते हुए मुझे तुम उत्तर नहीं दोगे ।" तब मैंने थोड़ा हँसते हुए पत्नीसे कहा—“कौड़ीपर जो अंगारा पड़ा है वह पोदनपुरके राजापर विजली गिरेगी और जो तुमने पानीसे उसे सींचा है, उससे तुम यह जानो कि मैं रत्नीसे अचित्त होऊँगा ?” वह बोली—“पति बुद्धिसे भोला है, चन्द्रमासे अभिभूत (पागल) वह मिथ्याभाषासे सन्तस होता है ।

घत्ता—निर्धन व्यक्तिके द्वारा कहे हुएको आग लग जाये, मधुर होते हुए भी (कथन) कानोके लिए वृत्रा लगता है, दूसरे लोग क्या कहेंगे, खुद कुलीन गृहिणीको गरीब (पति) की बात अच्छी नहीं लगती" ॥७॥

७ १. AP उज्जणु । २. P अससित्तउ । ३. AP पजालिउ । ४. AP ररुयइ जलधरि । ५. AP ज जोयतु । ६. A omits this foot. । ७. P वराडइ । ८. P तडि पंडिहीती । ९. AP जाणणि । १०. A सह जंपइ, P स वि जंपइ । ११. P चप्पलु । १२. AP रउइ ।

इय चित्तं धरहु णीसरियत्त
 णाम अमोहजोहु ओहंछमि
 जइ चुक्कइ नृवं केवलिट्ठत्तं
 सत्थणु भट्टारा सच्चं सुच्चइ
 ५ तं तहु भणित्त चित्ति संमाइत्त
 भणइ सुवुद्धि कुलिसमंजूसहि
 वसहि णराहिव मच्चि समुद्धु
 चवइ सुमइ पइसहि परदुच्चरि
 मइसायरु भासइ ण तसिज्जइ
 १० जं लिहियत्तं तं अगगइ थक्कइ
 घत्ता—सुरमहिहरधिरचित्तं
 धरियणराहिवसुइ

विवरि णिहित्तं चित्तं पहाणत्त
 गेहि जयंतीपंतिहि वेविइ
 अच्छइ तीहिं वि संझहि ण्हायत्त

८

हत्तं तुम्हारइ पुरि अवयरियत्त ।
 पट्टणणाहहु पलत्त णियच्छमि ।
 तो जाणहि चुक्कइ मइं सिद्धत्तं ।
 कैरु पडियारु जेम तुहुं रुच्चइ ।
 रायं मंतिहि वयणु पलोइत्त ।
 आयससंखलवलयविहूसहि ।
 जेणुंवरसि सदेहविसद्धु ।
 रुपयगिरिवरगुहविचरंतरि ।
 णरवइ जिणवरिट्ठु सुमरिज्जइ ।
 जमकरणहु मरणहु को चुक्कइ ।
 कयपट्टरक्खपयत्तं ॥
 मासित्तं बुद्धिसमुहं ॥८॥

९

सुणि महिवइ दिट्ठंतकहाणत्त ।
 सीहत्तरइ सिरिरामासेविइ ।
 खलु दप्पिट्ठु सोसुं परिवाइत्त ।

८

यह विचार करते हुए धरसे निकल पड़ा और मैं तुम्हारी नगरीमें आया। मेरा नाम अमोघजिह्व है। मैं यहाँ रहता हूँ और नगरके राजाका नास (प्रलय) देखता हूँ। हे राजन्, यदि केवलज्ञानीका कहा चूक सकता है, तो समझ लीजिए कि मेरा कहा भी चूक जायेगा। हे आदरणीय, स्वप्न सच्चा कहा जाता है, तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा प्रतिकार कर लीजिए। तब उसका कहा राजाके चित्तमें समा गया। उसने मन्त्रीका मुख देखा। सुवुद्धि मन्त्री कहता है—“हे राजन्, तुम लोहेकी शृंखलाओंके समूहसे अलंकृत वज्रमंजूषामे स्थित होकर समुद्रके भीतर रहो जिससे तुम अपनी देहके बिनाशसे बच सको।” सुमति नामका मन्त्री कहता है कि “दूसरोके लिए दुर्गम विजयार्थ पर्वतकी गुफाके विवरके भीतर प्रवेश करो।” मतिसागर मन्त्री कहता है—“हे राजन्, आपको पीड़ित नहीं होना चाहिए और जिनवरका स्मरण करना चाहिए। जो लिखा हुआ है, वह आगे आयेगा। यमकरण और मरणसे कौन बचता है ?”

घत्ता—सुमेरु पर्वतके समान स्थिर चित्त, तथा जिसने प्रभुकी रक्षाका प्रयत्न किया है और जिसने राजा को मुद्राको धारण किया है ऐसे मतिसागर मन्त्रीने कहा—॥८॥

९

“हे राजन्, विवरमे निहित मुख्य वृत्तान्तको दृष्टान्त—कथानकके रूपमे सुनिए—ध्वज-पंक्तियोसे प्रकम्पित तथा लक्ष्मीरूपी रमणीसे सेवित सिद्धपुरमे सोमवर्मा नामका अत्यन्त दृष्ट

८. १. AP ना अच्छइ । २. AP णिव । ३. AP करि । ४. AP जेणुंवरिह ।

९. १. A णिहित्तु । २. AP सोसुं परिवायत्त ।

समयंतरपरविचारणि जाए
दुष्परिणामें मुच कर्यमायउ
णासौवंसउ विधिर्वि साहिउ
कालें जंतें जायउ दुचव्लु
गलियसत्ति सो णिवडिचि थक्कउ
को वि ण तिणुं णउ पाणिउं दावइ
जइयहुं हउं वलउंतउ हौंतउ
तइयहुं सयल देंति महुं भोयणु
कसमसत्ति देंतेहिं दलेवउं
घत्ता—इय भरंतु माहिंदउ
मरिवि भरेण सत्तामसु

सो जिणदासैं जित्तु विवाए ।
तहिं जि महिसु सैंविसाणउ जायउ । ५
लोएं लोणु भरेण्णिणु वाहिउ ।
एम जीउ भुजइ दुक्कियफलु ।
णायरणरणिउरुंवे मुक्कउ ।
रुंसिवि सेरिहु णियमणि भावइ ।
जइयहुं वलइउ भारु वहुंतउ । १०
अज्जु ण केण वि किउ अवलोयणु ।
पुरयणु मइं कइयहुं वि गिलिउवउं ।
दुग्गइवेल्लीकंदउ ॥
हुउ तहिं पिउवणि रक्खसु ॥९॥
१०

तेत्थु जि पुरि अण्णायविहूसिउ
तेण सयल्लु काणणमृगु खद्धउ
चित्तइ सुयारउ णिरु णिक्किउ
वणयरु णत्थि केत्थु पावमि पलु
आणिउं घल्लियडिभयजंगलु

कुंभु णाम राणउ मंसासिउ ।
हरिणु ससउ सारंगु ण लद्धउ ।
विणु मासेण ण भुंजइ घृत्तुं न्तु ।
आहिंउवि मसाणधरणीयलु ।
जीहालोलहं पेउ जि मंगलु । ५

और घमण्डी परिव्राजक अपने घरमें तीन सन्ध्याओमें स्नान करता हुआ रहता था । जिसमें शस्त्रान्तरोपर विचार है, ऐसे विवादमें वह जिनदासके द्वारा जीत लिया गया । वह मायावी दुष्परिणामसे भर गया और वही सीगोवाला भैंसा हुआ । उसकी नाक छेदकर साध लिया (वधमे कर लिया) गया और नमक लादकर उसे चलाया । समय बीतनेपर वह दुर्बल हो गया । जीव इसी प्रकार दुष्कृतका फल भोगता है । शक्ति क्षीण हो जानेपर वह गिरकर थक गया । नागरजन समूहने उसे मुक्त कर दिया । कोई भी उसे नै जल देता और न घास । वह भैंसा अपने मनमें क्रुद्ध होकर विचार करता है कि जब मैं बलवान् था और गोनीका भार ढोता था, तबतक सब लोग मुझे भोजन देते थे । परन्तु आज किसीने मेरी ओर देखा तक नहीं । मैं कसमसाकर दाँतोंसे नष्ट कर दूँगा, मैं कब इन पुरजनोको निगल सकूँगा ।

घत्ता—दुर्गतिरूपी बेलका अंकुर वह तामसी भैंसा यह स्मरण करता हुआ बोझसे मरकर वही मरघटमें राक्षस हुआ ॥९॥

१०

उसी नगरोमें अज्ञानसे विभूषित कुम्भ नामका मांसभक्षक राजा था । उसने जंगलके सारे पशु खा लिये । जब हरिण, खरगोश और पक्षी नहीं मिले तो निर्दय रसोइया सोचता है कि बिना मांसके राजा निश्चयसे भोजन नहीं करेगा । वनपशु नहीं हैं, मांस कैसे पा सकता हूँ । मरघटकी घरतीपर घूमकर वह पड़े हुए बच्चेके मासको ले आया । जो लोग जीभके लालची हैं

३. A ह्यमाणउ, K. also records ह्यमाणउ इति पाठान्तरे । ४. AP जायउ सुविसाणउ ।

५. AP णासावसैं । ६ P विचवि । ७. A तणु । ८. P-रुउइ । ९. A कसमसंतदंतेहिं ।

१०. १. P^०मिगु । २. P घुउ णिउ ।

- पहिवि महाणससत्थणिओएँ
 त्सिसिवि तहु सुहकमलु णिरिक्खिउ
 माणुसमासहु राउ पइइउ
 साहियरक्खसचिच्चाणियरउ
 १० तहिं अवसरि पुठिविज्जउ णिसियरु
 कुलिसकडिणणक्खेहिं वियारइ
 वाहिवि वाहिवि पुणु अवहेरिउ
 अप्पसयत्थियाइं तमचंतइं
 घत्ता—पंडुरसंदिरपयडइ
 १५ सखलु लोउ थिउ पइसिवि तहु रयणियरहु णासिवि ॥१०॥

११

- ता सीहउरु पमेहिवि णिग्गउ
 घंडहुउ त्ति णरलोहिउ घोट्टइ
 चरयंतं तणुचम्मइं फाडइ
 रायणिसाडचरणजुयलग्गइ
 ५ चरुयसयडु मणुयं संजुत्तउ
 जइयहुं तं आयंउ ण णिरिक्खहि
 कुम्भकारकडु पुरवरु घुट्टं
 णिवरक्खसु जणपच्छइ लग्गउ ।
 कड्यउ त्ति हडुइं वलवट्टइ ।
 णाइं णिवड्डंणाइं अच्छोडइ ।
 ता वुत्तउ पयाइ भयभग्गइ ।
 दियहि दियहि लइ तुच्छु णिवत्तउ ।
 तइयहुं तुहुं पुणु सव्वइ भक्खहि ।
 णिच्चमेव दिज्जइ उवइट्टं ।

उनके लिए प्रेत-मांस भी मंगल होता है। पाकशास्त्रके विधानके अनुसार पकाकर रसोदधेने उसे दिया। राजाने सन्तुष्ट होकर उमका मुखकमल देखा, और 'बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर' कहकर उसको खा लिया। उसका प्रेम मांसभक्षणमें बढ़ गया और दूसरे दिन उसने रसोदधेको खा लिया। जिसने राक्षस-विद्या-समूह सिद्ध कर लिया है ऐसा वह नरवर राक्षस हो गया। उस अवसरपर पहलेका निशाचर (भैंसेका जीव) उसके शरीरमें प्रविष्ट हो गया। वह अपने कुलिकके समान कठोर नखोंसे विदीर्ण करता और भागते हुए लोगोंको उलाहना देता। बुला-बुलाकर उनका तिरस्कार करता। भला मैं बहुत समयसे भूखते पीड़ित हूँ, स्वार्थी और अज्ञानसे भरे हुए तुम लोग मुझसे (बचकर) जीते जो कहाँ जाते हो।"

घत्ता—जो सफेद धरोसे प्रगट है, ऐसे उस कारकट-नगरमे उस राक्षस राजासे भागकर प्रवेश कर रहने लगे ॥१०॥

११

तब वह नृपराक्षस सिंहपुरसे निकला और लोगोंके पीछे लग गया। घड़-घड़ कर लोगोंका खून पीता और कड़कड़ करके हड्डियोंको चूर-चूर कर देता। शरीरके चमड़ेको चर-चर करके फाड़ देता और उसके जोड़ोंको तोड़ डालता। राजाके दोनो पैरोपर गिरते हुए भयभीत प्रजाने कहा—'तुम प्रतिदिन मनुष्य सहित एक गाड़ी भात निश्चित रूपसे लो, और जब तुम उसे खाना हुआ न देखो, तब तुम सब लोगोंको खा डालना।' इस प्रकार वह नगर कुम्भकारकट घावित

३. AP सिसिवि । ४. AP सूयाह वि ।
 ११. १. AP घडयडत्ति । २. AP कडयडत्ति । ३. AP चरयरत्ति । ४. AP णिवड्डंणाइं । ५. AP आयवत्तं ।

तहिं जि चंडकोसिउ दियसारउ
पउरनिवदुउ गिरु दुववारउ
विप्येण वि अणउवरि णिवेसिउ
भूयहिं चालिउ पासि णिसीहहु
वत्ता—दंडपाणि अवराइउ
ढंहरैहिं महिरंधइ

सोमसिरीमणयणपियारउ ।
अण्णहिं दिणि तहु आयहु चारउ ।
पुत्तु मंडकोसिउ लहु पेसिउ ।
ललललतसुहणिगयजीहहु ।
रक्खसु संसुहुं धाइउ ॥
बहुंवरु वित्तु तमंधइ ॥११॥

१०

१२

तहिं अक्खिउ अजयरु ते गिलियउ
तेण देव वुहुं विवरि ण घिप्पहिं
पभणइ मइसायरु महि दिज्जइ
ता अहिंसिचिवि मेइणिसासणि
सो किंकरजणेण पणविज्जइ
जीय देव आपसु भणिज्जइ
गयणविलंबमाणधयमालउ
झायइ अंधुअसरणु तिहुघणु
ता सत्तमउ दियहु संपत्तउ

पुणु सो वलिवि ण जणणिहिं मिलियउ ।
पत्थु जि जीवोवाउ वियप्पहिं ।
पोयणणाहु अव्वरु इह किंज्जइ ।
कंचणजक्खु णिहिउ सिंहांसणि ।
सो चलचामरैहिं विज्जिज्जइ ।
तासु पुरउ णच्चिज्जइ गिज्जइ ।
णरवइ गंपि पइहु जिणालउ ।
जिणपडिंविंविणहियणिचलमणु ।
जो जणेण पोयणवइ उत्तउ ।

५

हूआ । जो कहा गया था, वह प्रतिदिन दिया जाने लगा । वहाँ चण्डकौशिक नामका ब्राह्मण श्रेष्ठ था जो अपनी पत्नी सोमश्रीके मन और नेत्रोंके लिए प्रिय था । एक दिन नगरप्रवरके द्वारा निबद्ध (निश्चित की गयी) दुनिवार उसकी बारी आ गयी । ब्राह्मणने गाड़ीके ऊपर अपने पुत्र मण्डकौशिकको बैठाया और शीघ्र उसे भेजा । जिसके मुखसे लपलपाती हुई जीभ निकल रही है ऐसे राजाके पास भूत उसे ले गये ।

वत्ता—तब दण्डपाणि अपराजित नामका राक्षस सामने दौड़ा । दूसरे राक्षसोंने उस वटुकको एक अन्धे महीरन्ध्रमे फँक दिया ॥११॥

१२

वहाँ एक अजगर था । उसने उसे खा लिया । वह ब्राह्मण दुवारा आकर अपनी मसि नही मिला । इसलिए हे देव, तुम अपनेको विवरमे मत डालो, यहीपर जोनेके उपायको सोचिए । मत्तिसागर मन्त्री कहता है—घरती दे दी जाये और पोदनपुरका दूसरा राजा बना दिया जाये । तब स्वर्णयक्षको घरतीके शासकके रूपमे अभिषेक कर सिंहासनपर स्थापित कर दिया गया । उसको किंकरजनोके द्वारा प्रणाम किया जाता है, चंचल चमरोंके द्वारा उसे हवा की बातों है, 'हे देव, आदेश दीजिए' यह कहा जाता है । उसके सम्मुख गाया और नाचा जाता है । जिसकी ध्वजमाला आकाशसे लगी हुई है ऐसे जिनमन्दिरमे जाकर वह राजा बैठ गया । वह अनित्य और अक्षरण त्रिभुवनका ध्यान करता है । उसका मन जिनप्रतिमामें लीन और निश्चित था । इतनेमें

६. P चंडकोसिउ । ७. AT अणु उवरि । ८. P ढहुंरैहिं । ९. AP बहुवरु ।

१२-१ A वेप्यहिं; P वेप्यिहिं । २. AP अवर वर । ३. AP सीहांसणि । ४. P वज्जिज्जइ । ५. AP अद्धउ ।

- १० असणि पडिय तहु जक्खहु उप्परि गेमिच्चियहु दिण्ण रहै हरि करि ।
पवमिणिखेहु गामसयसहियचं पण्णवणमारुयमहिमहियचं ।
घत्ता—अण्णु वि रर्यणिहिं संचिच मोत्तियदामहिं अंचिच ॥
किच वंभणु परिपुण्णउ पुणु पहु रज्जि णिसण्णउ ॥१२॥

१३

- चंदकुंदणिहदहियहिं खीरहिं गंगासिंधुमहोसरिणीरहिं ।
अट्टावयकलसहिं जिणुं गहाणइ करिवि विइण्णइं दीणहं दाणइं ।
अप्पाणहु कुलकुवलयचंदे विहिय संति सिरिविजयणरिंदे ।
काले जंते तहिं णिवसंते पोयणपुरवरु परिपालंते ।
५ जणणिपसाएं मंतु लहेप्पिणु पंचपरमपरमेद्धि णवेप्पिणु ।
सुज्जतेय विज्जाहरसामिणि साहिय विज्ज गहंगणगामिणि ।
जोन्वणभावजणियसिंगारइ एक्कहिं वासरि समचं सुतारइ ।
गउ णहेण वणि दुमदलणीलइ थिच कामिणिकिलिंकिचियकोलइ ।
वावेत्तहिं विहरणअणुराइउ भांमंरिविज्ज लहेवि पराइउ ।
१० घत्ता—हित्तमहारिउच्छाएं इंदासणि खगराएं ॥
आसुरियहिं उप्पण्णउ लच्छिहिं गुणसंपुण्णउ ॥१३॥

सातवां दिन आ गया । और ज्योतिषजनने जैसा कुछ पोदनपुरमे कहा था, वह वज्र उस स्वर्ण-यक्षके ऊपर गिर पड़ा । राजा कुम्भने उस नैमित्तिकको रय, घोड़े और हाथी दिये । एक सौ ग्रामोंके साथ उसे पश्चिमीखेड नगर दिया, जो नन्दनवनकी हवासे महक रहा था ।

घत्ता—और भी उसे रत्नोंसे संचित और मोतियोकी मालासे अंचित किया । उस ब्राह्मणको परिपूर्ण बना दिया और वह स्वयं पुनः राज्यमे स्थित हुआ ॥१२॥

१३

चन्द्रमा और कुन्दपुष्पोंके समान दही और दूधोंसे, गंगा-सिन्धु महानदियोंके जलोंके एक सौ आठ कलशोंसे जिनका अभिषेक कर उसने दीनजनोंको दान दिया । कुलरूपी कुवलयके चन्द्र श्रीविजय तरेन्द्रने अपने कुलकी शान्ति की । वही निवास करते हुए समय बीततेपर और पोदनपुरका पालन करते हुए, मांके प्रसादसे मन्त्र पाकर, पांच परमेष्ठीको प्रणाम कर, अत्यन्त दीप्त विद्याधरोंकी स्वामिनी आकाशगामिनी विद्या सिद्ध की । एक दिन यौवनके भावसे उत्पन्न शृंगारवाली सुताराके साथ आकाशमागसे गया और वनमे वृक्षपत्रोंके घरमे कामिनी सुताराके साथ हँसने-रोनेकी कामक्रीड़ा करने लगा । इतनेमें विहार करनेका अनुरागी, भ्रामरी विद्या प्राप्त करनेके लिए (अज्ञानिघोष) यहाँ आ पहुँचा ।

घत्ता—जिसने शत्रुओंके माहात्म्यका अपहरण किया है, ऐसे इन्द्रादिति नामक विद्याधर राजाके द्वारा आसुरी नामकी विद्याधरीसे उत्पन्न तथा लक्ष्मीके गुणोंसे परिपूर्ण—॥१३॥

६. AP रह करि हरि । ७. AP महमहियचं । ८. AP रयणहिं ।
१३. १. AP महाणहणोरहि । २. A जिणहवणइ । ३. AP भावरि ।

१४

चमरचंचपुरवद् रङ्गराड्ड
तेणासुररिच्छसुयसीमंतिणि
मोहिउ णावड् मोहणवेल्लिड्
मायाहरिणु तेण दैक्खालिउ
रुवु धरिवि वरइत्तहु केरउ
अप्पणु झ त्ति जारु तहिं पत्तउ
देव मूंगाईं धरंतु ण लज्जहि
कीलणु तुञ्जु तासु भयभंगउं
तं णिसुणिवि पररमणं भासिउं
हउं परियत्तउ एण जि करुणें
एम भगेवि चडाविय सुरहरि
णहि जंतें दाविउं ससरीरउं
सुक्क धाह हा णाह भणंतिड्

घत्ता—पुणु परैपुरिसु ण जोइउ

सुघट्टिउं विहि विहडावड्

असणिघोसु णामेण पराइउ ।
विट्ठ सुतार हारभूसियथणि ।
उरि विद्धउ मयरद्धयभल्लिड् ।
पड् सइसामीवहु संचालिउ ।
अञ्झाहिय आणंदजणेरउ ।
अमुणंतिड् घरिणीइ पवुत्तउ ।
अज्ज वि वालत्तणु पड्डिवज्जहि ।
कंपड् मरणविसंठुल्लु अंगउं ।
सुंदरि चारु चारु उवएसिउं ।
आउ जाहुं पुरवरु किं हरिणें ।
रेहड् चंदरेहें णं जलहरि ।
सुद्धड् तं जोइवि विवरेरउ ।
करजुयलेण सीसु पहणंतिड् ।

एण णाहु विच्छोइउ ॥

एवहिं को मेलावड् ॥१४॥

५

१०

१५

१४

अशनिघोष नामका रतिशोभित चमरचंचपुरका राजा आया। उसने हारसे भूपित स्तनवाली विद्याधरकी स्त्री सुताराको देखा। मोहिनीलताके समान उससे वह मोहित हो गया। हृदयमें वह कामदेवके भालेकी नोकसे विद्ध हो गया। उसने मायावी हरिण दिखाया और पतिको सतीके पाससे हटा दिया तथा सुताराको आनन्द उत्पन्न करनेवाले वरका रूप बनाकर वह जार स्वयं वहाँ पहुँचा। नहीं जानती हुई पत्नी सुतारा बोली, “मृगोंको पकड़ते हुए आपको शर्म नहीं आती, तुम आज भी बचपनको छोड़ दो। तुम्हारा खेल होता है, उसका भयसे नाश होता है, मरणसे अस्तव्यस्त उसका शरीर काँपता है।” यह सुनकर परम रमण उसने कहा— “हे सुन्दरी, तुमने सुन्दर उपदेश दिया, इस कष्टसे मैं सन्तुष्ट हुआ, आजो नगरवरको चले, हरिणसे क्या ?” यह कहकर उसने उसे सुरविमानमें चढा लिया। वह ऐसी शोभित हो रही थी मानो मेघमें चन्द्ररेखा हो। आकाशमें जाते हुए उसने अपना शरीर दिखाया। वह विपरीत रूप देखकर मुग्धाने दोनों हाथोंसे सिर पीटकर हे स्वामी कहते हुए दहाड़ मारी।

घत्ता—उसने परपुरुषको नहीं देखा। इसने मेरे स्वामीका विछोह किया है। विधि सुघटितको अलग कर रहा है। इस समय कौन मिलाप कराता है ॥१४॥

१४. १. A दिक्खालिउ । २. AP घरिणीइ पड् वुत्तउ । ३. AP मिगाई । ४. AP चंदरेह । ५. AP पुष्पु ।

एम रुयति तेण सा णिज्जइ
 एत्तहि पवणु व वैयपयट्टञ्च
 मत्तमयूरवंदकयतंडवु
 पररमणीहरणेण णिवेसिय
 ५ लोलइ विज्ज सुताराखुवें
 चत्तञ्च भत्तारें किं जायञ्च
 अक्खइ मायाविणि हञ्च णट्ठी
 विसरिसविसरसवियणगुरुक्की
 चंदणवंदणइंधेणु पुंजिवि
 १० घत्ता—पियविओयञ्जायंपिय
 संकप्पहु जि वसंगड

ता संपत्त विणिण विज्जाहर
 तेहिं तिविट्ठपुत्त ओलक्खिञ्च
 एक्के बुच्चियमायामग्गे

१५

पिययमविरहे तिलु तिलु सिज्जइ ।
 गड मृगुं पुहइणाहु पत्तद्वृच ।
 पद्धिआयच सुंदरिलयमंडच ।
 रयणसिलायलि तेत्थु जि इरिसिय ।
 जाणिवि गहिय कंत जमदूएं ।
 दीसइ वयणकमलु विच्छायञ्च ।
 कुक्कुडफणिणा करयलि दट्ठी ।
 इय भणति पाणेहिं विमुक्की ।
 सूरकंतमणिजलणु पलंजिवि ।
 परिसेसियइहपरहिञ्च ॥
 णरवइ सलहि वल्लगड ॥१५॥

१६

सयणविहुरहर असिबरफरकर ।
 णिज्जणि वणि मरंतु णोवेक्खिञ्च ।
 ताडिय क्ष त्ति वामपायग्गे ।

१५

इस प्रकार विलाप करती हुई वह उसके द्वारा ले जायी गयी। प्रियतमके विरहमें वह तिल-तिल क्षीण हो रही थी। यहाँपर पवनके समान वेगसे भागा हुआ हरिण भाग गया। राजा लौट आया। जिसमें मत्त मयूरवृन्द नृत्य कर रहे हैं, ऐसे सुन्दर लता-मण्डपमें आया। परस्त्रीके हरण करनेवालेके द्वारा स्थापित उसी रत्न-शिलातलपर सुताराके रूपमें हिलती हुई विद्या दिखाई दी। यह जानकर कि वह यमदूत (मृत्यु) के द्वारा ग्रहण कर ली गयी है पतिते पूछा—“क्या हुआ, तुम्हारा मुखकमल कान्तिहीन दिखाई क्यों दे रहा है ?” वह मायाविनी कहती है कि कुक्कुट साँपके द्वारा हथेलीमे काटी गयी मैं नष्ट हो रही हूँ। असामान्य विषरसकी वेदनासे भरी हुई और यह कहती हुई; उसने प्राण छोड़ दिये। लाल चन्दनका ईषन इकट्ठा कर सूर्यकान्तमणिकी ज्वालासे आग लगाकर—

घत्ता—प्रियाके वियोगसे काँपता हुआ इस लोक और परलोकके हितको छोड़ देनेवाला, कामदेवके बशोभूत होकर वह राजा चित्तापर चढ़ गया ॥१५॥

१६

इतनेमें दो विद्याधर वहाँ आये, जो स्वजनोके दुःखको दूर करनेवाले और असिवरूपी अस्त्र हाथमे लिये हुए थे। उन्होंने त्रिपृष्ठके पुत्रको देखा। एकान्त वनमे मरते हुए उसको उन्होंने उपेक्षा नहीं की। मायाके मार्गको समझनेवाले एकने बायें पैरके अग्रभागसे शीघ्र उस विद्याको

१५. १. AP मिगु । २. A कमलवयणु; P वयणु कमलु । ३. A इंधण । ४. A जायामिड ।

१६. १. AP ण उवैक्खिञ्च ।

पायद करिवि नृवैहृ दृक्खालिय
महिवइ विमैइवसु अवलोइवि
जंलुहीवि भरहखेचंतरि
दाहिणसेदिहि जोइप्पहपुरि
हृचं तहिं पहु णामे संभिण्णञ
संजय पणइणि सुच दीवचसिहृ
जणण तणय ए अम्हइं सुंदर
चिर परिभमिवि रमिवि पिच बोह्लिवि
पइवय परमेसरि अहिमाणिणि
घत्ता—णिरु उक्कंठिय अच्छमि
हा सिरिविजय पधावहि

विज्ज पणट्ट भीयवेयालिय ।
खयरं भणिञ गिसुणि मणु दोइवि ।
चारुधोयकलहोयमहीहरि ।
उज्जाणतथंतकीलासुरि ।
अभियतेर्येकिंकरु माणुण्णञ ।
महुं ओहच्छइ णं कंतिइ विहृ ।
अवलोर्यंति सिहरिदरिक्कंदर ।
गयणुल्ललिय जाम वणु मेल्लिवि ।
ता रुयंति णहिं गिसुणिय माणिणि ।
वत्तलह पईं कहिं पेच्छमि ॥
कुट्टि लग्गहि म चिरावहि ॥१६॥

१७

हा हा अभियतेय तुंहुहिरव
हा हा माम तिविहृ महावल
हा सासुइ देवर साहारहि
हा हलहर पईं अप्पवं तारिच
हा हे घोर जार जैणि सारहु
जइ वि मईणु तुहुं तो वि ण इच्छमि

इहु अवसरु तुहु वट्टइ बंधव ।
पईं जीवंति गेति मेईं किं खल ।
मईं रोवंति काईं ण णिवारहि ।
महुं लगंतु कुपुरिसु णे णिवारिच ।
मईं लहु णेहि पासि भत्तारहु ।
पईं हृचं जणणसरिच्छु णियच्छमि ।

५

ताद्वित किया और उसे प्रकट कर राजाको बता दिया, वहीँ भीम वैतालिक विद्या नष्ट हो गयी । विस्मयके बशीभूत राजाको देखकर विद्याधर बोला—“मन लगाकर सुनो, जन्मूहीपके भरतक्षेत्रमें विजयार्थ पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमे, जिसके उद्यानोमे देव क्रोद्धा करते हैं ऐसे ज्योतिप्रभ नगर है । मैं उसका राजा सम्मिन्न हूँ । मानसे उन्नत, अमिततेजका अनुचर । मेरी प्रणयिनीसे दीपशिख नामका पुत्र हुआ, वह मेरे साथ है मानो कान्तिके साथ चन्द्र हो । हे सुन्दर, इस प्रकार हम पिता-पुत्र हैं । पर्वतकी घाटियों और गुफाओंको देखते हुए खूब परिभ्रमण कर, रमण कर और प्रिय बोलकर वन छोड़कर जैसे ही आकाशमे उछले, वैसे ही हमने पतिव्रता स्वाभिमानिनी एक मानिनीको आकाशमे रोते हुए (इस प्रकार) सुना ।

घत्ता—“मैं अत्यन्त उत्कण्ठित हूँ । हे प्रिय, मैं तुम्हें कहां देखूँ ? हे श्रीविजय दौड़ो, पीछे लगे, देर मत करो” ॥१६॥

१७

हा-हा ! दुन्दुभिके समान राब्दवाले अमिततेज, हे भाई यह तुम्हारा अवसर है । हे समुर त्रिपुष्ट और महावल, तुम्हारे जीवित रहते हुए दृष्ट मुझे क्यों ले जा रहे है ? हे सास, हे देवर, तुम मुझे सहारा दो ।” मुझ रोती हुईको तुम मना क्यों नहीं करते ? हे बलभद्र, तुमने अपना उद्धार कर लिया, मेरे पीछे लगे हुए कुपुरुषको तुमने मना नहीं किया । हा हे घोर जार, जगमें श्रेष्ठ मेरे पतिके पास तुम मुझे ले चलो, यदि तुम कामदेव हो तो मैं तुम्हे नहीं चाहती । मैं तुम्हें

२. P णिवहु । ३. AP विमयवसु । ४. P तेर । ५. A तणय ये यम्हइ । ६. AP कह पईं ।
१७. १. AP कि मईं । २. A ण वारिच । ३. AP जगसारहु । ४. AP मयणु ।

गिणुगिबि गियसौमिहि णामक्खरु अम्हइं धाइय गुणि संधिवि सरु ।
 भणित्ठ वइरि भड्वाएं भज्जहि अवरकलत्तु हरंतु ण लज्जहि ।
 अप्पहि तरुणि धुलियहारावलि दूसह सिरिविजयहु बाणावलि ।
 १० घत्ता—ता देवीइ पवुत्तं एण्वहि भिडहुं ण जुत्तं ॥
 काणणि कामसमाणत्त जाइवि ओइवि राणत्त ॥१७॥

१८

लहु महुं तणिय वत्त तहु अक्खहु जीव जंतु णरणाहहु रक्खहु ।
 तं परिहच्छियं पणवियमत्था चंडकंडकोदंडविहत्था ।
 ए अम्हइं आइय वेण्णि वि जण तुहुं मा मरु रामारंजियमण ।
 एम भणिवि दीवयसिहु पेसित्त तं पोयणपुरि वइयरु भासित्त ।
 ५ जिह हरिसुत्त गत्त मयणिहेंसें जिह णिय घरिणि चमरचंचेसें ।
 जिह वैयालियविज्जइ विलसित्त ता पहुजणणिहि वयणु विणीसित्त ।
 जइ ण वि सिट्ठं अप्पणं केण वि जयगुत्तं अमोहज्जीहेण वि ।
 तो वि सन्धु सन्भावहु आणित्तं सपरोक्खु वि पच्चक्खु वि जाणित्तं ।
 अम्हइं घरि जायइं दुणमित्तइं पडियइं णहयलात्त णक्खत्तइं ।
 १० पणइणिहरणु जाउं पियणीसहु जायउं विग्घु किं पि धरणीसहु ।
 पर किं कुसलु पडीवत्तं दीसइ को वि कुसलवत्तित्त आवेसइ ।

अपने पिताके समान समझती हूँ। तब अपने स्वामीके नामके अक्षर सुनकर हम प्रत्यंचापर बाण चढ़ाकर दौड़े और शत्रुसे कहा—“भटवचनसे तुम भग्न होते हो, दूसरेकी स्त्रीका अपहरण करते हुए, तुम्हे धर्म नहीं आती। जिसकी हारावलि धूम रही है, ऐसी तरुणीको मुक्त कर दो। श्रीविजयकी बाणावलि तुम्हें असह्य होगी।”

घत्ता—तब उस देवीने कहा कि इस समय लड़ना ठीक नहीं। काननमें जाकर कामके समान मेरे प्रिय राजाको देखकर—॥१७॥

१८

श्रीराम मेरा समाचार उसे दो और नरनाथके जाते हुए जीवको बचाओ। उससे पूछकर प्रणमित्त मस्तक और हाथमे प्रचण्ड तोर और धनुष लिये हुए हम दोनों यहाँ आये हैं। हे स्त्रियोंके मनका रमण करनेवाले तुम मत मरो। यह कहकर उस विद्याधरने अपने पुत्र दीपशिवकी भेजा। उसने पीद्वनपुरमें यह वृत्तान्त कहा कि किस प्रकार नारायणपुत्र मृगके पीछे गया, किस प्रकार चमरचंचके राजाके द्वारा उसकी गृहिणीका हरण किया गया, किस प्रकार वह वैतालिक विद्यासे विलसित था। प्रभुकी माता (स्वयंप्रभा) का वचन निकला—यद्यपि किसी औरने नहीं जयगुप्त और अमोघजिह्व नैमित्तिकोने कहा था, तो भी सब बात सद्भावके साथ ठीक हो गयी। और परोक्ष बातको भी मैंने प्रत्यक्षरूपसे जान लिया। हमारे घरमे दुर्निमित्त हो रहे थे, आकाशसे नक्षत्र गिर रहे थे, प्रिय राजाकी प्रणयिनीका हरण होगा, राजाको भी कोई विघ्न होगा। लेकिन उल्टे उसे कोई कुशल दिखाई देगा और कोई कुशल-वार्ता आयीगी।

५. AP गियसामियणामक्खरु ।

१८. १. AP परिहच्छिवि । २. A जाम ।

घत्ता—इय जिह विप्पहिं सिट्टुं
सुयरिवि सुयहु सय्योणं

तिह तुहुं आय्यं दिट्टुं ॥
देविइ दिण्णु पयाणं ॥१८॥

लत्तल्लणरविकिरणविलासं
दिट्टु पुत्तु आल्लिगिउ मायइ
पयहिं णवंतु विवाणि चडाविउ
पहु रहुणेउरु णियउ सहरिसहिं
कहिउ सो वि सवडंमुहुं णिग्गउ
पायवडणु घरपाहुणयत्तणु
मंतिउ मंतु कहिउ मंतीसहिं
णाम मरीइ वइरिजलसोसहु
तेण वि णारीरणु ण दिण्णं
घत्ता—आइय्यं दूय सुहिं
हरिकुलहरपायारहु

१९

गय तं वणु ससेण आयसं ।
भूमिभाउ णं पाउसल्लायइ ।
वीयउ सिंसु पोयणु पंढाविउ ।
अमियतेयरायहु चरपुरिसहिं ।
सिलियउ णं दिसदंतिहि दिग्गउ ।
किउ महल्लपरिवाडिपवत्तणु ।
अमियतेयसिरिविजयमहीसहिं ।
पेसिउ दूयउ असणिणिघोसहु ।
मंडणु भडखंडणु पडिचण्णं
जलणजडीसुयपुत्तं ॥
तहु सिरिविजयकुमारहु ॥१९॥

५

१०

दिण्ण विल्ल वीरियपोरिसल्लणि
ओसारियल्लखेयरसत्थहं

२०

पहरणवारणि चंधविमोयणि ।
रस्सिसुवेयाइयहं समत्थहं ।

घत्ता—इस प्रकार जैसे विप्राने कहा, वैसे ही तुम यहाँ दिखाई दिये। पुत्रकी याद करके माँ (स्वयंभ्रा) ने सैन्यके साथ प्रयाण किया ॥१८॥

१९

ल्लोसे जिसमे रविकिरणोंका विलास आच्छन्न है, ऐसे आकाशसे वह सेना सहित उस वनमे पहुँचे। पुत्रको देखा। माताने उसका आलिंगन किया मानो भूमिभागने पावस छायाका आलिंगन किया हो। पैरोमे पड़ते हुए उसे विमानपर चढ़ाया और दूसरे पुत्र (विजयभद्र) को पोदनपुर भेज दिया। प्रभु (श्रीविजय) रथनूपुर नगर ले जाया गया। अमिततेजके हर्षसे भरे हुए चरपुरुषोंने राजासे कहा, वह भी सामने निकला और इस प्रकार मानो दिग्गजसे दिग्गज मिला हो। पैर पड़नेसे लेकर गृहके आतिथ्य तक उसने बड़ोंकी परम्पराका प्रवर्तन किया। (अर्थात् परम्पराके अनुसार उक्त शिष्टाचारका पालन किया) मन्त्रोशोने अपना विचारित मन्त्र कहा। अमिततेज और श्रीविजय राजाओने धात्रुरूपी जलको सोखनेवाले मारीच नामक दूतको अशनि-घोषके पास भेजा। उसने भी नारीरत्न नहीं दिया, युद्ध और भट-खण्डनको स्वीकार लिया।

घत्ता—दूत वापस आ गया। अर्ककीतिके पुत्रने मित्रताके कारण हरिकुलगृहके प्रकार उस श्रीविजय कुमारको—॥१९॥

२०

वीर्य पोषककी खदान (युद्धवीर्य), प्रहरावरण और वन्ध-विमोचन विचार्यं दी। सुष्ट

३. AP आइउ । ४. कहाणं ।

१९. १. P पहुविउ । २. AP आइए दूए ।

२०. १. AP परहुणं । २. A रस्सिसुवेयाइयहं ।

५	भीममहाहवभरधुरजुतहं बहिणीवइदिण्णाई लपपिणु चमरचंचपुरवइहि ससंदणु णियसोहोणिजियहिमवंतहु सहस्रस्सिपुत्तेण समेयड तहि आराहियसुगंसवग्गइ णं णिवइहि महिमंडलरिद्धी	पंचसथाई सहायई पुत्तहं । विज्जादेवथाउ सुमरेपिणु । उक्खंधं गड केसवणंदणु । अभियतेउ सिंहरिहि हिरिवंरहु । गड मरुवेणं मारुववेयउ । संजयतपडिमापायग्गइ । विज्ज महाजालिणि तहु सिद्धी । जायउ संगरु सधयहं सगयहं । जे ते जुज्झिवि दिसिहिं णणासिय । मेहुघोस अरिघोस असेस वि । तं मेत्तलंतुं धाण फणिमाणा ।
१०	एत्तहि असणिघोससिरिविजयहं णियसुय असणिसुघोसें पेसिय सहसघोस सयघोस सुघोस वि जं गय ते पविहंडियमाणा	सिरिविजयं दुग्गवारउ ॥ णाइ उवइउ संतिहिं ॥२०॥
१५	घत्ता—णियंवि सुताराहारउ छाइउ सरवरपंतिहिं	

२१

आसुरियहि लच्छिहि सुउ धायउ धाराजियखयहुयवहजाले रिउ भामरिविज्जामाहप्पे	णाइ कयंतं दंडु णिवेइउ । हउ विज्जए पइसिवि करवाले । विहिं रुवहिं कत्यरइ सद्धप्पे ।
---	--

विद्याधर समूहको हटानेवाले रश्मिवेगादि, भीम महायुद्धके भारमे जुते हुए पांच सौ पुत्र सहायक-
के रूपमें अपने बहनोईको दिये। उन्हें लेकर और विद्यादेवियोंका स्मरण कर केशवन्न्दन
(श्रीविजय) रथ सहित चमरचंच नगरके राजापर उक्खन्ध अश्वपर बैठकर आक्रमणके लिए
गया। ह्वाके समान गतिवाला अमिततेज अपने पुत्र सहस्ररश्मिके साथ आकाशमार्गसे अपनी
शोभासे चन्द्रमाको जोतनेवाले ह्रीत्तन्त पर्वतपर गया। वहाँ, जहाँ देवसमूहकी आराधना की
जाती है, ऐसे संजयन्त मुनिकी प्रतिमाके आगे उसे महाज्वाला नामकी विद्या सिद्ध हुई, मानो
राजाके लिए महिमण्डलकी ऋद्धि सिद्ध हुई हो। यहाँ ध्वजों और गजों सहित अशनिघोष तथा
श्रीविजयमे युद्ध हुआ। अशनिघोषके द्वारा भेजे गये जो पुत्र थे वे लड़कर दिशाओंमें भाग गये।
सहस्रघोष, शतघोष, सुघोष, मेघघोष और अरिघोष आदि सभी। जब वे खण्डित मान तथा
नागके आकारके बाण छोड़कर चले गये—

घत्ता—तब सुताराके अपहरण करनेवालेको दुर्वार समझकर श्रीविजयने तीरोंकी पंक्तिसे
उसे इस प्रकार छा लिया मानो शान्तियोंने उपद्रवको छा लिया हो ॥२०॥

२१

आसुरी लक्ष्मीका पुत्र इस प्रकार दौड़ा मानो कृतान्तने अपना दण्ड निवेदित किया हो।
विजयने प्रवेश कर धाराप्रलयकी आगकी ज्वालाको जोतनेवाली तलवारसे उसे मार दिया। शत्रु

३. A ओलधि; P बद्धे । ४. AP हिरिमंतु । ५. A मरुगणै; T मरुवेणं आकाशेन । ६. P मियं ।

७. A मेत्तलंति । ८. AP णियंवि ।

ह्य वेणिं वि चत्तारि समुग्गय -
अट्टु णिहय सोलह संजाया
बत्तीस वि दोखंडिय जामहिं
चउसट्टि वि विहलिय सरूवउ
एम दुवड्ढिइ वड्ढिउ दुद्धरु
जलि थलि दसदिसिवहि णहंपंगणि
वेढिउ पोयणणाहुखगिंदहिं

घत्ता—जैरफेरवरवमीमइ
पत्तउ सेणणसणाहउ

ते वि दुहाइय अट्टु समुग्गय ।
सोलह तयं वत्तीस समाया ।
रिउ चउसट्टि पराइय तामहिं ।
अट्टावीसउ सउ संभूयउ ।
हणु भणंतु असिवसुणंदयकरु ।
दीसइ असणिघोसु समरंगणि ।
णं विंझइरि महाघणविंदहिं ।

५

१०

तहिं तेहइ संगामइ ॥
रहणेउरपुरणाहउ ॥२१॥

२२

राउ सयंपहपुत्तु खलत्ते
तांउ अमियतेएण पवुत्तउं
परकलत्तु किं आणिउ गोहहु
एम भणेवि तेण लहु सुक्की
पवणुइधूयचिंधु सविमाणउ
जहिं णादेयहु सीमागिरिवरु
परणारीहरु भयवसु वड्ढउ

जाम ण हम्मइ तेहिं अखत्ते ।
असणिघोस किं कियउं अजुत्तउं ।
हक्कारिय भवित्ति णियदेहहु ।
विज्ज महाजालणि रणि दुक्की ।
तं पेक्खिउवि सहस त्ति पलाणउ ।
विजउ णामु जहिं अउल्लइ जिणवरु ।
समवसरणि तहिं संरणु पइड्ढउ ।

५

भ्रामरी विद्याके माहात्म्यसे दर्पपूर्वक दो रूपोंमें उल्ला। दोके मारे जानेपर चार उल्ले। उनके भी दो भाग होनेपर आठ उत्पन्न हुए। आठके आहत होनेपर सोलह हुए। सोलहके आहत होनेपर बत्तीस हो गये, जबतक बत्तीस खण्डित हुए, तबतक चौंसठ हो गये। चौंसठ भी स्वरूपसे विदलित हो गये, तो एक सौ बीस हो गये। इस प्रकार दो की वृद्धिसे बढ़ता हुआ तथा वसुतन्दक तलवार जिसके हाथमें है ऐसा वह जल, स्थल, दसो दिशाओं और आकाशके प्रांगणमें सब जगह दिखाई देता है। इस प्रकार विद्याघरोंने पौदनपुरराजाको घेर लिया, मानो महाघनसमूहने विन्ध्याचलको घेर लिया हो।

घत्ता—बूढे शृगालोंसे भयंकर उस वैसे संग्राममें सेन्यसे सहित रघुनूपुरका राजा वहाँ आया ॥२१॥

२२

स्वयंप्रसाका पुत्र राजा श्रीविजय जब उनके द्वारा दुष्टता और अन्यायसे नहीं मारा जा सका तो अमिततेजने कहा—“हे अशनिघोष, तुमने यह अनुचित क्या किया? दूसरेकी स्त्री अपने घरमें क्यों लाये। तुमने अपने शरीरकी होनहारको स्वयं चुनोती दी है।” इस प्रकार कहकर उसके द्वारा फँकी गयी महाज्वालिनी नामकी विद्या शीघ्र युद्धमें पहुँची। उसे देखकर हवामे जिसका ध्वज उड़ रहा है ऐसा विमान सहित वह सहसा भाग खड़ा हुआ। जहाँ नाभेयसीम नामका गिरिवर था और जहाँ विजय नामके जिनवर थे, भयके बत्तीभूत होकर परस्त्रीका

२१. १. A समागय । २. AP ह्य । ३. A जरफेरवरवमीमइ । ४. P णाहहु ।

२२. १. AP महाजालिणि णहिं दुक्की । २. AP सरणि ।

सिरिविजयाइय चोइयगयघड
माणखंभवलोयणभावं
१० केवलमाणसमुज्जलदिट्टिहि
घत्ता—जसधवळियछणयंदहु
विट्ठंसियवम्मीसरु

अणुमग्नो तहु लग्ग महाभड ।
मुक्खा पत्थिव मच्छरभावं ।
मडलियकर णवंति परमेट्टिहि ।
पुच्छंतहु खयरिदहु ॥
अक्खइ धम्मुरिसीसरु ॥२२॥

२३

भणइ भडारउ रोसु ण किउजइ
रोसवंतु णरु कह व ण रुच्चइ
रोसु करइ वह आवइ संकडु
रोसु कयंतु व कं णउ तासइ
५ जो रोसेण परववसु अच्छइ
माणपमत्तु ण काइ वि मणणइ
माणयंदुधु वंधुहिं वि ण भावइ
मायाभावं जो चिम्मकइ
णउ वीससइ को वि णिधम्महु
१० मायारउ तिरिक्खु उप्पजइ

रोसे णरयविवरि णिवडिउजइ ।
जइ वि सुवल्लहु तो वि पमुच्चइ ।
रोसें पुरिसु थाइ णं कक्कडु ।
अत्थु धम्मु कामु वि णिण्णासइ ।
तहु मुहकमलु ण लच्छि णियच्छइ ।
माणे गुरु देव वि अवगणणइ ।
णिरें दुणिरिक्खइं दुक्खइं पावइ ।
तहु संसुहउ ण सज्जु दुक्खइ ।
णिच्चपवंजियमायाकम्महु ।
लोहें णियज्जणणी वि विरज्जइ ।

अपहरण करनेवाला वह वहाँ उनके समवसरणकी शरणमें चला गया। श्रीविजय आदि महाभट भी अपनी गजघटाको प्रेरित करते हुए उसके मार्गके पीछे जा लगे। मानस्त्वम्भको देखनेके भावसे वे राजा ईर्ष्याभावसे मुक हो गये। जिनकी दृष्टि केवलज्ञानसे समुच्चल है ऐसे परमेष्ठोको वे हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं।

घत्ता—अपने यशसे चन्द्रमाके धवलित करनेवाले विद्याधर राजाके पूछनेपर कामदेवका नाच करनेवाले ऋषीस्वर धर्मका कथन करते हैं ॥२२॥

२३

आदरणीय वह कहते हैं—'क्रोध नहीं करना चाहिए। क्रोधसे नरकके विलमे गिरना पड़ता है। क्रोधी व्यक्ति किसीको भी अच्छा नहीं लगता, व्यक्ति कितना ही प्रिय हो (क्रोधी व्यक्ति) छोड़ दिया जाता है। क्रोध कई आपत्तियाँ और संकट उत्पन्न करता है। क्रोधसे व्यक्ति बन्दरकी तरह रहता है। यमकी तरह क्रोध किसे त्रस्त नहीं करता। उससे अर्थ, धर्म और काम नष्ट हो जाता है। जो क्रोधसे परवश हो जाता है, उसके मुखकमलको लक्ष्मी कभी नहीं देखती। मानसे प्रमत्त आदमी किसीको कुछ नहीं गिनता। मानसे गुरु और देवकी भी अवहेलना करता है। मानसे ठस (स्तब्ध) आदमी भाइयोंको भी अच्छा नहीं लगता। वह अत्यन्त दुर्दर्शनीय दुखोको प्राप्त करता है। मायाभावसे जो व्यक्ति आचरण करता है (चिम्मकइ) उसके पास सज्जन व्यक्ति नहीं जाता। नित्य मायाकर्मका प्रयोग करनेवाले धर्महीन व्यक्ति का कोई विश्वास नहीं करता। मायारत व्यक्ति तिर्यक गतिमें उत्पन्न होता है। लोभके कारण वह अपनी माँके प्रति विरक्त हो

३. AP^० लोयणगावं ।

२३. १. AP कह वि । २. A संकडु । ३. A माणवंतु । ४. AP णरु ।

५. AP णिद्धम्महु । ६. P विरइज्जइ ।

लोहें जणु चामीयरु संचइ
खाइ ण देइ धिंवइ घणु खोणिहि
घन्ता—एयहं चरहुं कसायहं
जो अप्पाणउं रक्खइ

लोहें अप्पणु अप्पउं वंचइ ।
लुद्धउ णिचडइ दुग्गयजोणिहि ।
दावियणरयणिवायहं ॥
मोक्खसोक्खु सो चक्खइ ॥२१॥

२४

मिच्छत्ते जणवउ छाइज्जइ
मिच्छत्ते विडगुरुपय पुज्जइ
मयणभत्तमहिलामहुसेवहं
मिच्छत्तेण जीव मोहिज्जइ
मिच्छत्तेण अखंजमु बद्धइ
पोसइ पंचिदियइं दुरासइं
परहणपरकलत्तअणुवंघे
तहि अवसरि आसुरियइ लच्छिइ
अमित्तयसिरिविजयहं ढोईय
किउ खंतव्वचित्तु णीसज्जउं
तं रिउजणणिहि वयणु समिच्छिउ

हिंसइ सम्मगमैणु पडिवज्जइ ।
मिच्छत्ते जिणणाहु विवज्जइ ।
पायहि पडइ रउदहं देवहं ।
भवविबभमि भामिज्जइ छिज्जइ ।
जीवहं जीविउ मंडेइ कडुइ ।
पावइ भाणउ विहुरसहासइं ।
वज्जइ एम जीउ रयवंघे ।
आणिचि सा सुतार धवलच्छिइ ।
भायरपइहिं सणेहें जोइय ।
मव्वहं खम मंडणउ पडिज्जउं ।
पुणु रहणेउरवइणा पुच्छिउ ।

५

१०

ता है। लोभसे मनुष्य सोना इकट्ठा करता है। लोभके कारण स्वयंसे स्वयंको ठगता है। न ता है और न पीता है, धनको जमीनभे गाड़कर रखता है, लोभी व्यक्ति दुर्गतयोनियोंमें जाता है।

घन्ता—नरकमें पतन दिखानेवाली इन चार कथायोंसे जो अपनी रक्षा करता है, वह सुखका आस्वाद लेता है ॥२१॥

२४

मिथ्यात्वसे जनपद आच्छादित होता है, हिंसासे स्वर्गगमनका प्रतिषेध होता है। मिथ्यात्वसे विटगुरु-चरणोंकी पूजा की जाती है। मिथ्यात्वसे मनुष्य जिननाथका त्याग करता है, गमदेवसे मत्त महिला और मधुका सेवन करनेवाला रौद्र देवोंके चरणोंमें गिरता है। मिथ्यात्वसे गीव मोहित होता है। संसारके चक्करोंमें घूमता है और नाशको प्राप्त होता है। मिथ्यात्वसे संयम बढ़ता है, जीवोंका जीव बढ़ी कठिनाईसे निकलता है। छोटे वाद्यवाली इन्द्रियोंका गोषण करता है और मनुष्य हजारों दुःख उठाता है। दूसरेके धन और स्त्रीके अनुबन्ध तथा उनके बन्धसे इस प्रकार जीव बंध जाता है। उसी अवसरपर धवल आँखोवाली आसुरी लक्ष्मीने सुतारा लाकर अमिततेज और श्रीविजयको दे दी। भाई और पतिने उसे स्नेहपूर्वक देखा। उसने उनके चित्तको क्षम्य और शल्यहीन बना दिया। क्षमा भव्योंका पहला अलंकार है। शत्रुकी माताके बचनोंका उन्होंने विचार किया, फिर रथनूपुरके पति अमिततेजने तीर्थकर वंजयसे पूछा।

२४. १. AP गवणु । २. A मडुइ, P मंडुइ । ३. P खंतव्वु चित्तु । ४. A सव्वहं ।

घत्ता—दुद्धमपावस्त्रयंकरु
उगयसंसयसंकहु

कहइ णरोहसुहंकरु ॥
विजय अभियतेयंकहु ॥२४॥

२५

जंबूदीवि भरहवरिसंतरि
अचलगामि धरणीजडु बंभणु
तहु इंदग्गिभूइसुय सुहयर
कविलु णामु दासेरु अलक्खिच
कुलविद्धंसणु जाणित विप्पे
गउ रयणउरहु भल्लं भाविं
जंबूघरिणिहि हूई सुंदरि
कुलणिदिं करंतु गुणवतइ
घत्ता—णवर धणोहें चत्तउ
दालिइ संतत्तउ

मागहविसइ सुसासणिरंतरि ।
अग्गिलवंभणितररुहसुंभणु ।
सुयसत्थत्थमहत्थ णणोहर ।
वैयचउक्कु सउंगई सिक्खिच ।
दुज्जसभीयं धाडिउ वप्पे ।
सच्चैयदियवरेण परिणाविउ ।
सच्चभीम णामेण क्खिसोयरि ।
वरु कुलहीणु वियाणित कंतइ ।
आर्यणिणिवि सुयवत्तउ ।
तहिं जिं ताउ संपत्तउ ॥२५॥

२६

सपराहवभीएण णमंसिउ
तहु पयजुचलु तेण ओलग्गिउं
कुलदूसणरुहणीसासुण्हइ

कविलें पुरवेषमज्झि पसंसिउ ।
दिण्णउं कंचणु जेत्तिउं मग्गिउं ।
धणु ढोइवि आउच्छिउ सुण्हइ ।

घत्ता—दुद्धम पापोंका नाश करनेवाला मनुष्योंके लिए शुभकर श्रीविजय, जिसके मनमें सन्देहकी कील उत्पन्न है, ऐसे अमिततेजसे कहता है ॥२४॥

२५

जम्बूद्वीपमें भारतवर्षके मगध देशमें, जिसमें निरन्तर सुज्ञासन है ऐसे अचलगाममें धरणीजट नामका ब्राह्मण था जो अपनी अग्निला ब्राह्मणीके स्तनोंका मर्दन करनेवाला था। उसके शुभ करनेवाले इन्द्रभूति और अग्निभूति नामके पुत्र थे, दोनों सुन्दर थे और उन्होंने शास्त्रोंका अर्थ महार्थ सुना था। उसका कपिल नामका भ्राता दासी पुत्र था। उसने चारों वेदों और छहों अंगोंको सीख लिया। विप्रने उसे कुलका नाश करनेवाला जानकर, अपयशसे डरकर पिताने उसे निकाल दिया। वह रतनपुर गया। वहाँ सत्यक नामक ब्राह्मणने उसे भला समझा और अपनी जम्बू नामकी स्त्रीसे उत्पन्न हुई क्रुशोदरी सुन्दर कन्या सत्यभामा व्याह दी। उस गृणवती कान्ताने कुलनिन्दित कर्म करते हुए उसे जान लिया कि यह कुलहीन वर है।

घत्ता—केवल धनसे रहित होकर पिता धरणीजट अपने पुत्रका समाचार सुनकर दारिद्र्यसे पीड़ित होकर वहीं आया ॥२५॥

२६

अपने पराभवसे डरे हुए (पोल खुलनेके भयसे) कपिलने नगरके लोगोंके बीच उनकी प्रशंसा की। उसने उनके चरण छुए और उसने जितना चाँगा, उतना सोना दिया। विकट कर्मके

५. A णराह सुहंकरु ।
२५. १. A दप्पे । २. AP सच्चवइ । ३. P सच्चसामि । ४. AP आर्यणिणिवि ।

कहइ जणणु पियवयणहिं तुद्ध
केतु तुहारउ होइ ण दियवर
तहिं सिरिसेणु राउ णरसिरमणि
वीय अण्णिये काई भण्णज्जइ
ताहं विहिं भि कंतिइ सुच्छाया
कुललंछणं धरियमज्जायहु

घन्ता—तेणें कविलु अवराण्णिव
कक्कसदंठे ताडिउ

महुं घरि दासीसुउ णिकिद्धुव ।
एवं भणेपिणु राउ सो णियघरु ।
पढम सीहणंदिय तहुं णणइणि ।
जाहि रइ वि दासि उव गण्णज्जइ ।
इंदउवदसेण सुय जाया ।
जंबूधूयइ साहिउं रायहु ।

जणि उंडालु व मण्णिव ॥
पुरचराउ णिद्धाडिउ ॥२६॥

१०

२७

सच्चभाम सह सुद्ध हवेपिणु
सदम अमियेणइ णामारिजय
सिरिसेणें आहारु पयच्छिव
उउदहमलपरिसुक्कु अकुच्छिव
भायणधरणाइयउ सुधम्मउ
उउहुं वि सुकयवीउ लइ लद्धं
संमरंगदलवट्टियपरवळु

थिय उवसमु हियउज्जइ लेपिणु ।
आइय भिक्खहिं चारण संजय ।
दिज्जंतउ धरिणीहिं समिच्छिव ।
रिसिहिं पाणिउसेण पडिच्छिव ।
सच्चयतणयइ किउ सुहकम्मउ ।
भोयभूमिपरमाउ णिवद्धं ।
कोसंवीणयरीसु महावळु ।

५

कारण उष्ण उच्छ्वासवाली बहने पूछा । उसके प्रिय वचनोंसे सन्तुष्ट होकर पिता कहता है कि यह मेरे धरमे नीच दासीपुत्र था । तुम्हारा पति ब्राह्मण नहीं है । ऐसा कहकर वह ब्राह्मण अपने घर चला गया । वहाँ नर-शिरोमणि श्रीविण राजा था । उसको पहली पत्नी सिंहनन्दिता थी । दूसरी पत्नी आनन्दिता थी, उसके विषयमें क्या कहा जाये ? उससे रति भी दासीके समान समझी जाती थी । उन दोनोंके कान्तिसे सुन्दर इन्द्रसेन और उपेन्द्रसेन नामके पुत्र हुए । जम्बूकी कन्याने मर्यादाको धारण करनेवाले राजासे कुलकलंककी बात कही ।

घन्ता—राजाने उसका अपमान किया, लोगोंने वह चण्डालकी तरह समझा गया । कठोर दण्डसे प्रताड़ित उसे उस प्रवरपुरसे निकाल दिया गया ॥२६॥

२७

सती सत्यभामा शुद्ध होकर अपने मनमें शान्तभाव धारण कर रहने लगी । संयमधारी अमितागति और अरिजय नामके दो चारण मुनि आहारके लिए आये । श्रीविण राजाने उन्हें आहार दिया, देते हुए उसका दोनों पत्नियोंने समर्थन किया, चौदह प्रकारके मलोंसे मुक्त और अकुत्सित उस आहारको मुनियोंने अपने हाथरूपी पात्रसे स्वीकार कर लिया । बरतन आदि रखनेका जो सुधर्म है, वह सुकर्म सत्यक ब्राह्मणकी कन्याने किया । उन चारोंने पुण्यरूपी बीजको प्राप्त किया और भोगभूमिकी परम-आयुका वन्ध कर लिया । कौशाम्बी नगरमें, जिसने युद्धके

२६. १. AP एम । २. P अण्णिये । ३. P साहियवं । ४. A तेण वि छळु ।

२७. १. AP सच्चभाव । २. AP लएपिणु । ३. A सद्धे but records a *p*: सवणि वा । ४. AP अमिययय । ५. AP समरणेण ।

सिरिमइदेविहि उयरुणणी
 दुच्चणनणपइसरियसल्लहु
 १० सनउं वहुल्लिखाइ गयगानिणि
 सांगंतनइ उदिइहु रची =
 वत्ता—णंदणवणि णिवसंतहिं
 कारणि ताहि अजुचउं

तं सिरिकंत णाम सुय दिण्णी ।
 सिरिसेणंगरुहु पुंरिमिल्लहु ।
 अवर पवर संपेसिय कामिणि ।
 मोहें नयरोहेण व मत्ती ।
 दोसु रोसु चित्तंविं ॥
 विहि मि जुञ्जु आहततं ॥२७॥

२८

थाइय पहरणपाणि ससंदण
 कह व णिबारहुं वे वि ण सच्छिउ
 रव्जु सणेहु सदेहु पनाइवि
 रायाणीयउं टेण जि मन्ने
 ५ रायवेइं महियलि णिव्हेप्पिणु
 वाइइसंदि पुव्वभायंतारि
 वत्तारि वि अज्जइं संजायइं
 जायउं णिअर पेन्नरुल्लिउं
 हुइं सुणिवरइणें णंदिय

सिरिसेणें अवलोइय णंदण ।
 णरवइं दुमिउ चित्ति चमच्छिउ ।
 विससेल्लिघरंघु अण्णाइवि ।
 द्वियधीय वि तं सिह णालगं ।
 मल्लियणयणइं तेथु मरोपिणु ।
 उत्तरकुहहि सुंभोयणिरंतारि ।
 इहवणुसहसपनाणियकायइं ।
 राउ सीहणंदिय निहणुल्लउं ।
 इंभणि भूमिणि पुरिसं अण्णियि ।

प्रांगणमें झट्टुइलका संहार किया है ऐसा नहावल नामका राजा था । उसके अपनी श्रोमती नामकी देवीके उदरसे उत्पन्न श्रीकान्ता नामकी पुत्री थी । दुर्जनके नयमें उल्य उत्पन्न करनेवाले श्रोपेणके पहले पुत्र इन्द्रकेनसे उसका विवाह कर दिया । उस बहूके साथ एक और गजगामिनी (अनन्तमति) स्त्री भेजी गयी । वह अनन्तमति उपेन्द्रकेनमें अनुरक्त हो गयी, मोहके कारण वह मदिरा समूहके सनान मद्रवाली हो उठी ।

वत्ता—नन्दनवनमें निवास करते हुए, दोष और क्रोधका विचार करते हुए उन दोनोंके बीच उसके कारण अयुक्त युद्ध प्रारम्भ हो गया ॥२७॥

२८

हाथमें हाथियार लेकर रथसहित दोनों भाई दौड़े । श्रोपेणने पुत्रोंको देखा, वह उन दोनोंको किसी भी प्रकार मत्ता नहीं कर सका । राजा नयमें दुःखी हुआ और आश्चर्यमें पड़ गया । राज्य, अपना शरीर और स्नेह छोड़कर तथा विषकमल पुष्यको गन्धको घूँघकर, रादिवां भी उसी भांगे, और उसी प्रकार ब्राह्मणकन्या भी नाकके अग्रभागसे (घूँघकर) भारी वेदनासे धरतीतलपर गिरकर और बन्द किये हुए नेत्रोंसे मरकर घातकीलण्डकी पूर्वदिशामें सुन्दर नौगोले निरन्तर उत्तर कुर्मं श्रेष्ठ जोग उत्पन्न हुए । उनके शरीरका प्रमाण छह हजार अनुप था । राजा श्रोपेण और सिहनन्दिताका जोड़ा उत्पन्न हुआ जो प्रेमसे रसमय और पूर्ण था । ब्राह्मणी सत्यनामा स्त्री हुई और रामी आनन्दिता पुरुष ।

६. AP पुच्छिल्लहु ।

२८. १. P सेल्ले^० । २. A रायाणियवड कि तेण जि । ३. A गरहण्य; P गरवे^० । ४. A मुल्लियणि-
 रंतारि । ५. A लोयउ णिअरपेण्णं । ६. AP राय । ७. A नाविणि । ८. AP पुरिउ ।

घत्ता—जुब्जंतहं दुग्वारहं दोहं मि रायकुमारहं ॥
अंतरि थिच विजाहरु णाह गिरिदहं जलहर ॥२८॥

२९

पभणइ जिणकमकमलेंदिदिह
किं पुणु पहरणेहिं पिहियक्कहिं
तं जिमुणिचि भणंति ते भायर
अक्खइ खेरुं दिग्वइ वायइ
मंदरपुग्वासइ सुहवासइ
तहिं रयथायलि दाहिणसेदिहि
खयर सुकुंडलि रंभसमाणी
मणिकुंडलि हं तहिं संभूय
प्रवरि पुंडरिक्किणि गठ तेत्तहि
पुच्छिड सो मइं णिययभवावलि
पुक्खरदीचि वरुणसुरसिहरिहि

जुब्जेवचं फुल्लहिं वि असुंदरु ।
सत्तिसेल्ललंगैलचलचक्कहि ।
के तुम्हइं पडिसेहकयायर ।
घाईसंडहु सुरदिसिभायइ ।
खलविरहियपुक्खलवइइेसइ ।
आइसाहणयरि गठ रुद्धिहि ।
अमियसेण णामें तहु राणी ।
अस्थु व सुकइक्कैहि जणपूयड ।
अमियप्पहु जिणपुंगसु जेतहि ।
कहइ भडारड समंयसमियकलि ।
पुग्वदिसहि ह्यसोयहि णयरिहि ।

घत्ता—रुवें णं मयरद्धउ
कणयमाल पीवरथणि

महिवइ तहिं चक्कईउ ॥
तहु वल्लह सीमंतिणि ॥२९॥

घत्ता—लडते हुए उन दोनो राजकुमारके बीच एक विद्याधर आकर स्थित हो गया ।
मानो पहाड़के बीच, आकर मेघ स्थित हो गया हो ॥२८॥

२९

जिनभगवान्के चरणकमलोंका भ्रमर वह विद्याधर कहता है कि फूलसे लड़ना भी चुरा
है । फिर सूर्यको आच्छादित कर देनेवाले शक्ति शील हल और चलचक्र अस्त्रोंसे लड़नेका तो क्या
कहना ? यह सुनकर उन दोनों भाइयोंने कहा कि मना करनेमे आदर रखनेवाले तुम कौन हो ?
तब विद्याधर दिव्यवाणीमे कहता है कि घातकीखण्डकी पूर्व दिशामे मन्दराचलकी शुभ पूर्व
दिशामे दृष्टीसे रहित पुष्कलावती देश है । वहाँ विजयार्थ पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमे आदित्य नगरके
नामसे प्रसिद्ध नगर है । उसमे सुकुण्डली नामका विद्याधर था और अमृतसेना नामकी रम्भाके
समान उसकी रानी थी । उससे उत्पन्न मे मणिकुण्डल हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सुकविकी
कथाके लोगोंके द्वारा संस्तुत अर्थ । वहाँसे मे विशाल पुण्डरीकिणी नगर गया कि जहाँपर अमृत-
प्रभ जिनश्रेष्ठ थे । मैंने उनसे अपनी भवावलि पूछी । सिद्धान्तके ज्ञानसे जिन्होंने पापको शान्त
कर दिया है ऐसे उन्होंने बताया, “पुष्कर द्वीपमे पश्चिम सुमेरुकी पूर्वदिशामे वीतशोक नामक
नगरमें ।

घत्ता—रूपमें कामदेवके समान चक्रवर्ज नामका राजा था । कनकमाला* नामकी उसकी
स्थूल स्तनोवाली प्रिय परनी थी ॥२९॥

२९. १. A जुब्जेवच । २. P सेल । ३. P वेयर । ४. A संडह । ५. A सुकइक्कैहि जणियड । ६. A
पवरपुंडरिक्किणि, P पवरपुंडरिक्किणि । ७. A समयसमिय । ८. P कणयद्धउ ।

* कनकमालिका ।

३०

कणयलया सररुहलय णामे
धीयत्त वेणिण तौहि मृगणेत्तत्त
विञ्जुमईदेविहि ह्यदुम्मइ
असियसेण कंतिथिहि णवेप्पिणु
५ सा गय सग्गहु आराईयहु
सुर जोएवि सुखेवें रंजिय
काले जंतें सुरलोयहु चुत्त
कणयलया जलरुहलय धीयत्त
इंदडविंदसेण पंकयमुह
१० सोक्खु असंखु सुहरु सुंजेप्पिणु
हूई कहिं मि महाबलकामिणि
घत्ता—जं जिणणाहें सिट्ठं
हत्तं आयत्त ओसारहुं

णियैकरभल्लि धित्त णं कामे ।
कयलीकंदलकोमलगत्तत्त ।
तासु जि रायहु सुय पोमावइ ।
कणयमाल सावयवत्त लेप्पिणु ।
भोयभारसंपीणियैजीवहु ।
पोमावइ हूई सुरलंजिय ।
कणयमालकुंडलि हत्तं हुत्त ।
वेणिण वि मरिवि सुक्कम्मविणीयत्त ।
जाया रयणत्तराहित्तणुरुह ।
सुरलंजिय सग्गात्त चएप्पिणु ।
दिण्ण विवाहि तुञ्जु गयगामिणि ।
त्तं पच्चक्खु वि दिट्ठं ॥
दोहिं मि तुञ्जु णिवारहुं ॥३०॥

३१

कासु वि फो वि ण किं किर तुञ्जुहु
हत्तं मायारि चिरु तुम्हत्तं तणयत्त

भवसंसरणु ण किं पि वि तुञ्जुहु ।
होत्तियात्त परिपालियपणयत्त ।

३०

उसकी कनकलता और पद्मलता नामकी सुन्दर कन्याएँ थीं, जो मानो कामदेवके द्वारा फेंकी गयी उसके हाथ की भल्लिकाएँ थीं । उसकी दोनों कन्याएँ मृगनयनी और कदली कन्दलके समान कोमल शरीरवाली थीं । उसी राजा (चक्रवर्ज) की विद्युत्मती देवीसे दुर्मतिको नाश करनेवाली पद्मावती नामकी देवी हुई । अमितसेना नामकी आर्थिकाको प्रणाम कर कनकमाला श्रावक व्रत लेकर जिसमे भोगोंके भारसे जीव प्रसन्न रहता है, ऐसे सौधर्म स्वर्गमे गयी । देवकी देखकर पद्मावती रूपसे रंजित हो गयी और वह स्वर्गमे दासी हुई । समय बीतनेपर स्वर्गलोचसे च्युत होकर मैं कनककण्डली देव हुई हूँ । कनकलता और पद्मलता अपने कर्मसे विनीत दोनों पुत्रियाँ मरकर कमलमुख इन्द्रसेन और उपेन्द्रसेनके नामसे रत्नपुरके राजाकी पुत्र हुई हैं । बहुत समय तक असंख्य सुखका भोग कर, वह देवदासी स्वर्गसे च्युत होकर कही अनन्तमती नामकी वेश्या हुई । और वह गजगामिनी तुम्हें विचाहमे दी गयी ।

घत्ता—जो कुछ जिननाथने कहा था, उसे मैंने आज यहाँ प्रत्यक्ष देख लिया । आज मैं तुम दोनोंको युद्धसे मना करने और अलग करने आया हूँ ॥३०॥

३१

कोई किसीसे कुछ भी युद्ध न करे, संहारके परिभ्रमणको क्या कुछ भी नहीं समझते । मैं

३०. १. A णियकरं । २. A तहो मियं; P ताहि मियं । ३. AP विञ्जमई । ४. AP जीयहु । ५. AP सुखेवें । ६. A चुएप्पिणु ।
३१. १. A पालियविणयत्त ।

देवत्तणु माणिवि णरजाया
तं गिमुणिवि कुमौर ह्यलम्भहु
गय भोक्खंहु णिवस्ववियरओहहुं
जो सिरिसेणु पुणु वि जो कुरुणरु
सिरिपहु सुरहरि णं ससहरपह
कुरुमणुयत्तणु माणिवि बहुमंहु
सुरु हूई पुणुं वंभणि वयसह

धत्ता—जो सिरिसेणु महाइव
सो एवहिं तुहुं जायव

किं पहरह उग्गामियघाया ।
तव चरेवि पयमूलि सुधम्महु ।
अट्टमहागुणविरइयसोहहु ।
पढमकप्पि सो जांच वरागरुं ।
हुय हरिणंदियज्ज विज्जुप्पेह ।
देवि अणंदिय दिवि विमलप्पहु ।
सच्चभामं तहु कंत ससिप्पह ।

कुरुणरु सुरु सग्गाइव ॥
अमियतेव खगरायव ॥३१॥

१०

३२

जा सा सइ पंचाणणणंदिय
पुणु हूई सिरिविज्जव वियाणहि
जा सा धुधु सुतार सस तेरी
कविलु सुइरु हिंडिवि संसारइ
पविचलअइरावयणइतीरइ
चवलवेयतवसिणियइ जणियव

सा जोइप्पह धरिणि अणंदिय ।
सोत्तिणि सच्चभाम अहिणाणहि ।
सुरणरविसहरदिययविचारी ।
भूयरेमणकाणणि भयगारइ ।
कोसियतावसमुत्तसरीरंइ ।
सो भयसिंणु णाम सुच भणियव ।

पूर्वजन्मकी प्रेमका परिपालन करनेवाली तुम्हारी माँ हैं। तुम देवत्वका भोग कर मनुष्य रूपमें जन्मे हो। घात उठाये हुए प्रहार क्यों करते हो?" यह सुनकर दोनों कुमार क्रोधका नाश करनेवाले सुधर्मा मुनिके चरणमूलमें तपका आचरण कर, जिसमें पापीके समूहका क्षय हो गया है और जिसमें आठ महागुणोंकी शोभा है ऐसे भोक्ष चले गये। जो श्रीवेण था और जो कुरुनर हुआ था वह प्रथम स्वर्गमें श्रेष्ठ देव हुआ—श्रीप्रभ नामक विमानमें श्रीप्रभ नामका। सिंहनन्दिता नामकी रानी उसी स्वर्गमें विद्युत्प्रभ देव हुई। कुरु भोगभूमिके सुखोको मानकर अत्यधिक तेजवाली देवी अनिन्दिता स्वर्गमें विमलप्रभ नामका देव हुई। व्रतोंको सहते हुए ब्राह्मणी सत्य-भामा शशिप्रभा (शुक्लप्रभा) नामकी उसकी देवी हुई।

धत्ता—जो आदरणीय श्रीवेण था, कुरुनर और देव, वह स्वर्गसे आकर इस समय तुम अमिततेज नामक विद्याधर राजा हुए हो ॥३१॥

३२

जो सती सिंहनन्दिता थी वह ज्योतिप्रभा नामकी तुम्हारी गृहिणी है। और जो अनिन्दिता थी वह श्रीविजय हुई, यह जानो। और जो सत्यभामा ब्राह्मणी थी, उसे तुम सुर, नर और विषधरोंका हृदय विदारित करनेवाली तुम्हारी बहन सुतारा निश्चित रूपसे पहचानो। वह पुराना कपिल संसारमें लम्बे समय तक परिभ्रमण कर भयंकर भूतरमण काननमें विशाल ऐरावती नदीके किनारे जिसके शरीरका भोग कौशिक तपस्वीने किया है, ऐसी चपलवेगा नामक

२. AP माणिवि । ३. A कुमारयलम्भहु । ४. P विज्जापह । ५. A बहुसुहु । ६. AP वंभणि पुणु ।

७. सच्चभाव ।

३२. १. AP सच्चभाव । २. P रमणि काणणि ।

तेषु तवर्ते कामबिलुद्धं
 जायत सुत आसुरियहि तरुणिहि
 पित्रे गियविज्जाविहवे मोहिवि
 १० पभणइ तिजगणाहु ण रुसिज्जइ
 गिसुणि गिसुणि किं बहुयइ वत्तइ
 घत्ता—धुँव पंचसु चक्रेसरु
 भरहि राय तुहुं होसहि

खयरु गिएवि गियाणु गिवद्धं ।
 असणिषोसु रत्तच चिरर्षेरणिहि ।
 गिय कंचणविमाणि आरोहिवि ।
 अमियतेय जीवहं खम किज्जइ ।
 णवमइ जम्मंतरि संपत्तइ ।
 इह सोलहसु जिणेसरु ॥
 पुप्फदंतसिरि लेसहि ॥३२॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वसरहाणुमणिण्ण
 महाकइपुप्फयंतविरहए महाकव्वे संतिगाहभवावलिचवणणं
 णाम सट्टिमो परिच्छेओ समत्तो ॥६०॥

तपस्विनीसे उत्पन्न हुआ मृगशृंग नामका पुत्र कहा गया । तप करते हुए उसने विद्याधरको देखकर कामसे लुब्ध निदान बाँधा । वह आपुरी नामकी स्त्रीसे उत्पन्न हुआ और अपनी पुरानी स्त्रीमें अनुरक्त हुआ । प्रिय श्रीविजयको अपनी विद्याके विभवसे मोहित कर और स्वर्णविमानमें चढ़ाकर उसे ले गया । त्रिजग स्वामी कहते हैं कि हे अमिततेज, क्रोध नहीं करना चाहिए । जीवोंको क्षमा करना चाहिए । सुनो-सुनो, बहुत कहनेसे क्या ? नौवाँ जन्मान्तर प्राप्त करनेपर—
 घत्ता—निश्चयसे तुम पाँचवें चक्रवर्ती और यहाँ सोलहवें तोषंकर होगे । तुम भरतक्षेत्रके राजा और मोक्षलक्ष्मी प्राप्त करोगे ॥३२॥

इस प्रकार त्रैलोक्य महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महासव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका शान्तिनाथ भवावलि वर्णन नामका साठवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥६०॥

३. P आसुरिहि । ४. AP विर परिणिहि । ५. A थिय गिय^०; P पिय मय^० । ६. P वुत्तइ ।
 ७. A छुव । ८. A रात्त ।

संधि ६१

सो असणिघोसु आसुरियसिरि देवि सुतार सयंपह वि ॥
पंठवइयइं गिहुंणिधि जिणवयणु जिणु पणवेप्पिणु तिजगरवि ॥ध्रुवकं॥

१

सिरिविजयकं	गिभयसंकं ।	
मारुयवेणं	अपसियतेणं ।	
वच च्छाल्लिच	पोसहु पाल्लिच ।	५
घरु वेणिण वि जण	गय ते सज्जण ।	
सुरकरिकरमुउ	रविकित्तीसुच ।	
णिरु णिरचज्जउ	साहइ विज्जउ ।	
उत्तमसत्ती	चलपणत्ती ।	
णहयलगामिणि	इच्छियरुविणि ।	१०
जलसिद्धिधंभेणि	वंधेणि रुंभणि ।	
अंधीकरणी	पहारावरणी ।	
विस्सपवेसिणि	अवि आवेसिणि ।	
अप्पडिगामिणि	विविहपलाविणि ।	
पासविमोयणि	ग्रहणीरोयणि ।	१५
वल्लंभिक्खेवणि	चंडपहावणि ।	

सन्धि ६१

वह अशनिघोष, आसुरीदेवी, सुतार और स्वयंप्रभा भी त्रिजग सूर्य जिनवरको प्रणाम कर और जिनवचनको सुनकर प्रन्नजित हो गये ।

१

शंकाओंसे दूर, वायुके समान वेग और अपरिमित तेजवाले श्रीविजयने व्रतका उद्यापन किया, प्रोषघोषवासका पालन किया । वे दोनों (श्रीविजय और अमिततेज) ही सज्जन घर गये । ऐरावतकी सूँडके समान हाथोवाला, अर्ककीतिका पुत्र अमिततेज अत्यन्त निरवद्य विद्याएँ सिद्ध करता है । उत्तम शक्ति, चलप्रज्ञप्ति, आकाशगामिनी, कामरूपिणी, जलस्तम्भिनी, अग्नि-स्तम्भिनी, बन्धिनो, रुंभनी, अन्धोकरिणी, पहारावरणी, विश्वप्रवेशिनी और आवेशिनी, अप्रतिगामिनी, विविधप्रलापिनी, पाशविमोचिनी, ग्रहनिरोधिनी, वल्लन्धिपिणी, चण्डप्रभाविनी,

१. १. AP पावइयइं । २. P जिणुणवि । ३. AP °थमिणि । ४. AP °णिंभणि । ५. A पहारावरणी ।
६. K records a p: चल इति पाठे चपला । ७. AP °पहाविणि ।

	पहरणि मोहणि	जर्मणि पाहणि ।
	अवर पहावइ	सइ पविरलगइ ।
	भीमावत्तणि	पवरपवत्तणि ।
२०	पुणु लहुकारिणि	भूमिविथारणि ।
	रोहिणि मणजव	देवि महाजव ।
	चंडाणिलजव ^{१०}	णिरु चंचलजव ।
	बहुलुप्पायणि	सत्तुणिवारिणि ।
	अक्खरसंकुल	खलगलसंखल ।
२५	मायाबहुइ ^{११}	पण्णलहुइ ।
	हिमवेयाली	सिहिवेयाली ।
	मोक्कलवाली	चलचंडाली ।
	अलिसामंगी	सिरिमायंगी ।
	इय वरविज्जहिं	णहयरपुज्जहिं ।
३०	उहसेढीसरु	हुउ परमेसरु ।
	अण्णहि वासरि	तेण ^{१३} सणेसरि ।
	दमवरणामहु	णिज्जियकामहु ।
	पुण्णुप्पायणु	दिण्णउ भोयणु ।

घत्ता—ते चारणदिण्णे भोयणेण^{१२} ईह रत्ति जि संभवित फलु ॥

३५

सुररखु दुंदुहिसरु वसुवरिसु मेहहि वुडुव सुरेहिल्लु ॥१॥

प्रहरिणी, मोहिनी, जम्भनी, पातनी और प्रभावती, प्रविरलगति, भीमावर्तनी, प्रबलप्रवर्तनी, फिर लघुकारिणी, भूमिविदारिणी, रोहिणी मनोवेगा, चण्डवेगा, अग्निवेगा, बहुलोपिनी, पात्रुनिवारिणी, अक्षरसंकुला, दुष्टगलसंखला, मायाबहुनी, पण्णलज्वी, हिमवेताली, शिखीवेताली, मुक्त आलापिनी, चलचाण्डाली और भ्रमर-श्यामांगी, इस प्रकार विद्याधरोंके द्वारा पूजित इन वर विद्याओंके द्वारा वह दोनों श्रेणियोंका परमेश्वर हो गया। आदित्य सहित दूसरे दिन (रविवारके दिन) उसने कामको जीतनेवाले दमवर मुनिको पुण्यको उत्पन्न करनेवाला भोजन दिया।

घत्ता—उन चारण मुनिको दिये गये भोजनसे इसी जन्ममे फल प्राप्त हुआ। देवध्वनि, दुन्दुभिस्वर, घनवृष्टि और मेघोंके द्वारा सुरभित जलकी वर्षा ॥१॥

८. A मंडणि पाहणि; P बंधणि पाहणि । ९. AP °विवारिणि । १०. A चंडालिनिजव । ११. मायाबहुइ; K मायबहुइ but corrects it to माया^{१०} । १२. P पण्णल लहुइ । १३. A तेण परेसरि । १४. A इह रत्त जि । १५. A वुडु जलु ।

२

अमरगुरुदेवैश्वरु	णामौण सावसर ।	
हयमोहवासन्मि	साहूण पासन्मि ।	
तर्हि अमियतेण	सिरिविजयराएण ।	
णियतायजम्माइं	वणहरणकम्माइं ।	
सिलखंभदलणाइं	दाइल्लमलणाइं ।	५
तवचरणकरणाइं	सणियाणमरणाइं ।	
सुरलोचवासाइं	णरभवविलासाइं ।	
पड्विक्खमहणाइं	हरिगीवणिहणाइं ।	
सिरिरमणिरमणाइं	कयणरयगमणाइं ।	
जसँकत्तिफुरणाइं	असुरारिचरियाइं ।	१०
रिसिणाहकहियाइं	सोळण गहियाइं ।	
दोहिं पि सुवथाइं	अमयाइं सुदेथाइं ।	
सिरिविजउ तण्हंतु	मणि महइ कण्हंतु ।	
पुणु कालमाणेण	परिवैट्टमाणेण ।	
विडलमइ विमलमइ	णँमिळण परमजइ ।	१५
णाळण मासाउ	मोत्तूण मासाउ ।	
रचितेय सिरियत्त	राइवदलणेत्त ।	
णियणियतणुब्भूय	कंदप्पसमरूय ।	
दोण्हं पि ण्हविळण	कुलमगि थविळण ।	

२

किसी एक दिन अवसर पाकर अमरगुरु और देवगुरु नामके मुनियोंके मोहपाशका नाश करनेवाले सामीप्यमे उन अमिततेज और श्रीविजयने अपने पिताके जन्मों, वनहरण कर्मों (शिलाखम्बको चूर्ण करना, शत्रुओका मानमर्दन करना, तपश्चरण करना, निदानपूर्वक मरना, सुरलोकमें निवास करना, मनुष्यभवके विलास, प्रतिपक्षोंका मथन, अश्वघोषका निषन, श्रीरमणीसे रमण, नरकके लिए गमन करना, यश और कान्तिका स्फुरण, असुर शत्रुके चरित) मुनिनाथके द्वारा कथनको सुनकर सुन्नतो और अमित दयाओंको ग्रहण कर लिया । तृष्णासे आकुल श्रीविजय मनमे कृष्णत्व (नारायणत्व) को महत्त्व देता है । विमलमति और विपुलमति परममुनियोंको नमस्कार कर, अपनी आयु एक माहकी जानकर, लक्ष्मीका आस्वाद (भोग) छोड़कर, कमलदलके नेत्रोवाले रवितेज और श्रीदत्त नामक अपने कामदेवके समान अपने-अपने पुत्रोंका अभिषेक कर,

- २ १. A दिव्वगुह । २. A णामेण । ३. P adds after this जसकत्तिपुरियाइ, असुरारिचरियाइ, which in our text is line 10 below । ४. A जसकत्तिफुरियाइं । ५. A सदयाइं; A adds after this: मवभावल्लमियाइं; K also writes it but scores it off. । ६. A पणिवुद्धमाणेण; P परिवहद्धमाणेण । ७. AP णविळण । ८. AP दोहिं पि । ९. A णविळण ।

चन्दणवणंतम्मि
णिम्मुककम्मम्मि

णंदणमुणी जम्मि ।
पईसरिवि लहु तम्मि ।

२०

घत्ता—अहिसिचिवि पुज्जिवि परमज्जिणु वंदिवि भत्तिसैमैग्घविचं ॥
आहारु सरीरु वि परिहरिवि विहिं मि परत्तु जि चित्तविचं ॥२॥

३

जं णियपरपेसणसुणिरवैक्खु
जं घोरसरायकसायसमणु
तेरहमइ कपि मणोहिरामि
हुच अमियतेव रविचूलु देव
५ मणिचूलु णामु सिरिविजउ तेत्थु
को वण्णइ ताहं महापहाउ
कालेण जंलुदीवंतरालि
वच्छावइदेसि पहायरीहि
णीसेसकलालउ मणुययंदु
१० तहु देविहि देव वसुंधरीहि
आवेप्पिणु णंदावत्तणाहु

जं णिण्णासियभवबंधुक्खु ।
तं कयउं तेहिं पाओवंमरणु ।
सुरणंदिय णंदावत्तधामि ।
सत्थिउ णामे अवरु वि णिकेउ ।
सुरवरु जायउ लक्खणपसत्थु ।
ते वे वि वीससायरसमाव ।
इह पुण्वविदेह रमाचिसालि ।
णयरिहि वणकीलियकिणरीहि ।
णामेण थिमियसायर णरिंदु ।
रविचूलु गग्भि थिउ सुंदरीहि ।
अवराइउ हुच थिरथोरवाहु ।

कुलमार्गमें (राजगद्दी) पर स्थापित कर, जिस चन्दनवनमें नन्दनमुनि थे उसमें प्रवेश कर, निर्मुक्तकर्म उसके पास शीघ्र—

घत्ता—भक्तिसे प्राप्य जिन भगवान्का अभिषेक, पूजा और वन्दना कर, आहार और शरीरका त्याग कर दोनों परत्व (श्रेष्ठ तत्त्व) का चिन्तन किया ॥२॥

३

जो अपने पराये प्रयोजनसे निरपेक्ष है, जिसने संसारके बन्ध और दुःखका नाश कर दिया है, जिसमें घोर कषायका शमन है, उन्होंने ऐसा प्रायोपमरण किया। सुन्दर तीरहों स्वर्गमें, देवोंके द्वारा आनन्दित नन्दावर्त विमानमें अमिततेज रविचूलदेव हुआ। वहाँ एक और स्वस्तिक नामक विमान था, श्रीविजय उसमें लक्षणसे प्रशस्त मणिचूल देव हुआ। उनके प्रभावका वर्णन कौन कर सकता है। वे दोनों वीस सागरकी आयुवाले थे। समय होनेपर जम्बूद्वीपके लक्ष्मीसे विशाल पूर्व विदेहमें वत्सकावती देशकी जिसके वनमें किन्नरियां क्रीड़ा करती हैं, नगरीमें मनुष्य-श्रेष्ठ समस्त कलाओंका घर स्तमितसागर नामका राजा था। उसकी देवी सुन्दरी वसुन्धराके गर्भमें वह देव आकर स्थित हो गया। नन्दावर्त विमानका वह स्वामी अपराजित नामसे स्थिर और स्थूल बाँहोवाला पुत्र हुआ।

१०. पहसरवि । ११. P समुग्घविच ।

३. १. A पावोगमरणु; P पाओवमरणु । २. A पहावरीहि । ३. अमियसायर; P तिमियसायर ।

धत्ता—मणिचूँलु वि सस्थियसुरैहरहु णिवडिदि हुड अणुमइत्तणउ ॥
सो सुहउ सोम्म सुल्लंखणउ वण्णे जियणीलंजणउ ॥३॥

४

परदुज्ज कसउ मणि गणेवि
पढमहु विरएपिणु पट्टवंधु
सिंहासणु छत्तइ परिहरेवि
अरहंतहु अबिचितियपहासु
अवलोइवि कत्थइ णायराउ
पुरि सुहुं वसंति ते वे वि भाइ
णञ्चंति ताउ ते तहिं णियंति
आयउ णारउ दिग्गयजसेहिं

कोकिउ अणंतवीरिउ भणेवि ।
लहुयहु ढोइवि जुवरायचिंधु ।
णिम्मोहभावभावणउ लेवि ।
पिउ सरणु पइदुठु सयंपहासु ।
सिरितणइइ मरिंवि फणिट्टु जाउ ।
णडि बन्वरि अण्णेक वि चिलाइ ।
जा ताम हारहिमहासकंति ।
संमाणउ णउ रसपरवसेहिं ।

५

धत्ता—मणि रोसु हुयासणु पज्जलिउ सहहुं ण सकिउ चँलियगहि ॥
सो जंतु ण केण वि दिदुठु तहिं पवणु चड्डुलु उल्ललिउ णहि ॥४॥ १०

५

गउ रुसिवि सिवमंदिरपुरासु
वज्जरिउ तेण रयणाइं कासु
वन्वरिचिलाइणामालियाउ

दभियारिहि विज्जाहरणिवासु ।
पइं मेल्लिवि को महियलि महीसु ।
णञ्चणिउ दोगिण वरवालियाउ ।

धत्ता—मणिचूँलु देव भी स्वस्तिक विमानसे च्युत होकर अनुमतिका पुत्र हुआ । वह सुभग
सौम्य सुलक्षण रंगमे नील और अजन पर्वतको जीतनेवाला था ॥३॥

४

मनमें बलमद्रको शत्रुओंके द्वारा अजेय समझकर उसे अनन्तवीर्य कहकर पुकारा गया ।
पहलेको पट्ट बांधकर और छोटेको युवराजके चित्त देकर सिंहासन और छत्र छोड़कर निर्मोह
भावनाका चिन्तन करते हुए वह अचिन्तनीय प्रभाववाले स्वयंप्रभ अरहन्त की शरणमे गया ।
कहीपर नागराजको देखकर लक्ष्मीकी कामनासे मरकर वह धरणेन्द्र हुआ । वे दोनों भाई उस
नगरीमे सुखपूर्वक रहने लगे । उनकी बर्बरी और किलाती नामकी दो नर्तकियां थीं । जब वे दोनों
नाच रही थीं और वे दोनों देख रहे थे तभी हार हिम और हास्यके समान कान्तिवाले श्री नारद
मुनि आये । दिग्गजोंके समान यशवाले रसके वशीभूत (नाट्यरस) उन दोनोंके द्वारा उनका
सम्मान नहीं किया गया ।

धत्ता—उनके मनमें क्रोधकी ज्वाला भड़क उठी । वे उसे सहन नहीं कर सके, आकाशमे
जाते हुए उन्हें कोई नहीं देख सका । पवनकी तरह चंचल वे आकाशमें उछल गये ॥४॥

५

वह रुठकर दमितारि राजाके निवास शिवमन्दिरपुर गये । उन्होंने वहाँ कहा, “रत्न
किसके पास हैं, आपको छोड़कर धरतीपर और कौन राजा है ? बर्बरी और किलात नामकी दो

४. A मणिचूँलु । ५. A^० सुरवरहु णिवडिदि ताहि जि हुड तणउ । ६. A सल्लंखणउ ।

४. १. AP सीहासणु । २. A चलियगहि ।

५ पहायरिपुरि अवराइयहु गोहि
वेणिण वि थणमारं भग्गियाउ
पट्टवहि मंति आणवहि तुरिउं
अवलोइय मंतिरुहंत संत
गय ते वि पुरिहि पहायरीहि
१० लइ तेहिं ताहं उवइट्टु कब्जु
तो णियणडिजुयलउं देहु ताम
ता पोसहणियमालंकिएण

णं विज्जुलियउ अच्छंति मेहि ।
लइ णरवइ तुब्भु जि जोग्गियाउ ।
राएण वि तं णियचित्ति धरिउं ।
सहसा संपेसिय वुद्धिवंत ।
जे वल्लइ तणय वसुंधरीहि ।
जइ इच्छइ संपयविउलु रज्जु ।
दसियारिदेउ रूसइ ण जाम ।
जिणपायपोमसेवापिएण ।

धत्ता—जिणभवैणथिएण णराहिविण अवराइइण समंतियणु ।

आउच्छिउ दिज्जउ तियजुयलु किं किज्जउ सह तेण रणु ॥५॥

६

तं णिसुणिवि मंति भणंति एम्भ
णारीदाणेण व होइ मल्लिणु
थिउ चिंताउरु णरणहु जाम
सव्वउ पणत्तिपहूइयाउ

खयराहिउ दुज्जउ समरि देव ।
तं णिसुणिवि मउलियणयणवयणु ।
चिरंभवविज्जउ पत्ताउ ताम ।
रिउवहु चवंति वसिहुइयाउ ।

सुन्दर नर्तकी बालाएँ प्रभाकरी नगरीके राजा अपराजितके घरमें इस प्रकार हैं, मानो मेघोंमें बिजलियाँ हों । वे दोनों ही स्तनभारसे भग्न हैं । हे राजा, तुम ले लो, वे दोनों तुम्हारे योग्य हैं । मन्त्री भेज दो, वह शीघ्र ले आये ।” राजाने भी इस बातको अपने मनमें ठान लिया । उसने अपने विद्वान् मन्त्रणामें महान् मन्त्रियोंकी ओर देखा और बुद्धिमान् मन्त्रियोंको भेजा । वे भी उस प्रभाकरी नगरीके लिये गये, जो वसुन्धरा (धरती) के लिए प्रिय थी । शीघ्र ही उन्होंने उससे अपना काम कहा कि यदि तुम सम्पत्तिसे विपुल राज्य चाहते हो तो अपनी दोनों नर्तकियाँ दो, कि जिससे हे देव, राजा दमितारि नाराज न हो । तब प्रीषवोपवासके नियमसे अलंकृत तथा जिसे जिनवरके चरणकमलोंकी सेवा प्रिय है ऐसे उस—

धत्ता—जिनमन्दिरमें स्थित राजा अपराजितने अपने मन्त्रीगणसे पूछा—“उसे नर्तकीयुगल दे दिया जाये या युद्ध किया जाये ?” ॥५॥

६

यह सुनकर मन्त्रियोंने इस प्रकार कहा—“हे देव, विद्याधर राजा युद्धमें दुर्जय है, लेकिन नारीदानसे भी कलंक लगेगा ?” यह सुनकर अपना मुख और आँखे बन्द करके राजा जब चिन्तासे व्याकुल बैठ था, तब उसे पूर्व भवकी अर्जित विद्याएँ प्राप्त हुई । प्रज्ञसि प्रभृति सभी

५. १. AP जोगियाउ । २. AP बालोइय । ३. A संतमहंत । ४. A जे पियसुम वसुहवसुंधरीहि; P जे पियसुहवसहि वसुधरीहि । ५. AP भवणि थिएण । ६. P तियजमलु ।

६. १. AP वि । २. AP मउलियवयणलणु । ३. AP चिरमव । ४. AP add after this: जयंति णवंति सहइयाउ, चिर सामिहि दासत्तणु गयाउ, को पहणहु को आणहु वरेवि ।

वयणेण तेण संतुट्ट वे वि
गय सिवमंदिरु वित्थारएण
दरिसिच रायहु पडिहारएण
दूणेण कहिच तं एउ राय
अवराइएण लइ दिण्णु तुब्बु

भायर णियमंतिहि रज्जु देवि ।
कवडं णडिवेसायारएण ।
जं संजुत्तचं सिंगारएण ।
को सहइ तुहारा विसमघाय ।
कामिणिज्जुयलुल्लं खीणमब्बु ।

५

घत्ता—ता कडयमउडमणिकुंडलहिं कंचीदामहिं भूसियच ॥

१०

दमियारे मायामाणिणित सुइसुमहुरु संभासियच ॥६॥

७

करणंगहारवहरसविसट्टु
वीणाहुणि घणथण मच्चखाम
अपिय ताए मायाविणीहिं
णच्चंतिहि तंहि पुणु कामवेसु
कण्णाइ भणिलं को सो अणितु
कित्तिमरुवाजीवाइ वुत्तु
परमेसरु पहयरिपुरिणिवासु
उवमिज्जइ सो सुवणयलि कासु
सा भणइ मोरकेधारवाइ

वीयइ दिणि अवलोएवि णट्टु ।
अट्टुइय धीय कणयसिरिणाम ।
णाडुं सिक्खाविय भाविणीहिं ।
गाइउ अणंतवीरिउ णरेसु ।
किं किणरु किं सुंरु किं फणितु ।
सो कुमरु थिमियेसायरहु पुत्तु ।
अवराइउ भायरु होइ जासु ।
ता कण्णाहि लग्गव कामपासु ।
तहु दंसणु लब्भइ केमं माइ ।

५

वसोभूत विद्याएँ शत्रुवधकी बात कहती हैं। इस वचनसे वे दोनों भाई सन्तुष्ट हुए और अपने मन्त्रियोंको राज्य देकर, कपटसे नर्तकियोंके आकारको बनाकर वे दोनों विस्तारसे शिवमन्दिर नगर गये। प्रतिहारोंने उन्हे राजा दमितारिको दिखाया। शृंगारक दूतने जो उपयुक्त था वह कहा कि हे राजन्, तुम्हारा विषम आघात कौन सहन कर सकता है। लो अपराजितने तुम्हे क्षीण मध्यभागवाली दोनों नर्तकियाँ दे दीं।

घत्ता—तब कटक मुकुट और मणिकुण्डलो तथा कांची दामोसे विभूषित मायाविनी नर्तकियोंसे दमितारिने मधुर वार्तालाप किया ॥६॥

७

दूसरे दिन करणों, अंगहारो तथा अनेक रसोसे विशिष्ट नृत्यको देखकर फिर अपनी वीणाके समान ध्वनिवाली मध्यक्षीणा और सघन स्तनोंकी अद्वितीय कनकश्री नामकी कन्या उन्हें सौंप दी। उन स्त्रियोने उसे नाटक सिखाया। उसके नाचते हुए कामरूप अनन्तवीर्य राजा (गीतमें) गाया गया। कन्याने पूछा—यह कौन राजा है—क्या किन्नर है, क्या देव है या नागेन्द्र? वेद्याका कृत्रिम रूप बनानेवाली उन्हींने कहा कि वह स्तिमितसागर राजाका पुत्र है, शत्रुपुरीके निवासोंको आहत करनेवाला परमेश्वर अपराजित जिसका भाई है। धरतीतलपर उसकी उपमा किससे दी जा सकती है। यह सुनकर कन्या कामबाणसे आहत हो गयी। मयूरकी केका बाणीसे वह

५ AP add after this . परिमिय (P परमिय) जणेहि णोसरिय वे वि । ६. AP दूयएण ।

७. ? A तंहि वाय वीय । २. AP पुणु तंहि । ३. A णव । ४. तिम्मि । ५. AP कण्हइ ।

६ P कि ण माइ ।

- १० दूखहविरहगिग्लुलकभीरु दक्खालहि जाम ण जाइ जीव ।
 घत्ता—ता कवडणडित्तणु अवहरिवि थिच हरि पायडु तणु करिवि ॥
 जोयंति तरुणि णं सिमुहरिणि विद्धी मयणं हुंकरिवि ॥७॥

८

- मणि खुत्तु कुमारिहि कामबाणु
 णिय सुंदरि तायहु कहिय वत्त
 पेसिय मंडलिय अणयमेय
 ते जित्त घित्त रणराइएण
 ५ सयमेव पत्तु ता चावपाणि
 किर वेणिण वि सर संधंति जाव
 जुब्झिय वेणिण वि बहुपहरणेहि
 पच्छइ पुणु कित्तिहरहु सुएण
 तं लेप्पिणु हरिणा तहु जि दिण्णु
 १० रिच मारिवि किर चल्लंति जाम
 घत्ता—ता पेक्खंतहि सयलस दिसस समवसरणु अवलोइं ॥
 हरिवलहि विहि मि विभिचयवसहि णियविज्जामुहुं जोइं ॥८॥

बोली, “हे आदरणीय, उसके दर्शन कैसे हो सकते हैं, उसे दिखा दीजिए कि जबतक अथवा विरहाग्निकी ज्वालासे भीत भेरा जीव नहीं जाता।”

घत्ता—तब नारायण अनन्तवीर्य अपना कृत्रिम नटत्व छोड़कर तथा प्राकृत शरीर धारण कर स्थित हो गये। उसे देखकर वह तरुणी हुं करके कामसे इस प्रकार विद्ध हो गयी मानो तरुण हरिणी विद्ध हो गयी हो ॥७॥

८

कुमारीके मनमे कामबाण लग गया। ध्वजोंसे चंचल विमानमे बैठकर कुमारी सुन्दरी ले जायी गयी। पिताको यह समाचार दिया गया। उसने युद्धयात्रा प्रारम्भ की। उसने अनेक प्रकारके माण्डलीक तथा सूर्य-चन्द्रके समान तेजवाले देव विद्याधर भेजे। उन्हें जीतकर युद्ध-शोभी बलभद्र अपराजित और नारायण अनन्तवीर्यने भगा दिया। तब वह अभिमानी दानी हाथमें धनुष लेकर स्वयं ‘मारो-मारो’ कहता हुआ पहुँचा। जबतक वे दोनों अपने सरोका सन्धान करें तबतक दानवोंका शत्रु दमितारि बीचमे आ गया। वे नारायण और प्रतिनारायण सघन प्रचुर शस्त्रोंसे लड़े। परन्तु बादमे कीर्तिधरके पुत्र कठोर भुजाओंवाले दमितारिने चक्र फेंका। उसे झेलकर नारायण अनन्तवीर्यने उसीपर चला दिया। जिससे रक्त गिर रहा है, ऐसा उसका वक्षःस्थल भिन्न हो गया। शत्रुको मारकर जैसे ही वे दोनों चलते हैं, एक पग भी उनका विमान नहीं चल पाता।

घत्ता—तब सब दिशाओंमे देखते हुए उन्होने समवसरण देखा। विस्मयके वशीभूत होकर नारायण और प्रतिनारायण अपनी विद्याओंके मुख देखने लगे ॥८॥

८. १. AP विवाणु । २. AP हरिणा । ३. A अहिमाणुदाणि; P अहिमाणुवाणि । ४. A पिग्गंतरुहिस ।
 ५. AP पयमेत्तु विवाणु ण चलह ताम । ६. AP विमयं ।

९

सा भणइ महापहु विजयकंठु
तहु तणउ तणउ कित्तिहर राउ
संतियरहु सीसु सुएवि राउ
अच्छइ भो केवलि जाहु एहु
ता सवइ भवइ तहि गयाई
लायणवण्णणिज्जियसिरीइ
भणु देवदेव णियजणमरणु
तं सुणिवि कइइ समसत्तुमित्तु

होंतउ सिवमंदिरि कणयपुंखु ।
एयहु दमियारिहि होइ ताउ ।
थिउ वरिसमेत्तु परिसुक्ककाउ ।
भत्तिइ बंधुं वोसट्टवेहु ।
वंदेप्पिणु परमप्पयपयाइं ।
आउच्छिउ चामीयरसिरीइ ।
सइं विट्टुव किं सुहिसोयकरणु ।
भुवणत्तयणवराहवमित्तु ।

५

घत्ता—इह दीवि भरहि संखरवरि वणि देविलु चकलथणिय ॥
बंधुसिरि धरिणि गुणगणणिलय सुय सिरिदत्त ताइ जणिय ॥९॥ १०

१०

पुणु कुंठि पंगु अण्णेक दीण
अण्णेक बहिर णउ सुणइ वाय
अण्णेक एकलोयणिय जाय
लहुवहिणिउ करुणं तोसियाउ
वणि संखमहीहरि सीलवाहु

णिज्जक्खण हई हत्थहीण ।
खुब्जी अण्णेक विसुक्कणाय ।
पिउ सुउ कालं गय सरिवि माय ।
छै वि एयउ पइं धरि पोसियाउ ।
अबलोइउ सवजसंकु साहु ।

५

९

तब विजया कहती है कि शिवमन्दिर नगरकी विजयका अभिलाषी राजा महाप्रभु कनक-पुंख था। उसका पुत्र कीर्तिधर राजा है, इस दमितारिका वह पिता है। यह राज्य छोड़कर शान्तिकर मुनिके शिष्य होकर, एक वर्ष तक कायोत्सर्गसे स्थित रहे हैं। अरे कायोत्सर्गसे स्थित वह केवली हैं। जाओ और भक्तसे इनकी वन्दना करो। तब सब भव्य वहाँ गये। परमात्माके चरणोंकी वन्दना कर सौन्दर्य और रूपमे लक्ष्मीको पराजित करनेवाली स्वर्णश्रीने पूछा—“हे देव-देव बताइए, मैंने सुधीजनोंके शोकका कारण अपने पिताका मरण क्यों देखा।” यह सुनकर शत्रु-मित्रमे समान भाव रखनेवाले बोले—

घत्ता—इस द्वीपके भरत क्षेत्रमे शंखपुर नगरमें देविल नामका वणिक् था। उसकी गोल स्तनोवाली बन्धुश्री नामकी पत्नी थी। उसने गुणसमूहकी घर श्रौदत्ता नामकी कन्याको जन्म दिया ॥९॥॥

१०

फिर बौनी लंगड़ी एक और दोन लक्षणशून्य और हाथसे हीन हुई। एक और बहरी थी, जो बात नहीं सुनती थी। एक और कान्तिसे रहित, बात नहीं सुनती थी। एक दूसरी एक आँखवाली कन्या बदनम हई। पिता मर गया और समय आनेपर माता भी मरकर चली गयी। कष्टासे परिपूर्ण होकर तुमने इन छोटे कन्याओका घरपर पालन-पोषण किया। वनमे शंखपर्वत-

९. १. AP दमियारिहि । २. AP केवलि भो । ३. AP भणइ । ४. A मरह ।

१० १. A कुट्ट; P कुट्टि । २. AP सच्छवि । ३. A सच्चजसंक ।

पालिय अहिंस बयणेण तासु
दिण्णसं सुव्वयखंतियहि दाणु
सम्मत्ताभावे कयड बालि
सोहम्मसग्गि सामण्णदेवि
१० हूई दमियारिहि तणिय पुत्ति
घत्ता—तं वयंणीवमणविणिंणहु फलु पइं सुइ अणुहुंजियसं ॥
हियउल्लसं जणणहु रणि वडिड दिड्डसं रुहिरं मंडियसं ॥१०॥

११

तं णिसुणिवि हरि बल णियघरासु
गोविंदतणउ कइकामधेणु
रिउसुय तं तहु पइसहुं ण देति
कंचणसिरियहि संरभगाढ
५ आवेप्पिणु चवलाउहकरेहिं
सोयगिंग दहुहु सरीररुक्खु
बलकेसव पत्थिवि गय कुमारि
सुप्पहहि पासि थिय संजमेण
गय कण्ण लेवि पहयैरिपुरासु ।
सिवमंदिरु गयउ अणतसेणु ।
करवालहिं सुलहिं उत्थरंति ।
भायर सुषोस वर विज्जदाढ ।
ते वे वि णिहय हरिहलहरेहिं ।
असहंति सबंधवपलयदुक्खु ।
जिणु णविवि सयंपहु णाणघारि ।
गणणिहि संतिहि कहियं कमेण ।

पर शीलबाहु और सर्वजशांक साधुके दर्शन किये । उनके उपदेशसे उसने अहिंसा धर्मका पालन किया । तथा एक और धर्मचक्र उपवास किया । सुन्नता नामक आर्थिकाको दान दिया । उसने आहारको वमन कर दिया (लेकिन) सम्यक्त्वके अभावमें (आर्थिकाके द्वारा) आहारवमनको उस बालाने घृणाका स्थान माना । जन मोहके कारण जन्मजालमे पड़ते हैं । सौधर्म स्वर्गमे सामान्य देवी होकर, वहांसे मरकर मनुष्य शरीर धारण कर वह दमितारिकी पुत्री हुई और इसलिए पिताके विनाशके कारण दुःख प्रवृत्ति उसने देखी ।

घत्ता—उस आर्या सुन्नताके वमनकी निन्दाका फल उसने भोगा । और युद्धमे मारे गये अपने पिताको रकसे सना हुआ देखा ॥१०॥

११

यह सुनकर बलभद्र और नारायण कन्याको लेकर अपने घर प्रभाकरीपुरीके लिए चले गये । गोविन्दपुत्र, कंवियोंके लिए कामधेनु अनन्तसेन शिवमन्दिरके लिए गया । लेकिन शत्रुपुत्रों (सुधोष और विद्धुदंष्ट्र) ने उसे नगरमें प्रवेश नहीं करने दिया । वे तलवारों और शूलको लेकर उल्ल पड़े । हिंसाके संकल्पसे दूढ़ वे दोनों कनकश्रीके श्रेष्ठ भाई थे । तब अपने हाथोंमें चंचल आयुध लिये हुए उन दोनों (बलभद्र और नारायण) ने उन दोनोंको मार डाला । उस (कनकश्री) का शरीररूपी वृक्ष शोककी आगसे जलकर खाक हो गया । सम्बन्धियोंके विनाशका दुःख नहीं सह सकनेके कारण बलभद्र और नारायणसे प्रार्थना कर (अनुमति लेकर) कनकश्री ज्ञानधारी स्वयंप्रभ मुनिको प्रणाम कर उपदिष्ट क्रम और संयमके साथ शान्त सुप्रभा आर्थिकाके

४. K घम्मु । ५. AP विजिगिळ° । ६. A तं वइणीव°; P तं वइणीव° । ७. AP अणुहुंजियं ।

८. AP रंजियसं ।

११. १. AP पहयैरपुरासु ।

सोहन्मि अमरु हूई भरैवि एत्तहि महि चक्कें वसि करैवि ।
 खग माणव दाणव जिणिवि सँमरि णारायण सीरि पइइ गयरि । १०
 घत्ता—बलएवें विजयासुंदरिहि हूई सुय णामें सुमइ ॥
 कंकेल्लिपल्लवारत्तकर पाडलपिल्लयमंदगइ ॥११॥

१२

णियमियदुइममणवारणासु घर आयव दमवरचारणासु ।
 संपुण्णु अण्णु दिण्णसं समिद्धुं पंचच्छेरउ पत्ती पसिद्धुं ।
 द्विट्ठी पिण्णा सुय दिण्णदाण णवजोवण रुवें सोइमाण ।
 संण्हियसयंवरमंडवन्ति देसंतरायणररायकंति ।
 जोवइ घर जा किर रहवरत्थ तावच्छर चवइ वरंवरत्थ । ५
 हलि दिल्लिदिल्लिए ण भरैहि काइं पइं मइं मि सग्गि भणियाइं जाइं ।
 जा पुव्वमेव ण लहइ णिजम्मुं सा इयरहि अक्खइ परमधम्मु ।
 सुणि विहिं मि भवंतरु कहमि माइ पुक्खरवरद्धपुण्विज्जमाइ ।
 भरइ गंदवरइ णं सुरिंदु णामेण अमियविक्रमु णरिंदु ।
 तहु अत्थि अणंतमइ त्ति भज्ज वरकइविज्जा इव जणमणोज्ज । १०
 धणसिरि अणंतसिरि तहि सुयाव हं तुहुं जेण्ण वि सुल्लियमुयाव ।

पास स्थित हो गयी। भरकर वह सौधर्म स्वर्गमें उत्पन्न हुई। यहाँ धरतीको चक्रमें जोतकर तथा विद्याघर, मनुष्य और दानवोंको युद्धमें जीतकर बलभद्र और नारायण नगरमें प्रविष्ट हुए।

घत्ता—बलभद्र और विजयासुन्दरीसे सुमती नामकी सुन्दरी हुई। अशोक पल्लवोंके समान आरक हाथोवाली और बालहंसके समान गतिवाली ॥११॥

१२

जिन्होंने मन्वन्तरी युद्धमें राजको वधमें कर लिया है ऐसे घर आये हुए दमवर चारण मुनिको उसने सम्पूर्ण और समृद्ध आहार दिया। वहाँ पांच आश्चर्य प्राप्त हुए। दान देनेवाली कन्याको पिताने देखा कि वह नवयौवनवती और रूपसे शोभित है। जिसमें देशान्तरके राजाओं और मनुष्य राजाओंकी कान्ति है, ऐसे उस नवनिर्मित मण्डपमें रथवरपर बैठी हुई वह वर देखती है तो आकाशमें स्थित एक अप्सरा उससे कहती है—हे कन्ये, यह तुम्हें याद नहीं आ रहा है कि जो मैंने और तुमने स्वर्गमें कहा था कि जो पहले मनुष्य-जन्म नहीं लेगा वह दूसरेसे परमधर्म कहेगा। हे आदरणीय सुनो, दोनोंके जन्मान्तरका कथन करता हूँ। पुष्करार्ध द्वीपके पूर्वभागमें भरतक्षेत्रके नन्दनपुरमें सुरेन्द्रके समान अमितविक्रम नामका राजा था। उसकी अनन्तमती नामकी भार्या थी, जो वरकविकी विद्याकी तरह लोगोंके लिए सुन्दर थी। उसकी मैं और तुम दोनों सुन्दर भुजाओंवाली धनश्री और अनन्तश्री नामकी कन्याएँ थी।

२. AP दाणव माणव । ३. AP सवरि । ४. AP णाराइण ।

१२. १. AP संपक्कु । २. A समिद्धु । ३. A सिद्धु । ४. A सरहि । ५. A नृजम्मु । ६. P गंदवरिहि ।

घत्ता—वणि सिद्धमहागिरि गंपि हलि गंदणमुणिवरपयजुयलु ॥
वदेप्पिणु व्रत उववासतउ चिण्णउं दुक्खर गलियमलु ॥१२॥

१३

वज्जंगउ णामे ससहराहु तहिं आयउ कथइ तिवरणाहु ।
कंताइ कुलिसमौलिणिइ सहिउ अन्हइं णियंतु मारेण महिउ ।
गउ णियपुरि णियपणइणि थवेवि कामाउरु पडियागउ वलेवि ।
बेण्णि वि जणीउ संचालियाउ णं हंसं कुवलयमालियाउ ।
५ आयासि जाम धावइ तुरंतु ता दिट्ठउ तेण कलत्तु एंतु ।
भत्तारचित्तगइ संभरंतु ईसाकसायवसु विप्फुरंतु ।
णिकरुणं दइवुंप्पेण्णियाउ भीएण वेणुवणि वल्लियाउ ।
परिहरियमीमवणयरभयाउ तहिं बेण्णि वि संणासें मुयाउ ।
घत्ता—णउ कंदु ण मूलु ण फलु ण दलु अहिलसियउ णउ किं पि वणि ॥
१० जोईसर सासयसिद्धियरु परमजिणेसरु धरिवि मणि ॥१३॥

१४

हउं णवमी आहंडलहु देवि हईं तुहु माणुसतणु सुपवि ।
णामे रइ पवर कुबेरणारि णंदीसरजत्तहिं दुक्खहारि ।
मंदरयलि दिट्ठउ चरियतिक्खु दिहिसेणु णाम पणवेवि भिक्खु ।

घत्ता—हे सखी, सुनो सिद्धिमहागिरि पर्वतपर जाकर नन्दन नामक मुनिवरके चरण-
कमलोको प्रणाम कर कठोर तथा मलनाशक उपवासतपरूपी व्रत ग्रहण किया ॥१२॥

१३

वहाँ चन्द्रमाके समान कान्तिवाला त्रिपुरका स्वामी वज्रांगद नामका विद्याधर राजा
कहीसे आया । हमें देखकर वह कामसे पीड़ित हो उठा । अपनी पत्नीको अपने घर छोड़नेके लिए
वह गया और कामातुर वह शीघ्र वापस आ गया । उसने हम दोनोंको इस प्रकार उठा लिया
मानो हंसने कुवलयमालाको उठा लिया हो । जैसे ही वह आकाशमे दौड़ा कि उसने तुरन्त अपनी
पत्नीको आते हुए देखा । अपने पतिकी गतिकी याद करते हुए और ईर्ष्या कषायके कारण तम-
तमाते हुए । देवसे प्रेरित निष्करुण उस भयावहने हमें वेणुवनमें फेंक दिया । जिन्होंने भीषण
वनचरोंके भयको छोड़ दिया है, ऐसी हम दोनों वहाँ संन्यासपूर्वक मर गयी ।

घत्ता—शाश्वंत सिद्धि देनेवाले योगीश्वर परम जिनको अपने सचमे धारण कर हम
लोगोंने उस वनमें न कन्द, न मूल, न फल और न दल कुछ भी न चाहा ॥१३॥

१४

मैं नीचें स्वर्गमें देवी हुई । तू मनुष्य शरीर छोड़कर कुबेरकी रति नामकी देवी हुई ।
दुःखका हरण करनेवाली नन्दीश्वरकी यात्रामें मन्दराचलपर चरित्रमे तीक्ष्ण वृत्तिसेन नामक
मुनिको देखा । उन्हे प्रणाम कर हम लोगोंने पूछा कि सिद्धत्व (मोक्ष) कब प्राप्त होगा । मुनिने

७. AP वउ ।

१३. १. A सहसबाहु । २. P^३मालिणए । ३. AP दइउ पेल्लियाउ ।

पुच्छिञ्च सिद्धत्तणु कम्मि कालि
चोत्थइ गित्थरह भवद्धिणीरु
आडच्छिवि हरि बल वे वि ताय
णिवकुमेरिहिं सहुं सत्तिहि सएहिं
एयारहमइ दिवि सुहण्हाणि
केसतु महि भुजिवि कम्मणडिउ
सुउ रज्जि थवेवि अणंतसेणु
तव चरिवि सीरि विहडियकसाउ

घत्ता—पिउ जायउ जो उरयाहिवइ तासु पासि दंसणैरयणु ॥
पावेप्पिणु णरयहु णीसरिउ सो अणंतैवीरियउ पुणु ॥१४॥

भरहम्मि एत्थु विजयाचलिंदि
णहवत्तलहपुरि घणवाहु राउ
घणवणणउ जायउ ताहं पुत्तु
सो सयलखयरखोणीवईसु
पण्णत्तिविज्ज संसाहमाणु
सम्मचु लएप्पिणु तिमिरणासु

होसइ रिसि भणइ भवंतरालि ।
तं सुणिवि कण्ण विहुणिवि सरीरु ।
बंदिवि सुव्वयसंजइहि पाय ।
पावज्ज लइय भूसियवएहिं ।
सुरवरु हूई प्राणावसाणि ।
रयणप्पहवसुहाविवरि पडिउ ।
जसहरगुरुचरणंबुरुहि लीणु ।
सोलहमइ सणि सुरिदु जाउ ।

१५

उत्तरसेदिहि धवलहरुंदि ।
घणमालिणिवरकंतासहाउ ।
घणणाहु णाम णवणल्लिणेतु ।
मंदरणंदणवणि णभियसीसु ।
अच्चुयणाहं बोहिउ सणौणु ।
णिवत्तंतु सुरामरगुरुहि पासु ।

बताया कि चौथे जन्मान्तरमे ससाररूपी समुद्रके जलसे नुम लोग तर जाओगी । यह सुनकर कन्या (सुमति) अपना शरीर कँपाती हुई, नारायण और बलभद्र पितासे पूछकर, सुन्नता आधिकारके चरणोंको प्रणाम कर ब्रतोसे भूषित सात सौ राजकुमारियोंके साथ प्रव्रजित हो गयी । प्राणोंका अन्त होनेपर वह सुखके निधान ग्यारहवें स्वर्गमे देव हुई । कर्मोंसे प्रतारित केशव, नारायण, रत्नप्रभा नामक नरकमे गया । अपने पुत्र अनन्तसेनको राज्यमे स्थापित कर यशोधर महामुनिके चरणकमलोमे लीन होकर और तपश्चरण कर विघटित कषाय श्री बलभद्र सोलहवें स्वर्गमे सुरेन्द्र हुए ।

घत्ता—उनका पिता स्मितसागर धरणेन्द्र हुआ । उसके पाससे सम्यग्दर्शनरूपी रत्न पाकर अनन्तवीर्य नरकसे पुनः निकला ॥१४॥

१५

इस भरत क्षेत्रमे विजयार्ध पर्वतकी उत्तरश्रेणीमे धवल गृहोसे विशाल नभवल्लभ नगरमे मेघमालिनी नामक सुन्दर कान्ता जिसकी सहायक है, ऐसा मेघवाहन नामका विद्याधर राजा था । वह (अनन्तवीर्यका जीव) उन दोनोंका मेघके समान वर्णवाला तथा नवनलिनके समान नेत्रवाला मेघनाद नामका पुत्र हुआ । समस्त विद्याधर भूमिका स्वामी मेघनाद मन्दराचलके नन्दनवनमे सिर झुकाये हुए प्रज्ञप्ति विद्या सिद्ध कर रहा था । अज्ञानी उसे अच्युतेन्द्रने सम्बोधित किया । तिमिरके नाशक सम्भवत्वको लेकर और देव तथा अमरोंके गुरुके पास संन्यास लेकर,

१४. १. A नृवकुमरिहिं; P णिवकुमरिहिं । २. AP पाणावसाणि । ३. P जसहरचरणंबुरुहे णिलीणु ।

४. AP दंसणु रयणु । ५. P वीरिउ ।

१५. १. A वणिउ । २. A पण्णत्त । ३. P अणाणु, K अणाणु but corrects it to सणाणु ।

- अण्णहिं दिणि गउ णंदणगिरिंदु थिउ पडिसाजोए मुंणिवरिंदु ।
 हयकंठभाइ णामे सुकंठु संसोरु भमिवि दुक्खोहिदट्ठु ।
 जायउ भीमासुरु सरिवि वेरु आठत्तु तेण मुणि मेरुधीरु ।
 १० उवसग्गहु ण च्छइ किं पि जासु सइं लल्लिउ गउ रिउ गयणु ताम ।
 रिसि साहिवि आराहण अमंडु अच्चुइ इंदहु हूयउ पडिंदु ।
 इह दीवंतरि सुरदिसिविदेहि मंगलवइइसि विविउत्तगेहि ।

धत्ता—पुरि रयणसंचि मणिचेंचइइ थिरु आउंचियारिपसरु ॥
 राणउ खेमंकरु दीहकरु धीमहंतु उद्धरियधरु ॥१५॥

१६

- तहु कणयचित्त णामेण देवि तहि णंदेण इंद पडिंद वे वि ।
 जाया हियमाणिणिहिययसार वज्जावह सहसावह कुमार ।
 सिरिसेणहि सुउ सहसावहेण जणियउ णेहु व कुसुमावहेण ।
 णियसंति णामु सुरणाहमहिउ खेमंकरु पुत्तपडत्तसहिउ ।
 ५ जांवच्छइ ता दिवि देवसत्थु पमणइ मुंवि को सइंसणत्थु ।
 अण्णहिं वेण्णिउ कुलिसावहासु णिम्मल्ले सम्मत्तु गुणावयासु ।

दूसरे दिन वह नन्दनपर्वत पर गया और वह मुनिवरेन्द्र प्रतिमायोगमें स्थित हो गया । अश्वघ्रीव-
 का भाई सुकण्ठ दुःखसे आहत और संसारका परिभ्रमण कर भीम असुर हुआ । पूर्वभवका स्मरण
 कर मेरुपर्वतके समान धीर उन मुनिसे उसने शत्रुता शुरू कर दी । परन्तु जब वह मुनि उपसर्गसे
 जरा भी विचलित नहीं हुए तो वह शत्रु स्वयं लज्जित होकर आकाशमें कहीं भी चला गया ।
 मुनि भी अनन्त आराधनाको साधकर अच्युत स्वर्गमें इन्द्रका प्रतीन्द्र हुआ । इसी द्वीप (जम्बूद्वीप)
 की पूर्वदिशामें गृहोंसे विचित्र मंगलावती देव है ।

धत्ता—मणियोसे शोभित रत्नसंचय नगरमें शत्रुओके प्रसारको रोकनेवाला बुद्धिमें महाग
 धरतीका उद्धार करनेवाला क्षेमंकर नामका राजा था ॥१५॥

१६

उसकी कनकचित्रा नामकी देवी थी । उससे इन्द्र और प्रतीन्द्र दोनों मानिनियोंके हृदय-
 सारका अपहरण करनेवाले वज्रायुध और सहस्रायुध कुमार उत्पन्न हुए । सहस्रायुधको श्रंपिणसे
 इन्द्रसे पूजित कनकशान्त नामका पुत्र, वैसे ही हुआ जैसे कामदेवसे स्नेह उत्पन्न हुआ हो । इस
 प्रकार जब पुत्र और पौत्रों सहित क्षेमंकर राजा रह रहा था, तब स्वर्गमें देवसमूह कहता है
 कि पृथ्वीपर सम्यक्दर्शनमें कौन स्थित है ? दूसरे देवोंने कहा कि गुणोंसे युक्त वज्रायुधको निर्मल
 सम्यक्त्व प्राप्त है । यह सुनकर चित्रचूल नामका सुरवर जिसके शिखर आकाशको चूम रहे हैं

४. AP जयवरिंदु । ५. AP संसारि । ६. P दुक्खेहि दट्ठु ।

१६. १. A तहि णंदणु अच्चुवइंदु ए वि । २. A reads this line and 3 a as: वज्जावह णामे तिय-
 सारु, तं परिणिय सिरिमइ णं कुमार, तोए जणियउ सहसावह कुमार । ३. AP को मुवि । ४. P
 मण्णिउ । ५. A णिम्मल ।

तं णिसुणिवि सुरवर चित्तचूलु आयत्त णिर्वधरु गहलग्गचूलु ।
जिणजेट्टतणुब्भदु भणित्तेण अण्णण्णु होइ तिहुवणु खण्णेण ।
घत्ता—णत्त अत्थि तो वि दीसइ पयहु जिह सिचिणत्त तेलोक्कत्तु तिह ॥
लइ सुणुं जि णिच्छत्त आवड्ढित्तं कर्हि अच्छइ गय दीवसिह ॥१६॥ १०

१७

तं सुणिवि भणइ पविपहरणक्खु अण्णाणहं दुक्कर णाणक्खत्तु ।
जइ अबरु जि खणि खणि होइ सन्वु तो किं जाणइ जणु णिहिच्च दव्वु ।
पजायारूढी सन्वसिद्धि आत्तच्चिच्च हत्थु जि होइ सुट्ठि ।
अण्णयचिरहिच्चं जि जगु भणन्ति खक्खुसुभुं ते सससिग्गे हणन्ति ।
जइ सिचिणु व तच्चु परोवहासि तो सिचिणयभोयणि किं ण घासि । ५
जइ सुणत्तहु दीवच्चि जाइ तो खप्परि कज्जलु केमं थाइ
तं सुणिवि पत्तुद्धत्त सुत्तं वत्तद्धु संसइ तुहुं णरवइ णाणसुद्धु ।
को करइ वप्प पइं सहुं विवात्त अरहंतु भडारत्त जासु तात्त ।

घत्ता—गत्त चित्तचूलु सणिहेलणहु इंदच्चंदफणिपरियरित्त्त ॥

खेमंकर पढमहु तणुरुहहु अप्पिवि वसुमइ णीसरित्त्त ॥१७॥ १०

ऐसे राजभवनमें आया । उसने जिनके बड़े लड़के (वज्रायुध) से कहा कि त्रिभुवन एक पलमे कुछका कुछ हो जाता है ।

घत्ता—यद्यपि वह नहीं है, तो भी वह प्रत्यक्ष रूपमे दिखाई देता है, जिस प्रकार स्वप्न (दिखाई देता है) उसी प्रकार त्रिलोक । जो शून्यको शून्य ही निश्चय रूपसे ज्ञात हुआ, गयो दोष शिखा कहाँ रहती है ? ॥१६॥

१७

यह सुनकर वज्रायुध कहता है कि अज्ञानियोंके ज्ञानचक्षु कठिन होते हैं । यदि सब कुछ क्षण-क्षणमे कुछका कुछ हो जाता है तो लोग रखे हुए धनको किस प्रकार जान लेते हैं ? समस्त सृष्टि पर्यायोपर आश्रित है । संकुचित हाथ मुट्टी बन जाता है । जो विश्वको एक दूसरेसे (द्रव्य पर्याय) रहित कहते हैं वे आकाशके फूलको खरगोशके सींगसे मारते हैं । हे परोपहासी (दूसरोका उपहास करनेवाले), यदि तत्त्व भी स्वप्नकी तरह है, तो तुम स्वप्नमे किये गये भोजनसे तृप्त क्यों नहीं होते ? यदि दीपकी शिखा शून्यत्वको जाती है तो खप्परमे काजल कैसे पाड़ा जाता है ? यह सुनकर वह क्षणिकवादी बौद्धदेव प्रबुद्ध हो गया और प्रशंसा करने लगा कि हे देव, हे राजन्, तुम ज्ञानसे शुद्ध हो । हे सुभट, तुम्हारे साथ विवाद कौन करे कि जिसके पिता आदरणीय अरहन्त हैं ?

घत्ता—चित्रचूल देव अपने घर चला गया और इन्द्र, चन्द्र और नागोंसे घिरा हुआ क्षेमंकर अपने पहले पुत्रको घरती मौपकर चला गया ॥१७॥

६. A नवधर । ७. AP सुणत्त णिच्छत्त ।

१७. १. AP जइ णणे णणे अवव जि होइ । २. P खक्खुसुम । -३. AP किं ण याह । ४. A सुह पत्तुद्धु; P सुत्त वत्तद्धु ।

	घरु मेल्लिवि वणि थिउ मुक्कगत्तु रायाहिराउ णिव्वुडमाणु वज्जाउहु अवइण्णइ वसंति तडिदाढे चिरभववइरिएण	१८ काले अरहंतावत्थ पत्तु । गोभिनिकामिणि अप्पुहुंजमाणु । जलि रमइ सुदंसणसरवरंति । दुक्कम्मभावसंचारिएण । विउलइ सिलाइ संह संणिरुद्ध । गय सयदेउलु णारि व रयमलेण । णियेघरि पइहु कुलहरपईव । णवणिहि चउदहरयणाई तासु । घरि णहयरु एकु पवण्णु सरणु ।
५	खयरेण णायपासेण वद्धु सा तेण णिहय दढकरयलेण रिउ णासिवि गउ भयभीयजीउ वसिकयसुरणंरविज्जाहारासु	
१०	घरु आयइ ता परिहरिवि मरगु घत्ता—तहु अणु आगय असियरखयरि चवइ हणमि को मइ घरइ ॥ पहरणकरु थविरु अवरु अइउ णिवहु सवइयरु वज्जरइ ॥१८॥	

१९

इह वरिसि खगायलि अरिहंभत्तु तहु दैवि जसोहर वाउवेउ तेत्थु जि पुरु किंणरगीउ अत्थि तहु सुय सुकंतं महं तणिय कंतं	सक्कंप्पहपुरि पहु इंदयत्तु । हउं पुत्तु पुण्णसंपुण्णतेउ । तहिं चित्तचूलु खगु जसगमत्थि । वहुतंतवमंतविहिउत्तुद्धिवंत ।
--	---

१८

मुक्त शरीर वह घर छोड़कर वनमें स्थित हो गया और समय बीतनेपर वह अरहन्त अवस्थाको प्राप्त हुआ। अपने मानका निर्वाह करनेवाला राजाधिराज धरती और लक्ष्मीको भोगता हुआ वज्रायुध वसन्त ऋतु आनेपर सुदर्शन नामक सरोवरमें जलमें क्रीड़ा कर रहा था। पूर्व-जन्मके शत्रु और दुष्कर्मभावसे संचारित विद्वददंष्ट्र विद्याधरने उसे नागपाशसे बांधा और विशाल चट्टानसे उसे अवरुद्ध कर दिया। उस चट्टानको उसने अपने दृढ़ करतलसे आहत किया, वह उसी प्रकार सौ टुकड़े हो गयी जैसे रजस्वला स्त्री रक्तमलसे लाजके कारण टुकड़े-टुकड़े हो जाती है। भयसे भीतं जीव शत्रु नष्ट होकर त्रला गया। वह कुलगूहका दीपक अपने घर आया। जिसने मनुष्यों और देवोंको विद्याओंको अपने वशमें कर लिया है, ऐसे उसके घर नी निधियां और चौदह रत्न आये। एक विद्याधर मरणके भयसे उसके घर शरण आया।

घत्ता—उसके पीछे हाथमें तलवार लिये हुए एक विद्याधरी आयी और बोली कि मैं माहंगो, कौन मुझे पकड़ सकता है? एक और बूढ़ा विद्याधर हाथमें हथियार लेकर आया और राजासे अपना वृत्तान्त कहने लगा ॥१८॥

१९

इस भारतवर्षमें विजयाघर्ष पर्वतके शुक्रप्रभ नगरमें अर्हद्भवत्त राजा इन्द्रदत्त है। उसकी देवी यशोधरा है। उसका मैं पुण्यसे सम्पूर्ण तेजवाला वायुवेग नामका पुत्र हूँ। उसी देशमें किन्नरगीत नगर है। उसमें यशकी किरणोवाला विद्याधर राजा चित्रचूल है। उसको कन्या

१८. १. AP सहसा णिरुद्ध । २. A सयदण । ३. AP णियपुरि । ४. AP महं को ।

१९. १. A अरहं ।

ओहच्छइ तुह पयणय विणीय
 विज्जासाहणि थियवणयरासु
 क्रि साहइ इच्छियसिद्धि जाव
 तं अवगणिवि मूर्खलोयणाइ
 आरूसिवि कडिहव मंडलगु
 आवेपिणु तुक्खु पइह् मेहि
 आगच्छमि जा महिहरधरिचि
 इह आयव अक्खिच तुक्खु राय
 गंभीरघोरवइराचहेण

संतिमइ णाम महुं तणिय धीय ।
 उवगय सुणिसायरगिरिवरासु ।
 गुरुविग्घु पवंजिव एण ताव ।
 सिद्धी देवय जाणिवि अणाइ ।
 एह् वि लंघिय णंहमंडलगु ।
 हउं पुज्ज लेवि खे भमियमेहि ।
 ता पेच्छिवि णहि धावंति पुत्ति ।
 पेक्खहि परिक्खहि णायंछाय ।
 तं सुणिवि बुत्तु वज्जारहेण ।

५

१०

घत्ता—इह दीवइरावयविह्वरि विह्वसेणु णामें नृवइ ॥

णामेण सुलक्खण मृगंयण तह् रायाणी हंसगइ ॥१९॥

१५

तहु णंदणु णामें णल्लिकेव
 तेत्थु जि वणिवरु णामें सुमित्तु
 पीयंकरि णामें तासु भज्ज
 महिल्लविरहेण मुण्णिदवासि

२०

णं थिच णररूवे मयरकेव ।
 सिरिदत्त कंत तणुरुह सुदत्त ।
 सा हित्ती णिवत्तणए मणोज्ज ।
 रिसि ह्व सुदत्तु सुव्वयह् पासि ।



सुकान्ता मेरी कान्ता है । बहुतसे तन्त्र-मन्त्रोंकी विधि और बुद्धिसे युक्त शान्तिमती नामकी मेरी कन्या जो आपके चरणोंमें विनीत है, विद्या सिद्ध करनेके लिए जहाँ वनचर स्थित है ऐसे मुनि-सागर नामक पर्वतपर गयी हुई थी । जबतक यह इच्छित सिद्धिको सिद्ध करती तबतक इसने भारी विघ्न किया । उसकी उपेक्षा करके मृगनयनीने विद्या सिद्ध कर ली । इसने यह जानकर और क्रुद्ध होकर अपनी तलवार निकाल ली । यह भी आकाशमण्डलका अग्रभाग लाँघकर और आकर तुम्हारी शरणमें प्रवेश कर गया । मैं पूजा लेकर, जिसमें बादल घूम रहे हैं, ऐसे आकाशमें जबतक पर्वतकी भूमिपर आता हूँ, तबतक आकाशमें पुत्रीको दौड़ते हुए देखता हूँ । मैं यहाँ आया हूँ और आपसे कहा है । आप इसे देखे और न्यायके प्रभावकी रक्षा करें । गम्भीर घोर शत्रुओंको ललकारनेवाले वज्रायुधने यह सुनकर कहा—

घत्ता—इस जम्बूद्वीपके ऐरावत क्षेत्रमें विन्ध्यनगर है । उसमें विन्ध्यसेन राजा है । उसकी सुलक्षणा नामकी मृगनयनी तथा हंसकी चालवाली रानी है ॥१९॥

२०

उसका नलिनकेतु नामका पुत्र है, जो मानो मनुष्यके रूपमें कामदेव हो । वहीपर सुमित्र नामका बनिया था, उसकी श्रीदत्ता पत्नी थी और सुदत्त पुत्र था । उसकी प्रीतकरी नामकी भार्या थी । उस सुन्दरीका राजाके पुत्रने अपहरण कर लिया । पत्नीके विरहमें वह जिसमें मुनीन्द्रोंका

२. A सुक्कं । ३. P मिग्गं । ४. AP णहि मंडलगु । ५. P णायणाय । ६. AP णिसुणिवि ।

७. P णिवइ । ८. A सलक्खण । ९. P मिग्गं ।

२०. १. AP पीइंकरि । २. A नृवतणं ।

५. भंजिवि दुग्मह कंदप्पदपु
जंबूदीचंतरि कच्छदेशि
पुरि कणयतिलइ णं पुण्ण्यंदु
तहु पणइणि णामे णीलवैय
चिरु वणि सुदत्तु जो दुक्खरीणु
१० इंदीवरदलसंकासणेत्तु
सीमंकरसूरिहि णविचि पाय
णियदुक्खिच णिंदिवि णायणेच
वत्ता—पीईंकरि सुग्गयसंजइहि पासि मुएप्पिणु घरणियल्लु ॥
चंदायणु चरिवि पसण्णमइ मंय पक्खालिवि पावमल्लु ॥२०॥

२१

- ईसाणि देवि तिस्थाच आथ
इह अजियसेणु चिरवरु दुल्लघु
इय णिसुणिवि कण्णइ पुग्गजम्मसु
संतिमइ सुगंधवियत्तखणाहि
५ देवत्तु लहेप्पिणु वीयसग्गि
ता पैक्खइ जो णरजम्मि ताव
संतिमइ तुहारिय धीय जाय ।
विज्जव साईंतिहि करइ विग्गु ।
खेमंकरणाहहू पासि धम्मसु ।
हूई सीसिणिय सुलक्खणाहि ।
संचरइ जाम गय्येणयलमग्गि ।
सो जिणवरु जायउ वाउवेउ ।

वास है, ऐसे सुव्रतके निकट मुनि हो गया। दुर्मंद काममदका क्षय कर संन्यासेसे वह ईशान स्वर्गमें गया। जम्बूद्वीपके अन्तर्गत कच्छ देशमें विजयाई पर्वतकी उत्तर श्रेणीमें स्थित कनकतिलक (कांचनतिलक) का विद्याधर राजा महेन्द्रविक्रम था, जो मानो पूर्णचन्द्र था। उसकी प्रणयिनी नीलवेगा थी। अमिततेज देव जो पहले दुखसे क्षीण सुदत्त नामका वणिक् था, वह उसका अजितसेन नामका पुत्र हुआ और जिसने कमलके समान नेत्रोंवाली वणिक्पुत्रकी पत्नीका अपहरण किया था। सीमन्धर स्वामीके चरणोंमें प्रणाम कर तथा घोर तपस्चरण कर, कषायोंको चूर-चूर कर, अपने पापोंकी निन्दा कर तस्वीको जाननेवाला वह राजा तलिनकेतु मोक्ष गया।

वत्ता—प्रसन्नमति और प्रीतंकरी भी सुव्रता आर्थिकाके पास धरिणीतलको छोड़कर चान्द्रायण तपकर तथा पापमलका प्रक्षालन कर मृत्युको प्राप्त हुई ॥२०॥

२१

ईशान स्वर्गकी देवी प्रीतंकरी (प्रीतंकरा) वहाँसे आयी और शान्तिमती नामसे तुम्हारी पुत्री हुई। यह अजितसेन, पूर्वजन्मका दुर्लभ वर है जो विद्या सिद्ध करती हुई इसे विचन कर रहा है। इस प्रकार अपना पूर्वजन्म सुनकर क्षेमंकरस्वामीके निकट कन्या शान्तिमती सुशास्त्रमें पारंगत आर्थिका सुलक्षणा की शिष्य हो गयी। दूसरे स्वर्गमें उत्पन्न होकर जब वह आकाशतलमें विचरण कर रही थी तो वह देखती है कि जो मेरे पूर्वजन्मके पिता वह वायुवेग जिनवर हो

३. AP हुच । ४. A पुण्णिविदु; P पुण्ण्यंदु । ५. A अमियसेणु । ६. A नूच; P णिच । ७. A पीईंकर । ८. AP मय । ९. A पायमल्लु ।

२१. १. AP तुहारी । २. AP इय णिसुणेप्पिणु अप्पणच जम्म । ३. AP गय्येणयलमग्गि ।

जिह सो तिह अवरु वि अजियसेणु रयणत्तयजलधुयकम्मरेणु ।
 शुद्धसयहिं पसंसि वि वरगिरेण वेणिं वि वंदिय पणभियसिरेण ।
 देविं चित्ति संसार चित्तु जिणधम्मि ण किंजइ केम चित्तु ।
 कापीणदीणदिज्जंतदाणि चकसेररज्जि पवड्ढमाणि ।

१०

घत्ता—खगमहिहरदाहिणंपतियहि सिवमंदिरि घणवाहणहु ॥
 विमलादेविहि संभूय सुय कणयमाल संपसाहणहु ॥२१॥

२२

संगरभरमारियखत्तियासु
 गुणमणिरज्जोइयकुलहरासु
 वसुसारयणयरि समुहसेण
 दोहिं मि सहं गउ गहणंतरालु
 विमलप्पहु णामं तेत्थु साहु
 णिसुणेवि तच्चु पावज्ज लइय
 णारिहि णं चल मइ जणियसंति
 सिद्धायलि काओसग्गु देवि
 अविद्याणियसमचित्तं जडेण

दिग्णी वसुहाहिवणत्तियासु ।
 सोवण्णसंतिणामहु वरासु ।
 रायहु जयसेण वसंतसेण ।
 घोलंतणीलदुलवेज्जिजालु ।
 अवलोइच णाणजलोहवाहु ।
 सहं घरणिहिं तेण विसुक्कदइय ।
 आसंधिय विमलमइ ति खंति ।
 तिणि वि थियाइं मणि जोउ लेवि ।
 विज्जाहरेण वइरुभभडेण ।

५

गये हैं। जिस प्रकार वह उसी प्रकार दूसरा अजितसेन भी रत्नत्रयरूपी जलसे कर्मरजको धो चुका है। उसने सैकड़ों स्तुतियों और उत्तम वाणी तथा नम्रसिरसे दोनोंकी वन्दना की। उसने विचार किया कि संसार विचित्र है, जितधर्मसे चित्तको क्यों न किया जाये? जिसमें कन्यापुत्रों और दोनोंको दान दिया जाता है ऐसे चक्रवर्ती राज्यके बढ़नेपर—

घत्ता—विजयार्ध पर्वतकी दक्षिण श्रेणीके शिवमन्दिर नगरमें सैन्ययुक्त मेघवाहन और विमलादेवीके कनकमाला नामकी पुत्री हुई ॥२१॥

२२

जिसने संग्राम समूहमें क्षत्रियोंको मारा है, जिसने गुणरूपी मणियोंसे कुलगृहोंको आलोकित किया है ऐसे राजाके नाती कनकचान्ति नामक वरको कन्या दी गयी। वसुसार नगर (वस्वोकसार) के समुद्र राजाको जयसेना और वसन्तसेना स्त्रियाँ थी। वह उन दोनोंके साथ गहन वनके भीतर गया कि जहाँ हरे-हरे पत्तोंवाला लताजाल आन्दोलित हो रहा था। वहाँ उसने ज्ञानरूपी जलसमूहको धारण करनेवाले विमलप्रभ नामक मुनिको देखा। उनसे तत्त्व सुनकर उसने अपनी गृहिणियोंके साथ, जिसमें पत्नीका त्याग किया जाता है ऐसी दीक्षा ग्रहण कर ली। स्त्रियोंने भी अविचल मति एवं शान्ति देनेवाली विमलमति नामकी आर्थिकाकी धारण ग्रहण की। सिद्ध-शिलातलपर कायोत्सर्ग करते हुए वे तीनों मनमें योग धारण कर स्थित हो गये। जो

४. AP वेणिं वि पणवि वि वदिवि सिरेण । ५. A देवं; P देविए । ६. AP^० धाहिणसेडिवहि ।

७. AP सुपसाहणहु ।

२०. १. A adds after this: तह सुय उप्पणी वरसुएण, सा पुण परिणिय पहुसुयसुएण । २. AP णिचचलमइ ।

- १० लहुपणइणित्तेहुणएण ताहं उवसग्गु रइइ तीहिं मि जणाहं ।
 तज्जिउ खयरिंदं असिगहेण गउ चिचचूलु णासिवि णेण ।
 घत्ता—णिवसुयसुउ कणयसंति णिवइ कणयमाल परिसेसिवि ॥
 आहिंइइ महियलि सुद्धमणु अप्पउ तविण विहूसिवि ॥२२॥

२३

- रयणउरइ राणउ रयणसेणु ते तहु भयवंतहु दिण्णु दाणु ।
 अणणेक्के वणि अचछंतु संतु आदत्तु हणहुं कम्मइं खवंतु ।
 एयहं दोहं मि मुणिवर समाणु संजायउ केवलि तिजगभाणु ।
 देवाग्गु पेक्खवि हीणु दीणु पुणु मुणिवरकमकमलयलि लीणु ।
 ५ सो खलु वसंतसेणाहि सयणु पणविउ हिरिभौवोणल्लवयणु ।
 णियणत्तिउ णिएवि अणंतणाणि णिविणणउ रइसुहि चक्खपाणि ।
 खेमंकरतायहु पासि दिक्ख मणि धरिवि असेस वि समयसिक्ख ।
 सिद्धइरिहि लेप्पिणु वरिसजोउ थिउ देहविसग्गं मुक्कभोउ ।

घत्ता—संज्ञायइ पंचमहव्ययइ पंचहिं पंचं जि भावणउ ॥

- १० पंचमगइणिच्चलणिहियमइ परिगयपंचंदिपणउ ॥२३॥

समचित्तको नहीं पहचानता ऐसे जड़ और वैरसे उद्भट छोटी पत्नी वसन्तसेनाके मामाके लड़के चित्रचूलने उन तीनोंपर उपसर्ग किया। विद्याधर राजाके द्वारा तलवारसे धमकाया गया चित्रचूल आकाशमार्गसे भाग गया।

घत्ता—नृपसुतका सुत अर्थात् कनकशान्ति कनकमालाको छोड़कर, शुद्धमन तथा स्वयंको तपसे विभूषित कर धरतीतलपर भ्रमण करते हैं ॥२२॥

२३

रत्नपुरमें राजा रत्नसेन था, उसने ज्ञानवान् उनको आहारदान दिया। एक और दिन जब वह वनमें कर्मोंका क्षय करते हुए विद्यमान थे तो उसने (चित्रचूल देव) उपसर्ग करना शुरू किया। लेकिन वह मुनिवर इन दोनों (अर्थात् आहारदान देनेवाले राजा रत्नसेन और उपसर्ग करनेवाले चित्रचूल) में एक समान थे। वह त्रिजगत्सूर्य केवलज्ञानी हो गये। देवागम देखकर वह देव दीन-हीन हो गया और मुनिवरके चरणकर्मलोंमें लीन हो गया। वसन्तसेनाके मातुलपुत्र दुष्ट उस चन्द्रचूलने लज्जाभावसे विनत होकर उन्हें प्रणाम किया। वज्रायुध भी अपने नातीको केवलज्ञानी देखकर रत्निसुखसे विरक्त हो गया। पिता क्षेमंकरके पास दीक्षा लेकर और मनमें समस्त शास्त्र शिक्षा धारण कर सिद्ध पर्वतपर एक वर्षका योग लेकर मुक्तभोग वह कायोत्सर्गमें स्थित हो गया।

घत्ता—वह पांच महाव्रतों और उनकी भावनाओंकी भावना करता। उसकी मति मोक्षमें अचल थी और पाँचों इन्द्रियोंके प्रेमसे वह उन्मुक्त था ॥२३॥

२२. १ AP मणिवर । २. A हरिवाहोणवल्लवयणु । ३. AP पंच वि ।

२४

चिरु हरिगीवह सुय धम्मभट्ट षामें रयणाउह रयणकंठ ।
 संसार भमेपिणु जाय देव पहरंति पाव तं सावलेव ।
 आयइ रंभाइ तिलोत्तिमाइ णिळभच्छिय वंदियजइकमाइ ।
 अइवलु समहावलु खणि पलाणु पाविट्टहु कासु ण भग्गु माणु ।
 सहसाउहेण सयबलिहि रज्जु ढोइवि ववसिउ परलयकज्जु ।
 त्रैउ लइयउं पिहियासवहु पासि मइ रमइ ण संतहु गेहवासि ।
 वइभारमहीहरि रिद्धिठाणि दिट्टउ णियसुहि जोयावसाणि ।
 तउ चरिवि तहिं जि रिसिजुवलु मँयउं उवरिमगेवज्जहि णवैरि गयउं ।

घत्ता—एकूणतीससायरसमइं वेणिण वि सुहुं मुंजंत थिय ॥

भरहुवरिगामि हिमअहिमयैर पुष्पयंतसुराणियर पिय ॥२१॥

१०

इय महापुराणे विसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महामन्त्रमरहाद्युसणिणए
 महाकइपुष्पयंतविरहए महाकव्वे वज्जाउहचक्कवट्टिवण्णणं णाम
 एकसट्ठिमो परिच्छेओ समत्तो ॥६१॥

२४

पुराने अश्वघोषिका धर्मभ्रष्ट पुत्र रत्नायुध और रत्नकण्ठ पुत्र संसारमें परिभ्रमण कर देव उत्पन्न हुए। पाप सहित वे दोनो उसपर प्रहार करते हैं। वहाँ रम्भा और तिलोत्तमा आदि देवियाँ आयी और यतिवरके चरणोकी वन्दना करनेवाली उन्होंने उसकी भर्त्सना की। वह अतिबल महाबलके साथ एक क्षणमें भाग गया। किस पापीका मान भंग नहीं हुआ। सहस्रायुधमे शतबलीको राज्य देकर वह परलोककाजमे लग गया। उसने पिहितास्रवके पास व्रत ग्रहण कर लिया। सन्तकी मति गृहवासमे नहीं रमती थी। ऋद्धियोके स्थान वैमार पर्वतपर शोगका अन्त होनेपर उसने अपने सुधो पिता सहस्रायुधको देखा। वहाँ तपका आचरण कर वे दोनो ऋषि-युगल मृत्युको प्राप्त हुए और सिर्फ उपरिमग्नैवेयक विमानमे उत्पन्न हुए।

घत्ता—वे दोनो उनतीस सागर प्रमाण समय तक सुखका भोग करते हुए स्थित रहे। वे भरतक्षेत्रके ऊपर चलनेवाले सूर्य-चन्द्र-नक्षत्र और सुरसमूहके लिए प्रिय थे ॥२१॥

इस प्रकार त्रैसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त, महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचित पूर्व महामन्त्र मरत द्वारा अनुसृत महाकाव्यमें वज्जायुध चक्रवर्ती-वर्णन नामका एकसठवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥६१॥

२४. १. AP ससारि । २. AP वल । ३. AP वइभारि महीहरि सिद्धिठाणि । ४. P मयउं । ५. AP णवर । ६. A अहिमयै । ७. AP पुष्पयंतं ।

संधि ६२

पठमदीवि थियैमेहइ
पुक्खलवइदेसंतरि

सुरगिरिपुण्वविदेहइ ॥
पवरपुंजरिगिणिपुरि ॥ ध्रुवकं ॥

१

५ तहिं घणरहु पहु सयमहणमिउ
तहु वैवि मणोहर तुंगथणि
वज्जावहु जो अहमिंदु हुच
तणुतेओहामियभाणुरहु
सहसावहु अमरुं मणोरमइ
णिवकंतइ णंदणु संजणिउ
भायरहं जिहिं सि कमभाणियउ
१० हुच एकहिं णंदिउडुहु तणउ
अवरैकहिं दिणि सुसेण गणिय
सा घणसुहु कुक्कुडु लेवि गय
पडिपम्बिख पक्खणकखहिं हणइ

तिहुयणसरिरमणीप्राणैपिउ ।
गलकंदलळंविथहारमणि ।
संभूउ गन्धि सो ताहि सुउ ।
हक्कारिउ ताएं मेहरहु ।
गेवज्जहिं आंयउ सुहसमइ ।
सो सज्जणेहिं दठरहु भणिउ ।
पियमित्त सुमइ वरराणियउ ।
अण्णहिं वरसेणु वराणणउ ।
पियमित्तहिं धरु कोड्ढावणिय ।
भासइ देविहिं पणमंति पय ।
कियवाउ एहु जो रणि जिणइ ।

सन्धि ६२

१

जम्बूद्वीपमें जहाँ मेघ स्थिर है ऐसे सुमेरुपर्वतके पूर्वविदेहमें पुष्कलवती देशके पुण्डरीकिणो नगरवरमें धनरथ राजा था जो इन्द्रके द्वारा प्रणम्य और त्रिभुवनकी लक्ष्मीरूपी रमणीका प्राण-प्रिय था । उसकी उन्नत स्तनोंवाली तथा जिसके गलेमें मणियोंका हार लटकता है ऐसी मनोहरा नामकी देवी थी । जो वज्रायुध अहमेन्द्र हुआ था, वह उसके गर्भसे पुत्र उत्पन्न हुआ । अपने शरीरके तेजसे सूर्यरथको तिरस्कृत करनेवाले उसे पिताने मेघरथके नामसे पुकारा । अश्वेयक विमानसे शुभ समयमें मनोरमाके गर्भमें आया । उस नृपकान्ताने पुत्रको जन्म दिया । सज्जनोंके द्वारा उसे दृढरथ कहा गया । उन दोनों भाइयोंकी क्रमसे कही गयी प्रियमित्रा और सुमति रानियाँ थीं । एकसे नन्दिवर्धन पुत्र हुआ । दूसरीसे सुन्दर मुखवाला वरवेण । एक और दिन प्रियमित्राकी दासी सुषेणा कुतूहलसे भरी हुई घनतण्ड मुर्गा लेकर देवीके घर गयी और पैरोंमें प्रणाम कर बोली, "जो प्रतिपक्षी अपने पंखों और नखोंसे इसे आहत करता है और युद्धमें इस मुर्गको जीतता है—

१. १. AP धिए मेहए । २. AP पाणपिउ । ३. AP णिवकंताणंदणु ।

घत्ता—दिङ्गह सालंकारहं
एह वत्त णिसुणेप्पिणु

ताहं सहँस्सु दीणारहं ॥
अवरँ वि पक्खि लएप्पिणु ॥ १ ॥

१५

२

कुलिसाणु कुक्कडु कंचणिय
गरुडेण वि जिप्पइ एहुं ण वि
ता हरिसँ वाइय जयवडह
तहिं आया घणरह मेहरह
पियमित्तसुमइकरयलपुसिय
जुञ्जंति पक्खि ते पवलवल
जल्लणवलणपरियत्तणहिं
रोसुद्धयकंधरकेसरय
तं ताएं पुच्छिळ मेहरहु
किं तंबचूल जुञ्जंति सुय

अक्खइ सुमइहिं घरँकामिणिय ।
उहुंतहु संकइ गयणि रवि ।
सुंज्जय णञ्जंति लडहमडह ।
दहरह वरसेण णंदि सुमँह ।
चिरजम्मणिवद्धवँइरिवसिय ।
चंचेळचंचुचरणारँचल ।
पेहुणसिरसिहरवियत्तणहिं ।
जं केवँ वि ण ओसरंति सरय ।
संचोहहुं भव्वजीवणिवहु ।
भणु अवहिवंत सग्गग्गचुय ।

५

१०

घत्ता—कहइ कुमारु सुहावइ
सयडजीवि तिट्ठावर

पत्थु दीवि अइरावइ ॥
रयणसरइ णर भायर ॥२॥

घत्ता—उसे अलंकारों सहित एक हजार दोनारे दी जायेंगी ।” यह बात सुनकर दूसरी भी (सुमतिकी दासी कांचना) अपना पक्षी (मुर्गा) ॥१॥

२

वज्रतुण्ड लेकर सुमति की गूहूदासी बोली कि यह गरुडके द्वारा भी नहीं जीता जा सकता । उड़ते हुए इससे आकाशमे सूर्य शंकित हो उठता है । तब हर्षसे विजयके नगाड़े बजा दिये गये, सुन्दर वामन कुञ्जक नाचने लगे । वहाँपर घनरथ, मेघरथ, दूधरथ, वरसेन और तेजस्वी नन्दिवर्धन आये । प्रियमित्रा और सुमतिके हाथोसे पोसे गये तथा पूर्वजन्ममें बाँधे गये वैरके वशीभूत होकर प्रबल बलवाले तथा अपनी वक्र चोंचों और पैरोसे चंचल वे दोनो मुर्गे उल्ललना, मुडना, धूमना तथा पूँछसे सिरके शोखरको धुमाना आदिसे युद्ध करने लगे । क्रोधसे कांपते हुए कन्धो और केशरक (सिरके बाल) वाले और चिल्लाते हुए जब वे मुर्गे नहीं हूटे तो पिताने मेघरथसे अश्वजीवोके सम्बोधनके लिए पूछा, “हे पुत्र, ये मुर्गे क्यों लड़ते हैं । हे स्वर्गसे च्युत अवधिज्ञानवाले तुम बताओ ।”

घत्ता—कुमार बताता है—यहाँ इस जम्बूद्वीपमे सुखास्पद ऐरावत क्षेत्र है । उसके रत्नपुर नगरमे गाड़ीसे अपनी आजीविका चलानेवाले दो लालची भाई रहते थे ॥२॥

४. A सहायु । ५. AP बवरु ।

२. १. P घरि कामिणिय । २. AP कुञ्जय । ३. A णंदिपमुह । ४. AP वहररसिय । ५. A चरणा चवल । ६. AP केम वि णोसरति ।

		३
	पहरेवि परुपरु कडिणसुय णामेण पसिद्धा भद्र धणि बहुपुंडरीयपंचाणणइ सियकण्ण तंबकण्ण त्ति गय ५ कोसलणयरिहि गोडलियघरि एप्पिणु जुञ्जेप्पिणु खयहु गय वरसेणसत्तिसेणहं णिवहं ए चूलि पहाया संभरमि दीवाइदीवि खगसिहंरि वरि १० खगु गरुलवेड दिहिसेण प्रियै घत्ता—कुसुमालुद्धईदिंदिरि जइवरु तेहिं णियच्छिउ णियजम्मंतरु पुच्छिउ ॥३॥	बलिवद्धु कारणि कोवजुय । ते वे वि मरेप्पिणु तेत्थु धणि । कंचणसरितीरइ काणणइ । संजाया पुणु जुञ्जेवि सुय । जाया सेरिह णववयहु भरि । तेत्थु जि पुरि कुरैर पलद्धजय । अग्गइ जुञ्जिवि वड्ढियकिवहं । भउ पेक्खालुअहं सि वज्जरमि । उत्तरसेडिहि कणयाइपुरि । सुय चंदविचंदतिलय सुहिय । सिद्धकूडजिणमंदिरि ॥ जइवरु तेहिं णियच्छिउ णियजम्मंतरु पुच्छिउ ॥३॥

४

थिउ लंछणु धादइविडवि जहिं सुरदिसि अइरावइ तिलयपुरि जिह तिह गेहिणि कंचणतिलय	रिसि अक्खइ धादइसंडि तहिं । पइ अभयघोसु सिरि तामु उरि । णावइ रइणाहहु रइविलय ।
--	---

३

बैलके कारण क्रोधयुक्त होकर कठोर बाहुवाले भद्र और धन्य नामसे प्रसिद्ध वे दोनों मरकर वही जिसमें बहुते-से व्याघ्र और सिंह हैं, ऐसे कांचननदीके तटपर वनमें श्वेतकर्ण और ताम्रकर्ण नामक गज हुए और पुनः युद्ध करके मर गये। अयोध्या नगरमें एक ग्वालाके घर नववयसे युक्त भैसे हुए। आकर और युद्ध कर विनाशको प्राप्त हुए, फिर उसी नगरमें आवे पलमें जीतनेवाले भेड़े हुए। दया रहित वरषेण राजाके सम्मुख वे दोनों लड़कर ये मुर्गे हुए हैं। मैं याद करता हूँ और देखनेवालोंके पूर्वभव कहता हूँ। जम्बूद्वीपके विजयार्ध पर्वतपर कनकपुर नामका नगर है। उसमें विद्याधर गरुडवेग और उसकी पत्नी धृतिपेणा थी। उसके दिवितिलक और चन्द्रतिलक नामके अच्छे हृदयके मित्र थे।

घत्ता—जहाँ भ्रमर फूलोंपर लुब्ध हो रहे हैं ऐसे सिद्धकूट जिनवर मन्दिरसे उन्हीने एक मुनिको देखा और उनसे अपने जन्मान्तर पूछे ॥३॥

४

ऋषि कहते हैं—जिसमें घातकी वृक्षका चिह्न है, ऐसे घातकीखण्ड द्वीपकी पूर्वदिशामें ऐरावत क्षेत्र है। उसमें राजा अभयघोष था। जैसे उसके हृदयमें लक्ष्मी थी, वैसे ही उसकी

३. १. AP वणि । २. A^० तंबकण्णत गय । ३. A मय । ४. A उररय लद्धजय; P उरर पलद्धजय; T कुररय मेघो, K कुरर मेघो, पलद्धजय प्रलब्धजयो । ५. AP चूलिय हूया । ६. AP^० सिहरितिरि । ७. AP पिय । ८. A कुसुमलुद्ध ।

मयरद्वयवाणवरोल्लियहि	जाया सुय वेणिण पियल्लियहि ।	
णामें जणि जाणिय जय विजय	णं कामवेव गिम्मैयरधय ।	५
विज्जाहरगिरिदाहिणइ तडि	मंदरपुरि सरसु णेंदंतणडि ।	
तहिं संखु खयरु तहु जय घरिणि	सुय पुहइतिलय ससिमुहि तरुणि ।	
दिण्णी जयविजयजणेरयहु	तहु अवर ण रुषइ तहि रयहु ।	
संवरुळरंति कइयवणिलय	णामेण विसारि चंदतिलय ।	
पभणइ सुवण्णतिलयहि तणचं	वणु फुल्लिचं फलियचं घणघणचं ।	१०
आवेहि जाहुं जोयहि णिवइ	ता चवइ सवत्ति विरुद्धमइ ।	
मेरचं वणु जोवणु किं ण सुहं	जे जोर्यहि दूयहि तणचं सुहं ।	
घत्ता—ताहि वयणु अवगण्णिवि	पडिचक्खु जि बहु मण्णिवि ।	
गड महिवइ वणजत्तहि	मलिवि माणु भृगणेत्तहि ॥४॥	

५

साहीण काहि भत्तारदय	सुमईगणिणिहि सा सरणु गय ।
करपंकयलुहियभालतिलय	तवचरणि लग्ग पुहईतिलय ।
रिसिणाहहु संजमवयधरहु	पहुणा किउ भोयणु दमवरहु ।
अचलोइवि पंचमहचमुयइ	सुरकिंणरायारायथुयइ ।

स्वर्णतिलका नामकी गृहिणी थी जो मानो कामदेवकी रतिकामिनी थी। कामदेवके वाणोंकी पंक्ति उस प्रियासे दो पुत्र उत्पन्न हुए जो जगमे जय-विजयके नामसे जाने जाते थे, जो मानो मकरध्वजसे रहित कामदेव थे। विजयार्ध पर्वतके दक्षिण तटपर जिसमे नट मधुर नृत्य करते हैं ऐसे मन्दरपुरमे शंख नामका विद्याधर राजा था। उसकी जया नामकी पत्नी थी और पुत्री पृथ्वीतिलका जो तरुण और चन्द्रमुखी थी। वह जय-विजयके पिता (अभयघोष) को दी गयी। उसमे अनुरक्त उसे कुछ और अच्छा नहीं लगता था। एक वर्ष तक वे कपटगृहमे रहे। तब चन्द्रतिलका नामकी दूती उससे कहती है कि स्वर्णतिलकाके उपवनमे खूब फूल और फल लग गये हैं। आइए और उसे देखने चलिए। तब विरद्धमति सौत (पृथ्वीतिलका) कहती है, “क्या मेरा यौवनरूपो वन शुभ नहीं है? जिससे दूती (चन्द्रतिलका) का मुख देखना चाहते हो।”

घत्ता—उसके वचनोकी उपेक्षा कर प्रतिपक्षको ही मानकर तथा उस भृगुनेत्रीके मानको मलिन कर राजा वनयात्राके लिए चला गया ॥४॥

५

प्रिय की दया किसीके लिए भी स्वतन्त्र नहीं होती (अर्थात् पतिकी दयापर किसीका एकाधिकार नहीं होता)। वह (पृथ्वीतिलका) सुमति नामकी आर्याकाकी शरणमे चली गयी। अपने हाथसे उसने मस्तकका तिलक पोंछ डाला और तपश्चरणमें लग गयी। राजा अभयघोषने संयमवरके धारो मुनिनाथ दमवरको आहारदान दिया। सुरो, किन्नरों और नागराजोसे संस्तुत

४. १. AP^० वाणविरोल्लियहि । २. AP णं मयरधय । ३. AP मंदिरपुरि । ४. A णवत्ति णडि । ५. AP कइयवणिलय । ६. A फलियचं घणचं घणलं; P फलिलं घणघणलं । ७. A नृवइ । ८. A जं जोयहि; P जं जायहि । ९. P भिगणेत्तहि ।

- ५ अप्पुं मोहँ ण विडंबियं चं
 ईदियपडिबलु रणि णिज्जियं चं
 सुउ सच्चभावे सम्मयणिरउ
 सिमु तासु वे वि तेत्थु जि अमर
 दिवि मरिवि वे वि ते भाइवर
- १० मुवि जाया गरुलवेयधणहि
 तं सुणिवि कुमारहि बोळियं चं
 भणु अभयघोसु उप्पणु कहि
 जइ चचइ पुंडरिक्किणिपुरिहि
 घत्ता—तणु मेळ्ळिवि तियसाहिउ
- १५ जो सक्के पणविज्जइ
- तहि अच्छइ देउ सचंधुयणु
 परिभमणणमणउड्डाणणिहि
 दिव्वासं एहउ वज्जरिचं
 गय वेण्णि वि चिरज्जणणासयहु
 ५ तायत्तणु तहु ससुयत्तणं
- ससुएण वउ जि अवलंबियं चं ।
 अरहत्तंणामु तेणज्जियं चं ।
 हुउ अंतिमकप्पि पुरंदरउ ।
 जाया अंछरकरधुयचमर ।
 तिलयंतिम चंद विचंद णर ।
 जाउडियजडिलमंडियथणहि ।
 सुणि जम्मंतरु उवेळ्ळियं चं ।
 पिउ वसइ जहि जि गच्छमि तहि ।
 णंदणु घणमालिणिसुंदरिहि ।
 जायउ तेलुक्काहिउ ॥
- सो जिणु कि वण्णिउजइ ॥५॥
- ६
 जोयंतु कूडुकुडयरेणु ।
 चिंतंतु घोरसंसारविहि ।
 तं सुणिवि खयरभायर तुरिं चं ।
 पयडेप्पिणु अगइ जणसयहु ।
 कम्माणुबंधविणियत्तणं चं ।

पांच आश्चर्योंको देखकर उसने अपनेको मोहसे विखण्डित नहीं होने दिया । अपने पुत्रोंके साथ व्रत ग्रहण कर लिये । इन्द्रियरूपी शत्रुओंको उन्होंने जीत लिया । उसने बर्हत् प्रकृतिका वन्ध किया । सम्यग्दर्शनमे निरत वह सद्भावसे मर गया और अन्तिम स्वर्गमे इन्द्र हुआ । उसके वे दोनों पुत्र भी जिनके ऊपर अप्सराओं द्वारा चमर ढोले जाते हैं, ऐसे देव हुए । वे दोनों भाई स्वर्गमे मरकर चन्द्रतिलक और विचन्द्रतिलक नामसे, जिसके स्तन केशरकी जटिलतासे मण्डित हैं, ऐसी गरुडवेगा धन्यासे उत्पन्न हुए । मुनि द्वारा प्रकट किये गये जन्मान्तरको सुनकर कुमारोंने पूछा—मुनिवर बताइए अभयघोष कहाँ उत्पन्न हुए ? जहाँ पिता हैं, हम वही जायेंगे ? मुनिवर कहते हैं—पुण्डरीकिणी नगरीकी रानी मेघमालिनीका पुत्र—

घत्ता—देवराज शरीर छोड़कर त्रिलोकराज हो गया है । जो इन्द्रके द्वारा प्रणम्य है, उन जिनका वर्णन किस प्रकार किया जाये ? ॥५॥

६

वह देव इस समय बन्धुजनोंके साथ कूट कुक्कुटोंका युद्ध देखते हुए, जिसमे परिभ्रमण नमन और उडान की विधि है, ऐसी घोर संसार विधिकी विचार करते हुए वही पुण्डरीकिणी नगरमें स्थित हैं । दिगम्बर मुनिने यह कहा कि वे दोनों विद्याधर भाई यह सुनकर अपने पुराने पिताके घर गये । सेकड़ों लोगोंके सामने उनका पुत्रत्व सहित पिताका कर्मानुबन्धका

५. १. AP अरहंतु । २. AP वे वि तासु । ३. P जाउडयु । ४. A गच्छामु; P गच्छमि । ५ AP

तइलोवका ।

६. १. A रयणु ।

गुणवंतहु गुत्तिगुत्तमणहु
 गय णिन्वाणहु खरतवतवण
 भउ णिसुणिवि पक्खिहि कंदियं
 किमिपिंडु ण भक्खिउ सरिवि गय
 वंतरसुर जाया भूयकुलि
 अण्णेक्कु भूयरमणतवणि
 तहिं जहिं अच्छेइ सुउ घणरहहु

घत्ता—भणित्तं तेहिं जडपक्खिहिं अम्होहिं किमिउलभक्खिहिं ॥
 तुच्छु पसाएं आयउं

त्रैच लइउ णविवि गोवद्धणहु ।
 ते चंदविचंदतिलय सवण ।
 अप्पाणउं गरहिउं णिंदियउं ।
 जिणवयणें दुक्खियवेल्लिहय ।
 तहिं एक्कु देववणि गिरिगुहिलि ।
 भूयाहिव वेण्णि वि पत्त खणि ।
 संदरिसियविमलणाणपहहु ।

१०

७

मेहरहदेव पइं दिण्णु सुहुं
 मणुउत्तरमहिहरपरियरिउं
 पणयाललक्खजोयणविउल्लु
 उवचारहु पडिउवयारु किह
 दुल्लंघु सदेवहं दाणवहं
 तां इच्छिवि कीलाभवणु मणि

आवहि विभाणि आरुहहि तुहुं ।
 सरिसरिक्कुलसिहरिअलंकरिउं ।
 अवलोयहि मणुयखेतु सयलु ।
 तुह किञ्जइ जसु जगि रिद्धिसिह ।
 अहिउंदिण्णु वरसाणवहं ।
 आरुल्लउ सुंदरु सुरभवणि ।

५

निवर्तन प्रकट कर गुणवान् गुप्तियोसे गुप्त मन गोवर्धन मुनिको प्रणाम कर उन्होंने व्रत ग्रहण कर लिये । प्रखर तप करनेवाले वे दोनो चन्द्रतिलक और विचन्द्रतिलक श्रमण निर्वाणको प्राप्त हुए । अपने जन्मान्तरोंको सुनकर पक्षियोने आक्रन्दन किया और स्वयं की गर्हा एवं निन्दा की । उन्होने क्रमियोके समूहको नहीं खाया । वे मर गये । पापरूपी लतासे आहत वे दोनों जिनवरके शब्दोंसे भूतकुलमे व्यन्तरदेव हुए । उनसेसे एक देववनकी गिरिगुहामे और दूसरा भूतरमणवनके भीतर । वे दोनों भूत राजा एक क्षणमें वहाँ पहुँचे जहाँ विमल केवलज्ञानकी प्रभाको प्रगट करनेवाले धनरथका पुत्र था ।

घत्ता—कृमिकुलका भक्षण करनेवाले उन जड़ पक्षियोने कहा कि आपके प्रसादसे हम-
 लोयोगो दिव्य जन्मान्तर हुआ है और हम यहाँ आये हैं ॥६॥

७

हे मेघरथ देव, तुमने मुझ दिया है। आओ, तुम विमानपर चढ़ो, मानुषोत्तर पर्वतसे घिरा हुआ सर सरित् कुल पर्वतोंसे अलंकृत पीतालोस लाख योजन विशाल इस समस्त मनुष्य लोकको देख लो। तुम्हारे द्वारा जगमे जिसकी ऋद्धिका प्रकर्ष किया जाता है उस उपकारका प्रतिकार-
 क्या हो सकता है? देवताओं सहित दानवोंको जो दुर्लभ्य है और जो उत्तम मनुष्योंके द्वारा वन्दनीय है। ऐसे वह अपने मनमे क्रीड़ा भ्रमणकी इच्छा कर देवविमानमे बैठ गया। अपने मित्रों,

२. AP वउ । ३. A दुक्खिय वेण्णि हय, P दुक्खियवेल्लिहय । ४. AP सुउ अच्छइ । ५. A अम्हं ।

६. AP दिब्बु ।

७. १. AP विवाणि । २. P मणुसुत्तर° । ३. P° परियरउं । ४. AP सरिसरि° । ५. P तो ।

णिर्यसह्यरकिंकरगुरुसहिष
गाहि सुरहरि जंति विविहपुरइं
घता—एहु भरहु अवलोकहि
१० एह दिव्व गंगाणइ

कुक्कुडदेविहि भत्तिइ महिउ ।
दावंति देव देसंतरइं ।
इहु हिमवंतु विवेयहि ॥
एह सिंधु मंथरगइ ॥७॥

इहु दीसइ णिम्मल्लु पोमसरु
हइमवँउ एहु पूरियदरिउ
तुहिणइरि एहु गरुयउ अवरु
५ हिरिदेवि एत्थु णिच्चु जि वसइ
इहु एत्थु वहइ णामेण हरि
इहु मंदरु ए गयदंतगिरि
इहु णिसहु णाम महिहरु पवरु
दिहिदेवि एत्थु विरइयभवणं
एयाइं विदेहइं दोण्णि पिय
१० इहु णीलिहि केसरि णाम दहु

सिरिदेविसहिउ रंजियंभमरु ।
वररोहिर्यरोहियाससरिउ ।
अण्णेक्कु महासयवत्तसरु ।
हरिवरिसु एउ सग्गु वि हसइ ।
अण्णेक्कु पेक्खु हरिकंतसरि ।
इहु सुरंकरु उत्तरकरु संसरि ।
इहु जोवहि णिव तिगिच्छिसरु ।
अच्छइ सुरंरोयणिहत्तमेण ।
सरि सीया सीओया वि थिय ।
इहु दीसइ किंतीदेविसहु ।

अनुचर और गुरुजनों सहित उसकी कुक्कुट देवोने भक्तिपूर्वक पूजा की। आकाशमे देवविमानमें जाते हुए, देव विविध नगर और देशान्तर दिखाते हैं।

घता—इस भरतक्षेत्रको देखो। इसे हिमवन्त (हिमवत क्षेत्र) जानो। यह दिव्य गंगा नदी है, और यह मन्दगामिनी सिन्धु नदी है ॥७॥

यह निर्मल पद्म सरोवर है, जो श्रीदेवीसे सहित और भ्रमरोसे गुंजित है। घाटियोसे भरा हुआ यह हैमवत पर्वत है, ये श्रेष्ठ रोहित और रोहितास्या नदियाँ हैं। यह दूसरा महात्त हिमगिरि है, और दूसरा महापद्मसरोवर है, इसमे ह्यो देवी नित्य रूपसे निवास करती है। यह हरिवर्ष है, जो स्वर्गका उपहास करता है? यहाँ हरि नामकी नदी बहती है और दूसरी हरिकान्ता नदी देखो। यह मन्दराचल है। यह गजदन्त गिरि है। यह नदियों सहित उत्तरकुरु और दक्षिणकुरु हैं। यह निषध नामका विशाल पर्वत है। हे राजत्त! यह तिगिच्छ सरोवर है। यहाँ घृतिने अपना भवन बना रखा है। सौधर्म स्वर्गके इन्द्रमें अपना मन करनेवाली वह स्थित है। हे प्रिय, ये दोनों विदेह हैं और ये सीता और सीतोदा नदियाँ स्थित हैं। ये नील और केशर नामके सरोवर हैं।

६. AP णिउ सह्यर । ७. A विविप्फुरइं । ८. K देसंतइं ।

८. १. Mss. reads एहु and इहु promiscuously here । २. A रंजियं । ३. A हइमवइ । ४. P रोहिणि रोहियासउ सरिउ । ५. A तुहिणयरि । ६. P reads this line after 8 b. ७. A सुक्कु । ८. A सरि । ९. AP अवणु । १०. A सुयरायं । ११. AP गिहितमणु । १२. A केचइ । १३. A ओ दीसइ; P एहु दीसइ । १४. A सुहु ।

इहै रम्भु एउ गङ्गारिवर
इहु रम्भिघैराहरु पुंढरिउ
घत्ता—बुद्धिदेवि इहै अच्छइ
जिणवरसेवासिद्धउं

णरकंत एह पवहइ अवर ।
सरु एत्थु देव पाणियभरिउं ।
जगि माणउ जो पेच्छइ ॥
तेण णयणफलु लद्धउं ॥८॥

९

णिव खेत्तु हिरण्वंतु णियहि
रुप्यकूल वि इह एम गय
सो एहु सिहरिगिरि सिहरपिउ
लच्छीदेविहि रुषइ रमइ
रत्तारत्तोयसरिहिं सहिउं
फुल्लियतरुमालापरिमलइं
पिच्चति कलमकर्यलीहलइं
कच्छाइयाइं विसयंतरइं
दरिसंति अमर जोयंति णर
घत्ता—कंदरुर्दरिणीलियसुर
अकयइं मणियरतंबइं

सोवण्णकूलसरिजलु पियहि ।
जहि कुद्धहि सीहहिं हस्थि हय ।
सरु एत्थु महापुंढरिउ हिउ ।
ओहच्छइ इह वासरु गमइ ।
अइरावउ एउं खेत्तु कहिउं ।
वरिसंति मेह धारोञ्जलइं ।
णोच्चंतमोरपिच्छुञ्जलइं ।
खेमाइयाइं णयरइं वरइं ।
चिन्हइंयहियय कंपविचकर ।
जोइवि णाणागिरिवर ॥
वंदि वि जिणपडिंविइं ॥९॥

५

१०

यह कीर्तिदेवीके साथ दिखाई देते है, यह रम्यक पर्वत है। यह श्रेष्ठ नारी नदी है और यह दूसरी नरकान्ता नदी बहती है। यह रुक्मी महीघर है, यह पुण्डरीक नामका है देव, जलसे भरा हुआ सरोवर है।

घत्ता—यहाँ बुद्धिदेवी है, जो विन्वके मानको देख लेती है। उसने जिनवरकी सेवासे सिद्ध नेत्रोके फलको प्राप्त कर लिया है ॥८॥

९

हे नृप, यह हैरण्यवत क्षेत्र देखो। और स्वर्णकूला नदीका जल पियो। यह रूप्यकूला नदी इस प्रकार बहती है, जहाँ क्रुद्ध सिंहोके द्वारा हाथी मारे जाते हैं? यह वह, शिखर प्रिय शिखरी पर्वत है। यह महापुण्डरीक सरोवर है, जो लक्ष्मीदेवीके द्वारा चाहा जाता और रमण किया जाता है। यहाँ रहकर वह अपने दिन व्यतीत करती है? रक्का रकोदा नदियोके साथ यह ऐरावत क्षेत्र कहा जाता है। जहाँ मेघ खिली हुई वृक्षमालासे सुगन्धित धाराजलोंको वर्षा करते हैं। जहाँ धान्य और कदली फल पकते हैं। अपने पक्षोसे सुन्दर मयूर नाचते रहते हैं। जिसमे कच्छादि देशान्तर और क्षेमादि नगर हैं। देवता लोग दिखाते है और मनुष्य विस्मित हृदय तथा अपना हाथ हिलाते हुए देखते हैं।

घत्ता—जिसके पहाड़ोकी घाटियोमे देव क्रोड़ा करते हैं ऐसे नाता गिरिवरोंको देखकर तथा अकृत्रिम मणिकरणोसे लाल जिन प्रतिमाओकी वन्दना कर ॥९॥

१५. AP पृष्ठ, probably p is confounded with ए। १६. A रम्भि। १७. AP एह।

१. A वरिसंत। २. A जलधाराइं। ३. A केलीं। ४. AP णच्चति। ५. P पिच्छुञ्जलइं। ६. P दरिसंति य अमरं। ७. P विभइयं। ८. A दरकेलियं।

१०

परखेतु गिरीसरिमालियं
तद्गुत्परि मणुयहं णस्थि गइ
पडिआया घणरहनृवणयह
पुञ्जिवि कुमारु गय तियस तहिं
५ संसार असार विवेइयत्
घणरहिण पुत्तु हकारियत्
लोयंतिएहिं उहीवियत्
जाणं माणिकविआइएण
६ गइ वणि किउ देवं तवचरणु

१० घत्ता—भृगोयखगरायहिं
र्णमित्त जिण्णिदु ह्यत्तिइ

मणुसुत्तु जाम णिहालियत् ।
पल्लु सविम्हंयभिण्णमइ ।
जयजयसइ पइसैरिवि घरु ।
णदणवणि णियणयराइं जहिं ।
इंदियकंखइ पडिचोइयत् ।
मेहरहु रज्जि वइसारियत् ।
वेरग्गु तेणं णिक भावियत् ।
णरखयरसुरिंदुआइएण ।
उप्यायत् केवळु मलहरणु ।
चउविहदेवणिकायहिं ॥
तणपं जाइवि भत्तिइ ॥१०॥

११

अण्णहिं दिणि वणि तरुकोमलइ
आसीणत् राणत् मेहरहु
विज्जाहरविज्जाचोइयत्
तं ताहं ण वच्चइ पँत्त वि किह

पियमित्तइ समत्तं सिलायत्तइ ।
जावत्तइ ता ढक्कंतुं णहु ।
उत्परि विमंणु संप्राइयत् ।
वाथरणवियरणु जडहुं जिह ।

१०

पहाड़ों और नदियोंकी मालासे घिरा हुआ जब उन्होंने मानुषोत्तर पर्वत देख लिया तो उसके ऊपर मनुष्योंकी गति नहीं है। विस्मयसे परिपूर्ण मति वह लौट आया। वे पुण्डरीकिणी नगर आ गये। और जय-जय शब्दके साथ घरमें प्रवेश कराकर तथा कुमारकी पूजाकर देवता लोग वहाँ गये। नन्दनवनमें उनके अपने नगर थे। इन्द्रियोंकी आकांक्षासे प्रेरित उसने जान लिया कि संसार असार है। घनरथने अपने पुत्रको पुकारा और मेघरथको राज्यपर बैठाया। लौकान्तिक देवोंने प्रेरणा दी। उन्हें वैराग्य बहुत अच्छा लगा। माणिक्योंसे शोभित मनुष्य विद्याधर और देवेन्द्रोंके द्वारा उठायी गयी पालकीसे वह वनमें गये और देवने वहाँ तपस्चरण किया। उन्हें मलका नाश करनेवाला केवलज्ञान उत्पन्न हो गया।

घत्ता—मनुष्यों और विद्याधरों तथा चार प्रकारके देवनिकायों और पुत्रने पीड़ाको दूर करनेवाली भक्तिसे जाकर जिनकी बन्दना की ॥१०॥

११

दूसरे दिन वृक्षांसे कोमल वनमें जाकर चट्टानपर प्रियमित्राके साथ जब राजा मेघरथ बैठे हुए थे कि इतनेमें आकाशको ढंक्ता हुआ, विद्याधरकी विद्यासे प्रेरित एक विमान वहाँ आया। वह उन लोगोंके ऊपरसे एक पग भी उसी प्रकार नहीं चल सका जिस प्रकार मूर्ख लोगोंमें

१०.- १. A मणुत्तव । २. AP सविभय । ३. AP णिवणयव । ४. A पइसैवि; P पइसववि । ५. A वणणिय । ६. AP तंहि । ७. A वणु । ८. AP णवित्त ।

११. १. P ढंक्तु । २. A विज्जाहव । ३. AP विवाणु संप्राइयत् । ४. P वच्चइ उवरि किह ।

आरैट्टु वड्डियभमरिसउ
महियलि कीळंतु रत्तु सुयणु
उत्थल्लिवि चळ्ळिमि एउ खलु
इय चित्तिवि कुड्ड अकारणइ
तलि पइसिवि च्चौलिय तेण सिल

खेयरु अवलोयइ वसदिसउ ।
दिट्टुं उवविट्टुं णरमिहुणु ।
अणुवुवच विमाणणिरौहफळु ।
विज्जइ पायालवियारणइ ।
डोल्लिउ बहुवर थरहरिय इल ।

घत्ता—अरिवरु^१ तणु व वियप्पिवि सिल चरणयलें चप्पिवि ॥ १०
मेहरहें^२ पडिपेत्तिय तासु जि मत्थइ चल्लिय ॥११॥

१२

संचलहुं ण सकइ सो खयरु
तहु धरिणि भणइ उद्धरहि लहुं
मा मारहि रमणु मेहुं तणउ
तं^३ गिसुणिवि करपल्लवि धरिवि
पहु भणइ म मेत्तहि करुणसरु
विहलुद्धारणि पसरियहरिस
थिउ चीलावसु ओणेल्लमुहु

आकंइ रवपूरियविधरु ।
दे देहि वप्प पइमिक्खं महं ।
तुहुं देवे वइरिविद्वावणउ ।
कड्डिउ कारुणं दय करिवि ।
लइ अस्मि तुहारउ एहु वरु ।
पिसुणहं मि खमंति महापुरिस ।
णहैयलु अवलोइवि जायंदुहु ।

व्याकरणका विचार । जिसे ईर्ष्या बढ रही है ऐसा विद्याघर क्रुद्ध हो उठा । वह चारों दिशाओंमें देखता है । उसने धरतीतलपर क्रीडा करते हुए स्वजनोसे रहित बैठे हुए मनुष्यके जोड़ेको देखा । मैं इस दुष्टको उछालकर फेंकता हूँ, मेरे विमानके निरोधका फल यह अनुभव करे यह सोचकर वह अकारण क्रुद्ध हो उठा, पाताल विदारण विद्यासे तलमें प्रवेश कर उसने शिलातल चलायमान कर दिया । वधूवर डोल उठे और धरती हिल उठी ।

घत्ता—शत्रुको तिनकेके बराबर समझते हुए शिलातलको पैरसे चाँपकर मेघरथने उसे उल्टा प्रेरित किया और उसीके मस्तकपर फेंक दिया ॥११॥

१२

वह विद्याघर चल नहीं सका । शब्दसे विवरोंको भरता हुआ वह रोता है । तब उसकी गृहिणी (विद्याधरी) कहती है—“श्रीघ्न उद्धार कीजिए । हे सुभट, मुझे पतिकी भीख दीजिये । प्रियकी हत्या मत कीजिए । हे देव, आप शत्रुओंका विदारण करनेवाले हैं ।” यह सुनकर उसने दया कर कारुण्यसे अपनी हथेलीपर धारण कर उसे निकाला । प्रभु मेघरथ कहते हैं—“हे माँ, तुम करुण विलाप मत करो ये लो तुम्हारा वर ।” विकल जनोका उद्धार करनेमें जिनमें हर्षका प्रसार होता है, ऐसे महापुरुष दुष्टोंको क्षमा नहीं करते । लज्जाके वशीभूत वह विद्याघर अपना मुख

५. A आरुट्टु । ६. A चत्तपुयणु । ७. A घत्तलिवि एहु; P घत्तलिमि एउ । ८. AP विदाणं ।

९. P विज्जाइ । १०. A तेणुक्कइय सिल । ११. A अरिवर । १२. A पडिमेत्तिय ।

१२. १. A महं तणउ । २. AP देउ । ३. P तं । ४. AP ओणेल्लमुहु । ५. AP णहैयरु । ६. A जायंदुहु ।

पियमित्तइ णाहु पपुच्छियत्त
 तं गिमुणिवि ओहिणाणयणु
 १० घत्ता—धादइसंडप्रावइ
 रामगुत्तु णुवु हौत्तत्त

कहु तणत्त एहु कहिं अच्छियत्त ।
 अक्खइ णैरवइ पंडुल्लवयणु ।
 तहिं संखत्तरि सुहावइ ॥
 संखिणिरमणीरत्तत्त ॥१२॥

१३

५ कजियसहलणिरंतरइ
 मुणि सव्वगुत्तु आसंधियत्त
 जिणगुणत्तववासं खैविवि तणु
 दिहिसेणहु दाणु पयच्छियत्त
 विरएप्पिणु परमेद्धिहि ण्हवणु
 संगासें मुत्तं बंभेदु हुत्त
 सीहरहु एहु खयराहिवइ
 इहु पुण्णवत्तु जयलच्छिधत्त

संखइरिगुहाकुहरंतरइ ।
 दोहिं मि संसार विलंघियत्त ।
 जिणचरणकमलि थिरुं करिवि मणु ।
 पंचविहु वि चोळ्ळु णियच्छियत्तं ।
 पणविवि समाहिगुत्तु समणु ।
 कालेण णवर तेत्थाउ चुत्त ।
 देवहुं दुज्जत्त तिहुवणविलइ ।
 मइं जित्तत्त तो किं मब्बु मत्त ।

१० घत्ता—अंगइ गेण्हिं वि छंडिवि चिर संसैरि विहंडिवि ॥
 दुल्लइभोयाकंखिणि जिणतवेण सा संखिणि ॥१३॥

नीचा करके रह गया। आकाशतल देखकर उसे बहुत दुख हुआ। प्रियमित्राने अपने स्वामीसे पूछा, "यह किसका है और कहाँ रहता है?" यह सुनकर अवधिज्ञानरूपी आँखवाला प्रफुल्लमुख राजा कहता है।

घत्ता—घातकीखण्डके ऐरावत क्षेत्रमें शंखपुर नगर शोभित है। उसमें अपनी शंखिनी भायामिं अनुरक्त रामगुप्त नामका राजा था ॥१२॥

१३

जिसमें निरन्तर सिंहोंकी गर्जना हो रही है, ऐसी शंखगिरि गुफाके भीतर मुनि सर्वगुप्त आकर ठहरे। उन दोनों (राजा रामगुप्त और शंखिनी) ने संसारका त्याग कर दिया। जिनगुप्तों (पंचकल्याणकोंके अनुसार) उपवाससे अपने शरीरको क्षीण कर तथा जिनवरके चरण-कमलोंमें अपना मन स्थिर कर धृतिसेनको आहार-दान दिया और पाँच प्रकार आश्चर्योंको देखा। पाँच परमेष्ठियोंका अभिषेक कर तथा समाधिगुप्त मुनिको प्रणाम कर संन्याससे मरकर ब्रह्मेन्द्र देव हुआ। समय आनेपर वहाँसे च्युत होकर विद्याधरपति सिंहरथ हुआ है जो अपनी त्रिलोक-विजयमें देवोंके लिए भी दुर्लभ है। यह पुण्यवात् तथा विजय लक्ष्मीका पति भेरे द्वारा जीत लिया गया है। तो भी मुझे मद क्यों है।

घत्ता—शरीर और गृहका त्याग कर चिरकाल तक संसारमें परिभ्रमण कर तथा दुर्लभ भोगोंकी आकांक्षा रखनेवाली वह शंखिनी भी जिन तपसे ॥१३॥

७. AP महिवइ । ८. A पफुल्लवयणु; P पफुल्लवयणु । ९. AP णित् ।
 १३. १. A खवियत्तणु । २. AP संणिहित मणु । ३. A गिण्हइं । ४. A संसार ।

१४

गय सगह पुणु वेयैद्वधरि
विज्जाहृ इवकेव वसइ
सुप्पह उप्पणणी तौहं सुय
एयइ पिययमु ओलंगियउ
णिट्ठुणिवि भँवि संसरिउं विउलि
घणरहजिणकमकमलउं मँहिउं
पियमित्तवेयर्गणणीकहिउ
थिय मयणवेयचिरईइ किह
दक्खालइ लोयहुं णायवहु
घत्ता—णंदीसरि संपत्तइ
दंसणु णाणु समिच्छइ

दाहिणसेडिहि वसुमालपुरि ।
पिय मयणवेय तहु अत्थि सइ ।
ओहच्छइ वालमुणालमुय ।
भत्तारभिकख हउं मग्गियउ ।
सुउ थविवि सुवण्णतिलउ सरउलि ।
सीहरहँ मुणिचरित्तु गँहिउं ।
संजमु जमु अवलंविवि सहिउ ।
कइमइ दुक्करकहरीण जिह ।
तहिं रज्जु करइ सो मेहरहु ।
जिणु झायंतु सच्चित्तइ ॥
उववासिउ जाँवँच्छइ ॥१४॥

१०

१५

भवभावपवेवियसव्वतणु
तावेक्कु कवोउ पराइयउ
किर झ ति शँडप्पिवि लेइ खलु

चलैमरणुत्तासिउ सरणमणु ।
तहु पच्छइ गिद्धु^३ पराइयउ^३ ।
णियवइरिहि लुंचिवि खाइ पलु ।

१४

स्वर्ग गयी । फिर विजयार्ध पर्वतकी दक्षिण श्रेणीके वसुमालपुरमें इन्द्रकेतु विद्याधर निवास करता है, उसको पत्नी मदनवेगा सती है । वह उन दोनोंकी सुप्रभा कन्या उत्पन्न हुई । बालमृगालके समान बाहुवाली वह, यह स्थित है । इसने अपने पतिकी सेवा की है, और मुझसे पतिकी भीक्ष मांगी है । विपुल संसारमें परिभ्रमणको सुनकर अपने पुत्र स्वर्णतिलकको गद्दीपर स्थापित कर घनरथ जिनवरके चरणकमलोंकी पूजा कर सिहरथने मुनि दीक्षा स्वीकार ली । प्रियमित्रा आर्थिकाके द्वारा कहे गये संयम और धर्म तथा स्वहितका अवलम्बन कर विरतिसे मदनवेगा उसी प्रकार स्थित हो गयी जिस प्रकार कविकी मति दुष्कर कथासे शान्त हो जाती है । वहाँ मेघरथ लोगोंको न्यायपथ दिखाता है और इस प्रकार राज्य करता है ।

घत्ता—नन्दीश्वरपर्वत प्राप्त होनेपर जिनका अपने मनमें ध्यान करते हुए जबतक वह उपवास करता है और दर्शनज्ञानकी इच्छा करता है ॥१४॥

१५

कि इतनेमें जिसका जन्मके भावसे सारा शरीर प्रकम्पित है, जो चंचल मरणसे पीडित है, और जिसका मन शरणके लिए है, ऐसा एक कवूतर वहाँ आया । उसके पीछे एक गीध आया ।

१४. १. A वेयद्वधरि । २. A तासु । ३. P has तं before णिसुणिवि । ४. A भव संसरियउ; P भवि संसरियउं । ५. AP कमजुयलउं । ६. P महियउं । ७. P गहियउं । ८. A गणिणो । ९. A सद्ध । १०. A जा मच्छइ; P जामच्छइ ।

१५. १. AP चलु । २. AP सेणु । ३. A क्षवेप्पिणु ।

५ ता पक्खि णरिं दे वारियत्त
 किं मारहि वारहि अप्पणत्तं
 ता पुच्छइ दढरहु देव किह
 पहु अक्खइ मंदरत्तत्तइ
 पुरि पत्तमिणिलेत्तइ मंदगइ
 धणमित्तु तासु वल्लहु तणुत्त
 १० मुइ वणिवरि भायर जायरइ
 ते लुद्ध मुद्ध सुय वे वि जण

घत्ता—इहु मारइ इहु णासइ
 णहि एत्ते हत्तं दिट्ठत्त

पइ एहु भवत्तरी मारियत्त ।
 मा पावहि भँवि दुहुं घणघणत्तं ।
 महुं कइहि कहाणत्तं वित्तु जिह ।
 खेत्तं तरि सोक्खणिरत्तरइ ।
 धेण सागरसेणहु अमियमइ ।
 पुणु जायत्त ण्दिसेणु अणुत्त ।
 अवरोप्परु पँहणिवि घणहु कइ ।
 जाया खग मारणदिण्णखण ।
 भीयत्त रक्ख गवेसइ ॥
 मञ्जु जि सरणु पइट्ठत्त ॥१५॥

१६

अप्पोणु जि भक्खिवि जणु जियइ
 इहु दीणु इहु णिरु भुक्खियत्त
 किं किज्जइ खगु दिज्जइ जइ वि
 तहि अवसरि कुंजलमत्तत्तत्त
 ५ जइ देसि ण तो गिद्धहु पत्तत्त

ण णिहालइ णिवत्तंती णियइ ।
 इय चित्तिवि रात्त द्रवत्तियत्त ।
 णत्त लब्भइ धम्मलालु तइ वि ।
 अवरयलि थित्त भासइ अमरु ।
 पलि दिण्णइ पारावयहु खत्त ।

वह दुष्ट उसे झड़पकर ज्वलक ले और अपने शत्रुका मांस लौचकर खाये, तबतक राजाने उसे मना किया कि तुमने इसे जन्मान्तरमें मारा था, अब क्यों मारते हो अपनेको रोको, संसारमें सघन दुःखोंको मत प्राप्त करो। तब वह सिंहरथ देव पूछता है कि जिस प्रकार मेरा कथानक है, उस प्रकार बताइए। राजा कहता है कि मन्दराचलके उत्तरमें सुखसे निरन्तर परिपूर्ण क्षेत्रान्तर (ऐरावत) की पविनीखेट नगरीमें सागरसेन वैश्य था। उसकी पत्नी अमितगति थी। घनभिन्न उसका प्रिय पुत्र था, फिर छोटा पुत्र नन्दिवेण हुआ। सेठकी मृत्यु होनेपर जिनमें लड़ाई चल पड़ी है, ऐसे दोनों भाई घनके लिए एक दूसरेपर प्रहार करते हैं। वे दोनों लोभी और मूर्ख मृत्युको प्राप्त होते हैं। मारनेमें अपना समय देनेवाले वे पक्षी हुए।

घत्ता—यह मारता है, यह भागता है, डरा हुआ रक्षाकी खोज कर रहा है। आकाशमें जाते हुए इसने भूले देखा और मेरी ही शरणमें आ गया ॥१५॥

१६

जान एक दूसरेका भक्षण कर जीवित रहता है, अपने ऊपर आती हुई नियतिको नहीं जानता। यह दीन है, यह अत्यन्त भूखा है—यह सोचकर राजा अत्यन्त भयभीत हो उठा। क्या किया जाय? यद्यपि यह खग दे दिया जाये तो भी इसमें धर्म लाभ नहीं पाया जा सकता। उस अवसरपर कुण्डल और मुकुट धारण किये हुए आकाशमें स्थित एक देवने कहा—“यदि नहीं

४. P भवि भवि दुहुं घणत्तं । ५. P वणिसागरं । ६. A पहरिवि । ७. P दिण्णमण ।

१६. १. A एत्त । २. A दुवक्खियत्त; P दुवक्खियत्त; T दुवक्खियत्त पत्तइयत्तः । ३. A हिज्जइ । ४. AP सेणहु ।

चाइत्तणु तेरउ किं करइ
मई चाउ करैवउ तेम तिह
वर अच्छउ गिगणु लुहियतणु
किं वग्गु भणिज्जइ पत्तु गुणि
घत्ता—जेहिं गियागमि वुत्तउं
ते लहंति दुणिरिक्खइं

तौ विहसिवि महिवइ वज्जरइ ।
जिउ ण मरइ ण हवइ हिंस जिह ।
णउ ओयौविज्जइ प्राणिगणु ।
आहार असुद्धु ण लेति मुणि ।
आमिसु दिण्णउं मुत्तउं ॥
भवि भवि विचिहइं दुक्खइं ॥१६॥

१०

१७

तं गिसुणिवि देवें संसियउ
गउ अमरु गिवासुएण भणिउ
को एहु किमत्थु समागमणु
पइं दमियारिहि रणि पाइयउ
भवि भमिवि सुइरु कइलासयडि
वरसिरिदत्ताकंतावसहु
चंदाहु णाम भ्रिउं पाणपिउ
जोइसकुलि उप्पण्णउ अमरु
ईसाणणामकप्पाहिउवइ

मेहरहु सियेण णमंसियउ ।
कोरुहलु महुं हियवइ जणिउ ।
ता कइइ णराहिउ रिउदमणु ।
हेमरहु णाम णिउ घाइयउ ।
वणि पण्णकंततीरिणिणियडि ।
सुउ जायउ सोम्महुं तावसहु ।
पंचगिताउ तउ तेण किउ ।
गउ जहिं हरि अच्छइ कुलिसकरु ।
तहिं तियसहं गिसुणिवि वयणगइ ।

५

दोगे तो गीषका नाश है और मांस देनेपर कबूतरका नाश है ? तुम्हारा त्याग इसमें क्या करेगा ?” तब राजा हँसकर उत्तर देता है, “मेरा त्याग वह करेगा कि जिससे जीव नहीं मरेगा और हिंसा नहीं होगी ? निर्गुण और भूखा रहना अच्छा लेकिन प्राणियोंको घात नहीं करना चाहिए ? क्या बाघको गुणोपात्र कहा जाता है, मुनि लोग अशुद्ध आहार ग्रहण नहीं करते ।

घत्ता—जिन लोगोंके द्वारा अपने आगममें कहा गया और दिया गया आमिष भोजन खाया जाता है, वे भव-भवमें दुर्दर्शनीय दुःखोंको पाते हैं ॥१६॥

१७

यह सुनकर देवोंने उसकी प्रशंसा की और मेघरथको सिरसे प्रणाम-किया । वह देव चला गया । राजाके अनुज (दृढरथ) ने कहा कि इसने मेरे हृदयमें कुतूहल उत्पन्न कर दिया है । यह कौन है और किसलिए यहाँ आया ? तब शत्रुओंका दमन करनेवाला, राजा मेघरथ कहता है—तुमने (अनन्तवीर्यके रूपमें) दमितारिके पैदल सैनिक हेमरथ राजाको मारा था । वह बहुत समय तक संसारमें भ्रमण कर कौलासके तटपर पर्णकान्ता नदीके निकट वनमें श्रेष्ठ श्रीदत्ता कान्ताके वशीभूत तापस सोमशर्माका चन्द्र नामका प्राणप्रिय पुत्र हुआ । उसने पंचाग्नि तप किया, वह ज्योतिषकुलमें देव उत्पन्न हुआ है । वह वहाँ गया जहाँ हाथमें वज्र लिये इन्द्र था, जो—ईशान स्वर्गका राजा था । वहाँ देवताओंकी वचनगति और मेरे त्याग तथा भोगकी स्तुतिको

५. A तो । ९. A उज्जविज्जइ । ७. A प्राणिगणु; P पाणिगणु ।

१७. १. A तो । २. AP पण्णकंति । ३. A सोमहु । ४. AP पिउ । ५. A कुलिसवउ ।

- १० महं केरी चायसुभोयथुइ इह आयच कुद्धुँ अजायरुइ ।
 आएं मह सीलु गिरिक्खियड चित्तेण असेसु परिक्खियड ।
 घत्ता—एव वयणु गिसुणेर्पिणु पक्खेँ रोसु सुएप्पिणु ॥
 वंदिवि जिणवरसासणु कयउं विहिँ मि संगासणु ॥१७॥

१८

- वेणिण वि सुरूवअइरूववर सुररमणवणंतरि जाय सुर ।
 णरणाहु तेहिँ संमाणियड पईं देवँ धम्मु जगि जाणियड ।
 पईं रउरवि णिविडमाण धरिय अम्हईं मि कुजोणिहि णीसरिय ।
 गय सुरवरराएं दमवरहु कय भोज्जुत्ति संजमधरहु ।
 ५ हुँदुहिरउ मणिकंचणवरिसु सुरजयसरु पाउसु कयहरिसु ।
 मरु सुरहियंगु मंथरु वहइ जणु जणहु दाणु विलसिउ कहइ ।
 पुणु णंदीसरि पोसहु करिवि थिउ पडिमाजोएं जिणु सरिवि ।
 ईसाणसुरिदेँ वणिणयड अण्णहिँ देवहिँ आयणियउं ।
 वणिणउ कहु केरउं चरिउ पईं को तुब्बु वि गरुयउ देवँ सईं ।
 १० घत्ता—तेँ^३ णियगुच्चु ण रक्खिउ सुरवरराएं अक्खिउ ॥
 मईं संथुउ परमेसरु सिरिमेहरहु महीसरु ॥१८॥

सुनकर यह अच्छा नहीं लगनेसे क्रुद्ध होकर यहाँ आया है। इसने मेरे शीलका निरीक्षण किया और चित्तसे सबकी परीक्षा की।

घत्ता—यह वचन सुनकर क्रोध छोड़कर तथा जिनवर शासनकी वन्दना कर दोनो (पक्षियोने) संन्यास ले लिया ॥१७॥

१८

वे दोनों सुररमणवन (देवारण्य) के भीतर सुरूप और अतिरूप नामके देव हुए। उन्होंने राजा (मेघरथ) का सम्मान किया (और कहा)—हे देव, तुमने ही संसारमे धर्मको जाना है। तुमने रीरव नरकमे जाते हुए हमे पकड़ लिया और हम लोगको कुयोनिसे निकाल लिया। सुरवरराजके जानेपर उसने दमवर संयमधारीकी भोजनयुक्ति (आहारदान) की। दुन्दुभि शब्द, मणिकांचनकी वर्षा, देवोंका जयस्वर, हर्ष उत्पन्न करनेवाली वर्षा, सुरभित हँवा मन्थर-मन्थर बहुती है। जन जनोसे दानका प्रभाव कहते हैं। फिर नन्दीस्वरमे प्रोषघोषवास कर जिनको स्मरण करते हुए वह प्रतिमायोगमें स्थित हो गया। ईशानीकने वर्णन किया और दूसरे देवोंने उसे सुना (और पूछा) कि तुमने स्वयं किसके चरितका वर्णन किया। हे देव, तुमसे महान् कौन है?

घत्ता—उस सुरेन्द्रने अपना रहस्य छिपाकर नहीं रखा। सुरवरराजने कहा—मैंने परमेश्वर श्री मेघरथ परमेश्वरको स्तुति की है ॥१८॥

६. A वायसुभोय^० । ७. A कुद्धु व जायरुइ । ८. P गिसुणेपिणु ।

१८. १. AP धम्मु देव । २. AP देव । ३. AP तं ।

१९

तं गिसुणिवि देवि सुरुविणिय
 जहिं अचलइ राउ समाहिरउ
 दोहिं मि गाढउ आळिगियउ
 दोहिं मि सुमहुउ संभासियउ
 णीवीणिवंधु आमेळियउ
 दोहिं मि सविथारु पलोइयउ
 अचलतें अहिणवमंदरहु
 तं वेणिण मि वंदेप्पिणु गयउ
 अणणहिं दिणि सुर चवंति जुवइ
 ता भासइ ईसाणाहिवइ
 घत्ता—ता देवय मणि कंप्पइ
 रुवें मण्णइ माणवि

अणेक दुक्क अइरुविणिय ।
 तहिं ताहिं तासु दाविउ समउ ।
 दोहिं मि सुहचुंभणु मगियउ ।
 दोहिं मि आहरणहिं भूसियउ ।
 दोहिं मि थणकलसहिं पैळियउ । ५
 दोहिं मि उरुवप्परि ढोइयउ ।
 जं हियउ ण हित्तउ सुंदरहु ।
 वंदारयघरिणिउ अविउरयउ ।
 णरलोइ अत्थि किं रुववइ ।
 पियमित्तहिं केरी रुवगइ । १०
 ३पुरहूयउ किं जंपइ ॥
 आगय रइ रइसेण वि ॥१९॥

२०

अइंसणीहिं सुरकामिणिहिं
 अन्मंगिउ अंगु मणोहरउं
 वेणिण वि पुणु दारि परिट्टियउ
 अक्खिउ कण्णइ कट्टियहरइ

जोइवि अइरावयगामिणिहिं ।
 उग्घाळउं तुंगपयोहरउं ।
 देविउं दंसणउक्कंठियउ ।
 अच्छंति वयउं दारंतरइ ।

१९

यह सुनकर एक सुरूपिणी और दूसरी अतिरूपिणी देवियाँ वहाँ पहुँची कि जहाँ राजा समाधिमे लीन था । वहाँ उन्होंने उसका अवसर प्रदर्शित किया । दोनोंने एक दूसरेका प्रगाढ़ रूपसे आलिंगन किया । दोनोंने एक दूसरेका मुख-चुम्बन माँगा । दोनोंने सुमधुर सम्भाषण किया । दोनोंने एक दूसरेको आभरणोसे आभूषित किया । नीवीबन्ध छोल दिया । दोनोंने एक दूसरेको स्तनकलशोसे प्रेरित किया । दोनोंने विकारपूर्वक देखा । दोनोंने उरके ऊपर उर रखा । अचलत्वमे नये मन्दराचलके समान उस सुन्दरके हृदयका अपहरण नहीं किया जा सका तो व्रतहीन वे दोनों देवांगनाएँ वन्दना करके चली गयी । दूसरे दिन देव कहते हैं कि क्या मनुष्यलोकमे रूपवती युवती है ? इसपर ईशानेन्द्रने प्रियमित्राकी रूपगतिका वर्णन किया ।

घत्ता—तब देवी मनमे काँप उठती है, इन्द्र क्या कहता है मनुष्यणीके रूपको मानता है । रति और रतिसेन देवियाँ आयी ॥१९॥

२०

ऐरावत गजके समान चलनेवाली उन देवबालाओने अदृष्ट होकर उसके तेलसे मंदित सुन्दर शरीर और खुले हुए ऊँचे स्तन देखकर फिर वे देवीको देखनेकी उत्कण्ठासे द्वारपर गयी । यष्टि धारण करनेवाली कन्याने कहा—द्वारके पास स्त्रियाँ हैं, क्या विद्याधरियाँ हैं, या अप्सराएँ ?

१९. १. A समहइ । २. AP पुल्लअउ ।

२०. १. A सहुंसणीहिं । २. P देविहिं । ३. AP तियउ ।

५ किं खेयरीच किं अचछरउ
तं ण्हाइवि जणमणसाहणउं
सुरणारिउ पुणु पइसारियउ
अवल्लोइवि क्षीणु रुवविहउ
तेरउं सरूउ रुवहु ढल्लिउ

१० घत्ता—ता रईसुहि णिणिविण्णी
उम्मण हुम्मण थक्की

तुह वंसणमणउ अँमच्छरउ ।
लहुँ लइयउं ताइ पसाहणउं ।
माणवजणदूरोसारियउ ।
देवयहिं पवुत्तु ण किं पि धुउ ।
पुण्विहहि रेहहि परिगल्लिउ ।
सा पियमित्त विसण्णी ॥
माणमरहुँ सुक्की ॥२०॥

२१

तं पेक्खिवि गउ मणहरवणहु
चउपउवपयारि अणासयहं
सावयअज्झयणु ण तं रहइ
विविहउ घरधम्मपविसियउ
५ दडरहिण ण रज्जु समिच्छियउ
सुउ मेहसेणु पच्छइ थविवि
सहुं भाइइ सहसा लइउ तउ
धीरहिं णिदियइदियसिवहिं

१० घत्ता—सिरिपुरि घरि सिरिसेणहु
अंतयपुरि णिर्वणंदहु

राणउ पणविवि घणरहजिणहु ।
आउच्छइ वित्ति उवासयहं ।
सत्तमउ अंगु रिसिवइ फहइ ।
किरियाउ असेसउ उत्तियउ ।
णीसारु हुरंगु दुगुल्लियउ ।
मेहरहिं जिणवरु विण्णैविवि ।
वारहविहु सोसिउ विसमभ्रैउ ।
भयसमसहसहिं सह पत्थिवहिं ।
मुंजिवि विण्णसुदाणहु ॥
थाइवि अमराणंदहु ॥२१॥

ईष्यसि रहित वे तुम्हें देखनेका मन रखती है ? तब उसने स्नान कर तथा जनमनको आकर्षित करनेवाला प्रसाधन कर लिया । फिर मनुष्यजनको दूरसे हटानेवाली देवस्त्रियोको भीतर प्रवेश दिया गया । उसके रूपवेभववाले शरीरको देखकर देवियोने कहा कि (संसारमें) स्थिर कुछ भी नहीं है । तुम्हारा स्वरूप रूपसे ढल गया है, पूर्वकी शोभासे गल गया है ।

घत्ता—रतिसुखसे विरक विषण्ण, उम्मन और हुम्मन वह प्रियमिना मानके अहंकारसे मुक्त होकर श्रान्त हो गयी ॥२०॥

२१

उसे इस प्रकार देखकर राजा मनहर वन गया और घनरथ जिनको प्रणाम कर उसने कर्मात्मसे रहित उपासकों (श्रावकों) की वृत्ति पूछी । ऋषीश्वर सातवें अंग उपासकाध्ययनका कथन करते हैं, वह उसे छोड़ते नहीं । गृहस्थ धर्मकी विविध-प्रवृत्तियों, अशेष क्रियाओं और उचितियोंका उन्होंने कथन किया । दृढरथने राज्यकी इच्छा नहीं की । असार और दुरंगी चालवाले उसकी निन्दा की । बादमें अपने पुत्रको राज्यमें स्थापित कर मेघरथ जिनसे निवेदन कर अपने भाईके साथ इन्द्रिय सुखकी निन्दा करनेवाले सात सौ राजाओंके साथ उसने बारह प्रकारक तप ले लिया, और संसारके भयको नष्ट कर दिया ।

घत्ता—श्रीपुरमें सुदानको देनेवाले श्रिषेण राजाके घर आहार कर और देवोंको आनन्द देनेवाले नन्दन राजाके प्रासादमें ठहरकर ॥२१॥

४. A समच्छरउ । ५. A सुहणिविण्णी ।

२१. १. A हरइ । २. A विण्णिविवि; P वेण्णविवि । ३. A विसमतउ । ४. A णिवदाणहु ।

२२

तहिं भक्तपाणगिद्विइ रहिउ
पइसिचि वणंगिरिवरकंदरइ
गिण्णासइ संत वि सो भयइ
दिहु बंभचेरु णवविहु धरिउ
दइभेउ विकालु वि लक्खियउ
बारह अणुपेक्खउ चित्तवइ
चउदइगुणठाणइ अन्भसइ
परिभाविचि सोलहकारणइ

घत्ता—सहुं बंधवेण अणिदहु
दूसइणिट्ठाणिट्ठिउ

इच्छिचि गिच्छियमत्तासहिउ ।
फणिविच्छियंघरि तरुंकोडुरइ ।
मयचिघइ तहु अट्ट वि गयइ ।
दहविहु जिणधम्मु परिप्पुरिउ ।
एयारह अंगइ सिक्खियउ ।
तेरह चारितइ थिरु थवइ ।
पण्णारहविह पमाय पुसइ ।
तिस्थयरत्तणहकारणइ ।
गउ णहतिलयगिरिंदहु ॥
तहिं अणसणिण परिट्ठिउ ॥२२॥

२३

हियउल्लउं मुणिमग्गेण णिउ
जइपुंगम धणरहरायसुय
सन्वत्थसिद्धिसुरैहरि धवल
तेत्तीससमुंदजीवियपवर
तइ वरिससहासइ लेति खणु

पाउंगमरणु मासंतु किय ।
मय वेणिण वि ते अहमिंद हुय ।
करमेत्तदेइ वरमुहकमल ।
तेत्तिय जि पक्ख णीसासधर ।
आहारु वि चित्तिउ सुहंसु अणु ।

२२

वहाँ भोजन और पानकी इच्छासे रहित, निश्चित मात्रासे युक्त (भोजन) चाहकर सपों और बिच्छुओके घर तथा वृक्ष कोटरवाली वनगिरिकी गुफाओमें प्रवेश कर, वह भी सात भयोंका नाश करते हैं, मानके आठ चिह्न भी उनसे चले गये । उन्होने नौ प्रकारके दृढ़ ब्रह्मचर्यका पालन किया । दस प्रकारका धर्म उनमें स्फुरित हो उठा । दस प्रकारके मुनि-आचारकी भी उन्होंने जान लिया । उन्होने ग्यारह अंगोंको सीख लिया । वह बारह अनुप्रेक्षाओंका चिन्तन किया । तेरह प्रकारके चारित्र्यकी स्थापना करता है । चौदह गुणस्थानोंका अभ्यास करता है । पन्द्रह प्रकारके प्रमादोंका नाश करता है । तीर्थंकरत्वका बन्ध करनेवाली सोलहकारण भावनाओका विचार कर—

घत्ता—अपने भाईके साथ, वह अनिन्द्य नभस्तिलक पर्वतके लिए गये । असह्य निष्ठामें निष्ठ वह वहाँ अनशनमें स्थित हो गये ॥२२॥

२३

अपने हृदयको मुनिमार्गमें लगाकर एक माहके प्रायोपगमन उपवास किया । दोनो यतिश्रेष्ठ धनरथ और उसका पुत्र मृत्युको प्राप्त हुए और दोनों सर्वाथिसिद्धिके विमानमें अहमेन्द्र उत्पन्न हुए । दोनों गोरे, एक हाथ शरीरवाले, श्रेष्ठ मुखकमल और तैत्तीस सागर प्रमाण आयुसे युक्त उत्तम जीवनवाले थे । वे उत्तने ही पक्षोंमें श्वास लेते थे । तैत्तीस हजार वर्षोंमें एक क्षणमें

२२. १. AP मत्तु पाणु । २. A वणे गिरि । ३. A विच्छियतरगिरि । ४. AP कोडुरइ । ५. AP सो सत्त वि भयइ । ६. AP अणुवेक्खउ । ७. P तेरह वि चरितइ थिरु धरइ ।

२३. १. A पाउकगमणु । २. AP मय । ३. A हरधवल । ४. AP जलहिं । ५. A सुहंसु ।

जगणाद्विपलौयणाणधर	तेत्तियवीरियविकिरियकर ।
ते गिप्पडियार पसण्णमइ	कत्थइ णत्त ताहं वियौररइ ।
रिञ्जंति धम्मसंभासणइं	कत्थइं मुयंति सीहासणइं ।
केवल्लि उप्पण्णइ जिणवरइं	मुवि जाइजर्राजम्मणहरइं ।
१० सहं भायरेण अहमिंद सुरु	जाणंतु तच्चु पर्णमंतु गुरु ।
घत्ता—गोत्तमेण जं अक्खित्ठं	जं भरहेसं लक्खित्ठं ॥
जं सुहं सोत्तहिं माणइ	पुप्फयंतु तं जाणइ ॥२३॥

इय महापुराणे विसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाभन्वभरहाणुमणिए
महाकइपुप्फयंतविरहए महाकब्बे मेहरहत्तिरथयरगोत्तणिवंधर्ण
णाम दुसद्धिमो परिच्छेमो समत्तो ॥६२॥

चिन्तित सूक्ष्म-सूक्ष्म अणुका आहार करते । विश्वनाडोको देखनेवाले ज्ञानके धारक थे । जतनी ही विक्रियाद्भक्तिको कर सकते थे । प्रतिकारकी भावनासे रहित और प्रसन्नमति थे । उनमें विकाररति कही भी नहीं थी । वे धर्मसम्भाषणोसे प्रसन्न होते थे । जन्म, जरा और मरणका हरण करनेवाले जिनवरोंको केवलज्ञान उत्पन्न होनेपर वे कभी-कभी अपना सिंहासन छोड़ते थे । वह अहमेन्द्रसुर अपने भाईके साथ तत्त्वको जानता और गुरुको प्रणाम करता ।

घत्ता—गौतमने जो कुछ कहा, वह भरतेश श्रणिकने जान लिया । अपने कानोंसे जो उस सुखको मानता है, हे पुष्पदन्त वही उसे जानता है ॥२३॥

इस प्रकार श्लेष महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महामन्थ भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका मेघरथ तीर्थंकर गोत्र निवन्धन नामका वासठर्वा परिच्छेद समाप्त हुआ ॥६२॥

संधि ६३

छम्मासइं आउससेसइं थियइं जांम अहमिंदहु ॥
ता रम्मइ तहिं सोहम्मइ जाय चित तियसिदहु ॥ ध्रुवकं ॥

१

जिणवरणहवणहवियगिरिसंदरु	घणयइ अक्खइ देउ पुरंदरु ।	
कुंजरकरताडियसीयलजलि	सिसिरकिरणचिलसियणीलुप्पलि ।	
णवखरदंडसंडमंडियसरि	दसदिसु गुमुगुमंतमयसहुयरि ।	५
सीमारोमगामरमणीयइ	दीणाणाहदिण्णतवणीयइ ।	
गंधसालिकेणसुरहियपरिमलि	कीरकुररकलहंसीकलयलि ।	
दिब्बुज्जाणविडविणिवडियफलि	जंबूदीवि भरहि कुंरजंगलि ।	
हत्थिणयरु तहिं मंडलि छज्जइ	तूरहं सहेणं गल्लगज्जइ ।	
सगं सरिसउ अप्प मण्णइ	घरसिहरहिं हरइ व तिजगुण्णइ ।	१०

सन्धि ६३

जब अहमेन्द्रकी छह माह आयु शेष रह गयी, तो सौधर्म स्वर्गमे इन्द्रको चिन्ता उत्पन्न हो गयी ।

१

जिनवरके स्नानमें मन्दराचल पर्वतको स्नान करानेवाला इन्द्र कुवेरसे कहता है—इस जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमे कुरुजांगल देश है, जिसमे हाथियोंसे प्रताडित शीतल जल है। जिसमें नील-कमल शिशिर किरणोंसे विकसित है, नदियां नवपत्रोंसे मण्डित है, दसों दिशाओंमें मधुकर गुंजन करते है, सीमोद्यानो और ग्रामोंसे जो रमणीय है, जहाँ वीन और अनाथोंको सोना दिया जाता है, जहाँ सुगन्धित धान्यके कणोंसे सुरभित परिमल है, जिसमें कीर, कुरल और कलहंसोंका सुन्दर कलकल शब्द हो रहा है। ऐसे उस मण्डलमे हस्तिनापुर नगर शोभित है जो मानो तूयोंको ध्वनियोंसे गरज रहा है। वह अपने आपको स्वर्गके समान मानता है। अपने घरके शिखरोंसे

All Mss. have, at the beginning of this samdhi, the following stanza-

बन्ध. सीजन्यवाचें. क्विखलविषणाब्धान्तविध्वंसभावुः
प्रीडालंकारसारा मलतनुविभवा भारती यस्य नित्यम् ।
वक्त्राम्भोजानुरागक्रमनिहितपदा राजहंसीव भाति
प्रेलद्गम्भोरभावा स जयति भरते धार्मिके गुण्यदन्तः ॥ १ ॥

AP read बन्धुः in the first line, for बन्धः, but K has a gloss सेतु. on it, P reads भावः for भावा in the third line.

१. १. AP °वियसियं । २. A सीमामराम । ३. AP °कणपसरिपरिमलि ।

अजियसेणु तर्हि पडु पियवाइणि
वंभकप्पचुड वइरिविभइणु
सुणि गंधारदेसि गंधारइ
तर्हि णरणाहु णाम अजियज्ज

तहु पियदंसण णामें णइणि ।
वीससेणु उप्पणउ णंदणु ।
पुरि पंडुरघरि पुइईसारइ ।
अजियदेविवल्लह परहुज्ज ।

१५

घत्ता—ते राएणं सुहिअणुराएणं णिरु भल्लारउं भाविउं ॥ -

अइरा सुय णवकिसल्यसुय वीससेणु परिणाविउ ॥ १ ॥

२

एयहं होसइ धुवु तित्थंकरु
घणय घणय लइ तेरउ अबसरु
तं गिसुणिवि ते कमलदलक्खे
हरियउं मरगयतोरेणमालहिं
कोमलगात्तइ मंडलियणत्तइ
णिहाएविइ पुणपवित्तिइ
परौदेविइ दिट्ठउ कुंजरु
सिरिदामाई दोगिण विलुलंवइं
कुंभजुयलु झसजुयलउं कीलिरु
सीहासणु विजाणु अमैराणउं

१०

सोलइमउ कंदप्पखयंकरु ।
करि पुरु मणियरहयदिवसेसरु ।
कंचणपट्टणु गिम्मिउ जक्खे ।
जलइ व पउमरायकरजालहिं ।
सउहयलइ पल्लंकेपसुत्तइ ।
पच्छिमरत्तिइ गुणगणजुत्तिइ ।
पसुत्तइ केसरि खरणहपंजरु ।
ससिरविबिंबइं णहि उर्ययत्तइं ।
सरवरु जलहि जलावलिचालिरु ।
भवणु फणिदहु तणउं पहाणउं ।

त्रिजगती उन्नतिका अपहरण कर रहा है। अजितसेन नामक वहाँका राजा था उसकी प्रिय बोलनेवाली प्रियदर्शना नामकी प्रणयिनी थी। सन्तुओंका मर्दन करनेवाला ब्रह्मस्वर्गसे च्युत होकर उनका विश्वसेन नामका पुत्र हुआ। सुनो—गान्धार देशमें पृथ्वीमें श्रेष्ठ धवल धरौवाली गन्धारी नगरीमें अजितंजय नामका राजा था, जो अजिता देवीका प्रिय और सन्तुओंके लिए अजेय था।

घत्ता—सुधियोंके प्रति अनुराग रखनेवाले उस राजाने अच्छा विचार किया कि जो उसके नवकिसलयके समान भुजाओंवाली अपनी अचिरा नामकी कन्याका विवाह विश्वसेनसे कर दिया ॥१॥

२

इन दोनोंसे निश्चयपूर्वक कामदेवका नाश करनेवाले सोलहवें तीर्थंकरका जन्म होगा। कुबेर-कुबेर ! लो, यह तेरा अवसर है। तুম मणिकिरणोंसे दिनेश्वरकी पराजित करनेवाले पुरकी रचना करो। यह सुनकर कमल दलके समान आँखोंवाले उस यक्षने स्वर्णनगरकी रत्नोंकी। संरक्षित मणियोंकी तोरणमालाओंसे वह हरा-हरा था। पद्मराग मणियोंके किरणजालसे जलता हुआ था। सौधतलमें पलंगपर सोते हुए कोमल धरौरवाली, मुकुलित नेत्र, पुण्यसे पवित्र तथा गुणगणोंसे युक्त एरा देवी थी। रात्रिके अन्तिम प्रहरमें उसने हाथी देवा। वृषभ, तीव्र नखसमूहसे युक्त सिंह, लक्ष्मी, दो मालाएँ झूलती हुई, आकाशमें उड़ते हुए सूर्यचन्द्रके बिम्ब, घटपुंगव, सेलते हुए दो मत्स्य, सरोवर, जलकी लहरोंसे चंचल समुद्र, सिंहासन, देवोंका विमान, नागेन्द्रका प्रमुख

२. १. A तोरणदारहि । २. P पल्लंके पसुत्तइ । ३. AP अइरादेविइ । ४. A उर्ययत्तइं । ५. P अमरालउ ।

रथगरासि सत्तैवि वि जोइइ सुहु धोइवि दप्पणु अवलोइइ ।
गय सुंदरि सुबिहाणइ तेत्तइ थिउ अत्थाणि णराहिउ जेतहि ।

घत्ता—सि विणंतरु णिहिउ णिरंतरु कंतइ कंतहु ईरिउं ॥

अवहीसें तेण महीसें तं फलु ताहि विचारिउं ॥ २ ॥

३

७ तुब्हु उयरि तेलोक्कपियारउ	होसइ सिरिअरहंतु भडारउ ।
रायंगणि लोएहि वि दिट्टुं	जा छम्मास ताम वसु वुट्टुं ।
हिरि सिरि बुद्धि कंति कित्ती सइ	आगय घरु जिणगुणरंजियमइ ।
भइवयहु भयसंखावासरि	भरणिरिक्खि णिसिपरपहरंतरि ।
जणणिहि मुहि पइट्टु गयवेसें	किउ गम्भावथारु परमेसें ।
मेहरहेण तेण अहमिंदे	पुण्णपवणकंपावियइंवे ।
आय देव सयल वि पंजलियर	पुज्जिय सयल असेस वि सपियर ।
णवमासइ णिहित्तु चामीयरु	धणएं किउ पट्टुपंगणु पिंजरु ।
पल्लचंडस्थि भाइ तइयंसें	ऊणि तिसायरि गलियजमसें ।
धम्ममहामुणिदेव जिणंतरि	चित्तोज्जुत्तमासपक्खंतरि ।
कालइ दिणि चउदहमइ जायइ	जामइ जोइ सुहंकरि आयइ ।
पच्छिमसंझहि जणियर भावइ	जिगु रेहइ णाणत्तयछायइ ।

भवन, रत्नराशि और अग्निज्वाला भी देखी। मुँह धौकर उसने दर्पण देखा। सबरे वह सुन्दरी वहाँ गयी जहाँ राजा सिंहासनपर विराजमान था।

घत्ता—समस्त लगातार स्वप्नान्तर कान्ताने अपने पतिसे कहा। अवधोश्वर (अवधिज्ञानके धारी) महोश्वरने उसे उसका फल विवेचित कर दिया ॥२॥

३

तुम्हारे उदरसे त्रिलोकके प्यारे आदरणीय श्री अरहन्त उत्पन्न होगे। लोगोंने भी देखा कि राजाके आंगनमें छह माह तक रत्नोंकी वर्षा हुई। ह्रीं-श्री-बुद्धि-कीर्ति आदि सतियां जिन-गुणोंसे रंजितमति होकर आयी। भाद्र वदी सप्तमीके दिन भरणी नक्षत्रमें रात्रिके अन्तिम प्रहरमें वह माताके उदरमें गजरूपमें प्रविष्ट हुए और इस प्रकार परमेश्वर उस अहमेन्द्र मेघरथने गर्भावतार किया। सभी देव अंजली, बांधे हुए आये और पिता सहित उन्होंने सभी स्वजनोंकी पूजा की। कुवेरने नव माह तक स्वर्णकी वर्षा की और उसने राजाके आंगनको पीला कर दिया। धर्मनाथ महामुनि तीर्थंकरके बाद चौथे पल्यके तीन भाग कम तीन सागर समय बीतनेपर, एक भाग (पाव) पल्य धर्मका उच्छेद होनेपर, ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थीके दिन शूर्पंकर शुभयोगमें रात्रिके अन्तिम प्रहरमें माताने जिनको जन्म दिया। वे तीन ज्ञानोंकी छायासे शोभित थे।

१. A सत्तच्चिय ।

३. १. A चत्त्यभाय । २. A ऊणतिवायर । ३. A जिट्टा 'but gloss चंत्र; T चित्तजुत्तमास' चंत्र ।

घत्ता—एरावइ चडिवि सुरावइ सहसा पत्तु पुरेदरु ॥
सहुं देवहिं पाणारुवहिं अरुहु लेवि गउ मंदरु ॥ ३ ॥

४

इंदचंदखयरिंदफौणिंदहिं पहाणिउ तहिं वंदारयवंदहिं ।
पुज्जिउ कुंदकुडयकणियारहिं वरुलतिलयचंपयमंदारहिं ।
जणसंतीयरु संति भणेप्पिणु तं गुरु सुरगिरिसिहरु गुएप्पिणु ।
आणिवि भवणहु अप्पिउ जणणिहि जिणवरसुरतरुसंभवघरणिहि ।
५ हरि घरि पायेंढणहु व पणच्चिउ तेण ण को को किर रोसंचिउ ।
गउ सगुहु पणविवि सक्कंदुणु कालें जाउ णाहु णवजोव्वणु ।
कणयचणुणु णं वालपयंगउ वहु वहु तैह वहु वहु धणुतुंगउ ।
लक्खववरिसपरमाउ महासहु दहरहु णाम अबरुहसयमहु ।
वीससेणराएण रवणणउ जसवइदेविहि सो उप्पणहु ।
१० णामें चकाउहु पियतणुरुहु छणसत्तावीसंजोयणमुहु ।
घत्ता—ते भायर चंददिवायरणिह परिणाविउ ताएं ॥
णिवकण्णउ वहुलायणउ जयजयपडहणिणाएं ॥ ४ ॥

५

पंचलीसवरवरिससंहासइं वोलीणइं कुमरति पयासइं ।
जेइहु अप्पिय घरणि णरिंदें अप्पणु वद्धउ पट्टु सुरिंदें ।

घत्ता—एरावतपर चडकर देवोंका स्वामी पुरन्दर शीघ्र वहाँ पहुँचा तथा नानारूपोंवाले देवोंके साथ अर्हन्त देवको लेकर मन्दराचल गया ॥३॥

४

इन्द्र, चन्द्र, विद्याधरेन्द्र और नागेन्द्र आदि देवसमूहने वहाँ उनका अभिषेक किया तथा कुन्द, कुटज, कनेर, वक्रुल, तिलक, चम्पक और मन्दार पुष्पोंसे पूजा की। लोगोंको शान्ति देनेवाले होनेसे उन्हें शान्ति कहकर, मन्दराचल-शिखरको छोड़कर, गुरुको लाकर, जिनवररूपी कल्पवृक्षको उत्पन्न करनेकी भूमि माँको सौंपकर इन्द्र प्राकृतनटकी तरह नाचा। उससे कौन-कौन नहीं रोमांचित हुआ। इन्द्र प्रणास कर स्वर्ग चला गया। समयके साथ जिन नवयोवनको प्राप्त हुए। स्वर्णरंगके वह मानो बालसूर्य थे। वह चालीस धनुष प्रमाण ऊँचे थे। एक लाख वर्षकी उनकी परमायु थी। दूइरथ नामका दूसरा अहमेन्द्र था, वह भी विश्वसेन राजाकी दूसरी पत्नी यशस्वतीसे उत्पन्न हुआ। चक्रायुष नामसे वह प्रियपुत्र था। उसका मुख पूर्ण चन्द्रमाके समान था।

घत्ता—चन्द्रमा और दिवाकरके समान दोनों भाइयोंका पिताने नगाड़ोंकी ध्वनिके साथ अत्यन्त रूपवती राजकन्याओसे विवाह कर दिया ॥४॥

५

कौमार्यकालमे जब उनके पचीस हजार वर्ष बीत गये तो राजाने बड़े भाईको धरती अर्पित

४. १. इ खयरिंदशुरिंदहिं । २. AP पायहु णहु व । ३. AP वहु वहु वहु । ४. AP लक्खु वरिसु परमाउ ।
५. A अवस अहतयमहु । ६. A वृव ।

रज्जु करंतहु दंतहु णियघणु
जइयहुं तइयहुं पुण्णविसेसं
चक्कु छत्तु असि पहरणसालहि
कागणि मणि उप्पण्णइं सिरिहरि
कण्णा गय तुरंग खगभूहरि
छंक्खंड वि महिवीहु पसाहिवि
पणावीसइसहस महि पालिवि

गलिय समासहास तेत्तिय पुणु ।
आयइं दिट्ठइं तेण णरेसं ।
संभूयउं दंडु वि सुविसालहि ।
थवइ पुरोहु चमूवइ गयउरि ।
णचणिहि जलणिहिणइसंगमचैरि ।
वितर सुर विज्जाहर साहिवि ।
दप्पणयलि णियघयणु णिहालिवि ।

घत्ता—णिव्हेइउ णाहु पंसाइउ लोचंतिएहिं पवोहिउ ॥

१०

अवमत्तउ इंदं सित्तउ रयणाहरणहिं सोहिउ ॥ ५ ॥

६

थिउ सन्वत्थसिद्धि सिवियासणि
सिलहि णिसण्णं उत्तरवयणं
जेट्ठहु मासहु सतिमिरपक्खइ
अवरणइ णिक्खवणु करंतं
उप्पाइउ मणपज्जउ देवं
जो धम्मिल्लभाउ आलुं चिउ
घज्जिउ णवर खीरमयरालइ
संजमु णिवसहसं पडिवणणउ

जाइवि तहि लहु सहसंघयवणि ।
कयपलियकं दीहरणयणं ।
दिवसि चउइसि भरणीरिक्खइ ।
छट्ठववासिण गुणत्रतं ।
किं ण होइ भणु संजमभावें ।
सो सुरणाइं कुसुमें अंचिउ ।
चक्काउहुपमुहहिं तक्कालइ ।
वीयइ वासरि समसंपण्णउ ।

५

कर दी और देवेन्द्रने स्वय पट्ट बांधा । राज्य करते हुए और अपना धन देते हुए फिर जब उनके उतने ही अर्थात् पचीस हजार वर्ष बीत गये, तो पुण्य विशेषसे उस राजाने इन चीजोंको देखा (प्राप्त हुई) सुविशाल आयुधशालामे चक्र-छत्र और तलवार तथा दण्डरत्न उत्पन्न हुए । श्रीगृहमे कागणि मणि उत्पन्न हुई । हस्तिनागपुरमे स्थपति, पुरोहित और चमूपति । कन्या, गज, तुरंग विजयार्थ पर्वतपर उत्पन्न हुए । जलनिधि और नदीके संगमस्थलपर नवनिधियां प्राप्त हुईं । छह खण्ड धरतीको सिद्ध कर व्यन्तर, विद्याधरों और देवोंको साधकर पचीस हजार वर्षों तक धरतीका पालन कर (एक दिन) दर्पणतलमे अपना मुख देखकर—

घत्ता—प्रसन्नताको प्राप्त देव विरक्त हो उठे । लौकान्तिक देवोंने उन्हे सम्बोधित किया । रत्नाभरणोंसे शोभित और अप्रमत्त उनका इन्द्रने अभिषेक किया ॥५॥

६

वह सर्वार्थसिद्धि नामक शिविकापर आरुढ़ हुए । शीघ्र सहस्राब्द वनमें जाकर शिलापर बैठे हुए उत्तर दिशामें मुख किये हुए पचासनमे स्थित दीर्घनेत्रवाले वह, ज्येष्ठ माहके कृष्णपक्षकी जन्तुदशैके दिन भरणी नक्षत्रमे अपराह्नके समय छठे उपवासके साथ दीक्षा ग्रहण करते हुए गुणवान् देवको मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न हो गया । वताओ संयम भावसे क्या नही उत्पन्न होता ? उन्होंने जिस केशभारको उखाड़ा था उसे इन्द्रने फूलोंसे अर्चित किया और क्षीरसमुद्रमें फेंक दिया । चक्रायुध प्रमुख एक हजार राजाओंने तत्काल संयम ग्रहण कर लिया । दूसरे दिन

५. १. A असि पहरणु सालहि; P असि चम्पु वि सालहि । २. P मेहवइ दंडु वि । ३. AP संयमहरि ।

४. A छक्खंडु । ५. AP पयासिउ ।

गड मंदरपुर जिणुं उवताविड
 १० महि विहरंतु मुणियसत्थत्थत्थ
 संतु दंतु भयवंतु सरिसिगणु
 पत्ता—णवत्तहु गंदावत्तहु तरुहि भुलि आसीणत्त ॥
 तंथियत्तहु सुरादिसिसंतुहु रिउमिन्ते वि समाणत्त ॥ ६ ॥

७

पूसहुं मासहुं सोन्त्तणियासहुं ।
 दहभेदिणंतरी सियपत्तंतरी ।
 छट्टवत्तं वियल्लियपात्तं ।
 ५ दूरसंझालइ जाइ वियालइ ।
 कम्मणिवाइत्तं त्थणि उप्पाइत्तं ।
 केवल्लदंसणु दोसविहंसणु ।
 धुवें सिवभाणणु केवल्लाणणु ।
 कथमयविल्लपं कुरुकुलविल्लपं ।
 कासवगोत्तं सुयसुइसोत्तं ।
 १० पत्तत्तं कित्तणु सिरिअरुहत्तणु ।
 दहविह वसुविह अवर वि वयविह ।
 सुर सोलहविह भूसणयरसिह ।
 गुणगणवत्तं पंक्कयणत्तं ।

समताभावसे परिपूर्ण और तपसे सन्तप्त जिनवर मन्दरपुर नगर गये। प्रियमित्र राजाने उन्हें बाहार कराया। ज्ञात कर लिया है शास्त्रार्थको जिन्होंने ऐसे बह धरतीपर विहार करते हुए सोलह वर्ष तक उच्चस्थभावमें स्थित रहे। शान्त, दांत, ज्ञानवाद् वह ऋषिगणके साथ फिरसे उसी सहस्राभ्रवनमें आये।

पत्ता—नये पत्तोंवाले नन्दावर्त वृक्षके नीचे बैठे हुए, दुःखोंका नाश करनेवाले पूर्वदिशानें मुख किये हुए, शत्रु तथा मित्रमें समान वह—॥६॥

७

पौष शुक्ल दशमीके दिन, श्वन्वर्षको काटनेवाले छठे उपवासके द्वारा, धोही-योही सम्झा होनेपर उन्होंने कर्मोंका नाश कर दिया और एक क्षणमें दोषोंको नष्ट करनेवाला केवलज्ञान और शिवको माननेवाला केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। जिन्होंने मदका विलय किया है, ऐसे कुरुकुलके तिलक, कश्यप गोत्रोय, पवित्र शास्त्रोंके प्रवाहवाले उन्होंने श्री अरहन्त होनेका वीर्य प्राप्त कर लिया। दस प्रकारके, आठ प्रकारके और भी पाँच प्रकारके, सोलह प्रकारके देव, (सूय-)

६. १. विपत्तवताविड २. A विरहंतु । ३. AP पदपत्तहु । ४. A सुरादिसिदुहु ।
 ७. १. A दिवंतरी । २. AP आयवियालइ । ३. A कम्मणिवाइत्तं । ४. A धुवः P धुव । ५. AP कयमलविल्लपं । ६. AP वयवत्तं, AP add after this: उचहत्तत्तं । ७. AP जत्तं ।

अइर्रापुत्तं	खमदमजुत्तं ।	
खाइयभावं	सति देवं ^{११} ।	१५
ते ^{१२} वंदते	^{१३} सुहुं ज्ञायते ।	
पंजलिहत्था	पणविचमत्था ।	
भत्तिरसाला	विलुलियमाला ।	

घत्ता—मउ वज्जइ गंई पडिवज्जइ पंचिदियइं वि दंडइ ॥

पइं हीतें मग्गु दिसंतें जणु संसारि ण हिंदइ ॥ ७ ॥ २०

तओ कोसिएणं	जसेणं सिएणं ।	
कयं मुखेडंभं	महामाणखंभं ।	
महाधम्मलंभं	महापंकयंभं ।	
महाखाइयाळं	महापुप्फमालं ।	
महाधूलिसालं	महाणट्टसालं ।	५
महासाहिबंतं	महाकेउकंतं ।	
महावेइयम्भं	महाधूहहम्मं ।	
महादेवछण्णं	महासाहुपुण्णं ।	
महारिद्धिरूढं	महापीहपीढं ।	
महासोय्यैरत्तं	महासेयछत्तं ।	१०
महाचामरिज्जं	महादुंदुहिल्लं ।	

किरणोंकी सिखावाले), गुणसमूहके पात्र, कमलनयन, ऐरापुत्र क्षमा और संयमसे युक्त; धिकभाववाले शान्तिदेवकी जे वन्दना करते हैं, उनका शुभ ध्यान करते हैं, हायकी अंजलि दे हुए, मस्तक झुकाये हुए, भक्तिसे मोठे और मालाएँ हिलाते हुए ।

घत्ता—जन मदका त्याग करता है, मोक्षगतिको स्वीकार करता है, पांचो इन्द्रियोंको णेत करता है, आपके रहनेपर और उपदेश देनेपर वह (जन) संसारमे परिभ्रमण नहीं रता ॥७॥

तब थससे श्वेत इन्द्रने दम्भसे मुक्त महामानस्तम्भ वनवाया जिसमे महाधर्मकी प्राप्ति है, शुकमलोका जल है, जो महान् खाइयोसे सहित है, जिसमे महानृत्यशाला है, जो महावृक्षोसे क्त है, जो महाध्वजोसे सुन्दर है, जो महावेदिकाओंकी रचनासे युक्त है, जिसमें स्थूल प्रासाद हैं, जो महादेवोसे व्याप्त हैं, जो महामुनियोसे सम्पूर्ण है, महाऋद्धियोसे प्रसिद्ध है, महासिंहासनोसे क्त है, महान् अशोक वृक्षोसे आरकत है, महाश्वेतछत्रोवाला है, महाचामरोसे युक्त है,

८. AP^० पुत्तं । ९. A omits खमदमजुत्तं; P adds . दोषविचत्तं । १०. AP^० भावं । ११. AP

देवें । १२. A तं वंदति; P तं वंदते । १३. A सुहुं जोयते; P सुहुं जोयते । १४. A मइ ।

२. १. AP मुक्कदंभं । २. A^० धूलहम्मं । ३. AP सीहवीढं । ४. AP महासोयवत्तं ।

महापुष्कवासं
महादित्तित्तं

महादिग्वभासं ।
महंतं पवित्रं ।

घत्ता—पडिहारहिं पायकुमारहिं सेविजंतु दयावरु ॥

१५

गंभीरहिं ह्यजयंतूरहिं समवसरणु गड जिणवरु ॥ ८ ॥

९

अक्खइ धम्मु कम्म ओसांरइ

सत्त वि तच्चइं जणहु विचारइ ।

अट्टंइ धरणिहिं माणु पयासइ

सग्गविमोणहं पंतित भासइ ।

पायालंतरि भवणसहासइ

चलणिच्चलइं मि जोइसवासइं ।

जीवकम्मपोग्गलपरिणामइं

कहइ भडारउ णाणाणामइं ।

५ चक्कावहपहूइ तहु गणहर

जाया छत्तीस विं जणमणहर ।

अट्टसयइं पुल्लंगविद्याणहं

रिसिहिं कट्टुतणकणयसमाणहं ।

एकतालसहसइं वसुसमसय

सिक्खसुदिक्खसिक्खपारंगय ।

सहसइं तिणिण अवहिणाणालहं

चउ केवलिहिं पि हियतमजालहं ।

विकिरियावत्तंइं छह भणियइं

मणपल्लवधराहं चउ गणियइं ।

१० वाइहिं दोसहसाइं गिरुत्तइं

सयचउक्कु अगगलउ पत्तइं ।

महाद्रुमुभियोसे परिपूर्ण है, महापुष्पोकी वाससे युक्त है, महादिग्वभाषासे पूर्ण है, महादीप्तिसे युक्त है और महान् पवित्र है ।

घत्ता—प्रतिहार नागकुमार देवों द्वारा सेवित दयावर जिनवर शान्तिनाथ गम्भीर आहत विजय तूर्योंके साथ समवसरणके लिए गये ॥८॥

९

वह धर्मका कथन करते हैं, कर्मका निवारण करते हैं, जनके लिए सातों तत्त्वोंका विचार करते हैं, आठवीं भूमि (मोक्षभूमि) का मान प्रकाशित करते हैं, स्वर्गके विमानोंकी पंक्ति का कथन करते हैं, पातालके भीतर हजारो भवनवासियो, चल और निश्चल ज्योतिषवासियो, जीवकर्म और पुद्गलके परिणामोंका नाना नामोंसे आदरणीय वह वर्णन करते हैं । चक्रायुध आदिको लेकर उनके जनमनोके लिए सुन्दर छत्तीस गणधर थे । पूर्वांगीको जाननेवाले तथा काष्ठ तिनका और सोनेको समान समझनेवाले आठ सौ ऋषि थे । शिक्षा और दोषाकी सीखमे पारंगत एकतालीस हजार आठ सौ थे । अवधिज्ञानको धारण करनेवाले तीन हजार थे, तमजालको नष्ट करनेवाले केवली चार हजार । विक्रियाऋद्धिके धारक छह हजार थे और मनःपर्ययज्ञानके धारी चार हजार । और वो हजार श्रेष्ठ वादी मुनि थे ।

५. A महा दित्तित्तं; P महादित्तित्तं । ६. A समवसरणगउ ।

९. १. A अट्टमिधरणिहिं; । २. AP विद्याणहं । ३. A परिमाणहं । ४. P जि । ५. A तिनसपदिक्खसिक्ख । ६. A केवलिहिं पहयतम; P केवलिहिं मि हियतम । ७. A वत्तहं ।

घत्ता—हिरिसेणहि वर्धविहिखीणहि पायपोमथुहरायइं ॥
परमहियइं तिसैयहि सहियइं सद्धिसहासइं जायइं ॥ ९ ॥

१०

झाणमोणणियमियणियमइयउ	एत्तियाउ भणियउ संजइयउ ।	
लक्खइं दुइ सावयइं सल्लग्घइं	सुरक्कित्तीपमुहइं णिविग्घइं ।	
अरुहदासिपमुहाइं सुइत्तइं	सावइंहिं चउलक्खइं वुत्तइं ।	
देव असंख संख मृगैकुलरुह	एकदुखुर गयवय जाया वुह ।	
पंचवीससहसइं वोलीणइं	वरिसइं सोलहवरिसविहीणइं ।	५
हिड्डिवि महियलि धम्मु कहेप्पिणु	मासमेत्तु जीविउ जाणेप्पिणु ।	
गिरिसमैयारुहणु करेप्पिणु	चरमसुक्कु दिंयहेहिं धरेप्पिणु ।	
जेट्टचउइसिवासरि कौलइ	भरणिरिक्खि धरणीसुहि विमलइ ।	
गउ जगसिहरहु संति भडारउ	देउ समाहि वोहि भवहारउ ।	
सहुं चक्काउहेण तवैरिद्धइं	णवसैहसइं रिसिणाहइं सिद्धइं ।	१०

घत्ता—सुंविळेवणु घल्लिवि कुसुमइं मेल्लिवि पणविउ तहिं अग्गिदहिं ॥

मणि ईहिय सिद्धणिसीहिय णविय भरेण सुरिदहिं ॥१०॥

घत्ता—त्रतोकी विधिसे क्षीण हरिषेणा आदि आयािकाएँ साठ हजार तीन सौ थीं । जिसके चरण राजाओंके द्वारा स्तुत थे और जो देवों सहित मनुष्यों द्वारा पूज्य थीं ॥९॥

१०

ध्यान और मौनसे जिन्होंने अपनी मति संयत कर ली है ऐसे संयमी और श्लाघनीय, सुरकीर्ति-प्रमुख विघ्न रहित दो लाख श्रावक थे । अर्हददासी आदिको लेकर चार लाख पवित्र श्राविकाएँ कही गयी हैं । देव असंख्यात थे और तिर्यचयोनिके पशु संख्यात थे । एक दो खुरवाले ज्ञानव्रतसे युक्त पण्डित । सोलह वर्ष रहित पचीस हजार वर्ष बीत गये । धरती तलपर भ्रमण कर और धर्मका कथन कर तथा अपना जीवन एक माह शेष जानकर, सम्मेदशिखर पर्वतपर आरोहण कर कुछ दिनों तक चरम सुवल्लभ्यान धारण कर, ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशीके दिन, भरणी नक्षत्रमें पवित्र धरतीके अग्रभागमें विश्वके शिखरपर आदरणीय शान्तिनाथ चले गये । भवका हृण करनेवाले देव मुझे समाधि प्रदान करें । तपसे समृद्ध नौ हजार मुनिनाथ भी चक्रायुषके साथ सिद्ध हो गये ।

घत्ता—सुन्दर लेप कर, फूल डालकर वहाँ अग्निन्द्र देवोंने प्रणाम किया (शवका) । देवेन्द्रोने भी मनमें अभीप्सित सिद्ध नृसिंह उनको प्रणाम किया ॥१०॥

८. AP^० विहिलीणहि । ९. P तिसईं सहियइं ।

१०. १. P सल्लग्घइं । २. P णिविग्घइं । ३. A सुवत्तइं । ४. AP मिग् । ५. A बहलइ । ६. AP गुण-
रिद्धइं । ७. A णवसयाइं । ८. AP कालायरु घल्लिवि सुरतरु दिण (ण्ण ?) अग्नि अग्गिदहिं ।

११

चंद्रु सिरिसेणु पुणु वि जो कुरुणरु देव खयरु सुरु हलि पवरामरु ।
 वज्जाउहु सुरवइ घणसंदणु सव्वत्थाहियु अइरहि पंदणु ।
 दरिसउ मञ्जु सयलु सयलायरु होउ पढंतहु लहु लगणतरु ।
 देवि अण्णिय कुरुणरु माणउ सुरु सिरिविज्जे महीयलराणउ ।
 ५ अमयासउ अणंतवीरिउ हरि णारउ जोइयवइतरणीसरि ।
 मेहणाउ पडिहरि सहसाउहु कप्पणाहु दडरहु पहसियसुहु ।
 पुणु सव्वत्थसिद्धि परमेसरु चक्काउहु सुहुं देउ रिसीसरु ।
 संति भंति विहुणेवि महारी करउ कसायसंति गरुयारी ।
 घत्ता—भरहेसरु जियसरु मुणिपवरु जहिं गउ जिण-तुहुं तेत्तहि ॥
 १० मई पावहि सिद्धालयमहि पुष्पयंतरुइ जेतहि ॥११॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभवभरहाणुमणिणए महाकइपुष्पयंतरुइए
 महाकण्ठे संतिणाहणिव्वाणगमणं णाम
 तिसट्ठिमो परिच्छेओ समत्तो ॥६३॥

११

कुरुमानव जो राजा श्रीषेण थे, वह देव (भोगभूमिसे) विद्याधर, देव फिर प्रवर अमर, वज्रायुध, इन्द्र, मेघरथ, फिर सर्वार्थसिद्धिमें अहमेन्द्र और फिर ऐराके पुत्र (शान्तिनाथ) हुए । वह मुझे समस्त सकलाचार दिखाये और गिरते हुए मुझे आधारस्तम्भ हों, और जो अनिन्दिता देवी कुरुकी नर हुई थी, फिर श्रीविजयदेव, फिर महीतलका राजा, अमृताशय अनन्तवीर्य, नारायण, वैतरणी नदीको देखनेवाला नारकी, मेघनाद प्रतिनारायण, फिर सहस्रायुध, कल्पदेव, प्रहसितमुख दूढरथ, फिर सर्वार्थसिद्धिका देव और तब परमेश्वर चक्रायुध ऋषीश्वर देव सुख दें । हमारी विद्यमान भ्रान्तिको नष्ट कर वे मेरी भारी कषायशान्ति करें ।

घत्ता—हे जिन, कामको जीतनेवाला मुनिप्रवर भरतेश्वर जहाँ गया, और जहाँ आप गये हैं, और जहाँ चन्द्र और सूर्यके समान दीप्ति है, वह सिद्धालयभूमि मुझे प्राप्त करा दो ॥११॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित पूर्व महाभग्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यमें शान्तिनाथ निर्वाण गमन नामका त्रेसठवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥६३॥

सन्धि ६४

जिणगिरिपवरहे णीसरिय वारहंगपाणियसरि ॥
पुव्वसहणवगामिणिय पणवेप्पिणु वाईसरि ॥ ध्रुवकं ॥

१

जो भुवणि भणित छट्टुव गिराउ
जो इंदियकूराहिहि विराउ
जो ण मरइ ण हवइ कालएण
घणमणतिमिरे अँलिकालएण
जो णग्गु गिरंजणु लुँकवाळु

जो हियवएण णिञ्जु जि गिराउ ।
जो सत्तारहमउ जिणु विराउ ।
जो को जाणिज्जइ कालएण ।
ण सँमंकिउ जो कँकालएण ।
जो ण करइ करि कत्तियेकवाळु ।

सन्धि ६४

जो जिनवररूपी श्रेष्ठ पर्वतसे निकली है, जो बारह अंगोके जलकी नदी है, जो (चौदह)
पूर्वरूपी समुद्रकी ओर जानेवाली है, ऐसी वाग्देवीकी मैं प्रणाम करता हूँ ।

१

जो संसारमे छोटे चक्रवर्ती हैं, जो हृदयसे नित्य वीतराग है, जो इन्द्रियरूपी क्रूर सांपोके
लिए विराड् (वीराज = गरुड) हैं, और जो सत्तरहवें वीतराग जिन है । जो कालके साथ न मरते
हैं और न जन्म लेते हैं, जो कालको परमज्ञानसे जान लेते हैं, जो सधन मनरूपी अन्धकार, भ्रमर-
के समान कृष्णत्व और मृग कलेवर (चर्म) से अंकित नहीं है, जो नग्न निरंजन और लोकपाल

All Mss. have, at the beginning of this samdhi, this following stanza:—

आखण्डोद्धमरारवोद्धमकं (?) चण्डीशमाधित्य यः

कुर्वन्काममकाण्डताण्डवविधि डिण्डीरपिण्डच्छविम् ।

हंसाडम्बरमुण्डमण्डलसङ्गागीरथोनायकं

वाञ्छसित्थमहं कुतूहलवरी खण्डस्य कीर्तिः कृतेः ॥ १ ॥

P reads उद्धमराखण्डमकं; P reads चण्डीसमासृत्य; K reads चण्डीसमासृत्य । P reads
कुर्वन्कामं; A reads कुर्वन्क्रीडं; P reads छवेः । A reads डिण्डमण्डलं । P reads कृतेः ।
K has marginal gloss on the stanza: अखण्ड एव आखण्डः, उद्धमरो भयानकः, आरवशब्दः
तेन युषतं उद्धमकं वाचं यस्य हरस्य तम् । अकाण्डं अप्रस्तावेन । उद्धमाधित्य या कीर्तिवर्तते इत्यव्या-
हार्यम् । उद्धादप्यहं अतिशयेन निर्मला इति भावार्थः । कृतेः काव्यस्य । The stanza, all the
same, is not clear.

१. A जो जाणिज्जइ इह कालएण । २. A अइकालएण । ३. A चर्मकिउ । ४. A लुवकवाळु ।
५. AP कत्तियकराळु ।

१० जे बुनु अहिंसावित्तिसुत्तु
जो दंसिथसासयपरमभोक्खु
जो तिबरडहणु जियकामदेव
जे रक्खिच सणहु वि जीउ कुंथु
पुणु कहमि कहंवरु दिव्वु तासु

जो गणिवि णं याणइ अक्खसुत्तु ।
णउ करइ पिणाएं कंडमोक्खु ।
पहु परमपउ देवाहिदेव ।
सो चंदिवि रिसिपरमेहि कुंथु ।
दालिइहुक्खदोहग्गणासु ।

वत्ता—एत्थु जिं जंबूदीववरि पुठवविदेहि महाणइ ॥

णामे सीय सलक्खणिय तं को वण्णहुं जाणइ ॥ १ ॥

२

५ वहि दाहिणतीरइ वच्छदेसि
सोहिल्लसुसीमाणयरि रम्मि
सीहरहु सीहविक्रमु महंतु
अणुहुंजिवि भोउ सुदीहकालु
णिवंडंत गिहालिय तेण उक्क
जइवसहहु पासि ह्यत्तिपहिं
एयारहंभधरु सीलवंतु
तिणिं कणि सच्चित्ति णउ चरणु देइ

डिंडीरपिंडपंडुरणिवासि ।
अणवरयमहारिसिकहियधम्मि ।
णरवइ णियारिकुलवलकर्यंतु ।
जोयंतं कहिं मि णहंतरालु ।
संसारिणि रइ णीसेस मुक्क ।
पावइयउ सहुं बहुसत्तिपहिं ।
वणि णिवसइ रुक्खु व अणलवंतु ।
वयविहिअजोगु दिण्णुं वि ण लेइ ।

है, जो हाथमे छुरी और खप्पर नहीं लेते। जिन्होंने अहिंसा-वृत्तिके सूत्रोंका कथन किया है, जो अक्षसूत्रोंको गिनना नहीं जानते, जिन्होंने शाश्वत परम मोक्षको देखा है, जो अपने धनुषसे तीरोंको नहीं छोड़ते, जो त्रिपुरका दाह करनेवाले और कामदेवको जीतनेवाले हैं, जो प्रभु परमात्मा और देवाधिदेव हैं, जिन्होंने सूक्ष्मजीवकी भी रक्षा की है, ऐसे उन ऋषि परमेष्ठी कुन्धु जिनकी वन्दना कर, मैं फिर दारिद्र्य दुःख और दुर्भाग्यको नष्ट करनेवाले उनके दिव्य कयान्तरको कहता हूँ।

वत्ता—इस श्रेष्ठ जम्बूद्वीपके पूर्वविदेहमें लक्ष्णोंवाली महानदी सीता है। उसका वर्णन करना कौन जानता है ? ॥१॥

२

उसके दक्षिण किनारेपर वंस देश है, जहाँके निवासगृह फेनसगृहके समान षवल हैं, जो शोभित सीमाओं और नगरोसे सुन्दर हैं। जहाँ महामुनियों द्वारा अनवरत रूपसे धर्मका कथन किया जाता है। उसमें अपने शत्रुकुलके बलके लिए यमके समान सिंहके समान विक्रमवाला राजा सिंहरथ था। लम्बे समय तक भोगोंको भोग चुकनेके बाद किसी समय आकाशके अन्तरालको देखते हुए उसने एक दूटते हुए तारेको देखा, उसको संसारमे रति नष्ट हो गयी। जिन्होंने पीड़ाओंको आहत किया है, ऐसे अनेक क्षत्रियोंके साथ यतिवृषभ मुनिके पास वह प्रव्रजित हो गया। ग्यारह अंगोंको धारण करनेवाले शीलवान् वह वनमें वृक्षकी तरह मौन रूपसे-निवास करते हैं। संचित कण और तुणपर वह पैर नहीं रखते। दो हुई जो चीज व्रतविधिके अयोग्य है, वे उसे

६. A omits this foot. ७. P ण जाणइ । ८. P जंबूदीव वरि ।
२. १. A भोग । २. AP णिवंडंति । ३. A तणे । ४. A दिण्णउ ण लेइ ।

वंधिवि तित्थंकरणामकम्भु मउ उवरिमिल्लु ससिर्विबसोम्भु ।
 पत्तल पंचाणुत्तरविमाणु मुंजिवि तेत्तीसजलणिहिपमाणु । १०
 छम्मास परिट्टिउ आउ जाम वइसवणहु कहइ सुरिंदु ताम ।
 घत्ता—दीवि पहिल्लइ पविउलइ भरहि देसु कुरुजंगलु ॥
 गयउरि महिवइ तहि वसइ सुरसेणु जैगमंगलु ॥ २ ॥

३

कुरुकुलरुहु सिरिजयसिरिणिकेउ कासवगोत्तं भूसिउ सुतेउ ।
 सिरिकंत कंत कमणीयरुय सुरखयरणियंविणितिलयभूय ।
 णरणाहहु सा वल्लहिय केव सुवियड्डहु वरकइवाणि जेव ।
 पउहुं दोहं मि होही ण संति जिणु कुंथु णाम केवलि कहंति ।
 करि पुरवर धरुं णंदणवणालु पुज्जिजइ भत्तिइ सामिसालु । ५
 तं णिसुणिवि घणएं तं विचिउ किउ णयरु कणयमाणिकदित्तु ।
 पवणुद्धयपहकप्परंपंसु सरंसरिनीरंतररभियइंसु ।
 पासायंचूलियालिहियमेहु गयणुंगयसुरहियधूमरेहु ।
 घत्ता—सुहुं सुत्ती रयणिहि सयणि वालहंसगयंगामिणि ॥
 पच्छिमजामइ सोलह वि पेच्छइ सिविणय सामिणि ॥ ३ ॥ १०

ग्रहण नहीं करते। तीर्थंकर नामक प्रकृतिका बन्ध कर वे मर गये तथा वे ऊपर चन्द्रबिम्बके समान सौम्य पांचवें अनुत्तर विमानमे पहुँचे। वहाँ तैत्तीस सागर प्रमाण आयु भोगते हुए जब लह माह आयु शेष रह गयी, तो इन्द्र कुबेरसे कहता है।

घत्ता—पहले द्वीप जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमे कुरुजांगल देश है। वहाँ हस्तिनापुरमें जगमंगल राजा सुरसेन राजा है ॥२॥

३

कुरुकुलका अंकुर तथा विजयश्रीका घर तेजस्वी वह कश्यपगोत्रसे विभूषित था। उसकी कान्ता श्रीकान्ता अत्यन्त कमनीय रूपवाली और सुर विद्याधर-स्त्रियोमे तिलकस्वरूप थी। राजाके लिए वह वैसी ही प्रिया थी जैसे सुविदग्धोंके लिए वरकविकी वाणी प्रिय होती है। इन दोनोंके जिन क्रन्धुके नामसे उत्पन्न होगे, इसमे भ्रान्ति नहीं है, ऐसा केवली कहते हैं। तुम नगर, घर और नन्दनवनकी रचना करो और भक्तिसे स्वामी श्रेष्ठकी पूजा करो। यह सुनकर कुबेरने स्वर्ण और माणिक्योसे प्रदोष विचित्र नगरकी रचना की। जिसमे हवासे पथमे कपूरकी धूल उड़ती है, जिसके सर-नदीके नीरके भीतर हंस रमण करते हैं, जिसके प्रासादोके शिखर मेघोंको छूते हैं, जहाँ सुरभित धूम्र रेखाएँ आकाश तक उठी हुई हैं।

घत्ता—शय्यातलपर सुखसे सोयी हुई बालहंसगामिनी स्वामिनी श्रीकान्ता रात्रिके अन्तिम प्रहरमें सोलह स्वप्न देखती है ॥३॥

५. AP जयमंगलु ।

३. १. A कुरुकुलरुहुयसिरिसिरि । २. A सुकेउ । ३. AP णरणाहहु वहु वल्लहिय । ४. AP वर । ५. A पवणुद्धयपकयरयविमोसु; P पवणुद्धयपहकप्परंपंसु । ६. AP सरिसर । ७. A गयणगय । ८. P धम्मरेहु । ९. A सुहुसुत्ती । १०. P गइगामिणि ।

४

वारणं मयालीणलप्यं
केसरिं गलालं विकेसरं
उग्यं हिमंसु^३ दिणोसरं
सायकुंभकुंभाण संर्वेहं
५ खीरवारिरासिं महारवं
मंदिरं सुराणं विहावियं
मैलेयं मणीणं विचित्तयं
राइलेयणं संविद्विया
रत्तियाविरामे णियच्छियं
१० कहइ तीइ तिस्सा फलं पई
इदचंदणाइदवदिओ
चक्कवट्टि भोत्तूण भूयलं

गोवई खुंरुविभणवप्यं ।
गोमिणी सुमालाजुयं वरं ।
रत्तमीणजुम्भं रईसरं ।
पंक्यायरं लच्छिपायडं ।
विट्टरं सकंठीरवं णवं ।
णायगेहमहिरायसेवियं ।
इत्ति धूमकेडं पलित्तयं ।
सा णिवस्स वज्जरइ सुद्धिया ।
दंसणावलं कयसुहच्छियं ।
होहिही तुहं सुउ महामई ।
दिव्वणाणि णिल्लियमणिदिओ ।
पाविही पयं परमणिक्कलं ।

घत्ता—तं णिसुणिवि संतुट्टइ सइ आइय मंदिरु मीणइ ॥

बुद्धि लच्छि सिरि कंति हिरि दिहि कित्ति वि लीलागइ ॥ ४ ॥

५

कय धणणं दरिसियसुयणतुट्टि
सावणमासंतरि कसणपक्ख

छम्मासु जाम वा रयणवुट्टि ।
दहमइ दिणि माणवजणियसोक्खि ।

४

जिसके मदमें भ्रमर लीन हैं ऐसा गज, अपने खुरोंसे वप्रक्रोड़ा करता हुआ बैल, गले तक लटकती हुई अयालवाला सिंह, लक्ष्मी, सुन्दर मालाका उत्तम युग्म, उगता हुआ चन्द्र और सूर्य, खेलता हुआ रक्त मीनयुगल, स्वर्णकुम्भोंका युग्म, शोभाको प्रकट करता हुआ सरोवर, महाशब्दवाला क्षीरसमुद्र, नव सिंहासन, देवोंका विमान, नागराजोसे सेवित नागभवन, मणियोंका विचित्र संगम और शीघ्र ही प्रदीप्त अग्निको उसने देखा । रात्रिको अन्त होनेपर जागी हुई वह मुग्धा राजासे कहती है कि रात्रिके अन्तमें मैंने शुभ और इच्छितको करनेवाली स्वप्नावली देखी है । पति उससे उसका फल कहता है कि तुम्हारा महामतिमान् पुत्र होगा । इन्द्र-चन्द्र और नागेन्द्रसे वन्दित दिव्यज्ञानी मन और इन्द्रियोंके विजेता, चक्रवर्ती जो भूतलका भोगकर परम निष्कल पद (मोक्षपद) प्राप्त करेगा ।

घत्ता—यह सुनकर वह सती सन्तुष्ट हुई । मेनका उसके घर आयी । बुद्धि-लक्ष्मी-श्री-कान्ति-हो-वृत्ति और लीलागति कीर्ति भी ॥४॥

५

कुबेरने सुजनको सन्तुष्ट करनेवाली रत्नवृष्टि छह माह तक की । श्रावण माहके कृष्णपक्षमें

४. १. A खुरविभिण्णं । २. AP गोमिणि । ३. A हिमंसुं । ४. P संघणं । ५. A मैलयं विचित्तं मणीणयं

६. AP तुहं सुओ पओही महामई । ७. A संतुट्टपइ ।

५. १. A रयणविट्टि ।

कृत्तिथैणक्खत्ति णिसाविरामि थिउ गत्तिभ भडारउ पउरधामि ।
 सीहरहु राउ अहमिंदु देउ वणिणज्जइ किं णिउवाणहेउ ।
 वणवासहिं-घण्णियकम्बुरेहिं थुउ इंदपडिदाइहिं सुरेहिं ।
 गइ संतिणाहि मलदोसहीणि पल्लोवमैद्धि सायरि वि खीणि ।
 वइसाहमासि पडिवय्हि दियहि अग्गोयजोइ णरणाहपियहि ।
 जायँउ जिणु कयतइलोकलोहु सुरवइ संपत्तु ससुरवरोहु ।
 णिउ सुरगिरिसिउ सुरणाहणाहु णाणत्तयसल्लिवरंभवाहु ।
 घत्ता—सिंचिवि खीरघडेहिं जिणु अंचिउ णवसयवत्तहिं ॥ १०
 इदं रुंदाणंदयरु जोइउ दससयणेत्तहिं ॥ ५ ॥

६

वंदिवि पुणु णामु कंहिवि कुंथु लम्बेपिणु दीहरु पवणपंथु ।
 पुहु आविवि जणणिहि दिण्णु बालु गउ सग्गहु हरि सुँरचक्कवालु ।
 पोढत्तभावि थिउ कणयवण्णु कंतीइ पुण्णचंदु व पसण्णु ।
 पहु पंचतीसधणुत्तुंगकाउ सिरिलंछणु जयहुंहुहिणिणाउ ।
 तेवीससहसवरिसहं सयाइ सत्तेव सपण्णासइ गयाइ ।
 चरणंभोरुहणंमियामरासु णियवालकलीलाइ तासु ।
 पुणु तेत्तिउ मंडलियत्तणेण तेत्तिउ जि चक्कपरियत्तणेण ।

वसमीके दिन भानवोंको सुख देनेवाले कार्तिक नक्षत्रमें निशाके अन्तमें आदरणीय वह सिसहरथ राजा अहमेन्द्र देव प्रवरधाम और गर्भमें आकर स्थित हो गया । उसके निर्वाणके कारणका क्या वर्णन किया जाये ? जिन्होंने स्वर्णकी वर्षा की है ऐसे जनवासियों, इन्द्र-प्रतीन्द्रों आदि देवोंके द्वारा उनकी स्तुति की गयी । मलदोषसे रहित शान्तिनाथ तीर्थकरके बाद लक्ष्मी उत्पन्न करनेवाला आधा पल्य समय बीतनेपर वैशाख शुक्ल प्रतिपदाके दिन राजाओको प्रिय आग्नेय योगमें त्रिलोक-को क्षोभ उत्पन्न करनेवाले जिनका जन्म हुआ । सुरवर-समूहके साथ इन्द्र भी उपस्थित हुआ । देवेन्द्रोंके साथ और ज्ञानरूपी सलिलके श्रेष्ठ मेघ उनको सुमेरु पर्वतपर ले जाया गया ।

घत्ता—वही क्षीरके षडोंसे अभिषेक कर फिर उनको नवकमलोंसे अचित किया । इन्द्रने विशाल आनन्द उत्पन्न करनेवाले उन्हें हजार नेत्रोंसे देखा ॥५॥

६

फिर वन्दना कर, उनका नाम कुन्थु कहकर, लम्बे पवन-पथको पार कर, नगरमें आकर और बालक माँको देकर देवसमूहका पालक इन्द्र चला गया । स्वर्ण रंगवाले वह प्रौढ़ताको प्राप्त हुए । कान्तिमें वह पूर्णचन्द्रके समान प्रसन्न थे । स्वामी पैंतीस धनुष प्रमाण ऊँचे थे । वह श्रीलंछन और जय-जय हुन्दुभि नानादसे युक्त थे । जिनके चरण-कमलोंमें देव नमित हैं, ऐसे उनके नूपवाल क्रीड़ामें तेईस हजार सात सौ पचास वर्ष बीत गये । फिर इतने ही वर्ष अर्थात् तेईस हजार सात सौ पचास वर्ष राज्य करते हुए और इतने ही वर्ष (२३७५०) चक्रवर्तित्वमें,

२. AP कित्तियं । ३. A वइसाहमासि पडिवय्हि दियहि; P वइसाहमासि सेयपडिवय्हि दियहि ।

४. AP जायउ जिणिदु तेलोककलोहु ।

६. १. AP करिवि । २. A सुहु चक्कवालु । ३. AP णवियं ।

- जइयहुं परिछिण्णञ्ज कालु दीहुं तइयहुं परमेसरु पुरिससीहु ।
 गउ कहिं मि वर्णतरु रमणकामु दिट्ठु रिसि तेण त्थेण खामु ।
 १० मत्तंढचंडकिरणइं सहंतु हुंस्सुकजम्मविलसिउ महंतु ।
 घत्ता—सो तज्जणियइ हंसियउ मंतिहि तेण णरिदं ॥
 जोयहि दुबेरु तवचरणु चिण्णञं एण रिसिदं ॥ ६ ॥

७

- छड्डिवि कुहंनु कुविडंतु सन्नु छड्डिवि कुलबलु छलमाणगन्तु ।
 वणि पइसिवि णिहसिवि इंदियाइं अवगणिवि दुज्जणणिवियाइं ।
 चंगउ ववसिउ जइपुंगमेण लइ हउं मि जामि एण जि कमेण ।
 तं णिसुणिवि मंतं वुत्तु एम एयइ णिट्ठइ तउ करिवि देव ।
 ५ जाएसइ कहिं णिस्सुकगंथु तं णिसुणिवि भासइ देउ कुंथु ।
 जाएसइ तहिं जहिं भूयगामु णउ पहवइ लोहु ण कोहु कामु ।
 जाएसइ तहिं जहिं हेमकंति गउ परमपउ परमेट्ठि संति ।
 हो हउं मि पवच्चमि तेत्थु तेम ण णियत्तमि काले कहिं मि जेम ।
 १० अहिसेउ विरइउ पुरंदरेण ता पडिबोहिउ सुरवरजईहिं ।
 कुलि णिहिउ सतणुरुहु जिणवरैण ।

घत्ता—सिवियहि तेणारुहणु किउ विजयहि विजयपयासहि ॥

णाणामणिसिहकज्जलहि लग्गखगाहिवतियसहि ॥ ७ ॥

इस प्रकार जब उनका लम्बा समय निकल गया, तब वह पुख श्रेष्ठ परमेश्वर रमण करनेकी इच्छासे कहीं भी वनान्तरमे चले गये । वहाँ उन्होंने तपसे क्षीण एक मुनिको देखा—सूर्यकी प्रचण्ड-किरणोंको सहन करते हुए महात् तथा जन्मकी चेष्टाओंसे मुक्त ।

घत्ता—उस राजाने अपनी तर्जनीसे मन्त्रियोंके लिए उन्हें बताया कि देखो इन ऋषीन्द्रने कठोर तपका आचरण किया है ॥६॥

७

कुत्सित विडम्बनावाले सब कुटुम्बको छोड़कर; कुलबल, कपट, मान और गर्वको छोड़कर, वनमें प्रवेश कर, इन्द्रियोंका उपहास कर, दुर्जनोंको निन्दाकी उपेक्षा कर इन यतिश्रेष्ठने बहुत अच्छा किया । लो मैं भी इसी परम्परासे जाता हूँ । यह सुनकर मन्त्रीने इस प्रकार कहा—“हे देव, इस निष्ठासे तपकर परिग्रहसे रहित, यह कहाँ जायेंगे ?” यह सुनकर कन्थु देव कहते हैं—कि वह वहाँ जायेंगे जहाँ प्राणिसमूहको लोभ, क्रोध और काम प्रभावित नहीं करते । वहाँ जायेंगे जहाँ स्वर्णकान्ति शान्तिजिन परमेष्ठी हों, मैं भी उसी प्रकार वहाँ जाऊँगा, जहसे समयके साथ वापस नहीं आऊँगा । तब घर आकर लोकान्तिक देवोंने अपनी वाणीमे उन्हें सम्बोधित किया । इन्द्रने अभिषेक किया । जिनवरने अपने पुत्रको कुलपरम्परामें स्थापित किया ।

घत्ता—उन्होंने विजयको प्रकाशित करनेवाली, नाना मणिशिखरोंसे उज्ज्वल तथा जिसमें विद्याधर राजा और देव लगे हुए हैं, ऐसी शिविकामें आरोहण किया ॥७॥

४. AP दुक्कम्मजम्म । ५. A दुद्ध ।

७. १. A कुट्टु । २. A सुसरासईहि; KT recard: सुसुहासईहि इति पाठे अतोव फोभनयापिमि: ।

वणि विठलि सहेययसुखैणीलि
दिणि तन्मि चैय विच्छेलियपंकि
प्रेर लइल लइवि लडोववासु
संसारि सणेहु ण किं पि बद्धु
वीयइ दिणि दिणयरकयपयासि
गयरि दाविच आहारु धारु
अमरहिं धल्लिय मंदारयाइं
सोलहवरिसइं तच विवु चरिवि
दिक्खावणि पत्ति चइत्ति मासि
कयच्छं तिलयतलासिएण
अप्पेणप्पाणं मुणितं तेण
परिजाणितं तिजगु अणंतु गयणु

णियजम्ममासपक्खंतरालि ।
'कित्तिणपक्खत्तासिइ ससंकि ।
तं सहुं पवइयत्तं णिर्वसहासु ।
मणपज्जव णाणु जिणेण लद्धु ।
परिममइ णाहु णरवासवासि ।
थिच धम्ममित्तधरि हयवियारु ।
चिहियइं पंच वि अच्छेरयाइं ।
भवभामिरु दुक्कियभाच हरिवि ।
चंदिणि तइयइ दिणि सुहणिवासि ।
खणि खीणकसापं जससिएण ।
उगमिणं णाणं केवलेण ।
जायच सजोइजिणु अच्छलणयणु ।

धत्ता—दिन्वंबरदिन्वाहरणइं सुर णमंति चरपासहिं ॥

पुणु वि पुरंदर अवयरिच णाणाजाणसहासहिं ॥ ८ ॥

९

थिओ समवसरणि सया विउससरणि ।
जिणो विहियकरुणो ह्यावरणभरणो ।

८

सहेतुक वृक्षोसे हरे विशाल वनमें अपने जन्मके अन्तराल और दिनमें (अर्थात् वैशाख शुक्ला प्रतिपदाके दिन) चन्द्रमाके कृत्तिका नक्षत्रमें स्थित होनेपर छाटा उपवास करते हुए उन्होंने व्रत ग्रहण कर लिया । उनके साथ एक हजार लोग और प्रव्रजित हुए । उन्होंने संसारके प्रति कुछ भी स्नेह नहीं रखा, जिननाथने मनःपर्ययज्ञान प्राप्त कर लिया । दूसरे दिन, दिनकर द्वारा जिसमें प्रकाश किया गया है, ऐसे हस्तिनापुरमें स्वामी घर-घर परिभ्रमण करते हैं । हतविकार वह धर्ममित्रके घर ठहर गये । वहाँ उन्हें सुन्दर आहार दिया गया । देवोंने मन्दारपुष्प बरसाये और पाँच आश्चर्य प्रकट किये । सोलह वर्ष तक तीव्र तपका आचरण कर संसारमें परिभ्रमण कराने-वाले पापभावको नष्ट कर वह वृष निवास दोक्षा वनमें पहुँचे । चैत्रमाहके शुक्ल पक्षकी तृतीयाके दिन तिलक वृक्षके नीचे स्थित यशसे श्वेत छाटा उपवास करनेवाले क्षीणकयाय उन्होंने आत्मासे आत्माका ध्यान किया । उत्पन्न हुए केवलज्ञानसे उन्होंने त्रिलोक और अनन्त आकाश जान लिया । अचल नेत्र जिन उद्योति सहित हो गये ।

धत्ता—दिव्य वस्त्र और दिव्य आभरण धारण करनेवाले देव चारों ओरसे उन्हें प्रणाम करते हैं । फिर भी अपने नाना यानोंसे पुरन्दर वहाँ आया ॥८॥

९

सदैव विद्वानोंके लिए शरणस्वरूप समवसरणमें वह स्थित हो गये । कल्याण करनेवाले,

८. १. AP ° वक्खमुलि । २. A विच्छलिय° । ३. AP वट । ४. A पुवसहासु । ५. P पव जाणित ।

	समुद्धरइ समयं	णया हरइ कुमयं ।
	मुसावयणमुइयं	पसूहणणरुइयं ।
५	जगं करइ विमयं	पहे थचइ दुमयं ।
	मलं महइ कसणं	घणं दमइ वसणं ।
	फणीसुरनृभवणं	फुलं कहइ भुवणं ।
	चलं खलइ कविलं	हरं हसणसुहलं ।
	तणूणिहियमहिलं	महीधरणसबलं ।
१०	बला विणिहयैपुरं	हरिं भणइ ण चरं ।
	मुणिं कणयचरणं	ण तं तिमिरहरणं ।
	खणाभावविगयं	ण पत्तियह सुगयं ।
	अयं अमरतरुणी-	रयं णमइ ण गुणी ।
	परं रिसहचरियं	महोपसमभरियं ।
१५	जिणा किमवि गहियं	मणे अहव महियं ।
	णं सो पडइ गहिरि	णरो णरयविवरि ।

घत्ता—पंचतीस गणहर जिणहु जाया हयरैयसंगहं ॥

भयसयाइं दिव्वहं रिसिहिं मणमोणियपुण्वंगहं ॥ ९ ॥

१०

चालीस तिण्णि सहसाइं होति
एत्तिय सिक्खुय सिक्खाविणीय

सहुं अद्धसएं सच्च तहिं ण भंति ।
गुरुभत्तिवंतं संसारभीय ।

मरणके आवरणको नष्ट करनेवाले वह जिन जिनसासनका उद्धार करते हैं, नयासे कुमतका हरण करते हैं। असत्य भाषणसे मुदित होनेवाले, पशुहत्यामें शचि रखनेवाले उनको वह मद्द रहित करते हैं, दुर्मदको पथमें लाते हैं, पाप और मलका नाश करते हैं, सघन दुःखोंका दमन करते हैं, नागेश्वर और नृपभवनवाले विश्वका स्पष्ट कथन करते हैं। चंचल कपिल मतको और हँसीसे मुखर हरको स्खलित करते हैं। शरीरपर महिलाको धारण करनेवाले धरतीको धारण करनेमें समर्थ, बलपूर्वक द्वारिकाका निर्माण करनेवाले हरिको जो वर नहीं कहते, जो अक्षपाद मुनि हैं, वह अन्धकारका नाश करनेवाले नहीं हैं, जो क्षणिकवादको माननेवाले हैं ऐसे उन सुगतका विश्वास मत करो। ब्रह्मा देवस्त्रीमें रत है, उसे गुणी नमस्कार नहीं करते। केवल महात्पुत्रपशमसे भरित ऋषभचरितको जिसने स्वीकार किया है, अथवा मनमे उसकी पूजा की है, वह नर गम्भीर नरकविवरमें नहीं पड़ता।

घत्ता—जिनवरके पैंतीस गणघर थे। पापसंग्रहको नष्ट करनेवाले और अपने मनमें पूर्वांगोंको माननेवाले दिव्य ऋषि, सात सौ थे ॥९॥

१०

तैंतालीस हजार एक सौ पचास; इतने महात्पुत्र भक्तिसे पूर्ण, संसारसे भीत और शिक्षामें

९. १. AP सुरणिभवणं । २. A विणिहयपरं । ३. A महापसमं । ४. P omits ण । ५. AP हयरद-संगहं । ६. AP मणि माणियः ।

दोसहस्रं पंचसयाई ओहि
 पंचेव सद्धम सउ एषु चाहं
 दोसहस्रं पण्णासाहियाइं
 सहसाइं तिण्णि तिण्णि जि मयाइं
 सहसाइं सट्ठि आहुहसयइं
 सावयहं लक्ष्म दो तिण्णि लक्ष्म
 संदेव तिरियणाणु णहकरालु
 तेत्तिउ मोलएवरिसूणु कालु
 गउ संभेयह सम्मयगुणालु
 पटिमाइ परिट्टिउ मासमेत्तु

णाणिहिं केवलिहिं ति दोण्णि लेहि ।
 महरिसिहिं विउवणरिद्धि जाहं ।
 गुणवंतहं वाइहिं साहियाइं ।
 मणपज्जववंतहं गयमयाइं ।
 अज्जियहं तेत्थु थुयकुथुपयइं ।
 सावहहिं ण याणमि देव संख ।
 जेत्तिउ होइवि थिउ चणवालु ।
 मट्टि विहरिवि हयणरगोहजालु ।
 तं सुक्खाणु पूरिउ विस्सालु ।
 रिसिसएसं सहुं णिम्मुक्कमत्तु ।

घत्ता—घइसाहइ मियपट्टिवइ जामिणिमुहि णिहयक्कउह ।

गउ जिणु सहस्रकरं कित्तिउ कित्तिउरिउखे भोक्खहु ॥१०॥

११

फय तियसहिं तासु सरीरपुञ्ज
 मंभाभेरीहुं दुहिणिणाय
 पयपणइपयासियदुरिययलणे
 इइवसिरंभाणघणरमिल्लु

सुरकिंकरकरहयविविहवज्ज ।
 घणधणियाभरमुहगुफगाय ।
 जय जयहि जिणेसर कम्ममलण ।
 सयमहकरपंजलिधित्तुक्खु ।

विनोत शिक्षा थे । दो हजार पांच सौ अयधिनानी थे । तीन हजार दो सौ केवलज्ञानी, विक्रिया ऋद्धिके धारक महामुनि पांच हजार एक सौ, गुणवान् वादी मुनि दो हजार पचास थे, तीन हजार तीन सौ मद्र रहित मन.पर्ययज्ञानी थे । साठ हजार तीन सौ पचास कुन्धु भगवान्के चरणकी स्तुति करनेवाली आधिकारें थी । दो लाख श्रावक और तीन लाख प्राविकाएँ थी । देवोकी संख्या में नहीं जानता । नखोंमें भयंकर जितना संख्यात तिर्यंच समूह था, वह गोलाकार स्थित हो गया । जिन्होंने मनुष्योंके मोहजालको नष्ट किया है, ऐसे सम्यवत्य गुणोंके घर वह उतने ही सोलह वर्ष तक धरतीपर विहार करते हुए सम्मदधिसर पहुँचे । वहाँ उन्होंने विशाल शुबलघ्यान पूरा किया । एक माह तक प्रतिमा योगमें स्थित रहे और एक हजार भुनियोके साथ शरीरसे मुक्त हो गये ।

घत्ता—त्रैषाय शुबला प्रतिपदाके दिन रात्रिके पूर्वभागमें ऋत्तिका नक्षत्रमें इन्द्रके द्वारा कीर्तित जिन मोक्षके लिए गये ॥१०॥

११

जिसमें देवों और अनुचरोके हाथोंसे विविध वाद्य बजाये गये हैं, देवोंने उनकी ऐसी शरीर पूजा की । भम्मा, भेरी और दुन्दुभियोंका निनाद और जोर-जोरसे बोलनेवाले देवोका नाद होने लगा । चरणोंमें प्रणत लोगोंके पापोंका दलन प्रकाशित करनेवाले और कर्मोंका नाश करनेवाले हे देव, आपकी जय हो । जो उर्वशी और रम्भाके नृत्यसे रसमय है, जिसमें इन्द्रके हाथों फूल फेंके जा

१०. १. A केवलिहिं वि दोण्णि । २. A सावयह संख दो । ३. A omits this foot...

११. १. AP^०दलणु । २. AP वरजलणकुमारणिहित्तलणु । ३./A^०रसिल्ल । ४. A^०फुल्ल ।

- ५ तुंबरुणारयसंगीयोगेय विरइय जिणपडिबिंवाहिसेय ।
 मालाचिज्जाहरपिहियगयण मुणिषोसियणाणाथोत्तवयण ।
 णवकमलकलसदप्पणसमेय धवलायवत्तधयसंखसेय ।
 दूर्वांकुरदहिचंदणपसत्थ वंसग्गविलंबियदिव्ववत्थ ।
 सण्णाणि सुदंसणि विउल्लुद्धि णिठ्वाणपुल्ल महुं देउ सुद्धि ।
- १० घत्ता—सुहुं कुंथु भडारउ देउ महुं वंदिउ भरहणरिंदहि ॥
 सियपुप्फयंतउज्जलसुहहिं णमिउ फणिंदसुरिंदहि ॥११॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसणुणालंकारे महासव्वभरहाणुमणिण्य महाकइपुप्फयंतविरइय
 महाकव्वे कुंथुचैकहरतिरथयरणिठ्वाणगमणं गाम चउसट्ठिमो
 परिच्छेओ समत्तो ॥६३॥

रहे हैं, तुम्बुरु और नारदके द्वारा गीत गाये जा रहे हैं, जिन प्रतिविम्बोंका ऐसा अभिषेक किया गया। जिसमे विद्याधरोंकी कतारोंने आकाशको ढक लिया है, जिसमें मुनियोंके द्वारा नाना स्तोत्रवचन घोषित किये जा रहे हैं, जो नवकमल-कलश और दर्पणसे युक्त हैं, जो धवल आतपत्र ध्वज और शंखोंसे श्वेत है। दूर्वांकुर, दही और चन्दनसे प्रशस्त है, जिसमें बांसोंपर दिव्यवस्त्र अवलम्बित हैं, ऐसी निर्वाण पूजा, मुखे ज्ञान और दर्शनसे युक्त विपुल बुद्धि और श्रद्धा प्रदान करे।
 घत्ता—भरतादि नरेन्द्रोंसे वन्दित, श्वेत नक्षत्रोंके समान उज्ज्वल मुखोंवाले नागेन्द्रों-सुरेन्द्रों द्वारा नमित आदरणीय कुन्थुदेव मुझे सुख प्रदान करें ॥११॥

त्रेसठ महापुराणोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित पूर्व
 महासव्व भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका कुन्थु चक्रवर्ती और तीर्थंकर
 निर्वाण गमन नामका चौसठवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥६३॥

संधि ६५

सुयदेवयहि पसत्थहि पसमियदुम्मइहि ॥
वंदिवि सिर्रेण सउवइ अंगइ भयवइहि ॥ ध्रुवकं ॥

१

जो भयवंतो मुक्कसवासो	जं णीसासो सुरहियवासो ।	
जेण कयं उत्तमसंणासं	जो ण समिच्छइ चउसण्णासं ।	
जिणदिट्ठं पंचिदियणासं	जं पणवंतो पावइ णा सं ।	५
भीममुहा वग्घाइणवासा	जस्स गया दूरेण सवासा ।	
रक्खइ सुवणं जस्स खमा णं	णाणं जस्साणंतखमाणं ।	
जेणुवइट्ठं धम्मणिहाणं	संमियं चित्तं भिन्नणिहाणं ।	
जो जीवाणं जाओ ताणं	गुरुयणभत्ती जाणं ताणं ।	
अंताईणं वत्थुपयाणं	जो वत्तारो सउवपयाणं ।	१०

संधि ६५

दुर्मतिको प्रशमित करनेवालो प्रशस्त भगवती श्रुतदेवताके चौदह पूर्वो सहित ग्यारह श्लोकी में वन्दना करता है ।

१

जो ज्ञानवान् अपने गृहवाससे मुक्त हैं, जिनसे मनुष्योंको शिक्षा होती है, जो सुरभित न्धवाले हैं, जिन्होंने उत्तम संन्यास लिया है, जो आहारनिद्रादि संज्ञाओको नहीं चाहते, बल्कि जेनेन्द्र द्वारा उपदिष्ट पांच इन्द्रियोका नाश चाहते हैं । जिनको प्रणाम करनेवाला पुरुष सुख प्राप्त करता है । व्याघ्रादि चर्मको धारण करनेवाले पाशयुक्त वेताल आदि देव जिनसे दूर चले गये हैं, जिनकी क्षमा विश्व और मनुष्यकी रक्षा करती है, जिनका ज्ञान अनन्तआकाशके प्रमाणवाला है । जिन्होंने धर्मका उपदेश किया है और भीलके समान लोगोंके चित्तको शान्त किया है, जिन जीवों-गुरुजनके प्रति भक्ति है, वे उनके आता हैं । जो आस आदिके वस्तुप्रमाण और संमस्त पदोंके

All Mss. have, at the beginning of this samdhi, the following stanza:-

आजन्मं (?) कवितारसैकचिपणासीमाभ्यभाजो गिरां ।

दृश्यते कवयो विलाससकलग्न्यानुगा बोधतः ।

किं तु प्रौढनिरूढपूढमतिना श्रीपुष्पदन्तेन सोः

साम्यं विश्रति (?) नैव जातु कविता शीघ्रं ततः प्राकृते ॥ १ ॥

AP read विशाल in the second line; A reads प्रौढनिपूढ in the third line; and AP read कविना, A reads शीघ्रं तत प्राकृतै, P reads शीघ्रं त्वतः प्राकृतै: in the fourth line.

१. A सम्मियचित्तं । २. A अंताईणं; P अत्याईणं ।

दिण्णं जेणं^३ अभयपयाणं
भवहंतारं धीरं^४ हंतं
तस्स भणाभि चरित्तं चित्तं

सासयसिबणयरस्स पयाणं ।
णमिउं देवं अरमरिहंतं ।
जणियसुरासुरविसहरचित्तं ।

घत्ता—जंबूदीवइ सुरगिरिपुण्वदिसासियइ ॥

१५

पुण्वविदेहइ पविउलि केवलभासियइ ॥ १ ॥

२

सीयहि उत्तरकूलि रवणणइ
खेमणयरि धणवइ पुहईसरु
णंदणाहित्थयरसमीवइ
अप्पउं तेणं णिओइउं राएं
५ चत्तकुपथं जाणियसत्थं
जाउ जयंताणुत्तरिं सुरवरु
आउ वासु तेत्तीसमहोयहि
तप्पमाणविकिरियातेएं
मुंजंतहु सुहुं अहमिदाणउं

कच्छाणामदेसि वित्थिण्णइ ।
रुवं रमणीसरु वम्मीसरु ।
बुद्धिबि धम्मु णाणसम्भावइ ।
समंणु हवैप्पिणु मणवयकारं ।
किउ पांथोवगमणु परमत्थं ।
कायमाणु तहु एकु जि किर करु ।
लोचणाडि सो पेक्खइ सावहि ।
वीरिणु संजुसु अमेएं ।
आउहि थिउ छम्मासपमाणउं ।

१०

घत्ता—सोहम्माहिउ भववहु जिणपयरयमइहि ॥

ताहिं कालिहिं आहासइ सुरवइ धणवइहि ॥ २ ॥

वक्ता हैं, जिन्होंने अभयको प्रदान और शाश्वत शिवनगरको प्रयाण किया है, ऐसे संसारका नाश करनेवाले धीर अरहन्ताथ अर्हन्तको नमस्कार कर उनके सुर, असुर और विषधरोके चित्तको आश्चर्य उत्पन्न करनेवाले विचित्र चरित्रको कहता हूँ ।

घत्ता—जम्बूद्वीपके सुमेरुपर्वतकी पूर्व दिशा केवलोके द्वारा भाषित विशाल पूर्वविदेहेमे ॥१॥

२

सीता नदीके उत्तरीतटपर फैले हुए सुन्दर कच्छ नामके देशके क्षेमनगरमे धनपति नामका राजा था । रूपमें जो स्त्रियोंका स्वामी और कामदेव था, वह अर्हन्तन्दन तीर्थकरके समीप धर्म समझकर उस राजाने ज्ञानके स्वभावमें अपनेको नियोजित कर लिया । मन वचन कायसे श्रमण होकर, छोटे भागंको छोड़कर और शास्त्रको ज्ञानकर उसने परमार्थ भावसे प्रायोपगमन किया । वह जयन्त विमान देव पैदा हुआ । वहाँ उसके शरीरका प्रमाण एक हाथ था । उसकी आयु तैंतीस सागर प्रमाण थी । अवधिज्ञानी वह लोकनाडीको देख सकता था । सन्तसमान विक्रिया ऋद्धिके तेज और वीर्यसे संयुक्त सुखको बिना किसी मर्यादाके भोगते हुए उस अहमेन्द्रकी आयु छह माह शेष रह गई ।

घत्ता—तो उस अवसरपर सौधर्म इन्द्रने जिनपदमे जिसकी मति अनुरक्त है, ऐसे भव्य कुबेरसे कहा ॥२॥

३. A तेषं । ४. AP धीरं ।

२. १. A बुद्धिबि णामु धम्म । २. AP णिओविउ । ३. AP सवणु । ४. AP पायोपगमणु । ५. AP अहमिदाणं । ६. A पवाणं; P पमाणं । ७. AP, ताहिं जि कालि आहासइ ।

पथु भरहि कुरुजंगलि जगवह
 राउ सुर्वसणु तहु गुणजलसरि
 एयह दोह वि होसइ जगगुरु
 ता तं जाइवि जक्खे रइयउ
 णिसि सुहु सुत्तइ पियकमणीयइ
 करि करोहु पंचाणणु गोमिणि
 सफरुल्लय दो कलस सुहायर
 सीहासणु विमागु णायालउ
 जायवेउ दीहरज्जालावलि

कुंजरपुरवरि मारुयधुयधइ ।
 मित्तसेण णामेण धरेसरि ।
 तुहु करि ताहं तुरिउ केचणंपुरु ।
 पट्टणु रयणकिरणअइसइयउ ।
 सिविणयंपंति दिट्ट रमणीयइ ।
 मालाजुयलु चंडु णहयलमणि ।
 विमलसलिलकमलायर सायर ।
 मणिणिरुनु मऊहकरालउ ।
 इय जोइवि ताए सिविणावलि ।

घत्ता—देविइ सुत्तविउद्धिइ अक्खिउ णरवइहि ॥

तेण वि फलु विहसेपिणु भासिउ तहि सइहि ॥ ३ ॥

जो जाणइ तिहुयंणि परु अप्पउ
 तं णिसुणि वि हरिसिय सीमंतिणि
 कंति कित्ति सइ बुद्धि भडारो
 जा छम्मासे ताम धरि चंदिह
 फग्गणि चंदेविसुद्धहि तइयहि

सो तुह सुउ होसइ परमप्पउ ।
 आइय घरं सिरि दिहि हिरि कामिणि ।
 गन्मसुद्धि कय सुहइ जणेरी ।
 चंत्तिउं जक्खे लोयाणंदिह ।
 णिसिपच्छिमसंझहि रेवइयहि ।

यहाँ भरतक्षेत्रके कुरुजांगल जनपदमें जिसमें हवासे ध्वज हिलते हैं, ऐसा हस्तिनापुर नगर है, उसमें राजा सुदर्शन है। उसकी गुणरूपी जलकी नदी मित्रसेना नामकी गृहेश्वरी थी। इन दोनोंके विश्वगुरु जन्म लेंगे, तुम शीघ्र उनके लिए स्वर्णनगरकी रचना करो। तब कुबेरने जाकर रत्नकिरणोंसे अतिशयित नगरकी रचना की। प्रिय रमणी! कामिनीने रात्रिमें सुखसे सोते हुए स्वप्नमाला देखी। हाथी, बैल, सिंह, लक्ष्मी, मालायुगल, चन्द्रमा, सूर्य, दो मत्स्य, दो शुभाकार कलश, विमल जल और कमलोंका सरोवर, समुद्र, सिंहासन, विमान, नागलोक, किरणोंसे भास्वर मणिसमूह और दीर्घ ज्वालालीसे युक्त आग। इस प्रकार स्वप्न देखकर उस—

घत्ता—देवीने सोतेसे जागरकर, राजासे कहा। उसने भी हंसते हुए उस सतीसे उसका फल बताया ॥३॥

जो त्रिभुवनमें स्वपरको जानता है, वह परमात्मा तुम्हारे पुत्र होंगे। यह सुनकर वह सीमन्तको हृषित हो उठी। घरपर श्री, धृति, ह्री, कान्ति, कीर्ति, सती और बुद्धि आदि आदरणीय देवियाँ आयीं और उन्होंने सुखको उत्पन्न करनेवाली गर्भशुद्धि की। जब छह माह बाकी बचे तो कुबेरने लोगोंको आनन्द देनेवाले सोनेकी घरपर वर्षा की। फाल्गुन कृष्णा तृतीयाके दिन, रात्रिके

३. १. AP तुरिउ ताहं । २. A सुहसुत्तइ । ३. AP मयूहं । ४. A विबुद्धइ ।

४. १. AP तिहुवणु । २. P सुणिवि । ३. A वित्तउ, P वित्तउ ।

थिच गळ्मंतरालि जो धणवइ
शुठ अमरिंदचंदधरणिंदहिं
बुदुळं विसरिसेहिं वसुहारहिं
परिवट्टंतइ दिणसंतोणइ
१० थकइ कुंथुणाहणिठ्वाणइ
वरमगसिरमासि सिसिरंहु भरि

सो अहमिंदु चवेपिणु सुहमइ ।
तहु दिवेंसहु लरिगवि जक्खिदहिं ।
अट्टारहपक्खंतरमेरहिं ।
वरिसकोडिसहसेण विहीणइ ।
पल्लचउत्थभाषपरिमाणइ ।
पूसजोइ चउदहमइ वासरि ।

घत्ता—सग्गमगसंखोहणु बुहयणदुरियहरु ॥

णाणत्तयसंजुत्त णासियजन्मजरु ॥ ४ ॥

सत्तमचक्रवट्टि ह्यपरमउ
मंदरसिहरि तूरणिगघोसहिं
णासु करेपिणु परमेसहु अरु
गउ पोलोभीवइ णियमंदिरु
५ हेमच्छवितणु दहदहधणुत्तणु
एक्कवीसवरिसहं सहसई सिसु
एक्कवीससहसई मंडलवइ
चउदह रयणइ णव वि णिहाणइ

संभूयउ जिणु अट्टारहमउ ।
णहविउ पुरंदरेहिं बत्तीसहिं ।
अम्महिं करि अप्पिउ आविउि षरु ।
वट्टइ पुण्णवंतु जिणु सुंदर ।
गउयारउ गुणगणरंजियजणु ।
लीलइ थिउ.डिंभयकीलावसु ।
एक्कवीससहसई पुणु महिवइ ।
मुंजिउि पीणिउि दविणं दीणइ ।

अन्तिम प्रहरमें रेवती नक्षत्रमें, जो धनपति, अहमेन्द्र धा, शुभमति वहू, वहसि च्युत होकर, गर्भमें आकर स्थित हो गया। अमरेन्द्र चन्द्र और धरणेन्द्रने स्तुति की। उस दिनसे लेकर मक्षेन्द्रने अठारह पक्षों तक असामान्य स्वर्णधाराकी वर्षा की। कुन्थुनाथके निर्वाणके बाद समयकी परम्परा बीतनेपर एक हजार करोड़ वर्ष कम पत्यका चौथाई भाग जब शेष रह गया, तो शिशिरके भारसे भरे मार्गशीर्षके शुक्ल पक्षकी चतुर्दशीको पुष्य नक्षत्रमें—

घत्ता—स्वर्गमार्गको क्षुब्ध करनेवाले, बुधजनोके पापको हरण करनेवाले तीन ज्ञानोसे युक्त, जन्म और बुढ़ापेका जिन्होंने नाश कर दिया है ॥४॥

ऐसे धनुका मंद दूर करनेवाले सातवें चक्रवर्ती और अठारहवें जिन उत्पन्न हुए। मन्दराचलके शिखरपर, बत्तीस इन्द्रोंने तूयोंके निर्वाणके साथ उनका अभिषेक किया। परमेश्वरका 'अर' नाम रखकर और धर आकर माताके हाथमें सौंप दिया। इन्द्र अपने धर चला गया। पुण्यवान् सुन्दर जिन बढ़ने लगे। स्वर्णके समान शरीर कान्तिवाले उनका शरीर बीस धनुष प्रमाण ऊँचा था। और वह अपने गुणगणसे जनोका रंजन करनेवाले थे। बाल क्रीडाके वशीभूत वह शिशु इक्कीस हजार वर्ष तक क्रीडामें रहा। फिर इक्कीस हजार वर्षों तक वह मण्डलपति रहे फिर इक्कीस हजार वर्ष तक चक्रवर्ती राजा रहे। चौदह रत्न और नौ निधियोंका भोगकर धनसे

४. A देवसहु; P दिवहहु । ५. AP परिवदढतइ । ६. AP दिणि । ७. P सियमगसिर । ८. A

सिसिहरभरि; P सिसिरहे भरि ।

५. १. K मंदिरसिहरि । २. P एक्कवीससहसहसई ।

सारयन्भु पविलीणु गियच्छिवि लच्छिविहोष असेसु दुगुंछिवि ।
 जीविष देहु असारु वियप्पिवि अरविदहु महिरज्जु समप्पिवि १०
 घत्ता—खीरवारिपरिपुण्णहिं तारहारसियहिं ॥
 पहाइवि मंगलकलसहिं सुरपह्दस्थियहिं ॥ ५ ॥

६

गिसुगिवि सारस्संयसं बोहणु वइजयंतसिवियहि आरोहणु ।
 करिवि सहेइयवणु तं जेतहि गच तुरिएण महापहु तेतहि ।
 मियसिरज्जुत्तासि दहमइ दिणि चंदिणि रेवइरिक्खि सुसोहणि ।
 अवरणहइ छट्टेणुववासं गिक्खंतउ सहं रायसहासं ।
 लुंचिवि कुंतल गिम्मोहाल्लं लिंगु असंगु लेवि गिबेलं ५
 मणपज्जयधरु सुद्धिणिक्खहि वीयइ दियहि पइहुअ भिक्खहि ।
 चक्कणयरि अवराइयणरवें पाराविअ अमरासुरसुरवें ।
 तहु धरि पंच वि चोच्चइं घडियइं कुमुमइं रयणइं गयणहु पडियइं ।
 तवतावें गियतणु तावंतउ सोलहवरिसइं महि विहरंतउ ।

घत्ता—दिक्खावणु आवेप्पिणु कत्तियमासि पुणु ॥ १०

सियवारहमइ चासरि सुरवरणवियगुणु ॥ ६ ॥

दीनोको प्रसन्न कर शरदके मेघको लीन होते देखकर, अशेष लक्ष्मी-विभोगकी निन्दा कर जीवन और देहको असार समझकर, अरविन्द (पुत्र) को महाराज्य देकर ।

घत्ता—खीर समुद्रके जलोसे परिपूर्ण, तार और हारके समान स्वच्छ मंगलकलशोंसे, देवपत्नियों द्वारा स्नान कराकर ॥५॥

६

लौकान्तिक देवोंका सम्बोधन सुनकर, वैजयन्त शिविकापर आरोहणकर, जहाँ वह सहेतुकवन था, वहाँ महाप्रभु तुरन्त गये । मार्गशीर्षके शुक्ल पक्षकी दसमीके दिन, सुशोभन रेवती नक्षत्रमे अपराह्णमे वह छाटा उपवास कर एक हजार राजाओंके साथ दीक्षित हो गये । केश लोंच कर निर्मोहसे युक्त असंग चिह्न और दिगम्बरत्व लेकर, वह जिसमे श्रद्धिका निरीक्षण है, ऐसी भिक्षाके लिए दूसरे दिन प्रविष्ट हुए । चक्रनगरमें अमरों और असुरोंके समान सुन्दर स्वरवाले राजा अपराजितने उन्हे आहार दिया । उसके घरमें पाँच आश्चर्य प्रगट हुए । पुष्पों और रत्नोंकी आकाशसे वर्षा हुई । तपके तापसे अपने शरीरको तपाते हुए तथा सोलह वर्ष तक धरतीपर विहार करते हुए ।

घत्ता—दीक्षावन (सहेतुकवन) मे आकर, सुरवरोंसे जिनके गुण प्रणम्य है, ऐसे वह कार्तिक शुक्ला द्वादशीके दिन ॥६॥

६. १. A सारयस्स । २. AP तावंतह । ३. AP विहरंतह ।

७

अवरणहृद्वं वयतलि थक्क
जायड केवलि केवलदंसणि
धरणु वरणु ससि तरणि धणेसरु
धुणइ अणेयहिं थोत्तपलत्तिहिं
५ तेत्थु णिसण्णण तं सिट्ठ
चड णिक्खं वि अज्जीव पयासिय
मग्गणगुणठाणां समासिय
सत्तपंचणवच्छिविहभेयइं
तहु संजाया तहिं मल्लियकर
१० गणसि दहुत्तर वस्सहदमणहं

छट्टुचवासिड मोहें मुक्कड ।
आयड भेसइ अंगारड सणि ।
पवणु जलणु भावेण सुरेसरु ।
सभवसरणु किड विविहिविहत्तिहिं ।
जं अवरैहिं मि देवहिं दिट्ठड ।
रुविखंधदेसाइ वि भासिय ।
जीव स्काय अकाय वि दरिसिय॥
एयइं अवरइं कहियइं णेयइं ।
गणहर तीस रिद्धिबुद्धीसर ।
तिण्णिण तिण्णिण सय सिक्खुय सैवणहं ।

घत्ता—पंचतीससहस्रइं भणु अट्टसयइं कियइं ॥

तीसणित्तइं जाणसु मुणिहिं वयंकियइं ॥ ७ ॥

८

एत्थियं ओहिणाणि तहु ह्यकलि
जिणवरचरणुणासियसीसइं
मणपज्जयधराहं वरचरियहं

दुसहस वसुसय साहिय केवलि ।
दोसहसइं पणवणविभीसइं ।
चउसहसइं तिसयइं विकिरियहं ।

७

अपराह्णमे आम्रवृक्षके नीचे स्थित हो गये और छोटे उपवासके द्वारा मोहसे मुक्त हो गये । केवलदशानी वह केवली हो गये । बृहस्पति, मंगल, शनि, धरण (नागकुमारोंका इन्द्र), वरुण, शक्ति, सूर्य, घनेस्वर (कुबेर), पवन, अग्नि और इन्द्र भावपूर्वक वहाँ आये । वह अनेक स्तोत्र प्रवृत्तियोंसे स्तुति करता है और अनेक विभाजनोंके साथ समवसरणकी रचना करता है । वहाँ विराजमान उन्होंने वह कथन किया जो दूसरे देवोंने भी देख लिया । चार द्रव्यों (धर्म, अधर्म, आकाश और काल) का निरूपण कर उन्होंने अजीव तत्वका प्रकाशन किया । उन्होंने द्रव्यके स्कन्ध और देशका भी कथन किया । संक्षेपमें मार्गणा और गुणस्थानोंकी चर्चा की । सकाम-अकाम जीवोंको भी दरसाया । सात, पाँच, नौ और छह भेदवाले इन और दूसरी ज्ञेय वस्तुओंका कथन किया । वहाँ उनके हाथ जोड़े हुए तीस गणधर हुए । कामदेवका दमन करनेवाले ग्यारह अंगों और चौदह पूर्वोंके धारी छह सौ दस मुनि थे ।

घत्ता—ब्रह्मसे अंकित शिक्षक मुनि पैंतीस हजार आठ सौ पैंतीस थे, यह जानो ॥७॥

८

पापको नष्ट करनेवाले अवधिज्ञानी अट्टाईस सौ थे । केवलज्ञानी भी इतने ही अर्थात् अट्टाईस सौ । जिनवरके चरणोंमें सिर झुकानेवाले मनःपर्ययज्ञानी दो हजार पचपन थे । अष्ट

७. १. A भेवव । २. AP अंगारय । ३. AP णीरुवि । ४. AP समणहं । ५. पंचवीस ।

८. १. AP एत्थिय तीयणाणि; T तइयणाणि ।

सोलहसयई परागमहारिहिं
सावयाहं पुणु लक्खु भणिज्जइ
लक्खइं तिण्णि गेहधम्मत्थहं
संखावज्जिण्हिं गिठ्वाणहिं
एकवीससहसई ध्रुवुं माणइं
भूयलि भमिच्चि भव्व पहि लौइवि
सहुं रिसिसहसं थिउ संमेयइ
फग्गुणपुरिममासि कर्त्तणतिमि
पुव्वणिसागमि णिक्खलु जायउ

सट्टिसहासइं संजमणारिहिं ।
सुण्णचउफ्फ छहग्गइ दिज्जइ ।
महिलहं मंगलदव्वविहरथहं ।
खगैमृगोहिं पुव्वु संयमाणहिं ।
वरिसहं सोलहवरिसैविहीणइं ।
मासमेत्त णियजीविउ जोइवि ।
मुइवि दिव्वत्तणु पडिमाजोयइ ।
दियहि चंदि कयरेवइसंगमि ।
गउ तहिं जिणु जहिं गयउ ण आयउ ।

घत्ता—चउविहदेवणिकायहिं जयजयकारियउ ॥

अरु अग्गिदकुमारहिं तहिं साहुंकारियउ ॥ ८ ॥

९

अरु अरविंदगन्धकयचारउ
अरु अरभाणिहीहिं णउ रुचइ
अरु अरसिद्ध अगंधु अरुअउ
अरु अरईरईहिं णउ छिप्पइ

अरु अरुहंतु अणंगवियारउ ।
अरु अरहिद्धु तच्चु जेगि सुमइ ।
अरु अरामु अविरामउ हूयउ ।
अरु अरोसु किहं पावें लिप्पइ ।

चर्चा धारण करनेवाले विक्रियाभ्रद्विके धारक चार हजार तीन सौ थे। परमागमको धारण करनेवाले श्रेष्ठ वादी मुनि सोलह सौ थे। संयम धारण करनेवाले आधिकारें साठ हजार थों। श्रावक एक लाख साठ हजार थे। गृहस्थ धर्ममें स्थित तथा हाथमें मंगल द्रव्य लिये हुए तीन लाख श्राविकाएँ थीं। देवता सख्या-विहीन थे, स्वर्ग और मृग पूर्वोक्त मानवाले (संख्यात) थे। सोलह वर्ष कम क्षवकीस हजार वर्ष पर्यन्त भूतलपर परिभ्रमण कर, भव्योंको पयपर छाकर, अपना जीवन एक माहका देखकर वह एक हजार मुनियोंके साथ सम्मद गिखरपर स्थित हो गये एवं शरीरको (मोहको) छोड़कर प्रतिमायोगमें स्थित हो गये। फागुन माहके कृष्ण पक्षको द्वितीयाके दिन रेवती नक्षत्रमें निशाके पूर्वभागमें वह निष्पाप हो गये, जिन वहाँ चले गये कि जहाँ गया हुआ वापस नहीं आता।

घत्ता—चार प्रकारके निकायोंके देवोंने जय-जयकार किया। तब अग्नीष्टकुमार देवोंने अरह तीर्थकरका दाह संस्कार किया ॥८॥

९

अरु—अरविन्दके गर्भमें उत्पन्न शोभा है, अरु—कामरुी विदारण करनेवाले जिन हैं, अरु—दरिद्रोंके लिए नहीं रुचते, अरु—अहंत्वा तत्त्व संसारमें स्पष्ट सूचित होता है। अरु—रसरहित, अगन्ध और अरूप है। अरु—रति-अरतिके द्वारा स्पृश्य नहीं है। अरु—कोषमें रहने

२. AP^० किमोहि । ३. AP पुव्वुत्तसमाणहिं । ४. A तुवमाणइ । ५. A^० वरिसइं हीणइ । ६. T पोइवि । ७. AP कलेयइ । ८. A कसुत्तमि । ९. AP तवरात्तियउ ।

९. १. AP जणि । २. A तिन ।

- ५ अरु अरुवें गुणेण संजुत्त
अरु अरुयाणिवासु अजरामर
अरु अरुहक्खरेहि जगि भाणित
सो संसारि भमंतु ण थक्क
अरु अरिहरु आवरणु महारउ
- अरु अरुणें पेंवणें पट्टु वुत्तउ ।
अरु अरुद्धु विहुरेण सुहायरु ।
अरु अरु वप्पे जेण णउ जाणित ।
अरुअरु करहुं ण सक्कु वि सक्कह ।
णिहणउ इंसणणाणणिवारउ ।

१० घत्ता—अरतिथंकरि णिनुइ रंजियविउससह ॥
हुई णिसुणि सुंभउमहु चक्किहि तणिय कह ॥ ९ ॥

१०

- एत्थु भरहि लंबियधयमालइ
पहु भूवालु णाम भूमंडणु
बहुयहि आहवि एक्कु णिरुज्झइ
खज्जइ बहुयहिं भरियभरोलिहिं
- ५ बहुयहिं मिलिचि माणु तहु खंडिउ
लोइभोहमयभयजमदूयहु
भोयाकखइ करिचि णियाणउं
सोलहसायरउ सो जइयहुं
- रयणसिहरघरि णयरि विसालइ ।
तहु जायउं परेहिं सहुं भंडणु ।
बहुयहिं सुत्तहिं हत्थि वि वज्झइ ।
विसहर विसदारुणु वि पिपीलिहिं ।
तेण वि पुरु कलत्तु घर छंडिउ ।
रिसिउंउ लइव णिवडि संभूयहु ।
सुउ लद्धउं महसुक्कविर्साणउं ।
अच्छइ सुरवर सहुं दिवि तइयहुं ।

है, वे पापके द्वारा कैसे लिप्त होते हैं ? अरु—अशब्द-गुणसे युक्त हैं, अरु—सूर्य और पवनके द्वारा प्रभु कहे जाते हैं । अरु—आरोग्यके निवास हैं, अजर-अमर हैं । अरु—कष्टोंसे अरुद्ध हैं और शुभाकर हैं, अरु—अर्हत्त्व अक्षरोंसे जगमें कहे जाते हैं । हे सुभट, जिसने 'अरु अरु' को नहीं जाना, यह संसारमें भ्रमण करता हुआ कभी विश्रान्ति नहीं पाता । अरहन्तकी स्तुति करनेसे इन्द्र भी समय नहीं है । मेरे दर्शनज्ञानका निवारण करनेवाले आवरणको नष्ट करनेके लिए अरु-अरिका नाश करनेवाले हैं ।

घत्ता—अर तीर्थंकरके मोक्ष प्राप्त कर लेनेपर विद्वद्सभाको रंजित करनेवाली सुभीम चक्रवर्तीकी कथा हुई, उसे सुनो ॥९॥

१०

इस जम्बूद्वीपमें, जिसमें ध्वजाएँ अवलम्बित है और रत्नोंके शिखरवाले घर हैं, ऐसे विद्याल नगरमें, पृथ्वीका अलंकार भूवाल नामका राजा है । उसको शत्रुओंके साथ भिडन्त हुई । युद्धमें बहुतोंके द्वारा एकको रोक लिया गया । बहुत-से घागोंके द्वारा तो हाथी भी बाँध लिया जाता है । जिन्होंने बलमीकको भर दिया है ऐसी बहुत सी चीटियों द्वारा विषसे भयंकर विषघर खा लिया जाता है । बहुतोंने मिलकर उसके मानको खण्डित कर दिया । उसने भी पुर, कलत्र और घरको छोड़ दिया । लोभ, मोह, मद और भयके लिए यमदूत सम्भूत मुनिके पास उसने मुनिव्रत ले लिया । भोगकी आकांक्षाका निदान कर भर गया । उसने महाशुक्र विमानको प्राप्त किया । जब-

३. A अरए । ४. AP वरुणें । ५. A अरुवाणिवासु । ६. AP जेण णप । ७. P सुभोगहु ।
१०. १. AP भूवाल । २. P छंडिउ । ३. AP रिसिउं । ४. AP विवाणउ ।

काले कालु जाम पल्लदृष्ट
पवरिकखाचैवंसु सियमंदिरि
दुद्धरवइरिवीरसंधारउ

एत्थु कर्हतरु अवरु पवदृष्ट ।
सहसचाहु णरवइ कोसलपुरि ।
कृष्णाकुब्जहि राणउ पारउ ।

१०

धत्ता—णाम विचित्तमइ सह तेण सुणालमुय ॥

सहसचाहुणरणगाहहु दिष्णी गियय सुय ॥१०॥

११

सुंदरे लम्बखणलक्खियकायउ
वीणालावहि मञ्जे खामहि
सयविंदुं णरिंदकुलहंसै
सिसु जमयग्गि णाम उप्पणणउ
वालैत्तम्मि तेण सेविउ वणु
अवरु तहि जि दढगाहिणरेसरु
वेण्णि मि समउं सोक्खु भुंजेप्पिणु
णिउ जिणवरेरिसि सोत्तिउ तावसु
मित्तं मित्तु उतु णउ जुज्जइ
विप्पे तासु वयणु अवहेरिउ

तहि कयवीरु णाम सुउ जायउ ।
पारयैविहिणिहि सिरिमइणामहि ।
णियजसससहरधवलियवंसे ।
जणणिमरणसोएं णिउवणणउ ।
जगि जायउ तैवतिवु तवोहणुं ।
तासु मित्तु हरिसम्भु सुदियवरु ।
जइ जाया इच्छिउ व्रउ लेप्पिणु ।
हूयउ मोहमहुं मिच्छावसु ।
तावसमग्गे जम्भु ण छिज्जइ ।
उत्तरु कि पि वि णेय समीरिउ ।

१०

तक सोलह सागर समय है तवतक वह समर्थ सुरवर स्वर्गमें रहा । जबतक समयके द्वारा समय पलटता है और यहाँ दूसरा कथान्तर प्रारम्भ होता है । सफेद घोड़े युक्त अयोध्यानगरमें प्रवर इक्ष्वाकुवंशीय राजा सहस्रबाहु था । दुर्धर शत्रुवीरोंको संहार करनेवाला कान्यकुब्जका राजा प्रारत था ।

धत्ता—उसने अपनी मृणालके समान भुजाओंवाली सती कन्या विवित्रमतो राजा सहस्रबाहुको दे दी ॥१०॥

११

उसका लक्षणोंसे लक्षित शरीर सुन्दर कृतवीर्य नामका पुत्र हुआ । वीणाके समान बोलनेवाली मध्यमें क्षीण श्रीमती नामकी पारतकी बहनसे, नरेन्द्रकुलके हंस अपने यक्षरूपी चन्द्रमासे वंशको धवलित करनेवाले शतबिन्दुको जमदग्नि नामका पुत्र उत्पन्न हुआ । माताकी मृत्युके शोकसे वह विरक्त हो गया । वचपनमें उसने वनमें तपस्या की और जगमें वह तपसे तीव्र तपस्वीके रूपमें प्रसिद्ध हो गया । वहाँपर एक दृष्टग्राही राजा था । श्रेष्ठ द्विजवर हरिशर्मा उसका मित्र था । साथ-साथ मुखका उपयोग कर दोनो अपना इच्छित व्रत लेकर यति हो गये । राजा (दृष्टग्राही) जैनमुनि हुआ और मोहसे भूखें और मिथ्यात्वके बन्दीभूत होकर तापस हो गया । मित्रने मित्रसे कहा कि यह ठीक नहीं है, तुम्हें तपस्वी मार्गमें अपना जन्म नष्ट नहीं करना चाहिए । ब्राह्मणने

५. AP °वत्ति तह् मंदिरि । ६. AP सहसवाह° ।

११. १. A सुंदर° । २. AP °बहिणिहि । ३. A बालत्तणि जि । ४. AP तर तिम्भु । ५. AP वर ।

६. A वरसिदि सोमित्तिउ; P °वररिसि सोमित्तिउ । ७. P मेहंभु ।

जिणवरहरपथाईं सुमरेपिणु
खत्तिउ मरिवि जाउ सोहम्मइ

वेणिण मि सुय संग्णसु करेपियु ।
बंधणु पुणु जोइससुरहम्मइ ।

घत्ता—चित्तिउ पत्थिवदेवे सुहि वसुमलमइहि ॥
तउ अण्णाणु चरेपिणु हुउ जोइसगइहि ॥११॥

१२

मईं सयणेण वि णउ, उत्तारिउ
इय णिञ्जाइवि हुक्कउ तेत्तहिं
णेहपरवसेहिं सुयमंडिउ
अवलोइवि जोइसु मउलियकरु
५ पईं जिणवयणु वप्प अवगणिउउ
णच्चइ देउ गेयसरु गायइ
डहइ पुरईं रिउवग्गु वियारइ
णिक्कलु कि सिद्धंतु समासइ
सईं विणु कहिं संत्थपरिग्गह
१० तं गिसुणिवि इयरेण पवुत्तं

जायउ बंधुं दीहसंसारिउ ।
अच्छइ सुरेवरु जोइस जेतहिं ।
दोहं मि एकमेक्कु अवहंडिउ ।
आहासइ विहसिवि कप्पामरु ।
अण्णाणु जि गुहंयारं मणिउउ ।
महिलउ माणइ वज्जउ वायइ ।
एहउ किं संसारहु तारइ ।
विणु वयणेण सद्दु कहिं होसइ ।
पईं कुमग्गि किं किउ णियणिग्गह ।
सईं ण सिवागमि इहु तउ तत्तं ।

घत्ता—गउरीसुहकमलालिहि वरगोवइगइहि ॥
भासिउ कि पि ण बुञ्जिउ देवहु पसुवइहि ॥१२॥

उसके वचनोंकी उपेक्षा की। उसने कुछ भी उत्तर देनेकी चेष्टा नहीं की। जिनवर और शिवके चरणोका स्मरण कर दोनों संन्यासपूर्वक मर गये। क्षत्रिय (राजा) मरकर सौधर्म स्वर्गमें उत्पन्न हुआ और ब्राह्मण ज्योतिषदेवके विमानमें।

घत्ता—राजा देवने विचार किया कि मित्र अज्ञानतपका आचरण कर आठो मलोसे युक्त मतिवाले ज्योतिषी घरमें उत्पन्न हुआ है ॥११॥

१२

स्वजन मैंने उसका उद्धार नहीं किया और मेरा बन्धु दीर्घ संसारो हो गया। यह सोचकर वह वहाँ पहुँचा, जहाँपर वह ज्योतिष सुरवर था। स्नेहके परवश होकर दोनोने बाहु फेलाकर एक दूसरेका आलिंगन किया। हाथ जोड़े हुए ज्योतिष देवको देखकर कल्पवासी देव हँसकर कहता है—“हे सुभट, तुमने जिनवचनोंकी उपेक्षा की, अज्ञानको ही तुमने बहुत बड़ा माना। देव (शिव) नृत्य करता है, गीत स्वर गाता है, महिला (पार्वती) को मानता है। बाध (इमरु) बजाता है, नगरों (त्रिपुर) को जलाता है, शत्रुवर्गका नाश करता है। यह क्या संसारसे तार सकता है। सदाशिव क्या सिद्धान्तका कथन कर सकता है, बिना वचनके क्या शब्द हो सकता है? शब्दके बिना शास्त्रकी रचना कैसे हो सकती है? तुमने कुमार्गमें अपना तप क्यों किया।” यह सुनकर दूसरेने कहा—“मैंने शिवागममें इष्ट तपका आचरण नहीं किया।

घत्ता—पार्वतीके मुखरूपी कमलके भ्रमर, बैलपर (नन्दीपर) चलनेवाले यक्षुपति देवका कहा हुआ मैंने कुछ भी नहीं समझा” ॥१२॥

१२. १. A दोह बंधु । २. A जोइससुरवर । ३. AP गव्यारउ । ४. AP सईं ।

१३

ता पभणइ सुक सम्माइद्विड
सो दावहि तावसु जो गयमलु
सुहिणा उत्तउ मयणणिवारउ
ते वेणिण वि जैण गुणगणसिक्खहि
गय कलविकमिहुणु होएप्पिणु
कणु चुणंति कीलंति भमंति वि
अण्णहि दिणि जंपइ चिडउल्लउ
गच्छमि लग्गउ एत्थु जि अच्छहि
ता चिडउल्लियाइ पडिवोल्लिउ
पइं विणु एक्खु वि दिवहु ण जीवमि
करहि सवह जइ परइ ण आवहि

जो तुम्हारइ गिद्वइ गिद्विड ।
आउ आउ वैक्खहुं धरणीयलु ।
पेच्छहि रिसि जमयग्गिभडारउ ।
सज्जण लग्गा धम्मपरिक्खहि ।
थिउ मुणिमीसियवासु रएप्पिणु ।
तावसंभासुरवासि रंसंति वि ।
कंति कंति हउं भमैणपियल्लउ ।
कल्लइ आयहु महु सुहुं पेच्छहि ।
हियवउ णाह महारउ रंल्लिउ ।
अज्जु वियालइ जमपुरि पावमि ।
तो भइं गिच्छउं सुइय विहावहि ।

घत्ता—भणइ पक्खि हलि पक्खिणि परइ ण एमि जइ ॥

हउं एयहु जमयग्गिहि दुक्खिउ लेमिं तइ ॥१३॥

१४

तं गिसुणिवि सयविंदुहि णंदणु
अरि अरि पिसुण पक्खि किं कुक्कं

पभणइ रोसजलणजालियतणु ।
महुं गुणवंतहु किं किर दुक्खिउं ।

१३

तब वह सम्यग्दृष्टि देव कहता है कि जो तुम्हारी निष्ठा (साधना) में लीन है, और जो गतमल है, ऐसे तापसको बताओ। आओ-आओ, धरणीतलको चलो। सुधिदेवने कहा—कामका निवारण करनेवाले आदरणीय जमदग्नि मुनिको देखिए। वे दोनों ही देव, जिसमें गुणगणकी शिक्षा है, ऐसी धर्म परीक्षामें लग गये। वे दोनों चटक पक्षीका जोड़ा बनकर मुनिको दाढ़ीमें घोसला बनाकर रहने लगे। वे दोनों कण चुगते क्रीड़ा करते और भ्रमण करते। तापसके दाढ़ी-रूपी धर्ममें रहनेवाले वे दोनों शब्द भी करते। एक दूसरे दिन चिड़ा कहता है—‘हे प्रिये, प्रिये, मैं भ्रमण-प्रिय हूँ। मैं जाता हूँ। तुम यहाँ लगकर रहो। कल आये हुए मेरा मुँह तुम देखोगी।’ तब चिड़ियाने उत्तर दिया कि हे स्वामी, मेरा हृदय पीड़ित है, तुम्हारे बिना मैं एक दिन जीवित नहीं रह सकती, मैं आज ही शाम यमपुर चली जाऊँगी। तुम शपथ लो। यदि तुम कल तक नहीं आओगे तो तुम मुझे निश्चित रूपसे मरा हुआ देखोगे ?

घत्ता—चिड़ा कहता है—‘हे चिड़िया रानी, (पक्षिणी) यदि मैं कल तक लौटकर नहीं आया तो मैं इस जमदग्निके पापको ग्रहण करूँ’ ॥१३॥

१४

यह सुनकर क्रोधकी ज्वालासे जिसका शरीर जल रहा है, ऐसा शतबिन्दुका पुत्र बोला,

१३. १. AP वक्खहुं । २. P पच्छहि । ३. A जिण । ४. A तावसभासुर । ५. A रंसंति । ६. A भवणं ;
P भणमि । ७. महुं । ८. A डोल्लिउ । ९. A करहु । १०. A गिच्छउ । ११. A लेमि ।

१४. १. A पक्खि पिसुण । २. AP कुक्कं ।

जइ दुक्खिउ तो पई संघारमि
 एव चवेप्पिणु कयसंकील्लु
 ५ पेहुणिल्ल थिय अंवरि जाइवि
 तवहु ण जुत्तवं जीवविणासणु
 ता भासइ छारेणुद्धल्लिउ
 किं मईं कियेउं पाउं तवचरणे
 ता घरपक्खिउ कहइ लइ चंगउं
 १० परं किं वेयवयण ण वियाणिउं
 सुयसुहकमलु ण कहिं वि णिहाळिउं
 गत्थि अपुत्तहु गइ विप्पागमि

हत्थे णिहसिचि पेहुं समारमि ।
 करहि णिहिद्धिउ सउणिणिहेल्लु ।
 पभणिउ तवसि तेणे पोमाइवि ।
 खमहि ताय खम सुणिहिं विहूसणु ।
 हउं तुम्हहिं किं झाणहु चालिउ ।
 गणवइत्तिणयणपूयाकरणे ।
 पइं तवत्तावे ताविउं अंगउं ।
 गवउ कलत्तु ण कत्थु वि भाणिउं ।
 दुरिपं अप्पाणउं किं मइल्लिउ ।
 ता संजाय चित्त जइपुंगमि ।

घटा—अण्णाणिउ तवभट्टउ मायावयणहउ ॥

सो तहु पारयणामहु मामहु पासि गव ॥१४॥

१५

तणुरुहकारणि मग्गइ कण्णउ
 वेयालु व वियरालु जडालउ
 थेरु जराल्लरिउ ण लज्जइ
 कीलंती अण्णेक पिथारी

कज्जलकंचणमरगयवणणउ ।
 अवलोएप्पिणु णट्टउ बालउ ।
 घरघरिणीचापं किह भज्जइ ।
 ऊयरि रेणुधूसरं लहुयारी ।

“अरे-अरे दुष्ट पक्षी, तूने क्या कहा, भुल्ल गुणवान्से क्या पाप है ? यदि दुष्कृत है तो तुम्हें मारता हूँ । हाथसे रगड़कर चूर्ण-चूर्ण करता हूँ ।” यह कहकर, जिसने परिहास किया है, ऐसे पक्षियोंके घोंसलेको वह हाथसे रगड़ता है । दोनों पक्षी जाकर आकाशमें स्थित हो गये—प्रशंसा करते हुए । तापसे कहा कि तपस्वीके लिए जीवका नाश करना ठीक नहीं । हे तात, क्षमा कीजिए, क्षमा मुनियोंका आभूषण है । तब भस्म-विभूषित वह मुनि कहते हैं कि तुम लोगोंने हमे ध्यानसे क्यों विचलित किया । गणपति और शिवकी पूजा और तपस्वरण करके मैंने क्या पाप किया ? इसपर गृहपक्षी कहता है—“अच्छा लो, तुमने तपतापसे अपने शरीरको सन्तत किया । पर क्यों तुमने वेद-वचन नहीं जाना । तुमने नवकलत्रको भी नहीं माना । तुमने पुत्रके मुखकमलको कभी भी नहीं देखा । तुमने अपनेको पापसे मलिन क्यों किया ? ब्राह्मणोंके आगमके अनुसार पुत्रहीन व्यक्तिकी कोई गति नहीं है ।” (यह सुनकर) यतिवरको चिन्ता पैदा हो गयी ।

घटा—अज्ञानी तपसे भ्रष्ट और मायावचनसे आहत वह अपने पारत नामके मामके पास गया ॥१४॥

१५

पुत्रकी इच्छासे वह कन्या मांगता है । काजल, स्वर्ण और मरकतके रंगका वह वेतालके समान विकराल और जटासे युक्त था । उसे देखकर, कन्याएँ भाग गयीं । बुढ़ापेसे जर्जर वह वृद्धा जरा भी नहीं लजाया । घर और गृहिणीकी बातसे वह कैसे भग्न होता ? खेलती हुई एक और

३. AP विहु । ४. AP तहिं । ५. AP कयउ । ६. A सुरपक्खि; T घरपक्खि । ७. AP मईं ।
 १५. १. AP घरि घरिणी । २. P धूसरि ।

रेणुय भगिनि तेण हक्कारिवि कयलीहलु दंसेवि पैयारिवि । ५
 वइसारिय^१ अंचोलिहि लुद्धं भणिउं अणंगसरोहणिरुद्धं ।
 णिसुणि ससुर एयइ हउं इच्छिउ मुद्धइ एंतु मणेण पडिच्छिउ ।
 एह देवि^२ लहुई किं बुच्चइ जाहि मंहारउ बोझिउ रुच्चइ ।

वत्ता—णासउ तणुगरुयत्तणु पथिवपुत्तियहं ॥

वड्डियजोव्वणगठवहं मव्वु विरत्तियहं ॥१५॥ १०

१६

कण्णउ खुज्जियाउ तहु सार्वे जायउ तिव्वतवोहपहार्वे ।
 कण्णोक्खणयुरु तं^३ घोसिउ देवहिं जैडवरित्तु उवहासिउ ।
 एयहं पासिउ एह रवण्णी देहि मञ्जु ता ताएं दिण्णी ।
 गउ वणवासहु महिहरकंदरि तहिं णिवसंतहं ताहं सणिज्जरि ।
 जाया तणुरुह दोणिण महासुंय दोणिण वि चंद सूर णं गहचुय । ५
 दोहिं मि णिहियेई जयजसधामइ इंदसेयरामंतइ णामइ ।
 रेणुयभायरु साहु अरिजउ रिद्धिवंतु तवत्तु सुसंजउ ।
 आउ णिहालिवि ससइ णमंतिइ मणिगउ किं पि हसंतहसंतिइ ।

धूल-धूसरित छोटी प्रिय कन्याको रेणुका कहकर पुकारा और केलेका फल दिखाकर उसे वंचित कर उस लोभीने उसे गोदमे बैठा लिया। कामदेवके तीरोसे धायल वह बोला, 'हे ससुर, सुनिए। उसके द्वारा मैं चाहा गया हूँ। आते हुए मुझे मुग्धाने मनसे स्वीकार किया है। यह देवी है, इसे छोटा क्यों कहा जाता है? कि जिसे हमारा बोलना अच्छा लगता है।

वत्ता—मुझसे विरक्त तथा जिनका जीवनगर्व बढ़ा हुआ है ऐसी पार्थिव कन्याओंके शरीरका गौरव नष्ट हो जाये-॥१५॥

१६

उसके शप और तोत्र तपके प्रभावसे कन्याएँ कुबड़ी हो गयीं। उसे कन्याकुब्ज (कान्यकुब्ज) नगर घोषित कर दिया गया। देवोंने उसके (जमदग्नि) मूर्खचरितका उपहास किया। इनकी तुलनामें यह सुन्दरी है, यह मुझे दे दो। तब पिताने उसे दे दिया। वनवासके लिए वह झरनोसे युक्त पर्वतकी कन्दरामें चला गया। वहाँ निवास करते हुए उनके दो महाबाहु पुत्र हुए। दोनों मानो आकाशसे च्युत सूर्यचन्द्र थे। जय और यशके घर दोनोंके नाम इन्द्रराम और श्वेतराम रखे गये। रेणुकाके भाई सुनि अरिजय ऋद्धिसे युक्त, तपसे सन्तप्त और सुसंयमी थे। वह उसे

३. A वियारिवि; PT पथियारिवि । ४. A अचो लिहि । ५. AP देहि । ६. लहुवी; P लहुवी ।
 ७. P वड्डगयं ।

१६. १. AP कण्णाकुब्जु । २. A तहु घोसिउ । ३. A कुडवरित्तु । ४. A महम्मय । ५. A दिण्णहं ।

१० जइयहुं महु विवाहू किळ ताएं तइयहुं धणु ण दिण्णु पइं भाएं ।
अज्जु देहि वंधव जइ भावइ जेण दुक्खु दांलिहु वि णावइ ।

घत्ता—भणइ सुणीसरु सुंदरि लिंदहि कुमयमइ ॥
दंसणणाणचरित्तइं रयणइं तिण्णि लइ ॥१६॥

१७

५ ता सम्मत्तु विचारें सहियच सावयवच सुद्धइ संगहियच ।
तुहु भडारउ सुहु विक्खणु करुणें करिवि सबहिणिणिरिक्खणु ।
परसुमंतु पेरिरक्खणु देतें दिण्णी कामधेणु भयवतें ।
हई रेणुयं ताइ कयत्थी पभणइ भिक्खुहि पंजलिहत्थी ।
५ तुम्हारिसहं सजीव वि देतहं दीणुद्धरणु सहाव महंतहं ।
ससहि महंतु हरिसु पयणेप्पिणु गव रिसि धम्मविद्धि पभणेप्पिणु ।
कामधेणु हियइच्छिन्न दुग्मइ तं तावसकुडुंनु तहिं रिञ्जइ ।
अण्णहि वासरि सुरगारिधीरें सहसबाहु संजुव कयवीरें ।
गहणणिदेल्लु छुहु जि पइदुव राच तवोहणेण तें विट्टुव ।

१० घत्ता—अब्भागयपडिवत्तिइं भोयणु दिण्णु तहु ॥
हिं चं भिण्णचं दोहं मिं कुअरहु पत्थिवहु ॥१७॥

देखनेके लिए आये । प्रणाम करते हुए बहन ने हँसी-हँसीमें कुछ तो भी माँगा—“जब पिताने मेरा विवाह किया था तो तुम भाईने मुझे कुछ भी धन नहीं दिया था । हे भाई, यदि अच्छा लगे तो मुझे आज दो । जिससे दुख और दारिद्र्य न फटके ।”

घत्ता—भुनीश्वर कहते हैं—“हे सुन्दरि, अपनी कुमत्तवृद्धिको दूर करो और सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चरित्र ये तीन रत्न स्वीकार करो” ॥१६॥

१७

तब उस मुग्धाने ज्ञानके साथ सम्यक्त्व श्रावक व्रत स्वीकार कर लिये । अत्यन्त विचक्षण अपनी बहनसे भेंट करनेवाले आदरणीय मुनि परम सन्तुष्ट हुए और करुणा कर उसे परिरक्षण मन्त्र सहित फरसा देते हुए उन्होंने ज्ञानवान् एक कामधेनु दो । रेणुका उससे कृतार्थ हो गयी । हाथ जोड़कर उसने महामुनिसे कहा—“अपना जीवन भी देनेवाले आप जैसे महापुरुषोंका स्वभाव ही दीनोंका उद्धार करना है ।” इस प्रकार अपनी बहनके लिए महात् हुषं उत्पन्न कर और धर्मवृद्धि हो—यह कहकर वह मुनि चले गये । वह कामधेनु इच्छानुसार दुही जाती और वह तपस्वी परिवार वहाँ सम्पन्न हो गया । दूसरे दिन सुमेरुपर्वतके समान धीर कृतवीरके साथ सहस्रबाहु आया । वह शीघ्र तापस-गृहसे प्रविष्ट हुआ । तपोधन (जमदग्नि) ने राजाको देखा ।

घत्ता—अभ्यागतकी (आतिथ्यकी) परम्पराके अनुसार उसके लिए भोजन दिया गया । राजा और कुमार (कृतवीर) का हृदय आश्चर्यसे चकित हो गया ॥१७॥

६. A जं भावइ । ७. A दालिहु ण आवइ; P दालिहु वि ण आवइ । ८. A छहुहि ।
१७. १. A सुद्धं । २. P पररक्खणु । ३. P तें । ४. P तहिं । ५. AP हियवत्तं । ६. A कुमरहु ।

१८

णियजणपीसस णविवि णियच्छिय
अम्मि अम्मि भोयणु भञ्जारं
एहं नृवंहं मि णउं संपज्जइ
अक्खिउ रेणुयाइ विहसेप्पिणु
ताइ वुत्तु अम्हं चित्तिउ फलु
जं अंवाइ एम आहासिउं
रयणइ होंति महीयलवालहं
तासु वि तहं जि चित्तु आसत्तं
चचरासमगुरु रयणिहं अंचहि

माउच्छिय कयवीरें पुच्छिय ।
जहिं चक्खिज्जइ तहिं रससारं ।
तुम्हं तावसाइं किइ जुज्जइ ।
गइ बंधत्तु सुरवेणुय देप्पिणु ।
णं तो पुणु वणि भुंजहुं दुमंहलु ।
तणएं तं णियेपिउहि पयासिउ ।
णउ तवेंतिहिपसरियजडजालहं ।
कयवीरें कर मउलिवि वुत्तं ।
दिण्वगाइ दिय देहि म बंचहि ।

घन्ता—गाइ ण देमि म पथहि अरितरुणियरसिहि ॥

विणु गाइइ अम्हारइ ण सरइ होमविहि ॥१८॥

१९

तो तं सुणिवि तेण महिणाहें
झ ति अमरवरसुरहि मह्हिय
सुयहिं धरइ जमयगि ण संकइ

गोहणलुद्धे णं वणवाहें ।
कंचणदामइ धरिवि णियड्डिय ।
रेणुय कलयलु करहुं ण थकइ ।

१८

अपनी माँकी बहनको प्रणाम कर कृतवीरने उसे देखा । मौसीसे उसने पूछा, "हे माँ, हे माँ, भोजन बहुत अच्छा है, जहाँसे भी चखो, वहीसे रसमय है । ऐसा भोजन तो राजाओके लिए भी सम्भव नहीं है । तुम तपस्विणोके लिए यह कैसे प्राप्त होता है ?" तब रेणुका हँसकर बोली, "मेरा भाई सुरधेनु देकर गया है, हे पुत्र, उसके द्वारा हमारे लिए चिन्तित फल मिलते हैं, नहीं तो वनमें हम वृक्षोंके फल खाते हैं ।" जब मौसीने इस प्रकार कहा तो पुत्रने यह अपने पिताके लिए बताया कि रत्न धरतीका पालन करनेवालोके होते हैं न कि तपस्याकी आगसे जटाबाल बढ़ानेवालोके । उसका (सहस्रबाहुका) चित्त भी उसमें आसक्त हो गया । कृतवीरने उससे हाथ जोड़कर कहा, "चारों आश्रमोंके गुरु (राजा) की तुम रत्नोंसे अर्चा करो । हे द्विज, तुम दिव्य गाय दो, घोखा मत दो ।"

घन्ता—(द्विजने कहा)—बानुरूपी वृक्षोंके समूहके लिए आगके समान हे (कृतवीर), मैं राजाके लिए गाय नहीं दूँगा । गायके बिना हमारी यज्ञविधि पूरी नहीं होगी ॥१८॥

१९

तब गोधनके लोभी उस राजाने माने भीलके समान महा-ऋद्धि सम्पन्न वह सुरधेनु स्वर्णकी श्रृंखलासे पकड़कर खीच ली । जमदग्नि बाहुओसे उसे पकड़ता है, शंका नहीं करता,

१८. १. AP णिवहं । २. P ण वि । ३. AP वुत्तु फलु । ४. णियपियहि । ५. A तवसियपसरिय ।

१९. १. P ता तं सुणिवि । २. AP मह्हिय ।

- तवसिंहि करु करेण आच्छोडिउ
 ५ गीसारिय णंदिणि मद्धवसहु
 चद्धावद्धणिविडजडमंडलु
 सोत्तरीयउववीयउरयलु
 ऋद्धतोणु परिवद्धियअमरिसु
 द्दोणिण तिणिण चउ पिच्छंचिय वरं
 १० वारह तेरह पुणु पणगारह
 गहयलुसरसंछणु ण दीसइ
- णिञ्जलु मेइणियलि^३ सो पाडिउ ।
 णं णियंजीयवित्ति तणुंदेसहु ।
 सच्चणोलंवियतंवयकुंडलु ।
 धूलिधर्वलु अवलोइयसुयवलु ।
 धाइउ सर मुयंतु रणि तावसु ।
 पंच सत्त णव दह चंचलयर ।
 सोलह वाण सुक सत्तारह ।
 सहसवाहु णियरहियहु भासइ ।

घत्ता—^२वाहि वाहि रहु तुरिणं संधारमि कुमह ॥

एहा महियलि जइ जइ तो केहा णिवइ ॥१९॥

२०

- वाणहिं वाण हणोप्पिणु विद्धउ
 जइ विचिउत्तमइदइएं घाइउ
 णाहमरणि दुक्खेण विसट्टइ
 महिपलोट्टु णियसामि णिहाइइ
- णं चंदणतरु णायहिं रुद्धउ ।
 सयविदुहि तणुरुहु विणिवाइउ ।
 गाइ ण जइइ हयवि पलट्टइ ।
 पुच्छि विज्जइ जीइइ लालइ ।

रेणुका कलकल करते हुए नहीं थकती । तपस्वीके हाथको उसने अपने हाथसे झकझोर दिया और उसे अचेतन धरतीपर गिरा दिया । आश्रमसे नन्दिनी निकाल ली गयी मानो धरीरप्रदेशसे अपनी जीववृत्ति निकाल ली गयी हो । जिसका निविड जटामण्डल ऊपर बंधा हुआ है, जिसके लाल-लाल कुण्डल कानों तक लटक रहे हैं, जो वक्षपर उत्तरीय और यज्ञोपवीत पहने हुए हैं, जो धूलसे घूसरित है और बार-बार अपनी भुँजाएँ देख रहा है, जिसने तूणीर (तरकस) बांध रखा है, जिसका अमर्ष बढ रहा है ऐसा वह तपस्वी (जमदग्नि) तीर छोड़ता हुआ युद्धमे दौड़ा । उसने पुंखसे शोभित दो, तीन, चार, पांच, सात, नौ और दस, बारह, तेरह फिर पन्द्रह, सोलह और सत्तरहु वचल तीर छोड़े । तीरोसे आच्छन्न आकाश दिखाई नहीं देता । तब सहस्रबाहु अपने सारथिसे कहता है—

घत्ता—अइवसे शीघ्र-शीघ्र रथ बढ़ाओ, मैं उस कुमतिको माँहंगा । यदि धरतीपर इस प्रकारके यति है, तो राजा किस प्रकारके होगे ॥१९॥

२०

तीरोसे तीरोको आहत कर उसने उसे विद्ध कर दिया, मानो चन्दनवृक्षको नागोने खवखुद कर लिया हो । विचित्रमतिके पति (सहस्रबाहु) ने यतिको आहत कर दिया । घतविन्दु-का पुत्र मार डाला गया । अपने स्वामीके मरनेपर गाय दुःखसे आहत हो उठती है, वह बागे

३. A तहिं पाडिउ । ४. AP adds after this : चल्लिउ केवि जाम णियवासहु (A णियवेसहु) ।

५. A omits this foot ६. P तणु देवहु । ७. A सयणोलवियं । ८. A सोत्तरीउ । ९. A घवलु । १०. AP सर । ११. A गहयलु संछणउ णउ दीसइ ; P गहयलु छणु ण वाणहिं दीसइ ।

१२. वाहु वाहु ।

२०. १. AP चंदणतरु णं ।

दुद्धे सिंचइ वयणु समिच्छइ ओरसंति णियहुँल्लइ अच्छइ । ५
 जाम ताम णियवइरिहिं चपिवि रोवइ रेणुय विहुरु वियप्पिवि ।
 हा हा कंत कंत किं सुत्त किं ण चवहि महुं काइं विरत्त ।
 मुच्छिओ सि किं तवसंतावें किं परवसु थिउ झ्जाणपहावें ।
 लइ कुसुमाईं धट्टु लइ चंदणु करहि भडारा संझावंदणु ।
 घत्ता—उट्ठि णाह जलु ढोवहि तण्हाणिरसणं ॥ १०
 करि सहवासियहरिणहं करयलफंसणं ॥२०॥

२१

दावहि पयहु कुवलयकंतिहि जलु होमावसेसु सिसुदंतिहि ।
 उट्ठि णाह सुहुं पक्खु जि जाणहि तणयहं वेयपयइं वक्खाणहि ।
 तेहिं वि अज्जु काइं सुइराविउं अवरु किं पि किं टुंगि विहाविउ ।
 जहिं गय कंदमूलफलगुंछेहं तहिं किं कमि णिवडिय खलमेच्छहं ।
 णउ सुणंति अं जणैयहु जायउ ता तहिं सुयजुवल्लजं आयउं । ५
 आर्यणवि तहिं जणणिहि रुण्णं पिउमडल्लजं बाणत्रिहिण्णं ।
 जाइंवि दोहिं मि थियणसारी पुच्छी अम्माएवि भडारी ।
 भणु भणु केण ताउ संघारिउ केण संपाणणासु ह्कारिउ ।
 कुलिसिहि कुलिसु केण मुसुमूरिउ सेसफडाकडप्पु किं चूरिउ ।

नही जाती, (सींग मारकर) पोछे हट आती है । घरतीपर पड़े हुए अपने स्वामीको देखती है । पूँछसे हवा करती है, जीभसे चाटती है । दूधसे सींचती है, उसका मुख देखती है, चिल्लाती है और जब उसके निकट रहती है, तबतक अपने शत्रुओंके द्वारा घिरी हुई रेणुका दुखका विचार कर रोती है, "हा-हा हे स्वामी, तुम क्यों सो गये ? मुझसे बोलते क्यों नहीं, मुझसे विरक्त क्यों हो ? तपके सन्तापसे मूच्छित क्यों हो ? ध्यानके प्रभावसे परवश क्यों हो ? लोये फूल, लो यह चन्दन घिसा । हे आदरणीय, सन्ध्यावन्दन करिए ।

घत्ता—हे स्वामी, उठिए । प्यासको दूर करनेवाला जल ग्रहण करिए और सहवास करनेवाले हरिणोका करतलसे स्पर्श कीजिए ? ॥२०॥

२१

कुवलयके समान कान्तिवाले बालगजको होमावशेष जल दिखाओ । हे स्वामी, तुम उठो । एक तुम्ही वेदपदोंको जानते हो और बच्चोंके लिए उनकी व्याख्या करते हो । उन्होंने भी आज क्यों देरी कर दी ? क्या कुछ और वनमे उन्होंने देख लिया है ? जहाँ कन्दमूल और फलके गुच्छोंके लिए गये हुए वे क्या दुष्ट म्लेच्छोंके हाथ पड़ गये हैं कि जो वे पिताकी मृत्युको नहीं जानते ?" इतनेमे वे दोनों पुत्र वहाँ आ गये । वहाँ अपनी माँका रोना सुनकर और पिताके शवको तीरोसे छिदा हुआ देखकर दोनों, स्त्रीजनमे श्रेष्ठ आदरणीय माता रेणुका देवीसे पूछा—“बताओ-बताओ, किसने पिताको मारा ? किसने अपने प्राणोंके विनाशको ललकारा है ? बच्चेसे बच्चेको

२. A णियडुल्लिय; P णियदुल्लइ । ३. A णियवइवरि ।

२१. १. A A दुग्गु । २. AP गौंछह । ३. AP जणणहु । ४. A आयणिवि तहिं, P आयण्णंतहिं ।

५. A जोयवि । ६. P ताउ केण । ७. A सुसाणणासु ।

१० केसरिकेसरगु किं छिण्णं केण गरलु हालाहलु चिण्णं ।
केण सदेहु हुणित कालाणि को पइहु वइवसमुहंघलि ।
घत्ता—इज्झइ कहिउ रुयैतिइ भोयणरिद्धिं भरि ॥
सहसवाहु कयवीरु वि मुंजिवि मञ्जु घरि ॥२१॥

२२

जहिं मुत्तं तहिं भाणं भिद्धिवि कंतु महारउ कंढहिं छिद्धिवि ।
गय रिउ हरिवि महारिय घेणुय ता संयविय संपुत्तिहिं रेणुय ।
गज्जिवि पुणु वि रोसरसभरियउ णयणजुयलजलु जणणिहिं पुसियउ ।
ता जेइहु उवइउउ मायइ परसुमंतु दिणासीवायइ ।
५ गय वेणिण मि जण वीरं महाइय तं साकेयणयक संप्रैइय ।
करि तुरंगु रहवरु णरु णावइ दसदिंसु चड्डलु परसु परिधावइ ।
लंबिरकेसइं भवहाभीसइं पिउपुत्तइं खणि छिण्णइं सीसइं ।
णासंत वि खत्तिय णिक्खत्तिय वइवसमुहकुहरंतरी घत्तिय ।
जो भूआलु णाम चिरु राणउ जो तउ चरिवि मरिवि सणियाणउ ।
१० देउ महासुक्कंतरि जायउ जो पुणरवि जन्मतरी आयउ ।
समइं तेण गढ्भेण पलाणी सइ विचित्तमइ णामें राणी ।

किसने चूर-चूर किया है ? उसने शेषनागके फनसमूहको क्यों चूर-चूर किया है ? सिंहके अयालके अग्रभागको किसने छुआ ? गरलविषको किसने ग्रहण कर लिया है ? किसने कालाननमे अपने शरीरको होम दिया है ? यमकी मुखरूपी विडम्बनामे कौन पड़ गया है ?”

घत्ता—आदरणीया (मां) ने रोते हुए कहा, “भोजनकी ऋद्धिसे भरपूर मेरे घरमे भोजन करके सहस्रबाहु और कृतवीर—॥२१॥

२२

जिस पात्रमे उन्होंने खाया, उसीमें छेद कर और मेरे स्वामीको तीरोंसे छेदकर दुश्मन हमारी गायका हरण कर ले गया ।” तब पुत्रोंने अपनी मां रेणुकाको सान्त्वना दी । फिर क्रोधके रससे भरे हुए उन दोनोंने गरजकर मांकी दोनों आँखोंके आँसू पोछे । जिसने आँखीवाँद दिया है ऐसी माने, तब बड़े पुत्रके लिए परशुमन्त्रका उपदेश दिया । वीर और महा-आहत वे दोनों गये और उस साकेत नगर पहुँचे । हाथी-घोड़ा, रथवर और मनुष्यकी भाँति वह चंचल फरसा दसो दिशाओंमे दौड़ता है । पिता-पुत्रके लम्बे केशवाले, भाँहसे भयंकर सिरोंको उसने क्षण-भरमे काट डाला । भागते हुए क्षत्रियोंको भी उसने धूलमें मिला दिया और उन्हें यमके मुखरूपी कुहरमे डाल दिया । जो पुराना भूपाल नामका राजा था और जो तप कर निदानपूर्वक मरा था, महाशुक्र स्वर्गमे देव हुआ था और पुनः जन्मान्तरमे आया था । उसके साथ गर्भ लेकर (उसे गर्भमें रखकर) विचित्रमती नामकी उस सती रानीने वहाँसे पलायन किया ।

८. A जि छित्तव । ९. AP भुत्तवं । १०. AP हरि ।

२२. १. AP गउ । २. AP महारी । ३. A सपुत्तहि । ४. P वीर । ५. AP संप्राइय । ६. AP भूणलु ।

७. AP से ।

घत्ता—णियपइपुत्तहं मरणे सोयविसंठुलिय ॥
सुंदरि भयकंपियत्तणु कत्थइ संचलिय ॥२२॥

२३

सा गुरुहार दिट्ठ संडिल्ले	तावसेण संसयणवच्छल्ले ।
अपिय सौ सुवुद्धिणिग्गंधु	सुद्धसहावहु कहियसुपंधु ।
वसई जिणालइ गइ रणयालइ	फुल्लियकाणणि तहिं भिगमेलइ ।
पुत्तु पसूई देवहिं रक्खिच्च	मायइ कुलबद्धरणु णिरिक्खिच्च ।
पुच्छिच्च साहु समंजसु घोसइ	गंदणु छक्खंडाहिच्च होसइ ।
सोलहमइ पत्तइ संवच्छरि	तुहुं पेच्छिहिसि चिंधुं तणुरुहवरि ।
देवीमायरेण हयसल्ले	णिच्च णियभन्नणहु सिंसु संडिल्ले ।
पडिभडवरसिरिखुडणसमत्थइ	परिपालिच्च सिक्खिच्च सत्थत्थइ ।
एत्तहिं रिसिज्जेमथग्गिहु पुत्तं	जयसिरिरइरसलंपडचित्तं ।

घत्ता—जणणमरणु सुअरंते मारिय रायवर ॥

१०

परसुमंतंमाहप्यं रणि करवालकर ॥२३॥

२४

एकवीसवारच्च णिक्खत्तिवि	खत्तिय सथल्लु वि छारुपरत्तिवि ।
वड्डियवेचवयणमाहप्पहं	पुहइ असेस वि दिण्णी विप्पहं ।

घत्ता—अपने पति और पुत्रकी मृत्युके कारण शोकसे अस्त-व्यस्त, भयसे जिसका शरीर कांप रहा है ऐसी वह सती सुन्दरी कही भी चल दी ॥२२॥

२३

स्वजनोके प्रति वात्सल्य रखनेवाले तपस्वी शाण्डिल्यने जब उसे गर्भवती देखा तो उसने सन्मार्गका कथन करनेवाले बुद्ध स्वभावसे युक्त सुवुद्धि (सुब्रन्धु) नामक निग्रन्थ मुनिको उसे सौंप दिया। वह जिनालयमे रहने लगी। रणका समय बीतनेपर जहां पशुओका संगम है, ऐसे खिले हुए जंगलमे उसने पुत्रको जन्म दिया। देवोने उसकी रक्षा की। माताने अपने कुलके उद्धारकर्ताको देखा। उसने न्यायशाल मुनिसे पूछा। उन्होंने बताया, “तुम्हारा पुत्र छह खण्ड धरतीका स्वामी होगा। सोलहवां वर्ष प्राप्त होनेपर तुम अपने पुत्रके ऊपर राजचिह्न देखोगी।” जिसका शल्य नष्ट हो गया है ऐसा देवीका भाई शाण्डिल्य बच्चेको अपने घर ले गया। उसने उसका परिपालन किया और शत्रु योद्धाओंके श्रेष्ठ सिरोंको काटनेमे समर्थ शस्त्र-अस्त्रोंकी उसे शिक्षा दी। यहाँ पर जमदग्निके विजयश्रीके रतिसके लम्पट चित्तवाले पुत्रने—

घत्ता—अपने पिताके मरणकी याद करते हुए रणमे हाथमे तलवार लिये हुए राजाओंको परशुमन्त्रके प्रभावसे मार डाला ॥२३॥

२४

श्वकीस बार मारकर, समस्त क्षत्रियोंको खाकमे मिलाकर जिनके वेदवचनोंका माहात्म्य

२३. १. A सिंसुजणवच्छल्ले; P समुयणि वच्छल्ले । २. AP सह सुवंधुं । ३. A तेत्सु सा वि जा वसइ जिणालइ; P वसइ जिणालइ गय रणयालइ । ४. A सच्चिनु तणुं । ५. A सिरिजमं । ६. AP सुमरंते । ७. A मत्तिमाहप्यं रणं ।

२४. १. A सयल वि । २. AP पवत्तिवि ।

	जाया रिद्धिइ सकसमाणा	जहिं दीसहि तहिं दियवर राणा ।
	जहिं दीसइ तहिं पसु मारिज्जइ	पियरहं ढोयपिणु पलु खज्जइ ।
५	सोमपाणु महूमहुरउ पिज्जइ	सामवेयपव मणहरु गिज्जइ ।
	विउलजण्णमंडवसिरि दावइ	होमहुयासधुसु णहि धावइ ।
	णिच्चमेव संठियपडिहारइ	परसुरामदेवेसंदुवारइ ।
	पयडियदंतपंतिवियरालइं	खंभि खंभि कीलियइं कवालइं ।
	ताराणियरसिसिरंकरधवलइं	णं जसवेल्लिहि फुल्लइं विमलइं ।
१०	जायउ सर्वेभोमभूवालउ	किं वणिणज्जइ तावसवालउ ।
	गुरुहारहि कह कह व चलंतहि	मायहि पसवणवियणकिलंतहि ।
	उपपज्जइ सो को वि सुणंदधु	किज्जइ जेण वइरिसरिंदिणु ।
	जामयगिगणरणहें जेहउ	अण्णहु जयविलासु कहु एहउ ।

धत्ता—भरहु असेसु वि भुत्तउ ह्यरिउ वायवहि ॥

१५ पुप्फदंत तहु तेएं सभय चरंति णहि ॥२४॥

इय महापुराणे विसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महामन्वभरहाणुमणिणु महाकहपुप्फवंतविरहए
महाउन्वे भरतिरधंकरणिष्वाणगमणं परसुरामविहवण्णं णम
पंचसट्टिमो परिच्छेओ समत्तो ॥६५॥

बढ रहा है ऐसे विभ्रोंको धरती दे दो । ऋद्धिसे वे इन्द्रके समान दिखाई देने लगे । जहाँ दिखाई देता है वह ब्राह्मण राजा है । जहाँ दिखाई देता है वहाँ पशु मारे जाते हैं, पितरोंको चढ़ाकर मांस खाया जाता है, मधुर-मधुर सोमपान किया जाता है, सामवेदके मधुर पदोंका गान किया जाता है, विपुल यज्ञोंकी मण्डपश्री दिखाई देती है, यज्ञोंकी आगका धुआँ आकाशमें दिखाई देता है । जिसमें प्रतिहार बैठे हुए हैं, ऐसे परशुराम राजाके द्वारपर नित्य ही, जो स्पष्ट दिखाई पड़नेवाली दन्तपंक्तिसे विकराल हैं ऐसे कपाल खम्भे-खम्भेपर ठोक दिये गये हैं, जो ऐसे लगते हैं मानो यक्ष-रूपी लताके तारासपूह और चन्द्रकिरणोंके समान धवल और विमल फूल हों । वह सार्वभौम राजा हो गया । उस तपस्वी राजाका क्या वर्णन किया जाये । गर्भके भारवाली, किसी प्रकार कठिनाईसे चलते हुए प्रसवकी वेदनासे पीड़ित माताका वैसा कोई एक अच्छा बेटा पैदा होता है कि जिसके द्वारा शत्रुका सिर काटा जाता है । जमदग्नि राजाने जैसा (विलास भोग) ऐसा जयविलास किसका है ?

धत्ता—पिताका बध होनेपर उसने शत्रुको मारा और अश्वेव भारतका भोग किया । उसके तेजसे सूर्य और चन्द्रमा आकाशमें डरसे भ्रमण करते हैं ॥२४॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महामन्व सरत द्वारा अनुसृत महाकाव्यका अरवीर्यकर विवाण गमन एवं परशुराम विभव वर्णन नामका पैलठवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥६५॥

३. A सुदुवारइ । ४. A सर्वभूमिभूवालउ । ५. A कहि । ६. A सुभूमचक्रवट्टिउप्यती ।

संधि ६६

१

एतद्दि गिरिगहणि तावसवरि वद्धइ सुंदरु ॥
 लक्ष्मणचंचइउ णहणिवडिउ णाह पुरंदरु ॥ ध्रुवकं ॥
 करताडियवरफणिफेणकडप्पु उँहालियवणमायंगदप्पु ।
 लीलाइ धरियकेसरिकिसोरु तरुँकीळिरकिणरिचित्तचोरु ।
 दियसिहिं वद्धडिउ णं बालयंदु णं सो णिववंसहु तणउ कंदु ।
 सत्तुहि छिंदंतहु अमरसेण चव्वरिउ कहिं मि जो विहिवसेण ।
 णं सहसवाहुकुलजसर्णहाउ णं परसुरामसिरकुँलिसघाउ ।

सन्धि ६६

यहाँ गहनवनमें तपस्वी शाण्डिल्यके घर वह सुन्दर इस प्रकार बढ़ने लगा जैसे लक्ष्मणसे शोभित आकाशसे पतित इन्द्र हो ।

१

जिसने महानागोंके फनसमूहको अपने करतलसे ताड़ित किया है, जिसने वनगजोंके दर्पको उखाड़ दिया है, जिसने खेल-खेलमें किशोरसिंहको पकड़ लिया है, जो वृक्षोंपर क्रीडा करती हुई किन्नरियोंके चित्तका चुरानेवाला है, ऐसा वह कुमार कुछ ही दिनोंमें इस प्रकार बढ़ने लगा, मानो बालचन्द्र हो, मानो वह राजवंशका अंकुर हो । देवसेनाको नष्ट करते हुए शत्रुसे जो भाग्यके बशसे किसी प्रकार बच गया हो, जो मानो सहस्रवाहुके कुलका यशसमूह हो, मानो परशुरामके सिरपर

All Mss. have, at the beginning of this samdhi, the following stanza:-

यस्येह कुन्डामलचन्द्ररोचिःसमानकौत्तिः ककुमा मुबानि ।
 प्रसाधयन्ती ननु बभ्रमोति जयत्वसौ श्रीभरती नितान्तम् ॥ १ ॥
 पोयूपसूतिकिरणा हरहासहार-
 कुन्दप्रसूनसुरतीरिणिसक्रनागाः ।
 क्षीरोद शेष बल याहि निहस चैव
 कि खण्डकाव्यघवला भरतः स्व यूयम् ॥ २ ॥

A reads in the third line. बलयासिति हंस चैव, P reads बलमत्तम हंस चैव; AP reads in the fourth line भरतस्तु यूयम् । K has a gloss. या हि त्वं गच्छ, निहं नितरां हंम त्वमपि गच्छ । यूयं कि भरतः अतिशयात् खण्डकाव्यवत् घवला वत्तञ्चे, अपि तु न । तद्दि गच्छन्तु ।

१. १. AP गहि णिवडिउ । २. P फणिकड । ३. P उँहालिय । ४. A णिव कीळिरकिण । ५. P omits णं । ६. AP सिरि कुलिस ।

१० चक्रक्रियकरयलु पायपचसु
विहवत्तणहुं कखोहरियछाय
संखिल्लु मासु तुहुं जणणि माइ
विणु तायं पुत्तु ण होइ जेण

घत्ता—भणु ह्वं कासु सुउ महियलि मंडणउ पहिल्लउं ॥

भणु किं कारणेण तुह हत्थि णत्थि कहुंल्लउं ॥ १ ॥

२

५ तावम्महि अंसुजलोल्लियाइं
जाणिवि गियतणयहु तणिय सत्ति
सुणि सुय जो सुव्वइ परसुरासु
तावट्टवीसधगुदंडतुंगु
तं गिसुणिवि णं जमरायदूउ
चूडामणिकिरणालिहियमेहि
दिउ णारायणकमकमलभसलु
सो पुच्छिउ तेण कयायरेण
सहसथरसिरुपल्लूरेण

णयणइं णं कमलइं फुल्लियाइं ।
पडिलवइ सहसमुथरायपत्ति ।
तें मारिउ तुह पिउ अतुलथासु ।
वणं कणयच्छवि रणि अहंगु ।
आरुट्टु अरिहि सिहिचुरुलिभूउ ।
तावेत्तहि रेणुयतणयमेहि ।
संपत्तउ कैहिं मि गिमित्तकुसलु ।
उद्धरियसंधरधरगुरुभरेण ।
णियजणणिमणोरहपूरेण ।

वज्रका आघात हो, जिसका हाथ चक्रसे अंकित है, जिसके पैरोंमें शंख हैं, ऐसे उस कुमारको मामा शाण्डिल्यने सुभौम कहकर पुकारा। वैधव्यके दुःखसे जिसके शरीरको कान्ति नष्ट हो गयी है ऐसी अपनी मांसे उसने एक दिन पूछा, “हे माँ, शाण्डिल्य मामा है और तुम जननी हो, परन्तु मधुर बोलनेवाले पिताको मैं नहीं देखता हूँ। परन्तु बिना पिताके पुत्र नहीं हो सकता इसीलिए मेरा सन्देह बढ़ रहा है आप बताइए।

घत्ता—कहो, मैं किसका पुत्र हूँ? पृथ्वीतलपर मैं किसका पहला मण्डन हूँ? बताओ किस कारण तुम्हारे हाथमें कड़ा नहीं है” ॥१॥

२

तब माताके नेत्र अभ्रजलसे आर्द्र हो उठे, मानो खिले हुए कमल हों। अपने पुत्रकी शक्ति को जानते हुए सहस्रबाहुकी पत्नी प्रत्युत्तर देती है, “हे पुत्र सुनो, जो परशुराम कहा जाता है उसने अतुलशक्तिवाले तुम्हारे पिताका वध किया है। जो अट्टाईस धनुष प्रमाण ऊँचे थे, रंगमें स्वर्ण-कान्तिके समान और युद्धमें वभग्न थे।” यह सुनकर आगकी ज्वाला बनकर वह शत्रुपर इस प्रकार क्रुद्ध हो गया, मानो यमराजका दूत हो। जिसके शिखरमणिकी किरणोंसे भेघ अंकित है, ऐसे रेणुकाके पुत्रके घर नारायणके चरणकमलोका भ्रमर एक निमित्तशास्त्री ब्राह्मण आया। जिसने पर्वत सहित धरतीका गुरुभार उठाया है, ऐसे सहस्रबाहुके सिररूपी कमलको काटनेवाले तथा अपनी मति मनोरथोंको पूरा करनेवाले उसने आदर करते हुए पूछा—

७. A सुभूमु । ८. A दुवल्लं हरियं । ९. A भणु कासु सुउ ह्वं महिलहि मंडणउ । १०. AP कडवल्लउं ।

२. १. AP ता अम्महि । २. AP रिउहि । ३. A कह व । ४. A सधरगुवभापरेण । ५. A पूरेण ।

घत्ता—पइं विष्पेणं जणि जीवहं भवियन्नु पमँगिणं ॥

१०

महु कइयहुं मरणु भणु भणु जइ पइं फुड्डु जँगिणं ॥ २ ॥

३

तं गिसुणिवि विष्पे वुत्तु एम
भोयणकालइ रसरसियभावि
रिचदसण असणभावेण जासु
ता राएं णयरि महाविसाल
संणिहिय णिओइय दिण्णु दाणु
पीणिवि देसिय तित्तिइ डेरंत
दसदिसिपहं पसरिय एह वत्त
अइदीहरपंथं मंथिएण
भो भो कुमार लहु जाहि जाहि

रायाहिराय भो गिसुणि देव ।
अग्गइ दक्खालिइ कयसरावि ।
णिव परिणमंति तुहुं वञ्जु वासु ।
काराविय तक्खणि दाणसाल ।
धिचं दुद्दु दहिचं इच्छापमाणु ।
णिञ्चं चिय दाविञ्चंति दंत ।
कयवीराणुयसुइसुसिरु पत्त ।
वेणि जंतं वुत्तच्च पथिएण ।
साकेयणयरि मुंजंतु थाहि ।

५

घत्ता—किं वणतरुहलेहिं खद्धे हिं मि तित्ति ण पूरइ ॥

१०

पेच्छिवि तुच्छु तणु महुं भायर हियवचं जूरइ ॥ ३ ॥

४

जहिं रायहु केरचं अत्थि दाणु
भोयणपत्थावइ मुहरुहोहु

जहिं जणवच मुंजइ अप्पमाणु ।
जहिं दरिसिज्जइ ससिअंतसोहु ।

घत्ता—तुम विप्रके द्वारा विश्वमें जीवोंका भवितव्य प्रमाणित किया जाता है। मेरा मरण कब होगा ? कहो-कहो, यदि तुम स्पष्ट जानते हो तो ? ॥२॥

३

यह सुनकर विप्रने इस प्रकार कहा, “हे राजाविराज देव, सुनिए । जिसमे रसके शायकका भाव है ऐसे भोजनकालमे, सकोरेमे रखे गये शत्रुके दांत जिसके आगे दिखाये जानेपर ओदनभावको प्राप्त होते है, हे नृप तुम उसके द्वारा वध्य होगे ।” तब राजाने नगरमें उसी क्षण एक विशाल दानशाला बनवायी । वहाँ किंकर रख दिये । इच्छाके अनुसार घी, दूध और दहीका दान दिया । तृप्तिसे प्रसन्न कर डरते हुए यात्रियोंको नित्य ही दांत दिखाये जाते । दसों दिशापथोमे यह बात प्रसारित हो गयी । कृतवीरके अनुज सुभोमके कर्णविवरमे यह बात पहुँची । अत्यन्त लम्बे पथसे श्रान्त वनमें जाते हुए एक पथिकने कहा, “हे कुमार, शीघ्र जाओ-जाओ और साकेत नगरमें भोजन करते हुए रहो ।

घत्ता—खाये गये वन-तरुफलोसे क्या ? तृप्ति पूरी नहीं होती, तुम्हारा शरीर देखकर हे भाई, मेरा हृदय सन्तप्त होता है ॥३॥

४

जहाँ राजाका दान है, जहाँ अप्रमाण जनता भोजन करती है । भोजनके प्रस्तावके समय

६. A विष्पेण वर जणि; P विष्पे वर जणि । ७. AP पमाणिणं । ८. जाणियं ।

३. १. AP पीणिय । २. A फुरंत । ३. A दहदिसिपहं ; P दसदिसिपहं । ४. A कुमारु अक्खिच्च ता पथिएण ।

४. १. P पत्थारह ।

सो जासु कूरु होही सुरासु
 तहिं गच्छहि पेच्छहि चोञ्जु वप्प
 ५ तं गिसुणिवि मणि चितइ कुमार
 दुज्जणकरगाहगलत्थियाई
 दरिसावियबंधवलोयवसण
 सो णिहयैजणणिजोव्वणविथारु
 वरिसहं परमावसु जमदुगेञ्जु
 १० लइ णियइ ण ढुक्कइ अंतरालि
 अह वा जइ मरमि ण तो वि दोसु

घत्ता—तायवियारणउं जं वैइरु रिणु य चिरु दिण्णउं ॥

तं हउं तासु रणि लइ अञ्जु देमि उच्छिण्णउं ॥ ४ ॥

इय भणेवि वीरो धुरंधरो
 कायकंतिथवैलियदिसावहो
 धरणिचिजयसिरिचिजयलंपडो
 दंडपाणिपोत्थयपरिगहो

ससरभारवहणेककंधरो ।
 चिकरंतलकणुपाणहो ।
 कसणकुडिलधम्मिल्लइंपडो ।
 रत्तचीरचैचइयविग्गहो ।

चन्द्रकान्तके समान दांत दिखाये जाते हैं। जिससे वे दांत सुन्दर भात हो जायेंगे उसके हाथसे परशुराम मारा जायेगा। हे सुभट तुम वहाँ जाओ और उस आश्चर्यको देखो। बिना किसी विकल्पके जंगलमे क्यों पड़े हो।” यह सुनकर कुमार अपने मनमे विचार करता है—प्रचुर मांस-समूह वह मनुष्य खाक हो जाये कि जिसने स्वजनको दुर्जनको द्वारा हाथ पकड़कर बाहर निकाले जाते हुए और खराब स्थितिमें होते हुए देखा है। जिसने बान्धवलोकको दुख दिलानेवाले दुष्टको आनन्दित होते हुए सुना है। अपनी मांके यौवन-विकारको नष्ट करनेवाला (व्यर्थ कर देनेवाला) ऐसा वह मुक्ष जैसा धरतीका भारस्वरूप व्यक्ति जीवित है। परमायु मैं यमके द्वारा अग्राह्य हूँ, (यम मुझे नहीं पकड़ सकता), निश्चय ही मेरी आयु साठ हजार वर्ष है, लो इस अन्तरालमे (इस बीच) नियति नहीं आ सकती, इसलिए युद्धकालमे शत्रुको चकनाचूर कर मारता हूँ। अथवा यदि मैं मर जाता हूँ तो इसमें दोष नहीं है। लो मैं आज अपना क्रोध सफल करता हूँ।

घत्ता—पिताके मारनेका जो वैर और ऋण पहले दिया गया है, मैं आज उसे युद्धमे दूँगा और उसे उच्छिन्न करूँगा ॥४॥

यह कहकर समरभारको अपने एक कन्धसे उठानेवाला, अपनी शरीर-कान्तिसे दिशाओंको घबलित करनेवाला, चरभराते हुए छह कोनीवाले जूतासे युक्त, पृथ्वीविजय और श्रीविजयका लम्पट, मुक्त खुले काले बालोवाला, जिसके हाथमे दण्ड और पुस्तकका परिग्रह है, जिसका शरीर

२. A मरही । ३. A णरजंगलु । ४. AP भाव । ५. AP णिहियजणणिहि जोव्वण ।
 ६. AP अमरकालि । ७. A वहरु रिणु चिरु ण दिण्णउं; P वइरु रिणु व चिरु दिण्णउ ।
 १. AP धोरो । २. AP कविलिय । ३. A चिकरंतु छक्कणुपाणहो; P चिकरंतु छक्कणुपाणहो ।

कुसपवित्तयंकियकरंगुली
सहयरेहिं सह लच्छिमाणो
दाणमंडवं खणि पइहुओ
तेहिं तस्स णैविऊण णीरयं
आसणे णिविट्ठेस्स णिम्मलं

घत्ता—पुणु अहियारिएहिं ढोएप्पिणु भिट्ठु भोयणु ॥

दसणुकेरु तहु दक्खालिउ जायउ ओयणु ॥ ५ ॥

५

१०

६

जं दंत जाय णवकलमसिस्थ
हणु हणु भणंत करफुरियखग्ग
परमेसरु ते णउ गणइ केव
जो दसणपुंजु तं कूरु जाउ
उट्ठिवि दिट्ठिइ चप्परिय सव्व
विणणचिउ तेहिं पहु परसुधारि
आएसपुरिसु संपत्तु भीमु
सपसाहणेण हरिवाहणेण
आवंतु दिहु चालं अणेण

तं उट्ठिय भड रणभेरसमत्थ ।
वालहु अखत्तधम्मेण लग्ग ।
कंठोरउ चणि गोभाउ जेव ।
तं जोयइ णं णियजसणिहाउ ।
गय णासेप्पिणु भड गलियगव्वं ।
भो पुहइणाह रिउ जीवहारि ।
तं णिसुणिवि णिग्गउ इंदरासु ।
संगञ्जिवि लहु सहुं साहणेण ।
सुयदंड तुलिय हरिसियमणेण ।

५

लाल बस्त्रसे शोभित है, जिसकी अंगुलियाँ दर्भमुद्रिकासे अंकित हैं, ऐसा वह वीर घुरन्धर और बलवान् अयोध्या नगरी पहुँचा । लक्ष्मीकी माननेवाला वह अपने सहचरोंके साथ वेदोके शेषसे विशामुखोको बहुरा बनाता हुआ एक क्षणमे दानमण्डपमें प्रविष्ट हुआ । वहाँ नियुक्त मनुष्योंने उसे देखा । उन्होंने उसे प्रणाम कर उसके चरणकमलोका घूलरहित प्रक्षालन किया और आसनपर बैठे हुए उसे निर्मल हरा दर्भखण्ड (दूब खण्ड) और जल दिया ।

घत्ता—फिर अधिकारियोंने भीठा भोजन देकर उसे दाँतोंका समूह दिखाया, वह भात बन गया ॥५॥

६

जब दाँत नये चावलोकी तरह सीज गये तो रणभारमें समर्थ योद्धा उठे । जिनके हाथमें तलवारें चमक रही हैं, ऐसे वे मारो-मारो कहते हुए क्षात्रधर्मको ताक पर—रखते हुए वे बालकके पीछे लग गये । लेकिन वह परमेश्वर उन्हें उसी प्रकार कुछ नहीं समझता कि जिस प्रकार सिंह वनमे शृगालोको कुछ नहीं समझता । जो वह दाँतसमूह भात हो गया था उसे वह अपने यश-समूहके समान देखता है । उठकर उसने दृष्टिसे उन्हें हटा दिया । गलितगर्व सभी योद्धा भागकर चले गये । उन्होंने फरसा धारण करनेवाले अपने स्वामोसे निवेदन किया, “हे पृथ्वीनाथ, शत्रु जीवका हरण करनेवाला है । भयंकर आवेगपुरुष है ।” यह सुनकर इन्द्रराम निकला । अपने प्रसा-

४. AP णिमऊण । ५. A आसणोपविट्ठेस्स । ६. A णीलडम्मं ।

६. १. A भड समत्थ । २. P अणवत्तधम्मेण । ३. AP तहिं कूरु । ४. A चप्परिवि । ५. A adds after this: बोहिल्ले पडिमडडडडमणणेण ।

- १० जइ अत्थि को वि सुक्खियपहाउ तई एउ जि पहरणु मब्बु होउ । 7
इय चित्तिवि तेण सुक्कम्मवाउ - तं दंतकूरपूरिउ सराउ ।
भासिउ णहि जायउ णिज्जियक्कु आरासहासविप्फुरियउ चक्कु ।
घत्ता—रिसिसुउ तेण हउ मारिउ गउ णरयणिवासहु ॥
दुग्गइ सावडइ सब्बहु वि लोइ कयहिंसहु ॥ ६ ॥

७

- दुइसय^१ कोडिहिं वरिसहं गयहं अरतित्थे
राउ सुभोमउ रामाकामउ हुउ सुत्थे ।
माणु मलेप्पिणु दुइहं चिट्ठहं दुज्जणहं
हिउत्तइ लत्तइ चमरइं चिघइं बंभणइं ।
५ रहर्जपाणइं पिउसंताणइं लद्धाइं
चउदहरयणइं णव वि णिहाणइं सिद्धाइं ।
छक्खंड वि महि जयलच्छीसहि मुत्त किह
असिणा तासिवि णाएं भूसिवि दासिं जिह ।
एक्काहिं वासरि उग्गइ दिणयरि उत्तसिउ
१० चिरइयभोयणु अमयरणायणु भाणसिउ ।

घन सहित अश्व वाहन और सेनाके साथ शीघ्र सन्तुद्ध होकर उसे आते हुए इस बालकने देखा । हृषित मन होकर उसने अपने बाहु तौले (उठाये) । यदि मेरा कोई पुण्य प्रभाव हो तो मेरा यही एक अस्त्र हो—यह विचारकर उसने सुकर्मके पाककी तरह उस दांतोरूपी भातसे भरे सकोरेको धुसा दिया । सूर्यको जीतनेवाला तथा सैकड़ों आराओंसे विस्फुरित चक्र आकाशमे उत्पन्न हो गया ।

घत्ता—उससे उसने शत्रुपुत्रका काम तमाम कर दिया । वह नरकनिवासमे गया । हिंसा करनेवाले सभी लोगोंके लिए लोकमे नरकगति मिलती है ॥६॥

७

अरनाथके प्रशस्त तीर्थके दो सौ करोड़ वर्षे जीतनेपर स्त्रियोंको चाहनेवाला सुभौम नामका चक्रवर्ती हुआ । दुष्ट, डीठ और दुर्जन ब्राह्मणोंका मान मर्दन कर उनके छत्र-चमर और चिह्न छोन लिये गये । उसे रथ जम्पान और पिताकी परम्परा प्राप्त हुई तथा चौदह रत्नों और नव निधियाँ सिद्ध हुईं । विजयलक्ष्मीकी सखी, छह क्षण्ड धरतीको तलवारसे भ्रस्त कर तथा न्यायसे भूषित कर इस प्रकार उपभोग किया जैसे वह दासी हो । एक दिन सूर्योदय होनेपर

६. A तइ एउ; P ता एउ । ७. A सकम्मवाउ । ८. A दंतकूर । ९. AP विप्फुरिउ ।
७. १. A दुइसय वरिसहं गयहं कोडिहिं; P दुइसय वरिसहं कोडिहिं गयहं । २. AP सुभउमउ । ३. A हुउउ सुत्तित्थे; P हुउ सत्थे । ४. AP चिट्ठहं दुइहं । ५. A चमरइं लत्तइं चिघइं; P चमरइं चिघइं छत्तइं । ६. जाणइं सयणइं लद्धाइं । ७. P भमिय ।

कयलालाजल गावइ कोमल हर्दुलिय
 तेण सिरोधरि दिण्णो गिवकरि अंबिलिय ।
 सा भक्खत्ते रसु चक्खत्ते सिक्क बुणित्तं
 रापं तं रुसिवि तह गुण वृत्तियि अं भणित्तं ।
 तं खलसंहहि गिक्क दुवियद्धहि पोसियत्तं १५
 जीविट् धीरहू तह सुवारहू णासियत्तं ।
 मरिनि सतामसु जायत्त जोइसु दुक्क तहिं
 छण्णं रोसें वणिवरत्तेसं रात्त जाहिं ।
 ते महिवालहु जोहालोलहु ढोइयेवं
 फलहं अयेयेवं बहुरसें भयेवं जोइयेवं । २०
 गेइ पक्खत्तरि अह मासत्तरि रइइ खलु
 वणित्त सरापं मणिल-रापं देहि फलु ।
 तेण पत्तुत्तत्तं देव गिक्कत्तत्तं गिद्धियहं
 गिह दूरत्तरि परदीवत्तरि संठियहं ।
 घत्ता—फलसंदोहू भइं सुरवरहू पसापं लद्धत्त ॥ २५
 गिच्छत्त गिद्धियत्त लइ पइं जि भट्टारा खद्धत्त ॥७॥

सुखत्तं वसुधाधिप कहमि तुच्छु एवहिं ते देव ण वंति मच्छु ।
 तुह पुणु पट्टु अवलोकयणि तसत्ति इवरहं कह महिमंठलि वत्तंवि ।

उसका भोजन बनानेवाला अमृत-साधन नामका रसोद्भया अस्त हो उठा । उसने लक्ष्मी धारण करनेवाले राजाके हाथमे कटो दी जो लारजल उत्पन्न करनेवाली कोमल इमलीके समान थी । उसे खाते हुए और रस चखते हुए राजाने अपना माया ठोका तथा उसके गुणोको दोष लगाते हुए क्रुद्ध होकर जो कुछ कहा उसका मूर्ख दुष्ट खलसमूहने समर्थन किया । उस धीर रसोद्भयाका जीवन नष्ट हो गया । श्लोकपूर्वक भरकर वह ज्योतिष देव हुआ और वह प्रच्छन्न क्रोधसे सेठका हृय बनाकर वहाँ पहुँचा कि जहाँ राजा था । उसने जोशके लालची राजाको बहुरस भेदवाले अनेक योग्य फल दिये । एक पक्ष अथवा माह व्यतीत होनेपर एकान्तमें राजाने रामपूर्वक उस दुष्ट बनिसेसे याचना की—“फल दो ।” उसने कहा—हे देव, निश्चित रूपसे फल समाप्त हो गये हैं और वे अत्यन्त दूर द्वीपान्तरमें हैं ।

घत्ता—वह फलसमूह मैंने सुरवरके प्रसादसे प्राप्त किया था, वह अब खत्म हो गया है । हे बादरपीय, वह आपने खा लिया है ॥७॥

हे वसुधाधिप, मैं तुमसे सच कहता हूँ । इस समय वे देव मुखे फल नहीं देते । हे स्वामी,

८. A सिद्धिलिय । ९. A भक्खत्तं । १०. A चक्खत्तं । ११. A रापं क्तियि । १२. P रावहं । १३. AP बहुरियेयं । १४. P जोइयह । १५. P गहवत्तत्तरि । १६. A गितत्तत्त ।

- राष्ट्रं पड्विषण्णं वयणु तासु
गिञ्ज णरपरमेसरु तेण तेत्थु
५ जीहिंदियविसयैवसेण खविञ्ज
चट्टुयविहत्थु रोसेण फुरिञ्ज
पभणिञ्ज मइं जाणहिं किं ण पाव
चिच्चिणिहलत्थि दपिपट्टु दुट्ठं
इय कहिवि तेण सयखंहु करिवि
- भणु भुवणि ण दुक्कइ गियइ कासु ।
करिमयरभयंकरु जलहिं जेत्थु ।
तहिं सिहरिं सिलायलिं पिण्वइ धविञ्ज ।
सूयारवेसु देवेण धरिञ्ज ।
खलवयणणदिये रे कूरभाव ।
हउं पइं जन्मतरे गिहउ कट्ठे ।
मारिञ्ज गल णरयहु भवमु मरिवि ।
- १० घत्ता—गोत्तमु चञ्जरइ मगहाहिव चारु चिराणञ्जं ॥
अण्णु वि गिसुणि तुहं वलणारायणहं कहाणञ्जं ॥ ८॥

- इह खेत्ति गिसेविवि जइणमग्गु
तहिं एवकु सुकेउ सहुं ससल्लु
इह भारहंति संपुण्णकासु
इक्खारुवसगयणयलि चंदु-
५ तहु देवि पडम पिय वइजयंति
जइयहुं सुभवमि सुइ जाणियाहं
- दो पत्थिव गय सोहम्मसग्गु ।
किं वण्णमि मूढंउ मोहगिल्लु ।
चक्कैउरि णाहु वरसेणु णामु ।
दाणोल्लियकरु णं सुरकरिंदु ।
लच्छिमइ धीय णं ससिहिं कंति ।
छहसयसमकोडिहिं झीणियाहं ।

तुम्हारे देखनेसे वे त्रस्त हो उठते हैं। नहीं तो वे दूसरे धरतीमण्डलमें क्यों निवास करते? राजाने उसका कहा स्वीकार कर लिया। बताओ संसारमें किसकी नियति (अन्त) नहीं आती। उसके द्वारा वह नरपरमेस्वर वहाँ ले जाया गया कि जहाँ हाथियों और मगरोंसे भयंकर समुद्र था। जिह्वा इन्द्रियके विषयरूपी विषसे नष्ट वह राजा पहाड़की एक चट्टानपर स्थापित कर दिया गया। देवने जिसके हाथमें करछुली है ऐसा रसोइयेका रूप धारण कर लिया और क्रोधसे तमतमाया। वह बोला—“हे पाप, तू मुझे नहीं जानता। दुष्टोंके बचनोसे प्रतारित हे दुष्टभाव, चिचणो फल (इमली) के अर्थों दपिठ और दुष्ट कठोर जन्मान्तरमें मैं तेरे द्वारा मारा गया।” यह कहकर उसने सो टुकड़े कर उसे मार डाला। सुभोम सरकर नरकमें गया।

घत्ता—गौतम कहते हैं—हे मगधराज, एक और सुन्दर और पुराना बल तथा नारायणका कथातक है, उसे सुनो ॥८॥

९

इस भरत क्षेत्रमें जैनमार्गका पालन कर दो राजा सौघर्म स्वर्ग गये। उनमें एक सुकेतु था जो शल्य सहित था। मोहप्रस्त उस मूर्खका क्या वर्णन करूँ? इस भारतमें चक्रपुरमें सम्पूर्णकाम वरषेण नामका राजा था। वह इक्ष्वाकुवंशरूपी आकाशतलका चन्द्र था, दान (जल और दान) से आर्द्रकर (हाथ और सँड) वाला जो मानो ऐरावत गज था। उसकी पहली प्रिय पत्नी वैजयन्ती थी तथा दूसरी चन्द्रमाकी कान्तिके समान मानो लक्ष्मीवती थी। सुभोमके मरनेपर जब ज्ञात

८. १. A वड्विषण्णं । २. AP^० विसयवित्सेण । ३. A चहुवविहत्थु; P चट्टुवविहत्थु । ४. A इह ।

५. A कट्टु ।

० १. A मउ । २. A मोहं मूढगिल्लु । ३. A चक्कउरणाहु ।

तद्ग्रहं संबुड-सोहम्मदेउं
अण्णेक्कु लच्छिमइयहिं ससल्लु
तहिं एक्कु पकोक्किउ पंदिसेणु
पामइं हक्कारिउ पुंडरीउ
ते^१ वेणिण वि णीलसुपीयवसण
दोहं मि विच्छिण्णउ आवयाउ

हुव पुत्तु जयंतिहि सोक्खहेउं ।
किं वण्णमि अप्पडिमल्लमल्लु ।
अण्णेक्कु वि दुत्थियकामधेणु ।
किं थुणमि वइरिसुगंपुंडरीउ ।
ते वेणिण वि भायर धवलकसण ।
दोहं मि संसिद्धउ देवयाउ ।

१०

घत्ता—सीरिहि साहियइं छप्पणसहासइं वरिसहं ॥

चक्किहि णाहियइं परमाउसु एवं सुपुरिसहं ॥९॥

१०

छब्बीसचाव देहहु पमाणु
इंदरि णरिदु उविंदसेणु
तहु तेण धीय दामोयरासु
तं हरहुं पराइउ पहु णिसुंसु
जायवं रणु विज्जहि लग्ग वे वि
पडिहरिणा चल्लिउ धगधगंतु
तेणाहउ उरयलि पडिउ वेरि

तहिं ताहं पहुत्तणु जाणमाणु ।
जो देवहिं गेज्जइ धरिवि वेणु ।
पोमावइ दिण्ण कयायरासु ।
चिरमवि सुकेउ सो रिउणिसुंसु ।
अवरोप्परु णउ सक्खिय हणेवि ।
धरियउं कण्हेण रहंगु एंतु ।
अइभीसणु कयधम्मावहेरि ।

५

छह सौ करोड वर्ष बीत गये तो सौधर्म देव च्युत होकर वैजयन्तीका पुत्र हुआ जो सुखका कारण था। दूसरा जो सहाय था, वह लक्ष्मीमतीसे जन्मा। अग्रतिम मल्लोंके मल्ल उसका मैं क्या वर्णन करूँ। उनमेंसे एकको नन्दिषेण कहा गया और दूसरेको जो दुःस्थितों (विपत्तिग्रस्तों) के लिए कामधेनु था, पुण्डरीक नामसे पुकारा गया। शत्रुक्षी हरिणोंके लिए पुण्डरीक (व्याघ्र) के समान था, उसकी मैं क्या स्तुति करूँ ? वे दोनों ही नील और पीत वस्त्रवाले थे। वे दोनों ही भाई गोरे और काले थे। दोनोंने आपत्तियोंको तहस-नहस कर दिया था। दोनोंको विद्याएँ सिद्ध थीं।

घत्ता—श्री बलभद्र नन्दिषेणकी आयु छप्पन हजार वर्ष कही गयी है। चक्रवर्ती पुण्डरीककी आयु भी इससे अधिक नहीं थी, इस प्रकार दोनों सुपुत्रोंकी यह परमायु थी ॥९॥

१०

दोनोंके शरीरका प्रमाण छब्बीस धनुष था। वहाँ उनका प्रभुत्व भी ज्ञातमान था। इन्द्रपुरीका राजा उपेन्द्रसेन था। जिसका देवीं द्वारा वेणु लेकर गान किया जाता था। किया गया है आदर जिसका ऐसे उग्र दामोदर (पुण्डरीक) को उसने अपनी कन्या पद्मावती दे दी। पूर्वभ्रम-में शत्रुओंका नाश करनेवाला जो सुकेतु राजा था, ऐसा निशुम्भ राजा (चक्रपुरका) उसका अपहरण करनेके लिए आया। दोनोंमें युद्ध हुआ, वे विद्याओंसे लग गये। वे एक-दूसरेको मारनेमें समर्थ नहीं हो सके। प्रतिनारायण निशुम्भने धकधक करता हुआ चक्र चलाया। आते हुए उसे नारायण पुण्डरीकने पकड़ लिया। उससे वक्षःस्थलमें आहत होकर अत्यन्त भयंकर और-धर्मकी

४. AP अण्णेक्कु वि लच्छिमइहिं । ५. AP अप्पडिमल्लु । ६. AP मिगं । ७. AP read a as b and b as a. ८. P संछिण्णउ । ९. AP एउ ।

१० गच्छ गच्छतु णिवमणगाहियखेरि महि साहिवि पहयाणंदभेरि ।
हरि हलहर रञ्जु करंत थक्क ता काले अपुयहु दिट्ठि मुक्क ।
सम्भंदरि णिवडिञ्च चक्कपाणि हलिणा विरइय कम्मवाहाणि ।
सिवघोसगुरुहि छवएसएण सिद्धउ मुक्कउ मोहे मएण ।

घत्ता—भरहणराहिवहि मणभरियभत्तिपहरिक्कहि ॥

वंदिउ विसहरेहि खगपुप्फयंतगहचक्कहि ॥१०॥

इय महापुराणे विसट्टिमहापुरिसगुणाळंकारे महामन्वभरहाणुमणिणए महाकहुपुप्फयंतविरहए
महाकव्वे सुभतमचक्कवट्ठिक्कएववासुएवपडिवासुएवकहंतरे णाम
छसट्ठिमो परिच्छेमो समत्तो ॥६६॥

अवहेलना करनेवाला वह शत्रु गिर पड़ा। अपने मनमें कलहका भाव धारण करनेवाला वह नरकमें गया। जिसमें आनन्दकी भेरी बजायी गयी है, ऐसी धरतीको सिद्ध कर जब बलभद्र और नारायण राज्य करते हुए रह रहे थे, तो कालने अनुज (पुण्डरीक) पर अपनी दृष्टि छोड़ी। चक्रवर्ती नरकके मध्य गया। बलभद्रने शिवघोष गुरुके उपदेशसे कर्मोंका नाश किया तथा मोह और मदसे मुक्त होकर वह सिद्ध हो गये।

घत्ता—जिनके मनमें भक्तिकी प्रचुरता भरी हुई है, ऐसे भरतक्षेत्रके राजाओं, विषधरो, विद्याधरों, सूर्य-चन्द्र आदि गृहचक्रोंने उनकी वन्दना की ॥१०॥

इस प्रकार त्रैलोक्य महापुराणके गुणाळंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एवं महाभग्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका सुभौम चक्रवर्ती
बलदेव वासुदेव प्रतिवासुदेव कथान्तर नामका छियासठवाँ
परिच्छेद समाप्त हुआ ॥६६॥

१०. १. AP सहिवि । २. AP हलिणा पुणु विरइय कम्महाणि । ३. A °रिसिद्धि । ४. AP omit पडिवा-
सुएव° । ५. P adds सत्तमचक्कवट्ठि अर स एव तित्तययर अट्टमचक्कवट्ठि सुभौम छडुबलएव णविसेण,
वासुदेव पुंडरीय, पडिवासुएव णिसुंम एतच्चरियं सम्मतं; K gives this in margin ।

संधि ६७

तिहुवणसिरिधरो सल्लविवल्लिओ ॥
जो परमेसरो सयमहपुल्लिओ ॥ ध्रुवकं ॥

१

जेण हओ णीहारओ	रुइणिल्लियणीहारओ ।
सुजसोधवलियहंसओ	जस्स भुवणसरहंसओ ।
जा कंती मयलंछणे	संपुण्णा जाय ल्लणे ।
सा वि जस्स मुहर्पकए	इर मज्जेइ णिप्पंकए ।
मोत्तुणं महिवइचलं	चित्तं सोदामणिचलं ।
गाहं जेण वसं कयं	मुणिसग्गे णीसंकयं ।
हिंसायारो वारिओ	जो कोवाणलवारिओ ।
कामभोर्येआसी हया	सरहस्स व वणसीहया ।
णट्ठा जस्स विवाइणो	अइवहुकम्मविवाइणो ।

५

१०

सन्धि ६७

जो त्रिभुवनकी लक्ष्मीको धारण करनेवाले और शल्यसे रहित हैं, जो परमेस्वर इन्द्रके द्वारा पूज्य हैं ।

१

जिन्होंने मनुष्यकी मिथ्या चेष्टासे उत्पन्न कर्मको नष्ट कर दिया है, जिन्होंने कान्तिसे चन्द्रमाको जीत लिया है, जिन्होंने अपने सुयशसे सूर्यको धवलित किया है, जिनका यश भुवनरूपी सरोवरमें हंसकी तरह झीड़ा करता है । पूर्णिमाकी रात्रिमें चन्द्रमाकी जो सम्पूर्ण कान्ति होती है, वह भी जिसके निष्पंक (कलंकरहित) मुखरूपी कमलमें डूब जाती है । राज्यलक्ष्मीको छोड़कर जिन्होंने सौदामिनीकी तरह चंचल मनको अच्छी तरह वशमें किया है और मुनिमार्गमें निःशंक-भावसे लगाया है । जिन्होंने हिंसामय आचारका निवारण किया है, जो क्रोधरूपी आगका निवारण करनेवाले हैं, जिन्होंने कामभोगरूपी सर्पको दाढ़को नष्ट कर दिया है, उसी प्रकार जिस प्रकार अष्टापद वनसिंहको नष्ट कर देता है । अत्यन्त अधिक क्रमविपाकवाले विवादी जिनसे नष्ट हो गये

All Mss. have, at the beginning of this samdhi, the following stanza:-

इह पत्तिभुवार वाचकैर्गीयमानं
इह लिखितमजसं लेखकैश्चाद्य काव्यम् ।
गसवति कविमित्रे मित्रतां पुष्पदन्ते
भरत तव गृहेऽस्मिन्माति विद्याविनोदः ॥ १ ॥

१. १. A सिरिवरो । २. K reads a p : मिज्जइ इति पाठे मीयते । ३. A महिवइवलं । ४. T reads a p : कामभोहवासी इति पाठे काम एव भोगी सर्पस्तस्य आसी वंहा ।

१५ सोचं जस्स सुधामयं हंतूणं मोहामयं ।
 पुरिसा णिक्कलधामयं पत्ता णाणसुधामयं ।
 आयंजुज्जलकरणहं भयवंतं णियकरणहं ।
 णिम्मलत्तगिरिसियणहं तं मल्लिं णमिल्लेण हं ।
 वोच्छं तस्सैव य कहं इयरह मोक्खविही कहं ।

धत्ता—पढमइ दीवइ सुरगिरिपुणवइ ॥

कच्छादेसइ सोहादिण्वइ ॥१॥

२

५ वीयसोयणयरेसरो रायां रुवी विव सरो ।
 धीरो जियपरमंडलो विहवेणं आहंडलो ।
 कोसेणं वइसवणओ णामेणं वइसवणओ ।
 अण्णस्सि दियइ घणं गंतूणं कीलावणं ।
 ५ पंकेरुहरयधूसरो रमइ जाम पुहुईसरो ।
 ताम पवासियदिहिहरो सुरधणुमंडियजैलधरो ।
 थोरथेभैथिप्पिरणहो पच्छाइयदसदिसिवहो ।
 फुल्लियफुडयकर्यवओ वियसावियदालिवओ ।
 १० णीरपूरपूरियधरो किडिकरडीण सुहंकरो ।
 पत्तो वासारत्तओ दूरं कंको मत्तओ ।
 णच्चावियसिहिउलणडो विञ्जुजलणल्लिओ वडो ।

हैं, जिनके श्रुतरूपी अमृतको सुनकर, मोहरूपी व्याधिको नष्ट कर लोग ज्ञानरूपी सुधासे युक्त निष्कलधाम (मोक्ष) को प्राप्त हुए हैं, जिनके हाथोंके नख लाल और उज्ज्वल हैं, जो ज्ञानवात् और अपनी इन्द्रियोंका धात करनेवाले हैं, जिन्होंने निर्मलतासे आकाशको तिरस्कृत कर दिया है ऐसे-उन मल्लिनाथको मैं नमस्कार करता हूँ और उन्हींकी कथाको कहता हूँ ।

धत्ता—प्रथम जम्बूद्वीपके सुमेरुपर्वतकी पूर्व दिशामे धोभासे दिव्य कच्छदेशमें—॥१॥

२

वीतशोक नगरका स्वामी राजा (वैश्रवण) कामदेवके समान सुन्दर था। धीर और शत्रुमण्डलको जीतनेवाला जो वैभवमे इन्द्र, धनमें कुबेर और नामसे वैश्रवण था। दूसरे दिन सघन क्रीड़ावनमें जाकर कमलपरागसे धूसरित वह राजा क्रीड़ा करता है तो इतनेमें प्रवासियोंके धैर्यका हरण करनेवाला जिसमें इन्द्रधनुषसे मेघ मण्डित हैं, आकाशसे बड़ी-बड़ी बूँदें गिर रही हैं, दसों दिशापथ आच्छादित हैं, - जिसमें कदम्ब वृक्ष विकसित और पुष्पित है, जिसने कुकुरमुत्तोंको विकसित कर दिया है, जलोंसे धरती प्लावित है, जो सुखरों और गजोंसे सुन्दर है ऐसी वर्षाश्रुतु आ गयी, बगुले दूर हो गये हैं । जिसने मयूरकुलरूपी नदोको नचाया है ऐसा वटवृक्ष

५. A' णमिल्लण ।

२. १. A रायां रुवं जियसरो । २. AP कीरो । ३. AP अण्णसं । ४. AP जलहरो । ५. AP विभं ।

पर्यलियपल्लवराहयं
ददूणं तं पायवं
होइ जयं पुणु पासप

हुयवहपउल्लियसाहयं ।
चितइ णिवइ णवं णवं ।
णिरुचं चिय ण हु दीसप ।

- घत्ता—जिह् णग्गोहओ वणिं दिट्ठओ ॥
तडिदंडाहओ सहसा णट्ठओ ॥२॥

१५

३

णासिहिंति तिह ह्य गया
देहो जो रसपोसिओ
सिंभवसापित्तासओ
इय भणिउं दाउं सिरि
सिरिणायं सिहरुणयं
संबोहियवहुवणयं
णैविळणं जाओ जई
पथारह वि सुयंगई
धरिळणं हिययं वढं
इंदचंदकयकित्तणं
अहंभिदेहिं विराइए
तेत्तीसंनुहिकाए

चिंधलत्तचामरचया ।
रयणाहरणविहूसिओ ।
सो वि ण होही सासओ ।
णियतणयस्स गओ गिरि ।
दरितरुकील्लियपणयं ।
सिरिणायकं सुणिवरं ।
सामंतैहिं समं वई ।
पडिळणं अचिहंगई ।
चिण्णं चरियं णीसढं ।
वद्धं तित्थयरत्तणं ।
संभूयउ अवराइए ।
गइ थिइ छम्मासाए ।

१०

बिजलीकी आगमे जलकर भस्म हो गया। उस वृक्षको देखकर राजा अपने मनमे सोचता है कि यह विश्व नया-नया होता है फिर नाशको प्राप्त होता है।

घत्ता—जिस प्रकार इस समय बटवृक्ष विद्युत्-दण्डसे आहत सहसा नष्ट होता हुआ दिखाई दिया—॥२॥

३

उसी प्रकार हाथी और घोड़े, चिह्न, छत्र और चामर-समूह नाशको प्राप्त होगा। रससे पोषित, रत्नाभरणोंसे विभूषित, श्लेष्मा (कफ), मज्जा और पित्तसे आश्रित यह शरीर भी शाश्वत नहीं होता। उसने यह विचार किया और लक्ष्मी अपने पुत्रको देकर राजा श्रीनाग पर्वतके लिए चल दिया कि जो पर्वतसे उन्नत था और जिसकी घाटियोंमें साँप क्रीड़ा कर रहे थे। जिन्होंने बहुतसे अनेक वनचरोको सम्बोधित किया है, ऐसे श्रीनायक मुनिवरको प्रणाम कर वह सामन्तोंके साथ मुनि हो गया। अविर्भंग ग्यारह श्रुतांगोंको पढकर उसने निष्कपट चारित्र्य ग्रहण कर लिया। जिसका कीर्तन इन्द्र और चन्द्रमा करते हैं ऐसे तीर्थंकरत्वका उसने बन्ध कर लिया। वह अमरेंद्रोंसे विराजित अपराजित विमानमे उत्पन्न हुआ। वहाँ उसके तैत्तीस सागर आयु वीतने और छह माह शेष रहनेपर—

६ A पर्यहियं । ७. A णरवह ।

३. १. A चामरघया । २. A णमिळणं । ३. P पडिळणं ।

घत्ता—तस्मि काले अमलिणवेसहो ॥
सोहम्माहिचो कहइ धणेसहो ॥३॥

४

सुणि इह भरहे अंगए	विसए धम्मवसंगए ।
मिहिल्लोरणयराहिवो	दीणेषुं य पसरियकिवो ।
रिसहगोत्तवंसुव्वभवो	कुंभो गाम महैाणिवो ।
किं किर कहमि महासई	देवी तस्स पैयावई ।
५ णिक्कंदप्पो णिव्वभओ	होही ताणं अच्चमओ ।
भुवि हिरण्णगच्चो गुणी	जं शृणंति देवा सुणी ।
कुणसु तस्से णयरं तुमं	ता धणएण अणोचमं ।
सहसा रइयं तं पुरं	रयणजालफुरियंवरं ।
पुण्णाणं पिव संचए	पासाए मणिमंचए ।
१० राइविरामे सुत्तिया	पेच्छइ पंकयणेत्तिया ।
साहियसिरियणुभवणए	एए सोलह सिवियणए ।

घत्ता—पूणं मत्तयं धोरेयं सियं ॥

सारंगहिचं गोवद्धणपियं ॥४॥

घत्ता—उस समय स्वच्छ वेशवाला सौधर्म इन्द्र कुवेरसे कहता है ॥३॥

४

“सुनो, भरतक्षेत्रके धर्मके वशीभूत अंगदेशमें मिथिलापुर नामके नगरका राजा है, जो दीनोंके प्रति कृपाका विस्तार करनेवाला है। जो ऋषभके गोत्र और वंशमें उत्पन्न हुआ है, ऐसा कुम्भ नामका महान् राजा है। उसकी देवी महासती प्रजावती है। उसका मैं क्या वर्णन करूँ? उससे कामदेवका नाश करनेवाला निष्कलंक बालक उत्पन्न होगा, जो संसारमें हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा) होगा, और जिसकी देव और मूनि स्तुति करते हैं, उसके लिए तुम सुन्दर नगर बनाओ।” तब कुवेरने सहसा अनुपम, जिसके रत्नजालसे आकाश स्फुरित है ऐसा मिथिलापुर नगर बनाया। पुण्योंके समूहके समान प्रासादमे मणिमय मंचपर सौते हुए रात्रिके अन्तमें वह कमलनयनी, जिसमे लक्ष्मीके भागको कहा गया है, ऐसे स्वप्नमें ये सोलह (चीजें) देखती है।

घत्ता—मतवाला गज, सफेद बैल, सिंह, लक्ष्मी ॥४॥

४. १. A महिलावरं । २. A दीणेषुं, P दीणेषु पसरियं । ३. AP महाहिवो । ४. AP पहावई । ५. A तासु ।

मालाओ कयजणदिहिं ५ अमयरुहं सररुहसुहिं ।
 भावभरियवम्महरसं अणिमिसमिहुणं रइवसं ।
 धवलघडाणं जुयलयं हंसीचुं वियकुवलयं ।
 पुल्लिणगिलीणवैलाययं सजलं कमलतल्लोययं ।
 सरिरायं रसणारवं मणिचीळं हरिभइरवं । ५
 अच्छरणाइणिगेयए इंदफणिंदणिकेयए ।
 हरियं पीयं तंवयं रयणाणं णिडरुंबयं ।
 इंदूणं मरुजालियं अग्गिं जालामालियं ।
 पडिबुद्धा परमेसरी कहइ सपइणो सुंदरी ।
 मइं विइण्णलोयणरई दिट्ठा सिविणयसंतई । १०

घत्ता—तिससौं तं फलं कहइ नृसारेंओ ॥
 सुह होही सुओ देवि भडारओ ॥५॥

६
 धरिही जो रयणत्तयं णविही जस्स जयत्तयं ।
 लहिही जो छत्तत्तयं जाइजरामरणत्तयं ।
 डहिही जो णिन्भंतयं जाही मोक्खमणंतयं ।
 सो ते होही डिंभओ सुहिज्जणलग्गणखंभओ ।
 अमरविलासणिसत्थओ पत्तो मंगलहत्थओ । ५

मालाएँ, जनौका भाग्यविधाता चन्द्रमा और सूर्य जिसमें भावोसे—।

कामदेवका रस भरा हुआ है ऐसा रतिवशा मत्स्ययुग, धवल घड़ोंका युग, जिसमें कमल हंसिनियोके द्वारा चुम्बित हैं, जिसके तटोपर बगुले बैठे हुए हैं, ऐमा मजल सरोवर । गर्जनासे भयंकर समुद्र, सिंहासन (सिंहींसे भयंकर मणिपीठ), अप्सराओं और नागिनोके द्वारा गाये गये स्वर्गलोक और नागलोक, रत्नोका हरा-पीला और लाल समूह तथा पवनसे प्रज्वलित ज्वालामोसे सहित आगको देखकर वह परमेश्वरी जाग गयी । वह सुन्दरो अपने पतिसे कहती है कि मैंने आँखोमें रति उत्पन्न करनेवाले स्वप्नोको देखा ।

घत्ता—तब उसके लिए राजा उनका फल कहता है कि हे देवी, तुम्हारे आदरणीय पुत्र होगा । ॥५॥

६
 जो रत्नत्रयको धारण करेगा, जिसे तीनों जगत् प्रणाम करेंगे । जो तीन छत्र प्राप्त करेगा, जन्म-जरा और मरण तीनोंका नाश करेगा, जो बिना किसी आन्तिके अनन्त मोक्षको प्राप्त होगा । सुधीजनोका आधारस्तम्भ वह तुम्हारा पुत्र होगा । मंगलद्रव्य हाथमें लिये हुए अमर

५. १. A वलालयं । २. A तडालयं । ३. A तस्सा । ४. AP णिसारओ ।

६. १. A सो तव होही ।

	सुविबुद्धे गम्भासए	घणधारावरिसे कए ।
	पढसमासि पढमे दिणे	औसिणिगइ हरिणंकणे ।
	राणो जो रईकंदओ	वइसवणो अहमिंदओ ।
	गयरूवेणवइणओ	राणीगळि भिसणणओ ।
१०	सो सुरेहिं अहिणंदिओ	फणिक्किणरणरवदिओ ।
	णिन्वाणं पत्ते अरे	वरिसकोडिसहसंतरे ।
	भग्गसिरे तुहिणायरे	सियएयारसिवासरे ।
	औसिणिरिक्खे जायओ	तित्थयरो ह्यरायओ ।
	एक्कुणवीसमओ इमो	णरूवेण व संजयो ।
१५	अहिसित्तो अमरायले	हरिणा पंडुसिलायले ।

घत्ता—मल्लियमालागंधो जाणिओ ॥

इंदेण जिणो मल्ली भाणिओ ॥६॥

७

	अणुअत्थं पवियपिओ	जणणीहत्ये अपिओ ।
	घणडंबरघल्लियपया	देवा णियवासं गया ।
	बुद्धसुहंपीमाणं इणो	बद्धइ कालेणं जिणो ।
	जाओ जायरूवाहओ	पंचवीसघणुंदीहओ ।
५	आउसु तस्स सहासई	वरिसहं पणपण्णासई ।
	वरिससए बोलीणए	आरूढो सुरपूणए ।

विलासिनियोंका समूह आ गया। घनधाराकी वर्षा होनेपर सुविबुद्ध गम्भासयमे चैत्र शुक्ल प्रतिपदाके दिन प्रातःकाल चन्द्रमासे युक्त अश्विनी नक्षत्रमे रतिका अंकुर वह राजा वैश्ववण अहमेन्द्र गजरूपमे अवतीर्ण होकर रानीके गर्भमे स्थित हो गया। चाग, किन्नर और भनुष्योंके द्वारा वन्दनीय वह देवोंके द्वारा अभिनन्दित किया गया। अरनाथके निर्वाण प्राप्त करनेके बाद एक हजार करोड़ वर्ष बीतनेपर मार्गशीर्ष सुदी एकादशके दिन अश्विनी नक्षत्रमे कामदेवका नाश करनेवाले तीर्थंकरका जन्म हुआ। उन्नीसवें तीर्थंकर यह जैसे मनुष्यके रूपमें मूर्त संयम थे। इन्द्रके द्वारा सुमेरुपर्वतपर पाण्डुकशिलाके ऊपर वह अभिषिक्त हुए।

घत्ता—मल्लिकांको मालाके गन्धसे युक्त जानकर इन्द्रने उन जिनको मल्ली कहा ॥६॥

७

उसने सार्धक नाम समझा और माताके हाथमें उन्हें दे दिया। भेषोंके आठम्वर (घटा) में पैर रखते हुए देवता अपने निवासगृह चले गये। जो बुद्धोंके मूलरूपी कमलके लिए सूर्य हैं, ऐसे जिन भगवान् समयके साथ बढ़ने लगे। वह स्वर्णरूप हो गये एवं वह पच्चीस धनुष ऊँचे थे। उनकी आयु पचपन हजार वर्ष थी। सौ वर्ष आयु पूरी होनेपर वह ऐरावतपर आरूढ़ हुए। वह

२. A अस्सिणि । ३. A राजो जो । ४. AP वइसवओ । ५. A अस्सिणि ।
७. १. A अणुअत्थं and gloss आक्षर्यम्; T अणुअत्थं आक्षर्यम् । २. A षणुदेहओ । ३. A सुरपूणए ।

ऋणइ विवाहपवट्टणं
 परिहापाणियदुग्गमं
 हेमचडियपायारयं
 पोमरायंकयभारुणं
 हसियणिसावइकंतियं
 सरइ पहू अवराइयं
 खीणं तेण विमाणयं
 एण्ह होही किं थिरं

पेच्छइ कुंअँरो पट्टणं ।
 बहुदुवारकयणिग्गमं ।
 पवरट्टालयसारयं ।
 उड्ढियधुयधयतोरणं ।
 पेच्छंतो घरपंतियं ।
 सुकरयं मब्हु पुराइयं ।
 मुक्कं अहमिदाणयं ।
 णरजन्मे णयरं घरं ।

१०

घत्ता—छत्तायारयं सिवमहिमंडलं ॥

१५

करमि तवं परं लहमि घुवं फलं ॥७॥

ता सारस्सयभासियं
 कुंभणिवस्स य तणुरुहो
 इदेणं ससहरमुहो
 जयणे जाणे थक्कओ
 कामेसुं सुविरत्तओ
 जन्मदिणे णक्खत्तए
 णिववरंतिसैयइए जुओ
 सायण्हे सुतवे थिओ

सोऊणं सुइमीसियं ।
 तरुणीणं चिवरंमुहो ॥
 ण्हविओ दिक्ख्वासंमुहो १
 कुवल्लयकुमुयमियंकओ ।
 सरयवणं संपत्तओ ।
 पक्खे तम्मि पत्तए ।
 मोहणिवंधाओ चुओ ।
 णाणचउक्केणकिओ ।

५

विवाहके लिए प्रवर्तन करते हैं। कुमार नगरको देखते हैं कि जो परिखा और पानीसे दुर्गम है, जिसमें बाहर जानेके अनेक द्वार हैं, जिसके परकोटे स्वर्णरचित हैं, जिसमें श्रेष्ठ और विशाल अट्टालिकाएँ हैं, जो पद्मराग मणियोंकी आभासे युक्त हैं, जिसमें हिलती हुई अँची पताकाओंके तोरण हैं। गृह-पंक्तियोको देखते हुए कुमार मल्लि अपराजित विमानकी याद करता है। मेरा पुरातन पुण्य क्षीण हो गया है उसीसे अहमेन्द्र विमानसे मैं मुक्त हूँ। इस मनुष्य जन्मके नगर और घर क्या स्थिर रहते हैं।

घत्ता—मैं केवल तप करूँगा और छत्राकार शिवमहीमण्डलके शाश्वत फलका भोग करूँगा ॥७॥

तंत्र लौकान्तिक देवोंका आगमयुक्त कथन सुनकर स्त्रियोसे पराहःमुख वीक्षाके लिए उद्यत चन्द्रमाके समान मुखवाले कुम्भराजाके पुत्र वैश्रवणका इन्द्रने अभिषेक किया। 'जयन' यानसे बैठकर कुवल्लय (पृथ्वीरूपी) कुमुदके लिए चन्द्रमाके समान कामोंसे अत्यन्त विरक्त वह शरद्वनमे पहुँचे। जन्मके दिन अर्थात् अगहन सुदी एकादशीके दिन अश्विनी नक्षत्रमे तीन सौ राजाओंके साथ वह मोह बन्धनसे छूट गये। सार्यकाल सुतपमे स्थित हो गये और चार ज्ञानोंसे अंकित

४. AP कुमरो । ५. AP पोमरायकिरणारुणं ।

८. १. A सुयमोसियं । २. A °तिसईए; P °तिसइएण ।

१० घित्तं^३ पञ्चव्याण्यं
विहिं दिवसेहिं गपहिं सो
गिण्णोहो पीसंगओ
णंदिसेणवररोइणा
मुत्तं तणुगिन्वाहणं

मोत्तं^३ भत्तं पाणयं ।
दसादिंसिवहपसरियजसो ।
मिहिलाए भिक्खं गओ ।
दिण्णं भत्तं जोइणा ।
संजमजत्तासाहणं ।

१५

घत्ता—पुणु दिक्खावणे सुरहियपरिमले ॥
थक्कु असोयहो वलि धरणीयले ॥८॥

९

५ दिणि लळे विच्छिण्णए
हुच देवाण वि देवओ
रिसिचिच्चाहरसंसिओ
समवसरणि आसीणओ
जीवमजीवं आसवं
वंधं भोक्खं भासए
थवइ तस्स णिसुणियहुणी
सयइ पंचपण्णासइं
एक्कुणतीससहासइं

भिण्णे मिच्छादुण्णए ।
लद्धो खाइयभाचओ ।
इंदपहिदुणमंसिओ ।
अरिसुर्यणे वि स्रमाणओ ।
संवरणिज्जरणं तवं ।
लोयं धम्मविसेसए ।
अट्टवीस जाया गणी ।
पुव्वधराहं पिरासइं ।
सिक्खुय्याहं मलणासइं ।

हो गये । प्रत्यास्थानावरण आदि छोड़नेके लिए भात और पानी छोड़ दिया । दो दिन हो जानेपर दसों दिशाओंमें जिनका यश फैला हुआ है ऐसे निर्नेह और अनासंग वह मिथिला नगरीमें भिक्षाके लिए गये । नन्दिवेण श्रेष्ठ राजाने योगीको आहार दिया । शरीरका निर्वाह करनेवाला और संयमयात्राका साधक आहार उन्होंने ग्रहण कर लिया ।

घत्ता—फिर सुरभित परागवाले दीक्षावनमें वह अशोक वृक्षके नीचे धरणीतलपर स्थित हो गये ॥८॥

९

छठा दिन बीतनेपर (पारणाके बाद) मिथ्या दुर्नय नष्ट होनेपर वह देवोंके देव हो गये । उन्होंने क्षायिकभाव प्राप्त कर लिया । ऋषि विद्याधरों द्वारा प्रवृत्तित इन्द्र और प्रतीन्द्रके द्वारा प्रणम्य समवसरणमें बैठे हुए शत्रु और स्वजनमें समान वह जीव-अजीव-आलव-संवर-निर्जरा-तप-बन्ध और भोक्षका कथन करते हैं, लोकको धर्मविशेषमें स्थापित करते हैं । जिन्होंने विष्यध्वनि सुनी है ऐसे उनके अट्टाईस गणधर हुए । आहारहित पूर्वगके चारो पांच सौ पचास थे । मानका नाश करनेवाले शिक्षक उनतीस हजार थे ।

३. P वेत्तुं । ४. A मोत्तं । ५. P राइणो । ६. A भिक्खं; P भक्खं । ७. A जोइणो ।

९. १. P add after this: पचकिण्हवीयए तओ, पंचम णाणुपण्णओ । २. A अरिसयणे; P अरितयणा ।

३ A सिक्खुवाह; P भिक्खुवाह ।

घत्ता—दुसहसदुसयइं सावहि ह्यकलि ॥
तेहिं जेतिय ते तेत्तिय केवलि ॥९॥

१०

१०

चचवहसय वाईसहं	विकिरियहं वि रिसीसहं ।
णवसय दोग्णि सहासइं	कुच्छियणयविद्धंसइं ।
सणजाणहं सत्तारह	सयपण्णास समीरह ।
पंचोवण्णसहासइं	विरइहिं मुक्कंसवासइं ।
सावयलक्खु अहीणवं	सावईहिं तं तिण्णवं ।
सुर असंख उम्मोहिवि	पसु ससंख संबोहिवि ।
भवसमुहत्तडपाविए	मात्तसेसथियजीविए ।
पंचसहासहिं जुत्तओ	रिसिहिं णाहु तमच्चत्तओ ।
समेए सिरहयणहे	फग्गुणि सियपंचमियहे ।
भरणीरिक्खे मुक्कओ	अट्टमपुहइहि थक्कओ ।

१०

घत्ता—हरउ भयंकरं भवविन्ममदुहं ॥

मल्लिसुणीसरो देउ सुहं महं ॥१०॥

११

मल्लितित्थसंताणे कयपडिवक्खवहं
सुहयणसुहसुहयरणं णिसुणह चक्किहं ।

घत्ता—पापका नाश करनेवाले अवधिज्ञानी दो हजार दो सौ थे । वहाँ जितने थे उतने ही केवलज्ञानी थे ॥९॥

१०

वादी मुनि चौदह सौ थे । कुत्सित नर्योंका ध्वंस करनेवाले विक्रिया-श्रद्धिके धारक मुनि दो हजार नौ सौ थे । तुम मनःपर्ययज्ञानी एक हजार सात सौ कहो । अपना गृहवास छोड़नेवाली पचपन हजार आधिकाएँ थी, श्रावक एक लाख थे और श्राविकाएँ तिरगुनी अर्थात् तीन लाख थीं । असंख्य देवोंको मोहमुक्त कर संख्यात तिर्यचोंको सम्बोधित कर संसाररूपी समुद्रका तट प्राप्त कर जीवनका एक माह शेष रहनेपर पांच हजार मुनियोंके साथ अन्धकार रहित स्वामी शिखरसे आकाशके छूनेवाले सम्मेद शिखरपर फागुन शुक्ला सप्तमीके दिन भरणी नक्षत्रमे मुक्त हुए । वे साठवीं धरतीपर पहुँच गये ।

घत्ता—हे मल्लि जिनेश्वर, तुम भयंकर भवविभ्रमके दुखको दूर करो और मुझे सुख दो ॥१०॥

११

मल्लिनाथकी तीर्थपरम्परामे जिसमें शत्रुपक्षका वध किया गया है, जो बुधजनोंके कानोंके

४. AP तहिं ह्य जेतिय तेत्तिय ।

१०. १. A वण्णावण्णं । २. A मुक्कंसवासइं; P मुक्कंसवासइं । ३. A संभोहिवि । ४. AP मात्तसेसि थिइ जीविए । ५. AP पुहविहि । ६. AP महं सुहं ।

११. १. A सुहयणणो; P सुहयणण ।

- जंबूद्वीपसुरोयलि पुण्विदेहवरे
विचलि मुकच्छाजणवइ सिरिहरि सिरिणयरे ।
- ५ तडिकरालअसिधारातासियसयलखलो
पयपालो पुहईसो पोसियपुहइयलो ।
णिसिसमए ददूणं उक्कं ण्हइसियं
सिवगुत्तस्स समीचे सुक्कियं तेण कियं ।
वारहविहतवचरणं इंदियमयहरणं
- १० मुक्काहारसरीरं सल्लेहणमरणं ।
जायउ अच्चुयकप्पे अमरो मरिऊणं
सग्गसिहरभवणाओ पुणु ओयरिऊणं ।
इह भरहे कासीए, वाणारसिणाहो
आइदेचकुलतिलओ पहु पंकयणाहो ।
- १५ मज्जे खामा सामो रामा, तस्स सई
जाओ देवो, पोमो, ताणं सुद्धमई ।
तीसवरिससहांसउ, धणुवावीसतणु
णयसंणिहियणरोहो पहु णं चरममणु ।
गंगासिधूणविओ साहियमहियमरो
णिहिरयणालंकारो णवमो चक्रहरो ।
- २० घत्ता—पुहईसुंदरीपमुहउ वीयउ ॥
अट्ट वि सिट्ठउ सुट्ठु विणीयउ ॥११॥

लिए शुभकर है ऐसी चक्रवर्ती-कथाको सुनो । जम्बूद्वीपके सुमेरुपर्वतके श्रेष्ठ पूर्वीविदेहके अत्यन्त विशाल कच्छावती देशमें लक्ष्मीको धारण करनेवाले श्रीनगरमें प्रजापाल नामका पृथ्वीश्वर है जो बिजलीके समान भयंकर असिधारासे समस्त शत्रुओको नस्त करनेवाला है और पृथ्वीतलका पालन करनेवाला है । रात्रिके समय आकाशसे गिरते हुए तारेको देखकर उसने शिवगुप्त मुनिके समीप बारह प्रकारके तपके आचरणके द्वारा इन्द्रियोंके मदका हूरण करनेवाला पुण्य किया तथा छोड़ दिया है आहार और क्षरीर जिसमे ऐसा सल्लेखना मरण किया । मृत्युको प्राप्त होकर वह अच्युत स्वर्गमें उत्पन्न हुआ । स्वर्गके विमान शिखरसे अवतरित होकर वह पुनः इस भारतवर्षके काशीदेशमें वाराणसीका राजा हुआ—इक्ष्वाकुकुलका तिलक स्वामी पद्मानाभ । उसकी सती स्त्री सुन्दरी मध्यमें क्षीण थी । उनका शुद्धमति पत्न्य नामका पुत्र उत्पन्न हुआ । तीस हजार वर्ष उसकी आयु थी । बाईस धनुष उसका ऊँचा शरीर था । वह लोगोंको न्यायमें स्थापित करनेवाला मानो अन्तिम मनु था । जिसने गंगा और सिन्धु नदियोंको सिद्ध किया है, धरती और देवोंको सिद्ध किया है, जो निषियों—रत्नों और अलंकारोंसे युक्त है, ऐसा वह नौवाँ चक्रवर्ती था ।
घत्ता—उसकी पृथ्वीसुन्दरी प्रभृति कन्याएँ थी जो आठों ही अत्यन्त विनीत कही गयी है ॥११॥

२. A सुरालए । ३. A विदेहि वरे । ४. A उक्कं उल्लहियं । ५. A रामा सामा तस्स ।
६. A सहवालं । ७. A सिट्ठउ ।

१२

णेहे णिचत्ताण विण्णाणजुत्ताण
 णिच्छिज्जमाणेण दीहेण कालेण
 देवेण सव्वावणोरिद्धिरिद्धेण
 कम्मारिचारित्तत्ती कया जाम
 जायंति भूयाण संजोयभावेण
 दिक्खाइ भिक्खाइ किं होव हे राय
 जं णेत्थि णो तस्स उप्पत्तिसंताणु
 कूराण कल्लाण कंकालेचिधाण
 सुत्तेण किं मञ्जु किं वंधुणेहेण
 एवं पवोत्तण तच्चाइं णाऊण
 सुरिस्स तिव्वं समाहीइ गुत्तस्स
 सोमो व्व सोमेणं णिम्मुक्कपोमेण
^{११}सुद्धं इसी जायया णिक्कसाएण
^{१२}खीणा तवेणं खरं णिक्कलत्तेण

दिण्णाव ताओ सुकेर्येस्स पुत्ताण ।
 रज्जं करंतेण भूचक्खंवालेण ।
 दिट्ठो घणो खे पणट्ठो खणद्धेण ।
 दुब्भतिणा मंतिणा जंपियं ताम ।
 जीवा ण वज्झंति पुण्णेण पावेण ।
 णाहेण सो उच्चु भो बुद्ध णिण्णाय ।
 णो जम्मो णो कम्मो णो कस्सं णिब्बाणु ।
 कीलालमत्ताण कंतारयंघाण ।
 सार्हामि सोक्खं धुवं एण देहेण ।
 पुत्तस्स भूमिं असेसं पि दाऊण ।
 कावं तवं पायमूले सुजुत्तस्स ।
 राया सुकेऊं वि अण्णे वि पोमेण ।
 णिल्लोहणिम्मोहिणा णिव्विसाएण ।
 मोक्खं गया संठिया णिक्कलत्तेण ।

घत्ता—एत्थइ तिस्थइ जे हयवइरिणो ॥

१५

जाया भाणिमो ते हरिसीरिणो ॥१२॥

१२

वे आठों राजा सुकेतुके स्नेहसे परिपूर्ण विज्ञानसे युक्त पुत्रोंको दी गयीं । लम्बा समय निकल जानेके बाद राज्य करते हुए भूपाल चक्रवर्ती समस्त धराश्रद्धिद्वियोसे समृद्ध देवने आकाशमे आधे ही पलमे बादलको नष्ट होते हुए देखा । जब उसने कर्मके शत्रु जिनके चरित्रकी चिन्ता की तो दुर्भ्रान्त मन्त्रीने कहा—“प्राणी संयोगभावसे जन्म लेते हैं, जोव पुण्य या पापसे बन्धनको प्राप्त नहीं होते । इसलिए हे राजन्, दीक्षा और भिक्षासे क्या होता है ?” तब राजाने कहां—“हे न्यायहीन वृद्ध मन्त्री, जो चीज नहीं है उसकी उत्पत्ति या परम्परा नहीं हो सकती है । जब जन्म नहीं है, कर्म नहीं है, तो निर्वाण क्या है ? कंकाल चिह्नवाले क्रूर कौल मद्यसे मस्त कान्तारतिमे अन्वे चार्वाकोके सिद्धान्तसे मुझे क्या, बन्धुस्नेहसे क्या ? इस शरीरसे मैं शाश्वत सुखकी सिद्धि करूँगा ?” यह कहकर, तत्त्वोको जानकर, पुत्रको समस्त धरती देकर सुयुक्त समाधिगुप्त मुनिके पादमूलमे तोत्र तप कर लक्ष्मीसे भुक्त चन्द्रमाके समान सौम्य राजा पद्मके साथ राजा सुकेतु तथा दूसरे राजा मुनि हो गये । निष्कषाय, निर्लोभ, निर्मोह और निर्विषाद तथा स्त्रीशून्य तपसे क्षीण वे मोक्ष गये और वहां अक्षरीरभावसे स्थित हो गये ।

घत्ता—इसी तीर्थमें जो शत्रुओंको मारनेवाले बलभद्र और नारायण हुए उनका कथन करता हूँ ॥१२॥

१२. १. A दिण्णाव ता ताव । २. AP सुकेउस्स । ३. A पिच्छिज्जमाणेण । ४. A खं पणट्ठो । ५. A अत्थि । ६. P घम्मणिब्बाणु । ७. A कंकालविद्धाण । ८. AP सार्हामि । ९. P सोमो ण ।
 १०. A सुकेऊविण्णेण । ११. A सुद्धं इसी जायओ; P सक्क इसी जायया । १२. A खीणं तवेणं ।

	ससहरधवलहरे धणरिद्धे मंदरधीरो वीरो राया एए किर दुम्मइपइरिका लगा ते ण हू पिचणो चित्ते लक्खिंयतच्चे रक्खियजीवे धम्मणाहत्तिये ह्यमारा णो समियं गियचित्तं छुद्धं जइ वयवेल्लिहलं पावामो एम भरंतो गिमायेप्राणो १० पढमे कण्णे पिहूलैविमाणे पिसुणंसहंतो ता संसारे उत्तरसंढीमंदिरणामे जाओ धरणीवइ खयरिंदो	१३ इह भरद्वे साकेयपसिद्धे । पुत्ता रामविरामा जाया । पिसुणंसतिवयणेण विसुक्का । भाई वि गिहियइ जुवराइत्ते । शुरुणो सिरिसिवगुत्तसमीवे । ते पावइयां रायकुमारा । अणुजाएण गियाणं वद्धं । तो तं खलमंति गिहणामो । अणसणेण जाओ गिन्वाणो । जेट्ठो वि हू त्तत्येय विमाणे । अणुहविल्लणं दुक्खपयारे । णयरे कामिणिकासियकामे । बल्लिवलणासो णाम बल्लिदो ।
--	--	--

१५ घत्ता—चंडा राइणो असिणा दंडिया ॥
तेण तिखंडिया मेइणि मंडिया ॥१३॥

१३

इस भारतवर्षमें धनसे समृद्ध चन्द्रमाके समान धवल गूहवाले अयोध्या नगरमे मन्दराचलके समान धीर वीर नामका राजा था। उसके राम-विराम नामके पुत्र थे। वे दुर्मतिसे प्रचुर थे। दुष्ट मन्त्रीके कहनेमें आकर आजाद हो-गये। वे दोनों पिताके चित्तको अच्छे नहीं लगे, इसलिए उसने छोटे भाईको युवराज्यदपर स्थापित कर दिया। कामदेवको नष्ट करनेवाले वे राजकुमार, धर्मनाथके तीर्थकालमें, जिन्होंने तत्त्वोंको जान लिया है, जीवोंकी रक्षा की है ऐसे श्री शिवगुप्त मुनिके पास प्रव्रजित हो गये। छोटे भाई (विराम) ने अपने क्रुद्ध चित्तको शान्त नहीं किया और निदान बाँध लिया कि यदि मैं व्रतरूपी लताका फल प्राप्त करता हूँ तो मैं उस दुष्ट मन्त्रीको मारूँगा। इस प्रकार स्मरण करता हुआ वह अनशनसे मृत्युको प्राप्त हुआ और प्रथम स्वर्गके विशाल विमानमें देव हुआ। बड़ा भाई भी वही उत्पन्न हुआ। वह दुष्ट मन्त्री भी संसारमे तरह-तरहके दुःखोंका अनुभव कर विजयार्ध पर्वतको उत्तर श्रेणीमे जिसमे कामिनियोंके द्वारा काम चाहा जाता है, ऐसे मन्दरपुर नगरमे बलवानोके बलका नाश करनेवाला बलान्द्र नामका विद्याधर राजा हुआ।

घत्ता—प्रचण्ड राजाओंको उसने तलवारसे दण्डित किया। उसने तीन खण्ड धरतीको अलंकृत किया ॥१३॥

१३. १. P साकेयए पसिद्धे । २. A रामविराम विजाया । ३. A भाऊ गिहियो । ४. A लक्खियचित्तं ।
५. A तो । ६. AP पाणो । ७. AP विमाणे । ८. P त्तत्येय समाणे; K records: त्तत्येय समाणे
इति पाठे पूजावहिते । ९. P पिसुणु । १०. A णरिंदो ।

१४

एत्थंतरए	सिरिसुंदरए ।	
खेत्तविचित्ते	भारहखेत्ते ।	
कासीदिसे	सज्जनवासे ।	
बहुगुणरासी	वाणारासी ।	
डण्णयहम्मा	णयरी रम्मा ।	५
पड्ढिमडमल्लो	अग्गिसिहिल्लो ।	
सत्तिसहाओ	तस्सि राओ ।	
सिसुहंसगई	अवराइय ई ।	
णं पच्चक्खा	कयरयसोक्खा ।	
अलिकेसवई	थी केसवई ।	१०
बीया सरसा	पियघरसरसा ।	
विस्सुयणामो	जो चिररामो ।	
कयजिणसेवो	औयउ देवो ।	
थक्को गळ्भे	रवि व सियब्भे ।	
जाओ तीए	पढमसईए ।	१५
रमित्थरईए	केसवईए ।	
अवरो हूओ	वम्महरूओ ।	

घत्ता—लीलागामिणो गाइ मरालथा ॥

णवज्जोवणसिरिं पत्ता बालया ॥१४॥

१४

इसी बीच श्रीसे सुन्दर तथा क्षेत्रोंसे विचित्र भारत क्षेत्रके सज्जनोंसे बसे हुए काशी देशमें अनेक गुणोंकी खान वाराणसी नगरी है जो उन्नत प्रासादोंवाली और सुन्दर है। उसमें शत्रु-योद्धाओंके लिए मल्ल तथा जिसकी सहायक शक्ति है ऐसा अग्निशिख नामका राजा था। उसकी शिशुहंसके समान गमनवाली अपराजिता नामकी पत्नी थी जो प्रत्यक्ष रतिसुख करनेवाली थी। दूसरी भ्रमरके समान बालोंवाली केशवती नामकी पत्नी थी। दूसरी अत्यन्त सरस और पतिघर-रूपी सरोवरकी लक्ष्मी थी। जो पहला विश्रुतनाम राम था और जिसने जिनकी सेवा की है ऐसा वह देव आया तथा गर्भमें उसी प्रकार स्थित हो गया जिस प्रकार श्वेतकमलमें सूर्य। वह प्रथम सती अपराजिता स्त्रीसे उत्पन्न हुआ। जिसने रतिकी तरह रमण किया है ऐसी केशवतीसे दूसरा (विराम) कामदेवके रूपमें उत्पन्न हुआ।

घत्ता—हंसोंके समान लीलापूर्वक चलनेवाले वे दोनों बालक यौवनश्रीको प्राप्त हुए ॥१४॥

१४. १. A गिरिसुंदरए । २. P खेत्ति विचित्ते । ३. A गुणवासी । ४. उगयहामा । ५. AP आओ ।

- १५
- तर्हि पहिल्लओ णंदिमित्तओ
खरपयावभरतसियवासवा
वे वि सिद्धहरिरहविहंगया
बिहिं मि अत्थि महिपंसुपिंजरो
५ भग्गिओ ये सो रायरइणा
अट्टहासहिमरासिचण्णओ
दूयवयणविहिवड्ढिओ कळी
चारु अमरकंतारवासिणा
बद्धणेहरसमुणियसारणा
१० सहिय वे वि बंधू वि णिग्गया
जाययं रणं बलियसंमुहा
चूरिया रहा दारिया हरी
णंखिया णहे अमरसुंदरी
अंतरे भडो संठिओ हरी
१५ घत्ता—दोहिं मि जं कयं विज्जापहरणं ॥
को तं चण्णप बहुरुक्कं रणं ॥१५॥

१५

उनमें पहला नन्दिमित्र था दूसरा भी नामसे दत्त था । अपने प्रखर प्रतापके भारसे इन्द्रकी सन्वस्त करनेवाले वे दोनों राजा बलदेव और नारायण थे । उन दोनोंको क्रमशः सिद्ध रथ वाहिनी और गरुड़ विद्याएँ सिद्ध थीं । दोनोंके शरीर कास और काजलके रंगके समान थे । दोनोंके पास धरतीकी धूलसे घूसरित खीरसागर नामका हाथी था । उसे धीर वैरियोंको सन्ताप देनेवाले राजराजा (बलीन्द्रने) मांगा । अट्टहास और हिमराशिके रंगका वह गज उन लोगोंने उसे नहीं दिया । झुतके शब्दोंसे कलह बढ़ गया । सेनाके साथ वह बलि राजा वहाँ आया । अमरकान्तार नगरके निवासी दक्षिण श्रेणीके विद्याधर स्वामी बद्धस्नेहके स्वादको जाननेवाले मामा केशवतीके भाईके साथ वे दोनों भाई भी निकल पड़े । सेनाके साथ दोनों समरांगणमें गये । उनमें रण हुआ । बलि (बलीन्द्र राजा) के सम्मुख बलभद्रने शत्रुके पुत्रका काम तमाम कर दिया, रथको चूर-चूर कर दिया । घोड़ेको फाड़ डाला । घवज फाड़ डाले । हाथीको मार डाला । अमरसुन्दरी आकाशमें नाच उठी । तब भस्तर बांधता हुआ शत्रु दौड़ा । वह योद्धा और हरिके बीच स्थित हो गया । उसने विद्याधर राजाकी भर्त्सना की ।

घत्ता—दोनोंके द्वारा जो विद्याओंका अपहरण किया गया है, ऐसे उस बहुलकी रणका कौन वर्णन कर सकता है ? ॥१५॥

१५. १. A हुवा । २. AP कि । ३. AP वोर । ४. AP आइओ । ५. A दाहिणल्ल । ६. A दुण्णओ ।

१६

जं विणयरविद्धु व विष्फुरिउ
सुहृदत्तदीउ णं संचरिउ
हृउ वईरि तेण मारिउ तुमुलि
ईह एउ एहु थिउ गंपि जहिं
तहिं अवसरि सीलु परिगहिउं
संभूयजिणेसरु सेवियउ
सहियईं चावीसपरीसहईं
अणयार महाकेवल्लिपवरु
ससहावे तिवुवणसिहरु णिउ
सो बुद्धु सिद्धु णिद्धूयरउ
मयरद्धयचावसमुल्लियं

पडिक्खे चक्कु मुक्कु तुरिउ ।
तं दत्तएण ह्थे धरिउ ।
गउ णिवडिउ सत्तमधरणियलि ।
महिं भुंजिवि कण्हु वि गर्येउ तहिं ।
हल्लिणा हियउल्लं णिगहिउं ।
तवतावे अप्पउ ताचियउ ।
महियईं चउकम्मईं दुम्महईं ।
जायउ कालेण अजरु अमरु ।
बीयउ परमेट्ठि हवेवि ठिउ ।
धुंक्खेवल्लं सण्णणामउ ।
णिसियं संछिंदउ आवलियं ।

घत्ता—भरहणमंसिउ महै देहाणियं ॥

सुकुसुमयंतउ कुसुमसराणियं ॥१६॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महामन्वमरहाणुमण्णिण्ण महाकहपुष्पदन्तविरहप
महाकव्वे मल्लिणाहपिउमचक्किणंदिमिउदत्तयवल्लिपुराणं णाम
सत्तसट्ठिमो परिच्छेओ समत्तो ॥६७॥

१६

जो दिनकरके विम्बके समान चमक रहा है ऐसे उस चक्रको तुरन्त चलाया गया मानो सुमटत्वका द्वीप ही संचरित कर दिया गया हो। दत्तने उसे अपने हाथमें ले लिया। बैरी नष्ट हो गया। उसके द्वारा मारा गया वह भयंकर सातवे नरक में गया। इस प्रकार यह जहाँ जाकर स्थित रहा धरतीका भोग कर नारायण भी वहीं गया। उस अवसरपर बलभद्रने शील ग्रहण कर लिया और अपने हृदयका निग्रह किया। उसने सम्भूत जिनेश्वरकी सेवा की और तपके तापसे स्वयंको सन्तप्त किया। उसने बाईस परिग्रहोको सहन किया। दुर्मद चार घातिया कर्मोंका नाश कर दिया। अनागर महाकेवली प्रवर समयके साथ अजर-अमर हो गये। अपने स्वभावसे वह त्रिभुवनकी शिखरपर ले जाये गये और दूसरे परमेष्ठी (सिद्ध) होकर स्थित हो गये। पापको नष्ट करनेवाले वह बुद्ध सिद्ध शाश्वतरूपसे केवलदर्शन ज्ञानमय हो गये। कामदेवके धनुषसे उल्लसित—

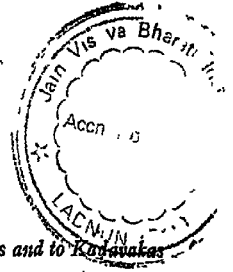
घत्ता—कुसुमबाणमयी मेरे शरीरमें लगी हुई पैनी तीरपंक्तिको हे कुन्दकुसुमके समान कान्तिवाले भरतके द्वारा नमनीय मल्लिनाथ काट दो ॥१६॥

त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महामन्व मरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका मल्लिनाथ पञ्च चक्रवर्ती नन्दीमित्र दत्तवलि पुराण नामका सद्सठवर्षी परिच्छेद समाप्त हुआ ॥६७॥

१६. १. A पडिक्खे । २. AP तेण वहरि । ३. A इह एम गपि थिउ एहु जहिं । ४. A जाम तहिं; P तेम तहिं । ५. AP तवभावे । ६. A दुम्मयई । ७. AP वुउ । ८. A णिसि पासिउ छिंदिउ आवडियं । ९. A महु । १०. A मल्लिणाहणिव्वाणमणं णाम सत्तसत्तिमो ।



NOTES



[The references in these Notes are to Samāhis in Roman figures and to *Kāvyaśāstra* and lines in Arabic figures.]

.XXXVIII

1. 12b भवइजसोहो, having the beauty of the rays born of भवइ, the lord of stars, or नक्षत्रस, 26 पयासवि, i.e. प्रकाशयामि, publish or manifest. Note v. l. पयासवि which is simpler to understand, but K sometimes shows preference to such forms; compare समासवि in the following line; as also इच्छवि and अच्छवि in 5. 10, 11; पद्विच्छवि & मोहच्छवि in 3. 8 below.

2. 1b कइवयदियहइ कतिपयदिवसान्, for some days, 2a णिविण्णर निविण्ण., dejected, णिविण्णोत्त i. e., निविनोद of K is an equally good reading and may mean काव्यकरणादिविनोदरहित, but I have adopted णिविण्णर in view of उब्बेर जि वित्थरइ णिरारिउ in 4. 9a below, and in view of the gloss. 9-10 खलसंकुलि कालि etc. भरत who lifted up सरस्वती, the goddess of learning, going down on an empty, very empty or dangerous path (सुण्णसुण्णवहि) or in the empty sky in these (bad) times, full of wicked people (खलसंकुलि), and full of people of bad character (कुसोलमइ), by covering her (सवरिय सवतां कृत्वा) by means of his विनय, modesty.

3. 1a अइयणदेवियव्वतणुजाए, i.e., by भरत who was the son of अइयण or ऐयण and देवियव्वा. 2b दुत्तियमित्ते, by भरत who was the friend of दुत्तिय, persons in distress. 3a मइ उवयारभावु णिव्वहणे, by भरत who accomplished, i.e., showered, obligations on me, i. e., poet पुण्णदन्त. How भरत put पुण्णदन्त under his obligations can be seen from MP I, 3-10 and Introduction to Vol I. pp xxviii-xxxii. 10 तुह सिद्धहि etc., why don't you milch the milk of nine sentiments (णव रत्त) out of the cow, viz., your वाणी or poetic power which is सिद्ध or accomplished to you or is at your command.

4. 7a राज राज णं सइहि केरउ, the king is as (fickle as) the red glow of the evening, i. e., lasting for a short time. 8b एककु वि पच वि रएवउ भारउ, to compose even one word is a heavy task. 10 जगु एउ etc., the world is always crooked (वंकउ) with the virtuous (गुणेण सह) as the bow is when strung with its string (गुण).

5. 2b-3a According to the poet, भरत excelled even king सालवाहण, i. e., सातवाहन, in that he (भरत) was a constant friend of poets (अणवरयरइयकइमेतिइ).

4a-b. The poet here refers to an anecdote that king श्रीहर्ष carried the famous poet कालिदास on his shoulders. Historically this reference is on par with several others, e. g., those mentioned in the भोजप्रबन्ध. The date of the accession to throne of king श्रीहर्ष, the patron of बाण, is 620 A. D., while कालिदास is certainly older than Aihole Inscription of 634 A. D., than बाण (620 A.D.) and above all than वत्सभट्टि's मन्दसोर प्रशस्ति of 473 A. D. 8a-b. Poet पुण्यदत्त who styled himself as कव्वपिसल्ल, was honoured by some and was despised by others saying that he was a dullard (बद्धु). 11 देवीसुय, a son of देवी or देवियन्वा of 3. 1a above, i e. भरत.

6. 3a-b. The poet here assures his patron भरत that his poetic genius manifests itself out of devotion for the feet of the Jinas, and not out of desire to earn his living (णरु णियजीवियवित्तहि). 10. करहु कण्ण कहकोडल्ल, place on your ear this ear-ring (कोडल्ल), viz., the narrative (कह, कथा) of अजित.

7. The narrative of अजित, the second तीर्थंकर, begins with this कडवक. I have already referred to the monotonous way in which lives of great men in Jain works are described (Vide MP Vol. I, p. 599) We first get some information of the previous birth of a Jina wherein he acquires the necessary qualifications of becoming a Jina in the subsequent birth. In the case of Ajita, he was विमलवाहन, a king ruling in the town of सुसामा of the वत्सदेश, situated on the southern bank of the river सीता in the पूर्वदिह of जम्बूद्वीप. There one day he acquires disgust for the worldly life, practises penance, cultivates the sixteen भावनास such as देशनविशुद्धि, secures तीर्थंकर नाम and गोत्र, dies by observing fast, is born in the विजय अनुत्तरविमान, has a life of 23 सागरोपम, there when only six months of this long life remain, सौधमेन्द्र comes to know that this अहमिन्द्र is to be born in अयोध्या in the भरतवंश as a son to king जितशत्रु and queen विजया, and orders कुबेर to bestow a shower of gold on this city. The six deities, श्री, ह्री, वृति, मति, कान्ति and कीर्ति, come to wait upon queen विजया. The queen then sees sixteen dreams, and on waking up describes them to king जितशत्रु who tells her that she would give birth to a जिन. When विमलवाहन completes his period of life as अहमिन्द्र he descends into the womb of विजया in the form of an elephant. Gods arrive on the scene and congratulate जितशत्रु. The Jina is born as त्रिज्ञानि i. e., possessed of मति, श्रुत and अवधिज्ञान, on the 10th day of the bright half of माघ. Gods headed by इन्द्र arrive on the scene once more, go round the Jina three times, salute the parents, and handing over to the mother अमायाबाल take the Jina to the मन्दर mountain, give him a bath, name him as अजित, offer him prayers, and, bringing him back to अयोध्या, hand him over to his mother. When अजित attained youth, he was married to thousand princesses. He was also crowned as prince, and enjoyed the earth for 19 lacs of years. One night prince अजित saw a meteor

falling, and gathering from it that his fortune was as fickle as the meteor, resolved to renounce the worldly life. Gods arrive on the scene once more and praise him for his resolve. He then placed his son अजितसेन on the throne, gods gave him a bath, and on the afternoon of the ninth day of the bright half of माघ he performed the केशलोच and took the दीक्षा. The hair of the monk अजित were picked up by इन्द्र in a golden plate and thrown in the क्षीरसमुद्र. One thousand princes renounced the world with him. In a short time the fourth knowledge, viz., मनःपर्ययज्ञान, was acquired by him. He took the vows with a fast of two days and a half (पछोपवास). He broke the fast the next day at अयोध्या at the house of king ब्रह्मा, who was graced by five wonders. अजित practised penance for twelve years, and on the 11th day of the bright half of पीप, he secured केवलज्ञान under सप्तच्छद tree. इन्द्र and other gods arrived on the scene, praised him and built a समवसरण. There the Jina sat on a सिंहासन, called सर्वभद्र, had with him all the eight प्रतिहार्य's, and then delivered a discourse. He had his गण or followers divided into 12 groups, viz., गणघर, पूर्वधारिन्, शिक्षक, अवधिज्ञानिन्, केवलिन्, विक्रियाद्भिमत्, मनःपर्ययज्ञानिन्, अनुत्तरवादिन्, आर्थिका, श्रावक, श्राविका and देव, देवी, तिर्यञ्च etc. With such सघ, the Jina wandered on the earth for a period of 53 lacs of पूर्व's less by 12 years. He then went to the सम्मेदशिखर, and having lived the life of 72 lacs पूर्व's, practised the प्रतिमास for one month, and attained emancipation on the forenoon of the fifth day of the bright-half of चैत्र. Gods worshipped him on this occasion, his body was burnt by अग्निकुमार, the ashes were respectfully collected by Indra and thrown into क्षीरसमुद्र.

I have given all the details of the life of अजित here. The same will be repeated almost in the same form with the change of names, dates etc., in the case of all the तीर्थंकर's mentioned in this Vol. and therefore will not be described any more. I am giving these details in the tabular form, to facilitate understanding.

7. 2a सोयहि दाहिणकूलि, we have a *v. l.* in K, उत्तर, but is corrected in the Ms. to दाहिण, perhaps on the strength of गुणभद्र's उत्तरपुराण, which reads :

सीतासरिदपान्नामे घत्साख्यो विषयो महान् ।—उत्तरपुराण, 48, 3.

where अपान्नाभाग means south. 8b हलियहि, by farmers.

8. 8a-b जसु सोहणो etc. God of love falls into background on account of the beauty of विमलवाहन, and therefore gave up his body and became अनङ्ग.

9. 2b पंचमहव्ययमायण, the mothers of five great vows, viz. the 25 भावनाs, five for each vow. 8a दशगणसुद्धिविणय, the sixteen भावनाs beginning with दर्शनविशुद्धि. For details see तत्त्वार्थसूत्र VI. 24. These भावनाs enable a soul to secure तीर्थंकर नामगोत्र.

10. 9a सो अहममराहिव, that अहमिन्द्र, who, in the previous birth, was king विमलवाहन. 11b कणयमयणिलयण, (अयोध्या) having houses of gold.

11. 1b माणवमाणिविषेत्तै, dressed as earthly ladies. 4a गच्छि ण धंतहु, even before the descent of the जिन, into the womb i. e., इन्द्र sent a shower of gold even before the जिन descended into the womb of queen विजया.

12. For sixteen dreams see my note in MP, Vol I, pp. 600-601.

13. 4a-b कुजरवेसे etc. The अहमिन्द्र, on completion of his period of life at विजयविमान, entered into the mouth of the queen in the form of an elephant just as the sun enters into clouds. 9-10. These lines mention the interval between the निर्वाण of ऋषभ and the descent of अजित into the womb of queen विजया, it is fifty lacs of crores of सागरोपमस.

14. 4-5 दसणकमलसरणच्चियसुरवरि etc. इन्द्र ascended his elephant ऐरावण on whose lotus-pond-like tusks gods were dancing. 8b सरसररि, talking full of devotion.

15. 6b मंतु षणवसाहा सजोइवि, using the मन्त्र "४० स्वाहा."

18. 9a वसुवइवसुमइकंताकत्ते, by अजित who was the lord of two wives, viz., wealth (वसुवइ) and the earth (वसुमइ).

19. 1b ईसमणीस समासमलीणी, the mind of lord अजित was completely engrossed in peace of mind (मम, उपशम, वैराग्य). 4b आउ वरिसवरिसेण जि खिज्जइ, man's life is lessened year by year.

20. 4a-b गइदुचरित्तकम्मसंताणइ संताणइ, for the continuation of his race which meant a series of acts (कम्मसंताण) such as गइ (देवमनुष्यादिगति) and misdeeds (दुचरित्त). The act of continuing the race involves a series of birth and death and several other acts which are misdeeds.

21. 6a-b कुसुमवरिसु etc. The five miraculous things are कुसुमवर्ष, a shower of flowers from heaven, सुरपट्टहनिनाद, beating of heavenly drums, वसुहारा shower of gold from heaven, चैलुकखेव, erecting of flags, and अहोदाण, divine sound praising the nobility of gift. Compare विवागसुयं page 78.

22. Description of समवसरण.

24. Description of eight प्रातिहार्य, viz., अशोकवृक्ष, दिव्य पुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामण्डल, देवदुन्दुभि and छत्र. 10-12 and the following कडवक mention the number of his गणस, for which see the Table.

26 1 a सिहरिहि i. e., on mount Meru. 5 b दडकवाडुऊजगजगपूरणु describes the process by which the soul of a Jina proceeds to सिद्धसिला.

XXXIX

The *sandhi* gives the story of *सगर*, the second *चक्रवर्तिन्* of the *Jainas*.

1. 2 *सगहाहिव*, i. e., *श्रेणिक*, the king of the *सग* country who asked *गौतम इन्द्रभूति* to tell him the lives of sixtythree great men, 4 a For *दाहिनयलि* AK originally read *उत्तरयलि* but K corrects it to *दाहिनयलि* which agrees with *गुणभद्र's* *उत्तरपुराण* —

द्वीपेऽत्र प्राग्निदेहस्य सीताप्राग्भागभूषणे ।

विषये वत्सकावत्या पृथिवीतगराधिप. ॥ 48. 58.

12 *घरचूलाहयणहयल*, the capital *पृथ्वीपुर* which struck or scratched the surface of the sky with the tops (*चूला*) of its houses.

2. 9 b *सिसुमोहणीच मुणिहिं वि दुवार*, affection to children is irresistible even to monks, 10 *जिणवरवयणु रसायणु*, the councillors of the king gave him the elixir, viz., the teachings of the *Jinas* to overcome his grief.

4. 3a *इयर वि*, i e *महास्तमन्त्री*. 5b *किञ्च दोहिं मि पडिबोहणिवधु*, god *महाबल* (formerly king *जयसेन*) and god *मणिकेतु* (formerly *महास्त मन्त्री*) made an agreement that whoever was born as a human being first, should be reminded by the other who continued to be *अमर* or god, of this fact.

5. 9—10 The fourteen jewels of the sovereign ruler.

6. 3a *जिव भरहहुं तिव सयरहुं जि होध*, i. e., *सगर* got as much wealth as *भरत*, the first *चक्रवर्तिन्*.

7. 1a *मयमउलवियणयण*, elephants have their eyes closed on account of their *मद*, rut or rutting season, 10a *रयणकेच*, i. e., *मणिकेतु*,

8. 9b *तरणिहिं कोनिकज्जइ हसिवि ताउ*, young women laugh at him and call him *papa*, father (*ताउ*, *तात*)

10 2a *देवसाहुं i e., मणिकेतु*, who, being a god, assumed the form of a monk.

12. Description of the descent of the *गङ्गा*.

14. 2a *विहिं ऊणी सट्ठि*, sixty thousand sons, minus two, viz, *भीम* and *भईरहि* or *भगीरथ* who alone escaped death. 9b *गउ आवइ णउ सरिसरतरगु*, waves of the river water, once gone, do not come back (*आवइ णउ*) .

16. 11a *दढघम्महुं पायतिइ*, at the feet of a sage named *दढघम्म* (*दृढघर्मन्*).

17. 6b *गउ जेण महाजणु सो जि पयु*, Compare : *महाजनो येन गत. स पन्याः*.

XL

1. *सासयसभवु*, source of eternal bliss (*शाश्वत + शं + भव*). *सभवणासणु*, one that puts an end to *सभव*, birth, i. e., *संसार*. 5b *पुसियवभहरिहरणयं*, one that refuted (*पुसिय*)

the doctrines (गय) of ब्रह्मा, विष्णु, and शिव, 20b असिवावसं. For note on this expression see MP. Vol I, page 653. 23 अमिउं, पियह कण्णजलिहि, drink the nectar, i. e., my poem, with the अञ्जलिं of your ears. Compare कर्णाञ्जलिपुटपेयं विरचितवान् भारताह्वयममृतं यैः 1 तमहमरागमकृष्णं कृष्णद्वैपायनं वन्दे.

4. 10b सत्या i. e., स्वस्या, quiet, peaceful, happy.
5. 14a जितसत्सुए, son of जितशत्रु, i. e., अजित, the second तीर्थकर. 18b अशरिणा, by इन्द्र.
6. 4a सईइ सईं धारियउ, held or picked up by शची herself.
8. 12 किं जाणहं सोसिउ उवहि, what do you think? The ocean became dry as gods were carrying water for the bath of संभवजिन.
9. 13 पइं मुइवि, त्वा मुक्त्वा, वर्जयित्वा, except yourself.
11. 7a कत्तियसियपक्खि i. e. कार्तिक + असित + पक्षे, कार्तिक कृष्णपक्षे, Compare गुणमद्र 49. 41 जन्मसं कार्तिके कृष्णचतुर्थ्यामिपराह्णः. 11 जाणं ज्ञेयपमाणं, his knowledge which was co-extensive with ज्ञेय, knowables, i. e., the केवलज्ञान.
13. 5a अदिउदमउडसिहुरुद्धरिउ, coming out from the top of the crown of यक्षेउ, i. e. कुवेर.
14. 10b दहगुणिय तिण्णि सहस, i. e., thirty thousand. गुणमद्र however mentions twenty thousand.
15. 1a भवियत्तिमिह, ignorance of the भव्य persons. 14 सिगारंगह i. e., शृङ्गारङ्गस्य, i. e., शृङ्गारभूमेः.

XLI

1. 1 णिदिदियइ णिवारउ, one who wards off or controls the base, निन्द, sense-organs, i. e., a तीर्थकर, here अभिनन्दन 18 जीहासहवेण विणु, in the absence of one thousand tongues. The फणीस्वर has one thousand tongues and hence capable of praising all aspects of a तीर्थकर, but पुण्वन्त. the poet; has only one tongue and hence unable to do justice to the qualities of a तीर्थकर.

3. 1b सणियउ वियरइ, walks gently so as to cause no injury to a living being. 5b तिण्णि तिउत्तरसय, the expression is elliptic, but clearly refers to 363 doctrines of heretics, as the *lection facilior* of AP indicates.

5. 7b सव्वु सवारिउ, he accomplished it completely.

6. 12 आसणथणहरणि, by the shaking of his seat, इन्द्र learnt, on account of the shaking of his seat, that a जिन was born.

8. This कडवक gives the list of ten deities invoked at the time of the bathing of a जिन. These deities or लोकपालs are: इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋत, वरुण, वायु, कुबेर, रुद्र, चन्द्र and फणीश; they are described here with a specific mention of their vehicle (वाहन) weapon (प्रहरण), wife (प्रियरमणी) and a characteristic feature (चिह्न), as line 23 says.

12. 13 भयलज्जामाणमयवज्जियत् जिणवत् पेमसमाणत्, 'the vow of a जिन' is like the vow of love or behaviour of love, in as much as it ignores or is destitute of fear, shame, pride and self-respect. Just as a man in love ignores the feelings of fear etc., so a जिन ignores these feelings

17. 9a जीवपक्षितवदिगाहपंजर, (the dead body मुक्कलेर्वर) was a cage to catch the bird, viz, the soul.

XLII

1. 18 समासद् वद्वयत्, the व्यतिकर, story or narrative is being abridged (समासद्, समस्यते)

2. 4b पोरयरासिपिजरियकुजरवडे (in the country) where the herds of elephants were reddened with the pollen of lotus flower. 5a दुक्खणिगमण etc. 'The region of पुक्कलावती was so charming that it bore the comparison with वनश्री from which the god of love, रहरमण, the lord of रति, would depart (only) with difficulty. 10b रमद् वदसवणो आवणे आवणे, the lord of wealth, वैश्वण, i. e., कुबेर, took delight in every shop, as it had plenty of wealth. 15 उवसमवाणिण, with the water (वाणिज, पानीय) of tranquility of mind (उवसम, उपशम) 16 भोयतणेण, with the grass (तण, तृण) enjoyments (भोय, भोग) .

3. 17b हरिसुद्धदेहेण, with his body filled with horripilation (उद्ध, ऊर्ध्वरोम) due to joy.

4. 15a हूए हरिभणणे, when the orders of हरि, i. e., इन्द्र, were obeyed, i. e., when the town etc was decorated at the command of Indra. 17 अणवदणिण अच्चे, even before the arrival or birth of the अर्हत्.

5. 21 झुल्लंतवडावहिं, with flags (वडाव, पताका) fluttering (झुल्लत) .

7. 6b णिन्विषकामावहो, of the जिन who continually or uninterruptedly destroys the god of love or passions 10b जडकसरदुग्गेण, hard to be practised by dullards and mischievous people. कसर literally means a mischievous bull, गिरिकककरि पडद् etc. A wretched camel throws itself or wanders over a rugged cliff (गिरिकककर) for the sake of sweet (महुकारणि) herbs where they cannot be had.

9. 5b इणे पच्छिमत्थे, when the sun turned towards the west, was about to set.

12. 15b घडिमालाहयहं, the पूर्व- periods counted by the series of घटिका that elapsed. Compare हयदियह्वाडीहं in 5, 14a.

XLIII

1. 5a णियायममग्णिबोद्ध्यसीसु, who directed his disciples (सीस, शिष्यः) on the path prescribed by his holy-texts (निज्ज + आगम्) or scriptures. 7b गुलकदलु bulblike (tender) neck.

2. 6a णीड, nests or houses. 10a आविणि (भामिनी), women. 13 होउ पहुचइ, पूर्णं भवतु, be accomplished. पहुचइ normally means प्रभवति, but the gloss explains it as पूर्णं. 14 ज पुरउ etc. If the town or capital is abandoned, then one can secure emancipation quickly. If the king leaves his kingdom he can secure release from संसार.

4 1a-b गिहीगुणठाणवएहि विमीस, ... महोवहि वीस, the period of life of the अहमिन्त्र was twenty सागरोपम (महोवहि) mixed with or plus (विमीस, मिश्र), eleven which is the number of the प्रतिमास of a householder, in all thirtyone सागरोपम.

8. 10b दुमाणवु, wretched man.

10 4b The line should be rather read : सववुसु वेरिसु णिससमाणु, always equanimous towards his relatives and towards his enemies.

XLIV

3. 8a परमारिसरिसहणवजायउ, born in the race (अणव अन्वय = वंश) of रिसह, the first तीर्थंकर who was परमारिस, परमर्षि, the great sage.

6. 11 परिमाणु here stands for परमाणु, atoms. All atoms or as many atoms as exist in the universe, were used to make up the body of the lord सुपावर्ष.

7. 5a उडुपल्लट्टउ, the falling of stars or meteors, which indicated the fickleness of संसार.

9. 5b जलहिमाणि किं आणिज्जइ षडु. Can we use or bring an earthen jar to measure (the waters of) the ocean ?

XLV

1. 17b वयणणुवुपलमालइ, by means of a wreath of fresh lotus flowers, namely, my poetic composition (वयण, वचन).

2. 16b कलहोयमइयाउ, made of gold (कलवौत).

3. 12a-b तूररवें दिस हम्मइ, the quarters (दिस, दिशा) were being beaten, i. e., filled, with the sound of trumpets (तूर, तूर्य); कण्णि वि पडिउ ण सुम्मइ, even if a

sound reaches our ears, it is not heard or understood owing to deep sound of trumpets.

6. 9b सरसेणा, army of सर (स्मर), god of love.

13. 13-14. The meaning of the lines is: पद्मप्रभ was born in the वैजयन्त heaven, and had a white complexion (सियम्) and very bright lustre. On seeing this lustre of पद्मप्रभ, the wife or wives of पुष्पदन्त, i. e., of चन्द्र and सूर्य, felt that their lustre was nothing before his lustre and thus became blackened.

XLVI

5. 9b सासिर्हि व चासपङ्कणर्हि, like crops (सास, सस्य) sown in series of plough share marks (चास). चास is a desi word meaning a line drawn by the plough-share (हलविदारित भूमिरेखा) and is still preserved in Marathi in the form of तास.

6. 12. जिणतणुहि कतिइ पयडु ण होंतउ, the milk which was used for bathing the जिन, could not be distinguished as its colour was identical with the complexion of the जिन; an instance of मीलितालकार.

11. 5a बलदेवह अग्यइ देहि तिण्णि, put the figure 3 after 9; बलदेवस are nine. The whole passage gives the figure 93 which is the number of गणधरस of चन्द्रप्रभ. 10-11. These lines mention the eight प्रासिहार्यस such as पिंडीद्रुम, i. e., अशोकवृक्ष. The position of these प्रासिहार्यस in the middle of the list of the followers of चन्द्रप्रभ is unusual.

XLVII

4. 3a वच्छु जहि रोसहुं, he avoids places where there is the tree (वच्छ, वृक्ष) of anger. The variant in P, 'वासु' is clearly an easier substitute for वच्छु.

6. 9a-b The child, looking at its mother and also at her reflected image, was confounded and felt it had two mothers (दोमायउ द्वैमातृकम्) and so was unable to decide which was his real mother.

XLVIII

1. 19 गुणभद्गुणीहि जो संयुउ, he i. e., the tenth तीर्थंकर who is glorified by the revered sage गुणभद्र. We know that गुणभद्र is the pupil of जिनसेन the author of the Sanskrit ओदियुराण. जिनसेन's work was continued after his death by गुणभद्र, which is called the उत्तरपुराण. The expression गुणभद्गुणीहि may also be interpreted "by pious monks possessing auspicious qualities."

4. 14 त पट्टणु कचणु षडिउं, that city was made or built of gold. कंचणु stands for काञ्चनं, i. e., काञ्चनमयम्. AP read कंचणषडिउं as the copyists did not understand the meaning above of कंचणु.

9. 1a-b तं सद् etc. The line means: Even though the water used for the bath of शीतलनाथ flowed in a downward direction, it led the pious people in the upward direction, i. e., to heaven.

10. 5b उत्ताणान्गु गज्वेण जाह, a man, out of pride, goes or walks with his face or head up or erect. A proud man walks with his head stiff and erect.

13. 1b संभरद् विरुद्धं जिणं चरित्तु, the gods brought to their minds the (apparent) contradictions in the life of the जिन. In the following lines we get a reference to these contradictions. For instance, the जिन is called गोपाल (cow-herd boy, lord of the earth) and is very terrific to his own enemies (पियादिचंद्र)

18. 5a-b. He who makes gifts of cows etc., goes to विष्णुलोक in golden विमान, and enjoys (माणद्) heavenly pleasures. 11. सुज्जाह पिपलफंसणिण, is purified by touching the पिपलवृक्ष.

20. 14 सद् विरद्वि कब्बु, मुग्धसालायण himself composed some verses glorifying the gifts of cow etc. and brought them to the king. The king felt that these verses were as authentic as the Vedas.

IL

1. 15 कित्ति वियेभउ महं जणमेहि, may my fame spread over the house of the whole world. The poet is conscious of his poetic powers which, as he says, would bring him a world-wide name.

3. 3b गुणदेवहं भवदेवहं ईसर, the अनन्तजिन is said to be the lord of 'गणधर' and also of gods by birth such as इन्द्र etc.

5. 9 तां गज्जह् etc. Owing to the shower of gold in the city it was very difficult for people to distinguish the night from the day. The people therefore called that time to be the daytime when lotuses in ponds bloomed.

L.

This samdhi and the two following narrate the story of the first वासुदेव (त्रिपुष्ट), first बलदेव (विजय) and first प्रतिवासुदेव (अश्वप्रीव) of the Jain Mythology. In order that the reader should understand the background of the friendship between त्रिपुष्ट and विजय, and the enmity between त्रिपुष्ट and अश्वप्रीव, the poet gives us the narrative of the two previous lives of all these three.

1. 5a गोजल्पयचारामायपहिद्, where travellers were made to drink to their satisfaction (घाय) the streams of milk of cows. 11a जडपो i. e., जनी which is

a proper name here. 15 खलमित्तसणेह, friendship with a wicked friend which lasts only for a short time.

2 5a णिमोसइ ण वाय, words will not come out. The root णिम् here and in 7b below corresponds to णिघणे in Marathi and may be traced to निर् + गम् or गा.

3. 5b तरइ swims. The root तर् to swim is preserved in Marathi in this sense. There is another root तर् in Prakrit which means to be able (शक्).

4. 1b वणुस्साहिलासं should have been वणस्साहिलास, the desire to have the garden. वणुस्स is found in all the Mss. and hence retained. Or, are we to take वण + उस्स (उत्सुक) + अहिलासं, keen desire for the garden ? 12b तायाउ आराहणिज्जो, to be respected after (the death of) my father. You deserve the same respect as my father.

5. 13 दुग्गु भणेवि, saying or thinking that the stone pillar was like a fortress (दुग्ग). वहरिउ i e. विशाखनन्दी.

8. 6a छइउ (छादित) defeated.

9. 10 तुज्जु हसियहु करमि समाणउ, I shall equalize, i e., repay your laugh which ridicules me and insults me.

10. 8b अवस i. e., विशाखनन्दी.

LI

1 6a जायासीघणुतणु, They both (विजय and त्रिपुष्ठ) grew to the height of 80 bows 9b विहि पक्खहि ण पुण्णिमवासउ, like the day of the full moon which had on one side the bright half and on the other side the dark half, corresponding to विजय बलदेव who is white and त्रिपुष्ठ वासुदेव who is dark in complexion.

2. 11a-b हल्लहह, दामोदर Please note that बलदेव and वासुदेव will all be referred to by their various synonyms such as सीरि, हली, लंगलहर, सीराउह etc. for बलदेव, and दामोदर, माघव, श्रीवत्स, अनन्त, सिरिरमणीस, लच्छीवइ, (लक्ष्मीपति) दानवारि, दानववैरिन्, विट्ठरसव, विस्ससेण, etc. for वासुदेव, similarly अश्वघ्रीव is mentioned under हयग्गीव, हयकठ, तुरगगल etc.

5. 4b पुयवणहि, note ऋ in पुय which has come in for प्रिय probably by extending the application of हेमचन्द्र's rule: अभूतोऽपि ऋचित्, iv. 399.

6. 13. जसु जसु, यस्य यश. whose fame.

7. 8b मृगवइयहि जाए, by the son of मृगावती, i e., by त्रिपुष्ठ 9a सचालेवी, the potential passive participle. Compare also पालेवी जणेवी, परिणेवी etc. हेमचन्द्र under iv. 438 however gives एवा as substitute for तव्य in अपभ्रंश and does not mention एवी.

9. 13-14 गियजणविद्गुण etc. The lines mean that अर्ककीर्ति understanding the signs of the brows from his father prostrated before king व्रजापति and thus saluted him.

10. 1a हरिवर्लेह, by हरि i. e., त्रिपुष्ट, and by बल i. e., विजय. ससुरर (स्वसुर.) the the (would-be) father-in-law of त्रिपुष्ट.

11. 12-13 पुणु भणित etc. They again said to अणत (त्रिपुष्ट): Let us see, lift up the slab of stone, and show to us whether you would be the killer, (कयतु, कृतान्तः) of ह्यकंठ (अश्वघ्नीव) or no.

15. 14 अह सो सामणु मणहु ण जाद, now he cannot be called an ordinary man (सामण, सामान्य).

LII.

1. 2 चिरभववद्भरवु, under the influence of enmity of the previous birth, when both of them were विश्वनन्दि and विशाखनन्दि. 4 तिखंडलोणिपरमेसरे, the lord of the earth with three continents, i. e., अर्धचक्रवर्ती. अश्वघ्नीव was the अर्धचक्रवर्ती before त्रिपुष्ट.

5. 4b विज्जाहरभूयरभूमिणाहु, the lord of the विजाघरभूमि and भूचरभूमि, i. e. the अर्धचक्रवर्ती, अश्वघ्नीव.

7. 3a मा रसस काउ चप्पिवि क्वालु, a crow sitting on the head of a person and crowing is considered to be an indication of approaching death

8. 2 करगय etc., why do you require a mirror to see a golden bracelet which is put on your hand? A famous लोकोक्ति 5a भरहहु लगिगवि, from the days of king भरत, the first चक्रवर्तिन्. 11 रणु बोललंउहु चगउ, the talk of fight is pleasant. Campare युद्धस्य कथा रम्या.

9. किंकर गिहणंतहं णत्थि छाग, there is no charm or pleasure in killing the servants. अश्वघ्नीव was glad to fight with त्रिपुष्ट as he thought that there was no pleasure in fighting with the inferior or low people. 15 सारयु is interpreted as बलवत् in T. but it appears that त्रिपुष्ट, being a वासुदेव, should have a bow made of a horn. विष्णु is called शार्ङ्गधर in Hindu Mythology. The other emblems of विष्णु in Hindu Mythology such as पाञ्चजन्य, कौस्तुभमणि, असि, कौमोदकी गदा, गह्वज्ज्वल and लक्ष्मी, are also mentioned as emblems of वासुदेव in Jain Mythology and hence I think that सारयु वणु should also mean शार्ङ्ग वणु.

10. 4 a-b This line mentions the weapons of बलदेव, they are: लाङ्गुल, a mace, मसल, a pestle, and गदा called चन्द्रिगा.

11. 2 खगाह्विो i e. गरुड, eagle, who is the emblem on the banner of वासुदेव or विष्णु. 8a णिच्चिच्चुच्चं, 'thick and high'. This expression, according to T seems to come from निस् and उच्च. It is likely that it can also come from नित्य, निच्च and उच्च + उच्च of which the second उच्च becomes उच्च. The meaning would be 'hair standing on end (रोमंच) which remain for ever high.'

12. 8a-b अडु. etc. A warrior says : Even if my head falls, my trunk would kill the enemy and dance.

15. 2 कण्णाहरणकरणरणलग्गह, the armies that were engaged in a fight which was due to the giving away in marriage of the girl स्वयंप्रभा. 12-13 These two lines compare the two armies to loving couples, मिट्टणइ, मिथुनानि, engaged in love-sport

16. 2 सिरिहरिमस्सु, who is mentioned above in LI. 16. 9 b, as the minister of king प्रजापति. 25 माहववलवइणा, i. e., by हरिमस्सु.

17. 14b णं अट्टमउ चडु, the moon in the eight place in the horoscope indicates death. For a different view see मृच्छकटिक VI. 9:

कस्सट्टमो दिणअरो कस्स चउत्थो अ वट्टए चदो ।

where the moon in the fourth place is said to indicate death.

19. 3b णीलंजणपहदेवीसुएण, i e., by अश्वघ्रीव.

20. 21b मीमुहउज्जिअउ, free from fear.

21. 14b सिवकामिणीइ, by beloved, viz., the female jackal (शिवा). 16 मोल्लवणु, price or return.

24. 15b कुलालचक्कु, the wheel of the potter. When the discus of अश्वघ्रीव did no harm to त्रिपुष्ठ and remained on his hand, अश्वघ्रीव said that it was like a wheel of the potter, quite useless in warfare, although त्रिपुष्ठ and his party valued it so much. अश्वघ्रीव abuses त्रिपुष्ठ by saying that a beggar may value a lump of oil-cake as a precious article of food, which would satisfy his hunger, but others do not think so.

25. 9 कामिणिकारणि कलहसप्तो, engaged in fight or battle for the sake of a lady (स्वयंप्रभा).

LIII

5. 5b कजवधदो सरम्मि दिण्णपोमिणीरई, the sun who is the friend of lotus flowers and gives delight to lotus-plants in the lack

6. 8b तित्थणाहसंखम्मि रिक्खए, on a नक्षत्र which is twentyfourth, i e शतमिया or शततारका.

8. 5a अण्णहुं पासि ण सस्यविही कस्यइ सुणइ, he does not study the शास्त्रs with any teacher other than himself. The तीर्थंकर is self-enlightened and does not require a teacher.

13. 1a ससयभिसहइ, with the शतभिषानक्षत्र, i. e., शततारका नक्षत्र.

LIV

1. 14-15 The lines mean: If I (the poet) compare the face of गुणमञ्जरी to the moon, there will be no exhibition of my poetic powers, I would not be called a poet; for, the face of गुणमञ्जरी is not soiled or darkened by the deerspot as the disc of the moon is, nor is there reduction in size nor crookedness as it is in the moon.

3. 2 इह कल्लोलनिर्वह etc. The poet says that friendship between विन्ध्यशक्ति and सुयेण was so fast and intimate that it was impossible to draw any distinction between them; for who will be able to differentiate the ocean from a mass of waves ? The तादात्म्य or identity between समुद्र and तरङ्ग is an accepted thing with philosophers.

8. 7b The birth of बलदेव and वासुदेव is heralded by the sun and the moon seen in dreams by their mothers

8. 9b दीयत्त उववादेविद् ददभुत्. The name of the mother of द्विपृष्ठावासुदेव is उववादेवी as given here, गुणमद् however gives it as उवा. Compare:

तस्यैवासौ सुषेणाहयोऽन्युवायामात्मजोऽजनि ।
द्विपृष्ठास्थस्तनुस्तस्य चापसप्ततिसमिता ॥ 58. 84.

9. 10b गलियसुयइं सुहइहि गयणइं, I shall kill अचल and make his mother सुयद्दा shed tears.

12. 10-12 रायत्तणु etc. There is a pun on राय which means राजन् as well as राय.

17. 8a रासहू होइवि etc. तारक compares द्विपृष्ठ to an ass and himself to an elephant 10a गोवालबाल, the son of a cowherd boy, is an epithet of वासुदेव (कृष्ण), who, according to Hindu Mythology, lived and was brought up among the cowherds.

LV

3. 6b तहू गुण किं अण्णइ खडकइ, how can खण्डकवि (पुष्पदन्त) describe his qualities ? खण्ड means broken, incomplete, which is one of the nicknames of पुष्पदन्त.

7. 8b गायत्रय, नाकभवाः i. e. gods. 16 विमें जित् सियालउ, the season of summer (विम, शीतल) defeated winter (सियाल, शीतकाल). This was a निमित्त for विमलनाथ to realize the impermanence of the world.

LVII

1. 6a वणु सुरवणु जिह तिह यिरु ण ठाइ, wealth, like the rainbow, does not remain perpetually with a person. 7a भायर गियभायहु अवयरति, brothers misbehave (अवयरति, अपचरन्ति) with their brother.

2. 8a-b चर etc. चर, गमण, छेज्ज and कहुवण are different types of the play of dice which are a means of attacking the opponent and taking charge of his possessions. 9b एक्कं उड्डिउ गियरज्जु ताम, one of them (सुकेतु) lost his kingdom. Note the use of उड्डिउ which word, in the form of उड्डवणे is preserved in modern Marathi.

6. 4a महुराउ मणहि महुघोह्ठ काइ, how can you call king मधु a mouthful of honey ? How can you speak of king मधु in such light terms ? 7a नीलणियासणेण, by वमवलदेव who wears blue clothes. बलदेव is a नीलाम्बर. Compare नीलाम्बरो रीहिणेयः कालाङ्को मुसली हली in अमरकोश

7. 10a उविट्टु + उप्पणरोसु, उविट्टु + उप्पणरोसु, उपेन्द्र i. e., स्वयम् (वासुदेव) got angry. 11 a-b जइ लोहित etc. I swear by the feet of (my elder brother) वम, if I do not make the goblins drink the blood of king मधु. पायमि stand for पाययामि, make one drink, a causal form of पा to drink.

8. 1 वसुहासुउ, the son of वसुधा, i. e., स्वयम् The name of the mother of स्वयम् is पृथिवी as we see from 4. 7b above; here the poet uses a synonym वसुधा for पृथिवी.

9. 4b, 6b सुदरिहि तणुएण i. e. by मधु. 5a-b-6a विउसयणकयवयणविणुएण, by king मधु who was glorified in compositions or poems (वयण, वचन) composed by a body of learned men (विउसयण, विद्वज्जन). 36 महुमहमुक्के चक्के, by the discus discharged by the enemy of मधु. महुमह or मधुमयन is one of the names of विष्णु in Hindu Mythology.

LVIII

This samdhi gives the narratives of three persons, संजयन्त, मेह and मन्दर with their several past lives. Of these मेह and मन्दर are the two prominent गणवर of विमल. The table given below records chronologically the different previous births of persons mentioned in the narratives:—

(a) संजयन्त—(१) सिंहसेन; (२) अशनिघोष हस्ती; (३) श्रीधरदेव; (४) रक्षिभेग; (५) अर्कप्रभ; (६) वज्रायुध; (७) सर्वार्थसिद्धि अहमिन्द्र; and (८) संजयन्त, It is in this birth that he attained emancipation.

(b) मेरु—(१) मधुरा; (२) रामदत्ता, (३) भास्करदेव; (४) धीधरा in देवलोक; (५) रत्नमाला in the अच्युतस्वर्ग; (६) वीतभय; (७) आदित्यप्रभ; and (८) मेरु who is the गणधर of विमल.

(c) मन्दर—(१) वारुणी; (२) पूर्णचन्द्र; (३) वैड्यदेव; (४) यशोधरा; (५) स्वक-प्रभ in कापिष्ठस्वर्ग; (६) रत्नायुध; (७) विभीषण; (८) द्वितीय नारकी; (९) श्रीधामा; (१०) ब्रह्मस्वर्गस्थित देव; (११) जयन्तवरणेन्द्र, and (१२) मन्दर who is the गणधर of विमल

There are two other prominent persons mentioned in the narrative; they are : (1) सत्यघोष or श्रीभूति, the minister of सिंहसेन who became अगन्धनसर्प, चमरमृग, कुक्कुटसर्प, तृतीय नारक, अजगर, चतुर्थनारक, त्रसादिभद्र, सप्तमनारक, सर्प, नारकी, मृगशृङ्ग and विद्युद्दंष्ट्र; (2) भद्रमित्र the merchant who became सिंहचन्द्र, प्रीतिकर देव and चक्रायुध.

1. 5b चिञ्जद् comes from चि to pluck, to collect, and then eat. The T gives भक्ष्यते which is only a secondary sense of the root.

6. 10 देवदिवायराहु, of god आदित्यप्रभ who in subsequent birth became मेरु.

9. 11a विणिण वि एयद्, i. e., यज्ञोपवीत as well as मुद्रिका.

14. 1a णावद् वाहणि, like wine.

15. 6a तुलिहि, on a mattress made of cotton (तुल).

18. 4b कम्मरज, a labourer.

LVIII

9. 1a पुणु तद् कद् etc. The line means : Now for the sake of अनन्त (तद् कद्, तस्य कृते) the royalty (राज्यश्री) suffered pangs of love; she fainted (but was brought round (सञ्चयण कय) by fanning) by means of chowries

11. 8b मिहिरब्रह्मिह्य, superior in lustre (मह, महस्) to the sun (मिहिर).

13. 12a अमवासाणिसियहि, on the night of अमवास्या. Both गुणभद्र and पुण्यदन्त do not mention the month which is चैत्र. Probably we are to borrow the name of the month from 11.1a.

16. 9b महसूयणु i. e. मधुसूदन the Mss use promiscuously महसूयणु and महसूयणु. In Hindu Mythology मधुसूदन is the name of विष्णु. Are we to take महसूदन to be the name, which is confounded with मधुसूदन ?

21. Note the दाप्रयमक or शृङ्गलायमक throughout the कदम्बक.

22. 5b रहचरणु i. e. चक्र, the discus. 13a सरसललि रहंगसयाइं बलिय, there are hundreds of रथाङ्गड, i. e., चक्रवाक birds in lakes but can they catch a maddened elephant ?

LIX

4. 7 सिविणय देतु सुहुं, giving delight to men who were modest or humble though rich. Note that the word सिविणय has no case-ending of the Genitive. See हेमचन्द्र iv. 345.

6 3a पुसरिक्खि छणससिदिवसि, there is no mention of the name of the month here. Elsewhere, i. g. in गुणभद्र, the month of माघ is mentioned, but we cannot have पुयनक्षत्र on the full-moon day of माघ. The month therefore must be पौष. Is the confusion due to the difference in the method of naming the months in the northern and southern India ?

14. 1a सयडगु (शकटाङ्ग), the wheel, i. e., discus, the weapon of a चक्रवर्तिन्.

19. 10 विसरिसजलझलञ्जलं, the dripping of dirty rainwater.

LX

2 5b जहिं मणियरहिं ण दिट्ठु पयगउ, where the sun (पर्यगउ, पतङ्गः) could not be seen because of the rays of gems. The gems were so numerous and vast that their rays even eclipsed the sun,

3. 5b कोडिसिलासचालणववलहु, the line refers to the exploit of त्रिपुह the first वासुदेव who lifted up the कोटिसिला See LI. above,

4. 13b पाहुडगमणाचमणपवाहें, by a series of gifts passing or exchanged between विजयभद्र and अमितलेजस्. 14 णिम्मित्तिउ, नैमित्तिक, an astrologer.

5. 9b हुउ पव्वइउ समउ हलीसहु, when हलीस, i. e., विजय बलदेव renounced the world, I (the Brahmin astrologer says) also became a monk with him.

6. 11a मामसमण्णिर, given by my father-in-law (माम). Even in modern Marathi the father-in-law is called मामा.

8 2a अमोहणीहु, the name of the astrologer. 7b जेणुवरसि by which you will survive the calamity.

11. 3b णिवद्धणाइं, the AP reading णिवंधणाइं is easier. The meaning of the expression is 'binding tissues. 9b वारउ turn. The word वार, meaning a turn, is preserved in Marathi.

18. 5a हरिसुज, i. e., श्रीविजय the son of त्रिपृष्ठवासुदेव.
 29. 10b समसमयिकलि, समतया स्वमतेन वा चामितः कलिः येन, who, by his equanimity or preaching, settled the quarrels of people.

LXI

1. 9a-28b These lines give the list of विद्याs acquired by वमिततेजस.
 12. 6a, दिर्लिलदिलि, हे बान्ने. दिर्लिलदिलि is a देश word meaning a boy & दिर्लिलदिलिवा a girl. See देशोनाममाला V. 40
 15. 13 आर्जुनियारिपसह, who stopped the progress of his enemies.
 21. 11 घणवाहणह, i. e., मेघरथस्य.

LXII

2. 2a गरुडेण वि जिप्पइ एहु ण वि, this cock cannot be defeated even by an eagle.
 5. 10b जाउडयजडिलमडिययणिहि, whose breasts were decked by a thick paste of saffron.

7. 9a to 10. 2b We have here a description of the whole earth with its continents as seen from the sky.

17. 12b पक्खे (पक्षिणा), by the bird. Are we to have the word as पक्ति which would be the form of the Instrumental sing ?

LXIII

2. 7a एरादेविह, elsewhere the name of the mother of शान्ति is given as बइरा as for instance in 1. 16 and 11. 2b.

5. 5-6 These lines give the list of 14 gems which, as a चक्रवर्तिन्, शान्तिनाथ possessed.

11. 1-7 These lines give the previous births of शान्तिनाथ and चक्रायुध. शान्ति had in all twelve, viz., श्रीषेण, कुरुनरदेव, विद्याधर, देव, बलदेव, देव, वज्रायुध, चक्रवर्तिन्, देव, मेघरथ, सर्वार्थसिद्धिदेव, शान्ति; चक्रायुध also had the following : अतिन्दिता, कुरुनर, विमलप्रभदेव, श्रीविजय, देव, अमन्तवीर्य, वासुदेव, नारक, मेघनाद, प्रतीन्द्र, सहलायुध, अहमिन्द्र, दूढरथ (मेघरथभ्राता), सर्वार्थसिद्धिदेव, चक्रायुध.

LXIV

1. 7b जो ण करइ करि कत्तिय कवालु, (कुथु or a तीर्थंकर) who does not hold in his hand human skull (कपाल) and (tiger's) skin (कृत्ति) as god शिव does. The तीर्थंकर is thus far superior to god शिव.

2. 8b वयविह्वलोग्गु विष्णु वि ण लेइ, while begging alms he does not accept things which, for his vows (व्रतविधि) he cannot accept.

8. 1b गियजम्ममासपक्खतरालि, on the same day, month and fortnight on which he was born, i. e. on the first day of the bright half of वैशाख. 2b कित्तियणक्खत्तासिइ ससकि, when the moon was in conjunction with the नक्षत्र mentioned (कौत्तित) or कृत्तिका.

LXV

3. 4b पट्टणु रयणकिरणअइसइयउ, the town that excelled in brightness or was extremely bright owing to the rays of gems.

4. 9b-10b वरिसकोडि सहयेण विहीणइ पल्लवउत्त्यभायपरिमाणइ, when after the निर्वाण of कुन्हु one-fourth of the पल्पोपम minus one thousand crores of years passed

5. 5b दहदहवणुत्तणु, with his body twenty शरसन in height, गुणभद्र however mentions thirty शरसन as the height of शर. Compare: विद्यावापतनुत्तेष चारुनामी-करच्छवि—65. 26. Which seems to be more probable.

9. 1-8 Note the play on the term शर or शह here.

11. 8a णिउ जिणवररिसि सोत्तिउ तावसु, the king became a Jain monk, while the Brahmin became a तापस ascetic, i. e., an ascetic following the teaching of the Vedice religion, particularly the teaching of devotion to god शिव.

12. 6-7 णइइ देउ etc. These lines give the characteristic behaviour of god शिव, who performs a ताण्डवनृत्य, sings, has a woman or women (पार्वती and गङ्गा), beats the डमरु, burns त्रिपुर, and kills demons. The Jain monk says that such a godhead will not save one from ससार.

13. 6b तावसमासुरवासि रसति, the pair of sparrows, having formed their nest in the beard of the ascetic, used to warble.

16 1-2 These lines give the origin of the name कण्णकुञ्जणयरु, the city of कान्यकुब्ज, because the girls in which, having refused to marry the sage, became dwarfish owing to his curse.

24. 1b खत्तिय सयलु वि छारु परत्तिवि, having burnt to ashes all the दृन्द्रिय. परत्तिवि comes from परत्त a देस root which is preserved in modern Marāthi as परतणें.

LXVI

1. 9a विहवत्तणहुक्खोहरियआय, whose beauty or spirit was soiled by sufferings of widowhood (विहवत्तण, विववात्व). 10b पर ताउ ण पिच्छमि, but I do not see or know my father (सहस्रवाहु).

5. 5b कोसलं पुरं, i. e., साकेत which is the capital of the कोसल country.
6. 3a परमेसद, i: e. सुभीम, who was destined to be a चक्रवर्तिन् later, 10b एतं जि, this very earthen plate filled with the teeth of his father (सहस्रबाहु), which turned into a discus (चक्र).
10. 10a सद्भन्तरि (श्रमन्तरे), in a ditch, i. e., in a hell.

LXVII

4. 6a हिरण्यगन्धो, i. e., a जिन. The term हिरण्यगर्भ is used to designate god ब्रह्मा in Hindu Mythology, but in Jain Mythology it is used to denote a तीर्थंकर.
9. 1a दिणि छह्णे विच्छिण्णए, six days after his दीक्षा, i. e., on पौष कृष्ण द्वितीया, मल्लि attained केवलज्ञान. गुणमद्र also gives this date exactly in the same form. Compare: दिने पट्ठे गते तस्य छाथस्ये प्राक्तने वने-66.51.
13. 11a पिसुणमहूतो, i. e., the minister named पिसुण, who gave a wrong report about राम and विराम to their father वीर, was born as बलि the अर्धचक्रवर्तिन् and a प्रतिवासुदेव.
14. 4b वाणारासि, i. e., वाराणसी; the lengthening of the third syllable is due to metre.

□

अंगरेजी टिप्पणियोंका हिन्दी अनुवाद

सन्धियोंकी टिप्पणियोंके सम्बन्ध रोमन अर्कोंमें हैं, जब कि कडवकों और पंक्तियोंके अरबी अर्कोंमें । धर्मविषयका संक्षिप्त सार प्रारम्भिक परिचयमें दिया गया है, जिससे पाठक मूलपाठको समझ सकें । ये टिप्पणियाँ उन संस्कृत टिप्पणियोंकी पूरक हैं, जो पृष्ठके नीचे पाद टिप्पणके रूपमें दिये गये हैं । टी-प्रभाचन्द्रके टिप्पणके लिए हैं ।

XXXVIII

1. 12b भवद्दजसोहो—सूर्यसे उत्पन्न किरणोंकी शोभा धारण करनेवाले, 26 प्रकाशयामि—प्रकाशित करता है या व्यक्त करता है । पयासयामि=इसे समझना आसान है—परन्तु 'के' प्रति कभी-कभी ऐसे रूपोंको बरीयता देती है । तुलना कीजिए—वादकी पंक्तिसे (समासवि) साथ ही इच्छावि और अच्छावि । पाँचवेंकी 10-11 पंक्ति या तीसरी पंक्तिमें पडिच्छवि और ओहच्छवि, तीसरे कडवककी आठवी पंक्ति ।

2. 1b कह्वयदियहृद्—कुछ दिनोंके लिए । 2a णिविण्णउ निविण्ण—उदास । णिविण्णउ अर्थात् निर्विनोद । 'क' प्रतिक्रिया यह पाठ पढ़नेमें समान रूपसे ठीक है और उसका अर्थ हो सकता है काव्य-रचनाके विनोदसे रहित । परन्तु मैंने णिविण्णउ पाठको उल्टे अर्थ विस्तरह गिरारिउ पाठके दृष्टिकोणसे ठीक समझा है, जो 4 के 9a में है, और टिप्पणके विचारसे भी । 9-10 खलसकुलि कालि—इत्यादि, भरत जिसने सरस्वती (विद्याकी देवी) का उद्धार किया, जो रिक्त अत्यन्त, या खतरनाक रास्तेपर जा रही थी । (शून्य सुशून्य पथमें) अथवा दुरे समयमें, (खाली आसमानमें) जो दुर्जनोंसे व्याप्त है (खल संकुलि) । और छोटे चरित्रवाले लोगोंसे भरा है (कुसोलमई) । उसे विनय करके । Modesty विनय ।

3. अद्वयदेवियन्वत्तणुजाए—भरतके द्वारा जो अद्वय (एयण) और देवि अम्बाका पुत्र था । 2b दुत्थियमित्तं—भरतके द्वारा, जो उन लोगोंका मित्र था, जो सफटमें थे । 3a मई उवधारभावु णिव्वहणं—भरतके द्वारा, जिसने मुझपर उपकारोंकी वर्षा की । [कवि पुष्पदन्तपर], भरतने पुष्पदन्तको किस प्रकार उपकृत किया, यह, महापुराणके I. 3-10 कडवकोंमें देखा जा सकता है, और जित्द एक की भूमिकामें देखा जा सकता है । pp-XXVIII । 10 तुह सिद्धहि इत्यादि । तुम नवरसोका/दोहन क्यों नहीं करते, अपनी वाणीरूपी कामधेनुसे । अथवा काश्चात्मक शक्तितसे जो तुम्हें सिद्ध है, या जिसपर तुम्हारा अधिकार है ।

4. 7a राउ राउ ण सद्दहि केरउ—राजा, सन्ध्याके अर्ध रागकी तरह है, अर्थात् थोड़े समय ठहरनेवाला है, 8b एककु वि पउ वि रएउ भारउ—एक पदकी रचना करना भी बहुत बड़ा कार्य है । 10 जगु एउ इत्यादि—सगार गुणोंके साथ वक्र है जिस प्रकार कि धनुष जब डोरीपर खींचा जाता है ।

5. 2b-3a कविके अनुसार भरत सालवाहन (सातवाहन) से बहकर है, इस बातमें कि भरत कवियोंका लगातार मित्र रहा है (अणवरयरद्वयकहमेत्तिद) 4 a, b—यहाँ कवि उस किरमेका सम्बन्ध दे रहा है कि राजा श्रीहर्षने कालिदासको अपने कन्धोपर उठा लिया था । ऐतिहासिक दृष्टिसे यह सम्बन्ध दूसरोंसे भी समानता रखता है, जिनका कि भोजप्रबन्धमें उल्लेख है । श्रीहर्षकी जो बाणभट्टका आश्रयदाता है राजगद्दी-

पर बैठनेकी तारीख 620 ईसवी है, बाणकी (620) की तुलनामें, और वत्समट्टिकी प्रवास्त (473 ई. सं.) से । 8 a-b—पुष्पदन्त जो अपनेको काव्यपिसल्ल कहते हैं, कुछ लोगोंके द्वारा सम्मानित हुए, और कुछ लोगों द्वारा असम्मानित हुए, यह कहते हुए कि वह युद्धू हैं । 11 देवीसुय—देवीका पुत्र, अथवा देवियव्वा of 3.1a ऊपर—अर्थात् भरत ।

6. 3a-b यहाँ कवि अपने आश्रयदाता भरतको विश्वास दिलाता है कि उसकी काव्य-श्रित्वाकी अभिव्यक्ति जिनवरके चरणकमलोंकी भक्तिके कारण है, आजोविकाके लिए धन कमानेकी इच्छासे नहीं । (णउ णियजोवियवित्तिहि), 10 करहु कण्ण कहकोडलु—अजितनाथके कथाके कर्णकुण्डलकी तुल्य अपने कानोंमें धारण करो ।

7. दूसरे तीर्थंकर अजितनाथकी कथा. इस कडवकसे शुरू होती है; मैं पहले ही उस ऊषाक शैलीका सन्दर्भ दे चुका है जिसमें बड़े लोगोंकी जीवनियोंका जैन साहित्यमें वर्णन किया जाता है (म. पृ. जिल्द 1 पृ. 599) । सबसे पहले हम तीर्थंकरों या महापुरुषोंके बारेमें सूचनाएँ पाते हैं जिनमें वे कुछ विशेष धोम्यताएँ हैं, जिनके कारण अगले भवमें तीर्थंकरोका जन्म होता है । अजितनाथके मामलेमें विमलवाहन एक राजा था जो वत्स देशका शासक था जो कि पूर्व विदेहमें सीता नदीके दक्षिण किनारेपर स्थित था । वहाँ एक दिन उसे सांसारिक जीवनसे विरक्ति हो जाती है, वह तप करता है, सोलह कारण भावनाओंका ध्यान करता है, (जैसे तीर्थंकर नाम गोत्र इत्यादि) । उपवासपूर्वक उसको मृत्यु होती है, और वह विजय अनुत्तर विमानमें उदरान्न होता है । वहाँ उसकी तैत्तिस सागर प्रमाण आयु थी । जब उसके लम्बे जीवनके छह साहस बाकी बचते हैं, तो सोषमं इन्द्र जान लेता है कि यह अहमेन्द्र अयोध्यामें जन्म लेनेवाले है, भारतवर्षमें राजा जितशत्रु और रानी विजयाके पुत्रके रूपमें । वह कुवेरको अयोध्यापर स्वर्णकी वर्षा करकेका आदेश देता है । श्री, ह्रीं, वृत्ति, मति, कान्ति और कीर्तिके ये छह देवियाँ विजयाकी देखभाल करनेके लिए आती हैं, रानी विजया सोलह सपने देखती है, नीद खुलनेपर वह राजासे उनका वर्णन करती है, जो उसे बताते हैं कि वह जिनको जन्म देगी । जब विमलवाहन अपने जीवनके समयको समाप्त करता है तो वह विजयाके गर्भमें हाथोके रूपमें जन्म लेते हैं । उन अवसरपर देव आते हैं और राजाकी बधाई देते हैं । तीन ज्ञानोके साथ जिनवर जन्म लेते हैं, अर्थात् उन्हें मति, श्रुति और अवधिज्ञान प्राप्त थे । माघ शुक्ला दशमीके दिन इन्द्रके नेतृत्वमें देवता वहाँ पहुँचते हैं और जिनवरकी तीन बार प्रदक्षिणा करते हैं, माता-पिताको प्रणाम करते हैं । माताको मायावी पहुँचते हैं और जिनवरकी तीन बार प्रदक्षिणा करते हैं, जहाँ उनका अभिषेक करते हैं । उनका अजित बालक देते हुए वे जिनबालकको भन्दराचलपर ले जाते हैं, जहाँ उनका अभिषेक करते हैं । उनका अजित नामकरण करते हैं, और उनकी स्तुति करते हैं । उसे अयोध्या वापस लाकर माताको सौंप देते हैं । जब अजितनाथ युवा हुए, तो उनकी एक हजार राजकुमारियोसे विवाह हुआ । उनका युवराज अजितने उत्कृष्टता देखा और उससे यह सोचते हुए कि भाग्य उसी प्रकार क्षणभंगुर है, जिस प्रकार यह उत्कृष्ट । एक बार फिर देवता आये और निश्चयके लिए भगवान्की प्रशंसा की । उन्होंने अपने पुत्र अजितसेनको गद्दीपर बैठाया । देवोंने उनका अभिषेक किया और माघ शुक्ल नवमीको दोपहर बाद उन्होंने केशलोच कर दीक्षा ग्रहण की । मुनि अजितके बालोंको देवेन्द्रने इकट्ठा किया, स्वर्णपात्रों, और उन्हें क्षीरसमुद्रमें फेंक दिया । उनके साथ एक हजार राजकुमारोने दीक्षा ग्रहण की । थोड़े ही समयमें उन्हें चौथा मन पर्ययज्ञान उत्पन्न हो गया । उन्होंने ढाई दिनका उपवास ग्रहण किया और दूसरे दिन अयोध्यामें राजा ब्रह्माके घर उपवास तोड़ा । उसे पाँच आश्चर्य प्राप्त हुए । अजितने बारह वर्ष तक तप किया, और पाँच शुक्ला ग्यारहवीं के दिन ससम्बद बुद्धके नीचे उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया । इस अवसरपर इन्द्र-और दूसरे देव आये । उन्होंने स्तुति की और समव-सरणकी रचना की । उसमें अजितनाथ सर्वमद्र सिंहासनपर बैठे । उनके साथ आठ प्रातिहार्य थे । उन्होंने धर्म प्रवचन किया । उनके अनुयायी बारह गणोंमें विभक्त थे—गणधर, पूर्वधारिण, शिषक, अवधिज्ञानी, केवली,

विक्रमाधारी ऋद्धिमत्, मनःभययजानी, अनुत्तरवादी, आर्थिका, श्रावक, श्राविका और देव, देवी तिर्यक इत्यादि । इस संघके साथ भगवान् अजितनाथने 53 लाख पूर्व तक धरतीपर भ्रमण किया (बारह वर्ष कम), तब वह समेदशिखरपर गये और 72 लाख पूर्वका जीवन पूरा कर उन्होंने नी महीनों तक प्रतिमाओंका अम्यास किया और चैत्र शुक्ला पंचमीको उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया । इस अवसरपर देवोंने भगवान्की पूजा की । अग्निभुमारने उनके शरीरका दाह-संस्कार किया । देवेन्द्रने आदरपूर्वक भस्मको इकट्ठा किया और उसे समुद्रमें फेंक दिया ।

मैंने यहाँ अजितके जीवनका सम्पन्न जीवन विस्तार दे दिया है । यही चीजें प्रायः प्रत्येक तीर्थंकरके जीवनमें दुहरायी जायेंगी । केवल समय, नामो, तिथियाँ में कुछ परिवर्तनके साथ । इस जिल्दमें वर्णित सभी तीर्थंकरोंके जीवनके वर्णनमें इन बातोंको नहीं दुहराया जायेगा । इन विस्तारोंको हम बिना रूपमें दे रहे हैं जिससे पाठक उन्हें समझ सकें ।

7. 2a—सोयहि दाहिणकूलि—'के' प्रतिमें उत्तर पाठ है, परन्तु हमने उसे सुधार दिया है । और उत्तर कर दिया है । गुणमद्रके उत्तरपुराणके प्रमाणपर, जिसमें पाठ इस प्रकारका है—सीतासरिवाम्भागे वस्ताव्यो विषयो महान् । वहाँ अपाग्भागका अर्थ है दक्षिण । 8b हृलियहि—किसानोंके द्वारा ।

8. 8a b जसु सोहम्मं—प्रेमके देवता (कामदेव) राजा विमलवाहनके सौन्दर्यके कारण पृष्ठभूमिमें चला गया इसलिए उसने शरीरको छोड़ दिया और वह अनग हो गया ।

9. 2b पचमह्वयमायउ—पाँच महाव्रतोंको माता । अर्थात् पचीस भावनाएँ, एक-एक व्रत की पाँच भावनाएँ । 8a दसवसुद्धिविणउ—सोलहकारणभावनाएँ जो दर्शन-विशुद्धिसे शुरू होती हैं । विस्तारके लिए तत्सार्थ सूत्र देखिए VI 24 । इन भावनाओंसे व्यक्तिको तीर्थंकर भोजका बन्ध होता है ।

10 9a सो अहममराहिर—वट्ट अहमिन्द्र जो पूर्वजन्ममें विमलवाहन था । 11b कणयमयिण-क्यण—(अयोध्या) जिसके स्वर्णप्रासाद है ।

11. 1b भाणवमाणिणिवेसें—घरतीकी स्त्रियोंका वेश धारण किये हुए । 4a गम्मि ण थंतहु—जिनके गर्भमें स्थित होनेके पूर्व इन्द्रने स्वर्णकी वर्षा की । जिनेंद्र अजितके विजयाके गर्भमें आनेके पूर्व ।

12. सोलह स्वप्नोंके लिए म. पु. प्रथम जिल्द, पृ 600-601 देखिए ।

13. 4a-b कुंजरवेसें—अहमिन्द्र अपने जीवनको अवधि समाप्त कर (विजय विमानमें) रानी विजयाके मुखमें, एक हाथीके रूपमें इस प्रकार प्रविष्ट हुए जिस प्रकार सूर्य बादलोंमें प्रवेश करता है । 9-10 ये पत्नियाँ ऋषयोंके निर्वाण, अजितनाथके विजयाके गर्भमें अवतरणके बीचकी अवधिका वर्णन करती हैं जो पचास करोड़ सागर प्रमाण है ।

14 4-5 दसणकमलसरणच्चियसुरवरि—इन्द्र अपने ऐरावत हाथीपर आरूढ हुआ । जिसकी कमलसरोवरके समान सँडपर देवता नृत्य कर रहे थे । 8b सरसरसिर—भक्तिये परिपूर्ण बातें करते हुए ।

15. 6b मन्तु पणवसाहा संजोइवि—'ओं स्वाहा' मन्त्रका प्रयोग करते हुए ।

18. 9a. वसुवइवसुमइकंताकंतें—अजितके द्वारा, जिनकी दो पत्नियाँ थीं । अर्थात् धरती और लक्ष्मी ।

19. 1b ईसमणीस समासमलीणी—स्वामी अजितका मस्तिष्क पूर्णतः मानसिक शान्तिमें निमग्न था । (सम, उपशम, वैराग्य) । 4b आउ वरिसवरिसेण त्रि खिज्जइ-मनुष्यकी आयु वर्ष-प्रतिवर्ष कम होती जाती है ।

20 4a-b गइदुचरित्तकम्मसंताणइ—अपनी जातिको जारी रखनेके लिए, जिसका अर्थ है कर्मोंकी परम्परा, जैसे—गति (देवमनुष्यादिगति) छोटे कार्य (दुश्चरित्र) । जातिको जारी रखनेके कर्ममें

जन्म और मृत्युकी शृंखला संलग्न रहती है। और भी दूसरे कर्म होते हैं जो दुरे कार्य हैं।

21. 6a-b कुसुमवरिसु—पाँच आश्चर्योंकी वर्षा कुसुमवर्षा है। स्वर्गके फूलोका वरसना, सुरपट्ट-निनाद, स्वर्गके मगाड़ोका शब्द, वपुहारा—स्वर्गसे स्वर्णकी वर्षा, चेलुमखेव—सण्डे ऊँचे करना, अहे दार्ण—दानकी शालीनतामें किये गये प्रशंसाके स्वर्गीय शब्द। तुलना कीजिए विवागसुयसे, पृष्ठ 78।

22. समवसरणका वर्णन।

24. आठ प्रातिहार्योंका वर्णन—अशोकवृक्ष, पुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भागण्डक, देवदुन्दुभि और छत्र। 10-12 और बादका कड़वक अपने गणोंका वर्णन करता है इसके लिए चित्रफलक देखिए।

26. 1a सिंहरहि—सुमेरु पर्वतपर। 5b = दण्डकवाङ्कजगजगपुरुणु—उप प्रक्रियाका वर्णन करता है जिसे जिनैन्द्रकी आत्मा सिद्धशिलापर आरोहण करती है।

XXXIX

यह सन्धि सगरकी कहानी बताती है, जो जैनेके दूसरे चक्रवर्ती हैं।

1. 2 मगहाहिव = श्रेणिक, मगध देशका राजा, जिसने गणधर शौतम इन्द्रभूतिसे जेसठ सालका पुरुषोके जीवनके बारेमें कहनेके लिए कहा था। 4a दाहिययलि के लिए—'ए' और 'के' प्रतियोंमें सामान्यत उत्तरयलि 'पाठ' है, परन्तु 'के' प्रति इसकी जगह शुद्ध पाठ दाहिययलि मानती है। गुणभद्रके उत्तरपुराणमें

द्वीपेऽत्र प्राग्विदेहस्य सीताप्राग्भागभूषणे।

विषये वत्सकाधत्या पृथिवीनगराविषे ॥ 48-58

12 घरचूलाहयणहयल—राजधानी पृथ्वीपुर जो अपने प्रासादोके सिखरोसे आकाशको छूती थी।

2. 9b सिधुमोहणोऽ मुणिहि वि दुवारु—ब्रह्मोके प्रति प्रेमको रोकना मुनियोके लिए भी कठिन है। 10 जिणवरवयणु रसायणु—राजाके मन्त्रियोने उम दु खको सहनेके लिए जिनवरका वचनभूत दिया।

4. 3a इयस वि—अर्थात् महाव्रत मन्त्री। 5b किञ्च दोहि नि पड्ढिबोहणयिवंधु—देव महाबल, (पूर्वजन्मका राजा जयसेन) और देव मणिकेतु (पूर्वजन्मका महाव्रत मन्त्री), दोनोंने यह समझौता किया कि जो पहले मनुष्य होगा, उसे दूसरा इस तथ्यका स्मरण करायेगा जो स्वर्गमें देर तक देव रहता है।

5. 9-10 सार्वभौम राजाके ये चौदह रत्न हैं।

6. 3a जितनी सम्पत्ति भरतकी थी, उतनी ही सगरकी भी हुई, चक्रवर्तीके रूपमें।

7. 1a मयसललवियणयण—हाथी मदके कारण माँलें बन्द किये हुए था। 10a रयणकेऽ

अर्थात् मणिकेतु।

8. 9b तरणिहि कोकिज्जइ हसिन्वि ताऽ—ज्वल औरतें उसपर हँसो और उसे पापा कहकर पुकारा।

10. 2a देवसाहु—मणिकेतुने देव होनेके कारण साधुका रूप धारण कर लिया।

12. गंगाके अवतरणका वर्णन।

14. 2a विहं ऊणी तट्ठी—साठ हजार पुत्रोंमेंसे दोको छोड़कर, (भीम और भागीरथ), जो अपनेकी मौतसे बचा सके। 9b गज आवइ णऽ सरिसरतरंगु—नदीके जलकी तरंगें, जब एक बार जाती हैं तब दुबारा नहीं जाती।

16. 11a ददधम्महु पायंतिइ—दृढ धमके पैरोके नीचे ।
 17. 6b गउ जेण महाजणु सो जि पन्थु—तुलना करिए महाजनो येन गत. स पन्थाः ।

XL

1. सासयसंभवु—शाश्वत आशीर्वाद, (शाश्वत + शं + भव) संभवासाणु—वह जो जन्म (संसार) का अन्त कर देता है । पुसियवंभहरिहरणयं—वह जिसने ब्रह्मा, विष्णु और शिवके सिद्धान्तोंका स्रष्टन कर दिया है । 20b असिआउसं—इस अभिव्यक्तिपर टिप्पणके लिए म. पु. की जिल्द एक, पृष्ठ 653 पर देखिए । 23 अमिउं पियहि कण्णजलिहि—अमृतका पान करिए, अर्थात् अपने कानोंकी अजलिसे मेरे काव्यका पान करिए । तुलना कीजिए—कण्णजलिपुटपेय विरचितवान् भारताख्यममृतं यः । तमहम-रामकृष्णं कृष्णद्वैपायन वन्दे ।

4. 10b सत्या—स्वस्थ । अत्यन्त शान्त और प्रसन्न ।
 5. 14a जितसत्तुसुए—जितशत्रुके पुत्रने, अजित, दूसरे तीर्थंकर । 18b जभारिणा—इन्द्र ।
 6. 4a सईइ सइं धारियउ—इन्द्राणीने स्वयं धारण किया ।
 8. 12 कि जाणिहु सोसिउ उवहि—इया तुम सोचते हो कि समुद्र सूख गया क्योंकि देवता सम्भव-जिनके समिपेकके लिए पानी ले जा रहे हैं ।
 9. 13 पइं मुइवि—तुम्हें छोडकर ।
 11. 7a कत्तियसियपविख—कार्तिक कृष्ण पक्षमें । गुणभद्रके 49से तुलना कीजिए । 41 जन्मसँ कार्तिके कृष्णव्रतुघ्यामपराह्लग, 11 गाणें गेयपमाणें—उनका ज्ञान जो ज्ञेयके साथ विस्तृत है—अर्थात् कैवलज्ञान ।
 13. 5a जविखदमउडसिहरुद्धरिउ—यक्षेन्द्रके मुकुटके अग्रभागसे आता हुआ । यक्षेन्द्र यानो कुवेर ।
 14. 10b दहुगुणिय तिणिण सहम—तोस हजार, यद्यपि गुणभद्र बीस हजारका उल्लेख करते हैं ।
 15. 1a भवियतिमिस—अव्य जीवोंके अन्वकारको । 14 सिगारंगह = शृंगारके अंगका । शृंगार-भूमिका ।

XLI

1. पिदिदियइं निवारउ—जिन्होंने निन्ध इन्द्रियोंका निवारण कर दिया है, अर्थात् तीर्थंकर, यहाँ-पर अभिनन्दन । 18 जीहासहसेण विणु—हजार जीभवालेके बिना । फणीश्वरकी एक हजार जीभ है इस-लिए वह तीर्थंकरको सभी विशेषताओंका वर्णन करनेमें समर्थ है, परन्तु कवि पुण्यदन्तकी एक ही जीभ-है इसलिए वह तीर्थंकरके गुणोंके साथ न्याय नहीं कर सकता ।
 3. 1b सणिणउ वियरइ—बीरे चलते हैं इसलिए प्राणियोंको चोट नहीं पहुँचती । 5b तिणिण उरउतरसय—अभिव्यक्तिमें न्यूनपद है, परन्तु वह स्पष्ट वंशपरम्पराके 363 सिद्धान्तको सन्दिग्ध करता है । जैसा कि अपभ्रंशमें पाठोंकी सरलता सूचित करती है ।
 5. 7b सवु सवारिउ—उसने इसे धूरा सम्पादित किया ।

6. 12 आसणयणहरणि—आसनके कम्पनके द्वारा इन्द्र जानता है; आसनके कम्पायमान होनेके कारण इन्द्र जानता है कि जिनका जन्म हुआ है ।

8. इस कडवकमें उन दस लोकपालकी सूची है । जिनवरके जन्माभिषेकके समय जिनका आह्वान किया जाता है । ये देव या लोकपाल हैं—इन्द्र, अग्नि, यम, वैश्रवत, वरुण, वायु, कुबेर, रुद्र, चन्द्र और फणीश्वर । यहाँ बाहूनों, प्रहरणों, पत्नियों, और चिह्नोंके साथ उनका विशेष वर्णन किया गया है । जैसा कि २३वीं पक्ति बताती है ।

12-13 मयलज्जामाणमयवज्जियं जिनवउं पेम्मसमाणउं—जिनवरके प्रति व्रतप्रेमके अथवा चरित्रके प्रेमके व्रतके समान उतना ही जितना यह भय, लज्जा, मान और श्रद्धा परित्याग करता है, उसी प्रकार जिस प्रकार प्रेममें पडकर आदमी—मय आदिकी अनुभूतिकी उपेक्षा करता है ।

17. जीवपत्तिवदिग्गहपंजइ—(मृत शरीर) पक्षी (आत्मा) को पकड़नेका पित्रा है ।

XLII

1. 18 समासइ वइयस्—व्यतिकर । कहानी या कथानकको संक्षेपमें कहता है ।

2. 4b पीमरयरासिपिंजरियकुंजरवडे (देशमें)—हाथियोंके झुण्ड कमलपुष्पोंके परागसे रजित है । 5a दुक्खणिग्गमण इत्यादि—पुष्पकलावतीका क्षेत्र इतना आकर्षक था कि वह वनश्रीसे समानता रखता था जो प्रेमकी देवी है । रइग्गमण—रतिका स्वाधी—कामदेव, कठिनाईसे अलग होगा । 10b रमइ वइसमणो आवणे आवणे—धनका देवता—कुबेर प्रत्येक दुःखानमें प्रसन्न होता है, क्योंकि उसमें धनकी प्रचुरता है । 15 उवसस-वाणिण्ण—मनकी शान्तिके अलसे । 16 भोयत्तण्ण—भोगरूपी तृण ।

3. 17b हरिसुद्धदेहेण—अपने रोमांचित शरीरसे । आनन्दके कारण ।

4. 15a हूए हरिभणणे—ब्रह्म कि हरिके आदेशसे, इन्द्रकी आज्ञाओंको माना गया, जब कि नगर आदिको सजाया गया इन्द्रके आदेशसे । 17 अणवइण्णि वरुहे—अहंत्के जन्मके होनेके पूर्व ही ।

5. 21 झुलंतवडायाहि—क्षणोंसे झूलते हुए ।

7. 6b णिण्विघकायावहो—जिनेन्द्रका, जो लगातार या बिना किसी बाधाके, प्रेम अथवा वासनके देवताका अन्त कर देते हैं । 10b जडकसरकुग्गेण—जड़ और धूर्तोंके लिए जिसका आचरण दुस्साध्य है । कसरका शान्दिक अर्थ है दुष्ट बैल । गिरिकक्करि पडइ—दुष्ट अंड अपने-आपको फेंक देता है या घूमता है, जंगलके रेतीके क्षेत्रमें । भीठी घासके लिए, वहाँ जिसे वे नहीं पा सकते ।

9. 5b इणे पच्छिमत्थे—जब कि सूर्य पश्चिम दिशामें पहुँच गया, अन्त होनेको था ।

12. 15b घडिमाहाइयह—पूर्वसमय उन घटिकाओंसे मापा जाता है, जो समाप्त हो जाते हैं । ह्यदियहपाडीहि से तुलना कीजिए 5. 14a में ।

XLIII

1. 5a णियायममग्गणिओइयसीसु—जिसने शिष्योंको आगमके पवित्र मार्गपर निर्देशित किया है । 7b गलकंदलु—बत्बके समान गलेवाला ।

2. 6a णीड—घोसला या घर । 10a भाविणि—(भामिनी) औरत । 13 होउ पहुच्चइ—पूर्ण हो । सामान्यतः अर्थ है समर्थ होना । परन्तु शब्दकोश पूर्ण अर्थ करता है । 14. ज पुरउ इत्यादि—यदि

शगर या राजधानी छोड़ दी जाती है तो व्यक्ति शीघ्र तपस्या ग्रहण कर सकता है । यदि राजा अपना राज्य छोड़ता है, तो वह ससारासे मुक्ति पा सकता है ।

4. 1a-b गिहोयुण्ठाणवएहि विमीस—अहमिन्द्र जीवनकी आयु बीस सागर प्रमाण थी, उसमें 99 (प्रतिमाओको सख्या) मिलानेसे कुल इकतीस सागर प्रमाण आयु थी ।

8. 10b दुमाणवु—नीच व्यक्ति ।

10. 4b पक्ति इस प्रकार पढी जानी चाहिए—सर्ववसु वेरिसु णिच्चसमाणु—जो अपने परिवार-जनो और शत्रुओसे समान भाव रखते थे ।

XLIV

3. 8a परमारिसरिसहणवजायउ—ऋषभके वंशमें उत्पन्न । प्रथम तीर्थंकर जो परमपि है ।

6. 11 परिमाणु—यहाँ परमाणुका रूप है—अणु । संसारमें जितने परमाणु प्राप्त हैं उनसे सुपात्र्वका शरीर बनाया गया ।

7. 5a उडुपल्लडुउ—नक्षत्रोका पतन, या उल्काओका पतन । जो संसारकी क्षणभंगुरताकी सूचक थी ।

9. 5b जलहिमाणि किं आणिज्जइ वडु—क्या हम मिट्टीके घड़ेसे समुद्रका पानी माप सकते हैं ।

XLV

1. 17b वयणणुवुण्णलमालइ—नये कमलोक की मालाके द्वारा अर्थात् काव्यात्मक रूपसे रचित शब्दोके द्वारा ।

2. 16b कलहोइमइयाउ—स्वर्ण (कलघोत) से निर्मित ।

3. 12a-b तूररवें विस इम्मइ = नगाडोके शब्दोसे दिशाएँ निनादित थी । कण्णि वि पडिउ ण सुम्मई—यदि ध्वनि कानोंमें भो पहुँचती थी तो सुनाई नहीं देती थी, या समझी जाती थी—विजयके सघन नादोके कारण ।

6. 9b सरसेणा—कामदेवकी सेना ।

13. 13-14 इन पक्तियोंका अर्थ पद्यप्रभ है, जो वैजयन्त स्वर्गमें उत्पन्न हुए । और उनका शरीर गौरवर्ण था, तथा अत्यन्त चमकीली कान्ति थी । पद्यप्रभकी इस कान्तिको देखकर पुण्यदन्त (चन्द्र और सूर्य) की पत्नियोंने अनुभव किया कि उनकी कान्ति कुछ भी नहीं है—पद्यप्रभके शरीरकी कान्तिकी तुलनामें ।

XLVI

5. 9b सासेहि व चासपइण्णएहि—घान्त्यके समान जो हलके द्वारा की गयी रेखा (चास) में बोये गये हैं । चास देशी शब्द है जिसका अर्थ है हलके फलकसे खींची गयी रेखा, हलविदारित मूमिरेखा । और चासके रूपमें शब्द भी मराठीमें सुरक्षित है ।

6. 12 जिणतणुहि कतिइ पयडु ण होतउ—जिस दूषका जिनवरके अभिवेकके लिए उपयोग किया जाता था, वह जिनवरके शरीर की कान्तिसे साफ दिखाई नहीं देता था, क्योंकि दूषकी कान्ति जिनवरके शरीरकी कान्तिसे मिलती-जुलती थी । मीलित अलंकारका उदाहरण ।

11. 5a बलदेवह अगह देहि तिणिण—तीनके आगे 9का एक दीजिए, जो बलदेवकी संख्या है। पूरा अंक 93 होगा, जो चन्द्रप्रभुके गणवरोकी संख्या है। 10-11 इन पंक्तियोंमें अठ प्रातिहार्योंका वर्णन है। जैसे पिंडीद्रुम—अर्थात् अशोक वृक्ष। इन प्रातिहार्योंकी स्थिति सूचीके मध्यमें चन्द्रप्रभुके अनुयायियोंमें अस्वामानिक है।

XLVII

4. 9a वच्छु जहि रोसहुं—वह उन स्थानोंको छोड़ देते हैं जहाँ क्रोधका वृक्ष है। 'पी' में 'वासु' भिन्न रूप स्पष्ट रूपसे अच्छका सरल रूप है।

6. 9a-b बच्चा अपने माँ और उसकी प्रतिच्छायाको देखता हुआ भ्रान्तिमें पड़ जाता है और समझता है कि उसकी दो माताएँ हैं और इसलिए वह यह निर्णय करनेमें असमर्थ था कि उसकी वास्तविक माँ कौन थी।

XLVIII

1. !9 गुणभद्रगुणीहि जो संधुड—अर्थात् दसवें तीर्थकर, जो गुणभद्रसे गौरवान्वित है। हम जानते हैं कि गुणभद्र जिनसेनके शिष्य हैं, जो संस्कृत आदिपुराणके रचयिता हैं। उनकी मृत्युके बाद उनके कार्यको गुणभद्रने जारी रखा, जो उत्तरपुराण कहलाता है। गुणभद्रगुणीहि—इस अभिव्यक्तिका यह अर्थ भी किया जा सकता है, विशिष्ट गुणोंको धारण करनेवाले पवित्रजनोंके द्वारा।

4. 14 तं पट्टणु कंचणु घडिउं—वह नगर स्वर्णसे निर्मित था। यहाँ कंचनका प्रयोग कंचनके लिए हुआ है—अर्थात् काचनमय। 'ए-पी' में कंचणघडिउ पाठ है, क्योंकि प्रतिलिपिकार कंचणका अर्थ नहीं समझ सका।

9. 1a-b तं सहं पक्तिका अर्थ है, यद्यपि क्षीतलनाथके अभिषेकमें प्रयुक्त जल नीचेकी ओर बह रहा था, परन्तु वह पवित्र लोगोंको ऊपरकी दिशामें ले जा रहा था, अर्थात् स्वर्ग।

10. 5b उत्तायाणणु गव्वेण जाइ—गर्वसे आदमी अपना सिर तानकर या ऊँचा उठाकर चलता है। बमण्डी आदमी अपना सिर धकड़ाकर और ऊँचा करके चलता है।

13. 16 संभरह विरुद्ध जिणचरित्तु—देवोंने उसके विभागमें जिनवरके जीवनकी परस्परविरोधी बातें कही हैं। बादकी पंक्तिमें उक्त परस्परविरोधी बातोंका सन्दर्भ है। उदाहरणके लिए जिन भोपाल कहे जाते हैं (स्वाला—पृथ्वीका पालन करनेवाले) लेकिन अपने ही शत्रुओंके लिए वे अत्यन्त भयंकर हैं।

18. 5a-b जो गायका दान करता है, वह विष्णुको जाता है, स्वर्णविमानमें। और स्वर्गीय भ्रान्द बनाता है। 11 सुज्झइ पिपलफंसणिण—पीपलका वृक्ष छूनेसे शुद्ध होता है।

20. 14 सहं विरइवि कम्बु, मुण्डसालायण—मुण्डसालायणने स्वयं गौ आदिके दातके महत्त्वको बतावनेके लिए छन्दोंकी रचना की और उन्हें वह राजाके सामने लाया। राजाने अनुभव किया कि वे उतने ही प्रामाणिक हैं जितने कि वेद।

II.

1. 15 कित्ति बिंयंउ महुं जगवेहि—मेरी कीर्ति समूचे विश्वस्पी घरमें फैल जाये। कवि अपनी काव्यशक्तिके प्रति सचेतन है, जैसा कि वह कहता है कि वह उसे विश्विवख्यात यथा विलबायेगी।

3. 3b गुणदेवहं भवदेवहं ईसर—अनन्त जिनवर गणधरो और जन्मसे देव होनेवाले इन्द्रादिकके ईश्वर हैं ।

5 9 ता णज्जइ इत्यादि—शहरमें स्वर्णवर्षा होनेके कारण लोगोंको रात और दिनके बीच भेद करना कठिन था । इसलिए लोग उस समयको दिनका समय मानते थे जब सरोवरमें कमल खिलते थे ।

L

यह और इसके बादकी दो सन्धियाँ प्रथम वासुदेव त्रिपुष्ट, प्रथम बलदेव (विजय) और प्रथम वासुदेव अवधश्रीवकी कहानीका वर्णन करती हैं, जो जैन पौराणिक परम्पराके अनुसार हैं । पाठक त्रिपुष्ट और विजयकी मित्रता और त्रिपुष्ट तथा अवधश्रीवकी शत्रुताको पृष्ठभूमि समझ सकें, इसके लिए कवि तीनोंके दो पूर्वभूषोके जीवनके का वर्णन करता है ।

1. 5a गोजलपयधाराघायपहिद्—जहाँपर यात्री गायोंके दूधको जी-भर पी सकते हैं । 11a जहणी—जैनी, जो यहाँ व्यक्तिवाचक सज्ञा है । 15 खलमित्तसणेह—दुष्ट आदमीके साथ मित्रता थोड़े समयके लिए रहती है ।

2. 5a णिग्गेसद् ण वाय—शब्द बाहर नहीं निकलेंगे । यहाँ णिग्ग शब्द तथा 7b में मराठीके निघण्टेके समतुल्य है जिनकी व्युत्पत्ति निर्गमसे की जा सकती है ।

3. 5b तरह Swims—मूल 'तर' तैरना मराठीमें सुरक्षित है, इसी अर्थमें प्राकृतमें एक और मूल शब्द तर् है जिसका अर्थ समर्थ या योग्य होता है ।

4. 1b वणुस्साहिलास—होना चाहिए वणुस्साहिलास, उद्यान रखनेकी अभिलाषा । वणुस्स सभी पाण्डुलिपियोंमें मिलता है इसलिए इसे रहने दिया है अथवा क्या हम वण + उस्सुक + अमिलास ले सकते हैं, जिसका अर्थ होगा वन रखनेकी तीव्र इच्छा । 12b तायान् आराहणिज्जो—बादमें आदर करने योग्य । (पिताकी मृत्युके बाद), तुम भी मेरे पिताकी तरह समान आदर पाने योग्य हो ।

5. 13 दुग्गु भणेवि—यह कहते हुए या सोचते हुए कि वृक्ष दुर्गके समान है (दुग्ग) । वहरिउ—शत्रु ।

8. 6a छइउ (छादित)—पराजित क्रिया ।

9. 10 सुज्जू हसियहु करमि समाणउ—मैं बराबर कर दूँगा । मैं उस हँसीका बदला दूँगा जो मेरा मजाक उड़ाती है और अपमान करती है ।

10. 8b अवध—विशालनन्दी ।

LI

1. 6a जायासीवणुत्तणु—वे दोनों (विजय और त्रिपुष्ट) 80 वनप बराबर ऊँचे हो गये । 9b विहिं पवसहिं ण पुण्णिमवासस—पुण्णिमाके दिनके समान जिसके एक और आधा उजला पक्ष है और दूसरी ओर अँधेरा पक्ष है । जो विजय बलदेवके समान हैं, जो गोरे हैं, और त्रिपुष्ट वासुदेव जो ध्याम वर्णके हैं ।

2. 11a b हलहृष दामोयह—यहाँ कृपया याद रखिए कि बलदेव और वासुदेवका उल्लेख उनके विभिन्न पर्यायवाची नामोंसे होगा । जैसे सीरि, हली, लंगलहर, सीराउह, बलदेवके नाम हैं । दामोदर, मापव, शोवत्स, अनन्त, सिरिरमणीस, लच्छोवद् (लक्ष्मोपति), दानवारि, दानववैरिन्, विट्टरसव, विस्त्सेण वासुदेवका; इसी प्रकार अवधवं वका वल्लेख ह्यग्गीव, ह्यकण्ठ, तुरंगगलके रूपमें होगा ।

5. 4b पृथ्वयणहिं—ऋ पृथ्वी है जो प्रियके रूपमें आनी चाहिए, सम्भवतः यह हेमचन्द्रके नियम अशूतोपि वचचित्, (399) का बढाव है ।
6. 13 असु असु—अस्य यथाः—जिसका यथा ।
7. 8b भृगवइयहिं जाएं—भृगावतीके पुत्रके द्वारा । यानी त्रिपृष्ठके द्वारा । 9a संचालेवी—कर्कवाच्यका सम्भाव्य कृदन्त रूप है, तुलना कीजिए—पालेवी जणेवी, परिणवी इत्यादिसे । हेमचन्द्र 438 नियममें इसके लिए एवा रूप देते हैं जो तव्यका स्थानापन्न है । वे एवीका उल्लेख नहीं करते ।
9. 13-14 गियजणणविहण्णु—पत्तियोंका अर्थ है कि अर्कश्रीति अपने पिताकी भौहोके संकेतोंके समक्षते हुए राजा प्रजापतिके पास गया और इस प्रकार उसे प्रणाम किया ।
10. 1a हरिवलेहिं—त्रिपृष्ठ और बलके द्वारा; ससुरर (स्वसुर), त्रिपृष्ठका होनेवाला ससुर ।
11. 12-13 पुणु भणिय—उन्होंने फिर अनन्त (त्रिपृष्ठ) से कहा—हम देखें और पत्थरके गोल खम्भे उठायें और मुझे बतायें कि क्या तुम अश्वघ्रीवकी हत्या कर सकते हो ।
15. 14 अह सो सामण्णु भणहुं ण जाइ—उसे सामान्य व्यक्ति नहीं कहा जा सकता ।

LII

1. 2 चिरभववइरवसु—पूर्वजन्मके चैरके प्रभावसे कि जब वे विश्वनन्दी और विशाखनन्दी थे ।
4 तिखंडखीणपरमेसरु—तीन खण्ड धरतीके चक्रवर्ती । अश्वघ्रीव अर्धचक्रवर्ती था ।
5. 4b विजआहरभूरभूमिणाहु—विद्याधरभूमि और मनुष्यभूमिके स्वामी । अर्धचक्रवर्ती अश्वघ्रीव ।
7. 3a मारसउ काउ चपिपि कवालु—आदमीके सिरपर कीएका बैठना और काँव-काँव करना आनेवाली भौतका संकेत है ।
8. 2 करगय—स्वर्णका हार देखनेके लिए तुम्हें दर्पण क्यों चाहिए कि जो तुम्हारे हाथमें है । वह प्रसिद्ध लोकोक्ति है, 5a भरहहु लमिगवि—भरत चक्रवर्तिके समयसे लेकर, प्रथम चक्रवर्ती । 11 रुपु बोल्लुहुं चंगउं—युद्धकी बात करना आनन्ददायक है । तुलना कीजिए कि युद्धस्य कथा रम्या ।
3. किकर गिहणंतहं णरिय डाय—अनुचरोको मारनेमें कोई आकर्षण या आनन्द नहीं है । अश्वघ्रीव त्रिपृष्ठसे लड़नेमें प्रसन्न था, उसने सोचा कि छोटे व्यक्ति या अनुचरसे लड़नेमें कोई मजा नहीं है । 15 सारंगु का 'टी'में बलवाम् अर्थकिया गया है । परन्तु लमता है कि त्रिपृष्ठको वासुदेव होनेके कारण शृंगका वना घनुष रखना चाहिए, विष्णुको शाङ्खधर कहा जाता है—हिन्दू-पुराण विद्यामें । हिन्दू-पुराण विद्यामें विष्णुके दूसरे प्रतीक है पाँचजन्म, कौरवभणि, अंसि, कौमोदकी गदा, गरुडचक्र और लक्ष्मी । जैनपुराण विद्यामें ये प्रतीक वासुदेवके भी माने जाते हैं और इसलिए मैं सोचता हूँ कि सारंगधनुका अर्थ शाङ्खधनु होगा ।
10. 4a-b यह पक्षि इलदेवके हथियारोका वर्णन कर्ता है, ये हैं सागल, मुसल और गवा जो चन्द्रिमा कहा जाता है ।
11. 2 खयाहिवो—गरुड, जो वासुदेव या विष्णुके ध्वजका प्रतीक है । 8a गिण्विचुंवे—मोटा और अँचा । 'टी'के अनुसार यह मुहावरा नित् + उच्च से बना । सम्भवतः कि नित् + उच्च से बना हो, उच्च उंच होता है, अथवा उच्च + उच्च; इसका अर्थ है अन्त तक खड़े बाल, जो हमेशा खड़े रहते हैं ।
12. 8a-b भडु इत्यादि—योद्धा कहता है यदि मेरा मस्तक भी गिर जाता है तो भी मेरा धड़ शत्रुका वध करेगा और नाचेगा ।

15. 2 कृष्णाहरणकरणरणलम्पद्—सेना उस युद्धमें व्यस्त थी, जो विवाहमें दी गयी कन्या स्वयंप्रभाके अपहरणके लिए हो रहा था । 12-13 ये दो पंक्तियाँ, दो सेनाओंकी तुलना प्रेम करते हुए जोड़ेसे करती हैं । मिहृणद्—मिश्रुनाति—प्रेमक्रीडामें लगे हुए ।

16. 2 सिरिहरिमस्तु—जो कि ऊपर वर्णित है LI में । 16-9b, प्रजापति राजाके मन्त्रीके रूपमें । 25 माहवबलवइणा अर्थात् हरिमस्तु ।

17. 14b ण अट्टमउ चट्टु—चन्द्रमा आठवें स्थानपर हो तो ज्योतिषशास्त्रमें मृत्युकी सूचना देता है ।

19. 3b णीलंजणपहवेवीसुएण—अश्वघोषके द्वारा । दूसरे दृष्टिकोणके लिए देखिए मृच्छकटिक VI. 9. “कस्सट्टमो दिणअरो कस्स चउत्थो आ वट्टए चेवो” इसमें चतुर्थ स्थानका चन्द्रमा मृत्युका सूचक है ।

20. 21b भीमुह्-उज्झिउ—भयसे मुक्त ।

21. 14b सिवकामिणीद्—प्रेमिकाके द्वारा अर्थात् स्त्रीशृगाल शिवा । 16 मौल्लवणु—मूल्य या वापसी ।

24. 15b कुलालचक्कु—कुम्हारका चक्र । जब अश्वघोषका चक्र त्रिपृष्ठकी आहत नहीं कर सका, और वह उसके हाथमें ठहर गया । अश्वघोष बोला—यह कुम्हारके चक्रके समान है जो युद्धमें व्यर्थ है । यद्यपि त्रिपृष्ठ और उसके पक्षने इसका बहुत कुछ मूल्य था । अश्वघोषने त्रिपृष्ठकी यह कहकर निन्दा की कि मिछारी तिलतुष खण्डकी भूल भिटानेवाला कीमती खाद्य पदार्थ समझकर महत्त्व दे सकता है, परन्तु दूसरे लोग ऐसा नहीं सोचते ।

25. 9 कामिणिकारणि कलहसमत्तो—कामिनीके लिए युद्धमें व्यस्त ।

LIII

5. 5b कंजवंधवो सरम्मि दिण्णपोमिणीरई—सूर्य जो कि कमलका मित्र है और क्षीलमें कमलके पीधोको आनन्द देता है ।

6. 8b तित्थणाहसंखम्मि रिक्खए—चौबीसवें नक्षत्रपर अर्थात् शततारिका ।

8. 5a अण्णहु पासि ण सत्थविही कत्थइ सुणइ—वह शास्त्रका अध्ययन नहीं करता, मेरे अध्यापकसे वह स्वयं अध्ययन करता है । तीर्थंकर स्वयं प्रकाशित हैं, और उन्हें किसी दूसरे गुरुकी आवश्यकता नहीं ।

13. 1a ससयमिसहइ—शततारिकाके साथ ।

LIV

1. 14-15 पंक्तिभोका अर्थ है—यदि मैं (कवि) गुणमंजरीके मुखकी तुलना चन्द्रमासे करता हूँ तो इसमें मेरी कवित्व शक्तिका प्रदर्शन नहीं होगा । मुझे कवि नहीं कहा जाना चाहिए । क्योंकि गुणमंजरीका मुख गन्दा या काला नहीं है, जैसा कि मृगचिह्न चन्द्रमण्डलपर है । उसकी आकृतिमें चन्द्रमाकी तरह घटत और वक्रता है ।

3. 2 इह कलोलणिवहु—कवि कहता है कि विन्ध्यशक्ति और सुपेणकी मित्रता इतनी घनिष्ठ और पक्की थी कि उनमें भेदा भेद करना असम्भव है । क्योंकि समुद्रसे उसकी लहरोंको दूर कौन कर सकता है ? दार्शनिकों द्वारा समुद्र और उनकी लहरोंका एकात्म्य, एक स्वीकृत सत्य है ।

8. 7b बलदेव और वासुदेवका जन्म माताओंके द्वारा स्वप्नमें देखे गये सूर्य और चन्द्रने पहलेसे घोषित कर दिया ।

8. 9b वीर्य उववादेविद् ददभुज—द्विपृष्ठ वासुदेवकी माताका नाम उववादेवी है—जैसा कि यहाँ दिया गया है । यद्यपि गुणभद्रने उसका नाम उवा दिया है : तुलना कीजिए :—

तस्यैवासी सुषेणाख्योऽभ्युवायामात्मजोऽञ्जनि ।

द्विपृष्ठाख्यस्तनुस्तस्य चापसप्ततिसंमिता ॥ 58184

9. 10b गल्यं सुयद्ं सुहृद्दि णयणद्ं—मैं अचलको मारूँगा और उसकी सुमद्राको बात-बातमें आँसू बहानेके लिए विवश करूँगा ।

12. 10-12 रायत्तणु इत्यादि—रायमें श्लेष है, जिसका अर्थ है राजन् और राग ।

17. 8a रासहु होइवि—तारक द्विपृष्ठकी तुलना गधसे और अपने हाथीसे करता है । 10a गोवालबाल—ग्वालेका पुत्र, बालक । वासुदेवका एक विशेषण है, जो कि हिन्दू पुराण विद्याके अनुसार ग्वालमें रहे और वही बड़े हुए ।

LV

3. 6b तद्गुण कि वण्णद् खंडकद्—खण्डकवि (पुष्पदन्त) उसके गुणोंका वर्णन किस प्रकार कर सकता है । खण्डका अर्थ है टूटा हुआ, अथवा जो पुष्पदन्तका एक उपनाम है ।

7. 8b णायभव, नाकभवा—देवता । 16 गिंभें भित्तु सियालज—श्रीभक्ततुने शीतको पराजित कर दिया । यह एक निमित्त था कि जिससे विमलनाथ विश्वकी अपूर्णताका अहसास कर सकें ।

LVI

1. 6a घणु सुरघणु जिह तिह विर ण ठाद्—इन्द्रधनुषकी तरह घन व्यक्तिके पास स्थायी रूपसे नहीं रहता । 7a भायर णियमायद्द अवयरंति—भाई भाईके साथ बुरा बर्ताव करते हैं ।

2. 8a-b चर इत्यादि—चर, गमण, छेज्ज और कड्हण—पक्षिके खेलके विभिन्न प्रकार हैं जो विरोधीपर आक्रमण करने और उसके अधिकारको चार्जमें लेनेमें हैं । 9b एवकें उड्डिउ णियरज्जु ताम—उनमें-से एकने (सुकेतु) अपनी राजधानी खो दी । ध्यान दीजिए कि उड्डिउका प्रयोग आधुनिक मराठीमें उडवणके रूपमें सुरक्षित है ।

6. 4a महुराउ गणहि महघोट्टु काद्—तुम मधुको राजा कैसे कहते हो कि वह मधुसे भरा मूख-वाला है ? मधु राजाके सम्बन्धमें इतने ओछे शब्दोंमें तुम कैसे बोल सकते हो ? 7a नीलणियासणेण—धर्मबलदेवके द्वारा जो कि नीले वस्त्र धारण करता है । बलदेवकी नीलाम्बर कहा जाता है । तुलना कीजिए : नीलाम्बरो रोहिण्यः कालाको मुसली हली—अमरकोश ।

7. - 10a उविदुप्यणरोसु—उविदु + उव्यणरोसु, उपेन्द्र अर्थात् । स्वयंभू—वासुदेव क्रुद्ध हो गये । 11a-b इद्द लोहिउ—मैं अपने भाईके चरणोंकी शपथ खाता हूँ यदि मैंने वेतालको मधु रक नहीं पिलाया । पायमि पाययामिका रूप है । 'पा' घातुका प्रेरणार्थक रूप ।

8. 1 वसुहासुउ—वसुधाका पुत्र—अर्थात् स्वयंभू । स्वयंभूकी माताका नाम । इस पर्यायवाची शब्दका उपयोग कविते पृथ्वीके अर्थमें किया है, जैसा कि हम 4 और 7b के रूपोंसे देखते हैं ।

9. 4b, 6b सुंदरिहि तणुएण—मधुके द्वारा । 5a-b-6a विचससयणकयवयणविणुएण—मधुके द्वारा जो सैकड़ों विज्ञानोके समान काव्य रचनामें प्रचलित है । 36 महुमहपुवकें चक्कें—चक्रके द्वारा, जो मधुके शत्रु द्वारा प्रक्षिप्त था । महुमह—मधुमथन विष्णुका एक नाम है, हिन्दूपुराण विद्यामें ।

LVII

इस सन्धिमें तीन व्यक्तियोंकी कथा है । ये हैं—संजयन्त, मेरु और मन्दर, और उनके पूर्वजवोंको जीवनिघोकी भी कथा है । इनमें मेरु और मन्दरकी जीवनियाँ प्रमुख हैं जो विमलनाथके गणधर हैं । नीचे दो गयो सूचीमें इन दोनोंके पूर्वजव कालक्रमानुसार इस प्रकार हैं—

(a) संजयन्त—1. सिहतेन, 2. अशनिधोष हस्ती, 3. श्रीधरदेव, 4. रविमवेग, 5. अर्कप्रभ, 6. वज्रायुध, 7. सर्वाथसिद्धि अहमिन्द्र, 8. संजयन्त, इस जीवनमें उसने तपस्या ग्रहण की ।

(b) मेरु—1. मधुरा, 2. रामदत्ता, 3. भास्करदेव, 4. श्रीधरा, 5. रत्नमाला, 6. वीतभय, 7. आदित्यप्रभ, 8. मेरु, जो विमलनाथके गणधर हैं ।

(c) मन्दर—1. वारुणो, 2. पूर्णचन्द्र, 3. वैश्वदेव, 4. यशोधरा, 5. रुचकप्रभ, 6. रत्नायुध, 7. विभीषण, 8. द्वितीय नारकी, 9. श्रीधामा, 10. ब्रह्मस्वर्गस्थित देव, 11. जयन्तधरणेन्द्र, 12. मन्दर, जो विमलके गणधर हैं ।

इस वर्णनात्मक वृत्तान्तमें दो और प्रमुख व्यक्तियोंका वर्णन है । वे हैं (1) सत्यधोष या श्रीभूति, सिहधेनका मन्त्री, जो अगन्धनसर्प, चमरमृग, कुक्कुटसर्प, तृतीयनारक, अजगर, चतुर्थनारक, असादिभय, सप्तनारक, सर्प, नारकी, भृगुशृंग और विशुद्धदंष्ट्र । (2) भद्रमित्र व्यापारी जो सिहचन्द्र, प्रीतिकरदेव और चक्रायुध ।

1 5b चिर्जङ्—चि से विकसित है तोड़ने और तब खानेके लिए । 'टी' में इसका अर्थ खाना दिया है, जो दूसरा अर्थ है ।

6. 10 देवदिवायराहु—आदित्यप्रभ देवका जो परवर्ती दूसरे भवमें मेरु बना ।

9. 11a विष्णि वि एयङ्—यज्ञोपवीत और मुद्रिका ।

14. 1a णावङ् चारुणि—पुराके समान ।

15. 6a तूलिहि—सूतसे बना गढ़ा ।

18. 4b कम्मारउ—अधिक ।

LVIII

9. 1a पुणु तहु कङ्—पंक्तिका अर्थ है अनन्तके लिए (तहु कङ् = तत्स्य कृते) राज्यश्री प्रेमकी कसकसे पीड़ित हो उठी और मूर्छित हो गयी । परन्तु उसे सचेतन किया गया, चँवरों से ।

11. 8b मिहिरमहाहियि—कान्तिमें श्रेष्ठ । सूर्यसे श्रेष्ठ ।

13. 12a अमवासाणिसियहि—अमावस्याकी रातमें । गुणभद्र और पुष्यदन्त माहका उल्लेख नहीं करते जो चंद्रमास है । हमें माहका नाम 11. 1a से लेना पड़ा है ।

16. 9b महसूयथु—मधुसूदन विष्णुका नाम है । हिन्दूपुराण विद्यामें यह विष्णुका नाम है । क्या मखसूदनको उक्त मधुसूदनके समकक्ष माना जाये जो मधुसूदनसे समता रखता है ।

21. दामयन्तक अथवा शृङ्खलायमकपर ध्यान दीजिए जो पूरे कठबकमें है ।
 22. 5b रहचरणु—चक्र । 13a. सरसलिलि रहंगसयाई अत्थि—वही शीलमें सैकडो चक्रवाक है परन्तु क्या वे पागल हाथीको पकड़ सकते हैं ।

LIX

4. 7 सिविणय दंतु सुहु—उस आधमीको सुख देता हुआ जो घनिक होते हुए भी नन्न और सव्य हैं । ध्यान दीजिए कि शब्द सिविणयमें कारक चिह्न नहीं है ।
 6. 3a पुसरिखि छणससिदिवसि—इसमें भी माहके नामका उल्लेख नहीं है । गुणभद्रमें माघ माहका उल्लेख है, परन्तु माघको पूर्णिमाको हम पुष्यनक्षत्र नहीं पा सकते इसलिए पीप माह होना चाहिए । क्या यह उत्तर और दक्षिणमें माह गिननेके अलग-अलग प्रकारके सम्बन्धके कारण ऐसा हुआ ?
 14. 1a सयडंग (शकटांग)—चक्र; चक्रवर्तीका शस्त्र ।
 19. 10 विसरिसजलक्षलञ्जलं—वृषिके गन्दे पानीका टपकना ।

LX

2. 5b जहि मणियरहि ण दिट्ठु पर्यगज—जहाँ रत्नोंकी किरणोंके कारण सूर्य दिखाई नहीं पड़ता था, रत्न इतने अधिक और विशाल थे कि उन्होंने सूर्यको आच्छादित कर लिया ।
 3. 5b कोडिसिलासंचालणववलहु—यह पत्थि प्रथम वायुदेव त्रिपृष्ठके कार्यको सम्पादित करती है कि जिसने कोटिसिलाको उठाया ।
 4. 13b पाहुडगमणागमणपवाहें—मैंटकी वस्तुओंके आने-जानेके प्रकारमें—विजयभद्र और अमित-तेजस् के बीच । नैमित्तिक—ज्योतिषी ।
 5. 9b इउं पव्वइउ समउं हलोसहु—हलोस अर्थात् विजय बलदेव, जिन्होंने संसारका परिपालन कर दिया । मैं (ब्राह्मण ज्योतिषी भी) उसके साथ साधु हो गया ।
 6. 11a मामसमण्णियउ—मेरे ससुरके द्वारा दिया गया । यहाँ तक आधुनिक मराठीमें ससुरको मामा कहते हैं ।
 8. 2a अमोहजोहु—ज्योतिषीका नाम । 7b जेवुवरसि—जिससे तुम आपत्तिमें सुरक्षित रह सकोगे (जीवित रह सकोगे) ।
 11. 3b णिब्रदुणाहं—'ए' 'पी' में पाठ है णिवंधणाहं, जो सरल है । मुहावरेका अर्थ है तन्तुओंको बाँधनेवाले । 9b वारउ—पारी । वार शब्दका पारी अर्थ मराठीमें सुरक्षित है ।
 18. 5a हरिसुउ—श्रीविजय, त्रिपृष्ठ वायुदेवका पुत्र ।
 29. 10b समयसमिण्णकलि—जिसने समता या अपनी भक्तिसे कलहको शान्त कर दिया है ।

LXI

1. 9a-28b इन पत्रियोंमें अमिततेज द्वारा अजित विद्याओंको सूची है ।
 12. 6a दिल्लिदिलिए, हे बाले—कन्या, देशी नाममाला देखिए ।

15. 13 आर्जिचियारिपसस—जिसने शत्रुशोकी प्रगति रोक दी है ।
21. 11 घणवाहणहु—मेघरथका ।

LXII

2. 2a गरुडेण वि जिप्यद् एहु ण वि—यह रसोइया गरुडके द्वारा भी नहीं जीता जा सकता ।
5. 10b आउहयजडिलमडियथणिहि—जिसके स्तन केशरसे सघन रंगे हुए हैं ।
7. 9a to 10. 2b—यहाँ पूरी धरती और उसके खण्डोका वर्णन है जो आकाशसे दिखाई देते हैं ।
17. 12b पक्खे—पक्षीके द्वारा । इस शब्दको क्या पक्षिकके रूपमें लिया जा सकता है, जो वाद्यात्मक संगीतका एक अंग है ।

LXIII

2. 7a एरादेविह—दूसरी जगह शान्तिकी माताका नाम अहरा दिया गया है, उवाहरण के लिए 1.16 और 11b में ।

5. 5-6—इन पक्तियोंमें उन रत्नोकी सूची है, जो चक्रवर्ती शान्तिनाथको प्राप्त थे ।

11. 1-7—इन पक्तियोंमें शान्तिनाथ और चक्रायुषके पूर्वभवोका वर्णन है । शान्तिनाथके कुल 12 भव हैं—श्रीषेण, कुरनरदेव, विद्याघर, देव, बलदेव, देव, वज्रामुष, चक्रवर्ती, देव, मेघरथ, सर्वार्थसिद्धिदेव, शान्ति । चक्रायुषके ये भव थे—अनिन्दिता, कुरणर, विमलप्रभदेव, श्रीविजय, देव, अनन्तवीर्य, वामुदेव, नारक, मेघनाद, प्रसीन्द्र, सहस्रायुष, अहमिन्द्र, वृद्धरथ (मेघरथभ्राता), सर्वार्थसिद्धिदेव, चक्रायुष ।

LXIV

1. 7b जो ण करइ करि कत्तिय कवालु—कुम्बु या तीर्थकर, जो अपने हाथमें मानवीकपाल नहीं रखते, और वाचका चमडा जैसा कि शिव रखते हैं, इसलिए तीर्थकर शिवसे बहुत ऊँचे हैं ।

2. 8b अयविहिअजोगु दिण्णु वि ण लेह—हाथ पसारे हुए, वह ऐसी 'बोर्जे' स्वीकार नहीं करते, जो अपनी व्रतनिष्ठाके कारण, वे ग्रहण नहीं कर सकते ।

8. 1b णियजम्ममासपनखतरालि—उसो दिन माह और पक्षमें, कि जब सनका जन्म हुआ । अर्थात् वैशाख शुक्ल प्रतिपदाके दिन । 2b कित्तियणक्खत्तासिह ससंकि—जबकि चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्रके संगममें था ।

LXV

3. 4b पट्टणु रयणकिरणअइसइयज—रत्नोकी किरणोंके कारण नगर अत्यन्त चमकदार था ।
4. 9b-10b वरिसकोडि सहणेण विहीणइ—जबकि कुम्बुके निर्वाणके एक हजार करोड़ वर्ष बीत गये ।

5. 5b दहवहवणुतणु—शरीर बीस घनुष ऊँचा था, यद्यपि गृणभद्र तौम घनुष ऊँचा शरीर बताते हैं; जो अरहको ऊँचाईसे तुलनीय है । तुग्गना कोलिए = त्रिशच्चापतनुस्तेध. चान्चामोकरच्छविः—65. 26 जो अधिक सम्भवनीय है ।

9. 1-8 ध्यान दीलिए—अर शब्दपर अलंकारिता है ।

11. 8a णिउ जिणवररिसि सोत्तिउ तावसु—राजा जिन साधु बना जब कि ब्राह्मण तपस्वी । अर्थात् वैदिकधर्मका अनुयायी साधक बना । विशेष रूपसे वह शिवकी भक्तिके सिद्धान्तोका अनुयायी बना ।
12. 6-7 णउषइ देउ—इन पक्षियोंमें शिवके चरित्र की विशेषताओंका वर्णन है कि जो ताण्डव नृत्य करते हैं, और जो पार्वतीको रखते हैं । कमर बनाते हैं, त्रिपुर को जलाते हैं, और राक्षसोंका संहार करते हैं । जिनवर कहते हैं कि ऐसी ईश्वरता संसारसे नहीं बना सकती ।
13. 6b तावसमासुरवासि रसंति—चिदा-चिद्विद्याके जोड़ने बाड़ीमें धौसला बना लिया साधुको और वे उसमें गाते हैं ।
16. 1-2 इन पंक्तियोंमें कान्यकुब्ज नगरका नाम है । क्योंकि उसमें साधुसे विवाह नहीं करनेपर कन्याओंको शापके कारण 'बौनी' बनना पड़ा ।
24. 1b खत्तिय सयलु वि छार परत्तिवि—सभी क्षत्रियोंको जलाकर साक कर देनेवाले । परत्तिवि परत्तसे बना है जो देशी है, और जो आधुनिक मराठीमें सुरक्षित है ।

LXVI

1. 9a विहवत्तणदुवलोहरियछाय—वैवव्यके कारण उत्पन्न दुखसे उसके शरीरकी कान्ति चली गयी । 10b पर ताउ ण पिच्छमि—परन्तु मैं अपने पितासे (सहस्रबाहुसे) नहीं मिलती ।
5. 5b कोसलं पुरं—कोसलपुर अर्थात् साकेत, जो कोसल राज्यकी राजधानी है ।
6. 3a परमेपर—अर्थात् शुभौम, जो बाद में चक्रवर्ती होनेवाले थे । 10b एउ जि—पिताके दाँतोंसे पकड़ा हुआ मिट्टीका प्लेट इस प्रकार चक्रमें बदल गया ।
10. 10a सम्भतरि—(स्वभ्रान्तरमें) नरकमें ।

LXVII

4. 6a हिरण्यगर्भो—a जिन-हिरण्यधर्म शब्द हिन्दुपुराण विद्यामें ब्रह्मासे भेद बतानेके लिए है परन्तु जैनपुराण विद्यामें यह तीर्थंकरका वाचक है ।
9. 1a दिणि छन्के विच्छिण्णए—दीक्षाके छह दिन बाद । अर्थात् पौष कृष्ण द्वितीयाके दिन मल्लिने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया । गुणभद्र भी इस तिथिको इस रूपमें देते हैं ।
13. 11a पिशुणमहंतो—पिशुन नामका मन्त्री, जिसने रास-विरामके धारेंमें अपने पिता 'वीर' को गलत सूचना दी; वह बलि हुआ ।
14. 4b वागारासि—वागारसी, अक्षरके कारण तीसरे अक्षरको दीर्घ किया गया ।

1
